

GL SANS 491.203

AMA



125468
LBSNAA

श्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी

L.B.S. National Academy of Administration

मसूरी

MUSSOORIE

पुस्तकालय

LIBRARY

— 125468

अवाप्ति संख्या

Accession No.

~~14190~~

वर्ग संख्या GL Sans

Class No.

491.203

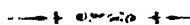
पुस्तक संख्या

Book No.

AMA 31.1

AMARSINHA'S
A MARKOSH
OR
NAM-LINGANUSHASHAN KOSH

WITH
COMMENTARIES AND NOTES IN HINDI.



BY
PANDIT SHAKTIDHAR SHASTRY.

WITH THE PERMISSION OF
THE LATE HON'BLE M. PRAYAG NARAYAN BHARGAVA,
Late Proprietor of the N. K. Press, Lucknow.

— — — — —
FIRST EDITION.
— — — — —

LUCKNOW :
PRINTED AND PUBLISHED BY K. D. SETH, AT THE NEWUL KISHORE PRESS.
1919.

All Rights Reserved.

Price Rs. 3.

॥ श्रीः ॥

अमरकोषः

अर्थात्

नामलिङ्गानुगासनं नामकोषः

श्रीमदमरसिंहविरचितः

भाषाव्याख्योपेतः ।



स्वर्गीय आनरेबुल धर्मपरायण मुंशी प्रयागनारायण रायबहादुराज्ञया शुक्रो-
पाह्वपण्डितशक्तिधरशास्त्रिकृतया रसालाख्यया व्याख्यया
समलंकृतः टिप्पण्यादिपुरस्कृतः संशोधितश्च

सच

प्रथमावृत्तौ

लक्ष्मणपुरे

मुंशी नवलकिशोर (सी. आई. ई.,) इत्यस्य मुद्रणालये मुद्रितः प्रकाशितश्च ।

संवत् १९७५ वैक्रमीयः

अस्याधिकारः सर्वथा स्वाधीन एव रक्षितः ।

विज्ञापन ।

गच्छतः स्वलनं कापि भवत्येव प्रमादतः ।

हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः ॥ १ ॥

अहो प्रियपाठको ! चलते हुए पुरुष का प्रमादवश कहीं न कहीं पैर फिसलही जाता है परन्तु वहां दुर्जनलोग परिहास करते और सज्जनलोग समाधान करते हैं—इसलिये इस व्याख्या में जहां कहीं प्रमाद पाया जावे वहां विद्वान् लोग क्षमा प्रदान करेंगे ।

यह रसाला व्याख्यासमलंकृत अमरकोष की पुस्तक सर्वसज्जन महोदय गणों के करकमलों में समर्पण कर आशा की जाती है कि अवश्यही इसको अङ्गीकार कर मेरे श्रमको सफल करेंगे—और यदि समस्त विद्यार्थीगण इसे खरीदकर पठन-पाठन आदि अभ्यास करेंगे तो परमबोधको पावेंगे । इसलिये ग्राहकगण अवश्यही खरीद करें, उनको विलम्ब नहीं करना चाहिये ।

सर्वशुभाभिलाषी—शुक्लोपाहः

पण्डित शक्तिधरशर्मा शास्त्री

नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ.

ॐ परमात्मने नमः ।

अथ प्रस्तावना ।

अहो प्रियपाठक ! यह नामलिङ्गानुशासन कोष, अमरसिंह ने निर्माण किया है, क्योंकि “ इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने ”—यह प्रत्येक काण्ड की समाप्ति में आपही ने लिखा है । परन्तु यह अमरसिंह कब हुआ था इस प्रश्न के उत्तर में ग्यारह सौ ख्रिस्ताब्दी के पहलेही हुआ था—ऐसा निर्णय कर कहा जाता है क्योंकि उक्तमिताब्दकाल में मम्मटने काव्यप्रकाश के सातवें उल्लास ३२८ पृष्ठ में “ दैवतानि पुंसि वा ” इस अमरकोष के प्रतीकको स्थापित किया है और कितेक आचार्यों ने यह अमरसिंह विक्रमादित्य के समय में हुआ था ऐसा कहा है । और भानुदीक्षितकृत व्याख्या में भी यह निश्चय किया गया है कि “ यह अमरसिंह कब हुआ, कौन जाति वाला था, इसने किस महीमण्डल को मण्डित किया ? ” यह निश्चय नहीं होता है; परन्तु “ अमरानिर्जरादेवास्त्रिदशाविबुधाः सुराः ” इत्यादि से देवसामान्य नामोंको कहकर देवविशेष नामों के आरम्भ में “ सर्वज्ञः सुगतः बुद्धो धर्मराजस्तथागतः । समन्तभद्रो भगवान् मारजिह्नोकजिज्जिनः ” इत्यादि बुद्धनामों के लिखने से बौद्धही जाना जाता है । और कितेक आचार्यों ने ऐसा भी कहा है कि

धन्वन्तरिःक्षपणकोऽमरसिंहशंकु

वेतालभट्टघटखर्परकालिदासाः ।

ख्यातो वराहमिहिरो नृपतेः सभायां

रत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्य ॥ १ ॥

धन्वन्तरि, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, वेतालभट्ट, घटखर्पर, कालिदास, वराहमिहिर और वररुचि ये महाराजा विक्रमादित्य की सभा में नवरत्न गिने जाते थे ।

इस वैक्रम नवरत्नख्यापक श्लोक से विक्रमादित्य के समय में ही अमरसिंहनामक पण्डितवर विख्यात हुआ है, एवं पर आचार्योंने “ इन्द्रश्चन्द्रः काशकृत्स्नाऽऽपिशलीशाकटायनः । पाणिन्यमरजैनेन्द्रा जयन्त्यष्टौ च शाब्दि-

काः” (इन्द्र, चन्द्र, काशकृत्स्न, आपिशली, शाकटायन, पाणिनि, अमर और जैनेन्द्र ये आठ वैयाकरण हैं वे जय करें) इस पद्यानुरोधसे पाणिनि और समन्तभद्र के अन्तरालवर्ती बतलाया है । यहां पर यह जानना चाहिये कि यह क्रमबोधक नहीं है, क्योंकि पाणिनि और महाभाष्यप्रवृत्तिसम-कालिक चन्द्रव्याकरणकर्ता चन्द्राचार्य का उल्लेख पाणिनि से पहलेही पाया जाता है । और इस अमरसिंह का वैयाकरणत्वभी संसूचित होता है कि “ अमरसिंहोहि पापीयान्सर्वे भाष्यमचूचुरत् ” इस पद्यसे समग्र महाभाष्य-तत्त्वज्ञाता की ही प्रतीति होती है ।

बौद्ध होनेसेही अमरसिंहने नानार्थवर्ग में “ धर्मराजौ जिनयमौ ” इस पद्य में जिन शब्द का पूर्वनिपात से निर्देश किया है कि ‘ जिनयमौ ’ यहां “ तापसपर्वतौ ” की समान “ अल्पाचूतरम् ” (२-२-३४) इस सूत्र की अप्राप्ति से “ अभ्यर्हितं च ”—इस वार्तिकसेही जिन शब्द का पूर्वनिपात किया है ।

यदि कहा जावे कि, यह अमरसिंह बौद्ध नहीं है बरन वेदानुसारीही माना जावे तो वैदिकमत में जिनकी अपेक्षा से यमही का अभ्यर्हितत्व हो सका है, इसलिये छन्दोभङ्ग आदि की भय से ‘ यमजिनौ ’ ऐसाही कहना चाहिये । इसके बौद्ध होने में भी बहुत से प्राचीन अमरकोषटीका ग्रन्थ अनुकूलता को प्रकाशित करते हैं ।

यद्यपि कोषों की परिगणना के अवसर में किसी कविने “ अमरोऽयं सनातनः ” (यह अमर सनातन ग्रन्थ है) ऐसा कहा है, जैसे—

“ मेदिन्यमरमाला च त्रिकाण्डो रत्नमालिका ।

रन्तिदेवो भागुरिश्च व्याडिः शब्दार्णवस्तथा ॥

द्विरूपश्च कलिङ्गश्च रभसः पुरुषोत्तमः ।

दुर्गोऽभिधानमाला च संसारावर्तशाश्वतौ ॥

विश्वो बोपालितश्चैव वाचस्पतिहलायुधौ ।

हारावली साहसाङ्को विक्रमादित्य एव च ॥

हेमचन्द्रश्च रुद्रश्च अमरोऽयं सनातनः ।

एते कोषाः समाख्याताः संख्या षड्विंशतिः स्मृता ॥

मेदिनी, अमरमाला, त्रिकाण्ड, रत्नमालिका, रन्तिदेव, भागुरि, व्याडि, शब्दार्णव, द्विरूप, कलिङ्ग, रभस, पुरुषोत्तम, दुर्ग, अभिधानमाला, संसारावर्त, शाश्वत, विश्व, बोपालित, वाचस्पति, हलायुध, हारावली, साहसाङ्क,

विक्रमादित्य, हेमचन्द्र, रुद्र और सनातन अमरकोष—ये छब्बीस कोष कहे हैं ।

यह अमरकोष विश्व, हेमचन्द्र आदि कोषों की अपेक्षा प्राचीन व सनातनरूप गिना जाता है । यह ग्रन्थ महाकठिन है, जोकि तीन काण्डों में विभक्त है । प्रथम काण्ड—स्वर्ग, व्योम, दिशा, काल, धी, शब्दादि, नाट्य, पातालभोगि, नरक और वारि इन दशवर्गों से विभूषित है । द्वितीयकाण्ड—भूमि, पुर, शैल, वनौषधि, सिंह, मनुष्य, ब्रह्म, क्षत्र, वैश्य और शूद्र इन दशवर्गों से सुशोभित है । एवं तृतीयकाण्ड—विशेष्यनिघ्न, संकीर्ण, नानार्थ, अव्यय और लिङ्गादिसंग्रह इन पांच वर्गों से समलंकृत है और इसकी बहुतसी व्याख्यायें व्याख्याकारों ने की हैं—

व्याख्याः सन्ति विदांवरैर्विरचिता यद्यप्यनेकानघा
यासु स्वल्पधियो विवेकरिता बाला विधीदन्ति ये ।
तेषामेवकृते पदार्थवलिता व्याख्या रसाला कृता
सोयं मेऽत्र परोपकारकुशलैः संक्षम्यतां दुर्नयः ॥ १ ॥

यद्यपि वड़े २ विद्वानों की निर्माण की हुई अनेकानेक व्याख्यायें हृदय में आनन्ददायक विद्यमान हैं; जिन व्याख्याओं में अल्पबुद्धि, विज्ञान-रहित बालक विषादित होते हैं—उनके लिये पदार्थों से वलित “रसाला नाम व्याख्या” बनाई गई है, इसमें जो मेरा दुर्नय हुआ हो वह परोपकार कुशली पुरुषों को क्षमा करना चाहिये ॥ १ ॥

अब जिन व्याख्याओं का सार लेकर इस रसालानाम व्याख्या का निर्माण किया गया है उनको कहते हैं—

१ अमरकोषोद्घाटनम्—इसको भट्टक्षीरस्वामी ने बनाया है । इसमें श्रीभोज, राजशेखर, भट्टि और माघ आदिकों के नाम पाये जाते हैं ।

२ पदचन्द्रिका—इसको रायमुकुट ने तेरहसौ तिरपन शके में निर्माण किया है । इसमें विद्यमान ग्रन्थों के नाम डाक्टर श्रीयुत भाण्डारकर ने प्रकाशित किये हैं ।

३ बुधमनोहरा—इसको स्वयंप्रकाशशिष्य वेदान्ती महादेव ने बनाया है । इसमें मुकुट का नाम पाया जाता है ।

४ पीयूषव्याख्या—इसको रामकृष्ण दीक्षित ने निर्माण किया है । यहाँ भी मुकुट का नाम पाया जाता है ।

५ अमरचन्द्रिका—इसे परमानन्द मैथिल ने बनाया है जोकि मुकुटाचार्य के सार को प्रकाशित करती है ।

६ पदविष्टुतिः—इसको लिङ्गसूरिने बनाया है ।

७ व्याख्यासुधा—इसको भानुजिदीक्षित ने निर्माण किया है ।

८ अमरबिवेकः—इसकी रचना महामाननीय महेश्वर ने की है ।

इन आठ व्याख्याओं को एकत्रित कर लखनऊ नरहीनिवासी शुक्लवंशीय पण्डित शक्तिधरशर्मा शास्त्री ने स्वर्गीय आनरेबुल श्रीमान् रायबहादुर भार्गव-वंशीय मुंशी प्रयागनारायणजी की आज्ञानुसार सर्वसाधारण पण्डित, शास्त्री, आचार्य, महामहोपाध्याय, सर्वविद्यार्थी, राजा, महाराजा तथा ताल्लुक़ेदार आदिकों को भलीभाँति बोध कराने के लिये इस “रसालानाम व्याख्या” का निर्माण किया है ।

एषा रसाला रचिता विशाला

व्युत्पात्तेमाला सरला सुधीनाम् ।

स्वान्ते कवीनामनिशं विभालु

बालाः सुबोधं नितरां लभन्ताम् ॥ १ ॥

इस रसाला व्याख्या को हमने निर्माण किया है, जोकि विशाला तथा पदों की व्युत्पत्तिमाला होकर विद्वानों को सरला है, वह निरन्तर कवियों के मानस में सुशोभित हो और बालकगण सदैव सुबोध को प्राप्त होवें ॥ १ ॥

इस समय संस्कृतसाहित्य में कोषों के बिना किसी का निर्वाह नहीं देख पड़ता है, इसलिये महाकठिन परिश्रम को अङ्गीकार कर “अमरोऽयं सनातनः” इत्यादि प्रमाण से हमने सर्वकोषचूडामणि इस अमरकोष की विशद व्याख्या बनाई है । इस व्याख्या में अकारादि क्रम से शब्दों की अनुक्रमणिका स्थापित की है । तथा टीकान्तर और टिप्पणी आदिकों का भी पुरस्कार किया गया है ।

एवं शब्दों के ऊर्ध्वभाग में जो पुंलिङ्ग है, वहाँ (रामः) और जो

स्त्रीलिङ्ग है, वहाँ (रामा) और जो नपुंसक है, वहाँ (सलिलम्) इस चिह्न से विभूषित किया है । और जहाँ धातुओं का न्यास किया गया है, वहाँ ‘दिवु क्रीडादौ’ इसके समान चिह्न से सुशोभित किया है । और जहाँ कोषान्तर का प्रमाण दिया गया है वहाँ “ऊर्ध्वकर्मा नरायणः” इसके समान स्थापित किया है और श्लोकों के सामने सर्वपदार्थरूप मार्जन भी समझने के लिये रक्खा गया है ।

आर्यावर्तनिवासी सकलमान्यवर पण्डित महोदयगण प्रायः अपने प्रिय-बालकों को यही कठिन ग्रन्थ पढ़ाते हैं। परन्तु पढ़नेवाले तथा पढ़ानेवालों का समय व्यर्थ बीतता है, क्योंकि इसकी व्याख्यायें मूल से भी महाकठिन प्रतीत होती हैं उनसे बालकों को यथार्थलाभ नहीं मिल सकता है इसलिये उन सबों के परिबोधार्थ यह व्याख्या बनाई गई है।

सर्वेश्वर परमेश्वर की अनुकम्पा से यह रसालाव्याख्यासमलंकृत पुस्तक सर्वमहाशयों को गुरु के बिना भी सहायता दे सकती है। इस पुस्तक को हाथ में लेतेही तुरन्त शब्दार्थ का भान होजाता है। इसलिये सज्जन, महज्जन, विद्वज्जन, महोदयों के निकट निवेदन करता हूं कि—

बुद्धिमान्यवशात्किञ्चिदशुभं लेखितम् ।

द्वेषभावं समुत्सृज्य शोधनीयं मनीषिभिः ॥ १ ॥

बुद्धि की मन्दतावश इस व्याख्या में जहाँ कहीं अशुद्ध लिखा गया हो वह विद्वानों को वैरभाव छोड़कर संशोधन करलेना चाहिये क्योंकि जो लिखता पढ़ता है वही मोहित होता है।

एवं इस व्याख्या के संशोधन विषय में भी जहाँ कहीं कुट्टाष्टि और कुमुद्रण आदि दोषों से अशुद्धता प्रतीत हो, वहाँ सर्वमहाशयों को क्षमा करना चाहिये इसके श्रम को गुणज्ञ लोगही जानेंगे। अग्रे किमधिकं बहुज्ञेष्वित्यलम्—

पण्डित शक्तिधरशर्मा, शास्त्री

नवलकिशोर प्रेस,

लखनऊ.

अथ भाषाभाष्योपेतेऽमरकोषे मूलस्थशब्दानामकारादिक्रमेण शब्दानुक्रमणिका ऽगाध्यायते ।

शब्दः (अ)	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
अ	४४६	११	अक्षि	१६८	६३	अग्न्युत्पात	२८	१०
अंश	२६३	८६	अक्षिकूटक	४७०	२२	अग्र	३००	५८
अंशक	२०	१६	अक्षिगत	२०६	३८	अग्रज	४०३	१६२
अंशु	२५	३३	अक्षीव	२६७	४५	अग्रज	१५३	४३
अंशुक	१७४	११५	अक्षोट	२४६	४१	अग्रजन्मन्	१८२	४
अंशुमती	११७	११५	अक्षौहिणी	६६	२६	अग्रतःसर	२१६	७२
अंशुमत्फला	११६	११३	अक्षौहिणी	२२१	८१	अग्रतस्	४३४	२५५
अंस	१६३	७८	अक्षरखड	३०२	६५	अग्रतस्	४४४	७
अंसल	१५४	४४	अक्षात	६८	२७	अग्रमांस	१५६	६४
अंहति	१८६	३०	अखिल	३०२	६५	अग्रिय	१५३	४३
अंहस्	३१	२३	अग	३३८	२४	अग्रिय	३००	५८
अंहि	१६१	७१	अगद	१५५	५०	अग्रिय	३००	५८
अकरणि	३२७	३६	अगदंकार	१५७	५७	अग्रेदिषु	१४८	२३
अकूपार	६१	१	अगम	८६	५	अग्रेसर	२१६	७२
अकृष्णकर्मन्	२६७	४६	अगस्त्य, अगस्ति	२२	२०	अग्रय	३००	५८
	१०३	५८	अगाध	६५	१५	अघ	३१	२३
	२४६	४३	अगार	८१	५	अघ	३४१	३२
अक्ष	२६१	८६		१०४	६२	अघमर्षण	१६४	४७
	२८२	४५	अगुरु	१७७	१२६	अघ्न्या	२५४	६७
	४२०	२३०	अगुरु	१७७	१२७	अङ्क	२१	१७
अक्षत	२४८	४७	अगुरुशिशपा	१०४	६२	अङ्क	३३०	४
अक्षदर्शक	१६६	५	अगनायी	१८७	२१	अङ्कुर	८६	४
अक्षदेविन्	२८२	४३	अग्नि	१३	५३	अङ्कुरा	२१०	४१
अक्षधूर्त	२८२	४३	अग्निकण	१३	५७	अङ्कोट	६६	२६
अक्षर	४०२	१६१	अग्निचित्	१८४	१२	अङ्कथ	४८	५
अक्षरचय	२०२	१५	अग्निज्वाला	११६	१२४		४०	४
अक्षरचुञ्चु	२०२	१५	अग्नित्रय	१८६	१६	अङ्क	१६१	७०
अक्षवती	२८२	४४	अग्निभू	६	३६	अङ्क	४४४	७
अक्षरविन्यास	२०२	१६	अग्निमन्थ	१०५	६६	अङ्क	४५१	१६
अक्षप्रकीलक	२१४	५६	अग्निमन्थ	६६	४२	अङ्कद	१७२	१०७
अक्षान्ति	५३	२४	अग्निमृली	१७६	१२४	अङ्कन	८३	१३
			अग्निशिला	११७	११८	अङ्कना	१८	५
			अग्निशिला	१२२	१३६		१४२	३

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
अक्षविशेष	५१	१६	अजा	२५७	७६	अणु	३०१	६२
अक्षसंस्कार	१७६	१२१	अजाजी	२४४	३६	अण्ड	१४०	३७
अक्षहार	५१	१६	अजाजीव	२७३	११	अण्डकोश	}	१६३ ७६
अक्षार	२४२	३०	अजित	३५३	६६	अण्डकोष		
अक्षारक	२३	२५	अजिन	१६४	४६	अण्डज	}	६६ १७ १३८ ३३ २६८ ५१
अक्षारधानिका	२४२	२६	अजिनपद्मा	१३७	२६	अतट		
अक्षारवल्लरी	१०१	४८	अजिनयोनि	१३२	८	अतर्कित	४४४	७
अक्षारवल्ली	१११	६०	अजिर	}	८३ १३ ४०२ १६०	अतलस्पर्श	६५	१५
अक्षारशकटी	२४२	२६	अजिह्व			अतसी	२३८	२०
अक्षीकार	३५	५	अजिह्वग	३०४	७२	अति	}	४३१ २५० ४४३ ५
अक्षीकृत	३१४	१०८	अज्जुका	५०	११	अतिक्रम		
अक्षलिमुद्रा	१७२	१०८	अज्जुगटा	११६	१२७	}	३२५ ३३ ४४१ २	अतिचरा १२४ १४६ अतिच्छन्न १२६ १६७ अतिच्छन्ना १२५ १५२ अतिजव २१६ ७३ अतिथि १६१ ३४ अतिनिर्हारिन् ३६ १० अतिवृ ६५ १४ अतिपथिन् ७६ १६ अतिपात { १६१ ३७ ३२५ ३३
अक्षुली	१६५	८२	अज्ञ	}	२६४ ३८ २६८ ४८	अतिप्रसिद्ध		
अक्षुलीयक	१७२	१०७	अज्ञान			अतिमात्र	१५	६६
अक्षुष्ठ	१६५	८२	अज्ञित	३११	६८	अतिमुक्त	१०७	७२
अक्षिनामक	६१	१२	अज्ञत	१८	३	अतिमुक्तक	६५	२६
अक्षिपरिष्कार	१११	६२	अज्ञनेकेशी	१२०	१३०	अतिरिक्त	३०५	७५
अचण्दी	२५६	७०	अज्ञनावती	१८	५	अतिवक्तु	२६३	३५
अचल	८६	१	अज्ञलि	१६५	८५	अतिवाद	४३	१४
अचला	७५	२	अज्ञसा	}	४४१ २ ४४७ १२	अतिविषा	११३	६६
अचिकण	४२२	२३४	अज्ञानि, टी०	२२२	८४	अतिवेल	१५	६६
अच्युत	५	१६	अज्ञानी	२२२	८४	अतिरासिता	२२७	१०२
अच्युताम्रज	६	२३	अद्वैत	११४	१०३			
अच्छ	}	६५ १४ ३४२ ३५	अद्वैत	८८	१			
अच्छभल			अद्वैत	१६१	३५			
अज	}	२५७ ७६ ३४२ ३६	अद्वैत	८३	१२			
अजगन्धिका			अद्वैत	१६१	३५			
अजगर	५८	५	अद्वैत	८३	१२			
अजगव	८	३५	अद्वैत	१६१	३५			
अजडा	११०	८६	अद्वैत	८३	१२			
अजन्य	२२६	१०६	अद्वैत	१६१	३५			
अजमोदा	१२४	१४५	अद्वैत	८३	१२			
अजमृक्षी	११७	११६	अद्वैत	८३	१२			
अजस	१५	६६	अद्वैत	८३	१२			

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
अतिशय	{ १५ ६६ ३१६ ११		अद्रि	{ ८६ १ ३६४ १७२ ४६२ ११		अध्यक्ष	{ २०० ६ ४२२ २३४	
अतिशस्त	३४६ ४८		अद्रयवादिन्	४ १४		अध्यवसाय	५५ २६	
अतिशीघ्र	३०० ५८		अधम	{ २६६ ५४ ३८६ १५३		अध्यात्म	३८६ १५३	
अतिसंस्कृत	३६० ८८		अधमर्ण	२३३ ५		अध्यापक	१८३ ७	
अतिसर्जन	३२४ २८		अधर	{ १६७ ६० ४०५ १६८		अध्याहार	३४ ३	
अतिसारकिन्	१५८ ५६		अधरेद्युः, टी०	४५३ २०		अध्यूता	१४३ ७	
अतिसौरभ	६७ ३३		अधस्	५८ १		अध्योपणा	१६० ३२	
अतीक्षण	३६५ १०१		अधिक	२५६ ८०		अध्वग	२०३ १७	
अतीत	४५० १७		अधिकर्षि	२८७ ११		अध्वनीन	२०३ १७	
अतीतनौक	६५ १४		अधिकार	२०७ ३१		अध्वन्	७६ १५	
अतीन्द्रिय	३०६ ७६		अधिकार	२०७ ३१		अध्वन्य	२०३ १७	
अतीव	४४१ २		अधिकृत	२०० ६		अध्वर	१८५ १३	
अत्तिका	५१ १५		अधिक्षित	२६६ ४२		अध्वर्षु	१८६ १७	
अत्यन्तकोपन	२६२ ३२		अधित्यका	८७ ७		अनश्र	४५ २१	
अत्यन्तीन	२२० ७६		अधिप	२८६ ११		अनङ्ग	६ २५	
अत्यय	{ २३० ११६ ३८६ १५६		अधिपाङ्ग, टी०	२१७ ६३		अनच्छ	६५ १४	
अत्यर्थ	१५ ६६		अधिभू	२८६ ११		अनङ्गुह	२५२ ६०	
अत्यल्प	३०१ ६२		अधिरोहणी	८५ १८		अनन्त	{ १७ १ ५८ ४ ३६० ८८	
अत्याहित	३५६ ८४		अधिवासन	१७६ १३४		अनन्ता	{ ७५ २ १११ ६२ ११६ ११२ १२२ १३६ १२७ १५८	
अत्रि	२३ २७		अधिविन्ना	१४३ ७		अनधीनक	२७२ ६	
अथ	४३४ २५६		अधिग्रथी	२४१ २६		अगन्यज	६ २६	
अथो	४३४ २५६		अधिष्ठान	३७७ १३३		अगन्यवृत्ति	३०६ ७६	
अदभ्र	३०२ ६३		अधीन	२८८ १६		अगमितपच	२६८ ४८	
अदर्शन	३२२ २२		अधीर	२६१ २६		अनय	३८८ १५८	
अदितिनन्दन	३ ८		अधीश्वर	१६६ २		अनर्थक	४४ २०	
अटश	१५८ ६१		अधुना	४५४ २३		अनल	१३ ५४	
अटष्ट	२०७ ३०		अष्टय	२६१ २६		अनवधानता	५५ ३०	
अटष्टि	५७ ३७		अष्टोऽशुक्	१७५ ११७		अनवरत	१५ ६६	
अद्धा	४४७ १२		अष्टोक्षज	५ २१		अनवस्कर	३०० ५६	
अद्भुत	{ ५२ १७ ५२ १६		अष्टोभुवन	५८ १				
अझर	२८६ २०		अष्टोमृत	२६३ ३३				
अथ	४५२ २०							

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
अनवराध्य	३००	५७	अनुतर्षण	२८२	४३	अन्त	२३०	११६
अनम्	२१३	५२	अनुताप	५४	२५		३०६	८१
अनागतातर्तवा	१४४	८	अनुत्तम	३००	५७	अन्तःपुर	८३	११
अनातप	३६२	१६६	अनुत्तर	४०६	१६६	अन्तक	१४	५६
अनादर	५३	२२	अनुनय	४३५	२५७	अन्तर	४०४	१६६
अनामय	१५५	५०	अनुपद	३०५	७८	अन्तरा	४४६	१०
अनामिका	१६५	८२	अनुपदीना	२७८	३०	अन्तराभवसत्त्व	३८१	१४२
अनायासकृत	३१०	६४	अनुपमा	१८	४	अन्तराय	३२१	१६
अनारत	१५	६५	अनुसव	२१८	७१	अन्तराल	१८	६
अनार्यतिष्ठ	१२३	१४३	अनुबन्ध	३६६	१०५	अन्तरिक्ष	१७	१
अनाहत	१७३	११२	अनुबोध	१७६	१२२	अन्तरीक्ष	६३	८
अनिमिष	४१६	२२७	अनुभव	३२४	२७	अन्तरीप	१७५	११७
अनिबद्ध	७	२७	अनुभाव	५३	२१	अन्तरीय	४४६	१०
अनिल	३	१०		४१४	२१८	अन्तरे	४४१	३
	१४	६२	अनुमति	२७	८	अन्तरेण	४४६	१०
अनिश	१५	६५	अनुयोग	४२	१०	अन्तर्गत	३०८	८६
अनीक	२२०	७८	अनुरोध	२०१	१२	अन्तर्धा	२०	१२
	२२८	१०४	अनुराग	४३	१६	अन्तर्दि	२०	१२
अनीकरथ	२००	६	अनुलेपन	४७१	२३	अन्तर्द्धार	८४	१४
अनीकिनी	२२०	७८	अनुवर्जन	२०१	१२	अन्तर्मानस	२८६	८
	२२१	८१	अनुवाक	४६७	१७	अन्तर्वल्ली	१४७	२२
अनु	४३५	२५७	अनुशय	३८७	१५७	अन्तर्वाणि	२८५	६
अनुक	२६०	२३	अनुष्ण	२७४	१८	अन्तर्वैशिक	२००	८
अनुकम्पा	५२	१८	अनुहार	३२१	१७	अन्तावसायिन्	२७२	१०
अनुकर्ष	२१५	५७	अनूक	३३३	१३	अन्तिक	३०२	६७
अनुकल्प	१६२	४०	अनूचान	१८४	१०	अन्तिकतम	३०३	६८
अनुकामीन	२२०	७६	अनूनक	३०२	६५	अन्तिकाश्रय	३२१	१६
अनुकार	३२१	१७	अनूप	७७	१०	अन्तिका	४१	१५
अनुकोश	५२	१८	अनूरु	२४	३२		२४१	२६
अनुक्रम	१६१	३६	अनृजु	२६७	४६	अन्तेवासिन्	१८४	११
अनुग	३०५	७८	अनृत	४५	२२		२७५	२०
अनुग्रह	३२०	१३		२३२	२	अन्त्य	३०३	८१
अनुचर	२१८	७१	अनेकप	२०८	३४	अन्त्र	१६०	६६
अनुज	१५३	४३	अनेडमूक	३३७	२२	अन्दुक	२१०	४१
अनुजीविन्	२०१	६	अनेहस्	२५	१	अन्ध	१५८	६१
			अनीकह	८६	५			

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
अन्धकरिषु	८	३४	अपदिश	१८	५	अपावृत	२८८	१५
अन्धकार	५८	३	अपदेश	५६	३३	अपासन	२३०	११३
अन्धतमस	५८	३		४१७	२२५	अपि	३३५	२५८
अन्धस्	२४६	४८	अपध्वस्त	२६५	३६	अपिगार्थि	३१४	११०
अन्धु	६८	२६	अपभ्रंश	३६	२	अपिधान	२०	१३
अव	२४६	४८	अपयान	२२६	१११	अपिनद्ध	२१७	६५
	३१४	१११	अपरस्पर	३१५	१	अपूप	२४६	४८
अन्य	३०६	८२	अपराजिता	११४	१०४	अप्पति	१४	६१
अन्यतर	३०६	८२		१२५	१४६	अप्पित्त	१३	५६
अन्येषुः, टी०	४५३	२०	अपराद्धपृष्क	२१८	६८	अप्रकाण्ड	६०	६
अन्यतरेषुः, टी०	४५३	२०	अपराध	२०५	२६	अप्रगुण	३०४	७२
अन्वक्ष	३०५	७८	अपराह्ण	२६	३	अप्रत्यक्ष	३०६	७६
अन्वक्	३०५	७८		टी० ४६४	१२	अप्रधान	३०१	६०
अन्वय	१८१	१	अपरेषुः, टी०	४२३	२०	अप्रहृत	७६	५
अन्वाय	१८१	१	अपर्णा	६	३७	अप्राप्तय	३०१	६०
अन्वाहार्य	१६०	३१	अपलाप	४४	१७	अप्सरस्	४	११
अन्विष्ट	३१३	१०५	अपवर्ग	३५	७		१२	५२
अन्वेष्टा	१६०	३२	अपवर्जन	१८६	३०	अफल	६०	७
अन्वेष्टित	३१३	१०५	अपवाद	४२	१३	अनद्ध	४४	२०
अप् (आप्)	६२	३		३६३	६६	अनद्धमुत्त	२६४	३६
अपकारगी	४३	१४	अपवारण	२०	१२	अबन्ध्य	८६	६
अपक्रम	२२६	१११	अपशब्द	३६	२	अबला	१४२	२
अपघन	१६१	७०	अपधु	३०७	८४	अबाध	३०७	८३
अपचय	३२१	१६	अपसद	२७४	१६	अञ्ज	२०	१४
अपचायित	३१२	१०१	अपसर्प	२०२	१३		३४३	३८
अपचित	३१२	१०१	अपसंय	३०७	८४	अञ्जयोनि	५	१७
अपचिति	१६१	३४	अपस्कर	२१४	५५	अब्द	३१	२०
	३५५	७४	अपस्नात	२८६	१६		३६३	६६
अपटान्तर	३०३	६८	अपहार	३२१	१६	अब्धि	६१	१
अपट्ट	१५८	५८	अपांपति	६२	२		४६२	११
अपत्य	१४६	२८	अपाङ्ग	१६८	६४	अब्धिकफ	२६७	१०५
अपत्रपा	५३	२३		३३६	२६	अब्ध्रमु	१८	४
अपत्रपिण्डु	२६१	२८	अपाची	१७	१	अब्रह्मण्य	५१	१४
अपथ	८६	१७	अपान	१५	६३	अभय	१२६	१६४
अपथिन्	८६	१७		१६२	७३	अभया	१०३	५६
अपदान्तर, टी०	३०३	६८	अपामार्ग	१११	८८	अभाषण	१६१	३६

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
अभिक	२६०	२४	अभिवादन	१६३	४१	अभ्यवहृत	३१४	१११
अभिक्रम	२२५	६६	अभिव्याप्ति	३१८	६	अभ्यारुयान	४२	१०
अभिरुया	३६१	१६५	अभिशरत	२६६	४३	अभ्यागम	२२८	१०५
अभिग्रह	३२०	१३	अभिशरित, टी.	१६०	३२	अभ्यागारिक	२८७	१२
अभिग्रहण	३२१	१७	अभिशाप	४२	१३	अभ्यादान	३२३	२६
अभिघातिन्	२०१	११	अभिषङ्ग	३१८	६	अभ्यान्त	१५८	५८
अभिचार	३२१	१६	अभिषव	१६४	४७	अभ्यामर्द	२२८	१०५
अभिजन	{ १८१ १ ३७० ११५		अभिषक्ति	१६०	३२	अभ्याशा	३०२	६७
अभिजात	३६१	८६	अभिषेचन	२२५	६५	अभ्यासादन	२२६	११०
अभिज्ञ	२८५	४	अभिष्टुत	३१४	११०	अभ्युदित	१६७	५५
अभितस्	{ ३०२ ६७ ४३८ २६४		अभिसंपात	२२८	१०५	अभ्युपगम	३५	५
अभिधान	४१	८	अभितर	२१८	७१	अभ्युपपत्ति	३२०	१३
अभिध्या	५३	२४	अभिसारिका	१४८	१०	अभ्युष	२४८	४७
अभिनय	५१	१६	अभिहार	{ ३२१ १७ ३६७ १७७		अभ्योष	१७	१
अभिनव	३०५	७७	अभिहित	३१४	१०७	अभ्र	१८	६
अभिनवोद्भिद	८६	४	अभीक	२६०	२४	अभ्रक	२६६	१००
अभिनिर्मुक्त	१६७	५५	अभीक्ष्णम्	{ ४४० १ ४४६ ११		अभ्रपुष्प	६६	३०
अभिनिर्याण	२२५	६५	अभीप्सित	२६६	५३	अभ्रमातङ्ग	११	४६
अभिनीत	{ २०५ २४ ३६० ८८		अभीरु	११३	१००	अभ्रमुवल्लभ	११	४६
अभिपन्न	३७८	१३५	अभीरुपत्री	११३	१०१	अभि	६५	१३
अभिप्राय	३२२	२०	अभिषङ्ग	३४०	२६	अभिय	१६	८
अभिभूत	२६५	४०	अभीषु	४१६	२२८	अभ्रेष	२०५	२४
अभिभर	४१६	२२३	अभीष्ट	२६६	५३	अमत्र	२४३	३३
अभिमान	{ ५३ २२ ३७१ ११७		अभ्यग्र	३०२	६७	अमर	३	७
अभियोग	३२०	१३	अभ्यन्तर	१८	६	अमरावती	१०	४५
अभिरूप	३८६	१३८	अभ्यमित	१५८	५८	अमर्त्य	३	८
अभिलाव	३२३	२४	अभ्यमित्रीण	११६	७५	अमर्ष	५४	२६
अभिलाष	५४	२८	अभ्यमित्रीय	११६	७५	अमर्षण	२६२	३२
अभिलाषुक	२६०	२२	अभ्यमिष्य	११६	७५	अमल	२६६	१००
अभिवादक	२६१	२८	अभ्यर्ण	३०२	६७	अमा	४३६	२५६
			अभ्यर्हित	३६१	६०	अमांस	१५४	४४
			अभ्यवकर्षण	३२१	१७	अमात्य	{ १६६ ४ २०३ १७	
			अभ्यवस्कन्दन	२२६	११०			

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
अमावस्या	२७	८	अम्भस्	६२	४	अरिष्ट	८२	८
अमावसी			अम्भोरुह	७२	४१		६६	३१
अमामसी			अम्भय	६२	५		१०४	६२
अमावास्या	२७	८	अम्बल	३६	६		१२४	१४८
अमावासी			अम्बल, टी०	३६	६		१३५	२०
अमामासी			अम्बललोणिका	१२३	१४०		२५१	५३
अमित्र	२०१	११	अम्बलवेतस	१२३	१४१	अरिष्टदुष्टधी	३४५	४३
अमृत्र	४४४	८	अम्बलान	१०७	७३		२६६	४४
अमृत्पाल	१२६	१६४	अम्बलिका	६६	४३	अरुण	२४	२६
अमृत	११	४८	अय	३२	२७		२४	३२
	३५	६	अयन	२६	१३		३८	१५
	६२	३		७६	१५		३४८	५५
	१८६	२८	अयस्	२६५	६८	अरुणा	११३	६६
	२३३	३	अयःप्रतिमा	२७६	३५	अरुन्तुद	३०७	८३
अमृता	३५८	८३	अयि	४५१	१८	अरुन्कर	६६	४२
	१०३	५८	अये	४५१	१८		४०५	१६८
	१०३	५६	अयोध	२४०	२५	अरुस्	१५६	५४
	१०६	८२	अयोधन	३४५	४४	अरोक	३१२	१००
	३	८	अर	१५	६४	अर्क	२४	२६
अमृतान्धस्	३	८	अरषट्	४६८	१८		३३०	४
अमोघा	११४	१०६	अरथि	१८६	१६	अर्कपथि	१०६	८१
अम्बर	१७	१	अरथि	१८६	१६	अर्कबन्धु	४	१५
	४०२	१६०				अर्काह्न	१०६	८०
अम्बरीष	२४२	३०	अरथय	८८	१	अर्गल	८४	१७
अम्बष्ठ	२७०	२	अरथ्यानी	८८	१	अर्ध	३४१	३२
अम्बष्ठा	१०६	७१				अर्ध	१६०	३३
	११०	८४	अरलि	१६६	८६	अर्चा	२७६	३६
	१२३	१४०	अरर	८४	१७	अर्चित	३१२	१०१
अम्बा	५१	१४	अरल	१०२	५७	अर्चिस	१३	५७
अम्बिका	६	३७	अरलु	१०२	५७		४२५	२३६
अम्बु	६२	४	अरविन्द	७२	३६	अर्जक	१०६	८०
अम्बुकण	१६	११	अराति	२०१	११	अर्जुन	३७	१३
अम्बुज	१०३	६१	अराल	३०४	७१		१००	४५
अम्बुधत्	१८	७	अरि	२०१	१०		१२६	१६७
अम्बुवेतस	६६	३०		४६२	११	अर्जुनी	२५४	६७
अम्बुसरण	६४	११	अरित्र	६५	१३	अर्णव	६१	१
अम्बुकृत	४४	२०	अरिमेद	१०१	५०			

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
अर्णस	६२	४	अर्वाक्	४४६	१६	अल्पमारिष	१२२	१३६
अर्तन	३२५	३२	अर्शस	१५८	५६	अल्पसरस्	६६	२८
अर्ति	३५५	७५	अर्शस्	१५६	५४	अल्पिष्ठ	३०१	६२
अर्थ	{ २६३	६०	अर्शोम	१२७	१५७	अल्पीयस्	३०१	६२
	{ ३६२	६३	अर्शोगयुत	१५८	५६	अवकर	}	८५
अर्थना	{ १६०	३२	अर्हणा	१६१	३४	अवकार		
	{ ३१८	६	अर्हित	३१२	१०१	अवकीर्णिन्	१६७	५४
अर्थप्रयोग	२३३	४	अलम्	{ ४३७	२६१	अवकृष्ट	२६५	३६
				{ ४४६	११	अवकेशिन्	६०	७
अर्थशास्त्र	४०	५	अलक	१६६	६६	अवकथ	२५८	७६
अर्थिन्	{ २०१	६	अलका	१६	७०	अवगणित	३१३	१०६
	{ २६८	४६	अलक्त	१७७	१२५	अवगत	३१४	१०८
अर्थ्य	{ २६७	१०४	अलक्ष्मी	६०	२	अवगीत	{ ३१०	६३
	{ ३६३	१६६	अलगर्द	५६	५		{ ३५६	८६
अर्दना	३१८	६	अलंकरिष्णु	{ १७०	१००	अवग्रह	{ १६	११
अर्दित	३११	६७		{ २६२	२६		{ २०६	३८
अर्धे	२०	१६	अलंकर्तृ	१७०	१००	अवग्राह	{ १६	११
अर्धचन्द्रा	११५	१०६	अलंकर्मीय	२८६	१८	,, टी०		
अर्धनाव	६५	१४	अलंकार	१७०	१०१	अवचूर्णित	३१०	६४
अर्धरात्र	२७	६	अलंकृत	१७०	१००	अवज्ञा	५३	२३
अर्धर्च	४७८	३२	अलंकिया	१७०	१०१	अवज्ञात	३१३	१०६
अर्धहार	१७१	१०६	अलर्क	{ १०६	८१	अवट	{ ५८	२
अर्धोरुक	१७५	११६		{ २७५	२२	अवटि, टी.		
अर्जुद	{ ४६८	१६	अलस	२७४	१८	अवटीट	१५४	४५
	{ ४७८	३३	अलात	२४२	३०	अवट्ट	१६६	८८
अर्भक	१४०	३८	अलावू	१२६	१५६	अवतंस	४२३	२३६
अर्भ	४७६	३४	अलि	{ १३४	१४	अवतमस	५८	३
अर्थ	{ २२२	१		{ १३८	२६	अवतोका	२५५	६६
	{ ३८७	१५५	अलिक	१६७	६२	अवदंश	२८१	४०
अर्थमन्	२४	२८	अलिन्	१३८	२६	अवदात	{ ३७	१३
अर्था	१४५	१४	अलिञ्जर	२४२	३१		{ ३६०	८७
अर्थाणी	१४१	१४	अलिन्द	८३	१२	अवदान	३१७	३
अर्थी	१४६	१५	अलीक, टी०	{ १६८	६२	अवदाह	१२६	१६५
अर्व	२६६	५४		{ ३३३	१२	अवदारण	२३६	१२
अर्वन्	{ २११	४४	अल्प	३०१	६१	अवदीर्घ	३०८	८६
	{ २६६	५४	अल्पतनु	१५५	४८	अवश	२६६	५४

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
अवधारण	४००	१८७	अवसान	३२७	३८	अव्यय	{ ३२१ १७	
अवधि	३६७	१०६	अवसित	{ ३११ ६८			{ ४७६ ३४	
अवध्वस्त	३१०	६४		{ ३१४ १०८		अव्यवहित	३०३	६८
अवन	३१७	४	अवस्कर	{ १६० ६७		अशनाया	२६१	५४
अवनत	३०३	७०		{ ३६६ १७६		अशनायित	२८६	२०
अवनाट	१५४	४५	अवस्था	३३	२६	अशानि	११	४७
अवनाय	३२४	२७	अवहार	६७	२१	अशित	३१४	१११
अवनि	७५	३	अवहित्या	५६	३४	अशिर्षी	१४४	११
अवन्तिसीम	२४५	३६	अवहेलन	५३	२३	अशुभ	४७१	२३
अवन्ध्य	८६	६	अवाक्	२८७	१३	अशेष	३०२	६५
अवभृथ	१८६	२७	अवाक्पुष्पी	१२५	१५२	अशोक	१०४	६४
अवभ्रट	१५४	४५	अवाङ्	२६३	३३	अशोकरोहणी	११०	८५
अवम	२६६	५४	अवाग्र	३०३	७०	अश्मगर्भ	२६४	६२
अवमत	३१३	१०६	अवाची, टी.	१७	१	अश्मज	२६७	१०४
अवमर्द	२२६	१०६	अवाच्य	४५	२१	अश्मन्	८६	४
अवमानना	५३	२३	अवार	६३	८	अश्मन्त	२४१	२६
अवमानित	३१३	१०६	अवासम्	२६५	३६	अश्मपुष्प	११८	१२२
अवयव	१६१	७०	अवि	{ १४७ २०		अश्मरी	१५७	५६
अवर	२०६	४०		{ ४१३ २१६		अश्मसार	२६५	६८
अवरज	१५३	४३	अविग्न	१०५	६७	अश्रान्त	१५	६५
अवसति	३२६	३७	अवित	३१३	१०६	अश्रि	१२५	६३
अवरवर्ण	२६६	१	अविद्या	३५	७	अश्रु	१६८	६३
अवरीण	३१०	६४	अविनीत	२१०	२३	अश्लील	४४	१६
अवरोध	८३	१२	अविरत	१५	६५	अश्व	२११	४३
अवरोधन	८३	११	अविलम्बित	{ १५ ६५		अश्वकर्णक	१००	४४
अवरोह	६६	११		{ ३०७ ८३		अश्वत्थ	६४	२१
अवर्ण	४२	१३	अनिस्पष्ट	४५	२२	अश्वमेधीय	२११	४५
अवलक्ष	३७	१३	अनीचि	६०	१	अश्वयुज	२२	२१
अवलान	१६४	७६	अनीरा	१४४	११	अश्ववडव	४६७	१६
अवल्लुज	११२	६५	अवेक्षा	३२४	२८	अश्वा	२११	४६
अववाद	२०५	२५	अव्यक्त	३५३	६६	अश्वाभरण	३४७	५१
अवश्यम्	४४६	१६	अव्यक्तराग	३८	१५	अश्वारोह	२१६	६०
अवश्याय	२१	१८	अव्ययल	११०	८६	अश्विन्	१२	५१
अवष्टब्ध	३६६	१११	अव्यथा	{ १०३ ५६		अश्विनी	२२	२१
अवस्तर	३२३	२४		{ १२४ १४६		अश्विनीसुत	१२	५१

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
अद्वितीय	२१२	४८	अदिशर	२६६	४३	अद्वाय	४४१	२
अपडश्राख	२०४	२२	अरफुटवाञ्	२६४	३७	(आ)		
अडापद	२६४	६५	अस	१५६	६४	आ (आः)	४३०	२४६
	२८२	४६		१६८	६३	आम्	४४६	१६
अधीवन्	१६१	७२		३६५	१७३	आकम्पित	३०८	८७
असकृन्	४४०	१	असप	१४	५६	आकर	८७	७
असर्ता	१४४	१०	असु	१६८	६३	आकर्ष	४२०	२३०
अमतांसुत	१४८	२६	अखच्छन्द	२८८	१६	अकल्प	१७०	६६
अगान	१००	४४	अखम	३	=	आकार	३२०	१५
असर्माक्ष्यकारिन्	२८८	१७	अखर	२६४	३७	आकार	३६४	१७१
असार	३००	५६	अस्वाध्याय	१६६	५३	आकारगुप्ति	५६	३४
असि	२२३	८६	अहंयु	२६८	५०	आकारणा	४१	८
	४६२	११	अहंकार	५३	२२	आकाश	१७	१३
असिक्री	१४६	१८	अहंकारवान्	२६८	५०	आकार्ण	३०७	८५
असित	३७	१४	अहन्	२६	२	आकुल	३०४	७२
असिधावक	२७२	७	अहमदमिका	२२७	१०१	आकृति	३६४	१७१
असिधेनुका	२२४	६२	अहंपूर्विका	२२७	१००	आक्रन्द	४६४	६७
असिपुनी	२२४	६२	अहंमति	३५	७	आक्रोड	८८	३
असिहेति	२१८	७०	अहंप्रति	२४	३०	आक्रोश	४३	१५
असु	२३१	११६	अहर्मुख	२६	२	आक्रोशन	३१८	६
असुधारण	२३१	११६	अहस्कर	२४	२८	आक्षारणा	४३	१५
असुर	४	१२	अहह	४४०	२६६	आक्षारित	२६६	४३
असृक्षेण	५३	२३	अहहा, टी.	४४०	२६६	आक्षीव	६६	३१
अमृया	५३	२४	अहार्थ	८६	१	आक्षेप	४२	१३
अमुग्धरा	१५६	६२	अहि	५६	६	आखण्डल	१०	४४
असृज्	१५६	६४		४२६	२४७	आखु	१३३	१२
अमेचनक	२६६	५३	अहित	२०१	११	आखुभुज्	१३२	६
असौम्यम्बर	२६४	३७	अहितगुडिक	६०	११	आखंड	२७६	२३
अस्तम्	४५०	१७	अहिभय	२०७	३०	आख्या	४१	८
अस्त	८६	२	अहिभुज्	३४२	३६	आख्यात	३१४	१०७
	३०८	८७	अहेश	११३	१०१	आख्यायिका	४०	५
अस्ति	४५१	१८	अहो	४४५	६	आगन्तु	१६१	३४
अस्तु	४४८	१३	अहोरात्र	२८	१२	आगरी	१०६	६६
अख	२२२	८२	,,	३१	२१	आगस्	२०५	२६
अखिन्	२१८	६६		४६४	१२		४२५	२३६
अस्थि	१६१	६८		,,	टी.	आगार	८१	५

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
आगू	३५	५	आद्यवीन, टी०	२३४	७	आद्यभाषक	२६१	८५
आग्नीध्र	१८६	१७	आतङ्क	३३२	१०	आद्यून	२८६	२१
आग्रहायणिक	२६	१४	आतञ्जन	३७३	१२२	आधार	६६	२६
आग्रहायणा	२२	२३	आततायिन्	२६६	४४	आधि	५४	२८
आङ्	४३०	२४८	आतप	२५	३४	आधूत	३०८	१०४
आङ्गार, टी०	३२८	४३	आतपत्र	४६६	२०	आधरण	३०८	८७
आङ्गिक	५१	१६	आतर	२०७	३२	आध्यान	२१५	५६
आङ्गिरस	२३	२४	आतार	६४	११	आध्यान	५५	२६
आचमन	१६१	३६	आतायिन्	१३५	२१	आनक	४८	६
आचाम	२४६	४८	आतिथेय	१६०	३३	आनकदुन्दुभि	३२६	३
आचार्य	१८३	७	आतिथ्य	१६०	३३	आनत	३०३	६६
आचार्या	१४५	१४	आतुर	१५८	५८	आनत	३०३	७०
आचार्यानी	१४६	१५	आतौघ	४८	५	आनङ्ग	४७	४
आचित	२६२	८७	आतर्ग	२६५	४०	आनन	१६७	८६
आच्छादन	२०	१३	आत्मगुहा	११०	८६	आनन्द	३२	२५
	१७४	११५	आत्मघोष	१३५	२०	आनन्दश्रु	३२	२५
	३७७	१३२	आत्मज	१४६	२७	आनन्दन	३१८	७
आच्छुरितक	५६	३४	आत्मन्	३३	२६	आनर्ग	३५४	७१
आच्छादन	२७६	२३		३७०	११६	आनाय	६५	१६
आजक	२५८	७७	आत्मन्	५	१६	आनाय्य	१८७	२१
आजानेय	२११	४४	आत्मन्	६	२६	आनाह	१५७	५५
आजि	२२८	१०६	आत्मन्	६	२६	आनाह	१७४	११४
	३४३	३८	आत्मन्मरि	२८६	२१	आनुपूर्वा	१६१	३६
आजीव	२३२	१	आनेयी	१४७	२०	आनेय, टी०	१८७	२१
आजू	६१	३	आनेय	३२८	४३	आन्धसिक	२४१	२८
आज्ञा	२०५	२६	आदर्श	१८१	१४०	आन्धसिकी	४०	५
आज्ञय	२५०	५२	आदि	३०६	८०	आपक	२४८	४७
आटि	१३६	२५	आदिकारण	३३	२८	आपगा	६६	३०
आउम्बर	२२६	१०८	आदितेय	३	८	आपण	८०	२
	३६७	१७७	आदित्य	३	८	आपणिक	२५८	७८
आडि	१३६	२५	आदित्य	३	१०	आपत्याप्त	२६६	४२
आटक	२६२	८८	आदित्य	२४	२८	आपत्ति, टी०	२२२	८२
आदिक	२३५	१०	आदीनव	३२४	२६	आपद्	२२२	८२
आदिकी	१२०	१३०	आदित	३६२	६२	आपदा, टी०	२२२	८२
	४६०	७	आदेष्टु	१८३	७	आपन्न	२६६	४२
आद्य	२८६	१०	आद्य	३०६	८०	आपन्नसत्त्वा	१४७	२२

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
आपमित्र्यक	२३३	४	आमुक्त	२१७	६५	आरोह	४२६	२४७
आपान	२८१	४२		३२	२४	आरोहण	८५	१८
आपीड	१८०	१३६	आमोद	३६	१०	आर्तिगल	१०७	७४
आपीन	२५६	७३		३६४	६८	आर्तव	१४७	२१
आपूपिक	२४१	२८	आमोदिन्	३७	११	आर्द्र	३१३	१०५
	३२७	४०	आम्नाय	३६	३	आर्द्रिक	२४४	३७
आप्त	२०२	१३		३१८	७	आर्य	५१	१४
आप्य	६२	५	आप्त	६७	३३		१८२	३
आप्यायन	३७३	१२२	आप्रातक	६५	२७	आर्यावर्त	७७	८
आप्रच्छन्न	३१८	७	आप्रेडित	४२	१२	आर्षभ्य	२५३	६२
आप्रपद्	१७५	११६	आयत्त	३०३	६६	आल	२६७	१०३
आप्रपदीन	१७५	११६	आयतन	८२	७	आलम्भ	२३०	११५
आसव	१७६	१२१	आयति	२०६	२६	आलय	८१	५
आसववतिन्	१६३	४३		३५७	७६	आलशाल	६६	२६
आसाव	१७६	१२१	आयत्त	२८८	१६	आलस्य	२७४	१८
आसुतवतिन्, टी.	१६३	४३	आयाम	१७४	११४	आलान	२१०	४१
आवन्ध	२३६	१३	आयुध	२२२	८२	आलाप	४३	१५
आवृत्त	५०	१२	आयुधिक	२१७	६७		७८	१४
आभरण	१७०	१०१	आयुशीय	२१७	६७	आलि	८६	४
आभाषण	४३	१५	आयुष्मन्	२८५	६		१४५	१२
आभाष्य	३	१०	आयुस्	२३२	१२०	आलिङ्ग्य	४८	५
आभीर	२५२	५७	आयुधन	२२८	१०३		७८	१४
आभीरपत्नी	८५	२०	आयकूट	२६५	६७	आली	८६	४
आभीरी	१४५	१३	आरम्भ	२६५	६७		१४५	१२
आभील	६१	४	आरम्भ	२६५	६७		४०६	२०७
आभोग	१८०	१३६	आरनालक	२८५	३६	आलीढ	२२२	८५
आमगन्धिन्	३७	१२	आरति	३२६	३७	आलु	२४२	३१
आमनरय	६१	३	आरम्भ	३२३	२६	आलू		
आमय	१५५	५१	आरव	४५	२३	आलोक	३२६	३
आमयाविन्	१५८	५८	आरा	२७६	३४	आलोकन	३२५	३१
आमलक	४७८	३३	आरान्	४३१	२५१	आवपन	२४३	३३
आमलकी	१०२	५७	आराधन	३७७	१३२	आवर्त	६२	६
आमिश्रा	१८८	२३	आराम	८८	२	आवलि	८६	४
आमिष	१५६	६३	आरालिक	२४१	२८	आवसित	२३६	२३
	४२१	२३२	आराव	४५	२३	आवाप	६६	२६
आमिषाशिन	२८६	१६	आरवत	६४	२४	आवापक	१७२	१०७
			आरोग्य	१५५	५०	आवाल	६६	२६
						आविन	१०५	६७

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
आविद्ध	{ ३०४	७१	आश्वत्थ	६३	१८	आहत	{ ४५	२१
	३०८	८७	आश्वपुत्र	३०	१७		३०८	८८
आविष	३२६	३६	आश्विन	३०	१७	आहतलक्षणा	२८६	१०
आविल	६५	१४	आश्विनेय	१२	५१	आहव	२२८	१०५
आविस्	४४७	१२	आश्वीन	२१२	४७	आहवनीय	१८६	१६
आवुक	५०	१२	आश्वीय	२१२	४८	आहार	२५१	५६
आवृत्	१६१	३६		{ २६	१६	आहाव	६८	२६
आवृत	३४६	६०	आषाढ	{ १६४	४५	आह्वितुषिडक	६०	११
आवेगी	१२२	१३७	आसक्त	२८६	६	आह्वय	५६	६
आवेशन	८२	७		{ १८०	१३८	आहो	४४३	५
आवेशिक	१६१	३४	आसन	{ २०३	१८	आहोपुरुषिका	२२७	१०१
आशंसितृ	२६१	२७		२०६	३६	आह्वय	४१	७
आशंस	२६१	२७	आमना	३२२	२१	आह्वा	४१	८
आशय	{ ३१६	११	आसन्दी	४६१	६	आह्वान	४१	८
	३२२	२०	आसन्न	३०२	६६			
आशर	१४	५६	आमव	२८१	४१	(इ)		
आशा	{ १७	१	आसादित	३१३	१०४	इष्ट	१२८	१६३
	४१७	२२५	आसार	{ १६	११		{ ११३	६८
आशितंगवीन	२५२	५६		{ २२५	६६	इष्टगन्धा	{ ११४	१०४
आशीविष	५६	७	आसुरी	२३८	१६		{ ११५	११०
आशीम्	४२३	२३७	आस्कन्दन	२२८	१०४	इक्षुर	११४	१०४
आशु	{ १५	६५	आस्कन्दित	२१२	४८	इक्ष्वाकु	१२६	१५६
	२३७	१५	आस्तरण	२१०	४२	इक्ष्वा	{ ३०४	७४
आशुग	{ १४	६२	आस्था	३६३	६५		{ ३२०	१५
	२२३	८६	आस्थान	१८५	१५	इक्षित	३२०	१५
	३३८	२४	आस्थानी	१८५	१५	इक्षुदी	१००	४६
आशुशुषि	१३	५५	आस्पद	३६५	१०१	इक्ष्वा	५७	२७
आश्वर्य	५२	१६	आस्फोटनी	२७६	३३	इक्ष्वावती	१४४	६
आश्रम	१८२	४	आस्फोटा, टी.	११४	१०४	इक्ष्वा, टी०	१०४	६१
आश्रय	२०३	१८	आस्फोट	१०६	८०	इक्ष्वा ल	१८३	८
आश्वयाश	१३	५४	आस्फोता	{ १०६	७०	इक्ष्वा	२५३	६२
	३५	५		{ ११४	१०४	इक्ष्वा	३४६	४६
आश्वत्थ	{ २६०	२४	आस्य	१६७	८६	इक्ष्वा	{ २७४	१६
	३२४	२६	आस्या	३२२	२१	इक्ष्वा	{ ३०६	८२
आश्रुत	३१४	१०८	आमव	३२४	२६	इक्ष्वा, टी०	४५६	२०
आश्व	२१२	४८				इक्ष्वा	४३३	२५४

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
इतिह	१०४	१२	इपु	२२३	८७	ईहभृग	१३२	७
इतिहाम	४०	४	इपुशि	२२३	८८	(उ)		
इत्तर, टी.	२५३	६२	इष्ट	{ १०६	२८	उं	४५१	१८
इत्तरी	१०४	१०		{ २५२	५७	उक्त	३१४	१०७
इदागाम्	५५४	२३	इष्टकापथ	१२६	१६५	उक्ति	३६	१
इम	६१	१३	इष्टगन्ध	३७	११	उक्थ	४७६	३०
इन	३७१	११८	इष्टार्थे च्युक्त	२८६	६	उक्षन्	२५२	५६
इन्वका	२२	२३	इष्टि	३४५	४६	उला	२४२	३१
इन्दावर	७१	३७	इप्तास	२२२	८३	उल्य	२४८	४५
इन्दीवरी	११३	१००	(ई)			उग्र	{ ८	३२
इन्मु	२०	१३	ईक्ष्वा	{ १६८	६३	उग्रमन्था	{ ५३	२०
इन्द्र	{ १०	४१	ईक्ष्वा	{ ३०५	३१		{ ११८	१०२
	{ १७	२		{ १४७	२०	उच्च	{ १२४	१८५
इन्द्रद्रु	१००	४५	ईक्षित	३१४	११०		३०३	७०
इन्द्रयव	१०५	६७	ईति	३५५	७५	उच्चटा	१२७	१६०
इन्द्रवारुणी	१२६	१५६	ईरिण	३५२	६४	उच्चण्ड	३०७	८३
इन्द्रसुरस	१०५	६८	ईरित	३०८	८७	उच्चार	१६०	६७
इन्द्रसुरिस, टी०	१०६	६८	ईम	१५६	५४	उच्चावच	३०७	८३
इन्द्राणिका	१०५	६८	ईर्वाक	१२६	१५५	उच्चैःश्रवत्	१०	४५
इन्द्राणी	१०	४५	ईर्वा	५३	२४	उच्चैर्धुष्ट	४२	१२
इन्द्रायुध	१६	१०	ईर्वात	३१४	१०६	उच्चैर्धुष्ट	४५०	१७
इन्द्रारि	४	१२	ईर्वा	२२४	६१	उच्चैर्धुष्ट	६०	१०
इन्द्रावरज	५	२०	ईशा	{ ७	३०	उच्चैर्धुष्ट	६०	१०
इन्द्रिय	{ ३६	८	ईशा	{ १७	३	उच्चैर्धुष्ट	{ ३०३	७०
	{ १५६	६२		{ २३७	१४		{ ३६२	६२
इन्द्रियार्थ	३६	८	ईशान	७	३०	उच्चैर्धुष्ट	२३०	११५
इन्धन	६१	१३	ईशान्	२८६	१०	उच्चैर्धुष्ट	५२	१७
इभ	२०८	३५	ईशान्	२०६	३८	उच्चैर्धुष्ट	२३२	२
इभ्य	२८६	१०	ईशान्	{ ७	३०	उच्चैर्धुष्ट	८१	६
इभ्य	१६	१०	ईशान्	{ २८६	१०	उच्चैर्धुष्ट	२२	२१
इरा	३६६	१०५	ईशान्	६	३६	उच्चैर्धुष्ट	६४	११
इला	३४६	४६	ईशान्	६	३६	उच्चैर्धुष्ट	१४०	३७
इलि	{ टी०	२२४	ईशान्	४४४	८	उच्चैर्धुष्ट	{ ३१२	१०१
इली,			ईशान्	२३७	१४			
इलवका	{ टी०	२३	ईशान्	२०६	३८	उच्चैर्धुष्ट	{ ४४३	५
इलवला			ईशान्	५४	२७			
इव	४३६	२५६	ईशान्	२०६	३८	उच्चैर्धुष्ट	४४३	५
इष	३०	१७	ईशान्	५४	२७	उच्चैर्धुष्ट	४४३	५
इषीका	२०६	३८	ईशान्	५४	२७	उच्चैर्धुष्ट	४४३	५

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
सक	२८६	=	उत्सर्जन	१८६	२६	उदीच्य	७६	७
उत्कट	२६०	२३	उत्सव	५७	३८	उदुम्बर	११८	१२२
उत्कण्ठा	५५	२६	उत्सादन	४१४	२१८	उदुम्बर	६४	२२
उत्कर	१४१	४२	उत्सादन	१७६	१२१	उदुम्बरपर्णी	२६५	६७
उत्कर्ष	३१६	११	उत्साह	५५	२६	उदुम्बरपर्णी	१२३	१४४
उत्कलिका	५५	२६	उत्साह	२०३	१६	उदुम्बर	२४०	२५
	३३७	२१	उत्साहन	३७३	१२२	उद्भूत	३११	६७
उत्कार	३२६	३६	उत्साहवर्धन	५२	१८	उद्भूमनीय	१७३	११२
उत्क्रोश	१३६	२३	उत्सुक	२८६	६	उद्भाट	१५	६६
उत्तंस	४२३	२३६	उत्सृष्ट	३१४	१०७	उद्भाट	१८६	१७
उत्त	३१३	१०५	उत्सृष्ट	६०	१०	उद्भाट	३२६	३७
उत्तप्त	१५६	६३	उत्सृष्ट	३६६	१०३	उद्भाट	४६८	१६
उत्तम	३००	५७	उद्भूत	४५४	२२	उद्भूत	३०८	८६
उत्तमर्ण	२३३	५	उद्भूत	६२	४	उद्भूत	३२६	३७
उत्तमा	१४२	४	उद्भूत	४७०	२०	उद्भूत	३२	२७
उत्तमाङ्ग	१६८	६५	उद्भूत	१८७	२१	उद्भूत	३२६	३५
उत्तर	४२	१०	उद्भूत	३०३	७०	उद्भूत	२७७	२७
	४०६	१६६	उद्भूत	३२७	३६	उद्भूत	३२३	२६
उत्तरा	१७	१	उद्भूत	६१	१	उद्भूत	२०५	२६
उत्तरासङ्ग	१७५	११७	उद्भूत	४१	७	उद्भूत	६७	३४
उत्तरीय	१७५	११८	उद्भूत	२५१	५५	उद्भूत	३१०	६५
उत्तरेयुः, टी०	४५३	२०	उद्भूत	६१	१	उद्भूत	२२६	१११
उत्तान	६५	१५	उद्भूत	६८	२६	उद्भूत	५७	३८
उत्तानशया	१५३	४१	उद्भूत	८६	२	उद्भूत	५७	३८
उत्थान	३७४	१२५	उद्भूत	१६३	७७	उद्भूत	२४१	२६
उत्थित	३६२	६२	उद्भूत	२०६	२६	उद्भूत	२३३	४
उत्थितृ	२६२	२६	उद्भूत	८१	४	उद्भूत	३०६	६०
उत्थिति	३३	३०	उद्भूत	२५१	५६	उद्भूत	३३	३०
उत्थितिष्णु	२६२	२६	उद्भूत	४०	४	उद्भूत	२६६	५१
उत्थन	३६२	६२	उद्भूत	१५	६३	उद्भूत	२६६	५१
उत्थल	७१	३७	उद्भूत	२८६	८	उद्भूत	२६६	५१
	११६	१२६	उद्भूत	४०६	२०१	उद्भूत	३१६	१२
उत्थलशारिवा	११६	११२	उद्भूत	२०१	१०	उद्भूत	३०८	८६
उत्थात	२२६	१०६	उद्भूत	४१	६	उद्भूत	३१६	११
उत्फुल्ल	६०	७	उद्भूत	३१४	१०७	उद्भूत	८८	३
उत्स	८७	५	उद्भूत	१७	२	उद्भूत	२७४	१२४

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
उद्योग	४७८	३३	उपकोश	४२	१३	उपराग	२८	१
उद्ग	६६	२०	उपगत	३१४	१०६	उपराग	३२६	३७
उद्गर्तन	१७६	१२१	उपगृह्ण	३२४	३०	उपरि, टी०	४५५	२३
उद्गान्त	{ २०८ ३६ ३११ ६७		उपग्रह	२३१	११६	उपरिष्ठात्, टी०		
उद्गासन	२३०	११५	उपग्राह्य	२०६	२८	उपल	८६	४
उद्गाह	२६७	५६	उपग्न	३२१	१६	उपलब्धार्था	४०	५
उद्देश	{ १३० १६६ ३१८ १२		उपचरित	३१२	१०२	उपलब्धि	३४	१
उन्दुरु	१३३	१२	उपचाय्य	१८७	२०	उपलम्भ	३२४	२७
उन्नत	{ ३०३ ६६ ३०३ ७०		उपचित	३०८	८६	उपला	४१०	२०८
उन्नतानत	३०३	६६	उपचित्रा	११०	८७	उपवन	८८	२
उन्नद्ध	३६२	६२	उपजाप	२०४	२१	उपवर्तन	७७	८
उन्नय	३१६	१२	उपज्ञा	१८५	१३	उपवर्ह	१८०	१३७
उन्नाय	३१६	१२	उपतप्त	३२०	१४	उपवास	१६२	३८
उन्मत्त	{ १०८ ७७ १५८ ६०		उपताप	१५५	५१	उपविभा	११३	६६
उन्मद्	२६०	२३	उपत्यका	८७	७	उपवीत	१६५	४६
उन्मदिष्णु	२६०	२३	उपदा	२०६	२८	उपशल्य	८५	२०
उन्मनस्	२८६	८	उपधा	२०४	२१	उपशाय	३८५	३२
उन्मन्थ, टी०	२३०	११५	उपधान	१८०	१३७	उपश्रुत	३१४	१०६
उन्माथ	{ २३० ११५ २७७ २६		उपधि	५५	३०	उपसंख्या	१७५	११७
उन्माद	५४	२६	उपनाह	४६	७	उपसंपन्न	{ १८८ २६ २४८ ४५	
उन्मादवर्	१५८	६०	उपनिधि	२५६	८१	उपसर	३२३	२५
उपकण्ठ	३०२	६७	उपनिषद्	३६५	१००	उपसर्ग	२२६	१०६
उपकारिका	८२	१०	उपनिष्कर	७६	१८	उपसर्जन	३०१	६०
उपकार्या	८२	१०	उपन्यास	४१	६	उपसर्गा	२५६	७०
उपकुञ्चिका	{ ११६ १२५ २४४ ३७		उपपति	१५१	३५	उपसूर्यक	२४	३२
उपकुल्या	११२	६६	उपपत्तु	१८८	२५	उपस्कर	२४३	३५
उपकूप	६८	२६	उपभोग	३२२	२०	उपस्था	१६२	७५
उपक्रम	{ १८५ १३ ३२३ २६ ४८४ १४८		उपमा	{ २७६ ३६ २८० ३७		उपस्पर्श	१६१	३६
			उपमानृ	३६६	१८५	उपहार	२०६	२८
			उपमान	२७६	३६	उपह्वर	४०३	१६२
			उपयम	१६७	५६	उपांशु	२०४	२३
			उपयाम	१६७	५६	उपाकरण	१६२	४०
			उपरक्त	{ २८ १० २६६ ४३		उपाकृत	१८८	२५
			उपरक्षण	२०८	३३	उपात्यय	{ १६१ ३७ ३२५ ३३	

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
उपादान	३२१	१६	उररी	४३८	२६३	उष्णारश्मि	२४	२६
उपाधि	{ ५४ २८	२८ १२	उररीकृत	३१४	१०८	उष्णिका	२४६	५०
उपाध्याय	१८३	७	उरश्छद	२१६	६४	उष्णीष	४२०	२२६
उपाध्याया	१४५	१४	उरस्	१६३	७८	उष्णोपगम	३०	१६
उपाध्यायानी	१४६	१५	उरसिल	२२०	७६	उद्य	२५	३३
उपाध्यायी	{ १४५ १४६	१४ १५	उरस्थ	१४६	२८	उद्या	२५४	६६
उपानह	२७८	३०	उरस्वत्	२२०	७६	(ऊ)		
उपानाह	४६	७	उरु	३०१	६१	ऊत	३१२	१०१
उपाय (चतुष्टय)	२०४	२०	उरुवृक	१०१	५१	ऊधस्	२५६	७३
उपायन	२०६	२८	उर्वरा	७६	४	ऊन	३७८	१३५
उपालम्भ	४३	१४	उर्वशी	१२	५२	ऊम्	४५१	१८
उपावृत्त	२१३	५०	उर्वी	७५	३	ऊररी	४३८	२६३
उपासह	२२३	८८	उलप	६०	६	ऊरव्य	२३२	१
उपासन	२२३	८६	उलूक	१३४	१५	ऊरी	४३८	२६३
उपासना	१६१	३५	उलूखल	२४०	२५	ऊरीकृत	३१४	१०८
उपासित	३१२	१०२	उलूखलक	६७	३४	ऊरु	{ १६१ ७२	
उपाहित	{ २८ ३०६	१० ६२	उलूपित्	६६	१८		{ १६२ ७३	
उपेन्द्र	५	२०	उल्का	४६१	८	ऊरुज	२३२	१
उपोदिका	१२७	१५७	उध्मुक	२४२	३०	ऊरुपर्वन्	१६१	७२
उपोद्घात	४१	६	उल्लाघ	१५७	५७	ऊर्ज	३०	१८
उप्तकृष्ट	२३४	८	उल्लोच	१७५	१२०	ऊर्जस्वल	२१६	७५
उभयद्युस्	{ ४५३	२१	उल्लोल	६२	६	ऊर्जस्विन्	२१६	७५
उभयेद्युस्			उल्व (ब)	१५२	३८	ऊर्णनाभ	{ १३३ १३	
उमा	{ ६ २३८	३६ २०	उल्वण	३०६	८१	ऊर्णनाभि, टी.		
उमापति	८	३४	उशनस्	२३	२५	ऊर्णा	३४६	५७
उम्	४५१	१८	उशीर	१२६	१६४	ऊर्णायु	{ २५७ २६८	७६ १०७
उम्य, टी.	२३४	७	उषणा	११२	६७	ऊर्णवृ		
उरःसूत्रिका	१७१	१०४	उषर्धुध	१३	५४	ऊर्णक	४८	५
उरग	५६	८	उषस्	२६	२	ऊर्णजानु	१५४	४७
उरण	२५७	७६	उषा	४५१	१८	ऊर्णजु	१५४	४७
उरणारुय	१२४	१४७	उषापति	७	२७	ऊर्भि	६२	५
उरभ्र	२५७	७६	उषित	३१२	६६	ऊर्मिका	१७२	१०७
			उष्ट्र	२५७	७५	ऊर्मिमत	३०४	७१
				{ ३० २७५	१६ १६	ऊष	७६	४
				{ ४७०	२२	ऊषण	२४४	३६
						ऊषर	७६	५

भाषाभाष्योपेतेऽमरकोषे

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
ऊषवत्	७६	५	ऋष्यप्रोक्ता	{ ११०	८७	एउक	२६४	३८
ऊषापति	७	२७		{ ११३	१०१	एडक	८१	४
ऊष्मक	३०	१८	(ए)			एण	१३३	१०
ऊष्मागम	३०	१६				एत	३८	१७
ऊह	३४	३	एक	{ ३०६	८२	एतर्हि	४५४	२३
(ऋ)				{ ३३४	१६	एध	६१	१३
ऋवथ	२६३	६०	एकक	३०६	८२	एधस्	६१	१३
	{ २२	२१	एकगुरु	१८४	१२	एधित	३०५	७६
ऋक्ष	{ १०२	५७	एकतान	३०६	७६	एनस्	३१	२३
	{ १३१	४	एकताल	४७	३	एरण्ड	१०१	५१
ऋक्षगन्वा	१२२	१३७	एकदन्त	६	३८	एलबालुक	११८	१२१
ऋक्षगन्विका	११५	११०	एकदा	४५३	२२	एला	११६	१२५
ऋच्	४०	३	एकधुस्	२५४	६५	एलापणी	१२३	१४०
ऋमीष	२४३	३२	एकधुरावह	२५४	६५	एलावालुक, टी.	११८	१२१
ऋह	३०४	७२	एकधुरीण	२५४	६५	एव	४४५	६
ऋण	२३३	३	एकपदी }	७६	१५		{ ४३६	२५६
	{ ४५	२२	एकपाद, टी.				{ ४४५	६
ऋत	{ २३२	२	एकपिङ्ग	१६	६६	एवम्	{ ४४७	१२
ऋतीया	३२५	३२	एकयष्टिका	१७१	१०६		{ ४४६	१५
	{ २६	१३	एकसर्ग	३०६	८०		{ ४४६	१६
ऋतु	{ ३०	२०	एकहायनी	२५५	६८	एषिका	२७८	३२
	{ ३७३	६८	एकाकिन्	३०६	८२	एषिका	२७८	३२
ऋनुमती	१४७	२१	एकाम	{ ३०६	७६	(ऐ)		
ऋते	४४१	३		{ ४०६	१६६	ऐकागारिक	२७६	२४
ऋविच्	१८६	१७	एकाम्रथ	३०६	८०	ऐकद	६३	१८
ऋस्	२३६	२३	एकान्त	१५	६७	ऐडनिड	१६	६६
ऋद्धि	११६	११२	एकाव्दा	२५५	६८	ऐण	१३२	८
ऋधु	३	८	एकायन	३०६	७६	ऐण्य	१३२	८
ऋधुसिन्	१०	४४	एकायनगत	३०६	८०	ऐतिह्य	१८४	१२
ऋश्य	१३३	१०	एकावली	१७१	१०६	ऐन्द्रियक	३०६	७६
	{ ४६	१	एकाधील	१०६	८१	ऐरावण	११	४६
ऋषभ	{ ११७	११६	एकाधीला	{ १०६	८१		{ ११	४६
	{ ५५२	५६		{ ११०	८५	ऐरावत	{ १८	३
ऋषि	१६३	४३	एड	१५५	४८		{ ६८	३८
ऋष्टि, टी.	२२४	८६	एडक	२५७	७६	ऐरावती	१६	६६
ऋष्य, टी.	१३३	१०	एडगज	१२४	१४७	ऐलविल	१६	६६

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
ऐलेय	११८	१२१	औशीर	४०४	१६४	कच्छ	१५६	५३
ऐश्वर्य	६	३६	औषध	{ १२१ १३५		कञ्चुक	{ ५६ ६	
ऐषमस्	४५२	२०		{ १५५ ५०			{ २१६ ६३	
(औ)			औष्ट्रक	२५८	७७	कञ्चुकिन्	२००	८
ओकम्	४२६	२४२	(क)				{ १६२ ७४	
	{ ४६ ६		क	३३०	५		{ २०६ ३७	
ओष	{ १४० ३६		कंस	२४३	३२	कट	{ २४१ २६	
	{ ३४१ ३२		कंसारति	५	२१		{ ३४४ ४१	
ओङ्गार	४०	४	ककुद	३६४	६६		{ ८७ ५	
ओजस्	४२६	२४२	ककुधती	१६२	७४	कटक	{ १७२ १०७	
ओङ्गुप	१०८	७६	ककुन्दर	१६२	७५		{ ३३५ १८	
ओतु	१३२	६	ककुम्	१७	१	कटभी	१३५	१५०
ओदन	२४६	४८	ककुभ	{ ४६ ७		कटम्बरा	११०	८५
ओम्	४४७	१२		{ १०० ४५			{ ११० ८५	
ओष	३१८	६	ककुलक	१७८	१३०	कटम्बरा, टी.	{ ११० ८५	
ओषधि }	{ ६ ६		ककुलट	३०५	७६		{ १२५ १५३	
ओषधी }	{ १२१ १३५		कक्ष	{ १६४ ७६		कटाक्ष	१६८	६४
ओषधीश	२०	१४		{ ४१६ २८८		कटाह	४६६	२१
ओष्ठ	{ १६७ ६०		कक्षा	{ २१० ४२		कटि	१६२	७४
(औ)	{ ४६३ १२			{ २६२ १६७		कटिग्रोथ	१६२	७५
औक्षक	२५२	६०	कङ्क	१३४	१६	कटिलक	१२६	१५४
औचिती	४८२	३६	कङ्कटक	२१६	६४	कटी	४८१	३८
औचित्य	४८२	३६	कङ्कण	१७२	१०८		{ ३६ ६	
औत्तानपादि	२२	२०	कङ्कतिका	१८०	१३६	कट्ट	{ ११० ८५	
औदनिक	२४१	२८	कङ्काल	१६१	६६		{ ३४४ ४२	
औदेरिक	२८६	२१	कङ्कु }	२३८	२०	कट्टुम्बी	१२६	१५६
औपगवक	३२७	३६	कङ्कु }	१६८	१५	कट्टराहिणी	११०	८५
औपयिक	२०५	२४	कच	३००	५५	कटफल	६६	४०
औपवस्त	१६२	३८	कचर	४४८	१४	कट्क	१०२	५६
औमान, टी.	२३४	७	कचित्	{ ७७ १०		कठिञ्जर	१०८	७६
औरभ्रक	२५८	७७	कच्छ	{ ११६ १२८		कठिन	३०५	७६
औरस }	{ १४६ २८			{ ३४२ ३५		कठिलक, टी.	१२६	१५४
औरस्य, टी. }			कच्छप	६७	२१	कठोर	३०५	७६
और्ध्वदैहिक	१८६	३०	कच्छपी	३७६	१३६	कडङ्गर	२३६	२२
और्व	१३	५६	कच्छुर	१५८	५८	कडम्ब	२४३	३५
औलूक, टी.	१४२	४३	कच्छुरा	१११	६२	कडार	३८	६६

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
कण	{ ३०१	६२	कनकाभ्यक्ष	२००	७	कपीतन	{ ६५	२७
	{ ३४८	५३	कनकालुका	२०७	३२		{ ६६	४३
कणप	४६६	२०	कनकाह्वय	१०८	७७		{ १०४	६३
कणा	{ ११२	६६	कनिष्ठ	{ १५३	४३	कपोत	१३४	१४
	{ २४४	३६		{ २४६	४८	कपोतपालिका	८४	१५
कणिका	{ १०५	६६	कनिष्ठा	१६५	८२	कपोताङ्घ्रि	१२०	१२६
	{ ४६१	८	कनीनिका	१६७	६२	कपोल	१६७	६०
कणिश	२३६	२१	कनीयस्	{ ३०१	६२	कफ	१५६	६२
कण्टक	{ ३३५	१८		{ ४२७	२४४	कफिन्	१५८	६०
	{ ४७८	३२	कन्धा	४६१	६	कफोणि	१६४	८०
कण्टकारिका	११२	६३	कन्द	{ १२७	१५७	कवरी	२४५	४०
कण्टकिफल	१०३	६१		{ ४७६	३५	कवन्ध	{ ६२	४
कण्ट	{ १६६	८८	कन्दर	८७	६		{ २३१	११८
	{ ४६३	१२	कन्दराल	६६	४३	कम्	४३६	२५६
कण्टभूपा	१७१	१०४	कन्दर्प	६	२५	कमठ	६७	२१
कण्डू	१५६	५३	कन्दली	१३२	६	कमटी	६८	२४
कण्डूया	१५६	५३	कन्दु	२४२	३०	कमण्डलु	१६४	४६
कण्डूरा	११०	८६	कन्दुक	१८०	१३८	कमन	२६०	२४
कण्डोल	१४१	२६	कन्धरा	१६६	८८		{ ६२	३
कण्डोलीवीणा	२७८	३१	कन्यकाजात	१४८	२४	कमल	{ ७२	४०
कक्षुण	१२६	१६६	कन्या	१४४	८		{ ४०७	२०३
कथा	४०	६	कपट	५५	३०	कमला	७	२७
कदम्बन्	७६	१६	कपर्द	८	३५	कमलासन	५	१७
कदम्ब	६६	४२	कपर्दिन्	८	३२	कमलोत्तर	२६७	१०६
कदम्बक	{ १४०	४०	कपाट	८४	१७	कमितृ	२६०	२३
	{ २३७	१७	कपाल	१६१	६८	कम्प	५७	३८
कदर	१०१	५०	कपालभृत्	८	३२	कम्पन	३०४	७४
कदर्य	२६८	४८	कपि	१३१	३	कम्प	३०४	७४
कदला, टी.	११६	११३	कपिकच्छु	११०	८७	कम्बल	{ १७४	११६
कदली	{ ११६	११३	कपित्थ	६४	२१		{ ४०७	२०३
	{ १३२	६	कपिल	३८	१६	कम्बलिवाद्यक	२१३	५२
कदाचित्	४४२	४		{ १८	४	कम्बि	{ २४३	३४
कदुष्ण	२५	३५	कपिला	{ १०४	६३	कम्बी		
कद्रु	३८	१६		{ ११८	१२०	कम्बु	{ ६७	२३
कट्ट	२६४	३७	कपिवल्ली	११२	६७		{ ३८१	१४२
कनक	२६४	६४	कपिश	३८	१६	कम्बुग्रीवा	१६६	८८

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
कम्र	२६०	२४	करिशावक	२०८	३५	कर्परी	२६६	१०१
कर	२५	३३	करीर	१०८	७७	कर्पास	४७६	३५
	२०६	२७		३६८	१८२	कर्पूर	१७८	१३०
	३६५	१७३	करीष	२५०	५१	कर्पुर	१४	६०
	४६३	१२	करुणा	५२	१७		३८	१७
करक	२०	१२	करेड	५२	१८	कर्मकर	२६४	६४
	१०४	६४		१३५	१६		२७४	१५
करका	३०३	६	करेणु	३५०	५६	कर्मकार	२८६	१६
करज	१००	४७	करोटि	१६१	६६		२८६	१८
	१२०	१२६	कर्क	२११	४६	कर्मक्षम	२८६	१८
करञ्जक	१००	४७	कर्कटक	६७	२१	कर्मठ	२८६	१८
	१३५	२०	कर्कटी	१२६	१५५	कर्मण्या	२८०	३८
करट	३४४	४१	कर्कन्धू	६८	३६	कर्मन्दिर्	१६३	४१
	२७०	२		४८१	३८	कर्मवृत्त	३१७	३
करण	३५१	६१	कर्करी	२४२	३१	कर्मशील	२८६	१८
	४६८	१८	कर्करेड	१३५	१६	कर्मशर	२८६	१८
करण्ड	७०	३३	कर्कश	१२४	१४६	कर्मसचिव	१६६	४
करतोया	२७६	३४		४१८	२२६	कर्मार	१२७	१६०
करपत्र	२२३	८६	कर्कास	१२६	१५५	कर्मन्द्रिय	३६	८
करपाल	२२४	६१	कर्कुर	१२६	१५४	कर्प	२६१	८६
करपालिका	१६४	८१	कर्कुरक	१२१	१३५	कर्षक	२३४	६
करभ	१७२	१०८	कर्ण	१६८	६४	कर्षचतुष्टय	२६१	८६
करभूषण	१०५	६७	कर्णनलीकस्	१३३	१३	कर्षफल	१०३	५८
करमर्दक	२४६	४८	कर्णधार	६४	१२	कर्षू	४२१	२३१
करम्भ	१६५	८३	कर्णवेष्टन	१७०	१०३	कल	४७	२
करम्ह	२२४	८६	कर्णिका	१७०	१०३	कलकल	४६	२५
करवाल, टी.	१०८	७७		३३४	१५		२१	१७
करवीर	१६५	८२	कर्णिकार	१०३	६०	कलङ्क	३३०	४
करशाखा	२०६	३७	कर्णिरथ	२१३	५२		४०१	१८७
करशीकर	७३	४३	कर्णेजप	२६७	४७	कलधौत	३५८	८३
करहाट	१०१	५२	कर्तरी	२७६	३३	कलम्ब	२२३	८७
करहाटक	४१२	२१४	कर्दम	६३	६		२४३	३५
कराल	२२८	१०७	कर्पट	१७४	११५	कलभ	२०८	३५
करिगर्जित	२०८	३६	कर्पर	१६१	६८	कलम	२४०	२४
करिणी	२०८	३४	कर्पराल	६६	२६	कलम्बी	१२७	१५७
करिन्	११२	६७						
करिपिप्ली								

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
कलारव	१३४	१४	कलमाष	३८	१७	काक	१३५	२०
कलल	१५२	३८		२६	२	काकचिन्हा	११३	६८
कलविङ्क	१६५	१८	कलय	{ १५७	५७	काकतिन्दुक	६८	३६
कलश	२४२	३१		३६३	१६८	काकनासिका	११७	११८
कलशि	१११	६३	कल्या	४४	१८	काकपत्र	१६६	६६
कलस, टी.	२४३	३१	कल्याण	३२	२५	काकपीलुक	६८	३६
कलईस	१३६	२३	कल्लोल	६२	६	काकमाची	१२५	१५१
कलह	२२८	१०४	कवच	२१६	६४	काकमुद्रा	११६	११३
	२०	१५		१२२	१३६	काकली	४६	२
कला	{ २८	११	कवरी	{ १६६	६७	काकाही	११७	११८
	४०६	२०७		२४५	४०	काकिणी	४६१	६
कलाद्	२७२	८	कवल	२५१	५४	काकिनी, टी.	४६१	६
कलानिधि	२०	१४	कवि	{ २३	२५	काकु	४२	१२
कलाप	३७८	१३६		१८२	५	काकुद	१६७	६१
कलाय	२३७	१६	कविका	२१२	४६	काकेन्दु	६८	३६
कलि	{ २२८	१०५	कविय	४७६	३५	काकोदुम्बरिका	१०३	६१
	४०७	२०३	कवोष्ण	२५	३५	काकोदर	५६	७
कलिका	६२	१६	कव्य	१८८	२४	काकोल	{ ६०	१०
कलिकारक, टी.	१०१	४८	कशा	२७८	३१		१३५	२१
कलिङ्ग	{ १०५	६७	कशाई	२६३	४४	काशी	१२०	१३१
	१३४	१६	कशिपु	३७६	१३७	काच	{ २७८	३०
कलिद्रुम	१०३	५८	कशेरु	४६४	१३		३४१	३३
कलिमारक	१०१	४८	कशेरुका	१६१	६६	काचस्थात्री	१०२	५४
कलिल	३०७	८५	कश्मल	२२६	१०६	काचित	३०८	८६
कलुष	{ ३१	२३		२१२	४७	काचन	२६४	६५
	६५	१४	कश्य	{ २८१	४०	काचनाह्वय	१०५	६५
कलेवर	१६१	७०		२६६	४४	काचनी	२४६	४१
कल्क	३३३	१४	कष	२७८	३२	काचनी	१७२	१०८
	३१	२१	कषाय	{ ३६	६	काजिक	२४५	३६
कल्प	{ २१	२२		२६०	१६२	काण्ड	{ २३६	२२
	१६२	३६	कष्ट	६१	४		३४७	५०
	२०५	२४	कस्तुरी	१७८	१२६	काण्डपृष्ठ	२१७	६७
कल्पना	२१०	४२	कह्लार	७१	३६	काण्डवत्	२१८	६६
कल्पवृक्ष	१२	५०	कह्ल	१३६	२२	काण्डस्वृष्ट, टी.	२१७	६७
कल्पान्त	३१	२२	काङ्क्षा	५४	२७	काण्डीर	२१८	६६
कल्पप	३१	२३	काङ्क्षताल	४७	४	काण्डेष्ठ	११४	१०४

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
कातर	२६१	२६	कामुकी	१४४	६	कामुक	२२२	८३
कात्यायनी	{ ६ ३६ १४६ १७		काम्पित्य ✓	१२४	१४६	कार्षापण	२६२	८८
कादम्ब	१३६	२३	काम्बल	२१४	५४	कार्षिक, टी.	२३४	६
कादम्बरी	२८१	३६	काम्बविक	२७२	८	कार्षिक	२६२	८८
कादम्बिनी	१६	८	काम्बोज	२११	४५	कार्य	१००	४४
काद्रवेय	५८	४	काम्बोजी	१२२	१३८	काल	{ १४ ५६ २५ १ ३७ १४ ४०७ २०३	
कानन	८८	१	काम्यदान	३१७	३		{ ४६२ ११	
कानीन	१४८	२४	काय	१६१	७१			
कान्त	२६६	५२	काय (तीर्थ)	१६६	५०	कालक	१५५	४६
कान्तलक	११६	१२८	कायस्था	१०३	५६	कालकण्ठक	१३५	२१
कान्ता	१४२	३	कारण	३३	२८	कालकूट	६०	१०
कान्तार	{ ७६ १७ ३६८ १८१		कारणा	६१	३	कालखण्ड	१६०	६६
कान्तारक	१२८	१६३	कारणिक	२८६	७	कालधर्म	२३०	११६
कान्ति	{ २१ १७ ३१८ ८		कारणव	१३६	३४	कालपृष्ठ	२२२	८३
कान्दविक	२४१	२८	कारम्भा	१०२	५६	कालपेशिका	१११	६०
कान्दिशीक	२६४	४२	कारवी	{ ११५ १११ १२५ १५२ २४४ ३७ २४५ ४०		कालपेशिका	{ १११ ६० ११५ १०६	
कापथ	७६	१६				कालपेशी	११२	६६
कापोत	{ १४१ ४३ २६८ १०६		करवेल	१२६	१५४	कालशेग	२५१	५३
कापोताञ्जन	२६६	१००	कारा	२३१	११६	कालसूत्र	६०	२
काम	{ ६ २५ ५४ २८ २५२ ५७ २८३ १४७		कारिका	३३४	१५	कालस्कन्ध	{ ६८ ३८ १०५ ६८	
			कारिष	३२८	४३		{ ११२ ६४ ११५ १०६ २२४ ३७	
			कारु	२७१	५	काला		
			कारुणिक	२८८	१५	कालागुरु	१७७	१२७
कामंगामिन्	२२०	७६	कारुण्य	५२	१८	कालानुसार्य	{ ११८ १२२ १७७ १२६	
कामन	२६०	२४	कारोत्तर	२८१	४२	कालायस	२६५	६८
कामपाल	६	२३	कार्तस्वर	२६४	६५	कालिका	३३४	१५
कामम्	४४८	१३	कार्तान्तिक	२०२	१४	कालिन्दी	७०	३२
कामयितृ	२६०	२४	कार्तिक	३०	१७	कालिन्दीभेदन	६	२४
कामिनी	{ १४२ ३ ३७२ ११६		कार्तिकिक	३०	१८	काली	६	३६
कामुक	२६०	२३	कार्तिकेय	६	३६	कालीयक, टी.	{ ११३ १०१ १७७ १२६	
कामुका	१४४	६	कार्पास	१७३	१११			
			कार्पासी	११७	११६			
			कार्प	२८६	१८			
			कार्मण	३१७	४			

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
कालेयक	११३	१०१	किटि	१३१	२	कीर	१३५	२१
काल्पक	१२१	१३५	किट्ट	१६०	६५	कीर्ति	४२	११
काल्यक, टी.	१२१	१३५	किण	४६८	१८	कील	{ १३ ५७	
काल्या	२५६	७०	किण्णिही	१११	८६		{ ४०६ २०६	
कावचिक	२१७	६६	किण्व	२८१	४२	कीलक	२५६	७३
कावेरी	७०	३५	कितव	{ १०८ ७७		कीलाल	{ ६२ ३	
काव्य	२३	२५		{ २८२ ४३			{ ४१० २०६	
काश	१२८	१६२	किन्नर	{ ४ ११		कीलित	२६६	४२
काश्मरी	६७	३५		{ १६ ७१		कीश	१३१	३
काश्मर्य	६७	३६	किन्नरेश	१६	६६	कीशपर्णा	१११	८६
काश्मीर	१२४	१४५	किम्	{ ४३६ २६०		कु	{ ७५ ३	
काश्मीरजन्मन्	१७६	१२४		{ ४४३ ५			{ ४३० २४६	
काश्यपि	२४	३२	किमु	४४३	५	कुकर	१५५	४८
काश्यपी	७५	२	किमुन	{ ४४१ २		कुकुन्दर	१६२	७५०
काष्ठ	६१	१३		{ ४४३ ५		कुकूल	४११	२१२
काष्ठकुदाल	६५	१३	किपचान	२६८	४८	कुकुट	१३४	१७
काष्ठतक्ष्	२७२	६	किपुरुष	१६	७१	कुकुभ	१३६	३५
	{ १७ १		किवदन्ती	४१	७	कुक्कुर	{ १२१ १३२	
काष्ठा	{ २८ ११		किर	१३१	२		{ २७५ २१	
	{ ३४६ ४८		किरण	२५	३३	कुक्षि	१६३	७७
काष्ठाश्रुवाहिनी	६४	११	किरात	२७५	२०	कुक्षिभरि	२८६	२१
काष्ठीला	११६	११३	किराततिक्त	१२३	१४३	कुङ्कुम	१७६	१२३
कास	१५६	५२	किरीट	१७०	१०२	कुच	१६३	७७
कासमर्द	४६८	१६	किर्मार	३८	१७	कुचन्दन	१७८	१३२
कासर	१३१	४	किल	४३८	२६३	कुचर	२६४	३७
कासार	५६	२८	किलास	१५६	५३	कुचाम	१६३	७७
किशाब	{ २३६ २१		किलासिन्	१५८	६१	कुज	२३	२५
	{ ३६४ १७२		किलिन्नक	२४१	२६	कुक्षित	३०४	७१
किशुक	६६	२६	किलिन्न	{ ३१ २३		कुम्भ	{ ८८ ८	
किक्कीदिवि	१३४	१६		{ ४२१ २३२			{ ३४३ ३७	
किकर	२७४	१७	किशोर	२११	४६	कुञ्जर	२०८	३४
किकिणी	१७२	११०	किप्कु	३३१	७	कुञ्जराशन	६४	२०
किचित्	४४४	८	किसलय	६२	१४	कुञ्जल	२४५	३६
किञ्जलक	६७	२२	कीकस	१६१	६८	कुट	{ ८६ ५	
	{ ७३ ४३		कीचक	१२८	१६१		{ २४२ ३२	
किञ्जलक	{ ३३७ २१		कीनाश	४१७	२२४	कुटक	२३६	१३

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
कुटज	१०५	६६	कुथ	१२६	१६६	कुम्भकार	२७१	६
कुटजट	१०२	५७	कुथ	२१०	४२	कुम्भसंभव	२२	२०
	१२०	१३१	कुदाल	६४	२२	कुम्भिका	७१	३८
कुटिल	३०४	७१	कुनटी	२७८	१०८	कुम्भी	६६	४०
कुटी	८१	६	कुनाशक	१११	६१	कुम्भीर	६७	२१
	४८१	३८	कुन्त	२२५	६३	कुरङ्ग	१३२	८
कुटुम्बव्यावृत्त	२८७	११	कुन्तल	१६८	६५	कुरङ्गक	२७६	२४
कुटुम्बिनी	१४३	६	कुन्द	१०७	७३	कुरण्टक	१०७	७४
कुट्टनी	१४७	१६		११८	१२१		१०७	७५
कुट्टिम	४७६	३४		४६८	१६	कुरवक	१०७	७४
कुट्टमल, टी.	६२	१६	कुन्दुर	११८	१२१		१०७	७५
कुठर	२५७	७४	कुन्दुरकी	११८	१२४	कुरर	१३६	२३
कुठार	२२४	६२	कुपूय	२६६	५४	कुरण्टक	१०७	७४
कुठेरक	१०८	७६	कुप्य	२६३	६१	कुरवक, टी०	१०७	७४
कुडव	२६२	८६	कुपेर	१६	६८	कुरविन्द	१२७	१५६
कुडङ्गक	४६७	१७		१७	३	कुरविस्त	२६१	८६
कुड्मल	६२	१६	कुपेरक	११६	१२७	कुल	१४१	४१
कुड्य	८१	४	कुपेराश्री	१०२	५५		१८१	१
कुणप,	२३१	११८	कुञ्ज	१५५	४८	कुलक	६८	३६
	टी० ४६६	२०	कुमार	६	४०		१२६	१५५
कुण्ठि	११६	१२८		५०	१२		२७१	५
	१५५	४८	कुमारक	६५	२५	कुलटा	१४४	१०
कुण्ठ	२८८	१७	कुमारी	१०७	७३	कुलथिका	१६६	१०२
कुण्ड	१५१	३६		१४४	८	कुलपालिका	१४३	७
	२४२	३१	कुमुद	१८	३	कुलश्रेष्ठिन्	२७१	५
कुण्डल	१७०	१०३		७१	३७	कुलसंभव	१८१	२
कुण्डलिन्	५६	७	कुमुदबान्धव	२०	१३	कुलस्त्री	१४३	७
कुण्डी	१६४	४६	कुमुदिका	६६	४०	कुलाय	१४०	३७
कुतप	१६०	३१	कुमुदिनी	७२	३६	कुलाख	२७१	६
	३७६	१३६	कुमुद्रत्	७७	६	कुलाली	२६६	१०२
कुतुक	५५	३१	कुमुद्रती	७१	३८	कुलिश	११	४७
कुतुप	२४३	३३	कुम्भा	१८६	१८	कुली	११२	६४
कुतू	२४३	३३	कुम्भ	६७	३४	कुलीन	१८२	३
कुतूहल	५५	३१		२०६	३७		२११	४४
कुत्सा	४२	१३		३८१	१४३	कुलीर	६७	२१
कुत्सित	२६६	५४						

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
कुल्माष	{ २३८ १८ ४६६ २१		कूकुद	२८७ १४		कृताभिषेका	१४३ ५	
कुल्माषाभिपुत	२४५ ३६		कूट	{ ८६ ४ १४१ ४२ ३४५ ४४		कृतिन्	{ १८२ ६ २८५ ४	
कुल्मास	२३८ १८		कूटयन्त्र	२७७ २६		कृत	३१३ १०३	
कुल्य	१६१ ६८		कूटशास्त्रमलि	१०० ४७		कृति	१६४ ४६	
कुल्या	७० ३४		कूटस्थ	३०४ ७३		कृतिवासस्	८ ३१	
कुल	{ टी. ७१ ३७ ६८ ३६ ४८३ ४२		कूप	६८ २६		कृत्या	३६२ १६७	
कुललय	७१ ३७		कूपक	{ ६४ १० ६४ १२		कृत्रिमधूपक	१७७ १२८	
कुवाद	२६४ ३७		कूर्च	१६७ ६२		कृत्त	३०२ ६५	
कुविन्द	२७१ ६		कूर्चशीर्ष	१२३ १४२		कृपण	२६८ ४८	
कुवेशी	६५ १६		कूर्चिका	२४७ ४४		कृपा	५२ १८	
कुश	{ १२६ १६६ ४१७ २२५		कूर्दन	५६ ३३		कृपाण	२२३ ८६	
कुशल	{ ३२ २६ २८५ ४ ४१२ २१३		कूर्पर	१६४ ८०		कृपाणी	२७६ ३३	
कुशी	२६६ ६६		कूर्पासक	१७५ ११८		कृपालु	२८८ १५	
कुशीलव	२७३ १२		कूर्म	६७ २१		कृपीटयोनि	१३ ५३	
कुशेशय	७२ ४०		कूल	६३ ७		कृमि, टी.	१३३ १३	
कुष्ठ	{ ११६ १२६ १५६ ५४ ४७६ ३४		कुवर	२१५ ५७		कृमिकोशोत्थ	१७३ १११	
कुसीद	२३३ ४		कुष्माण्डक	१२६ १५५		कृमिज	११४ १०६	
कुसीदिक	२३३ ५		कुक्कण	१३५ १६		कृमिज	१७७ १२६	
कुसुम	६३ १७		कुक्कलास	१३३ १२		कुश	३०१ ६१	
कुसुमाञ्जन	२६७ १०३		कुक्कवाकु	१३४ १७		कुशातु	१३ ५४	
कुसुमेपु	६ २६		कुकाटिका	१६६ ८८		कुशातुरेतस्	८ ३३	
कुसुम्भ	{ २६७ १०६ २८२ १४५		कुच्छ्र	{ ६१ ४ १६६ ५२		कुशाश्विन्	२७३ १२	
कुसृति	५५ ३०		कृत	३५६ ८४		कुषक	{ २३४ ६ टी. २३६ १३	
कुस्तुम्बुरु	२४५ ३८		कृतपुङ्गव	२१८ ६८		कृषि	२३२ २	
कुहना	१६६ ५३		कृतमाल	६४ २४		कृषिक	२३६ १३	
कुहर	५८ १		कृतप्रव	२८५ ४		कृषीवल	२३४ ६	
कुह	२८ ६		कृतलक्षण	२८६ १०		कृष्ट	२३४ ८	
			कृतसप्तिका	१४३ ७		कृष्टि	१८२ ६	
			कृतहस्त	२१८ ६८		कृष्ण	{ ५ १८ २८ १२ ३७ १४ २४४ ३६	
			कृतान्त	{ १४ ५८ २५४ ७१		कृष्णपाकफल	१०५ ६७	
						कृष्णफला	११२ ६६	

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
कृष्णभेदी	११०	८६	केसरिन्	{ १०४	६४	कोदण्ड	२२२	८३
कृष्णला	११३	६८		{ १३०	१	कोद्रव	२३७	१६
कृष्णलोहित	३८	१६	कैटभजित्	६	२२	कोप	५४	२६
कृष्णवर्त्मन्	१३	५४	कैटय	६६	४०	कोपक्रम	४४७	२८
कृष्णवृन्ता	१०२	५५	कैतव	{ ५५	३०	कोपज्ञ	४४७	२८
कृष्णसार	१३३	१०		{ २८२	४४	कोपना	१४२	४
कृष्णा	११२	६६	कैदारक	२३६	११	कोपिन्	२६२	३२
कुष्णिका	२३८	१६	कैदारिक	२३६	११	कोमल	३०५	७८
केकर	१५५	४६	कैदार्य	२३६	११	कोयष्टिक	२३६	३५
केका	१३८	३१	कैरव	७१	३७	कोरक	६२	१६
केकिन्	१३८	३०	कैलास	१६	७०	कोरङ्गी	११६	१२५
केतकी	१३०	१६६	कैवर्त	६५	१५	कोरदूष	२३७	१६
केतन	{ २२६	६६	कैवर्तामुस्तक	१२०	१३२	कोल	{ ६४	११
	{ ३७२	१२१	कैवल्य	३५	६		{ ६८	३६
केतु	३५३	६७	कैशिक	१६६	६६		{ १३१	२
केदर	४६६	२०	कैश्य	१६६	६६	कोलक	{ १७८	१२६
केदार	२३६	११		{ १३२	७		{ २४४	३६
केनिपातक	६५	१३	कोक	{ १३६	२२	कोलदल	१२०	१३०
केयूर	१७२	१०७	कोकनद	७२	४२	कोलम्बक	४६	७
केलि	५६	३२	कोकनदच्छवि	३८	१५	कोलवल्ली	११२	६७
केवल	४११	२१२	कोकिल	१३५	१६	कोला	११२	६७
केश	{ २६८	६५	कोकिलाक्ष	११४	१०४	कोलाहल	४६	२५
	{ ४६३	१२	कोटर	६१	१३	कोली	६८	३६
केशपाशी	१६६	६७	कोटवी	१४६	१७	कोविद	१८२	५
केशर, टी.	७३	४३		{ २२२	८४	कोविदार	६४	२२
केशव	{ ५	१८	कोटि	{ २२५	६३	कोरा, टी.	१४०	३७
	{ १५४	४५		{ ३४५	४५	कोराफल	१७८	१३०
केशवेश	१६६	६७		{ ४७१	२४	कोरातकी	३३१	८
केशाम्बुनाम	११८	१२२	कोटिवर्षा	१२१	१३३	कोप	{ १४०	३७
केशिक	१५४	४५	कोटिश	२३६	१२		{ २०३	१७
केशिन्	१५४	४५	कोटी, टी.	२२२	८४		{ २६३	६१
केशिनी	११६	१२६	कोटार, कोट्ट	४६८	१८		{ ४२०	२३०
	{ ७३	४३	कोठ	१५६	५४	कोष्ठ	३४६	४७
केसर	{ ६५	२५	कोण	{ ४८	६	कोष्ण	२५	३५
	{ १०५	६५		{ २२५	६३	कौकुटिक	३३५	१७
						कौक्षिक	२२३	८६
						कौटतश्च	२७२	६

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
कौटिक	२७३	१४	कस्य	२५६	८१	कीर्तिकिका	११२	६४
कौण्ठ	१४	५६	कस्य	१५६	६३	कीव (व)	{ १५२	३६
कौतुक	५५	३१	कस्याद्	१४	५६		{ ४१६	२२२
कौतूहल	५५	३१	कस्याद्	१४	५६	केरा	३२४	२६
कौद्रवीण	२३४	८	कायक	२५८	७८	कोम	१६०	६५
कौन्तिक	२१८	७०	किमि	१३३	१३		{ ४६	२४
कौन्ती	११८	१२०	क्रिया	३६१	१६६		{ ३१८	८
कौपीन	३७६	१२६	क्रियावत्	२८६	१८	कषण	४६	२४
कौमुदी	२१	१६	कीडा	{ ५६	३२	कथित	३१०	६५
कौमोदकी	७	२८		{ ५६	३३	काण	४६	२४
कौलटिनेय	१४६	२७	कुञ्च	१३६	२२		{ २८	११
	{ १४६	२६	कुधु	५४	२६	क्षण	{ ५७	३८
कौलेय	{ १४६	२७	कुष्ट	५७	३५		{ ३३८	५४
कौलेटर	१४६	२६		{ २६७	४७	क्षणदा	२६	४
कौलीन	३७३	१२३	कूर	{ ३०५	७६	क्षणन	२३०	११४
कौलेयक	२७५	२१		{ ४०६	२००	क्षणप्रभा	१६	६
	{ ६७	३४	केतव्य	२५६	८१	क्षतज	१५६	६४
कौशिक	{ ३३२	१०	केय	२५६	८१	क्षतव्रत	१६७	५४
कौशेय	१७३	१११	कोड	{ १३१	२		{ २१५	५६
कौस्तुभ	७	२८		{ १६३	७७	क्षत्र	{ २७०	३
ककच	२७६	३४	कोध	५४	२६		{ ३५४	७०
	{ १०८	७७	कोधन	२६२	३२	क्षत्रिय	१६८	१
ककर	{ १३५	१६	कोरायुग	७६	१८	क्षत्रिया	१४५	१४
कनु	१८५	१३	कोष्ट	१३१	५	क्षत्रियो	१४६	१५
कनुवांसिन्	८	३४	कोष्टविज्ञा	१११	६३	क्षत्रियाणी	१४५	१४
कनुभुज्	३	६	कोष्ठी	१३५	११०	क्षपा	२६	४
कथन	२३०	११५	कोष्ठ	१३६	२२	क्षपाकर	२०	१५
	{ २२८	१०७	कोष्ठदारण	६	४०	क्षम	३८५	१५१
कन्दन	{ ३७६	१३०	क्रम	३१६	१०	क्षमा	३८५	१५१
कन्दित	५७	३५	क्रमथ	३१६	१०	क्षमितृ	२६२	३१
क्रम	१६२	३६	क्रिज	३१३	१०५	क्षमिन्	२६२	३१
	{ ६६	४१	क्रिजाथ	१५८	६०	क्षन्तु	२६२	३१
क्रमुक	{ १३०	१६६	क्रिशित	३११	६८		{ ३१	२२
	{ १५७	७५	क्रिष्ट	{ ४४	१६		{ १५५	५१
क्रमेलक	२५७	७५		{ ३११	६८	क्षय	{ २०३	१६
कयविक्रयिक	२५८	७८	कीर्तिक	११५	१०६		{ ३१८	७
क्रयिक	२५८	७८					{ ३८७	१५४

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
क्ष्व	{ १५६	५२	क्षुद्राण्डमत्स्यसंघात	६६	१६	क्ष्माभृत्	{ ८६	१
	{ २३८	१६	क्षुष्	२५१	५४		{ १६८	१
क्ष्वयु	१५६	५२	क्षुधा, टी.	२५१	५४	क्ष्वेड	५६	६
क्षान्त	३११	६७	क्षुधाभिजनन	२३८	१६	क्ष्वेडा	{ २२८	१०७
क्षान्ति	५३	२४	क्षुधित	२८६	३०		{ ३४७	५०
क्षार	२६६	६६	क्षुप	६०	८	क्ष्वेडित	४६६	३४
क्षारक	६२	१६	क्षुमा	२३८	२०	(ख)		
क्षारमृत्तिका	७६	४	क्षुर	{ ११४	१०४	ख	{ १७	१
क्षारित	२६६	४३		{ ४६६	२०		{ ३३८	२३
क्षिति	{ ७५	२	क्षुरक	६६	४०		{ ४०७	२२
	{ ३५६	७७	क्षुरप्र	४६६	२०		{ १३८	३२
क्षिपणि }	६५	१३	क्षुरिन्	२७२	१०	खग	{ २२३	८६
क्षिपणी }			क्षुल्लक	{ २७४	१६		{ ३३८	२४
क्षिपा	३१६	११		{ ३३२	१०	खगेश्वर	७	२६
क्षिप्त	३०८	८७	क्षेत्र	{ २३६	११	खजाका	२४३	३४
क्षिप्तु	२६२	३०		{ ४०१	१८६	खज्ज	१५५	४६
क्षिप्र	१५	६४	क्षेत्रज्ञ	{ ३३	२६	खज्जन	१३४	१५
क्षिया	३१८	७		{ ३४३	३६	खज्जरीट	१३४	१५
	{ ६२	४	क्षेत्राजीव	२३४	६	खट	४६७	१७
क्षीर	{ २५०	५१	क्षेपण	३१६	११	खट्वा	१८०	१३८
	{ ४०२	१६१	क्षेपणि }	६५	१३		{ ७	२८
क्षीरविकृति	२४७	४४	क्षेपणी }			खट्वा	{ १३१	४
क्षीरविदारी	११५	११०	क्षेपिष्ठ	३१५	१११		{ २२३	८६
क्षीरशुक्ला	११५	११०		{ ३२	२६	खज्जिन्	१३१	४
क्षीरावी	११३	१००	क्षेम	{ ११६	१२८	खण्ड	२०	१६
क्षीरिका	१००	४५		{ ४६६	३४	खण्डपरशु	८	३१
क्षीरोद	६२	२	क्षेत्र	२३६	११	खण्डविकार	२४६	४३
क्षीव	२६०	२३	क्षोणि }	७५	२	खण्डिक	२३७	१६
क्षुत	१५६	५२	क्षोणी }			खदिर	१०१	४६
क्षुताभिजनन	२३८	१६	क्षोद	२२६	६६	खदिरा	१२३	१४१
क्षुत्	१५६	५२	क्षोदिष्ठ	३१५	१११	खद्योत	१३७	२८
क्षुद्र	{ २६८	४८	क्षोम	८३	१२	खनि	८७	७
	{ ४००	१८६	क्षौद्र	२६८	१०७	खनित्र	२३६	१२
क्षुद्रघण्टिका	१७२	११०	क्षौम	१७३	११३	खनुर	१३०	१६६
क्षुद्रशङ्ख	७६	२३	क्षुण्णत	३०६	६१	खर	{ २५	३५
क्षुद्रा	{ ११२	६४	क्ष्मा	७५	३		{ ३५८	७७
	{ ४००	१८६						

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
खरण्यस्	१५४	४६	खोड	१५५	४६	गण्डक	१३१	४
खरण्यस	१५४	४६	ख्यात	२८६	६	गण्डकारी	१२३	१४१
खरण्यपा	१२२	१३६	ख्यातगर्हण	३१०	६३	गणकाली	१२३	१४१
खरमञ्जरी	१११	८६	ख्याति	३१८	६	गण्डशैल	८७	६
खरा	१०६	६६	(ग)			गण्डाली	१२७	१५६
खरागरी	१०६	६६	गगन	१७	१	गणडीर	१२७	१५७
खराश्वा	११५	१११	गङ्गा	७०	३१	गण्डपद	६७	२२
खर्ज	१५६	५३	गङ्गाधर	८	३४	गण्डपदी	६८	२४
खर्जूर	{ १३० १६६		गज	२०८	३४	गण्डूषा	४६२	१०
	{ २६५	६६	गजता	२०८	३६	गतनासिक	१५४	४६
खर्जूरी	१३०	१६६	गजबन्धनी	२१०	४३	गति	२१२	४६
खर्ज	{ १५४ ४६		गजभक्ष्या	११८	१२३	गद्	१५५	५१
	{ ३०३	७०	गजानन	६	३८	गदा	७	२८
खर्वट	४७८	३३	गङ्गा	८२	८	गद्य	४७७	३१
खल	२६७	४७	गडक	६६	१७	गन्त्री	२१३	५२
खलपू	२८८	१६	गड्ड	४६८	१८	गन्ध	३६	७
खलिनी	३२८	४२	गड्डल	१५५	४८	गन्धक	२६६	१०२
खलीन	२१२	४६		{ १४० ४०		गन्धकुटी	११८	१२३
खलु	४३८	२६४	गण	{ २२१ ८१		गन्धन	३७३	१२२
खल्या	३२८	४२		{ ३४८ ५३		गन्धनाकुली	११६	११४
खात	६८	२७	गणक	२०२	१४	गन्धफली	{ १०२ ५६	
खादित	३१४	११०	गणदेवता	३	१०		{ १०४ ६४	
खारी	२६२	८८	गणनीय	३०२	६४	गन्धमादन	८६	३
खारीक	२३५	१०	गणरात्र	२७	६	गन्धमूली	१२६	१५४
खारीवाप	२३५	१०	गणरूप	१०६	८०	गन्धरस	२६७	१०४
खिल	७६	५	गणहासक	११६	१२८			
खुर	{ १२० १३०		गणाधिप	६	३८	गन्धर्व (न)	{ ४ ११	
	{ २१२ ४६			{ १०६ ७१			{ १३३ ११	
खुरण्यस्	१५४	४७	गणिका	{ १४७ १६			{ २११ ४४	
खुरण्यस	१५४	४७		{ ३३७ २२			{ ३८१ १४२	
खुरम, टी.	४६६	२०	गणिकारिका	१०५	६६	गन्धर्वहस्तक	१०१	५०
खेट	२६६	५४	गणित	३०२	६४	गन्धवह	१४	६२
खेटक	३३६	२०	गणेश	३०२	६४	गन्धवहा	१६७	८६
खेय	६६	२६		{ १६७ ६०		गन्धवाह	१४	६२
खेसा	{ ५६ ३२		गण्ड	{ २०६ ३७		गन्धसार	१७८	१३१
	{ ५६ ३३			{ ४६३ १२		गन्धशुमती	११७	११५

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
गन्धाश्मन्	२६६	१०२	गर्घुत्	१२६	१६५	गाखिडव	२२२	८४
गन्धिक, टी.	२६७	१०२	गर्व	५३	२२	गाखडीव		
गन्धिनी	११८	१२३	गर्हण	४२	१३	गात्र	{ १६१	७०
गन्धोत्तमा	२८१	३६	गर्ह्य	२६६	५४			
गन्धोली	१३७	२७	गर्ह्यवादिन्	२६४	३७	गात्रानुलेपनी	१६६	१३३
गभस्ति	२५	३३	गल	१६६	८८	गान	४६	२६
गभीर	६५	१५	गलकम्बल	२५३	६३	गान्त्री, टी.	३१३	५२
गम	२२५	६५	गलन्तिका	२४२	३१	गान्धार	४६	१
गमन	२२५	६५	गलित	३१३	१०४	गायत्री	{ १०१	४६
गम्भारी	६७	३५	गलोदेश	२१२	४८	गायत्री		
गम्भीर	६५	१५	गल्या	३२८	४२	गाह्यत	२६४	६२
गम्य	३०६	६२	गवय	१३३	११	गार्गक, टी.	३२७	३६
गरल	५६	६	गवल	२६६	१००	गार्भिण्य	१४७	२२
गरागरी, टी.	१०६	६६	गवांम्रज	२५२	५८	गार्हपत्य	१८६	१६
गरिष्ठ	३१५	११२	गवाक्ष	८२	६	गालव	६७	३३
गरी	१०६	६६	गवाशी	१२६	१५६	गिरि	{ ८६	१
गरुड	७	२६	गवीश्वर	२५२	५८			
गरुडध्वज	५	१६	गवेडु, टी.	२४०	२५	गिरिकर्णौ	११४	१०४
गरुडाम्रज	२४	३२	गवेडुका, टी.	२४०	२५	गिरिका	१३३	१२
गरुत्	१३६	३६	गवेधु	२४०	२५	गिरिज	{ २६६	१००
	{ ७	२६	गवेधुका	२४०	२५			
गरुत्मत			गवेषण, टी.	१६०	३२	गिरित, टी.	३१५	११०
	१३८	३४	गवेषणा	१६०	३२	गिरिमल्लिका	१०५	६६
गर्गरी	२५७	७४	गवेषित	३१३	१०५	गिरिश	८	३१
गर्जित	{ १६	८	गव्य	२४६	५०	गिरीश	८	३१
			गव्या	२५२	६०	गिर्	३६	१
गर्त	५८	२	गव्यूति	७६	१८	गिरा	३६	१
गर्दभ	२५८	७७	गहन	{ ८८	१	गिलि, टी.	३१६	११
गर्दभाण्ड	६६	४३				गिलित	३१४	११०
गर्दन	२६०	२२	गह्वर	{ ८७	६	गिलन, टी.	३१६	११
	{ १५२	३६				गीत	४६	२६
गर्भ			गह्वर	४०३	१६२	गीर्ण, टी.	३१४	१०६
गर्भक	१७६	१३५	गह्वर	{ २६४	६४	गीर्ण्य	३१६	११
गर्भांगार	८२	८				गीर्ण्य	३	६
गर्भांशय	१५२	३८	गह्वरुकी	११७	११७	गीष्पति	२३	२४
गर्भिणी	१४७	३२	गाढ	१५	६७	गीर्षति	२३	२४
गर्भोपवातिनी	२५५	६६	गाथिक्य	१४७	२२			

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
गुगुलु	६७	३४	गुह	२३	२४	गृहस्थूष	४७६	३०
गुच्छ	६२	१६	गुह	१८३	७	गृहाराम	८८	१
गुच्छक, टी.	२३६	२१	गुह	३६४	१७१	गृहालिका, टी.	१३३	१२
गुच्छार्ध, टी.	३४२	३५	गुर्विणी	१४७	२२	गृहावमहणी	८३	१३
गुञ्जक, टी.	६२	१६	गुल्फ	१६१	७२	गृहिन्	१६२	३
गुञ्जार्ध, टी.	१७१	१०५	गुल्म	६०	६	गृधक	१४१	४३
गुञ्जा	११३	६८	गुल्म	१६०	६६	गृधुक, टी.	१८०	१३८
गुड	३४६	४६	गुल्म	२२१	८१	गृधुक	१८०	१३८
गुडपुष्प	६५	२७	गुल्म	३८५	१५१	गृह	८१	४
गुडफल	६६	२८	गुल्मिणी	६०	६	गैरिक	८८	८
गुडा	११४	१०५	गुल्म	१३०	१६६	गैरिष	३३३	१२
गुडुची, टी.	१०६	८२	गुल्म	६	३६	गैरिष	२६७	१०४
गुडुची	१०६	८२	गुल्म	८७	६	गो	२५२	६०
गुण	२०३	१६	गुल्म	१११	६३	गो	२५४	६६
गुण	२२२	८५	गुल्म	३६०	१६३	गो	३४०	३०
गुण	२४१	२८	गुल्म	४	११	गोकण्टक	११३	६६
गुण	२७७	२७	गुल्म	१६	६८	गोकर्ण	१३३	१०
गुण	३४८	५४	गुल्म	३०८	८६	गोकर्ण	१६५	८३
गुणवृश्चक	६४	१२	गुल्म	५६	७	गोकर्णी	११०	८४
गुणित	३०८	८८	गुल्म	५६	७	गोकुल	१५२	५८
गुणित	३०८	८६	गुल्म	२०२	१३	गोक्षुरक	११३	६६
गुप्त	६२	१६	गुल्म	१६०	६८	गोक्षुरक	११३	६६
गुप्त	टी. १७१	१०५	गुल्म	३१०	६६	गोक्षुरक	३६	८
गुप्तक	६२	१६	गुल्म	३१६	११	गोजिह्वा	११७	११६
गुप्तार्ध	१७१	१०५	गुल्म	१३०	१६६	गोक्षुरा	१२६	१५६
गुद	१६२	७३	गुल्म	१२४	१४८	गोक्षुर	४६८	१८
गुन्द्र	१२८	१६२	गुल्म	२६०	२२	गोत्र	८६	१
गुन्द्रा	१०२	५५	गुल्म	१३५	२१	गोत्र	१८१	१
गुन्द्रा	१२७	१६०	गुल्म	४६२	१०	गोत्र	४०१	१८६
गुप्त	३०८	८६	गुल्म	१२५	१५१	गोत्रभिद्	१०	४२
गुप्त	३१३	१०६	गुल्म	८१	४	गोत्रा	७५	३
गुप्ति	३५८	८१	गुल्म	४२६	२४७	गोत्रा	२५२	६०
गुफित, टी.	३०८	८६	गुल्म	१३३	१२	गोदावण	२३६	१४
गुम्फ	३८०	१४१	गुल्म	१३३	१२	गोदुह, टी.	२५२	५७
गुम्फित, टी.	३०८	८६	गुल्म	२०२	१५	गोदुह	२५२	५७
गुरण	३१६	११	गुल्म	२६१	२७	गोधन	२५८	५८

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
गोधा	२२२	८४	गोलोमी	{ ११४ १०२		ग्रस्त	{ ४४ २०	
गोधापदी	११७	११६		{ १२७ १५६			{ ३१४ १११	
गोधि	१६७	६२		{ २६६ १११			{ २८ ६	
गोधिका	६७	२२	गोवन्दनी	{ १०२ ५५		ग्रह	{ ३१८ ८	
गोधिकात्मज	१३२	६	गोवन्दिनी, टी.	{ ५ १६			{ ३२८ २४५	
गोधूम	२३८	१८	गोविन्द	{ ३६४ ६८		ग्रहणि	{ १५७ ५५	
गोनर्द	१२०	१३२		{ २४६ ५०		ग्रहणी	{ १५७ ५५	
गोनस	५८	४	गोविप्	४८२	४०	ग्रहणारूक्	१५७	५५
	{ २०० ७		गोशाल	१७८	१३१	ग्रहपति	२४	३०
गोप	{ २५२ ५७		गोशीर्ष	७८	१३	ग्रहीतृ	२६१	२७
	{ ३७६ १३७		गोष्ठ	१८५	१५	ग्राम	{ ८५ १६	
गोपति	२५३	६२	गोष्ठी	३६५	१०१		{ ३८४ १५०	
गोपरस	२६७	१०४	गोष्पद	२५२	५७	ग्रामणी	३४६	५६
गोपा, टी.	११६	११२	गोसंख्य	२६७	१०४	ग्रामतश्च	२७२	६
गोपानसी	८४	१५	गोस	१७१	१०५	ग्रामता	३२८	४२
गोपायित	३१३	१०६	गोस्तना	११५	१०७	ग्रामाधीन	२७२	६
गोपाल	२५२	५७	गोस्तनी	७८	१३	ग्रामान्त	८५	२०
गोपी	११६	११२	गोस्थानक	४	१५	ग्रामीणा	११२	६४
	{ ८४ १६		गौतम	१३२	६	ग्राम्य	४४	१६
गोपुर	{ १२० १३२		गौधार	१३२	६	ग्राम्यधर्म	१६८	५७
	{ ४०२ १६१		गौधेय	३७	१३		{ ८६ १	
गोप्य, टी.	२७४	१७	गौधेर	{ ३८ १४		ग्रावन्	{ ३६६ ११३	
गोप्यक	२७४	१७	गौर	{ ४०५ १६८		ग्रास	२५१	५४
गोमत्	२५२	५८	गौरा	{ ६ ३६		ग्राह	{ ६७ २१	
गोमय	२४६	५०	गौरी	{ १४४ ८			{ ३१८ ८	
गोमायु	१३१	५	गौष्ठीन	७८	१३	ग्राहन्	६४	२१
गोमिन्	१५२	५८	ग्रथित	३०८	८६	ग्रीवा	१६६	८८
गोरण, टी.	३१६	११	ग्रन्थ	३६३	६५	ग्रीष्म	३०	१८
गोरस	२५१	५३	ग्रन्थि	१२८	१६२	ग्रैव, टी.	१७१	१०४
गोर्द	१६०	६५	ग्रन्थिक	२६६	११०	ग्रैव्य, टी.	१७१	१०४
गोल	४६६	२०	ग्रन्थित, टी.	३०८	८६	ग्रैव्यक	१७१	१०४
गोलक	१५१	३६	ग्रन्थिपर्य	१२१	१३२	ग्लस्त	३१४	१११
गोला	२६८	१०८	ग्रन्थिल	{ ६८ ३७		ग्लह	२८२	४५
गोलिह, टी.	६६	३६		{ १०८ ७७		ग्लान	१५८	५८
गोलीद	६८	३६						

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
ग्लास्तु	१५८	५८	घुटिका	१६१	७२	चक्रमर्दक	१२४	१४७
ग्लौ	२०	१४	घुटी, टी.	१६२	७२	चक्रला	१२७	१६०
(घ)			घुण	४६८	१८	चक्रवर्तिन्	१६६	२
घट	२४२	३२	घूर्णित	२६२	३२	चक्रवर्तिनी	१२६	१५३
घटना	२२८	१०७	घृणा	५२	१८	चक्रवाक	१३६	२२
घटा	२२८	१०७		३२५	३२	चक्रवाड, टी.	१८	६
घटीयन्त्र	२७७	२७		३५०	५८	चक्रवाल	१८	६
घट्ट, टी.	४६८	१८	घृणि	२५	३३		८६	२
घयटापथ	७६	१८	घृत	२५०	५२	चक्राङ्ग	१३६	२३
घयटापाटलि	६८	३६		३५८	८३	चक्राङ्गी	११०	८६
घयटारवा	११५	१०७	घृष्टि	१३१	२	चक्रिक, टी.	२२६	६७
	१८	७	घोट, टी.	२११	४३	चक्रिन्	५६	७
घन	४७	४	घोटक	२११	४३	चक्रीवत्	२५८	७७
	४६	६	घोणा	२६७	८६	चक्षुश्रवस्	५६	७
	२२४	६१		२१२	४६	चक्षु	१६८	६३
	३०२	६६	घोणी	१३१	२	चक्षुष्या	२६६	१०२
	३७१	११८	घोरटा	६८	३७	चक्षुस्	१६८	६३
घनरस	६२	५		१३०	१६६	चकोरक	१३६	३५
घनसार	१७८	१३०	घोर	५२	२०	चक्षल	३०४	७५
घनापन	३७१	११७	घोष	८५	२०	चक्षला	१६	६
घर्मे	५६	३३	घोषक	११७	११७	चक्षु	१०१	५१
	३८५	१५१	घोषणा	४२	१२		१३६	३६
घस्मर	२८६	२०	घ्राण	२६७	८६	चक्षू, टी.	१३६	३६
घस	२६	२		३०६	६०	चटक	१३५	१८
घाटा	१६६	८८	घ्राणतर्पण	३७	११	चटका	१३५	१८
घाटिक, टी.	२२६	६७	घ्रात	३०६	६०	चटकाशिरस्	२६६	११०
घाण्टिक	२२६	६७	(च)			चटकाशिरस्	२६६	११०
घात	२३०	११५	च	४३१	२५०	चटिकाशिरस्	२६६	११०
घातुक	२६१	२८		४४३	५	चटिकाशिरस्	२६६	११०
	२६७	४७		७	२८	चणक	२३८	१८
घास	१२६	१६७	चक्र	१३६	२६	चण्ड	२६२	३२
घु	४६६	१५		२१४	५६	चण्डा	११६	१२८
घुट, टी.	१६२	७२		२२०	७८	चण्डात	१०८	७६
घुटि, टी.	१६२	७२		४०२	१६१	चण्डातक	१७५	११६
			चक्रकारक	१२०	१२६	चण्डाल	२७१	४
			चक्रपाणि	५	२०		२७५	१६

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
चयडालिका, टी.	२७८	३१	चपट, टी.	१६५	८४	चर्मकार	२७२	७
चयडालवल्लकी	२७८	३१		१५	६५	चर्मकृति	१६४	४६
चण्डि	६	३७	चपल	{ २६६	६६	चर्मन्, टी.	२२४	६०
चण्डिका	६	३७		{ २६७	४६	चर्मप्रभेदिका	२७६	३४
चण्डी	२५६	७०	चपला	{ १६	६	चर्मप्रसेविका	२७६	३३
चतुश्शाल	८१	६		{ ११२	६६	चर्मर, टी.	२७२	६७
चतुश्शाला, टी.	८१	६	चपेट	१६५	८४	चर्मिन्	{ १००	४६
चतुर	२७५	१६	चमर	१३३	१०		{ २१८	७१
चतुरङ्गल	६४	२३	चमरिक	६४	२२	चर्या	१६१	३५
चतुरब्दा	२७५	६८	चमस	४७६	३५	चर्वित	३१४	११०
चतुर्हायणी	२७५	६८	चमसी	४६२	१०	चर्विणी	१४४	१०
चतुरानन	५	१६	चमू	{ २२०	७८	चलदल	६४	२०
चतुर्भद्र	१६८	५८		{ २२१	८१	चल	३०४	७४
चतुर्भुज	५	२०	चमूक	१३२	६	चलन	३०४	७४
चतुर्भुग, टी.	४५७	३	चम्पक	१०४	६३	चलाचल	३०४	७४
चतुर्वर्ग	१६८	५७	चय	{ ८०	३	चलित	२२५	६६
चतुष्पथ	६६	१७		{ १४०	४०	चविक	११३	६८
चत्वर	{ ८३	१३	चर	{ २०२	१३	चविका, टी.	११३	६८
	{ १८६	१८		{ ३०४	७४	चवी, टी.	११३	६८
चन	४४१	३	चरक	४७८	३३	चव्य	११३	६८
चन्द, टी.	२०	१३	चरण	१६१	७१	चव्या, टी.	११३	६८
चन्दन	१७८	१३१	चरणायुध	१३४	१७	चषक	२८२	४३
चन्द्र	{ २०	१३	चरम	३०६	८१	चपाल	१८६	१८
	{ १२४	१४६	चरमक्षमाष्टन्	८६	२	चाक्रिक	२२६	६७
	{ ४०२	१६१	चराचर	३०४	७४	चाक्किरी	१२३	१४०
चन्द्रक	१३८	३१	चरिष्णु	३०४	७४	चाटकैर	१३५	६८
चन्द्रभागा	{ ७०	३४	चरु	१८७	२२	चाणकीन, टी०	२३५	८
चन्द्रभागी, टी.			चर्चरी	४६२	१०	चाण्डाल	{ २७१	४
चन्द्रमस	२०	१३	चर्चा	{ ३४	२		{ २७५	२०
चन्द्रवल्लरी, टी.	१२२	१३७		{ १७६	१२२	चाण्डालिका	२७८	३१
चन्द्रवाला	११६	१२५	चर्पट, टी.	१६५	८४	चातक	१३४	१७
चन्द्रशेखर	७	३०	चर्म	२२४	६०	चातुर्वर्ण्य	१८१	२
चन्द्रसंज्ञ	१७८	१३०	चर्मकषा	१२३	१४३	चान्द्रभागा	{ टी. ७१	३५
चन्द्रहास	२२३	८६	चर्मकसा	१२३	१४३	चान्द्रभागी		
चन्द्रिका	२१	१६				चाफ	२२२	८३
						चामर	२०७	३१

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
चामरा, टी०	२०७	३१	चित्र	३८	१७	चिरे, टी०	४४०	१
चामीकर	२६४	६५	चित्र	५२	१६	चिरेण, टी०	४४०	१
चाम्पेय	{ १०४	६३		४०१	१८७	चिलिचिम	६६	१८
	{ १०५	६५		१०१	५१	चिलीचिम	६६	१८
चार	{ २०२	१३	चित्रक	{ १०६	८०	चिलीचिमी	६६	१८
	{ ३२०	१४		{ १७६	१२३	चिल्ल	{ १३५	२१
चारटी	१२४	१४६	चित्रकर	२७२	७		{ १५८	६०
चारण	२७३	१२	चित्रकृत्	६५	२७	चिवु, टी०	१६७	६०
चारु	२६६	५२	चित्रतण्डुला	११४	१०६	चिवुक	१६७	६०
चार्विक्य	१७६	१२२	चित्रपर्णी	१११	६२	चिह्न	२१	१७
चार्म, टी०	२१४	५४		{ १३	५६	चीन	१३२	६
चार्मण	२२८	४३	चित्रभातु	{ २४	३०	चीर	४७७	३१
चार्मिण, टी०	२२८	४३		{ ३६६	११२	चीरी	१३७	२८
चाल, टी०	८४	१४	चित्रशिखण्डज	२३	२४	चीरका	१३७	२८
चालन, टी०	२४१	२६	चित्रशिखण्डन्	२३	२७	चीवर	४७७	३१
चालनी	२४०	२६	चित्रा	{ ११०	८७	चुक	{ १२३	४१
चाष	१३४	१६		{ १२६	१५६		{ २४४	३५
चिकित्सक	१५७	५७	चिन्ता	{ ५५	२६		{ ४६६	२०
चिकित्सा	१५५	५०	चिन्तिया, टी०			चुक्रिका	१२३	१४०
चिकीर्षा, टी०	४५८	४	चिपिट, टी०	२४८	४७	चुल्ल	१५८	६०
चिकुर	{ १६८	६५	चिपिटक	२४८	४७	चुल्लि	२४१	२६
	{ २६७	४६	चिरम्, टी०	४४०	१	चुल्ली, टी०	२४२	२६
चिकण	२४८	४६	चिरक्रिय	२८८	१७	चूचुक	१६३	७७
चिकस	४७६	३५	चिरण्टी	१४४	६	चूडा	{ १३८	३१
चिन्वा	६६	४३	चिरन्तन	३०५	७७		{ १६६	६७
चित्	{ ३४	१	चिररात्राय	४४०	१	चूडामणि	१७०	१०२
	{ ४४१	३	चिरबिल्व	१००	४७	चूडाला	१२७	१६०
चिता	२३१	११७	चिरसूता	२५६	७१	चूत	६७	३३
चिति	२३१	११७	चिरस्य	४४०	१	चूर्ण	{ १७६	१३४
चित्त	३४	३१	चिरात्, टी०	४४०	१		{ २२६	६६
चित्तविभ्रम	५४	२६	चिरात्तिक्त, टी०	१२३	१४३	चूर्णकुन्तल	१६६	६६
चित्तसमुन्नति	५३	२२	चिराय	४४०	१	चूर्णि	४६१	६
चित्ताभोग	३४	२	चिरिण्टी, टी०	१४४	६	चूर्णी	४६१	६
चित्या	२३१	११७	चिरिबिल्व	१००	४७			

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
घूलिका	२०६	३८	(छ)			छादन	२०	१३
चूषा, टी०	२१०	४२	छग, टी.	२५८	७६	छादित	३११	६८
चेट, टी०	२७४	१७	छगल	२५७	७६	छान्दस	१८२	६
चेटक	२७४	१७	छगलक	२५७	७६	छाया	३६२	१६६
चेटिका, टी०	२७४	१७	छगला, टी.	१२२	१३७	छित	३१३	१०३
चेटी	५१	१५	छगलांघ्री, टी.	१२२	१३७	छिद्र	५८	२
चेड, टी०	२७४	१७	छगलान्त्री	१२२	१३७	छिद्रित	३१२	६६
चेडक, टी०	२७४	१७	छत्र	२०७	३२	छिन्न	३१३	१०३
चेढी, टी०	२७४	१७	छत्र	२०७	३२	छिन्नसहा	१०६	८२
चेत	३४	३१		११४	१०५	छुरिका	२२४	६२
चेत्	४४७	१२	छत्रा	१२६	१६७	छेक	१४१	४३
चेतकी	१०३	५६		२४४	३७	छेदन	३१८	७
चेतन	३३	३०	छत्राकी	११६	११५	(ज)		
चेतना	३४	१	छद	६२	१४	जक्ष्म	१५६	५१
चेतस्	३४	३१		१३६	३६	जक्ष्मन् } टी.		
चेल	१७४	११५	छदन	६२	१४	जगत्	७३	६
	४११	२११	छदिस	८४	१४		३६०	८७
चेली	४११	२११	छन्नन्	५५	३०	जगती	७६	६
चैत्य	८२	७	छन्द	३२२	२०		३५६	७८
चैत्र	२६	१५		३६३	६६	जगती	७३	६
चैत्ररथ	१६	७०		१८७	२२	जगन्तौ	३५६	७८
चैत्रिक	२६	१५	छन्दस्	३२२	२०	जगन्नाथ	१४	६२
	१२१	१३४		४२६	२४१	जगर	२१६	६४
चोच	४७६	३०	छन्न	२०४	२२	जगल	२८१	४१
चोर	२७६	२४		३११	६८	जग्ध	३१४	१११
चोरपुष्पी	११६	१२६	छर्दि } टी.	१५७	५५	जग्धि	२५१	५५
चोरिका, टी.	२७६	२४	छर्दी			जघन	१६२	७४
चोल	१७५	११८	छल	२२६	१०८	जघनेकला	१०३	६१
चोली, टी.	१७५	११८	छवि	२१	१७	जघन्य	३०६	८१
चौर, टी.	२७६	२४	छवी	२५	३४		३६३	१६८
चौरिका, टी.	२७६	२४	छाग	२५७	७६	जघन्यज	१५३	४३
चौरी, टी.	२७६	२४	छागल, टी०	२५८	७६		२६६	१
चौर्य	२७६	२५	छागी	२५७	७६	जङ्गम	३०४	७४
चौर्यिका	२७६	२५	छात	१५४	४४	जङ्गमेतर	३०४	७३
च्युत	३१३	१०४		३१३	१०३	जङ्हा	१६१	७२
च्योत	३१६	१०	छात्र	१८४	११	जङ्हाकरिक	२१६	७३

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
जङ्गल	२१६	७३	जनि	३३	३०	जयन्त	११	४६
जटा	{ ६१ ११ १६६ ६७ ३४५ ४५		जगित्री, टी.	१४६	२६	जयन्ती	१०५	६५
जटाजूट	८	३५	जनी	{ १२६ १५३ १४४ ६		जया	१०५	६५
जटामांसी	१२१	१३४	जनुस्	३३	३०	जय्य	२१६	७४
जटि, टी.	६७	३२	जन्तु	३३	३०	जरठ	३५	७६
जटिला	१२१	१३४	जन्तुकल	६४	२२	जरण	२४४	३६
जटी	६७	३२	जन्म	३३	३०	जरत्	१५३	४२
जङ्गल	१५५	४६	जम्भन्	३३	३०	जरद्वय	२५३	६१
जठर	{ १६३ ७७ ४०५ १६८		जम्भिन्	३३	३०	जरा	१५३	४१
जड	{ २१ १६ २६४ ३८		जन्म	{ १६८ ५८ २२८ १०३ ३६३ १६८		जभयु	१५२	३८
जडा	११०	८६	जन्म	३३	३०	जरायुज	२६८	५०
जनु	{ १७७ १२५ ४६४ १३		जन्म	३३	३०	जल	६२	३
जनुक	२४५	४०	जप	{ १६४ ४७ टी. ३१६ १२		जलकृम, टी.	२७५	१६
जनुका	१३७	२६	जपन, टी.	३१६	१२	जलज	६५	२८
जनुका, टी.	{ १२६ १५३ १३७ २६		जपा, टी.	१०८	७६	जलजन्तु	६६	२०
जनुकन, टी.	१२६	५३	जमन, टी.	२५१	५६	जलधर	१८	७
जनु, टी.	१६३	७८	जम्पती	१५२	३८	जलनिधि	६२	२
जनुणी	१६३	७८	जम्बाल	६३	६	जलनिर्गम	६३	७
जन	२००	८	जम्बीर	{ ६४ २४ १०८ ७६		जलनीली	७१	३८
जनक	१४६	२८	जम्बु	६३	१६	जलपुष्पी	४७१	२३
जनकम	२७५	१६	जम्बुक	{ १३१ ५ ३२६ ३		जलप्राय	७७	१०
जनता	३२८	४२	जम्बू	६३	१६	जलभृत्, टी.	१८	७
जनन	{ ३३ ३० १८१ १		जम्बुक	६३	१६	जलमुक्	१८	७
जननी	१४६	२६	जम्बूक, टी.	१३१	५	जलव्याल	५६	५
जनपद	७७	८	जम्भ	६४	२४	जलशुक्ति	६७	२३
जनयित्री	१४६	२६	जम्भभेदिन्	१०	४३	जलाधार	६८	२५
जनश्रुति	४१	७	जम्भल	६४	२४	जलाशय	{ ६८ २५ १२६ १६४	
जनार्दन	५	१६	जम्भार	६४	२४	जलूका, टी.	६७	२२
जनाश्रय	८२	६	जय	{ १०५ ६६ २२६ ११० ३१६ १२		जलौकस्	६७	२२
			जयन	३१६	१२	जलौका, टी.	६७	२२
						जलोष्णात	६४	१०
						जलोत्पी, टी.	६७	२२
						जलौकस्	६७	२२
						जलौकम	६७	२२

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
जलौका	६७	२२	जातीफल	१७८	१३२	जिह्वा, टी.	१६७	६१
जल्पाक	२६४	३६	जातु	४४२	४	जिह्वा	१६७	६१
जल्पाकी, टी.	२६४	३६	जातुकृत्	१२६	१५३	जीन	१५३	४२
जल्पित	३१४	१०७	जातुधान, टी.	१४	६०		१८	७
जव	{ १५	६४	जातोश्च	२५३	६१	जीमूत	{ १०६	६६
	{ २१६	७३	जातु	१६१	७२		{ ३५२	६५
	{ २११	४५	जाय, टी.	१६५	४७	जीरक	२४४	३६
जवन	{ २१६	७३	जावाल	२७३	११	जीर्ण	१५३	४२
	{ ३२७	३८	जामातृ	१५०	३२	जीर्णवस्त्र	१७४	११५
जवनिका	१७५	१२०	जामि	३८५	१५१	जीर्णि	३१८	६
जवापुष्प	१०८	७६	जाम्बव	६३	१६	जीव	{ २३	२४
जवाधिक	२११	४५	जाम्बूनद	२६४	६५		{ २३१	११६
जहुतनया	७०	३१	जायक	१७७	१२५	जीवक	{ १००	४४
जागर, टी.	२१७	६४	जाया	१४३	६		{ १२३	१४२
जागरण, टी.	३२१	१६	जायाजीव	२७३	१२	जीवजीव	१३६	३५
जागरा	३२१	१६	जायापती	१५२	३८	जीवन	{ ६२	३
जागरितृ	२६२	३२	जायु	१५५	५०		{ २३२	१
जागरूक	२६२	३२	जार	१५१	३५	जीवना	२३२	१
जागर्ति, टी.	३२१	१६	जारज	१५१	३६	जीवनी	१२३	१४२
जागर्था	३२१	१६	जाल	{ ६५	१६	जीवनीय, टी.	६२	३
जाग्रिया, टी.	३२१	१६		{ ४१०	२०६	जीवनीया	१२३	१४२
जाङ्गलिक, टी.	६०	११	जालक	६२	१६	जीवनौषध	२३२	१२०
जाङ्गलिक	६०	११	जालिक	{ २७३	१४	जीवन्तिका	{ १०६	८२
जाङ्गिक	२१६	७३		{ ३३६	२०		{ १०६	८३
जाटलि, टी.	४८१	३८	जाली	११७	११८	जीवन्ती	१२३	१४२
जात	३४	३१	जाल्म	{ २७४	१६	जीवा	१२३	१४२
जातवेदस्	१३	५३		{ २८८	१७	जीवातु	२३२	१२०
जातरूप	२६४	६५	जिह्वा	१११	६०	जीवान्तक	२७३	१४
जातापत्या	१४६	१६	जिघत्सु	२८६	२०	जीविका	२३२	१
	{ ३४	३१	जित्स्वर	२२०	७७	जीवितकाल	२३२	१२०
जाति	{ १०७	७२	जिन	४	१३	खुण्प्सा	४२	१३
	{ ३५५	७५	जिष्णु	{ १०	४२	खुण्	१२२	१३७
जातिफल, टी.	१७६	१३२		{ २२०	७७	खुङ्गा, टी.	१२२	१३७
जाती, टी.	१७८	१३२	जिह्वा	{ ३०४	७१	खड्ड, टी.	१८८	२५
जातीकोश	१७८	१३२		{ ३८४	१५०	खड्ड	१८८	२५
जातीकोष, टी.	१७६	१३२	जिह्वाग	५६	८	जति	३२७	३८

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
अति	३२७	३८	उयोतिरिक्कण	१३७	२८	टिडिभ	१३६	३५
अष, टी.	४८०	३५	उयोतिषिक, टी.	२०२	१४	टिडिभक	१३६	३५
जृम्भ	५७	३५	उयोतिष्मती	१२५	१५०	टीका	४६०	७
जृम्भण	५७	३५	उयोतिस्	४२०	२३६	टुण्टुक	१०२	५६
जृम्भा	५७	३५	उयोत्सना	२१	१६	(ड)		
जेतु	{ २१६ ७४		उयौत्स्नी	{ २६ ५		डमर	३२०	१४
	{ २२० ७७			{ ११७ ११८		डमरु	४६	८
जेमन	२५१	५६	उयौतिषिक	२०२	१४	डमरुक, टी.	४६	८
जेय	२१६	७४	उवर	{ १५७ ५६		डम्बर	२२६	१०८
जैन	२१६	७४		{ ३२७ ३८		डयन	२१३	५२
जैवातुक	{ २० १४		ज्वलन	१३	५३	डङ्ग	१०३	६०
	{ २८५ ६		ज्वाल	१३	५७	डामर, टी.	३२०	१४
	{ ३३२ ११		ज्वाला, टी.	१३	५७	डिण्डिम	४६	८
जैवातुका, टी.	२८६	६	(झ)			डिम्ब	३२०	१४
जोहक	१७७	१२६	भटा	११६	१२७	डिम्भ	{ १४० ३८	
जोषम्	४३६	२६०	भट्टामला	११६	१२७		{ ३८१ १४३	
ज्ञ	{ १६२ ५		भट्टिति	४४१	२	डिम्भा	१६३	४१
	{ ३४४ ४०		भर	८७	५	डण्डुम	५६	५
ज्ञपित	३११	६८	भर्भर	४६	८	डुलि, टी.	६८	२४
ज्ञप्त	३११	६८	भरलरी	४६२	१०	(ढ)		
ज्ञप्ति	३४	१	भष	६६	१७	ढका	४८	६
ज्ञातसिद्धान्त	२०२	१५	भषा	{ ६६ १६		(त)		
ज्ञाति	१५१	३४		{ ११७ ११७		तक	२५१	५३
ज्ञातृ	२६२	३०	भस, टी.	६६	१७	तक्षक	३३०	४
ज्ञातेय	१५१	३५	भाटल	६८	३६	तक्षन्	२७२	६
ज्ञान	३५	६	भाटलि	४८१	३८	तक्ष्	३३२	१०
ज्ञानिन्	२०२	१४	भाटामला, टी.	११६	१२७	तट	६३	७
ज्या	{ ७५ २		भावुक	६६	४०	तटाक, टी.	६६	२८
	{ २२२ ८५		भ्रिण्टी	१०७	७५	तटिनी	६६	३०
ज्याघातवारण	२२२	८४	भ्रिल्लिका	१३७	२८	तटी	६३	७
ज्यानि	३१८	६	भ्रीरुका, टी.	१३७	२८	तडाक, टी.	६६	२८
ज्यायसी, टी.	४२७	२४४	(ट)			तडाग	६६	२८
ज्यायस्	{ १५३ ४३			{ २७६ ३४		तडित्	१६	६
	{ ४२७ २४४		टक्क	{ ३३७ २२		तडित्वत्	१८	७
ज्येष्ठ	३४६	४८		{ ४७८ ३३		तण्डक	४७८	३३
ज्यैष्ठ	२६	१६	टक्कपति, टी.	२००	७	तण्डुल	११४	१०६

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
तण्डुलीय	१२२	१३६	तन्त्रक	१७३	११२	तरणि	२४	३०
तत्	४४१	३	तन्त्रवाप, टी.	२७१	६		६४	१०
तत	{ ४७	४	तन्त्रवाय, टी.	१३४	१३		{ १०७	७३
	{ ३०८	८६	तन्त्रिका	१०६	८२	तरणी, टी.	६४	१०
ततः	४४१	३	तन्द्रा, टी.	५७	३७	तरपयय	६४	११
तत्काल	२०६	२६	तन्दि	{ ५७	३७	तरल	{ १७०	१०२
तत्क्रिय	२८६	१६	तन्दी	{ ३६६	१८५		{ ३०४	७५
तत्पत्री	२४५	४०	तपःकेशसह	१६३	४२	तरला	२४६	५०
तत्पर	२८६	६	तप	३०	१६	तरस	{ १५	६४
तत्त्व	४६	६	तपन	{ २४	३१		{ २२७	१०२
तत्त्व	४६	६		{ ६०	१	तरस	१५६	६३
तथा	४४५	६	तपनीय	२६४	६४	तरस्विन्	{ २१६	७३
तथागत	४	१३	तपस्	{ २६	१५		{ ३७८	१३५
तथ्य	४५	२२		{ ४२६	२४१	तरे		
तदा	४५३	२२	तपस्य	२६	१५	तरी, टी.	{ ६४	१०
तदात्व	२०६	२६	तपस्विन्	१६३	४२	तर्क	८६	५
तदानीम्	४५३	२२	तपस्विनी	१२१	१३४	तर्कण	१५३	४२
तनय	१४६	२७	तम	३३	२६	तर्कणी	१४४	८
तनया, टी.	१४६	२७	तमस, टी.	५८	३	तर्क	३४	३
	{ १६१	७१				तर्कारी	१०५	६५
तनु	{ ३०१	६१	तमस्	{ ५८	३	तर्जनी	१६४	८१
	{ ३०२	६६		{ ४२५	२४०	तर्थक	२५३	६१
	{ ३७२	१२०	तमस्विनी	२६	४	तर्ह	२४३	३४
तनुत्र	२१६	६४	तमा, टी.	२६	४	तर्पण	{ १८५	१४
तनु	१६१	७१	तमाल	{ १०५	६८		{ २५१	५६
तनूकृत	३१२	६६		{ ४७८	३३		{ ३१७	४
तनूनपात्			तमालपत्र	१७६	१२३	तर्मन्	१८६	१६
तनूनपाद्	{ १३	५३	तमिस्र	५८	३	तर्ष	{ ५४	२८
	{ १३६	३६	तमिस्रा	२६	५		{ २५१	५५
	{ १७०	६६	तमी	२६	४	तल	{ २२२	८४
तन्तव	२७७	२८	तमोज्ज्व	३६३	६६	तला	२२२	८४
तन्तु	२७७	२८	तमोपह	४२६	२४७	तलिन	३७७	१३४
तन्तुभ	२३७	१७	तरञ्ज	१३०	१	तल्प	३७६	१३८
तन्तुवाय	{ १३३	१३	तरक्	६२	५	तल्लज	३२	२७
	{ २७१	६	तरक्षिणी	६६	३०	तष्ट	३१२	६६
तन्त्र	४०४	१६४	तरण	२१०	४२	तसर, टी.	३२३	२४
						तस्कर	२७६	२४

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
तायङ्व	{ ४६	१०	तालमूलिका	११७	११६	तिरोधान	२०	१३
	{ ४७६	३४	तालवृन्त, टी.	१८१	१४०	तिरोहित	२३०	११२
ताडि, टी.	{ १३०	१६६	तालवृन्तक	१८१	१४०	तिर्यच्	२६३	३४
ताडी, टी.			तालाङ्क	६	२४	तिल	२३८	१६
तात	१४६	२८	तालि, टी.	१३०	१६६		{ ६६	४०
तान्त्रिक	२०२	१५	ताली	{ ११६	१२७		{ १५५	४६
तापन, टी.	२४	३१		{ १३०	१६६	तिलक	{ १६०	६५
तापस	१६३	४२	तालु	१६७	६१		{ १७६	१२३
तापसतक	१००	४६	तावत्	४३४	२५५		{ २४६	४३
तापिच्छ	१०५	६८	तिक्त	३६	६	तिलकालक	१५५	४६
तापिञ्ज, टी.	१०६	६८	तिक्तक	१२६	१५५	तिलपर्णी	१७८	१३२
तामरस	७२	४०	तिक्तशाक	६५	२५	तिलपिञ्ज	२३८	१६
तामलकी	११६	१२७	तिग्म	२५	३५	तिलपेज	२३८	१६
तामसी	२६	५	नितउ	२४०	२६	तिलिरस	५८	५
ताम्रक	२६५	६७	तितिक्षा	५३	२४	तिल्य	२३४	७
ताम्रकर्णी	१८	५	तितिष्ठ	२६२	३१	तिल्व	६७	३३
ताम्रकुट्टक	२७२	८	तितिर, टी.	१३६	३५	तिष्य	{ २२	२२
ताम्रचूड	१३४	१७	तितिरि	१३६	३५		{ ३८७	१५६
ताम्बूलवल्ली	११८	१२०	त्रिधि	२५	१	तिष्यफला	१०२	५७
ताम्बूली	११८	१२०	तिनिश	६५	२६		{ २५	३५
तार	{ ४७	२	तिन्तिडी	६६	४३	तीक्ष्ण	{ २६५	६८
	{ ३६६	१७५	तिन्तिडीक	२४४	३५		{ ३५०	६०
तारकजित्	६	४०	तिन्दुक	६८	३८	तीक्ष्णगन्ध	६६	३१
तारका	{ २२	२१	तिन्दुकी	४६१	८	तीक्ष्णगन्धक	६६	३१
	{ १६७	६२	तिमि	६६	१६	तीर	६३	७
तारा	२२	२१	तिमिङ्गिलादि	६६	२०	तीर्थ	३६२	६३
तारुण्य	१५३	४०	तिमित	३१३	१०५	तीव्र	१५	६७
तार्क्ष्य	{ ७	२६	तिमिर	५८	३	तीव्रवेदना	६१	३
	{ ३८७	१५४	तिरम्	{ ४३६	२६५		{ ४३१	२५१
तार्क्ष्यशेख	२६६	१०२		{ ४४३	६	तु	{ ४४३	५
	{ ४६	६	तिरश्ची, टी.	२६३	३४		{ ४४६	१५
ताज	{ १३०	१६८	तिरस्करिणी	१७५	१२०	तुङ्ग	६५	२५
	{ १६५	८३	तिरस्कारिणी, टी.	१७६	१२०	तुङ्गी	१२२	१३६
	{ २६७	१०३	तिरस्क्रिया	५३	२२	तुङ्ग	३००	५६
तालपत्र	१७०	१०३	तिरीट	{ ६७	३३	तुण्डि, टी.	१२०	१२८
तासपण	११८	१२३		{ ४७६	३०	तुण्ड	१६७	८६

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
तुण्डकेरी, टी.	१२२	१३६	तुली, टी.	२७६	३२	तृणध्वज	१२७	१६०
तुण्डिकेरी	{ ११७	११६	तुल्य	२८०	३६	तृणराज	१३०	१६८
	{ १२२	१३६	तुल्यपान	२५१	५५	तृणशय्य	१०६	६६
तुण्डिभ	१५८	६१	तुवर	३६	६	तृण्या	१३०	१६८
तुण्डिल	१५८	६१	तुवरिका	१२०	१३१	तृतीयप्रकृति, टी.	१५२	३६
तुण्थ	२६६	१०१	तुष	{ १०३	५८	तृतीयाकृत	२३५	६
तुण्था	{ ११२	६५		{ २३६	२२	तृतीयाप्रकृति	१५२	३६
	{ ११६	१२५	तुषार	{ २१	१८	तृप्त	३१३	१०३
तुण्थाञ्जन	२६६	१०१		{ २१	१६	तृप्ति	२५१	५६
तुन्द	१६३	७७	तुषित	३	१०	तृफला, टी.	२६६	१११
तुन्दपरिमार्ज, टी.	२७५	१८	तुस्त, टी.	४७६	३४	तृषा, टी.	५५	२७
तुन्दपरिमृज	२७४	१८	तुहिन	२१	१८	तृषित, टी.	२६०	२२
तुन्दिक	१५४	४४	तृण	२२३	८८	तृष्	{ ५४	२७
तुन्दिन्	१५४	४४	तृणा, टी.	२२४	८८		{ २५१	५५
तुन्दिम, टी.	१५४	४४	तृणी	२२३	८६	तृष्णक, टी.	२६०	२२
तुन्दिल	१५४	४४	तृणीर	२२३	८८	तृष्णञ्च, टी.	२६०	२२
तुन्न	११६	१२७	तृवरी, टी.	१२०	१३१	तृष्णा	३५०	५८
तुन्नवाय	२७१	६	तूर्य	१५	६५	तेजन	१२७	१६१
तुवरिका	१२०	१३१	तूल	{ ६६	४२	तेजनक	१२८	१६२
तुपुर, टी.	२२८	१०६		{ २६७	१०६	तेजनी	११०	८३
तुप्रल	२२८	१०६	तूलपिचु, टी.	१६८	१०६	तेजस्	{ १५६	६२
तुम्भि	१२६	१५६	तूलिका	२७८	३२		{ ४२७	२४३
तुम्भी	१२६	१५६	तूली	२७८	३२	तेजित	३०६	६१
तुम्बुरी, टी.	२४५	३८	तूवर, टी.	{ ३६	६	तेम	३२४	२६
तुम्बुब	२४५	३८		{ ३६५	१७४	तेमन	२४७	४४
तुरग	२११	४३	तूवरी, टी.	१२०	१३१	तैजसावर्तनी	२७६	३३
तुरङ्ग	२११	४३	तूष्णीम्	४४५	६	तैत्तिर	१४१	४३
तुरङ्गम	२११	४३	तूष्णीकाम्	४४५	६	तैलपर्यिक	१७८	१३१
तुरङ्गवदन	१६	७१	तूष्णीशील	२६५	३६	तैलपाता	४६०	६
तुरायण	३१६	२	तूष्णीक	२६५	३६	तैलपायिका	१३७	२६
तुरासाह	१०	४४	तृण	{ १२६	१६५	तैलीन	२३४	७
तुक्क	१७८	१२८		{ १२६	१६७	तैष	२६	१५
तुला	२६२	८७	तृणद्रुम	१३०	१६६	तोक	१४६	२८
तुलाकोटि	१७२	१०६	तृणधान्य	२४०	२५	तोक्म	२३७	१६
तुलाकोटी	१७२	१०६				तोटक	४७६	३०
तुलि, टी.	२७६	३२						

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
दाशायणी	२२	२१	दाहहरिद्रा	११३	१०२	दिवोका	३	७
दाक्षिण्या, टी.	४७५	२८	दाहहस्तक	२४३	३४	दिव्	२	६
दाक्षिण्य, टी.	२८५	५	दार्वाघाट	१३४	१७	दिव्	१७	१
दाडिम	१०४	६४	दार्विका, टी.	११८	११६	दिवौकस्	३	७
	४८३	४२		२६६	१०१	दिवौका	३	७
दाडिमपुष्पक	१०१	४६	दार्वा	११३	१०२	दिन्योपपादक	२६८	५०
दाडिमी, टी.	४८४	४२	दाव	४१३	२१५	दिश	१७	१
दाडिम्न, टी.	१०५	६४	दाविक	७१	३६	दिशा, टी.	१७	१
दायडपाता	४६०	६	दाश	६५	१५	दिश्य	१७	३
दात	३१३	१०३	दाशपुर	१२०	१३१	दिष्ट	२५	१
दायूह	१३५	२१	दाशी	७१	१५		३३	२८
दात्र	२३६	१३	दास	६५	१५		३४४	४२
	१८६	२६		२७४	१७	दिष्टान्त	२३०	११६
दान	२०४	२०	दासी	१०७	७४	दिष्टया	४४६	१०
	२०६	३७	दासीसभ	४७५	२७	दीक्षित	१८३	८
दानव	४	१२	दासेय	२७४	१७	दीदिवि	२४६	४८
दानवारि	३	६	दासेर	२७४	१७	दीधिति	२५	३३
दानशौण्ड	२८५	६	दिगम्बर	२६५	३६	दीन	२६८	४६
दान्त	१६३	४२	दिग्ध	२२३	८८	दीनार	३३३	१४
	३११	६७		३०६	६०	दीप	१८०	१३८
दान्ति	३१७	३	दित	३१३	१०३	दीपक	३३२	११
दापित	२६५	४०	दितिस्त	४	१२	दीप्ति	२५	३४
दाम	२५६	७३	दिधिषु, टी.	१४८	२३	दीप्य	११५	१११
दामन्, टी.	२५७	७३	दिधिषू	१४८	२३	दीर्घ	३०३	६६
दामनी	२५६	७३	दिन	२६	२	दीर्घकोशिका	६८	२५
दामोदर	५	१८	दिनान्त	२६	३	दीर्घकोशिका, टी.	६८	२५
दाग्भिक	३३५	१७	दिव	२	६	दीर्घदर्शित	१४२	६
दायाद	३६३	६६	दिवस	२६	२	दीर्घपृष्ठ	५६	८
दायित, टी.	२६५	४०	दिवस्पति	१०	४२	दीर्घवृन्त	१०२	५७
दारक	३३७	२२	दिवाकर	२४	२८	दीर्घमूत्र	२८८	१७
दारद	६०	११	दिवाकीर्ति	२७२	१०	दीर्घिका	६६	२८
दारा	१४३	६		२७५	१६	दुःख	६१	३
दारित	३१२	१००	दिविषद	३	८		४७१	२३
दाव	६१	१३	दिविस्त	३	८	दुःप्रधर्षणी	११६	११४
	१०२	५३	दिवोक्त	३	७	दुःप्रधर्षिणी, टी.	११६	११४
दावण	५२	२०		४२३	२३५			

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
दुःषमम्	४४८	१४	दुष्पत्र	११६	१२८	देवलात	{ ६८	२७
दुःस्पर्श	१११	६१	दुष्प्रधर्षिणी	११६	११४		{ ८७	६
दुःस्पर्शा	११२	६४	दुहितुःपति	१५०	३२	देवच्छन्द	१७१	१०५
दुकूल	१७३	११३	दुहितृ	१४६	२८	देवजगधक	१२६	१६६
दुग्ध	२५०	५१	दुत	२०२	१६	देवता	३	६
दुग्धिका	११३	१००	दूती	१४६	१७	देवताड	१०६	६६
दुडि, टी.	६८	२४	दूत्य	२०२	१६	देवत्व, टी.	१६६	५२
दुद्रुम, टी.	१२५	१४८	दून	३१२	१०२	देवदारु	१०२	५४
दुन्दुभि	{ ४८	६	दूर	३०३	६८	देवद्रव्यक्	२६३	३४
	{ ३८२	१४५	दूरदर्शिनृ	१८२	६	देवद्रव्यच्	२६३	३४
दुरध्व	७६	१६	दूर्वा	१२७	१५८	देवन	{ २८२	४५
दुरालभा	१११	६२	दूश्य, टी.	१७६	१२०		{ ३७४	१२४
दुरित	३१	२३	दूषिका	१६०	६७	देववस्त्रभ	६५	२५
दुरोदर	३६८	१८०	दूर्वा, टी.	१६०	६७	देवभूय	१६६	५२
दुर्ग	२०३	१७	दूषीका, टी.	१६०	६७	देवमातृक	७८	१२
दुर्गत	२६८	४६	दूष्य	१७५	१२०	देवर	१५०	३२
दुर्गति	६०	१	दूष्या	२१०	४२	देवल	२७३	११
दुर्गन्ध	३७	१२		{ १५	६७	देवसभा	११	४८
दुर्गसंचर	३२३	२५	दृढ	{ ३०५	७६	देवसायुज्य, टी.	१६६	५२
दुर्गा	६	३७		{ ३४७	५२	देवाजीव, टी.	२७३	११
दुर्जन	२६७	४७	दृढसन्धि	३०५	७५	देवाजीवी	२७३	११
दुर्दिन	२०	१२	दृति	४६८	१६			
दुर्द्रुम	१२४	१४८	दृब्ध	३०८	८६	देवी	{ ५०	१३
दुर्नामक	१५६	५४	दृश्	{ १६८	६३		{ ११०	८३
दुर्नामन्	६८	२५		{ ४१८	२२६		{ १२१	१३३
दुर्बल	१५४	४४	दृषत्	८६	४	देवृ	१५०	३२
दुर्मनस्	२८६	८	दृष्ट	२०७	३०	देश	७७	८
दुर्मुख	२६४	३६	दृष्टरजस्	१४४	८	देशरूप	२०५	२४
दुर्वर्ण	२६५	६६	दृष्टान्त	३५३	६६	देह	१६१	७१
दुर्विध	२६८	४६				देहली	८३	१३
दुर्हृद	२०१	१०	दृष्टि	{ १६८	६३	दैतेय	४	१२
दुलि	{ ६८	२४		{ ३४५	४५	दैत्य	४	१२
दुली, टी.			देव	{ ३	७	दैत्यगुह	२३	२५
दुश्चयवन	१०	४४		{ ५०	१३	दैत्या	११८	१२३
दुष्कृत	३१	२३	देवकुसुम	१७७	१२५	दैत्यारि	५	१६
दुष्ट	४५१	१६	देवकीनन्दन	५	२१	दैर्घ्य	१७४	११४

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
दैव	{ ३३ २८		द्रवन्ती	११० ८७		द्रोणदुषा	२५६ ७२	
दैवज्ञ	२०२ १४		द्रविण	{ २२७ १०२		द्रोणि, टी.	६४ ११	
दैवज्ञा	१४७ २०			{ २६३ ६०		द्रोणी	{ ६४ ११	
दैवत	{ ३ ६			{ ४७० २२		द्रोहचिन्तन	३५ ४	
दैविक	३३६ २०		द्रव्य	{ २६३ ६०		द्रौणिक	२३५ १०	
दोषा	{ ११२ ६५		द्राक्	४४१ २		द्रन्द्	{ १४० ३८	
दोषज्ञ	{ २१४ ५३		द्राक्षा	११५ १०७		द्रयातिग	१६४ ४४	
दोषज्ञ	{ १८२ ५		द्राविष्ठ	३१५ ११२		द्राःस्थ	२०० ६	
दोषा	{ ३४४ ४०		द्राव	२२६ १११		द्रादशाङ्गल	१६५ ८४	
दोषा	{ १६४ ८०		द्राविडक	१२१ १३५		द्रादशात्मन्	२४ २८	
दोषैकदृश	{ ४४३ ६		द्रु	{ ८६ ५		द्रापर	{ ३४ ३	
दोष	{ २६७ ४६			{ ४६२ ११		द्रार	८४ १६	
दोष	{ १६४ ८०		द्रुक्किलिम	१०२ ५३		द्रार्	८४ १६	
दोहद	५४ २७		द्रुण, टी.	२२४ ६१		द्रारपाल	२०० ६	
दोहदवती	१४७ २१		द्रुवन, टी.	२२४ ६१		द्रारिक, टी.	२०० ६	
दौकूल, टी.	२१४ ५४		द्रुण	११४ १४		द्रारिन्, टी.	२०० ६	
दौत्य, टी.	२०३ १६		द्रुणि	६४ ११		द्रास्थ	२०० ६	
दौवारिक, टी.	२०० ६		द्रुणी	४६१ ६		द्रास्थित	२०० ६	
द्युति	{ २१ १७		द्रुत	{ १५ ६४		द्रास्थितदर्शक	२०० ६	
द्युती, टी.	{ २५ ३४			{ ४६ ६		द्रिगुणाकृत	२३५ ६	
द्युमणि	२४ ३०			{ ३०८ ८६		द्रिज	{ १३८ ३२	
द्युम्न	२६३ ६०			{ ३१२ १००			{ ३४२ ३६	
द्युत	२८२ ४४		द्युता	३०८ ८६		द्रिजगन्, टी.	१८२ ४	
द्युतकारक	२८२ ४४		द्युम	८६ ५		द्रिजराज	२० १५	
द्युतकृत्	२८२ ४३		द्युमामय	१७७ १२५		द्रिजा	११८ १२०	
द्यो	{ २ ६		द्युमोत्पल	१०३ ६०		द्रिजाति	१८२ ४	
द्योत	{ १७ १		द्युवय	२६१ ८५		द्रिजिह्व	३८१ १४२	
द्रप्स	२५० ५१		द्युह, टी.	६८ २५		द्रितीया	१४३ ५	
द्रप्स्य	२५० ५१		द्युहिण	५ १७		द्रितीयाकृत	२३५ ६	
द्रव	{ ५६ ३२		द्रोण	{ २६३ ८८		द्रिप	२०८ ३४	
	{ २२६ १११		द्रोणकाक	{ १४६ ५६		द्रिपाद्य	२०६ २७	
			द्रोणधीरा	{ १३५ २१		द्रिरद	२०८ ३४	
				{ २५६ ७२		द्रिरफ	१३८ २६	

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
द्विवर्षा	२५५	६८	धनुस्	२२२	८३	धर्मिणी, टी.	१४५	१०
द्विष्	२०१	११	धनु, टी.	२२२	८३	धन	{ १५१ ३५	
द्विष	२०१	१०	धनु, टी.	२२२	८३	{ ४१३ २१५		
द्विषत्	२०१	१०	धनेयक, टी.	२४५	३८	धनल	३७	१३
द्विष्ट, टी.	२६५	६७	धन्य	२८५	३	धनला	२५५	६७
द्विर्सीत्य, टी.	२३५	६	धन्या, टी.	२८५	३	धनली, टी.	२५५	६७
द्विहृत्य, टी.	२३५	६	धन्याक, टी.	२४५	३८	धनिन	१८८	२३
द्विहायनी	२५५	६८	धन्व	२२२	८३	धातकी	{ ११६ १२४	
द्वीप	६३	८	धन्वन्	{ ७६ ५		{ ४६० ७		
द्वीपवती	६६	३०		{ २२२ ८३		धातु	{ ८८ ८	
द्वीपिन्	१३०	१	धन्वयास, टी.	१११	६१	{ ३५४ ७२		
द्वेषण	२०१	१०	धन्वयास	१११	६१	धातुपुष्पिका, टी.	११६	१२४
द्वेष्य	२६७	४५	धन्विन्	२१८	६६	धातु	५	१७
द्वेष	२०३	१८	धमन	१२८	१६२	धातुपुष्पिका	११६	१२४
द्वेष	२१४	५३				धात्री	३६६	१८५
द्वेमातुर	६	३८	धमनि, टी.	{ १२० १३०		धाना	२४८	४७
द्व्यष्ट	२६५	६७	{ १६० ६५			धातुष्क	२१८	६६
द्व्यह, टी.	४६४	१२	धमनी, टी.	{ १२० १३०		धान्य	२३६	२१
			{ १६० ६५			धान्यक, टी.	२४५	३८
(ध)			धम्मिल्ल	१६६	६७	धान्याक	२४५	३८
धट	४६७	१७	धर	८६	१	धान्याम्ल	२४५	३६
धत्तुर	१०८	७७	धरणि, टी.	७५	२	धामन्	३७६	१३१
धन	२६३	६०	धरणी	७५	२	धामार्गव	{ १११ ८८	
धनञ्जय	१३	५३	धरा	७५	२	{ ११७ ११७		
धनद	१६	६८	धरित्री	७५	२	धाव्या	१८७	२२
धनहरी	११६	१२८		३२	२४	धारणा	२०५	२६
धनाधिप	१६	६८	धर्म	{ ३६ ३		धारा	२१२	४६
धनिन्	२८६	१०	{ ३८४ १४८			धाराधर	१८	७
धनिनी, टी.	२८७	१०	धर्मचिन्ता	५४	२८	धारासंपात	१६	११
धनिष्ठा	२२	२२	धर्मध्वनिन्	१६७	५४	धातराष्ट्र	१३६	२४
धनीयक, टी.	२४५	३८	धर्मपत्तन	२४४	३६	धावनि	१११	६३
धनुर्धर	२१८	६६		४	१३	धिक	४३०	२४६
धनुर्मध्य	२२२	८५	धर्मराज	{ १४ ५८		{ २६५ ३६		
धनुर्मास, टी.	१११	६१	{ ३४३ ३७			{ ३१० ६४		
धनुष्पट	६७	३५	धर्मसंहिता	४०	६	धिषण	२३	२५
धनुष्मत्	२१८	६६	धर्मिणी, टी.	१४५	१०	धिषणा	३४	१

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
धिष्ण्य	३६१	१६४	धूर्धर, टी.	२५४	६५	धुता	११७	११५
धी	३४	१	धूर्वह	२५४	६५		१८८	२५
धीन्द्रिय	३६	८	धूलि	२२६	६८	(न)		
धीमत्	१८२	६	धूली, टी.	२२६	६८	न	४४६	११
धीमती	१४५	१२	धूसर	३७	१३	नकुलेष्टा	११६	११५
धीर	{ १७६ १२४	{ ५	धूसूर, टी.	१०८	७७	नक्तम्	४४३	६
	१८२		धृति	३५८	८१	नक्तक	१७४	११५
धीवर	६५	१५	धृष्ट	२६०	२५	नक्तमाल	१००	४७
धीवरी	६५	१५	धृष्णु, टी.	२६१	२५	नक्त	६७	२१
धीराक्ति	३२३	२५	धृष्णग्वियात	२६०	२५	नक्षत्र	२२	२१
धीराक्षि	१६६	४	धृष्णजू	२६०	२५	नक्षत्रमाला	१७१	१०६
धुत	३०८	८७	धेतु	२५६	७१	नक्षत्रश	२०	१५
धुनि	६६	३०	धेतुका	{ २०८ ३३४	{ ३६ १५		{ १२० १३०	
धुनी	६६	३०	धेतुया	२५६	७२	नख	{ १६५ ४६३	{ ८३ १२
धुरन्धर	२५४	६५	धेतुक	२५२	६०	नखर	१६५	८३
धुर्	२१४	५५	धैवत	४६	१	नखरा, टी.	१६५	८३
धुरा	२१४	५५	धोरण	२१५	५८	नखी, टी.	१२०	१३०
धुरीण	२५४	६५	धोरितक	२१२	४८	नग	{ ८६ ३३८	{ ३ २४
धुर्य	२५४	६५	धौतकोशय	१७३	११३	नगर	८०	१
धुवित्र	१८८	२३	धौरय	२५४	६५	नगरी	८०	१
धुस्तुर, टी.	१०८	७७	धौरितक	२१२	४८	नगौकस्	१३८	३३
धुस्तूर, टी.	१०८	७७	ध्याम	१२६	१६६	नग्न	२६५	३६
धृत	३१४	१०७	ध्वज	२२६	६६	नग्नहु, टी.	२८२	४२
धूनी, टी.	६६	३०	ध्वजिनी	२२०	७८	नग्नह	२८१	४२
धृपाथित	३१२	१०२	ध्वनि	४५	२३	नग्निका	{ १४४ १४६	{ ८ १७
धृपित	३१२	१०२	ध्वनित	३१०	६४	नट	{ १०२ २७३	{ ५६ १२
धूमकेतु	३५२	६५	ध्वस्त	३१३	१०४	नटन	४६	१०
धूमयोनि	१८	७	ध्वान्	{ १३५ ४१६	{ २० २२८	नटी	१२०	१२६
धूमल	३८	१६	ध्वान्त	५८	३	नड	{ १२८ ४७८	{ १६२ ३३
धूम्या	३२८	४२	ध्वन	{ २२ ६०	{ २० ८	नडमीन, टी.	६६	१८
धूम्याट	१३४	१६		{ ३०४ ४१५	{ ७२ २२०			
धूम्र	३८	१६						
धूर्जटि	८	३३						
धूर्त	{ १०८ २८२ २६७	{ ७७ ४३ ४७						

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
नडसंहति	१३०	१६८	नय	३१८	६	नहि	४४६	११
नट्या	१३०	१६८	नयन	१६८	६३	ना	१४२	१
नङ्गत्	७७	६	नर	१४२	१	नाक	{ २ ६ ३२६	२
नङ्गल	७७	६	नरक	६०	१	नाकु	७८	१४
नत	३०४	७१	नरपति, टी.	१६८	१	नाकुली	११६	११४
नतवासिक	१५४	४५	नरवाहन	१६	६६		{ ५८ ४ २०८ ३४ २६७ १०५ ३३६ २६	
नदी	{ ६६ २६ ४५६ ३		नरायण, टी.	६	१८	नाग		
नदीमातृक	७८	१२	नर्तकी	४६	८			
नदीसर्ज	११०	४५	नर्तन	४६	१०	नागकेशर }	१०५	६५
नद्मी,	२७८	३१	नर्मदा	७०	३२	नागकेसर }	२६८	३८
ननन्द	१४६	२६	नर्मन्	५६	३२	नागकेशर }	१०५	६५
ननान्त, टी.	१४६	२६	नल	१२६	१६५	नागजिह्विका	२६८	१०८
ननु	४३५	२५७	नलकूवर	१६	७०	नागर	{ २४५ ३८ ४०५ १६७	
ननुच	४४८	१४	नलद	१२६	१६४			
नन्दक	७	२८	नलमीन	६६	१८	नागरक्ष	६८	३८
नन्दन	१०	४५	नलिन	७२	३६	नागलोक	५८	१
नन्दि, टी.	३२	२५	नलिनी	७२	३६	नागवला	११७	११७
नन्दिवृक्ष	११६	१२८	नली	१२०	१२६	नागवल्ली	११८	१२०
नन्दीवृक्ष, टी.	१२०	१२८	नल्य	७६	१८	नागसंभव	२६७	१०५
नन्धावर्त	८३	१०	नव	३०५	७७	नागसुगन्धा, टी.	११६	११४
नपुंसक	१५२	३६	नवदल	७३	४३	नागान्तरु	७	२६
नप्तृ	१४६	२६	नवनीत	२५०	५२	नाटय	{ ४६ १० ५० १०	
नप्त्री	१४६	२६	नयमालिका	१०७	७२	नाडि	१६०	६५
नभ	१७	१	नयसूतिका	२५६	७१	नाडिकेलि, टी.	१३०	१६८
नभस्	{ २६ १६ ४२६ २४१		नवान्नर	१७३	११२	नाडिन्धम	२७२	८
नभसंगम	१३८	३४	नवीन	३०५	७७			
नभस्य	३०	१७	नवोद्धृत	२५०	५२	नाडी	{ १६० ६५ २३६ २२ ३४७ ५०	
नभस्वत्	१४	६३	नव्य	३०५	७७	नाडीप्रण	१५६	५४
नभसित	३१२	१०१	नष्ट	२३०	११२	नाथवत्	२८८	१६
नभस्करी	१२३	१४१	नष्टचेष्टता	५६	३३	नाद	४५	२३
नभस्या	१६१	३४	नष्टाग्नि	१६६	५३		{ ६६ ३० ६८ ३८ १०५ ६५ ११७ ११८	
नभारियत	३१२	१०१	नष्टेन्द्रुकला	२८	६	नादेयी		
नभस्	४५१	१८	नसा, टी.	१६७	८६			
नमुचिसूदन	१०	४३	नस्तित	२५३	६३			
			नस्या, टी.	१६७	८६			
			नस्थीत	२५३	६३			

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
नागा	{ ४३४	२५६	नालिकेर	१३०	१६८	निकुञ्ज	८८	८
	{ ४४१	३	नाली, टी.	७२	४२	निकुम्भ	१२३	१४४
नानास्व	३१०	६३	नालिका	२४३	३४	निकुरम्भ	१४०	४०
नान्दिकर	२६४	३८	नाविक	६४	१२	निकृत	{ २६५	४१
नान्दीकर	२६४	३८	नाव्य	६४	१०		{ २६७	४६
नान्दीवादिन्	२६४	३८	नाश	२३०	११६	निकृति	५५	३०
नापित	२७२	१०	नास्त्य	१२	५१	निकृष्ट	२६६	५४
	{ २१४	५६	नासा	{ ८३	१३	निकेतन	८१	४
नाभि	{ ३८३	१४६		{ १६७	८६	निकोचक	६६	८६
	{ ४६१	६	नासिका	१६७	८६	निकषण	४६	२४
	{ ४६६	२०	नास्तिकता	३५	४	निकषाण	४६	२४
नाभा	{ २१४	५६	निःकासित	२६५	३६	निखिल	३०२	६५
	{ ४६१	६	निःकामित	२६५	३६	निगड	२१०	४१
	{ ४१	८	निःशलाक	२०४	२२	निगद	३१६	१२
नाम	{ ४३६	२६०	निःशेष	३०२	६५	निगम	{ ८०	१
	{ ४५६	३	निःशोष्य	३००	५६		{ ३८४	१४६
नामधेय	४१	८	निःश्रेयस	३५	६	निगाद	३१६	१२
नाय	३१८	६	निःश्वमम्	४४८	१४	निगार	२२६	३७
नायक	{ २८६	११	निःसरण	८५	१८	निगाल	२१२	४८
	{ ३३६	१६	निःस्व	२६८	४६	निग्रह	३२०	१३
नारक	६०	१	निकट	३०२	६६	निग्राह, टी.	३२७	३६
नारद	११	४८	निकर	१४०	३६	निघ	२२६	३६
नाराच	२२३	८७	निकर्षण	८५	१६	निघस	२५१	५६
नाराची	२७८	३२	निकप	२७८	३२	निघ्न	२८८	१६
नारायण	५	१८	निकषा	{ ४४४	७	निचिकी, टी.	२५५	६७
नारायणी	११३	१०१		{ ४५१	१६	निचुल, टी.	{ १०३	६१
नारिकेर, टी.	१३०	१६८	निकषात्मज	१४	६०		{ १७५	११६
नारिकेल, टी.	१३०	१६८	निकस, टी.	२७६	३२	निचोल	१७४	११६
नारिकेलि, टी.	१३०	१६८	निकाम	२५२	५७	निचोली, टी.	१७५	११६
नारिकेली, टी.	१३०	१६८	निकाय	१४१	४२	निज	३४३	३८
नारी	१४२	२	निकाय्य	८१	५	नितम्ब	१६२	७४
नारीकेल, टी.	१३०	१६८	निकार	{ ३२०	१५	नितम्बरथ	१६२	७५
नार्यक, टी.	६८	३८		{ ३२६	३६	नितम्बिनी	१४२	३
नाल	{ ७२	४२	निकारण	२३०	११२	नितान्त	१५	६७
	{ २३६	२२	निकास, टी.	२८०	३७	नित्य	{ १५	६६
नाला	७२	४२	निकुञ्जक	२६२	८८		{ ३०४	७२

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
निदाष	{ ३०	१६	नियन्तृ	२१५	५६	निर्णित्त	३००	५६
	५६	३३	नियम	३५	५	निर्णोजक	२७२	१०
निदान	३३	२८	नियामक	६४	१२	निर्देश	२०५	२५
निदिग्ध	३०८	८६	नियुत	४७१	२४	निर्धार्य, टी.	२८७	१३
निदिग्धिका	११२	६३	नियुद्ध	२२८	१०६	निर्बन्ध	४२८	२४५
निदेश	२०५	२५	नियोज्य	२७४	१७	निर्वहण	२३०	११२
निद्रा	५७	३६	निरय	६०	१	निर्भर	१५	६६
निद्राण	२६३	३३	निरंकुश, टी.	२८८	१५	निर्भद	२०८	३६
निद्रालु	२६३	३३	निरन्तर	३०२	६६	निर्मुक्त	५६	६
निद्रित, टी.	२६३	३३	निरर्गल	३०७	८३	निर्मोक	५६	६
निधन	{ ३३०	११६	निरर्थक	३०६	८१	निर्यन्त्रण, टी.	२८८	१५
	३७६	१३०	निरवग्रह	२८८	१५	निर्याण	२०६	३८
निधि	१६	७१	निरसन	३२५	३१	निर्यातन	३७५	१२७
निधुवन	१६८	५७		४४	२०	निर्यास	४६४	१३
निध्यान	३२५	३१	निरस्त	{ २२३	८८	निर्वृद्	४२८	२४५
निनद	४५	२३		२६५	४०	निर्वपन	१८६	३०
निनाद	४५	२३	निराकरिष्णु	२६२	३०	निर्वर्णन	३२५	३१
निन्दा	४२	१३	निराकृत	२६५	४०	निर्वहण	५१	१५
निप	२४२	३२	निराकृति	{ १६६	५३	निर्वाण	{ ३५	६
निपट	३२४	२६		३२५	३१		{ ३१०	६६
निपाठ	३२४	२६	निरामय	१५७	५७	निर्वात	३१०	६६
निपातन	३२४	२७	निरीश	२३६	१३	निर्वाद	{ ४२	१३
निपान	६८	२६	निरीष, टी.	२३६	१३		{ ३६४	६७
निपुण	२८५	४	निरोध	३२०	१३	निर्वापण	२३०	११४
निबन्धन	४६	७	निर्	४३७	२६२	निर्वाधि	२८७	१३
निर्वहण	२३०	११२	निर्ज्ञेति	६०	२	निर्वासन	२३०	११३
निभ	२८०	३७	निर्गन्धन, टी.	२३०	११३	निर्वृत्त	३१२	१००
निभृत	२६०	२५	निर्गुण्टी, टी.	१०६	६८		२८०	३८
निमय	२५६	८०	निर्गुण्टी	{ १०५	६८	निर्वेश	{ ३२२	२०
निमित्त	३५८	८३		{ १०६	७०		{ ४१७	२२४
निमेष	२८	११	निर्गन्धन	२३०	११३	निर्व्यथन	५८	२
निम्न	६५	१५	निर्घोष	४५	२३	निर्हार	३२०	१७
निम्नगा	६६	३०	निर्जर	३	७	निर्हारिन्	३७	११
निम्ब	१०४	६२	निजितेन्द्रियग्राम	१६३	४३	निर्हाद	४५	२३
निम्बतरु	६५	२६	निर्भर	८७	५	निलय	८१	५
नियति	३३	२८	निर्णय	३४	३	निवह	१४०	३६

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
निवात	३६१	६१	निष्कुटि	११६	१२५	नीकाश	२८०	३७
निवाप	१६०	३१	निष्कुम्भ, टी.	१२४	१४४	नीच	२७४	१६
निवीज	१७३	११३	निष्कुह	६१	१३		३०३	७०
	१६६	५०	निष्कम	३२३	२५	नीचिका, टी.	२५५	६७
निवीता, टी.	१७४	११३	निष्ठा	५१	१५	नीचिकी, टी.	२५५	६७
निवृत	३०८	८८		३४६	४८	नीचैस्	४५०	१७
निवेश	२०८	३३	निष्ठान	२४७	४४	नीड	१४०	३७
निशा	२६	४	निष्ठीवन	३२६	३७	नीडोद्भव	१३८	३४
	४५६	३	निष्ठुर	४४	१६	नीध	८४	१५
निशात, टी.	३०६	६१		३०५	७६	नीप	६६	४२
निशाद, टी.	२७५	२०	निष्ठृत	३०८	८७	नीर	६२	४
निशान्त	८१	५	निष्ठृत्यति	३२६	३७	नील	३७	१४
निशापति	२०	१४	निष्ठेव	३२६	३७	नीलकण्ठ	१३८	३०
निशाहा	२४६	४१	निष्ठेवन	३२६	३७		३४६	४७
निशित	३०६	६१	निष्पात	२८५	४	नीलङ्ग	१३३	१३
निशीथ	२७	६	निष्पक	३१०	६५	नीललोहित	८	३३
निशीथिनी	२६	४	निष्पन्न	३१२	१००	नीला	१३७	२६
निश्चय	३४	३	निष्पाव	३२३	२४	नीलाङ्ग, टी.	२३४	१३
निश्चेषि			निष्प्रभ	३१२	१००	नीलाम्बर	६	२४
निश्चेष्णी	८५	१८	निष्प्रवापि	१७३	११२	नीलाम्बुजम्बु	७१	३७
निषङ्ग	२२३	८८	निष्फल	२३८	१६	नीलिका	१०६	७०
निषङ्गिन्	२१८	६६	निष्फली	२३८	१६	नीलिनी	११२	६५
निषद, टी.	४७	१	निसर्ग	५७	३८	नीली	११२	६४
निषद्या	८०	२	निसृष्ट	३०८	८८	नीलाक	३२२	२३
निषद्वर	६३	६	निस्तर्हण	२३०	११४	नीवार	२४०	२५
निषध	८६	३	निस्तल	३०३	६६	नीवि, टी.	२५६	८०
निषाद	४६	१	निस्त्रिश	२२३	८६	नीवी	२५६	८०
	२७५	२०	निष्ठाव	२४६	४६		४१५	२२१
निषादिन्	२१५	५६	निस्वन	४५	२३	नीवृत्	७७	८
निषुदन	२३०	११३	निस्वान	४५	२३	नीशार	१७५	११८
निषेकादिकृन्	२८३	७	निहनन	२३०	११४	नीहार	२१	१८
निष्क	३३३	१४	निहाका	६७	२२	नु	४३५	२५७
निष्कला	२१४७	२१	निहिंसन	२३०	११३	नुति	४२	११
निष्कली, टी.	१४७	२१	निहीन	२७४	१६	नुत्त	३०८	८७
निष्कासित	२६५	३६	निहव	४४	१७	नुन्न	३०८	८७
निष्कुट	८८	१		४१४	२१७	नूतन	३०५	७७

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
नूल	३०५	७७	नेगम	{ २५८	७८		{ २८	१२
नूद	६६	४१		{ ३८४	१४६		{ १३६	३६
नूनम्	{ ४३६	२५६	नैचिकी	२५४	६७	पक्ष	{ १६६	६८
	{ ४४६	१६	नैपाली	२६८	१०८		{ २२३	८७
नूपुर	१७२	१०६	नैमेय	२५६	८०		{ ४२०	२२६
नृ	१४२	१	नैयप्रोध	६३	१८	पक्षक	८४	१४
नृगवाच	२६८	५०						
नृसोम, टी.	३०१	५६	नैर्ऋत	{ १४	६०	पक्षति	{ २५	३६
नृत्त, टी.	५०	१०		{ १७	२	पक्षती	{ १३६	३६
नृत्य	४६	१०	नैत्तिक	२००	७		{ ३५७	७६
नृप	१६८	१	नैत्तिशिक	२१८	७०	पक्षद्वार	८४	१४
नृपसिंह, टी.	३०१	५६	नो	४४६	११	पक्षभाग	२०६	४०
नृपति, टी.	१६८	१	नौ	६४	१०	पक्षमूल	१३६	३६
नृपनाग, टी.	३०१	५६	नौकादण्ड	६५	१३	पक्षस्, टी.	१३६	३६
नृपलक्ष्मन्	२०७	३२	न्यक्	३०३	७०	पक्षान्त	२७	७
नृपशार्दूल, टी.	३०१	५६	न्यश	४२२	२३४	पक्षिणी	२६	५
नृपसभ	४७४	२७				पक्षिन्	१३८	३२
नृपासन	२०७	३१	न्यप्रोध	{ ६७	३२	पक्षमन्	३७५	१२८
नृशंस	२६७	४७		{ ३६६	१०३			
नृसेन	४८२	४०	न्यप्रोधी	११०	८७	पङ्क	{ ३१	२३
नेतृ	२८६	११	न्यङ्	३०३	७०		{ ६३	६
नेत्र	{ १६८	६३	न्यङ्कु	१३३	१०	पङ्किल	७७	१०
	{ ४०१	१८६	न्यच्	३०३	७०	पङ्केरुह	७२	४०
नेत्राश्रु	१६८	६३	न्यस्त	३०८	८८	पङ्क	१५५	४८
नेदिष्ठ	३०३	६८	न्याद	२५१	५६	पङ्क, टी.	१५५	४८
नेपथ्य	१७०	६६	न्याय	२०५	२४	पङ्क्ति	{ ८६	४
	{ ६८	२७	न्याय्य	२०५	२५	पङ्क्ती, टी.	{ ३५७	७६
नेमि, टी.	{ ६५	२६	न्यास	२५६	८१	पचंपचा	११३	१०२
	{ २१४	५६	न्युङ्ग	४६७	१७	पचंवचा, टी.	११३	१०२
नेमिन्, टी.	{ ६८	२७	न्युञ्ज	१५८	६१	पचा	३१८	८
	{ ६५	२६	न्यून	३७८	१३५	पञ्चजन	१४२	१
	{ २१४	५६				पञ्चता	२३०	११६
नेमी	{ ६८	२७	(प)			पञ्चत्व, टी.	२३१	११६
	{ ६५	२६	पक्षण	८५	२०	पञ्चदशी	२७	७
	{ २१४	५६				पञ्चम	४६	१
नैकभेद	३०७	८३	पक्ष	{ ३०६	६१	पञ्चरात्र, टी.	४६४	१२
				{ ३१०	६६	पञ्चलक्षण	४०	५

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
पञ्चशर	६	२५	पणायित	३१४	१०६	पञ्च	६२	१४
पञ्चशाख	१६४	८१	पणित	३१४	१०६	पञ्च	१३६	३६
पञ्चाङ्गल	१०१	५१	पणितव्य	२५६	८२	पञ्च	२१५	५८
पञ्चालिका	२७८	२६	पण्ड	१५२	३६	पत्रङ्ग, टी.	१७८	१३२
पञ्चास्य	१३०	१	पण्डित	१८२	५	पत्रपरशु	२७८	३२
पञ्चिका, टी.	४६१	७	पण्य	२५६	८२	पत्रपाश्या	१७०	१०३
पञ्जर	४७७	३१	पण्यवैधिका	८०	२	पत्ररथ	१३८	३३
पञ्जिका	४६०	७	पण्या	१२५	१५०	पत्रलेखा	१७६	१२२
पट	१७४	११६	पण्याजीव	२५८	७८	पञ्चाङ्ग	१७८	१३२
पटञ्जर	१७४	११५	पतग	१३८	३३	पञ्चाङ्गलि	१७६	१२२
पटल	८४	१४	पतङ्ग	१३७	२८	पञ्चाङ्गलि	१७६	१२२
पटलप्रान्त	८४	१४	पतङ्गिका	१३७	२७	पत्रिन्	२२३	८७
पटभेदन, टी.	८०	१	पतन्	१३८	३३	पत्रिन्	३६६	११३
पटवासक	१८०	१३६	पतन्त्र	१३६	३६	पत्रोर्ण	१०२	५६
पटह	३८	६	पतञ्चि	१३८	३३	पत्रोर्ण	१७३	११३
पट	१२६	१५५	पतत्रिन्	१३८	३३	पथ, टी.	७६	१५
पट	२७५	१६	पतद्ग्रह	१८०	१३६	पथिक	२०३	१७
पट	३४६	४७	पतयालु	४६६	२१	पथिका, टी.	२०३	१७
पटुपर्णी	१२२	१३८	पताका	२६१	२७	पथिकी, टी.	२०३	१७
पटोल	१२६	१५५	पताकिन्	२२६	६६	पथिन्	७६	१५
पटोलिका	११७	११८	पति	२१८	७१	पथ्या	१०३	५६
पट्ट	४६७	१७	पति	१५१	३५	पद	३६५	१००
पट्टन, टी.	८०	१	पति	२८६	१०	पदग	२१७	६६
पट्टिका	६६	४१	पतिम्बरा	१४३	७	पदवि, टी.	७६	१५
पट्टी	६६	४१	पतिव्रता	१४३	६	पदवी	७६	१५
पट्टिन्, टी.	६६	४१	पतिवली	१४५	१२	पद	१६१	७१
पट्टिश	४६६	२१	पतङ्ग, टी.	१७८	१३२	पदाजि	२१७	६६
पट्टिस, टी.	४७०	२१	पत्तन	८०	१	पदाति	२१७	६६
प	२६२	८८	पति	२१७	६६	पदातिक	२१७	६६
प	२८०	३८	पति	२२१	८०	पदिक	२१७	६७
प	२८२	४४	पतिसंहति	२१७	६७	पद्म	२१७	६७
प	२८२	४५	पत्रिन्	१३४	१५	पद्धति	७६	१५
प	३४८	५३	पत्नी	१४३	५	पद्धती	७६	१५
पण्य	४६	८	पत्र	६२	१४	पद्म	७२	३६
				४०१	१८८	पद्मक	२०६	३६

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
पद्मचारिणी	१२४	१४६	परभृत	१३५	१६	परिक्रम	३२१	१६
पद्मनाभ	५	२०	परभृत्	१३५	२०	परिक्रिया	३२२	२०
पद्मपत्र	१२४	१४५	परमम्	४४७	१२	परिक्षिप्त	३०८	८८
पद्मराग	२६४	६२	परमाज्ञ	१८८	२४	परित्वा	६६	२६
पद्मा	७	२७	परमेष्ठिन्	५	१६	परिग्रह	४२८	२४६
पद्माकर	१२४	१४६	परम्पराक	१८८	२६	परिध	२२४	६१
पद्माट	१२४	१४७	परवत्	२८८	१६	परिध	३४१	३२
पद्मालया	७	२७	परशु	२२४	६२	परिघातन	२२४	६१
पद्मिन्	२०८	३५	परश्वध	२२४	६२	परिचय	३२२	२३
पद्मिनी	७२	३६	परश्वस्	४५३	२२	परिचाय्य	१८७	२०
पद्य	४७७	३१	परस्परपराहत	४४	१६	परिचर	२१६	६२
पद्या	७६	१५	परस्वध, टी.	२२४	६२	परिचर्या	१६१	३५
पनस	१०३	६१	पराक्रम	२२७	१०२	परिचारक	२७४	१७
पनायित	३१४	१०६		३८३	१४७	परिणत	३१०	६६
पनित	३१४	१०६	पराग	६३	१७	परिणय	१६७	५६
पन्न	३१३	१०४		३३६	२६	परिणाम	३२०	१५
पन्नग	५६	८	पराङ्मुख	२६३	३३	परिणाय	२८२	४५
पन्नगाशन	७	२६	पराचित	२७४	१८	परिणाह	१७४	११४
	६२	३	पराचीन	२६३	३३	परितस्	४४८	१३
पयस्	२५०	५१	पराजय	२२६	१११	परिवाण	३१७	५
	४२६	२४२	पराजित	२३०	११२	परिदान	२५६	८०
पयस्य	२५०	५१	पराधीन	२८८	१६	परिदेवन	४३	१६
पयोधर	३६४	१७२	पराज्ज	२८६	२०	परिधान	१७५	११७
परंशत	३०२	६४	परामव, टी.	५३	२२	परिधि	२४	३२
परंसहस्र	३०२	६४	परामृत	२३०	११२		३६६	१०४
परःशत	३०२	६४	परायण	३१६	२	प्रतिधिरथ	२१६	६२
परःशता	३०२	६४	परारि	४५२	२०	परिपण	२५६	८०
परःसहस्र	३०२	६४	परार्थ	३००	५८	परिपन्थिन्	२०१	११
पर	२०१	११	पराशरिन्, टी.	१६३	४१	परिपाटि, टी.	१६१	३६
	४०६	२००	पराशरी, टी.	१६३	४१	परिपाटी	१६१	३६
परजात	२७४	१८	परासन	२३०	११३	परिपूर्णता	१८०	१३७
परजित, टी.	२७५	१८	परासु	२३१	११७	परिपेल, टी.	१२०	१३१
परतन्त्र	२८८	१६	पराकन्दिन्	२७६	२५	परिपेलव	१२०	१३१
परपियङ्गाद	२८६	२०	परितत्, टी.	१६०	६६	परिस्रव	३०४	७५
			परिकर	३६५	१७४	परिवर्ह	४२६	२४८
			परिकर्मन्	१७६	१२१			

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
परिभव	५३	२२	परिस्कन्द	२७४	१८	पर्ण	६२	१४
परिभाव टी.			परिस्कन्न, टी.	२७५	१८		६६	२६
परिभाषण	४३	१४	परिस्तोम	२१०	४२	पर्णशाला	४७०	२२
परिभूत	३१३	१०६	परिस्पन्द	१८०	१३७		८१	६
परिमल	३६	१०	परिस्पन्द, टी.	१८०	१३७	पर्णास	१०८	७६
	३२०	१३	परिस्तुत	२८१	३६	पर्यङ्क	१८०	१३८
परिरम्भ	३२४	३०	परिस्तुता			पर्यटन	३३६	१६
परिवर्जन	२३०	११४	परीक्षक	२८६	७		१६१	३५
परिवर्त	२५६	८०	परीणाय, टी.	२८२	४५	पर्यन्तभू	७८	१४
परिवस्या	१६१	३५	परीभाव	५३	२२	पर्यय	१६१	३७
परिवाद	४२	१३	परीरम्भ, टी.	२२५	३०		३२५	३३
परिवादिनी	४७	३	परीवर्त	२५६	८०	पर्यवस्था	३२२	२१
परिवापित	३०७	८५	परीवाद	४२	१३	पर्यास	२५२	५७
परिवार	३६७	१७८	परीवाप	३७८	१३६	पर्यासि	३१७	५
परिवाह, टी.	६४	१०	परीवार	३६७	१७८	पर्याय	२६१	३७
परिवित्ति	१६७	५६	परीवाह	६४	१०		३८७	१५६
परिवृद्ध	२८६	११	परीष्टि	१६०	३२	पर्युदञ्चन	२३३	३
परिवृत्ति, टी.	१६८	५६	परीसर्या, टी.	३२२	२१		१६०	३२
परिवृत्ति, टी.	१६८	५६	परीसार	३२२	२१	पर्येषणा	१६०	३२
परिवेतु	१६७	५५	परीहास	५६	३२	पर्वत	८६	१
परिवेश, टी.	२४	३२	परु, टी.	१२८	१६२	पर्वन्	१२८	१६२
परिवेष			परुत्	४५२	२०		३७५	१२८
परिव्याध	६६	३०	परुष	४४	१६	पर्वसन्धि	२७	७
	११३	६०	परुस्	१२८	१६२	पर्यु, टी.	२२४	६२
परिव्राज्	१६३	४१	परेत	२३१	११७	पर्युका	१६१	६६
परिव्राजक, टी.	१६३	४१	परेतराज्	१४	५८	पर्वध, टी.	२२४	६२
परिषद्	१८५	१५	परेता	२३१	११७	पल	२६१	८६
परिष्कन्द, टी.	२७५	१८	परेष्टुका	२५६	७०		४११	२११
परिष्कन्न, टी.	२७५	१८	पैरधित	२७४	१८	पलगण्ड	२७१	६
परिष्कार	१७०	१०१	परोक्ष, टी.	३०६	७६	पलंकषा	११३	६८
परिष्कृत	१७०	१००	परोष्ठी, टी.	१३७	२६	पलल	१५६	६३
परिद्योम, टी.	२१०	४२	परोष्णी	१३७	२६	पलाण्डु	१२४	१४७
परिष्णक्	३२४	३०	पर्कटिन्	६७	३२	पलाल	२३६	२२
परितर	७८	१४	पर्कटी	६७	३२	पलारा	६२	१४
परितप	३२२	२०	पर्जन्य	११३	१०२		६६	२६
परितर्या	३२२	२१	पर्जन्य	३८७	१५५		१२६	१५४

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
पल्लाशी	८६	५	पाकशासनि	११	४६	पात्र	६३	८
पलिक्री	१४५	१२	पाकस्थान	२४१	२७		१८८	२४
पलित	१५३	४१	पाक्य	२४६	४२		२४३	३३
पलिता, टी.	१४५	१२		२६८	१०६		४०१	१८८
पल्यङ्ग	१८०	१३८	पालख, टी.	१६४	४५	पात्रयुग	४५६	३
पल्लव	६२	१४	पाञ्चजन्य	७	२८	पात्री	४८३	४२
पल्लव	६६	२८	पाट	४४४	७	पात्रीव	४७६	३५
पव	३२३	२४	पाटच्चर	२७६	२५	पाथस्	६२	४
पवन	१४	६३	पाटल	३८	१५		८७	७
	३२३	२४		२३७	१५	पाद	१६१	७१
पवनाशन	५६	८		६४	२०		२६३	८६
पवमान	१४	६३	पाटला	१०२	५४		३६३	६६
पवि	११	४७	पाटलि	१०२	५४	पादकटक	१७२	११०
	१२६	१६६	पाटली, टी.	१०२	५४	पादग्रहण	१६३	४१
पवित्र	१५४	४५	पाठ	१८५	१४	पादप	८६	५
	३००	५५		३२४	२६	पादबन्धन	२५२	५८
पवित्रक	६५	१६	पाठा	११०	८४	पादस्फोट	१५६	५२
पशु	१३३	११	पाठान्	१०६	८०	पादाग्र	१६१	७१
पशुपति	७	३०	पाठीन	६६	१८	पादाङ्गद	१७२	१०६
पशुपेरण	३२७	३६	पाङ्	४४४	७	पादात	२१७	६७
पशुरञ्जु	२५६	७३	पाणि	१६४	८१	पादातिक	२१७	६६
पश्चात्	४३२	२५२	पाणिगृहीती	१४३	५	पादाविक, टी.	२१७	६६
पश्चात्ताप	५४	२५	पाणिग्रहण, टी.	१६८	५६	पाहुका	१७८	३०
पश्चिम	३०६	८१	पाणिघ	२७३	१३	पाहु	१७८	३०
पांशु	२२६	६८	पाणिपीडन	१६७	५६	पाहुकृत्	२७२	७
पांशुला	१४४	११	पाणिवाद	२७३	१३	पाद्य	१६०	३३
पांछ, टी.	२२६	६८	पाण्डर	३७	१२	पानगोष्ठिका	२८१	४२
पांछला, टी.	१४५	११	पाण्डु	३७	१३	पान	२८१	४०
	१४०	३८	पाण्डुक्म्बलिन्	२१४	५४	पानपात्र	२८२	४३
पाक	३१८	८	पाण्डुर	३७	१३	पानभाजन	२४३	३२
	३३६	१६	पातक	४७८	३३	पानीय	६२	४
पाककृष्णफल, टी.	१०५	६७	पाताल	५८	१	पानीयशालिका	८२	७
पाकफल	१०५	६७		४११	२११	पान्थ	२०३	१७
पाकल	११६	१२६	पातुक	२६१	२७	पाप	३१	२३
पाकशासन	१०	४१					२६७	४७

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
पापचेली	११०	८५	पारिभाष्य	११६	१२६	पाषण्ड	१६४	४५
पाप्मन्	३१	२३	पारियात्र	८६	३	पाषाण	८६	४
पाप्मन	२५८	५८	पारियात्रक			पाषाणदारण	२७६	३४
पाप्मन्	१५६	५२	पारिषद	८	३५	पिक	१३५	१६
पाप्मर	२७४	१६	पारी	४६२	१०	पिङ्ग	३८	१६
पाप्मा	१५६	५२	पार्षद, टी.	८	३५	पिङ्गल	२४	३१
पायस	{	१७८	पार्षद्य, टी.	८	३५	३८		१६
		१८८	२४	पारिहाय	१७२	१०७	पिङ्गला	१८
पायु	१६२	७३	पारुष्य	४३	१४	पिचण्ड	१६३	७७
पाय्य	२६१	८५	पार्थिव	१६८	१	पिचण्डवत्	४६८	१८
पारत, टी.	२६६	६६	पार्वती	६	३७	पिचियड, टी.	१६३	७७
पारद	२६६	६६	पार्वतीनन्दन	६	३६	पिचिण्डिल	१५४	४४
पारंपर्योपदेश	१८४	१२	पार्श्व	{	१६४	पिचु	२६७	१०६
पारशव	४१४	२१६				३२७	४१	पिचुतूल, टी.
पारश्वधिक	२१८	७०	पार्श्वभाग	२०६	४०	पिचुमर्द	१०४	६२
पारसीक	२११	४५	पार्श्वारिथ	१६१	६६	पिचुल	६६	४०
पारस्त्रेय	१४८	२४	पार्थिव	१६१	७२	पिच्छट	२६७	१०५
पारापत, टी.	१३४	१४	पार्थिवग्राह	२०१	१०	पिच्छ	{	१३८
पारापार, टी.	६२	१	पालघ्न	१२६	१६७			
पारायण	३१६	२	पालङ्की	११८	१२१	पिच्छा	{	१००
पारावत	१३४	१४	पालङ्क्या	११८	१२१			
पारावतांग्रि	१२५	१५०	पालाश	{	३८	पिच्छिल	{	२४८
	{	६१						
पारावार			६३	८	पालि	२२५	६३	१०४
	{	४७६		४०६	२०६	१०४	६२	
			पालिन्दी	११५	१०८			पिञ्ज
पाराशरिन्, टी.	१६३	४१	पालिन्धी, टी.	११५	१०८	पिञ्जर	२६७	१०३
पाराशरी	१६३	४१	पाली, टी.	२२५	६३	” टी.	४७८	३१
पारिकाङ्क्षिन्	१६३	४२	पाल्मना	४५६	५	पिञ्जल	२२६	६६
पारिजातक	{	१२	पावक	१३	५४	पिट	२४१	२६
			६५	२६	पाश	१६६	६८	पिटक
	{	६५	पाशक	२८२	५४	२७८	२६	
पारितथ्या			१७०	१०३	पाशिन			१४
पारिपार्श्वक	२४	३१	पाशुपत	१०६	८१	पिठर	{	२४२
पारिलव	३०४	७५	पाशुपाल्य	२३२	२			
पारिभद्र	६५	२६	पाश्चात्य	३०६	८१	१६७		
पारिभद्रक	१०२	५३	पाश्या	३२६	४२	१६७		

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
पेण्ड	२६५	६८	पिपीलिका	४६१	८	पीन	३०१	६१
पेण्डक	२६७	१०४	पिप्पल	६४	२०	पीनस	१५५	५१
पेण्डि, टी.	४६८	१८	पिप्पलि, टी.	११२	६७	पीनोष्णी	२५६	७१
पेण्डिका	१७८	१२८	पिप्पली			पीयूष	११	४८
पेण्डितक	२१५	५६	पिप्पलीमूल	२६६	११०		२५१	५४
पेण्डितक	२१४	५६	पिप्लु	१५५	४६	पीलु	६६	२८
पेण्डितक	२१५	५६	पियाल	६७	३५		४०७	२०२
पेण्डितक	१०१	५२	पिल्ल	१५८	६०	पीलुपर्णी	११०	८४
पेण्डक	३३१	६	पिशङ्ग	३८	१६	पीवन्	३०१	६१
पेण्डक	४७८	३२	पिशङ्गा, टी.	३८	१६	पीवर	३०१	६१
पेतरौ	१५२	३७	पिशाच	४	११	पीवरी, टी.	३०१	६१
पेतामह	५	१६	पिशित	१५६	६३	पीवरस्तनी	२५६	७१
	१५०	३३		१७६	१२४	पुञ्चली	१४४	१०
पितामही, टी.	१५०	३३	पिशुन	२६७	४७	पुकरा, टी.	२७५	२०
पितृ	१४६	२८		३७७	१३४	पुक्क, टी.	२७५	२०
पितृकानन, टी.	२३१	११८	पिशुना	१२१	१३३	पुक्क	२७५	२०
पितृदान	१६०	३१	पिष्टक	२४६	४८	पुक्क	४६७	१७
पितृपति	१४	५८	पिष्टप, टी.	७६	६	पुक्क	२१३	५०
	१७	२	पिष्टपचन	२४३	३२	पुक्क	१४१	४२
पितृपितृ	१५०	३३	पिष्टात	१८०	१३६	पुटकिनी, टी.	७२	३६
पितृप्रसू	२६	३	पीठ	१८०	१३८	पुटभेद	६३	७
पितृवन	२३१	११८	पीडन	२२६	१०६	पुटभेदन	८०	१
पितृवसति, टी.	२३१	११८	पीडा	६१	३	पुटी	४८३	४२
पितृव्य	१५०	३१	पीत	३८	१४		१८	३
पितृसंनिभ	२८७	१३	पीतक, टी.	२६७	१०३	पुण्डरीक	७२	४१
पित्त	१५६	६२	पीतदारु	१०२	५३		३३२	११
पित्त	१६६	५१	पीतद्रु	१०३	६०	पुण्डरीकाक्ष	५	१६
पित्तस्त्व	१३८	३४		११३	१०१	पुण्डर्य	११६	१२७
पिधान	२०	१३	पीतन	६५	२७	पुण्डू	१२८	१६३
पिनद्ध	२१७	६५		१७६	१२४	पुण्डूक	१०७	७२
पिनस, टी.	१५६	५१		२६७	१०३	पुण्य	३२	२४
पिनाक	८	३५	पीतसालक	६६	४३		२६३	१६६
	३३३	१४	पीता	२४६	४१	पुण्यक	१६२	३७
पिनाकिन्	८	३१	पीताम्बर	५	१६	पुण्यजन	१४	६०
पिपासा	२५१	५५	पीति	२११	४३	पुण्यजनेश्वर	१६	६६
			पीतिन्, टी.	२११	४३	पुण्यभूमि	७७	८

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
पुण्यवत्	२८५	३	पुराणा, टी.	३०५	७७	पुष्करिणी	६८	२७
पुण्याह, टी.	४७६	२६	पुराणी, टी.	३०५	७७	पुष्कल	३००	५८
पुत्तिका	१३७	२७	पुरातन	३०५	७७	पुष्कस्त	२७५	२०
पुत्र	१४६	२७	पुरावृत्त	४०	४	पुष्ट	३११	६७
पुत्रौ	१५२	३७	पुरी	८०	१	पुष्प	१३३	१७
पुत्रका, टी.	१४६	२७	पुरीतत्	१६०	६६	पुष्प	१४७	२१
पुत्तिका, टी.	१४६	२७	पुरीष	१६०	६८	पुष्पक	१६	७०
	२७८	२६	पुरु	३०२	६३	पुष्पकेतु	२६७	१०३
पुत्नी, टी.	१४६	२७		३३	२६	पुष्पदन्त	१८	४
पुत्री, टी.	१४६	२७		६५	२५	पुष्पधन्वन्	६	२६
पुद्गल	४६६	२०	पुरुष	१४२	१	पुष्पफल	६४	२१
पुनःपुनर्	४४४	१		४१६	२२७	पुष्परथ, टी.	२१३	५१
पुनर्	४३७	२६२	पुरुषोत्तम	५	२१	पुष्परस	६३	१७
	४४६	१५	पुरुषव्याघ्र, टी.	३०१	५६	पुष्पलिह	१३८	२६
पुनर्नवा, टी.	१६५	८३	पुरुह	३०२	६३	पुष्पवत्	२८	१०
पुनर्नवा	१२५	१४६	पुरुहूत	१०	४१	पुष्पवती	१४७	२०
पुनर्भव	१६५	८३	पुरोग	२१६	७२	पुष्पसमय	३०	१८
पुनर्भू	१४८	२३	पुरोगम	२१६	७२	पुष्पाञ्जन, टी.	२६७	१०३
पुलाग	६५	२५	पुरोगामिन्	२१६	७२	पुष्य	२२	२२
पुस्	१४२	१	पुरोडाश	४६६	२१	पुष्यरथ	२१३	५१
पुरःस्तर	२१६	७२	पुरोधस्	१६६	५	पूरा	१३०	१६६
	८०	१	पुरोभागिन्	२६७	४६		३३८	२५
पुर	६७	३४	पुरोहित	१६६	५	पूजा	१६१	३४
	४०३	१६२	पुर	८०	१	पूजित	३११	६८
पुरतस्	४४४	७	पुलाक	३३०	५	पूज्य	२८५	५
पुरदार	८४	१६	पुलिन	६३	६		३८६	१५६
पुरन्दर	१०	४१	पुलिन्द	२७५	२०		१६४	४५
पुरंभि, टी.	१४३	६	पुलोमजा	१०	४५	पूत	२३६	२३
पुरंभी	१४३	६	पुस्त	२७७	२८		३००	५५
पुरस्	४४४	७	पुषित	३१३	६७	पूतना	१०३	५६
पुरस्कृत	३६१	६१		१७	१	पूतिक, टी.	१०१	४८
पुरस्तात्	४३४	२५५		६२	४	पूतीक		
पुरह, टी.	३०२	६३	पुष्कर	७२	४१	पूतिकरज	१०१	४८
पुरा	४३७	२६२		१२४	१४५	पूतिकरज्ज, टी.	१०१	४८
पुराण	४०	५		४०४	१६५	पूतिका, टी.	१२७	१५७
	३०५	७७	पुष्कराह	१३६	२२			

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
पुतिक्राष्ट	{ १०२	५४	पृथगात्मिका, टी.	३४	३१	पेटक	{ २७८	२६
	{ १७३	६०	पृथग्जन	{ २७४	१६		{ ३३६	२०
पुतिगन्धि	३७	१२		{ ३६६	११२	पेटा	२७८	२६
पुतिकली	११२	६६	पृथग्विध	२१०	६३	पेटा	{ २७८	२६
पूप	२४६	४८	पृथवी, टी.	{ ७५	३		{ ४८३	४२
पूर	४६६	२०	पृथिवी			पेटा, टी.	२७८	२६
पूयणी	१००	४६		{ २४४	३७	पेयूष, टी.	२५१	५४
पूरित	३११	६८	पृथु	{ २४५	४०	पेलव	३०२	६६
	{ ३३	२६		{ ३०१	६०	पेशल	{ २७५	१६
पूरुष, टी.	{ १४२	१		{ १४०	३८		{ ४१२	२१४
पूर्ण	{ ३०२	६५	पृथुक	{ २४८	४७	पेशि, टी.	१४०	३७
	{ ३११	६८		{ ३२६	३	पेशा	१४०	३७
पूर्णकुम्भ	२०७	३२	पृथुगेमन्	६६	१७	पेशीकोष	१४०	३७
पूर्णमा, टी.	२७	७	पृथुल	३०१	६०	पेशल, टी.	२७५	१६
पूर्णमासी, टी.	२७	७		{ ७५	३	पेसल, टी.	२७५	१६
पूर्णमासी, टी.	२७	७	पृथ्वी	{ २४४	३७	पेटर	२४८	४५
पूर्यमा	२७	७		{ २४५	४०	पैतृध्वसेय	१४८	२५
पूर्य	१८६	२८	पृथ्वीका	११६	१२५	पैतृध्वसीय	१४८	२५
पूर्य	३०१	१४३	पृदाकु	५६	६	पैत्र	३१	२१
पूर्य	३०६	८०	पृश्नि	१५५	४८	पोगण्ड	१५४	४६
पूर्यज	१५३	४३	पृश्निपर्णा	१११	६२	पोटगल	{ १२८	१६२
पूर्यदेव	४	१२	पृषत्	६२	६		{ १२८	१६३
पूर्यदेव	८६	२	पृषत	{ ६२	६	पोटा	१४४	१५
पूर्यराज, टी.	४६४	१२		{ १३३	१०	पोत	{ १४०	३८
पूर्याद्ध, टी.	४६४	१२	पृषताश्व	१४	६२		{ ३५३	६७
पूर्येयुस्	४५२	२०	पृषन्ति	६२	६	पोतकी, टी.	१२७	१५७
पूषन्	२४	३६	पृषत्क	२२३	८६	पोतवणिज्	६४	१२
पृक्का, टी.	१२१	१३३	पृषदश्च	१४	६२	पोतवाह	६४	१२
पृक्ति	३१८	६	पृषदाज्य	१८८	२४	पोताधान	६६	१६
पृच्छा	४२	१०	पृष्ठ	१६३	७८	पोतिका, टी.	१२७	१५७
	{ २२०	७८	पृष्ठथ	{ २११	४६	पोता, टी.	१४०	३८
पृतना	{ २२१	८१		{ ३२७	४१	पोत्र	४०१	१८६
पृथक्	४४१	३	पृथ्वि, टी.	१५५	४८	पोत्रिन्	१३१	२
पृथक्पर्णा	१११	६२	पृथ्विपर्णा, टी.	१११	६२	पौण्ड्र, टी.	{ १२६	१६३
पृथगात्मता	{ ३४	३१	पेचक	{ १३४	१५	पौण्ड्रक, टि.		
	{ १६२	३८		{ ३३०	६	पौण्ड्र्य, टी.	११६	१२७
						पौत्री	१४६	२६

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
पौर	{ १२६ १६६		प्रगतजातुक	१५४ ४७		प्रणव	४० ४	
पौरस्त्य	{ २०३ १८		प्रगल्भ	२६० २५		प्रणाद	४२ ११	
पौरुष	{ ३०६ ८०		प्रगाढ	३४७ ५१		प्रणाल, टी. }	७१ ३५	
पौरुषी, टी.	{ १६६ ८७		प्रगुण	३०४ ७२		प्रणाली		
पौरुगव	{ ४२१ २३२		प्रगे	४५१ १६		प्रणिधि	{ २०२ १३	
पौर्यमास	{ १६६ ८७		प्रग्रह	{ २३१ ११६		प्रणिहित	{ ३६७ १०७	
पौर्यमा, टी.	{ २४१ २७		प्रग्रह	{ ४२८ २४६		प्रणीत	{ २०८ ८६	
पौर्यमासी	{ १६५ ४८		प्रग्रह	{ ४२८ २४६		प्रणीत	{ १८७ २०	
पौलस्त्य	{ २७ ७		प्रग्रह	{ ४७६ ३५		प्रणीत	{ २४८ ४५	
पौलि	{ २७ ७		प्रवण }	{ ८३ १२		प्रणुत	{ ३१४ १०६	
पौष	{ १६ ६६		प्रवण }	{ ८३ १२		प्रणय	{ २६० २५	
पौष्यक	{ २४८ ४७		प्रचक	{ २२५ ६६		प्रतति, टी.	{ ६० ६	
प्याद्	{ २६७ १०३		प्रचलायित	{ २६२ ३२		प्रतन	{ ३०५ ७७	
प्रकाण्ड	{ ४४४ ७		प्रचारण, टी.	{ ३१७ ३		प्रतल	{ १६५ ८४	
प्रकाम	{ ३२ २७		प्रचुक	{ ४६६ २०		प्रतानिनी	{ ६० ६	
प्रकार	{ ६० १०		प्रचुर	{ ४६६ २०		प्रताप	{ २०४ २०	
प्रकाश	{ ३५२ ५७		प्रचेतस्	{ ३०२ ६३		प्रतापस	{ १०६ ८१	
प्रकीर्णक	{ ३६४ १७१		प्रचोदनी	{ १४ ६१		प्रति	{ ४३३ २५४	
प्रकीर्य	{ ३६४ १७१		प्रच्छदपट	{ ११२ ६४		प्रतिकर्मन् }	{ १७० ६६	
प्रकृति	{ २५ ३४		प्रच्छज	{ १७४ ११६		प्रति, टी.	{ १७६ १२१	
प्रकीर्णक	{ ४१८ २२७		प्रच्छदि	{ ८४ १४		प्रतिकाश, टी.	{ २८० ३७	
प्रकीर्य	{ २०७ ३१		प्रच्छदि	{ १५६ ५५		प्रतिकास, टी.	{ २८० ३७	
प्रकृति	{ १०१ ४८		प्रजन	{ ३२३ २५		प्रतिकूल	{ ३०७ ८४	
प्रकृति	{ ३३ २६		प्रजनिन्	{ २१६ ७३		प्रतिकृति	{ २७६ ३६	
प्रकृति	{ ५७ ३७		प्रजा	{ ३४३ ३८		प्रतिकृष्ट	{ २६६ ५४	
प्रकृति	{ २०३ १८		प्रजाता	{ १४६ १६		प्रतिक्षिप्त	{ २६६ ४२	
प्रकृति	{ ३५७ ८०		प्रजापति	{ ५ १७		प्रतिग्रह, टी.	{ १८१ १३६	
प्रकोष्ठ	{ १६४ ८०		प्रजावती	{ १४६ ३०		प्रतिग्रह	{ २२० ७६	
प्रक्रम	{ ३२३ २६		प्रज्ञ, टी.	{ १८२ ५		प्रतिग्राह	{ १८० १३६	
प्रक्रिया	{ २०७ ३१		प्रज्ञा	{ ३४ १		प्रतिष	{ ५४ २६	
प्रक्रण	{ ४६ २५		प्रज्ञा	{ १४५ १२		प्रतिषातन	{ २३० ११४	
प्रक्रण	{ ४६ २५		प्रज्ञान	{ ३७६ १२६		प्रतिष्ठाया	{ २७६ ३५	
प्रक्षेपन	{ २२३ ८७		प्रक्षु	{ १५४ ४७		प्रतिजागर	{ ३२४ ३८	
प्रक्षेपना, टी.	{ २२३ ८७		प्रक्षीन	{ १४० ३७		प्रतिज्ञात	{ ३१४ १०८	
प्रगण्ड	{ १६४ ८०		प्रणय	{ ३२३ २५		प्रतिज्ञान	{ ३५ ५	
प्रगतजातु, टी.	{ १५५ ४७		प्रणय	{ ३८६ १६०		प्रतिदान	{ २५६ ८१	

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
प्रतिभान	४६	२६	प्रतिहार, टी.	{ ८४	१६	प्रत्याख्यात	२६५	४०
प्रतिनिधि	२७६	३६		{ २००	६	प्रत्याख्यान	३२५	३१
प्रतिपत्	२५	१	प्रतिहास	१०८	७६	प्रत्यादिष्ट	२६५	४०
प्रतिपद्	३४	१		{ १६१	७०	प्रत्यादेश	३२५	३१
प्रतिपन्न	३१४	१०८	प्रतीक	{ ३३१	७	प्रत्यालीढ	२२२	८५
प्रतिपादना	१८६	२६	प्रतांकर	२२६	११०	प्रत्यासार	२२०	७६
प्रतिबद्ध	२६५	४१	प्रतीकाश	२८०	३७	प्रत्याहार	३२१	१६
प्रतिबन्ध	३२४	२७	प्रतीकास, टी.	२८०	३७	प्रत्युत्क्रम	३२३	२६
प्रतिबिम्ब	२७६	३५	प्रतिशिस	२६६	४२	प्रत्युत्क्रान्ति, टी.	३२३	२६
प्रतिभय	५३	२०	प्रतीक्ष	२८५	५	प्रत्युषम्	२६	२
प्रतिभाषित	२६०	२५	प्रतीची	१७	१	प्रत्युषम्	२६	२
प्रतिभू	२८२	४४		{ २८६	६	प्रत्युह	३२१	१६
प्रतिभा	२७६	३५	प्रतीत	{ ३६१	८६		{ ३०६	८०
	{ २०६	३६	प्रतीपदर्शनी	१४२	२	प्रथम	{ ३०३	१५३
प्रतिमान	{ २७६	३५	प्रतीर	६३	७	प्रथा	३१८	६
				{ ८४	१६	प्रथित	२८६	६
प्रतिमुक्त	२१७	६५	प्रतीहार	{ २००	६	प्रदर	३६५	१७३
प्रतियल	३७०	११४		{ ३६७	१७६	प्रदिक्, टी.	१८	५
प्रतियातना	२७६	३५	प्रतीहारिन्	३६७	१७६	प्रदीप	१८०	१३८
प्रतिरोधक, टी.	२७६	२५	प्रतीहास, टी.	१०८	७६	प्रदीपन	६०	१०
प्रतिरोधिन्	२७६	२५	प्रतीर्ता	८०	३	प्रदेश, टी.	१६५	८३
प्रतिवाक्य	४२	१०	प्रत	३०५	७७	प्रदेशान	२०६	२७
प्रतिविम्ब	२७६	३५	प्रत्यक्षपर्णा	१११	८६	प्रदेशानी	१६४	८१
प्रतिविषा	११३	६६	प्रत्यक्षेणी	{ ११०	८८	प्रदेशानां	१६५	८२
प्रतिशासन	३२५	३४		{ १२३	१८४	प्रदीप	२७	६
प्रतिश्या, टी.	१५६	५१	प्रत्यक्ष	३०६	७६	प्रद्युम्न	६	२५
प्रतिश्याय	१५५	५१	प्रत्यग्र	३०५	७७	प्रद्रव	२२६	१११
प्रतिश्रय	३६०	१६२	प्रत्यच्	४५४	२३	प्रधन	२२८	१०३
प्रतिश्रव	३५	५	प्रत्यन्त	७६	७		{ ३३	२६
प्रतिश्रुत, टी.	३१४	१०६	प्रत्यन्तपर्वत	८७	७	प्रधान	{ १६६	५
प्रतिश्रुत्	४६	२६		{ ३८७	१५६		{ ३००	५७
प्रतिष्टम्भ	३२४	२७	प्रत्यय	३०२	१३		{ ३७६	१२६
प्रतिसर	३६६	१८३	प्रत्ययित	२०२	१३	प्रधि	२१४	५६
प्रतिसेरा	१७५	१२०	प्रत्ययिता	२०२	१३	प्रपञ्च	३४१	३३
प्रतिस्पाय, टी.	१५६	५१	प्रत्यर्थिन्	२०१	११	प्रपद	१६१	७१
प्रतिहत	२६५	४१	प्रत्यवसित	३१४	११०			

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः			
प्रपा	८२	७	प्रमाद	५५	३०	प्रवाह	३२१	१८			
प्रपात	८६	४	प्रमापण	}	२३० ११२	प्रवाहिका	१५७	५५			
प्रपितामह	१५०	३३	प्रमापन			प्रविख्याति	३२४	२८			
प्रपितामही, टी.	१५१	३३	प्रमिति			३१६	१०				
प्रपुच्छ, टी.	१२४	१४७	प्रमाति	}	१८८ २६ २३१ ११७	प्रविदारण	२२८	१०३			
प्रपुनाड, टी.	१२४	१४७	प्रमाला			५७	३७				
प्रपुचाड	१२४	१४७	प्रमाल			३००	५७				
प्रपौण्डरीक	११६	१२७	प्रमुदित	३१३	१०३	प्रवृत्ति	}	४१ ७ ३२१ १८			
प्रफुल्ल	६०	७	प्रमृत, टी.	२३२	२	प्रवृद्ध			}	३०५ ७६ ३०८ ८८	
प्रबन्धकल्पना	४०	६	प्रमेह, टी.	१५७	५६	प्रवेक	३००	५७			
प्रवाल, टी.	२६४	६३	प्रमोद	३२	२४	प्रवेक्षि	}	१६६ ६८ २१० ४२			
प्रबोधन	१७६	१२२	प्रयत	११४	४५	प्रवेष्ट			१६४	८०	
प्रभञ्जन	१४	६३	प्रयस्त	२४८	४५	प्रव्यक्त			३०६	८१	
प्रभव	४१४	२१६	प्रयाम	३२२	२३	प्रश्न	४२	१०			
प्रभा	२५	३४	प्रयुद्धार्थ, टी.	३२३	२६	प्रश्रय	३२३	२५			
प्रभाकर	२४	२८	प्रयोगार्थ	३२३	२६	प्रश्रित	२१०	२५			
प्रभात	२६	३	प्रलम्बधा	६	२३	प्रष्ठ	२१६	७२			
प्रभाव	}	२०३ १६ २०४ २०	प्रलय	}	३१ २२ ५६ ३३	२३० ११६	प्रष्ठवाह	२५३	६३		
							प्रलाप	४३	१५	प्रष्ठोही	२३६
प्रभिल	२०८	३६	}	४३ १५ ३५१ ६३	२३६ १२	प्रसज	६५	१४			
प्रभु	२८६	११				प्रक्वण	३५१	६३	प्रसजता	२१	१६
प्रभूत	३०२	६३	प्रवयण, टी.	२३६	१२	प्रसन्ना	२८१	३६			
प्रप्रष्टक	१७६	१३५	प्रवयस्	१५३	४२	प्रसन्नेरा	२८१	३६			
प्रमणसा, टी.	२८६	७	प्रवह	३२१	१८	प्रसभ	२२६	१०८			
प्रमथ	८	३५	प्रवहण	२१३	५२	प्रसर	३२२	२३			
प्रमथन	२३०	११५	प्रवह्	३००	५७	प्रसरण	२२५	६६			
प्रमथाधिप	८	३१	प्रवह्कि, टी.	४१	६	}	टी. २२५ ६६				
प्रमद	३२	२४	प्रवह्किा	४०	६				प्रसव	}	३१६ १० ४१४ २१७
प्रमदवन	८८	३	प्रवह्नी, टी.	४१	६				प्रसववन्धन		
प्रमदा	१४२	३	प्रवारण	३१७	३	प्रसव्य	३०७	८४			
प्रमदावन, टी.	८६	३	}	४६ ७ २६४ ६३ ४१२ २१३ २३० ११३							
प्रमनस्	२८६	७							प्रवाल	४१	६
प्रमा	३१६	१०							प्रवासन	२३०	११३
प्रमाण	३५१	६१									
प्रमातामह, } टी. १५१ ३३											
प्रमातामही, }											

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
प्रसन्न	४४६	१०	प्रसाव	१६०	६७	प्राणिद्युन	२८२	४५
प्रसाद	२२	१६	प्रहर	२७	६	प्रणिम्	३३	३०
	३६४	६८	प्रहरण	२२२	८२	प्रातस्	४५१	१६
प्रसाधन	१७०	६६	प्रहस्त	१६५	८४	प्रातिहार, टी.	२७३	१९
प्रसाधनी	१८०	१३६	प्रहि	६८	२६	प्रातिहारक, टी.	२७३	१९
प्रसाधित	१७०	१००	प्रहेलि, टी.	४१	६	प्रातिहारिक	२७३	१९
प्रसारणी, टी.	१२५	१५२	प्रहेलिका	४०	६	प्राथमकलिपक	१८४	१९
प्रसारिणी			प्रह्वन	३१३	१०३	प्राहुस्	४३६	२६५
प्रसारिन्	२६२	३१	प्रांशु	३०३	७०		४४७	१२
प्रसित	२८६	६	प्राक्	४४६	१६	प्रादेश	१६५	८३
प्रसिति	३२०	१४		४५४	२३	प्रादेशान	१८६	३०
प्रसिद्ध	३६६	१११	प्राकार	८१	३	प्राध्वम्	४४२	४
प्रसू	१४६	२६	प्राकृत	२७४	१६	प्रान्तर	७६	१७
	४२४	२३८	प्राग्वंश	१८५	१६		३०८	८६
प्रसूजनयितारौ	१५२	३७	प्राग्रहर	३००	५८	प्राप्त	३१३	१०४
प्रसृता	१४६	१६	प्रग्रथ	३००	५८	प्राप्तपञ्चद	२३१	११७
प्रसृति	३१६	१०	प्राधार	३१६	१०	प्राप्तकृष	३७६	१३८
प्रसृतिका	१४६	१६	प्राच्	४५४	२३	प्राप्ति	३५६	७६
प्रसूतिन	६१	३	प्राचिका	४६१	८	प्राप्य	३०६	६९
प्रसून	६३	१७	प्राची	१७	१	प्राभूत	२०६	२७
	३७६	१३०	प्राचीन	८१	३	प्राक्	१६६	५२
प्रसृत	टी. १६६	८५	प्राचीना	११०	८५		३६०	१६२
	३८८	८८	प्राचीनव्रीह	१६६	५०	प्र.यस्	४५०	१७
प्रसृत्य	१६१	७२	प्राचीर, टी.	८१	३	प्रार्थित	३११	१७
प्रसृति	१६५	८५	प्राच्य	७६	७	प्रालम्बन	१८०	१३६
प्रसेव	२५१	२६	प्राजन	२६६	१२	प्रालम्बिका	१७१	१०४
प्रसेनक	४६	७	प्राजितु	२१५	५६	प्रालिप्त	२१	६८
प्रस्तर	८६	४	प्राज्ञ	१८२	५	प्रावह	१७५	११७
प्रस्ताव	३२३	२४	प्राज्ञा	१४५	१२	प्रावृत	१७३	११३
	८७	५	प्राज्ञी	१४५	१२	प्रावृता, टी.	१७३	११३
प्रस्थ	२६२	८६	प्र.ज्य	३०२	६३	प्रावृत्	३०	१६
	३६३	६५	प्राज्ञिवाक	१६६	५	प्रावृषा, टी.	३०	१६
प्रस्थपुष्प	१०८	७६		१५	६३	प्रावृषायर्था	११०	८६
प्रस्थान	२२५	६५	प्राण	२२७	१०२	प्राश, टी.	२२५	६३
प्रस्फोटन	२४०	२६		२३१	११६	प्रास	२२५	६३
प्रस्रवण	८७	५		२६७	१०४	प्रासह	२६५	५७

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
प्रसंग्य	२५४	६४	प्रोक्षित	१८८	२६			
प्रासाद	८२	६	प्रोथ	२१२	४६			
प्रासिक	२१८	७०	प्रोष्ठ, टी.	६६	१८	फञ्ज	१२	१५
प्रास्थिक, टी.	२३५	१०	प्रोष्ठपद	२२	२२		२२४	६०
प्राह	२६	३	प्रोष्ठी	६६	१८		२३६	१३
प्रिय	१५१	३५	प्रोष्ठपद	३०	१७		२५६	८०
	२६६	५३	प्रोट	३०५	७६		४११	२१०
प्रियक	६६	४२	सग	६७	३२	फलक	४७१	२३
	१००	४४		६६	४३		२२४	६०
	१०२	५६		६४	११	फलकपाणि	२१८	७१
	१३२	६		६८	२४	फलत्रिक	३६६	१११
प्रियगु, टी.	१०२	५५	सक	१२०	१३२	फलपूर	१०८	७८
	२३८	२०		१३६	३४	फलवत्	६०	७
प्रियंशु	२३८	२०	सकग	१३५	१६	फलान्यश्च	१००	४५
प्रियता	५४	२७	सकग	१३१	३	फलित्	६०	७
प्रियंवद	२६४	३६	सकग	३४०	२६	फलिन	६०	७
प्रियात्त, टी.	६८	३५	सकगम	३८३	१४७	फलिनी	१०२	५५
प्रिखन	३१७	४	साश	६३	१८		१२२	१३६
प्रित	३१३	१०३	सहम्	१६०	६६	फली	१०२	५५
प्रिति	३२	२४	साहा, टी.	१६०	६६	फलोमहि	८६	६
प्रुष्ट	३१२	६६	साहिशतु	१०१	४६	फलैरुहा	१०२	५४
प्रेक्षा	३४	१	सत	२१२	४८	फल्यु	१०३	६१
	४२२	२३३	सष्ट	३१२	६६		३००	५६
प्रेक्षा	२१४	५३	सोष	३१८	६	फणित	२८६	४३
प्रेक्षित	३०८	८७	प्सात	३१४	११०	फण्ट	३१०	६४
	६०	२				फाल	१७३	१११
प्रेत	२३१	११७	(फ)				२३६	१३
	३५३	६७				फाल्युन	२६	१५
प्रेत्य	४४४	८	फञ्जिका, टी.	१११	८६	फाल्युनिक	२६	१५
प्रेम	५४	२७	फटा, टी.	६०	६	फुल्ल	६०	८
प्रेम्	५४	२७	फण	५६	६	फेन	२६७	१०५
प्रेष्ठ	३१५	१११	फणा	५६	६		४६८	१६
प्रेष्ठ, टी.	२७४	१७	फण्जिनक	१०८	७६	फेनिल	६६	३१
प्रेष्ठ, टी.	२७४	२८	फण्जिनक, टी.	१०८	७६		६८	३६
प्रेष्ठ	२७४	१७	फण्जिन्	५६	७	फेरव	१३१	५
प्रेष्ठय	१८८	२६	फा, टी.	२२४	६०	फेर	१३१	५
						फेलक, टी.	२५२	५६
						फेला	२५१	५६

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
केलि, टी.	२५२	५६	बर्हिपुष्प, टी.	१२१	१३२	बलितप्रवृत्त	५८	१
(ब)			बर्हिण	१३८	३०	बलीवर्द्ध	२५२	५६
बक	१३६	२२	बर्हिन्	१३८	३०	बल्लव	२४१	२७
बकुल	१०४	६४	बर्हिपुष्प	१२१	१३२		२५२	५७
बङ्गिशा, टी.	६६	१६	बर्हिमुख	३	६	बल्लवज	१२८	१६३
बणिक	२५८	७८	बर्हिस	१३	५४	बन्धयिणी	२५६	७१
बणिज्या	२५८	७६	बर्हिष्ठ	११८	१२२	बस्त	२५७	७६
बदर	६८	३७		६	२४	बस्ति	१६२	७३
बदरी	६८	३६		२०३	१७	बहिर्द्वार	८४	१६
बदरा	११७	११६	बल	२२०	७८	बहिष्ठ	३१५	१११
	१२५	१५१		२२७	१०२	बहिस	४५०	१७
बद्ध	२६६	४२		४०८	२०४	बहु	३०२	६३
	३१०	६५		४७०	२२	बहुकर	२८८	१७
बधिर	१५५	४८	बलज	३४३	३७	बहुगर्भवाच्	२६४	३६
बन्दा	१०६	८२	बलजा			बहुपाद	६७	३२
बन्धक	३३६	१०४	बलदेव	६	२३	बहुमद	२८५	६
बन्धकी	१४४	१०	बलभद्र	६	२३	बहुमूल्य	१७३	११३
बन्धन	२०५	२६	बलभद्रिका	१२५	१५०	बहुरूप	१७७	१२८
	३२०	१४	बलवत्	१५४	४४	बहुल	३०२	६३
बन्धनालय	२३१	११६		४४१	२		४१०	२०८
बन्धनी, टी.	२५७	७३	बलविन्यास	२२०	७६	बहुला	११६	१२५
बन्धस्तम्भ	२१०	४१	बला	११५	१०७		४१०	२०८
बन्धु	१५१	३४	बलाका	१३६	२५	बहुलीकृत	२३६	२३
बन्धुजीवक	१०७	७३	बलात्कार	२२६	१०८	बहुवारक	६७	३४
बन्धुता	१५१	३५	बलाराति	१०	४३	बहुविध	३१०	६३
बन्धुर	३०३	६६	बलाहक	१८	६	बहुमुना	११३	१००
बन्धुल	१४८	२६		१८	६	बहुसूति	२५६	७०
बन्धुक	१०७	७३	बलि	१८५	१४	बाकुची, टी.	११२	६६
बन्धुकपुष्प	१००	४४		२०६	९७	बाडव	२११	४६
बन्धूर, टी.	३०३	६६		४०८	२०४	बाडव्य	३२७	४१
बन्ध्य	६०	७	बलिध्वंसिन्	५	२१	बाढ	१५	६७
बन्ध्या	२५५	६६	बलिन	१५४	४५		३४७	५१
बन्धु	३६७	१७६	बलिपुष्ट	१३५	२०	बाण	२२३	८६
बर्बर	१११	६०	बलिभ	१५४	४५		३४७	५२
बर्बरा	१२२	१३६	बलिभुज	१३५	२०	बाणिज	२५८	७८
बर्ह	१३८	३१	बलिशा	६५	१६	बाणिज्य	२५८	७६
	४२८	२४५						

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
बादर	१७३	१११	बाह्लीक	२४५	४०	बुस्त	४७६	३५
बाधा	६१	३	बिन्दु	{ ६२	६	बृक, टी.	१५६	६४
बान्धक्रियेय	१४८	२६		{ २६२	३०	बृक, टी.	१५६	६४
बान्धव	१५१	३४	बिन्दुजालक	२०६	३६	बृकन्. टी.	१५६	६४
बार्हत	६३	१६	बिम्ब	२०	१५	बृका, टी.	१५६	६४
बाल	{ ११८	१२२	बिम्बिका	१२२	१३६	बृहत्	३०१	६०
	{ १५३	४२	बिल	{ ५८	१	बृहत्तिका	१७५	११७
	{ १६८	६५		{ ८७	६	बृहती	{ ११२	६३
	{ २११	४६	बिलेशय	५६	८		{ ३५८	८२
	{ ४१२	२१४	बिल्व	६७	३२	बृहत्कुक्षि	१५४	४४
बालगर्भिणी	२५६	७०	बिस्त	२६१	८६	बृंहित	२२८	१०७
बालतनय	१०१	४६	बीज	{ ३३	२८	बृहद्भ्रातृ	१३	५४
बालवृण	१२६	१६७		{ १५६	६२	बृहस्पति	२३	२४
बालधि	२१३	५०	बीजकोश	{ ७३	४३	बोधकर	२२६	६७
बालपाश्या	१७०	१०३	बीजकोष			बोधि, टी.	६४	२०
बालमूषिका	१३३	१२	बीजपूर	१०८	७८	बोधिद्रुम	६४	२०
बालहस्त	२१३	५०	बीजाकृत	२३४	८	बोल	२६७	१०४
बाला	१५३	४२	बीज्य	१८१	२	ब्रध	२४	२८
बालिश	२६८	४८	बीभत्स	{ ५२	१७	ब्रह्मचारिन्	{ १८२	३
बालुक	११८	१२१		{ ५२	१६		{ १६३	४२
बालेय	२५८	७७		{ ४२७	२४३	ब्रह्मण्य	६६	४१
बालेयशाक	१११	६०	बृक	१०६	८१	ब्रह्मल	१६६	५१
बाल्य	१५३	४०	बृका	१५६	६४	ब्रह्मदर्भा	१२४	१४५
बाण्य	३७६	१३७	बृकाप्रमार्सा	१५६	६४	ब्रह्मदाय	६६	४१
बाण्यिका	२४५	४०	बुद्ध	{ ४	१३	ब्रह्मन्	{ ५	१६
बाहु	१६४	८०		{ ३१४	१०८		{ ३७३	१२१
बाह	{ १६४	८०	बुद्धि	३४	१	ब्रह्मपुत्र, टी.	{ ६०	१०
			बुद्धिबुद्ध	४६८	१६		{ ४६४	१२
बाहा, टी.				{ २३	२६	ब्रह्मवन्धु	३६६	१११
बाहुज	२६८	१	बुध	{ १८२	५	ब्रह्मभूय	१६६	५१
बाहुदा	७०	३३		{ ३६७	१०७	ब्रह्मवर्षस	१६२	३८
बाहुमूल	१६४	७६	बुधित	३१४	१०८	ब्रह्मबिन्दु	१६२	३६
बाहुयुद्ध	२२८	१०६	बुध	६१	१२	ब्रह्मयज्ञ	१८५	१४
बाहुल	३०	१८	बुभुक्षा	२५१	५५	ब्रह्माणी, टी.	८	३५
बाहुलेय	६	४०	बुभुक्षित	२८६	२०	ब्रह्मासायुज्य	१६६	५१
बाहुव	४७८	३२	बुध	२३६	२२	ब्रह्मसू	७	२७
बाह्विक, टी.	२४५	४०	बुस	२३६	२२			

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
ब्रह्माकलि	१६२	३६	भयडी	१११	६१	भर्मन्	{ २६४	६४
ब्रह्मासन	१६२	३६	भयडारिका, टी.	१११	६१		{ २८०	३८
ब्रह्मण्य	{ १८१	१	भयडारी	१११	६१	भल्ल	{ १३१	४
	{ १८२	४	भद्र	{ ३२	२५		{ ४६६	२१
ब्रह्मण्ययष्टिका	१११	८६		{ २५२	५६	भल्लातक	६६	४२
ब्रह्मणी	१११	८६	भद्रकुम्भ	२०७	३२	भल्लातकी	६६	४२
	{ ८	३५	भद्रद्वार	१०२	५३	भल्लुक	१३१	३
ब्राह्मी	{ ३६	१	भद्रपर्णा	६७	३६	भल्लूक, टी.	१३१	३
	{ १२२	१३७	भद्रपदा	२२	२२	भव	{ ८	३४
ब्राह्म	{ ३१	२१	भद्रबला	१२५	१५३		{ ४१३	२१५
	{ १६६	५१	भद्रमुरतक	१२७	१६०	भवन	८१	५
ब्राह्मण्य	३२७	४१	भद्रयव	१०५	६७	भवानी	६	३७
(भ)			भद्रबला	१२५	१५३	भवि	३२	२६
भ	२२	२१	भद्रश्री	१०८	१३१	भवितु	२५२	२६
भक्त	२४६	४८	भद्रासन	२०७	३१	भविष्यु	२५२	२६
भक्षक	२८६	२०	भय	५३	२१	भव्य	३२	२६
भक्षकार	२४१	२८	भयंकर	५३	२०	भव्या, टी.	४८६	४५
भक्षित	३१४	११०	भयद्रुत	२६६	४२	भष	२७५	२२
भक्ष्यकार, टी.	२४१	२८		{ ५२	१७	भष्ठा	२७६	३३
भग	{ १६३	७६	भयानक	{ ५२	२०	भस्मगन्धिनी	११८	१२०
	{ ३४०	३१		{ ५२	२०	भस्मगर्भा	१०४	६३
भगन्दर	१५७	५६	भर	१५	६६	भस्मन्	३५६	७६
भगवत्	४	१३	भरण	२८०	३८	भा	२५	३४
भगिनी	१३६	२६	भरण्य	२८०	३८	भाग	२६३	८६
भार्ग, टी.	१३६	२६	भरण्यभुज्	२८६	१६		{ ३३	२८
भङ्ग	६२	५	भरण्या, टी.	२८०	३८		{ २०६	२७
भङ्गा	२३८	२०	भरत	२७३	१२	भागिन्य	१५०	३२
भङ्गि	४६१	८	भरतवर्ष, टी.	७६	६	भागिनेयी, टी.	१५०	३२
भजमान	२०५	२४	भरद्वाज	१३४	१५	भागोरथी	७०	३१
भट	२१६	६१	भर्ग	८	३३	भाग्य	{ ३३	२८
भटिन्	२४८	४५	भर्ग्य, टी.	८	३३		{ ३६१	१६४
भट्टारक	५०	१३	भर्तु	{ १५१	३५	भङ्गिन, टी.	२३४	७
भट्टिनी	५०	१३		{ ३५२	६६	भाजन	२४३	३३
भयटाकी	११६	११४	भर्तुदारक	५०	१२	भाण्ड	{ २४३	३३
भयिडर, टी.	१०४	६३	भर्तुदारिका	५०	१३		{ ३४७	५१
भयिडल	१०४	६३	भर्त्सन	४३	१४	भाण्डारी, टी.	१११	६१

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
भाद्र	३०	१७	भाषित	{ ३६ १		भीरु	{ ११३ १००	
भाद्रपद	३०	१७		{ ३१४ १०७			{ १४२ ३	
भाद्रपदा, टी.	२२	२२	भाष्य	४७७	३१		{ २६१ २६	
	{ २४ ३१		भास्	२५	३४	भीरुक	२६१	२६
भातु	{ २५ ३३		भास्कर	२४	२८	भीरुपत्नी	११३	१०१
	{ ३६६ ११२		भावन्	२४	२६	भालु	२६१	२६
भामिनी	१४२	४	भिक्षा	{ ३१८ ६		भालुक	२६१	२६
भार	२६२	८७		{ ४२२ २३३		भीषण	५२	२०
भारत (वर्ष)	७६	६	भिक्षाकदम्बक	१६४	४६	भीष्म	५२	२०
भारती	३६	१	भिक्षु	{ १८२ ३		भीष्मसू	७०	३१
भारद्वाज, टी.	१३४	१५		{ ११३ ४१		भुक्त	३१४	१११
भारद्वाजी	११७	११६	भिक्षुकी	१५६	२६	भुक्तसमुष्कृत	२५१	५६
भारयष्टि	२७८	३०	भित्त	२०	१६	भुन	{ ३०४ ७१	
भारवाह	२७४	१५	भित्ति	८१	४		{ ३०६ ६१	
भारिक	२७४	१५	भिदा	३१७	५	भुन	१६४	८०
भारिन्, टी.	२७४	१५	भिदुर	११	४७	भुनग	{ ५६ ६	
भार्गव	२३	२५	भिदिपाल	२२४	६१	भुनङ्गभुज्	१३८	३०
भार्गवी	१२७	१५८	भिन्न	३१२	१००	भुनङ्गम	५६	६
भार्गी	१११	८६	भिया, टी.	५३	२१	भुनङ्गाक्षी	११६	११५
भार्या	१४३	६	भिषज्	१५७	५७	भुनशिरस्	१६३	७८
भार्यापती	१५२	३८	भिष्मा, टी.	२४६	४८	भुजा, टी.	१६४	८०
भाल्लुक	{ १३१ ४		भिष्मिका, टी.	२४६	४६	भुजान्तर	१६३	७७
भाल्लूक	{ १३१ ४		भिष्मिटा, टी.	२४६	४६	भुजिष्य	२७४	१७
भालूक	१३१	४	भिष्मिष्ठा, टी.	२४६	४६	भुजिष्या, टी.	२७४	०१७
	{ ५० १२		भिस्मा, टी.	२४६	४६	भुन	{ ६२ ३	
भाव	{ ५३ २१		भिस्मटा, टी.	२४६	४६		{ ७६ ६	
	{ ४१३ २१६		भिरसा	२४६	४८	भू	{ ७५ २	
भावबोधक	५३	२१	भिरसाटा	२४६	४६		{ ४५६ ३	
	{ १७६ १३४		भिरिमटा, टी.	२४६	४६	भूत	{ ४ ११	
भावित	{ २४८ ४६		भिरिस्मटा, टी.	२४६	४६		{ ३१३ १०४	
	{ ३१३ १०४		भी	५३	२१		{ ३५६ ८५	
भाविनी, टी.	१४३	४	भीत	५३	२१	भूतकेश	२६६	१११
भावुक	३२	२६	भीति	५३	२१	भूतवेशी	१०६	७१
भाश्	२५	३४	भीम	{ ८ ३४		भूतावास	१०३	५८
भाषा	३६	१		{ ५२ २०		भूतात्मन्	३६६	११२

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
भूति	{ १ ३६ ३५६ ७६		भृगु	८६	४	भ्रकुंश	५०	११
भूतिक	३३१	८	भृङ्ग	{ १३४ १६ १३८ २६		भ्रकुटि	{ ५७ ३७	
भूतेश	८	३१	भृङ्गरजस्, टी.	१२५	१५१	भ्रकुटी, टी.		
भूदार	१३१	२	भृङ्गराज	१२५	१५१	भ्रम	{ ३५ ४ ६३ ७	
भूदेव	१८२	४	भृङ्गराजन्, टी.	१२५	१५१	भ्रमर	१३८	२६
भूनिम्ब	१२३	१४३	भृङ्गार	२०७	३२	भ्रमरक	१६६	६३
भूप	१६८	१	भृङ्गारी	१३७	२८	भ्रमि	३१८	६
भूपदी	१०६	७०	भृत्क	२७४	१५	भ्रष्ट	३१३	१०४
भूपाल, टी.	१६८	१	भृते	२८०	३८	भ्राजिष्णु	१७०	१०१
भृभृन्	३५३	६८	भृतिभुज्	२७४	१५	भ्रातरौ	१५१	३६
भूमन्, टी.	३०२	६३	भृत्य	२७४	१७	भ्रातृज	१५१	३६
भूमि	७५	२	भृत्या	२८०	३८	भ्रातृनाया	१४६	३०
भूमिजम्बुका	{ ६८ ३८ ११७ ११८		भृश	१५	६६	भ्रातृभगिनी	१५१	३६
भूमिदेव, टी.	१८२	४	भृष्टयव	२४८	४७	भ्रातृव्य	३८७	१५५
भूमिपाल, टी.	१६८	१	भेक	६८	२४	भ्रात्रीय	१५१	३६
भूमिस्पृश	२३२	१	भेकी	६८	२४	भ्रान्ति	३५	४
भूमी, टी.	७५	२	भेद	{ २०४ २० २०४ २१		भ्राष्ट्र	२४२	३०
भूयस्	३०२	६३	भेदित	३१२	१००	भ्रुकुंस	५०	११
भूयिष्ठ	३०२	६३	भेरि, टी. }	४८	६	भ्रुकुटि	{ ५७ ३७	
भूरि	{ ३०२ ६३ ४०२ १६१		भेरी			भ्रुकुटी		
भूरिकेना	१२३	१४३	भेषज	१५५	५०	भ्रू	१६७	६२
भूरिमाय	१३१	५	भैक्ष	१६४	४६	भ्रुकुंस	५०	११
भूहण्डी	१०६	६६	भैरव	५२	१६	भ्रुकुटि	{ ५७ ३७	
भूर्ज	१००	४६	भैषज्य	१५५	५०	भ्रुकुटी		
भूषण, टी.	१७०	१०१	भोग	३३६	३८	भ्रू	{ १५२ ३६ ३४७ ५२	
भूषा	१७०	१०१	भोगवत्	३५६	७७	भ्रूष		
भूषित	१७०	१००	भोगवर्ती	३५६	७७	भ्रूष	२०४	२३
भूष्ण	२६२	२६	भोगिन्	५६	८	(म)		
भूस्तृण	१२६	१६७	भोगिनी	१४३	५	मकर	६६	२०
भृकुटि }	५७	३७	भोजन	२५१	५५	मकरध्वज	६	२६
भृकुटी }			भोस्	४४४	७	मकरन्द	६३	१७
भृकुंस, टी.	५०	११	भौम	२३	२५	मकुट	१७०	१०२
			भौरिक	२००	७	मकुर	१८१	१४०
			भ्रंश	२०४	२३	मकुष्ठक	२३७	१७

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
मकूलक	१२३	१४४	मण्डल	१८	६	मदन	६	२५
मक्षिका	१३७	२६	मण्डल	२०	१५	मदन	१०२	५३
मख	१८५	१३	मण्डल	२४	३२	मदन	१०८	७८
मगध	२२६	६७	मण्डलक	१५६	५४	मदस्थान	२८१	४०
मघवन्	१०	४१	मण्डलाग्र	२२३	८६	मदिरा	२८१	४०
मघवान्, टी.	१०	४१	मण्डलेश्वर	१६६	२	मदिरागृह	८२	८
मङ्कुर, टी.	१८१	१४०	मण्डहारक	२७२	१०	मदोक्त	२०८	३५
मङ्गु	४४१	२	मण्डित	१७०	१००	मदय	१३६	३४
मङ्गल	३२	२५	मण्डक	६८	२४	मदयुर	६६	१६
मङ्गल्यक	२३७	१७	मण्डकपर्ण	१०१	५६	मद्य	२८१	४०
मङ्गल्या	१७७	१२७	मण्डकपर्णी	१११	६१	मद्र, टी.	४७	२
मचर्चिका	३२	२७	मण्डूर	२६५	६८	मधु	२६	१५
मज्जन	६१	१२	मन्तंगज	२०८	३४	मधु	२६८	१०७
मन्ध	१८०	१३८	मन्तलिका	३२	२७	मधु	२८१	४१
मन्त्रज्ञा	२७८	२६	मन्ति	३४	१	मधु	३६८	११०
मन्त्रि	६१	१३	मन्त	२०८	३६	मधुक	११५	१०६
मन्त्री, टी.	६२	१३	मन्त	२६०	२३	मधुकर	१३८	२६
मन्त्रिष्ठा	१११	६०	मन्त	३१३	१०३	मधुकम	२८१	४०
मन्त्रीर	१७२	१०६	मन्तकाशिनी	१४२	४	मधुनुम	६५	२७
मन्त्रु	२६६	५२	मन्तकाशिणी, टी.	१४३	४	मधुप	१३८	२६
मन्त्रुल	२६६	५२	मन्तकासिनी	१४३	४	मधुपर्णिका	६७	३५
मठ	८२	८	मन्तस, टी.	६६	१७	मधुपर्णिका	११२	६४
मडु	४६	८	मन्तर	३६८	१८१	मधुपर्णी	१०६	८३
मणि	७	२८	मन्तरी, टी.	६६	१७	मधुपायिन्, टी.	१३८	२६
मणि	२६४	६३	मन्त्य	६६	१७	मधुपालिन्	१३८	२६
मणिक	२४२	३१	मन्त्यगडी	२४६	४३	मधुमक्षिका	१३७	२६
मणित	४५	२१	मन्त्याधानी	६५	१६	मधुयष्टिका	११५	१०६
मणिवन्ध	१६४	८१	मन्त्यपित्ता	११०	८६	मधुर	३६	६
मणी, टी.	२६४	६३	मन्त्यवेधन	६५	१६	मधुर	४०६	२००
मण्ड	१०१	५१	मन्त्यवेधनी, टी.	६६	१६	मधुरक	१२३	१४२
मण्ड	२४६	४६	मन्त्याश्वी	१२२	१३७	मधुरसा	११०	८३
मण्डन	१७०	१०२	मणित	२५१	५३	मधुरसा	११५	१०७
मण्डन	२६२	२६	मद	२०६	३७	मधुरा	१२५	१५२
मण्डना	२६२	२६	मद	३१६	१२	मधुरिका	११४	१०५
मण्डप	८२	६	मद	३६४	६८	मधुरिपु	५	२०
			मदकल	२०८	३५	मधुरिह	१३८	२६

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
मधुवार	२८१	४०	मनुष्य	१४२	१	मन्दुरा	८२	७
मधुव्रत	१३८	२६	मनुष्यकुञ्जर, टी.	३०१	५६	मन्दोष्ण	२५	३५
मधुशिमु	६६	३१	मनुष्यधर्मा (न)	१६	६८	मन्त्र	४७	२
मधुश्रवा	१२३	१४२	मनोयुता	२६८	१०८	मन्मथ	६	२५
मधुश्रेणी	११०	८४	मनोज, टी.	७	२६	मन्थ	६४	२१
मधुघील	६५	२८	मनोजव	२८७	१३	मन्या	१६०	६५
मधूक	६५	२७	मनोजवस्	२८७	१३	मन्यु	५४	२५
मधूच्छिष्ट	२६८	१०७	मनोज्ञ	२६६	५२	मन्वन्तर	३१	२२
मधूलक	६५	२८	मनोज्ञा	२६६	५२	मपष्ठक	टी. २३८	१७
मधूलिक, टी.	६५	२८	मनोरथ	५४	२७	मपुष्ठक	टी. २३८	१७
मधूलिका	११०	८४	मनोरम	२६६	५२	मय	२५७	७५
	४६	६	मनोहत	२६५	४१	मयष्ठक, टी.	२३८	१७
मध्य	१६४	७६	मनोहर, टी.	२६६	५२	मयु	१६	७१
	३६३	१७०	मनोहारिन्, टी.	२६६	५२	मयुष्ठक	२३७	१७
मध्यदेश ✓	७६	७	मनोज्ञा	२६८	१०८	मयूख	२५	३३
	४६	१	मन्तु	२०५	२६		३३८	२३
मध्यम	७६	७	मन्त्र	२६६	१७६	मयूर	११५	१११
	१६४	७६	मन्त्रज	२०३	१६		१३८	३०
मध्यमा	१४४	८	मन्त्रव्याख्याकृत्	१८३	७	मयूरक	१११	८८
	१६५	८२	मन्त्रिन्	१६६	४		२६६	१०१
मध्या	१४४	८	मन्थ	२५७	७४	मयूरीकुक्कुट, टी.	४८४	४२
मध्याह्न	२६	३	मन्थदण्डक	२५७	७४	मरकत	२६४	६२
मध्वासव	२८१	४१	मन्थनी	२५७	७४	मरण	२३०	११६
मनःशिला	२६८	१०८	मन्थर	२१६	७२	मरिच	२४४	३६
मनःशिला	२६८	१०८	मन्थाः	२५७	७४	मरीच, टी.	२४४	३६
मनःसिला	२६८	१०८	मन्थान	२५७	७४	मरीचि	२५	३३
मनसिज	६	२६	मन्द	२७४	१८	मरीचिका	२५	३५
मनस्	३४	३१		३६५	१०२	मरु	७६	५
मनस्कार	३४	२	मन्दगामिन्	२१६	७२		३६४	१७२
मनाक्	४४४	८	मन्दाकिनी	११	४६		१४	६२
मनित	३१४	१०८	मन्दाक्ष	५३	२३		१७	२
मनीषा	३४	१		१२	५०		३५२	६६
मनीषिन्	१८२	५	मन्दार	६५	२६	मरुत्	१७	२
मनु	४८१	३८		१०६	८१	मरुत्विन्	१०	४१
मनुज	१४२	१	मन्दिर	८१	५	मरुन्माला	१०१	१३३
मनुषी, टी.	१४२	१		४०३	१६३			

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
मकवक	{ १०१	५२	मसूर	२३७	१७	महि, टी.	७५	३
मकैट	१३१	३	मसूरविदला	११५	१०६	महिका	२१	१८
मकैटक	१३३	१३	मसूरा, टी.	२३८	१७	महिष, टी.	८६	१
मकैदी	{ १०१	४८	मसृण	२४८	४६	महिलाह्वया	१०२	५५
	{ ११०	८७	मस्कर	१२७	१६१	महिला	१४२	२
मर्त्य	१४२	१	मस्करित्	१६३	४१	महिष	१३१	४
मर्दन	३२२	२२	मस्त, टी.	१६८	६५	महिषी	१४३	५
मर्दल	४६	८	मस्तक	१६८	६५	मही	७५	३
मर्दित, टी.	३०८	८६	मस्तिष्क	१६०	६५	महीक्षित्	१६८	१
मर्म	४७६	३०	मस्तु	२५१	५४	महीध	८६	१
मर्मर	४५	२३	मह	५७	३८	महीधर, टी.	८६	१
मर्मस्पृक्	३०७	८३	महत्	{ ३०१	६०	महीकह	८६	५
मर्यादा	२०५	२६		{ ३५६	८६	महीलता	६७	२१
मल	{ १६०	६५	महती	३५६	७६	महीला, टी.	१४२	२
	{ ४०६	२०६	महत्	४२५	२४०	महीलत	२३	२५
मलदूषित	३००	५५	महाकन्द	१२४	१४८	महेच्छ	२८५	३
मलयू	१०३	६१	महाकुल, टी.	१८२	३	महेरणा	११८	१२४
मलयज	१७८	१३१	महाक्ष	२५६	७५	महेला, टी.	१४२	२
मलयू, टी.	१०४	६१	महाजाली	११७	११७	महेश्वर	७	३०
मलिन	३००	५५	महादेव	८	३२	महोक्ष	२५३	६१
मलिनी	१४७	२०	महाधन	१७३	११३	महोत्पल	७२	३६
मलिस्तुष	२७६	२५	महानस	२४१	२७	महोत्साह	२८५	३
मलीमस	३००	५५	महामात्र	१६६	५	महोद्यम	२८५	३
मल्ल	४६६	२१	महायज्ञ	१८५	१४		{ ११३	१००
मल्लक	४८०	३७	महारजत	२६४	६५	महौषध	{ १२४	१४८
मल्लिका	{ १०६	६६	महारजन	२६७	१०६		{ २४५	३८
	{ १३६	२४	महारयय	८८	१	महौषधी, टी.	२४५	३८
मल्लिकार्य	१३६	२४	महाराजिक	३	१०		{ १५६	६३
मवित, टी.	३६८	८६	महारैव	६०	१	मांस	{ ४७०	२२
मषी, टी.	४६२	१०	महाशय	२८५	३	मांसल	१५४	४४
मसि, टी.	४६२	१०	महाशब्दी	१४५	१३	मांसिक	२७३	१४
मसी	४६२	१०	महाश्वेता	११५	११०	मा	४४६	११
मसुर, टी.	२३८	१७	महासहा	{ १०७	७३	मासिक	२६८	१०७
मसुरा, टी.	२३८	१७		{ १२२	१६८	मागध	{ २२६	६७
			महासेन	६	३६		{ २७०	३

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
भागधी	{ १०६	७१	मातृष्वसीय	१४८	२५	मार्ग	{ २६	१४
	{ ११२	६६	मात्र	४००	१८७		{ ७६	१५
माघ	२६	१५	मात्रा	{ ३०१	६२		{ २२३	८७
माघ्य	१०७	७३		{ ४००	१८६	मार्गण	{ २६८	४६
माठर	२४	३१	माथुर, टी.	४८७	४५		{ ३२४	३०
माढि	४६२	८	माथुरी, टी.	४८७	४५	मार्गशीर्ष	२६	१४
माणव, टी.	१५३	४२	माद्	३१६	१२	मार्गित	३१३	१०५
माणवक	{ १५३	४२	माधव	{ ५	१८	मार्जेन	६७	३३
	{ १७१	१०६		{ २६	१६	मार्जेना	१७६	१२१
माणव्य	३२७	४०	माधवक	२८१	४१	मार्जार	१३२	६
माणिक्य	४७७	३१	माधवीलता	१०७	७२	मार्जिता	२४७	४४
माणिक्य, टी.	२४६	४२	माध्वक, टी.	२८१	४१	मार्तण्ड	}, टी.	२४ २६
माणिमन्थ	२४६	४२	माध्वीक, टी.	२८१	४१	मार्तोण्ड		
मातङ्ग	{ २७५	१६	मान	{ ५३	२२	मार्दङ्गिक	२७३	१३
	{ ३३६	२६		{ २६१	८५	मार्दङ्गिक	२८१	४१
मातरपितरौ	१५२	३७	मानव	१४२	१	मार्दि	१७६	१२१
मातरिष्वन्	१४	६१	मानव्य, टी.	३२७	४०	मालक	१०४	६२
मातलि	१०	४५	मानस	३४	३१	मालती	१०७	७२
मातापितरौ	१५२	३७	मानसौक्य	१३६	२३	माला	१६६	१३५
मातामह	{ १५०	३३	मानिनी	१४२	३	मालाकार	२७१	५
मातामही			मातुष	१४२	१	मालातृणक	१२६	१६७
मातुल	{ १०८	७८	मातुषी, टी.	१४२	१	मालिक	२७१	५
	{ १५०	३१	मातुष्यक	३२८	४२	मालुधान	५६	६
मातुलपुत्रक	१०८	७८	माया	२७३	११	मालूर	६७	३२
मातुला, टी.	१५०	३०	मायाकार	२७३	११	माल्य	१६६	१३५
मातुलानी	{ १४६	३०	मायादेवीस्तुत	५	१५	माल्यवत्	८६	३
	{ २३८	२०	मायाविन्, टी.	२७३	११	माष, टी.	२६१	८५
मातुलाहि	५६	६	मायिन्, टी.	२७३	११	माषपर्णी	१२२	१३८
मातुली	१४६	३०	मायु	१५६	६२	माषीण, टी.	२३४	७
मातुलुङ्गक	१०८	७८	मायूर	१४१	४३	माष्य, टी.	२३४	७
	{ ८	३५	मार	६	२५	मास	टी. { २८	१२
मातृ	{ १४६	२६	मारजित्	४	१३			
	{ २५४	६६	मारण	२३०	११४	मासर	२४६	४६
मातृष्वसेय, टी.	१४८	२५	मारिण	५१	१४	मासिक	१६०	३१
मातृष्वसेयी, टी.	१४८	२५	मारुत	१४	६२	मास्म	४४६	११
			मार्कव	१२५	१५१	माहाकुल	१८२	३

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
माहिष्य	२७०	३	मुकूलक, टी.	१२४	१४४	मुषल, टी.	२४१	२५
माहेयी	२५४	६६	मुक्तकच्युक	५६	६	मुषली, टी.	१३३	१२
मितम्पच	२६८	४८	मुक्ता	२६४	६३	मुषल्य, टी.	२६७	४५
मिष	२४	३०	मुक्तावली	१७१	१०५	मुषा, टी.	२७६	३३
मित्र	२०१	६	मुक्तास्फोट	६७	२३	मुषित	३०८	८८
	२०१	१२	मुक्ति	३५	६	मुष्क	१६३	७६
	३६६	१७६		८५	१६	मुष्कक	६८	३६
मिषस्	४३६	२६५	मुख	१६७	८६	मुष्टि	१६६	८६
मिधुन	१४०	३८		४७०	२२	मुष्टिवन्ध	३२०	१४
मिथ्या	४६६	१५	मुखर	२६४	३६	मुसल	२४१	२५
मिथ्यादृष्टि	३५	४	मुखवासन	३७	११	मुसलिन	६	२४
मिथ्याभियोग	४२	१०	मुख्य	१६२	४०	मुसली	११७	११६
मिथ्याभिशंसन	४२	१०		३००	५७	मुसल्य	२६७	४५
मिथ्यामति	३५	४	मुग्ध, टी.	२६८	४८	मुस्तक	१२७	१५६
मिशि, टी.	११४	१०५	मुण्ड	१५५	४८	मुस्ता	१२७	१५६
मिश्री, टी.	११४	१०५		४७६	३४	मुहुर्भाषा	४३	१६
	१२१	१३४	मुण्डा	४७६	३४	मुहुस्	४४०	१
मिश्रेया	११४	१०५	मुण्डित	१५५	४८	मुहूर्त	२८	११
मिषि, टी.	११४	१०५		३०७	८५	मूक	२८७	१३
मिषी, टी.	११४	१०५	मुण्डिन्	२७२	१०	मूढ	२६८	४८
मिसि	११४	१०५	मुद्	३२	२४	मूत	३१०	६५
	१२५	१५२	मुदा, टी.	३२	२४	मूत्र	१६०	६७
मिसी, टी.	११४	१०५	मुदिता, टी.	३२	२४	मूत्रकृच्छ्र	१५७	५६
	१२१	१३४	मुदिर	१८	७	मूत्रित	३१०	६६
मिहिका, टी.	२१	१८	मुद्रपण्या	११६	११३	मूर्ख	२६८	४८
मिहिर	२४	२६	मुद्गर	२२४	६१	मूर्खा	२२६	१०६
मीढ	३१०	६६	मुधा	४४२	४	मूर्खाल	१५८	६१
मीन	६६	१७		४	१४	मूर्खित	१५८	६१
मीनकेतन	६	२५	मुनि	१६३	४२		३६१	८६
मुकुट	१७०	१०२		४८१	३८	मूर्ख, टी.	३१०	६५
मुकुन्द	११८	१२१	मुनिपुङ्गव, टी.	३०१	५६	मूर्ति	१५८	६१
मुकुन्दक, टी.	१२४	१४७	मुनीन्द्र	४	१४		३०५	७६
मुकुन्दु, टी.	११८	१२१	मुरज	४८	५	मूर्ति	१६१	७१
मुकुर, टी.	१८१	१४०	मुरा	११८	१२३		३५५	७३
मुकुल	६२	१६	मुर्वा	११०	८३	मूर्तिमत्	३०५	७६
मुकुष्ठ, टी.	२३८	१७	मुशली	१३३	१२	मूर्दन्	१६८	६५

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
मूर्धाभिषिक्त	{ १६८	१	मृगाङ्ग	२०	१४	मृष्ट	३००	५६
मूर्धा	{ ३५३	६८	मृगादन	१३०	१	मेकलकन्यका	७०	३२
मूर्वा	११०	८३	मृगित	३१३	१०५	मेखलकन्यका, टी.	७०	३२
मूल	{ ६१	१२	मृगेन्द्र	१३०	१	मेखला	{ २७२	१०८
मूलक	{ ४१०	२०६	मृजा	१७६	१२१		{ २२४	६०
मूलकर्मन्	१२७	१५७	मृड	८	३१	मेघ	{ १८	६
मूलधन	३१७	४	मृडानी	६	३७		{ ४६२	११
मूल्य	२५६	८०	मृणाल	७२	४२	मेघज्योति	१६	१०
मूषक, टी.	{ २५८	७६	मृणालिनी	७३	४२	मेघनादातुलासिन्	१३८	३०
मूषा	{ २८६	३३	मृणाली, टी.	{ ७३	४२	मेघनामन्	१२७	१५६
मूषिक	{ ४८१	३८	मृत	{ ४६०	७	मेघनिर्घोष	१६	८
मूषिकपणी	१३३	१२	मृतस्नात	{ २३१	११७	मेघपुष्प	६२	५
मूषिका, टी.	{ २३३	१२	मृता	{ २३३	३	मेघमाला	१६	८
मूषित	११०	८८	मृतालक	२८६	१६	मेघवाहन	१०	४४
मूषित	१३३	१२	मृतालक, टी.	२३१	११७	मेचक	{ ३७	१४
मूषी, टी.	३०८	८८	मृत्तिका	१२०	१३१		{ १३८	३१
मृग	३७६	३३	मृत्ति, टी.	१२०	१३१	मेढू	{ १६३	७६
मृग	{ १३२	८	मृत्तिका	{ ७६	४		{ २५७	७६
मृग	{ ३२४	३०	मृत्यु	{ ७६	४	मेद, टी.	१५६	६४
मृग	{ ३३८	२५	मृत्युञ्जय	२३०	११६	मेदक	२८१	४१
मृगणा	३२४	३०	मृता	८	३१	मेदस्	१५६	६४
मृगतृष्णा	७६	४	मृत्ता	७६	४	मेदिनी	७५	३
मृगदंशक	{ ७६	४	मृत्स्ना	{ ७६	४	मेदुर	२६२	३०
मृगधूर्तक	{ १२०	१३१	मृद्	{ १२०	१३१	मेघा	३४	२
मृगनाभि	७६	४	मृदा	७६	४	मेधि	२३७	१५
मृगवधाजीव	७६	४	मृदङ्ग	७६	४	मेध्य	३००	५५
मृगबन्धनी	४८	५	मृदु	४८	५	मेरु	१२	४६
मृगमद	{ ३०५	२१	मृदु	{ ३०५	७८	मेलक	३२४	२६
मृगया	{ ३६५	१०१	मृदुत्वच	३०५	७८	मेघ	२५७	७६
मृगयु	१००	४६	मृदुल	३०५	७८	मेघकम्बल	२६८	१०७
मृगरोमज	११५	१०७	मृद्रीका	११५	१०७	मेह	१५७	५६
मृगव्य	२२८	१०४	मृध	१६३	७६	मेहन	१६३	७६
मृगशिरस्	४४६	१५	मृषा	२२८	१०४	मेत्रावरुणि	२२	२०
मृगशिरा	४४६	१५	मृषार्थक	४४६	१५	मेत्री	२८२	३६
मृगशीर्ष	४५	२१				मेत्र्य	२८२	३६

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
मैथुन	{ १६८	५७	यक्षी	४	११	यमुना	७०	३२
मैरेय	२८१	४१	यक्षमन्	१५५	५१	यमुनाभ्रातृ	१४	५८
मोक्ष	{ ३५	७	यक्षेश्वर, टी.	१६	६८	ययु	२११	४५
	{ ६८	३६	यज्ञमान	१८३	८	यव	२३७	१५
मोष	३०६	८१	यज्ञस्	४०	३	यवक्य	२३४	७
मोषा	१०२	५४	यज्ञ	१८५	१३	यवक्षार	२६८	१०८
मोचक	६६	३१	यज्ञसूत्र	१६५	४६	यवफल	१२७	१६१
मोचा	{ १००	४६	यज्ञाङ्ग	६४	२२	यवसुरा, टी.	४८२	४०
	{ ११६	११३	यज्ञिय	२८६	२७	यवागू	२४६	५०
मोदक	४७८	३३	यज्ञिया	२८६	२७	यवाग्रज	२६८	१०८
मोर्ट	२६६	११०	यज्वन्	१८३	८	यवानिका	१२४	१४५
मोर्टा	११०	८३	यत्	४४१	३	यवानी, टी.	१२४	१४५
मोषक	२७६	२४	यतस्	४४१	३	यवात	{ १११	६१
मोह	२२६	१०६	यति	१६३	४३		{ १२६	१६७
मौक्तिक	२६४	६२	यतिन्	१६३	४३	यविष्ठ, टी.	१५४	४३
मौद्गान	२३४	८	यत्पान	२२७	१०३	यवीयस्	१५४	४३
मौन	१६१	३६	यथा	४४५	६	यव्य	२३४	७
मौरनिक	२७३	१३	यथाजात	२६८	४८	यशःपटह	४८	६
मौलि	४०७	२०२	यथातथम्	४४६	१५	यशस्	४२	११
मौर्वी	२२२	८५	यथायथम्	४४८	१४	यष्टि	४८१	३८
मौष्ट	४५६	५	यथार्थ	४४६	१५	यष्टिमधुका	११५	१०६
मौहूर्त	२०२	१४	यथार्हवर्ण	२०२	१३	यष्टी, टी.	११५	१०६
मौहूर्तिक	२०२	१४	यथाशक्ति, टी.	४७३	२६	यष्टृ	१८३	८
म्लिष्ट	४५	२२	यथास्वम्	४४८	१४	याग	{ १८५	१३
म्लेच्छजाति	२७५	२०	यथेष्टित	२५२	५७		{ ४६२	११
म्लेच्छदेश	७६	७	यदि	४४७	१२	याचक	२६८	४६
म्लेच्छमुख	२६५	६७	यदृच्छा	३१६	२	याचनक	२६८	४६
(य)			यन्तृ	{ २१५	५६	याचना	१६०	३२
यकृन्	१६०	६६		{ ३५२	६६	याचिका, टी.	२६८	४६
यक्ष	{ १४	११	यन्त्र, टी.	४७२	२५	याचित	२३३	३
	{ १६	६६	यम	{ १४	५८	याचितक	२३३	४
यक्षकर्म	१७६	१३३		{ १६५	४८	याच्या	{ १६०	३२
यक्षधूप	१७७	१२७	यमनिका, टी.	३२१	१८		{ ३१८	६
यक्षराज	१६	६८	यमराट	१७६	१२०	याजक	१८६	१७
यक्षिणी	४	११	यमराट	१४	५८	यातना	६१	३
			यमानी, टी.	१२४	१४५	यातयाम	३८७	१५४

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
यातु	१४	६०	युगल	१४०	३८	योषित्	१४२	२
यातुधान	१४	६०	युगम	१४०	३८	योषिता, टी.	१४२	२
यातृ	१४६	३०				योषित्व	२६१	८५
याना	{ २२५ ६५	१८४	युग्य	{ २१५ ५८		योषितुक, टी.	२०६	२८
	{ ३६६ १८४			{ २५४ ६४		योषित	१४७	२२
यादःपति	६२	२	युद्ध	२२८	१०३	योषित	१५३	४०
यादस्	६६	२०	युध्	२२८	१०६	(२)		
यादसांपति	१४	६१	युवति	१४४	८	रंहस्	१५	६४
यान	{ २०३ १८		युवती, टी.	१४४	८		{ ३८ १५	
	{ २१५ ५८		युवन्	१५३	४२		{ १५६ ६४	
यानमूल	२१४	५५	युवराज	५०	१२	रक्त	{ १७६ १२४	
याप्य	२६६	५४	यूथ	१४१	४१		{ ३६० ८७	
याप्ययान	२१४	५३	यूथनाथ	२०८	३५	रक्तक	१०७	७३
याम	{ २७ ६		यूथप	२०८	३५	रक्तचन्दन	{ १७८ १३२	
	{ ३२१ १८		यूथिका	१०६	७१		{ २६८ १११	
यामातृ, टी.	१४०	३२	यूनी, टी.	१४४	८	रक्तपा	६७	२२
यामि, टी.	३८५	१५१				रक्तफला	१२२	१३६
यामिनी	२६	४	यूप	{ ६६ ४१		रक्तसन्ध्यक	७१	३६
यामुन	२६६	१००		{ ४७६ ३५		रक्तसरोवर	७२	४१
यायजूक	१८३	८	यूपकटक	१८६	१८	रक्ताक्ष	१२४	१४६
याव	१७७	१२५	यूपाम	१८६	१६	रक्तोत्पल	७२	४२
यावक	२३८	१८	यूप	४७६	३५	रश्मःसभ	४७४	२७
यावत्	४३४	२५५	योक्	२३६	१३	रक्षस्	{ ४ ११	
यावन	१७८	१२८	योग	३३६	२७		{ १४ ६०	
याष्टीक	२१८	७०	योगेष्ट	२६७	१०५	रक्षा, टी.	१७७	१२५
यास	१११	६१	योग्य	११६	११२	रक्षित	३१३	१०६
युक्त	२०५	२४	योजन	४७६	३०	रक्षिवर्ग	२००	६
युक्तरस	१२३	१४०	योजनपथी, टी.	१११	६१	रक्ष्य	३१८	८
युग	{ १४० ३८		योजनवल्ली	१११	६१	रक्ष्	१२३	१०
	{ ३४० २६		योज	२३६	१३	रक्ष	२६७	१०६
युगकीलक	२३६	१४	योद्ध	२१६	६१	रक्षाजीव	२७२	७
युगम्बर	{ २१५ ५७		योध	२१६	६१	रचना	१८०	१३७
	{ ४७६ ३५		योधसंराव	२२८	१०७		{ ३३ २६	
युगपत्रक	६४	२२	योनि	१६३	७६	रज, टी.	{ १४७ २१	
युगपद्	४५३	२२	बोनी	१६३	७६		{ २२६ ६८	
युगपार्श्वग	२५३	६३	योषा	१४२	२			

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
रजक	२७२	१०	रधाक्	१३६	२२	रसज्ञा	१६७	६१
रजकी, टी.	२७३	१०	रधाक्	२१४	५५	रसन, टी.	१६७	६१
रजत	२६५	६६	रधाक्	२१४	५६	रसना	१६७	६१
	३५६	८६	रधाअपुष्प	६६	३०	रसवती	१७२	१०८
रजनि	२६	४	रधिक	२२०	७६	रसा	२४१	२७
रजनी	१२६	१५३	रधिन्	२१६	६०		७५	०२
रजनीमुख	२७	६	रधिन्	२२०	७६	रसाञ्जन	११०	८४
			रधिन्, टी.	२२०	७६	रसातल	११८	१२३
रजस्	३३	२६	रधिर	२२०	७६	रसाल	२६६	१०१
	१४७	२१	रध्य	२११	४६		५८	१
	२२६	६८	रध्या	८०	३	रसाल	६७	३३
	४२५	२४०		२१४	५५	रसाला	१२८	१६३
रजस्वला	१४७	२०	रद्	२१४	५५	रसाला	२४७	४४
रज्जु	२७७	२७	रदन	१६७	६१	रसित	२४७	४४
रज्जन	१७८	१३२	रदन	१६७	६१	रसोनक	१६७	६१
रज्जनी	११२	६५	रदनच्छद	१६७	६०	रहस	२०४	२२
			रन्ध्र	५८	२		२०४	२३
रण-	२२८	१०४	रभस	४६६	२१	रहस्य	२०४	२३
	३१८	८	रमण, टी.	१६८	५७	रहस्या	२०४	२३
	३४६	५६	रमणा, टी.	१४३	४	राः	३६५	१७४
रणसंकुल	२२८	१०६	रमणी	१४२	४	राका	३७	८
रणडा	११०	८८	रमा, टी.	१४३	४	राक्षस	१४	५६
रत	१६८	५७	रम्भा	११६	११३	राक्षसी	११६	१२८
रति, टी.	१६८	५७	रय	१५	६४	राक्षा	१७७	१२५
रतिकूजित	४५	२१	रल्लुक	१७४	११६	राक्ख	१७३	१११
रतिपति	६	२६		४६७	१७	राज्	१६८	१
रत्न	२६४	६३	रव	४५	२३	राजक	१६६	३
	३७७	१३३	रवण	२६४	३८	राजजक्ष्मन्, टी.	१५६	५१
रत्नसानु	१२	४६	रवि	२४	३१	राजन्	१६८	१
रत्नाकर	६२	२	रशना	१७२	१०८		३७१	११८
रथ	२६३	५१	रशिम	२५	३३	राजन्य	१६८	१
रथकट्या	२१४	५५		३८३	१४७	राजन्यक	१६६	४
रथकार	२७१	४	रस	३६	७	राजन्वत्	७८	१३
	२७२	६		२६६	६६	राजनला	१२५	१५३
रथशुषि	२१५	५७		४२३	२३६	राजनीजिन्	१८१	२
रथद्रु	६५	२६	रसगन्ध	२६७	१०४	राजयक्ष्मन्, टी.	१५६	५१
रथव्रज	२१४	५५	रसगर्भ	२६६	१०२	राजराज	१६	६८

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
राजवंश्य	१८१	२	राष्ट्र	{ २०३	१७	रुजा	१५५	५१
राजवत्	७८	१३		{ ४०३	१६३	रुत	४६	२५
राजवृक्ष	६४	२३	राष्ट्रिका	११२	६४	रुदित	५७	३५
राजसदन	८२	१०	राष्ट्रिय	५१	१४	रुद्ध	३०६	६०
राजसभा	४६१	६	रासभ	२५८	७७	रुद्र	{ ०३	१०
राजसूय	४७७	३१	रास्ना	{ ११६	११४		{ =	३४
राजहंस	१३६	२४		{ १२३	१४०	रुद्राणी	६	३७
राजातन, टी.	६८	३५	राहु	२३	२६	रुधिर	{ ४७०	६४
राजादन	{ ६७	३५	रिक्तक	३००	५६		{ १५६	२२
	{ १००	४५	रिक्थ	२६३	६०	रुद्र	१३३	१०
राजाई	१७७	१२६	रिक्थ, टी.	५७	३६	रुद्रुक, टी.	१०१	५१
राजि	८६	४	रिक्थ	५७	३६	रुद्रुक, टी.	१०१	५१
राजिका	२३८	१६	रिपु	२०१	१०	रुशती	४४	१८
राजिन्न	५६	५	रिषि, टी.	१६३	४३	रुपती	४४	१८
राजी, टी.	८६	४	रिष्ट	३४५	४३	रूप	५४	२६
राजीव	{ ६६	१६	रिष्टि	२२३	८६	रुहा	१२७	१५८
	{ ७२	४१	रीढा	५३	२३	रुद्ध	४२२	२३४
राज्याक्ष	२०३	१८	रीण	३०६	६२	रूप	३६	७
राजि	{ २६	४	रीति	{ २६५	६७	रुपाजीवा	१४७	१६
	{ २६	५		{ ३५५	७५			
राजिचर	१४	६०	रीतिपुष्प	२६७	१०३	रूप्य	{ २६३	६१
राजिचर	१४	६०	रीती	२६५	६७		{ २६५	६६
रात्री, टी.	२६	४	रुकप्रतिक्रिया	१५५	५०		{ ३६३	१६६
राद्धान्त	३५	४	रुक्म	२६४	६५	रूप्याध्यक्ष	२००	७
राध	२६	१६	रुक्मकारक	२७२	=	रुद्रुक, टी.	१०१	५१
राधा	२२	२२	रुग्ण	३०६	६१	रुषित	३०८	८६
	{ ६	२३	रुच्	२५	३४	रेखा	१०२	४
राम	{ १३३	११		{ १०१	५१	रेचनी, टी.	{ ११५	१०८
	{ ३८४	१४६	रुचक	{ १०८	७८		{ १२४	१४६
रामठ	२४५	४०		{ २४६	४३	रेचित	२१२	४८
रामा	१४२	४		{ २६८	१०६	रेणु	२२६	६८
राम्भ	१६४	४५	रुचि	{ २५	३४	रेणुका	११८	१२०
राज	१७७	१२७		{ ३४१	३४	रेतस	१५६	६२
राव	४५	२३	रुचिर	२६६	५२	रेप, टी.	२६६	५४
राशि	{ १४१	४२	रुच्य	२६६	५२	रेपस, टी.	२६६	५४
	{ ४१६	२२३	रुज्ज	१५५	५१	रेफस	२६६	५४

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
रेवतीरमण	६	२३	रौद्र	५२	१७	लङ्कापिका, टी.	१२१	१३३
रेफ	{ २६६	५४	{ ५२	२०	लङ्कापिका, टी.	१२१	१३३	
	{ ३८०	१४०	रौम, टी.	२४६	४२	लङ्कोपिका	१२१	१३३
रेवा	७०	३२	रौमक	२४६	४२	लज्जा	५३	२३
रै	२६३	६०	रौरव	६०	१	लज्जाशील	२६१	२८
रैत्य, टी.	२६५	६७	रौहिण्य	{ ६	२४	लज्या, टी.	५३	२३
रोक	५८	२	{ २३	२६	लज्जित	३०६	६१	
रोग	१५५	५१	रौहिष	{ १२६	१६६	लङ्का	४६२	१०
रोगहारिन्	१५७	५७	{ १३३	१०				
रोचन	१००	४७	(ल)					
रोचनी	{ ११५	१०८	लकुच	१०३	६०	लता	{ १०२	५५
	{ १२४	१४६	लक्तक, टी.	१७४	११५		{ १२१	१३३
रोचिष्णु	१७०	१०१	लक्ष, टी.	{ २२३	८६		{ १२५	१५०
रोचिस्	२५	३४	{ ४७१	२४	लतार्क	१२४	१४८	
रोदिन	१६८	६३	लक्ष्य	२१	१७	लपन	१६७	८६
रोदनी	१११	६२	लक्षणा, टी.	१३७	२५	लपित	{ ३६	१
रोदस्	४२४	२३८	लक्षा	४७१	२४		{ ३१४	१०७
रोदसी	४२४	२३८	लक्ष्मण, टी.	{ २१	१७	लब्ध	३१३	१०४
रोध, टी.	६३	७	{ २८७	१४	लब्धवर्ण	१८२	६	
रोधस्	६३	७	लक्ष्मणा	१३६	२५	लब्धादुःख	१८४	१०
रोप	२२३	८७	लक्ष्मन्	{ २१	१७	लभ्य	२०५	२४
रोमन्	१७०	६६	{ ३७६	१३१	लम्बन	१७१	१०४	
रोमन्ध	४६८	१६	{ ७	२७	लम्बोदर	६	३८	
रोमहर्षण	५७	३५	लक्ष्मी	{ ११६	११२	लय	४६	६
रोमाञ्च	५७	३५	{ २२२	८२	ललना	१४२	३	
रोष	५४	२६	लक्ष्मीवत्	२८७	१४	ललान्तिका	१७१	१०४
रोहिणी	२५४	६७	लक्ष्य	{ ५६	३३	ललाट	१६७	६२
	{ १६	१०	{ २२३	८५	ललाटिका	१७०	१०३	
रोहित	{ ३८	१५	ललुङ	४६८	१८	ललाम	३८६	१५२
	{ ६६	१६	लग्न	२३	२७	ललामक	१७६	१३५
	{ १३३	१०	लग्नक	२८२	४४	ललित	५५	३१
रोहितक	१०१	४६				लव	{ ३०१	६२
रोहिता	३८	१५	लघु	{ १२१	१३३		{ ३२३	२४
रोहिताश्व	१३	५५	{ ३४१	३३	लवङ्ग	१७७	१२५	
रोहिन्	१०१	४६	लघुलय	१२६	१६५	लवण	{ ३६	६
रोहीतक, टी.	१०१	४६	लङ्का	४६०	७		{ ४७१	२३

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
क्षयणोद	६२	२	लिपि	२०२	१६	लोकजित्	४	१३
क्षवन	३२३	२४	लिपिकर	२०२	१५	लोकायत	४७८	३२
क्षवित्र	२६६	१३	लिपिकार	२०२	१५	लोकाशोक	८६	२
क्षशुन	१२४	१४८	लिपी, टी.	२०२	१६	लोकाश	५	१६
क्षस्तक	२२२	८५	लिप्त	{ ३०६ ६०		लोचन	१६८	६३
क्षामा	{ १७७ १२५			{ ३१४ ११०		लोचमर्कट, टी.	११६	१११
	{ ४६२ १०		लिप्तक	२२३	८८	लोचमस्तक	११५	१११
क्षामप्रसादन	६६	४१	लिप्सा	५४	२७	लोत्र, टी.	२७६	२५
क्षान्त	२३६	१३	लिपि	२०२	१६	लोभ	६७	३३
क्षान्तदण्ड	२३७	१४	लिपिकार, टी.	२०२	१५	लोपाधुमा	२२	२०
क्षान्तपद्धति	२३७	१४	लिपी, टी.	२०२	१६	लोप्य	२७६	२५
क्षान्तिकी	११७	११८	लीद, टी.	३१५	११०	लोमन्	१७०	६६
क्षान्तित्, टी.	१३०	१६८	लीला	{ ५५ ३२		लोमशा	१२१	१३४
क्षान्ती	{ ११५ १११			{ ४१० २०८		लोमहर्षण, टी.	५७	३५
	{ १३० १६८		लुठित	२१३	५०	लोल	{ ३०४ ७४	
क्षान्त्यल, टी.	२१३	५०	लुब्ध	२६०	२२		{ ४१२ २१४	
क्षान्त्यल	२१३	५०	लुब्धक	{ ८७५ २१		लोला, टी.	४१२	२१४
क्षान्त	२४८	४७		{ ३३६ १६		लोलुप	२६०	२२
क्षान्तन	२१	१७	लुलाप	१३१	४	लोलुभ	२६०	२२
क्षाम	२५६	८०	लुलाय, टी.	१३१	४	लोष्ट	२३६	१२
क्षामञ्जक	५२६	१६५	लूता	१३३	१३	लोष्टन्, टी.	२३६	१२
क्षालपा, टी.	५५	२८	लून	३१३	१०३	लोष्टभेदन	२३६	१२
क्षालसा	{ ५४ २८		लूम	२१३	५०		{ १७७ १२६	
	{ ४२४ २३८		लेख	३	८		{ २६५ ६८	
क्षाला	१६०	६७	लेखक	२०२	१५	लोह	{ २६६ ६६	
क्षालाटिक	३३५	१७	लेखन, टी.	२०२	१६		{ ४७१ २३	
क्षान	१३६	३५	लेखर्षभ	१०	४२	लोहकारक	२७२	७
क्षान्तिका	४६	८	लेखा	८६	४	लोहपृष्ठ	१३४	१६
क्षान्फोटनी, टी.	२७६	३३	लेप, टी.	२५१	५६	लोहप्रतिमा, टी.	२७६	३५
क्षान्त्य	४६	१०	लेपक	२७१	६	लोह्य	२६४	३७
क्षिब्ध	१०३	६०	लेश	३०१	६२	लोहाभिसार, टी.	२२५	६४
क्षिप्ता	४६९	१०	लेष्ट	२३६	१२	लोहाभिहार	२२५	६४
क्षिप्तन, टी.	२०२	१६	लेष्टन्, टी.	२३६	१२	लोहित	{ ३८ १५	
क्षिप्तित	२०२	१६	लेह	२५१	५६		{ १५६ ६४	
क्षिप्त	३४०	३०	लोक	{ ७६ ६		लोहितक	२६४	६२
क्षिप्तवृत्ति	१६७	५४		{ ३२६ २		लोहितचन्दन	१७६	१२४

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
लोहिता, टी.	३८	१५	वज्रनिर्घोष }	१६	१०	वत्सर }	२६	१३
लोहिताक्ष	२३	२५	वज्रनिर्व्येष }			३१	२०	
लोहिताश्व	१३	५५	वज्रपुष्प	१०८	७६	वत्सल	२८७	१४
लोहिनी, टी.	३८	१५	वज्रिन्	१०	४२	वत्सादनी	१०६	८२
लौह, टी.	२६५	६८	वक्षक }	१३१	५	वद	२६३	३५
ल्यु	४६६	१५	२६७	४७		वदन	१६७	८६
(व)			वक्षित	२६५	४१	वदर	६८	३७
वंश }	१२७	१६०				वदरा	१२५	१५१
१८१	१		वञ्जुषा }	६५	२७	वदरी	६८	३७
४१६	२२३		६६	३०		वदान्य }	२८५	६
वंशक	१७७	१२६	१०४	६४		३६३	१६६	
वंशरोचना	२६८	१०६	वट	६७	३२	वदावद	२६३	३५
वंशलोचना, टी.	२६६	१०६	वटक	४६७	१७	वध	२३०	११५
वंशिक }			वटाकर, टी.	२७७	२७	वधोद्यत	२६६	४४
१७७	१२६		वटी	२७७	२७	वध्य	२६७	४५
वंशिका }			वडवा	२११	४६			
१७७	१२६		वडवानल	१३	५६	वधू }	१२१	१३३
वंहिष्ठ	३१५	१११	वाडिश }			१४२	२	
व	४४५	६	वाडिशा }	६६	१६	१४४	६	
वक, टी.	१०६	८१	वाडिशी }			३६८	१०६	
वकधूपक, टी.	१७७	१२८	वडू	३०१	६१	६२	३	
वकुल	१०४	६४	वणिग्भाव	२३३	३	वन }	८८	१
वक्तव्य	३६३	१६८	वणिज्	२५८	७८	३७७	१३३	
वक्त्र	२६३	३५	वणिज्य, टी.	२५८	७६	वनकार्पास	११७	११६
वक्त्र	१६७	८६	वणिज्या टी.	२३२	२	वनतक्तिका	११०	८५
वक }	६३	७	२५८	७६		वनप्रिय	१३५	१६
३०४	७१		वणिज्या टी.	२५८	७६	वनमञ्जिका	१३७	२७
वक्षस्	१६३	७८	वयटक	२६३	८६	वनमालिन्	५	२१
वक्ष्यण	१६२	७३	वतंस	४२३	२३६	वनमुद्र	२३७	१७
वक्त्र	२६७	१०६	वत	४३२	२५३	वनशृङ्गाट	११३	६६
वचन	३६	१				वनसमूह	८६	४
वचनमार्दिन्, टी.	२६०	२४	वत्स }	१६३	७८	वनस्पति	८६	६
वचस्	३६	१	२५३	६२		वनायुज	२११	४५
वचनेरिषत	२६०	२४	४२३	२३५		वनिता }	१४२	२
वचा	११४	१०२	वत्सक	१०५	६६	३५८	८१	
वज्र }	११	४७	वत्सतर	२५३	६२	वनीपक, टी.	२६८	४६
४०३	१६३		वत्सनाभ	६०	११	वनीयक	२६८	४६
वज्रहु	११४	१०५						

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
वनौकसू	१३१	३	वरद	२८६	७	वर्ण	१८१	१
वन्दा	१०६	८२	वरदा	२८६	७	वर्ण	२१०	४२
वन्दाक	२६१	२८	वरवर्णिनी	१४२	४	वर्णक	३४८	५५
वन्दि, टी.	२३१	११६		२४६	४१	वर्णक	१७६	१३३
वन्दिन्	२२६	६७	वराङ्ग	३४०	३१		४८१	३८
वन्दी	२३१	११६	वराङ्गक	१२१	१३४	वर्णित	३१४	११०
वन्था	८६	४	वराट	७३	४३	वर्णिन्	१६३	४२
वपा	५८	२		२७७	२७	वर्तक	१३६	३५
	१५६	६४	वराटक	७३	४३		४३६	११
वपुस्	१६१	७०		४८१	३८	वर्तका, टी.	१३६	३५
	८०	३	वरारोहा	१४२	४	वर्तन	२८५	१
वत्र	२३६	११	वराशि	१७४	११६		२६२	२६
	२६७	१०५	वरासि, टी.	१७४	११६	वर्तनि	७६	१५
वमथु	१५७	५५	वराह	१३१	२	वर्ति	१७६	१३३
	२०६	३७	वरिवसित	३१२	१०२	वर्तिका	१३६	३५
वमि	१५७	५५	वरिवस्या	१६१	३५	वर्तिनी	७६	१५
वयस्	४२५	२३६	वरिवस्थित	३१२	१०२	वर्तिष्णु	२६२	२६
वयस्थ	१५३	४२	वरिष्ठ	२६५	६७	वर्ती	१७६	१३३
	१०३	५८		३१५	१११	वर्तुल	३०३	६६
वयस्था	१२२	१३७	वरी	११३	१००	वर्त्मन्	७६	१५
	१२३	१४४	वरीयस्	४२७	२४४		३७५	१२८
वयस्य	२०१	१२	वरीयसी, टी.	४२८	२४४	वर्त्मनि, टी.	७६	१५
वयस्या	१४५	१२		१४	६१	वर्त्मनी, टी.	७६	१५
	१७६	१२४	वरुण	१७	२	वर्धक	१११	६०
वर	३१८	८		६५	२५	वर्धकि	२७२	६
	३६८	१८२	वरुणात्मजा	२८१	३६	वर्धन	२६१	२८
वरट, टी.	१३७	२७	वरुय	३१५	५७		३१८	७
वरटा	१३६	२५	वरुयिनी	२२०	७८	वर्धमान	१०१	५१
	१३७	२७	वरोय	३००	५७	वर्धमानक	२४२	३२
वरटी, टी.	१३७	२७	वर्कर	२७६	२३	वर्धिष्णु	२६१	२८
वरण	८१	३	वर्करी, टी.	२७६	२३	वर्धी	२७८	३१
	६५	२५	वर्ग	१४१	४१	वर्धणा	१३७	२६
वरणक	४६८	१८	वर्चस्	४२५	२४०	वर्मन्	२१६	६४
वरणा	२१०	४२	वर्चस्क	१६०	६८	वर्मित	२१७	६५
	२७८	३१				वर्य	३००	५७
						वर्या	३४३	७

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
वर्वर	१११	६०	वल्गित	२१२	४८	वसुक	२४६	४२
वर्वरा	१२२	१३६	वल्मीक	७८	१४	वसुदेव	६	२२
वर्व	१६	११	वल्मकी	४७	३	वसुधा	७५	३
वर्ववर	२०१	६	वल्मभ	२६६	५३	वसुधरा	७५	३
वर्वण	३०	१६	वल्मरि	३८३	१४६	वसुमती	७५	३
वर्षा	३०	१६	वल्मरी	६१	१३	वसूक, टी.	२४६	४२
वर्षाभू	६८	२४	वल्मव	६१	१३	वस्कयनी, टी.	२५६	७१
वर्षाभ्वी	६८	२४	वल्मि	२४१	२७	वस्त	२५७	७६
वर्षाविष्	१५३	४३	वल्मी	१५६	३	वस्ति	१६२	७३
वर्षोपल	२०	१२	वल्मी	४५६	३	वस्ती, टी.	१७४	११४
वर्षन्	१६१	७०	वल्मूर	१५६	६३	वस्तु	१६२	७३
वर्ष	३७६	१३०	वल्मूरा, टी.	१५६	६३	वस्तु	४६४	१३
वर्ह	४२८	२४५	वल्मज	१२८	१६३	वस्त्य	८१	५
वर्हिपुष्प	१२१	१३२	वश	१२८	८	वस्त्र	१७४	११५
वर्हिष्ठ	११८	१२२	वशक्रिया	३१७	४	वस्त्रयोनि	१७२	११०
वल्ग	३७	१३	वशा	२०८	३६	वस्त्र	२५८	७६
वल्गभी	८४	१५	वशा	२५५	६६	वस्त्रसा	१६०	६६
वल्गय	१७२	१०७	वशा	४१८	२२६	वह	२५३	६३
वल्गयित	३०६	६०	वशिक	३००	५६	वह्नि	१३	५३
वल्गाका	१३६	२५	वशिर	११२	६७	वह्नि	१७	२
वल्गाहक	१८	६	वशिर	२४६	४१	वह्निशिल	२६७	१०६
वल्गि	१८५	१४	वश्य	२६०	२५	वह्निसंज्ञक	१०६	८०
वल्गिष्वसी	५	२१	वषट्	४४४	८	वा	४३५	२५८
वल्गिन	१५४	४५	वषट्कृत	१८६	२७	वा	४४५	६
वल्गिपुष्ट	१३५	२०	वष्कयिणी	२५६	७१	वा	४४६	१५
वल्गिभ	१५४	४५	वसति	३५५	७४	वाकूची	११२	६६
वल्गिभुज्	१३५	२०	वसती	३५५	७४	वाक्पति, टी.	२६३	३५
वल्गिर	१५५	४६	वसन	१७४	११५	वाक्य	३६	२
वल्गिस	६६	१६	वसन्त	३०	१८	वायुमी, टी.	२६४	३५
वल्गिसी	६६	१६	वसा	१५६	६४	वागीश	२६३	३५
वल्गीक	८४	१४	वसिर	११२	६७	वायुजी टी.	११२	६६
वल्गीयुल	१३१	३	वसिर	२४६	४१	वायुरा	२७७	२६
वल्गीवर्द	२५३	५६	वसु	३	१०	वायुरिक	२७३	१४
वल्क	६१	१२	वसु	१०६	८१	वाग्मिन्	२६३	३५
वल्कल	६१	१२	वसु	२६३	६०	वाक्मुल	४१	६
				४२३	२३७	वाच्	३६	१

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
वाच्यम्	१६३	४२	वातक	१२५	१४६	वागी	२११	४६
वाचक	३६	२	वातकिन्	१५८	५६	वायदण्ड, टी.	२७७	२८
वाचस्पति	२३	२४	वातकुम्भ, टी.	२०६	३६	वायस	१३५	२०
वाचा	३६	१	वातपोथ	६६	२६	वायसाराति	१३४	१५
वाचाट	२६४	३६	वातप्रभी	१३२	७	वायसी	१२५	१५१
वाचाल	२६४	३६	वातमृग	१३२	७	वायसीली	१२३	१४४
वाचिक	४४	१७	वातरोगिन्	१५८	५६	वायु	१४	६१
वाचोयुक्ति	२६३	३५	वातायन	८२	६	वायुमस्ति	१३	५५
वाचोयुक्तिपट्ट	२६३	३५	वातायु	१३२	८	वाग्	६२	३
वाज	२२३	८७	वाति	१४	६३	वार	१४०	३६
वाजपेय	४७७	३१	वातुल, टी.	४०८	२०५		३६४	१७०
वाजिदन्तक	११४	१०३	वातूल	४०८	२०५	वारण	२७८	३४
	१३८	३३	वात्सक	२५२	६०	वारणवृषा, टी.	११६	११३
वाजिन्	२११	४४	वादर	१७३	१११	वारणवृसा	११६	११३
	३७०	११४	वादित्र	४८	५	वारमुखा	१४७	१६
वाजिशाला	८२	७	वाद्य	४८	५	वारवाण	२१७	६३
वाञ्छा	५४	२७	वान	६२	१५	वारखी	१४७	१६
वाटी	४८३	४२	वानप्रस्थ	६५	२८	वाराही	१२५	१५१
वाट्यालक	११५	१०७		१८२	३	वारि	६२	३
	१३	५६	वानर	१३१	३	वारिद	१८	७
वाडव	१८२	४	वानस्पत्य	८६	६	वारिपर्णी	७१	३८
	२११	४६	वानोर	६६	३०	वारिप्रवाह	८७	५
वाडव्य	३२७	४१	वानेय	१२०	१३१	वारिवाह	१८	६
वाणप्रस्थ	१८२	३	वापदण्ड	२७७	२८	वारी	२१०	४३
वाणवार, टी.	२१७	६३	वापि, टी.	६६	२८	वारुणी	३५०	५६
वाणा	१०७	७४	वापी	६६	२८	वार्त	१५७	५७
वाणि, टी.	३६	१	वाप्य	११६	१२६		३५८	८३
	२७७	२८	वाम	३०७	८४	वार्ता	४१	७
वाणिज	२५८	७८		३८६	१५३		१५७	१
वाणिजिक	२५८	७८	वामदेव	८	३२		३५८	८२
वाणिज्य	२३२	२		१८	३	वार्ताकी	११६	११४
	२५८	७६	वामन	१५४	४६	वार्ताकु, टी.	११६	११४
वाणिनी	३७२	११६		३०३	७०	वार्तावाह	२७४	१५
वाणी	३६	१	वामनी, टी.	१५४	४६	वार्धक	१५३	४०
	२८७	२८	वामलूर	७८	१४		३३७	२१
वात	१४	६३	वामलोचना	१४२	३	वार्धक्य, टी.	१५३	४०
			वामा	१४२	२	वार्धुषि	२३३	५

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
वार्धुषिक	२३३	५	वासू	५१	१४	विकसा	१११	६०
वार्ध्वा	२७८	३१	वास्तु	८५	१६	विकसित	६०	८
वार्मण, टी.	३२८	४३	वास्तुक, टी.	१२७	१५८	विकस्वर	२६२	३०
वार्मिण, टी.	३२८	४३	वास्तूक	१२७	१५८	विकार	३२०	१५
वार्षिक	१२५	१५०	वास्तोष्पति	१०	४३	विकाश, टी.	४१७	२२४
वार्हत	६३	१६	वाञ्ज	२१४	५४	विकाशिन्, टी.	२६२	३०
वालपाश्या	१७०	१०३	वाह	२११	४४	विकाषिन्, टी.	२६२	३०
वालिश	४१८	२२७		२६२	८८	विकासिन्	२६२	३०
वालुक	११८	१२१	वाहद्विपत्	१३१	४	विकिर	१३८	३३
वाल्क	१७३	१११	वाहन	२१५	५८	विकीरण	१०६	८०
वाल्की	१७३	१११	वाहना, टी.	२२०	७८	विकुर्वाण	२८६	७
वावृत्त	३०६	६२	वाहस	५८	५	विकृत	१५८	५८
वावदूक	२६३	३५	वाहा, टी.	१६४	८०	विकृति	३२०	१५
वाशर, टी.	२६	२	वाहित्थ	२०६	३६	विक्रम	२२७	१०२
वाशा, टी.	११४	१०३		२२०	७८		३८४	१५०
वाशिका	११४	१०३	वाहिनी	२२१	८१	विक्रय	२६०	८३
वाशित	४६	२५		३७२	११६	विक्रयिक	२५८	७६
वाशिता	३५८	८२	वाहिनीपति	२१६	६२	विकान्त	२२०	७७
वास	८१	६		१७६	१२४	विक्रिया	३२०	१५
वासक	११४	१०३	वालिहक, टी.	२११	४५	विकेतु	२५८	७६
वासगृह	८२	८		२४५	४०	विकेय	२५६	८२
वासन्ती	१०७	७२	वाहिक	३३१	६	विक्रव	२६६	४४
वासयोग	१७६	१३४		१७६	१२४	विश्राव	३२६	३७
वासर	२६	२	वालहीक, टी.	२११	४५	विगत	३१२	१००
वासव	१०	४२		२४५	४०	विगतार्तवा	१४७	२१
वासस्	१७४	११५	वाहीक	३३१	६	विग्र	१५४	४६
वासा, टी.	११४	१०३	विशति	२६०	८३		१६१	७०
वासिका, टी.	११४	१०३	वि	१३८	३३	विग्रह	२०३	१८
	४६	२५	विकङ्कत	६८	३७		२२८	१०४
वासित	१७६	१३४	विकच	६०	७		३२२	२२
	२४८	४६	विकर्तन	२४	२६	विघस	१८६	२८
वासिता	१७८	१३४	विकलाङ्ग	१५४	४६	विघ्न	३२१	१६
	३५८	८२	विकल्प, टी.	३४	२	विघ्नराज	६	३८
वासुकि	५८	४	विकस्वर	२६२	३०	विचक्षण	१८२	६
वासुदेव	५	२०	विकषा, टी.	१०१	६०	विचयन	३२४	३०
			विकस्वर, टी.	२६२	३०	विचर्षिका	१५४	५३

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
विचारणा	३४	२	वितरित	१६५	८४	विध	३६७	१०८
विचारित	३१२	६६	वितान	{ १७५ १२०		विधवा	१४४	११
विचि, टी.	६३	५		{ ३७२ १२०			{ २८० ३८	
विचिकित्ता	३६	३	वितुज	१२५	१४६	विधा	{ ३१६ १०	
विच्छन्दक	८३	११		{ ११६ १२६			{ ३६७ १०८	
विच्छन्दक, टी.	८३	११	वितुजक	{ २४४ ३७		विधातृ	५	१७
विच्छाय	४७३	२६		{ २६६ १०१			{ ५ १७	
विजन	२०४	२२	वित्त	{ २६३ ६०		विधि	{ ३३ २८	
विजय	२३६	११०		{ २८६ ६			{ १६२ ३६	
विजयिन्, टी.	२४८	४६	विदर	३१७	५	विधिदर्शिन्	१८५	१६
विजिन, टी.	२४८	४६	विदल	४७८	३२		{ ६ २२	
विमिल	२४८	४६	विदारक	६४	१०	विधु	{ २० १४	
विज्जन, टी.	२४८	४६	विदारिगन्धा,	{ ११७ ११५			{ ३६७ १०६	
विज्ञ	२८५	४	विदारीगन्धा, टी.	{ ११७ ११५		विधुत	३१४	१०७
विज्ञात	२८६	६	विदारी	११५	११०	विधुनन, टी.	३१७	४
विज्ञान	३५	६	विदित	{ ३१४ १०८		विधुन्तुद	२३	२६
विज्ञानिक, टी.	२८५	४		{ ३१४ १०६		विधुर	३२२	२०
विट	४६७	१७	विदिश	१८	५	विधुवन	३१७	४
विटङ्क	८४	१५	विदु	२०६	३७	विधूनन	३१७	४
विटप	{ ६२ १४		विदुर	२६२	३०	विधेय	२६०	२४
	{ ३७६ १३८		विदुल	६६	३०	विनयग्राहिन्	२६०	२४
विटपिन्	८६	५	विदू, टी.	२०६	३७	विना	४४१	३
विट्खदिर	१०१	५०	विद्व	३१२	६६		{ ४ १४	
विट्चर	२७६	२३	विद्वकर्णा	११०	८४	विनायक	{ ६ ३८	
विड	२४६	४२	विद्याधर	४	११		{ ३३० ६	
विडङ्क	११४	१०६	विद्युत्	{ १६ ६		विनाश	३२२	२२
विडाल	१३२	६		{ ४५६ ३		विनाशोन्मुख	३०६	६१
विडौजस्, टी.	१०	४१	विद्राधि	१५७	५६	विनाह, टी.	६६	२७
विडौजस्	१०	४१	विद्रक्	२२६	१११	विनिमय, टी.	२५६	८०
वितंस, टी.	२७७	२६	विद्रुत	३१२	१००	विनीत	{ २११ ४४	
वितण्डा	४६१	६	विद्रुम	२६४	६३		{ २६० २५	
वित्रास, टी.	५३	२१	विद्रुमलता	१२०	१२६	विन्दु	{ ६२ ६	
वितथ	४५	२२	विद्रुस	{ १८२ ५			{ २६२ ३०	
वितरण	१८६	२६		{ ४२७ २४३		विन्दुजालक	२०६	३६
वितर्हि	{ ८४ १६		विद्वेष	५४	२५	विन्ध्य	८६	३
वितर्हि, टी. }								

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
विभ्र	{ ३१२	६६	विवुध	३	७	विराव	४५	२३
	{ ३१३	१०४	विभव	२१५	६०	विराशि, टी.	५	१७
विपक्ष	२०१	११	विभाकर	२४	२८	विरिञ्च, टी.	५	१७
विपक्षी	४७	३	विभावरी	२६	४	विरिञ्चि	५	१७
विपण	२६०	८३		१३	५६	विरूपाक्ष	८	३२
विपण्णि	{ ८०	२	विभावसु	{ २४	३०	विरोचन	{ २४	३०
विपणी, टी.	{ ३५०	५६		{ ४२३	२३५		{ ३७०	११५
विपत्ति	२२२	८२	विभीतक	१०३	५८	विरोध	५४	२५
विपथ	७६	१६	विभीतकी	१०३	५८	विरोधन	३२२	२१
विपद्	२२२	८२	विभूति	६	३६	विरोधोक्ति	४३	१६
विपदा, टी.	२२२	८२	विभूषण	१७०	१०१	विल	५८	१
विपर्यय	३२५	३३		{ ५५	३१	विलक्ष	२६१	२६
विपर्याप्त	३२५	३३	विभ्रम	{ ३८५	१५१	विलक्षण	३१६	२
विपश्चित्	१८२	५				विलम्ब, टी.	१६४	७६
विषादिका	१५६	५२	विभ्राज्	१७०	१०१	विलम्बित	४६	६
विषाण्	७०	३३	विमनस्	२८६	८	विलम्भ	३२४	२८
विषाशा	७०	३३	विमना	२८६	८	विलशय, टी.	५६	८
विपिन	८८	१	विमर्दन	३२०	१३	विलाप	४३	१६
विपुल	३०१	६१	विमल, टी.	३००	५५	विलास, टी.	१३२	६
विप्र	१८२	४	विमलात्मक	३००	५५	विलास	५५	३१
विप्रकार	३२०	१५	विमला	१२३	१४३	विलीन	३१२	१००
विप्रकृत	२६५	४१	विमलार्थक, टी.	३००	५५			
विप्रकृति	२६५	४१	विमलान्न	१४८	२५	विलोपन	{ १७६	१३३
विप्रकृष्ट, टी.	३०३	६८	विमान	११	४८		{ ३२४	२७
विप्रकृष्टक	३०३	६८	विमानना, टी.	५३	२३	विलेपी	२४६	५०
विप्रतीसार	५४	२५	विम्ब	२०	१५	विलेशय	५६	८
विप्रयोग	३२४	२८	विम्बिका	१२२	१३६	विल्व	६७	३२
विप्रलम्भ	२६५	४१	वियद्	१७	२	विवध	३६६	१०३
	{ ५७	३६	वियद्गङ्गा	११	४६	विवधिक, टी.	२७४	१५
	{ ३२४	२८	वियम	३२१	०१८	विवर	५८	१
विप्रलाप	४३	१६	वियाम	३२१	१८	विवर्ण	२७४	१६
विप्रशिनका	१४७	२०	विरजस्तमस्	१६४	४४	विवश	२६६	४४
विशुष्	६२	६	विरति	३२३	३७			
विशव	३२०	१४	विरल	३०२	६६	विवस्वत्	{ २४	२६
विशुष	६२	६	विराज्	१६८	१		{ ३५२	६४
विबन्ध	१५७	५५	विराल, टी.	१३२	६	विवाद	४१	६
						विवाह	१६७	५६

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
विविक्त	{ २०४	२२	विश्व.	{ ३	१०	विपुत्र	२६	१४
	{ ३६१	८६		{ २४५	३८	विपुत्रत्	२६	१४
विविक्ता	३६१	८६		{ ३०२	६५	विपुत्रान्	२६	१४
विविध	३१०	६३	विश्वकटु	२७५	२२	विष्किर	१३८	३३
वित्रेक	१६२	३८	विश्वकर्मान्	३७०	११६	विष्टप	७६	६
विज्योक	५५	३१	विश्वकेतु	७	२७	विष्टम्भ, टी.	२२४	२७
विश	{ २३२	१	विश्वक्सेन	५	१६	विष्टर	३६७	१७८
	{ ४१६	२२३	विश्वतत्, टी.	४४८	१३	विष्टरश्रवस्	५	१८
विश, टी.	७३	४२	विश्वदेव, टी.	३	१०	विष्टि	६१	३
विशङ्कट	३०१	६०	विश्वद्युच्	२६३	३४	विष्टा	१६०	६८
विशङ्कटा, टी.	३०१	६०	विश्वभेषज	२४५	३८	विष्णु	५	१८
विशङ्कटी, टी.	३०१	६०	विश्वम्भर	६	२२	विष्णुकाता	११४	१०४
विशप्रसून	७२	४१	विश्वम्भरा	७५	२	विष्णुपद	१७	२
विशद	३७	१२	विश्वसृज्	५	१७	विष्णुपदी	७०	३१
विशर	२३०	११५	विश्वस्ता	१४४	११	विष्णुरथ	७	२६
			विश्वस्था, टी.	१४४	११	विष्कार, टी.	२२६	१०८
विशल्या	{ १०६	८३	विश्वा	११३	६६	विष्य	२५७	४५
	{ १२२	१३६	विश्वास	२०४	२३	विष्वक्	४४८	१३
	{ ३६१	१६४		५६	६	विष्वक्सेन	५	१६
विशसन	२३०	११४	विष	{, टी.	७३	विष्वक्सेनप्रिया	१२५	१५१
विशाख	६	४०		{ ४२१	२३२	विष्वक्सेना	१०२	५६
विशाखा	२२	२२	विषद, टी.	३७	१२	विष्वच्	२६३	३४
विशाय	३२५	३२	विषधर	५६	७	विष्वद्रीची	२६३	३४
विशारण्य	२३०	११२	विषप्रसून	७२	४१	विष्वद्रथक्	२६३	३४
विशारद	३६५	१०२	विषमच्छद	६४	२३	विष्वद्रथक्	२६३	३४
विशाल	३०१	६०		७७	८	विस	७२	४२
विशालता	१७४	११४	विषय	{ ३१६	११	विसकथिठका	१३६	२५
विशालत्वन्	६४	२३		{ ३८६	१६१	विसप्रसून	७२	४१
विशाला	१२६	१५६	विषयिन्	३६	८	विसंवाद	५७	३६
विशिल	३२३	८६	विषवैद्य	६०	११	विसर	१४०	३६
विशिला	८०	३	विषा	{ ११३	६६	विसर्जन	१८६	२६
विशेषक	१७६	१२३		{ १६०	६८	विसर्पण	३२२	२३
विश्र	३७	१२	विषाण्य	३५१	६३	विसार	६६	१७
विश्रायन	१८६	२६	विषाणी	११७	११६	विसारिन्	२६२	३१
विश्राव	३२४	२८	विपुण, टी.	२६	१४	विसारी	६६	१७
विश्रुत	२८६	६	विपुप, टी.	२६	१४	विसिनी	७२	३६

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
विस्तृत	३०८	८६	बीजकोशः	७३	४३	बीजं	५५	२६
विस्तार	२६२	३१	बीजकोष			बीजं	१५६	६२
विस्तार	२६२	३१	बीजपूर	१०८	७८	बीजं	३६०	१६३
विस्त	२६१	८६	बीजनाकृत	२३४	८	बीजध	३३६	१०३
विस्तार	३२२	२२	बीज्य	१८१	२	बीजधिका, टी.	२७४	१५
विस्तार	१६२	१४	बीज्या	४७	३	बु	४५७	४
विस्तृत	३०८	८६	बीज्या	४५६	३	बुक्	४५७	४
विस्तार	१६३	४१	बीज्यादण्ड	४६	७	बुक्	४५७	४
विस्तार	२२६	१०८	बीज्यावाद	२७३	१३	बुक्	४५७	४
विस्तार	१५६	५३	बीज्या	२७७	२६	बुक्	४५७	४
विस्तार	५२	१६	बीज्या	२१०	४३	बुक्, टी.	२३६	२२
विस्तार्यान्वित	२६१	२६	बीज्या	१३	५३	बुक्	२३६	२२
विस्तृत	३०८	८६	बीज्या	८६	४	बुक्	२१०	४२
विस्त	३७	१२	बीज्या	३६२	६४	बुद्धित	२२८	१०७
विस्तार	२०४	२३	बीज्या	३००	५५	बुद्धि	१३२	७
विस्तार	३०२	१४४	बीज्या	६८	२७	बुद्धि	१७७	१२८
विहग	१३८	३२	बीज्या	५२	१७	बुद्धि	१७८	१२६
विहग	१३८	३२	बीज्या	५२	१६	बुद्धि, टी.	१५६	६४
विहग	१३८	३२	बीज्या	४२७	२४३	बुद्धि, टी.	१५६	६४
विहगमा, टी.	२३८	२६	बीज्या	५२	१७	बुद्धि	३१३	१०३
विहगिका	२३८	२६	बीज्या	५२	१८	बुद्धि	८६	५
विहगित	५७	३५	बीज्या	२२०	७७	बुद्धि	४८२	४०
विहस्त	२६६	४३	बीज्या	१२६	१६४	बुद्धिभेदिन्	२७६	३४
विहपित	१८६	२६	बीज्या	१२६	१६४	बुद्धिरुहा	१०६	८२
विहायसा	१७	२	बीज्या	१००	४५	बुद्धिवाटिका	८८	२
विहायस	१७	२	बीज्या	१४६	१६	बुद्धिदान	२७६	३४
विहायस	१३८	३२	बीज्या	२२७	१०३	बुद्धिदाननी	१०६	८२
विहाय, टी.	१३८	३२	बीज्या	२२७	१०३	बुद्धिग्ल	२४४	३५
विहार	३२१	१६	बीज्या	१४६	१६	बुद्धि	३१	२३
विहल	२६५	४४	बीज्या	१४६	१६	बुद्धि	३०४	७१
वीकास	४१७	२२४	बीज्या	६६	४२	बुद्धि	३७०	११६
वीचि	६२	५	बीज्या	२२७	१००	बुद्धि	३०६	६२
वीची			बीज्या	१४६	१६	बुद्धि	३१८	८
वीज	३३	३८	बीज्या	१६६	५२	बुद्धि	३०३	६६
			बीज्या	६०	६	बुद्धि	३०६	६२
			बीज्या			बुद्धि	३५६	८५

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
वृत्ताप्ययनार्थि	१६२	३८	वृषण	१६३	७६	वेदि	{ ८४	१६
वृत्तान्त	{ ४१	७	वृषदंशक	१३२	६		{ १८६	१८
	{ ३५४	७०	वृषध्वज	८	३४	वेदिका	{ ८४	१६
वृत्ति	{ २३२	१	वृषन्	१०	४२		{ १८६	१७
	{ ३५७	८०	वृषभ	२५२	५६	वेदी	{ ८४	१६
वृत्र	३६५	१७३	वृषल	२६६	१		{ १८६	१७
वृत्रहन्	१०	४२	वृषस्यन्ती	१४४	६	वेध	११८	८
वृथा	{ ४३४	२५६	वृषा	{ १०	४२	वेधनिका	२७६	३३
	{ ४४२	४		{ ११०	८७	वेधमुख्यक	१२१	१३५
वृद्ध	{ ११८	१२२	वृषाकपायी	३६१	१६५	वेधम्	{ ५	१७
	{ १५३	४२	वृषाकपि	३७६	१३७		{ ४२३	२३७
	{ ३६७	१०७	वृषी	१६४	४६	वेधित	३१२	६८
वृद्धत्व	१५३	४०	वृष्टि	१६	११	वेधथु	५७	३८
वृद्धदारक	१२२	१३७	वृष्टिभू. टी.	७८	२४	वेम	२७७	२८
वृद्धश्रवस्	१०	४१	वृष्टिण	२५७	७६	वेमन्	२७७	२८
वृद्धसंघ	१५३	४०	वृहत्	३०१	६०	वेला	४०६	२०७
वृद्धा	१४५	१२	वृहत्तिका	१७५	११७	वेला	११४	१०६
वृद्धि	{ ११६	११२	वृहती	{ ११२	६३	वेलाज	२४४	३५
	{ ३०२	१६		{ ३५८	८२	वेलित	{ ३०४	७१
	{ ३१८	६	वृहत्कुक्षि	१५४	४४		{ ३०८	८७
वृद्धिजीविका	२३३	४	वृहद्भानु	१३	५४	वेश, टी.	{ ८०	२
वृद्धयाजीव	२३३	५	वृहस्पति	२३	२४		{ १७०	६६
वृद्धोक्ष	२५३	६१	वेग	३३८	२५	वेशान्त	६६	२८
वृन्त	६२	१५	वेगिन्	२१६	७३	वेशावार, टी.	२४४	३५
वृन्द	१४०	४०	वेणि	{ १०६	६६	वेशमन्	८१	४
वृन्दभेद	१४१	४१	वेणी	{ १६६	६८	वेशमभू	८५	१६
वृन्दारक	{ ३	६	वेणु	१२७	१६१	वेश्या	१४७	१६
	{ ३३४	१६	वेणुक	२१०	४१	वेश्याजनसमाश्रय	८०	२
वृन्दिष्ठ	३१५	११२	वेणुध्मा	२७३	१३	वेश	१७०	६६
वृश्चिक	{ १३४	१४	वेतन	२८०	३८	वेशवार, टी.	२४४	३५
	{ ३३१	७	वेतस	६६	२६	वेष्टित	३०६	६०
	{ ३२	२४	वेतस्वत्	७७	६	वेसवार	२४३	३५
	{ ११४	१०३	वेताल	४६६	२१	वेहत्	२५५	६६
वृष	{ ११७	११६	वेतवती	७०	३४	वै	{ ४४३	५
	{ २५२	५६	वेद	३६	३		{ ४४६	१५
	{ ४३०	२२६	वेदना	३१८	६	वैकशिक	१८०	१३६

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
वैकङ्कत, टी.	६८	३७	वैरिन्	२०१	१०	व्याकोष, टी.	६०	७
वैकृत	५	१८	वैवधिक	२७४	१५	व्याघ्र	१३०	१
वैकृत, टी.	५२	१६	वैवस्वत	१४	५६	व्याघ्रनख	१२०	१२६
वैजनन	१५२	३६	वैशाख	२६	१६	व्याघ्रपाद	६८	३७
वैजयन्त	११	४६	वैश्व	२५७	७४	व्याघ्रपुच्छ	१०१	५०
वैजयन्तिक	२१८	७१	वैश्य	२३२	१	व्याघ्राट	१३४	१५
वैजयन्तिका	१०५	६५	वैश्रवण	१६	६६	व्याघ्री	११२	६३
वैजयन्ती	२२६	६६	वैश्वानर	१३	५३	व्याज	५५	३०
वैज्ञानिक	२८५	४	वैसारिण	६६	१७		५६	३३
वैष्णव	६३	१८	वांल	२६७	१०४	व्याड	३४६	४६
	१६४	४५	वौवद्	४४४	८	व्याडायुध	१२०	१२६
वैष्णविक	२७३	१३	व्यक्त	३५३	६६	व्याध	२७५	२१
वैष्णिक	२७३	१३	व्याक्ति	३४	३१			
वैष्णुक	२१०	४१	व्यग्र	४०६	१६६	व्याधि	११६	१२६
वैतसिक	२७३	१४	व्यजन	१८१	१४०		१५५	५१
वैतनिक	२७४	१५	व्यञ्जक	५१	१६	व्याधिघात	६४	२४
वैतरणि	६०	२	व्यञ्जन	३७३	१२३	व्याधित	१५८	५८
वैतरणी				४७१	२३	व्यान	१५	६३
वैतालिक	२२६	६७	व्यङ्ग्य	१०१	५१	व्यापाद	३५	४
वैदेह, टी.	२५८	७८	व्यङ्ग्यन, टी.	१०१	५१	व्याप	१३६	८७
वैदेहक	२५८	७८	व्यत्यय	३२५	३३	व्यायत	३१५	११३
	२७०	३	व्यत्यास, टी.	३२५	३३			
वैदेही	११२	६६	व्यथा	६१	३	व्याल	५६	७
वैद्य	१५७	५७	व्यध	३१८	८		४०८	२०५
वैद्यमाता	११४	१०३	व्यध्व	७६	१६	व्यालमाह, टी.	६०	११
वैधान	१२	५१	व्यय	३२१	१७	व्यालमाहिन्	६०	११
वैधेय	२६८	४८	व्यलीक	३३३	१२	व्यालायुध, टी.	१२०	१२६
वैधेयी, टी.	२६८	४८	व्यवधा	२०	१२	व्याली, टी.	४०८	२०५
वैनेतेय	७	२६	व्यवहरण, टी.	४१	६	व्यावक्रोशी, टी.	४५७	४
वैनीतक	२१५	५८	व्यवहार	४१	६	व्यास	३२२	२२
वैमानेय	५४८	२५	व्यवाय	१६८	५७	व्याहार	३६	१
वैमेय, टी.	२५६	८०	व्यसन	३७५	१२७	व्युत्थान	३७४	१२५
वैयाघ्र	२१४	५३	व्यसनार्त	३६६	४३	व्युष्टि	३४५	४५
वैर	५४	२५	व्यस्त	३०४	७२	व्यूढ	३४७	५२
वैरनिर्यातन	२२६	११०	व्याकुल	२६६	४३	व्यूढकङ्कट	२१७	६५
वैरशुद्धि	२२६	११०	व्याकोश	६०	७	व्यूति	२७७	२८

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
व्यूह	{ १४०	३६	शकलिन	६६	१७	शङ्ख	{ ७	२८
	{ २२०	७६	शकुन	१३८	३२		{ ६७	२३
	{ ४२६	२४७	शकुनि	१३८	३२		{ १२०	१३०
व्यूहपार्ष्णि	२२०	७६	शकुन्त	{ १३८	३२		{ ३३८	२३
व्योकार	२७२	७		{ ३५२	६५	शङ्खनक	६७	२३
व्योमकेश	८	३४	शकुन्ति	१३८	३२	शङ्खिनी	११६	१२६
व्योमन्	१७	१	शकुल	६६	१६	शचि	} टी.	१०
व्योमयान	११	४८	शकुलान्धक	१२७	१५६	शची		
व्योष	२६६	१११	शकुलादनी	{ ११०	८६	शाचीपति	१०	४३
	{ १४०	३६		{ ११५	१११	शाटी, टी.	१६६	६७
व्रज	{ ३४२	३६	शकुलार्भक	६६	१७	शाटी	१२६	१५४
	{ १६१	३५	शकुल	१६०	६७	शाठ	२६७	४६
व्रज्या	{ २२५	६५	शकुत्करि	२५३	६२	शाटी, टी.	१२६	१५४
व्रण	१५६	५४	शक्त, टी.	२६४	३६	शरणपर्णा	१२५	१४६
व्रत	१५२	३७	शक्ति	{ २०३	१६	शरणपुष्पिका	११५	१०७
व्रतति	}	६०		{ २२७	१७२	शरणसूत्र	६५	१६
व्रतती		३५५		{ ३५५	७३	शरणद	२५३	६२
व्रतिन्	१८३	७	शक्तिधर	६	४०	शरणद, टी.	{ २०१	६
व्रध, टी.	६१	१२	शक्तिहेतिक	२१८	६६		{ २५३	६२
व्रश्चन	२७८	३२	शक्ती, टी.	३५५	७३	शत	४७१	२४
व्रक्षा	५	१६	शक्र, टी.	२६४	३६	शतकोटि	११	४७
व्रात	१४०	३६	शक्नु	२६४	३६	शतद्रु	७०	३३
व्रात्य	१६६	५३	शक्र	{ १०	४२	शतपत्र	७२	४०
व्राह्म	}	१६६		{ १०५	६६	शतपत्रक	१३४	१६
व्राह्मण		५३	शक्रधनुस्	१६	१०	शतपदी	१३३	१३
व्रीडन, टी.	५३	२३	शक्रपादप	१०२	५३	शतपर्बन्	१२७	१६१
व्रीडा	५३	२३	शक्रपुष्पी	१२२	१३६	शतपर्विका	{ ११४	१०२
व्रीडित	५३	२३	शक्ल	२६४	३६		{ १२७	१५८
व्रीहि	{ २३७	१५	शक्ली	२६४	३६	शतपुष्पा	१२५	१५२
	{ २३६	२१	शंकर	७	३०	शतप्रास	१०८	७६
व्रीहिभेद	२३८	२०	शङ्कीर्ण	३५२	६४	शतभीर, टी.	१०६	७०
व्रीह्य	२३४	६		{ ६६	२०	शतमन्यु	१०	४२
(श)			शङ्कु	{ ६०	८	शतमान	४७६	३४
शकट	२१३	५२		{ २२५	६३	शतमूली	११३	१००
शकल	२०	१६				शतवीर्या	१२७	१५६

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
शतवेधिन्	१२३	१४१	शम्बर	{ ६२	४	शराभ्यास	३२३	८६
शतरुदा	१६	६		{ १३३	१०	शरारि	१३६	२५
शताक्ष	२१३	५१	शम्बरारि	६	२६	शराक्ष	२६१	२८
शतावरी	११३	१०१	शम्बल	४७६	३४	शरालि, टी.	१३६	२५
शत्रु	{ २०१	६	शम्बा, टी.	१६	६	शराव	२४२	३२
	{ २०१	११	शम्बाकृत	२३५	६	शरावती	७०	३४
शनि, टी.	२३	२६	शम्बु, टी.	६७	२३	शरासन	२२२	८३
शनैश्चर	२३	२६	शम्बुक	{ ६७	२३	शरीर	१६१	७०
शनैस्	४५०	१७	शम्बूक			शरीरिन्	३३	३०
शपथ	४१	६	शम्भली	१४७	१६		७८	११
शपन	४१	६	शम्भु	{ ७	३०	शर्करा	{ २४६	४३
शफ	{ २१२	४६	शम्भू					
	{ ३८०	१४१	शम्बा	२६६	१४	शर्करावत्	७८	११
शफर, टी.	६६	१८	शय	१६४	८१	शर्करिल	७८	११
शफरी	६६	१८		{ ५७	३६	शर्मन्	३२	२५
शवर, टी.	२७५	२०	शयन			शर्व	७	३०
शवरालय	८५	२०		{ १८०	{ १३८	शर्वरी	२६	३
शवल	३८	१७	शयनीय	१८०	१३७	शर्वला	२२५	६३
शब्द	{ ३६	७	शयालु	२६३	३३	शर्वाणी	६	३७
	{ ३६	२	शयित	२६३	३३	शल	१३२	७
शब्दग्रह	१६८	६४	शयु	५८	५	शलभ	१३७	२८
शब्दन	२६४	३८	शय्या	१८०	१३७	शलल	{ १३२	७
शम	३१७	३		{ १२८	{ १६२	शललिन्		
शमथ	३१७	३	शर	{ २२३	८७	शलली	१३२	७
शमन	{ १४	५८				शलाट्ट	६२	१५
	{ १८८	२६	शरजन्मन	६	३६	शलक	३३३	१३
शमनस्त्वसृ	७०	३२	शरट्, टी.	१३३	१२		{ १०२	५३
शमल	१६०	६७	शरण	३५०	६०	शल्य		
शमित	३११	६७	शराणि	७६	१५		{ २२५	६३
शमी	{ १०१	५२	शरणी	७६	१५	शल्लकी	११८	१२४
	{ २३६	२३		{ ३०	१६	शव	२३१	११८
शमीक	२२८	१०४	शरद्			शवर	२७५	२०
शमीधान्य	२४०	२४		{ ३६५	{ १००	शवरालय	८५	२०
शमीर	१०१	५२	शरभ	१३३	११	शवल	३८	१७
शम्पा	१६	६	शरव्य	२२३	८६	शवला, टी.	२५५	६७
शम्भ	११	४७	शरति, टी.	१३६	२५	शवली	२५५	६७

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
शश	१३३	११	शाखाशिका	६१	११	शार्कर	७८	११
शशधर	२०	१५	शाखिन्, टी.	८६	५	शार्किन्	५	१६
शशलोमन्	२६८	१०७	शाङ्गिक	२७२	८	शार्दूल	१३०	१
शशाङ्क, टी.	२०	१४	शाटक	४७८	३३	शार्वर	४०५	१६७
शशादन	१३४	१४	शाटी	४८१	३८	शार्वरी, टी.	२६	३
शशी, टी.	२०	१४	शाठ्य	५५	३०	शास्त्र	६६	१६
शशीर्थ	२६८	१०७	शाण	२७८	३२	शालपर्णी, टी.	११७	११५
शश्वत्	४३२	२५२	शाथी	४६१	६	शाला	८१	६
	४४०	१	शाथिडल्य	६७	३२		६१	११
	४४६	११	शात	३२	२५	शालावृक्ष	३३३	१२
शम्प	१२६	१६७		३०६	६१	शालि	२४०	२४
शशान, टी.	१८८	२६	शातकुम्भ	२६४	६४	शालीन	२६१	२६
शास्त	३२	२६	शातकौम्भ, टी.	२६४	६४	शालूक	७१	३८
	३१४	१०६	शातला	१२३	१४३	शालूर	६८	२४
शाद्य	२२२	८२	शावव	२०१	११	शालेय	११४	१०५
	४०१	१८८	शाद	६३	६		२३४	६
शास्त्रक	२६५	६८		३६४	६७	शाल्मलि	१००	४६
शास्त्रमार्ज	२७२	७	शादहरित	७७	१०	शाल्मली		
शास्त्राजीव	२१७	६७	शाद्वत्	७७	१०	शाल्मलीवी	१००	४७
शास्त्री	२२४	६२	शान, टी.	२७८	३२	शावक	१४०	३८
शास्य, टी.	६२	१५	शान्त	३११	६७	शावर	६७	३३
शास्यमञ्जरी	२३६	२१	शान्ति	३१७	३	शाश्वत	३०४	७२
शास्यशक्र	२३६	२१	शाप, टी.	४१	६	शाष्कल, टी.	२८६	१६
शास्यसम्बर, टी.	१००	४४	शामन्, टी.	२०४	२१	शाष्कुलिक	३२७	४०
शाक	१२२	१३६	शाम्बरी	२७३	११	शासन	२०५	२५
	२४३	३४	शाम्बुक, टी.	६७	२३	शास्ति, टी.	२०५	२५
शाकट	२५४	६४	शाम्बूक, टी.	६७	२३	शास्तु	४	१४
शाकुनिक	२७३	१४	शायक, टी.	३२६	२	शास्त्र	४०१	१८८
शाक्तीक	२१८	६६	शार	३६६	१७५	शास्त्रविद्	२८५	६
शाक्य, टी.	४	१४	शारिका, टी.	४६१	८	शिशपा	१०४	६२
शाक्यघुनि	४	१४	शारङ्ग	१३४	१७	शिक्य	२७८	३०
शाक्यसिंह	४	१५	शारद	६४	३३	शिक्यित	३०८	८६
शाखा	६१	११		३६५	१०२	शिक्षित	२८५	४
शाखानगर	८०	२	शारदी	११५	१११	शिक्षा	४०	४
शाखामृग	१३१	३	शारिकल	२८२	४६	शिलयड	१३८	३१
			शारिवा	११६	११२	शिलयडक	१६६	६६

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
शित्वर	{ ८६ ४		शित्ना, टी.	२३६	२३	शिशु	१४०	३८
शित्वरिणी, टी.	{ ११ १२		शित्नि, टी.	२३६	२३	शिशुक	६६	१८
शित्वरिन्	{ ८६ १		शिर }	१६८	६५	शिशुत्व	१५३	४०
	{ ३६६ ११३		शिरस् }			शिशुमार	६६	२०
शित्वा	{ १३ ५७		शिरस्त्र	२१६	६४	शिश्र	१६३	७६
	{ १३८ ३१		शिरस्य	१६६	६८	शिश्रिदान	२६७	४६
	{ १६६ ६७		शिरा	१६०	६५	शिश्रि	२०५	२६
	{ ३३८ २४		शिराष	१०४	६३	शिश्र्य	१८४	११
शित्वाण्डक, टी.	१६६ ६६		शिरोग्र	६१	१२	शिरु	१७८	१२८
शित्वावत्	१३ ५५		शिरोग्रीव, टी.	४७३	२६	शीकर	१६	११
शित्वावल	१३८ ३०		शिरोधि, टी.	१६६	८८	शीघ्र	१५	६४
शित्विग्रीव	२६६ १०१		शिरोरत्न	१७०	१०२		{ २१ १६	
शित्विन्	{ १३८ ३०		शिरोरुह	१६८	६५		{ ६६ ३०	
	{ ३६६ ११३		शित	२३२	२	शीत	{ ६७ ३४	
शित्विवाहन	१ ४०		शिला	{ ८३ १३			{ ४७० २२	
शियु	{ ६६ ३१			{ ८६ ४		शीतक	२७४	१८
	{ २४३ ३४		शिलाजतु	२६७	१०४	शीतभीरु	१०६	७०
शियुज	२६६ ११०		शिली	६८	२४	शीतल	{ २१ १६	
शिक्षाण	२६५ ६८		शिलीमुख	३३८	२३		{ १२५ १४६	
शिक्षा, टी.	४५ २४		शिलोच्चय	८६	१	शीतलघातक, } टी. १२५ १४६		
शिक्षित	४५ २४		शिल्प	२७६ ३५		शीतलघातल, }		
शिक्षिनी	२२२ ८५		शिल्पशाला	८२	७		{ ११४ १०५	
शितशिव, टी.	२४६ ४२		शिल्पिन्	२७१ ५		शीतशिव	{ ११८ १२२	
शितशङ्क, टी.	२३७ १५		शिल्लकी, टी.	११८ १२४			{ २४६ ४२	
शिति	३६१ ६०		शिव	{ ७ ३०		शीता	२३७ १४	
शितिकण्ठ	८ ३२		शिवक	{ ३२ २५		शीत्य	२३४ ८	
शितिसारक	६८ ३८		शिवल्ली	{ २५६ ७३		शीफालिका, टी.	१०६ ७०	
शित्ती	३६१ ६०			{ १०६ ८१		शीघु	{ २८१ ४१	
शित्तिपिष्ट, टी.	३४४ ४१			{ ६ ३७			{ ४७६ ३४	
शित्तिविष्ट	{ ३४४ ४१			{ १०१ ५३		शीर्ष	१६८ ६५	
शिफा	{ ६१ ११		शिवा	{ १०३ ५६		शीर्षक	२१६ ६३	
	{ ३८० १४०			{ ११६ १२७		शीर्षच्छेद्य	२६७ ४५	
शिफाकन्द	७३ ४३			{ १३१ ५		शीर्षण्य	{ १६६ ६८	
शिविका	२१४ ५३			{ ४१५ २२१			{ २१६ ६४	
शिविर	२०८ ६३		शिशिर	{ २१ १६		शील	{ ५४ २६	
				{ ३० १८			{ ४११ २६०	

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
शुक्र	{ १२१	१३३	शुभ्र	{ ३७	१२	शृष	२४०	२६
	{ १३५	२१		{ ४०६	२०१	शृभि, टि.	२७६	३५
शुक्रनास	१०२	५७	शुभ्रदन्ती	१८	५	शृभि, टि.	२७६	३५
शुक्र	३६१	६०	शुभ्रांशु	२०	१४	शृज	४०६	२०६
शुक्ति	{ ६७	२३	शुलक	{ २०६	२७	शृलाकृत	२४८	४५
	{ १२०	१३०		{ ३३७	२१	शृलिन	७	३०
	{ १३	५६	शुल्व	{ २६५	६७	शृल्य	२४८	४५
शुक्र	{ २३	२५	शुल्व	{ २७७	२७	शृगाल, टी.	१३१	५
	{ २६	१६		{ ४७१	२३	शृङ्गल	१७२	१०६
	{ १५६	६२	शुल्वा	{ २७७	२७	शृङ्गलक	२५७	७५
शुक्रशिख	४	१२	शुल्वा, टी.			शृङ्गला	२१०	४१
शुक्र	{ २८	१२	शुल्वी, टी.	२७७	२७		८६	४
	{ ३७	१२	शुन्, टी.	२७७	२७	शृङ्ग	{ १२३	१४२
शुक्ला	३७	१२	शुभ्रूपा	१६१	३५		{ ३४०	३१
शुक्	५४	२५	शुभि, टी.	५८	२	शृङ्गवेर	२४४	३७
	{ १३	५६	शुभिर	{ ४७	४	शृङ्गाटक	७६	१७
	{ २६	१६		{ ५८	१	शृङ्गार	५२	१७
शुभि	{ ३७	१२		{ ५८	२	शृङ्गि	२६५	६६
	{ ५२	१७	शुभिरा, टि.	{ ४७	४	शृङ्गिणी	२५४	६६
	{ ३४१	३३		{ १२०	१२६	शृङ्गिन्	३१३	६६
शुभिट, टी.	२४५	३८	शुक्मांस	१५६	६३	शृङ्गी	{ ६८	२५
शुपटी	२४५	३८	शुक्ल, टी.	२८६	१६		{ ११३	१००
शुपडा	२८१	४०	शुष्म	२२७	१०२	शृङ्गीकनक	{ ११७	११६
शुपुदि	७०	३३	शुष्मन्	१३	५४		{ २६५	६६
शुदान्त	{ ८३	१२	शृक	२३६	२३	शृत	३१०	६५
	{ ३५५	७३	शृककीट	१३४	१४	शोखर	१८०	१३६
शुनक	२७५	२२	शृकधान्य	२४०	२४	शोप, टी.	१६३	७६
शुनासीर, टी.	१०	४१	शृकर	{ १३१	२	शोपस्	१६३	७६
शुनासीर	१०	४१		{ २७६	२३	शोपाल, टी.	७२	३६
शुनि	{ २७५	२२	शृकशिम्बि	११०	८७	शोफ	१६३	७६
शुनी			शृद	२६६	१	शोफस्	१६३	७६
शुन्ध, टी.	३००	५६	शृदा	१४५	१३	शोकालि, टी.	१०६	७०
शुभंयु	२६८	५०	शृद्री	१४५	१३	शोकालिका	{ १०६	७०
शुभ	{ ३२	२५	शृय	३००	५६		{ ४६०	७
	{ ४७१	२३	शृय	२२०	७७	शोकाली, टी.	१०६	७०
शुमान्वित	२६८	५०	शृयण, टी.	१२७	१५७	शोमुली	३४	१

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
शेयाल, टी.	७२	३६	शोभा	२१	१७	श्रद्धालु	{ १४७	२१
शेजु	६७	३४	शोभाजन	६६	३१		{ २६१	२७
शेवधि	१६	७१	शोष	१५५	५१	श्रयण	३१६	१२
शेवल	७१	३८	शौक	१४१	४३	श्रव	१६८	६४
शेवाल, टी.	७१	३८	शौकिकेय, टी.	{ ६०	१०	श्रवण	१६८	६४
शेष	५८	४		{ ४६३	१२	श्रवस्, टी.	१६८	६४
शैश्व	१८४	११	शौण्ड	२६०	२३	श्रविष्ठा	२२	२२
शैखरिक	१११	८८	शौण्डिक	२७२	१०	श्राणा	२४६	५०
शैखरेय, टी.	१११	८८	शौण्डि	११२	६७	श्राद्ध	१६०	३१
शैल	८६	१	शौण्डोदनि	४	१५	श्राद्धदेव	१४	५६
शैलाजिन्	२७३	१२	शौरि	५	२१	श्राय	३१६	१२
शैलूष	{ ६७	३२	शौर्य	२२७	१०२	श्रावण	२६	१६
	{ २७३	१२	शौलिक	२७२	८	श्रावणिक	२६	१६
शैलेय	११८	१२३	शौक्ल	२८६	१६	श्री	{ ७	२७
शैवल	७१	३८	शूयोत	३१६	१०		{ २२२	८२
शैवलिनी	६६	३०	श्मशान	२३१	११८	श्रीकण्ठ	८	३२
शैवाल, टी.	७१	३८	श्मश्रु	१७०	६६	श्रीघन	४	१४
शैशव	१५३	४०	श्मश्रुन्, टी.	१७०	६६	श्रीद	१६	६६
शोक	५४	२५	श्याम	{ ३७	१४	श्रीपति	५	२१
शोचिकेश	१३	५४		{ ३८६	१५२	श्रीपर्ण	३५०	६०
शोचिस्	२५	३४	श्यामल	३७	१४	श्रीपर्णा	६७	३६
शोण	{ ३८	१५	श्यामा	{ १०२	५५	श्रीपर्णिका	६६	४०
	{ ७०	३४		{ ११५	१०८	श्रीपिष्ट, टी.	१७८	१२६
शोणक	१०२	५७		{ ११६	११२	श्रीफल	६७	३२
शोणरत्न	२६४	६२		{ ३८६	१५२	श्रीफली	११२	६५
शोणा	३८	१५	श्यामाक	१२६	१६५	श्रीमत्	{ ६६	४०
शोणित	१५६	६४	श्याल	१५०	३२		{ २८७	१४
शोणी, टी.	३८	१५	श्याव	३८	१६	श्रील	२८७	१४
शोथ	१५६	५२	श्येत	३७	१२	श्रीवत्सलान्धन	६	२२
शोथवी	१२५	१४६	श्येता	३७	१२	श्रीवास	१७८	१२६
शोधनी	८५	१८	श्येन	१३४	१५	श्रीवासस्	१७८	१२६
शोधित	{ २४८	४६	श्येनी	३७	१२	श्रीवेष्ट	{ १७८	१२६
	{ ३५६	५६	श्यैनम्पाता	४६०	६		{ ४६४	१३
शोक	१५६	५२	श्योनाक	१०२	५७	श्रीसंज्ञ	१७७	१२५
शोभन	२६६	५२	श्रद्धा	३६८	१०६	श्रीहस्तिनी	१०६	६६
						श्रुत	३५६	८४

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
श्रुति	{ ३६ ३	६४	श्वभ्र	४७०	२२	षष्टिकय	२३४	७
	{ १६८ ६४		श्वयथु	१५६	५२	षायमातुर	६	४०
	{ ३६७ ८०		श्ववृत्ति	२३२	२	(स)		
श्रेणि	{ ८६ ४		श्वशुर	१५०	३१	संकन्दन	१०	४४
श्रेणी	{ २०३ १८		श्वशुरौ	१५२	३७	संकम	३२३	२५
	{ २७१ ५		श्वशुर्य	३८७	१५५	संक्राम, टी.	३२३	२५
श्रेयस्	{ ३२ २४		श्वश्रु	१५०	३१	संश्लेषण	३२२	२१
	{ ३०० ५८		श्वश्रुश्वशुरी	१५२	३७	संख्य	२२८	१०४
श्रेयसी	{ १०३ ५६		श्वस्	४५३	२२	संख्या	३४	२
	{ ११० ८४		श्वसन	{ १४ ६१		संख्यात	३०२	६४
	{ ११२ ६७		श्याविधु	१३२	७	संख्यान्, टी.	३४	२
श्रेष्ठ	३००	५८	शिवत्र	१५६	५४	संख्यावत्	१८२	५
श्रोण	१५५	४८		{ ३७ १२		संख्येय	२६०	८३
श्रोणि	१६२	७४	श्वेत	{ २६५ ६६		संग्रह	४०	६
श्रोणिफलक	१६२	७४		{ ३५६ ८६		संग्राम	२२८	१०५
श्रोणी, टी.	१६२	७४	श्वेतगरुत्	१३६	२३	संग्राह	{ २२४ ६०	
श्रोणीफलक	१६२	७४	श्वेतमरिच	२६६	११०		{ ३२० १४	
श्रोत्र	१६८	६४	श्वेतरक्त	३८	१५	संज्ञ, टी.	१५४	४७
श्रोत्रिय	१८२	६	श्वेतसुरसा	१०६	७१	संज्ञपन	२३०	११३
श्रोत्र, टी.	१६८	६४	श्वेता	३७	१२	संज्ञा	३४३	३६
श्रौषट्	४४४	८	श्वेता	३७	१२	संशु	१५४	४७
श्लक्ष्ण	३०१	६१	श्वेत्र, टी.	१५६	५४	संस्वर	१३	५७
श्लाल, टी.	२८७	१४	(ष)			संज्ञीन	१४०	३७
श्लेष	३१६	११	षटी, टी.	१२६	१५४	संदाव	२२६	१११
श्लेष्मण	१५८	६०	षट्कर्मन्	१८२	४	संदाव	२२६	१११
श्लेष्मन्	१५६	६२	षट्पद	१३८	२६	संफुल्ल	६०	७
श्लेष्मल	१५८	६०	षडभिज्ञ	४	१४	संमार्जनी	८५	१८
श्लेष्मातक	६७	३४	षडग्रन्थ	१०१	४८	संमृष्ट	२४८	४६
श्लोक	३२६	२	षडग्रन्था	११४	१०२	संयत्	२२८	१०६
श्वःश्रेयस	३२	२५	षडग्रन्थिका	१२६	१५४	संयत	२६६	४२
श्वन्	२७५	२२	षड्ग्रन्थिका	१२६	१५४	संयम	३२१	१८
श्वदंष्ट्रा	११३	६८	षड्ग्रन्थ	४६	१	संयमन, टी.	८१	६
श्वनिश	४८२	४०	षडानन	६	३६	संयाम	३२१	१८
श्वपच	२७५	२०	षण्ड	{ ७२ ४२		संयुग	२२८	१०५
श्वपाक, टी.	२७५	२०		{ २५३ ६२		संयोगित, टी.	३०६	६२
			षण्ड, टी.	१५२	३६	संयोजित	३०६	६२

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
संराव	४५	२३	संहति	४१	८	संघात	१४०	३६
संलाप	४३	१६	सकल	३०२	६५	सचिव	४१३	२१५
संव्यान	१७५	११८	सकटाह	४६६	२१	सची	१०	४५
संशक्त	२२६	६८	सकुल, टी.	६६	१६	सजम्बाल	७७	१०
संशय	३४	३	सकृत्	४३१	२५१	सख्य, टी.	४४२	४
संशयापन्नमानस	२८५	५	सकृत्प्रज	१३५	२०	सख	२१७	६५
संश्रव	३५	५	सकृत्फला	१०१	५२			
संश्रुत	३१४	१०६	सकृत्फली, टी.	१०१	५२	सखन	{ १८२ ३	
संश्लेष	३२४	३०	सक्थि	१६२	७३		{ २०८ ३३	
संसत्	१८५	१५	सखि	२०१	१२	सखना	२१०	४२
संसक्त	३०३	६८	सखी	१४५	१२	संचार, टी.	३२३	२५
संसद्	१८५	१५	सख्य	२०१	१२	संचारिका	१४६	१७
संसरण	{ ७६ १८	१८	सगर्भ्य	१५१	३४	संचय	१४०	३६
	{ ३५१ ६२		सगोत्र	१४१	३४	संजवन	८१	६
संसिद्धि	५७	३७	सगंधि	२५१	५५	सटा	१६६	६७
संस्कार	१७६	१३४	संकट	३०७	८५	सटी, टी.	१६६	६७
संस्कारहीन	१६६	५३	संकर	८५	१८	सथसूत्र	६५	१६
संस्कृत	३६०	८८	संकर्षण	६	२४	सत्	१८२	५
संस्तर	३६४	१७०	संकलित	३१०	६३	सतत	१५	६५
संस्तव	३२२	२३	संकरुप	३४	२	सती	१४३	६
संस्ताव	३२५	३४	संकुच	२६६	४३	सतीनक	२३७	१६
संस्त्याय	३८६	१६०	संकसूत्र, टी.	२६६	४३	सतीर्थ	१८४	१२
संस्था	{ २०५ २६	२६	संकास	२८०	३७	सत्कुमार, टी.	१२	५१
	{ ३६३ ६५		संकीर्ण	{ ३०७ ८५		सत्तम	३००	५८
संस्थान	३७६	१३१		{ ३५२ ६४		सत्पथ	७६	१६
संस्थित	२३१	११७	संकुल	{ ४४ १६			{ ४५ २२	
संस्पर्शा	१२६	१५४		{ ३०७ ८५		सत्य	{ ३६० १६३	
संस्फोट, टी.	२२८	१०५	संकोच	१७६	१२४	सत्यकार	२५६	८२
संस्फोट	२२८	१०५	सक्	३२४	२६	सत्यवचस्	१६३	४३
संहत	३०५	७५	संगत	४४	१८	सत्याकृति	२५६	८२
संहतजातु, टी.	१५४	४७	संगम	{ ३२४ २६		सत्यावृत	२३३	३
संहतजातुक	१५४	४७		{ ४७६ ३४		सत्यापन	२५६	८२
संहतल	१६५	८५	संगर	३६६	१७५	सत्यापना, टी.	२५६	८२
संहति	१४०	४०	संगीर्थ	३१४	१०६	सत्र	४०२	१६०
संहनन	१६१	७०	संगृह	३१०	६३	सत्रा	४४२	४
संहार	६०	२	संघ	१४१	४१			

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
सञ्चिन्	२०२	१५	संतत	१५	६५	सपिण्ड	१५०	३३
सञ्चिन् }			संतति	१८१	१	सपीति	२६१	५५
सत्त्व	३३	२६	संतप्त	३१२	१०२	सपूपक	४६८	१६
}			संतमस	५८	४	सप्तकी	१७२	१०८
सत्त्वर	१५	६५	संतान	१२	५०	सप्ततन्तु	१८५	१३
सद्	१८५	१५	संताप			सप्तपथ	६४	२३
सदन	८१	५	संतापित	३१२	१०२	सप्तर्षि	२३	२७
सदस्य	१८५	१६	संदान	२५६	७३	सप्तला	१०७	७२
सदा	४५३	२२	संदानित	३१०	६५	सप्तानिम्ब		
सदागति	१४	६१	संदित	३०८	८६	सप्तार्चिषू	१३	५६
सदातन	३०४	७२	संदेशवाच			सप्तार्चव	२४	२६
सदानीरा	७०	३३	संदेशहर	४४	१७	सप्ति	२११	४४
सदाय, टी.	२०६	२८	संदेह	३४	३	सप्तल्लचारिन्	१८४	११
सदृक्ष	२८०	३६	संदोह	१४०	३६	सप्तर्तुका	१४५	१२
सदृश्	२८०	३६	संधा	टी. २६	३	सभा	८१	६
सदृश	२८०	३६	संधान			सभाजन		
सदेश	३०२	६७	संध्या	२८१	४२	सभासन्	१८५	१६
सधन्	८१	४	संधि	२०३	१८	सभासद्	१८५	१६
सद्यस्	४४५	६	संधिनी			सभास्तार	१८५	१६
सधर्मिणी, टी.	१४३	५	संज्ञकद्रु	२५५	६१	सभिक	२८२	४४
सध्रयङ्	२६३	३४	संज्ञय	३८६	१६०	सभ्य	१८२	३
सध्रयन्	२६३	३४	संनिध	२१७	६५	सम		३१
सध्रीची	२६३	३४	संनिध	३२२	२३	सम	२८०	३६
सन्	३६१	६०	संनिध	३०२	६६	सम		
सन्द्, टी.	४५०	१७	संनिध, टी.	३२३	२३	समग्र	३०२	६४
सन्त्कुमार	१२	५१	संनिधि	३२२	२३	समङ्गा	१११	६०
सन्धूत्र	६५	१६	संनिधि	३२२	२३	समज		
सना	४५०	१७	संनिवेश	८५	१६	समज्ञा	१२३	१४१
सनाद्, टी.	४५०	१७	सपल	२०१	१०	समज्ञ	१४१	४२
सनातन	३०४	७२	सपदि	४४१	२	समज्ञा	४२	११
सनाभि	१५०	३३	सपर्या			समज्ञा	१८५	१५
सनि	१६०	३२	सपथ	१८५	१४	समज्ञस	२०५	२४
सनिष्ठेव	४४	२०	सपथ					
सनी, टी.	१६०	३२						
सनीड	३०२	६६						

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
समधिक	३०५	७५	समालम्भ	३२४	२७	समुन्न	३१३	१०५
समन्तत	४४८	१३	समावृत्त	१८४	१०	समुन्नद्ध	३६८	११०
समन्तदुग्धा	११४	१०६	समासाद्य	३०६	६२	समुपजोषम्	४४६	१०
समन्तभद्र	४	१३	समासार्था	४१	७	समुपयोषम्, टी.	४४६	१०
समन्तात्, टी.	४४८	१३	समाहार	३२१	१६	समुद्वा	१८७	२०
समन्वितलय	४७	३	समाहित	३१४	१०६	समूद्वा	१८७	२०
समपद, टी.	२२३	८५	समाहति	४०	६	समूरु	१३२	६
समम्	४४२	४	समाह्वय	२८२	४६	समूह	१४०	३६
						समृद्ध	२८७	११
समय	{ २५ १		समिति	{ १८५ १५		समृद्धि	३१६	१०
	{ ३८८ १५८			{ २२८ १०६		संपत्ति	२२२	८२
				{ ३५६ ७७		संपद्	२२१	८१
समया	{ ४३७ २६१		समिद्	२२८	१०६	संपराय	३८६	१५६
	{ ४४४ ७		समिधु	६१	१३	संपरायक	२२८	१०४
समर	२२८	१०४	समीक	२२८	१०४	संपाक	६४	२३
समर्थ	३६२	६४	समीग	३०२	६६	संपुटक	१८०	१३६
समर्थन	२०५	२५	समीर	१४	६२	संप्रति	४५४	२३
समर्थक	२८६	७	समीरण	{ १४ ६२		संप्रदाय	३१८	७
समर्याद	३०२	६७		{ १०८ ७६		संप्रधारणा	२०५	२५
समवर्तिन्	१४	५८	समुच्चय	३२१	१६	संप्रहार	२२८	१०५
समवाय	१४०	४०	समुच्छ्रय	३८६	१६१	सम्भ, टी.	११	४७
समष्टिला	१२७	१५७	समुज्झित	३१४	१०७	सम्बल, टी.	४७६	३४
समसन	३२२	२१	समुत्पिञ्ज	२२६	६६	सम्बाकृत, टी.	२३५	६
समस्त	३०२	६५	समुदक्त	३०६	६०	सम्बाध	३०७	८५
समस्या	४१	७	समुदय	१४०	४०	सम्भली, टी.	१४७	१६
समांसमीना	२५६	७२	समुदाय	{ १४० ४०		संभेद	७०	३५
समाकर्षिन्	३७	११		{ २२८ १०६		संभ्रम	{ ५६ ३४	
समाघात	२२८	१०५	समुद्र	४६७	१७		{ ३२३ २६	
समाज	१४१	४२	समुद्रक	१८०	१३६	संभ्रद	३२	२४
			समुद्रत	२६०	२३	संमूर्च्छन	३१८	६
समाधि	{ ३५ ५		समुद्ररणा	३५१	६२	सम्यङ्, टी.	४५	२२
	{ ३६६ १०५		समुद्र	६१	१	सम्यक्	४५	२२
			समुद्रफेन, टी.	२६७	१०५	सम्भ्राज्	१६६	३
समान	{ १५ ६३			{ १११ ६२		संवत्	४४६	१६
	{ २८० ३७		समुद्रान्ता	{ ११७ ११६		संवत्सर	३१	२०
	{ ३७७ १३४			{ १२१ १३३		संवदन, टी.	३१७	४
समानोदर्य	१५१	३४	समुन्दन	३२४	२६			

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
संवदना, टी.	३१७	४	सर्वव्य, टी.	२२३	८६	सर्वदा	४५३	२२
संवनन	३१७	४	सरस्	६६	२८	सर्वधुरावह	२५४	६६
संवर	१३३	१०	सरसा, टी.	११५	१०८	सर्वधुरीण	२५४	६६
संवरी, टी.	११०	८७	सरसी	६६	२८	सर्वमङ्गला	६	३७
संवर्त	३१	२२	सरसीरुह	७२	४०	सर्वरस	१७७	१२७
संवर्ति, टी.	७३	४३	सररवत्	६१	१	सर्वरात्र, टी.	४६४	१२
संवर्तिका	७३	४३		३५२	६४	सर्वला, टी.	२२५	६३
संवसथ	८५	१६	सरस्वती	३६	१	सर्वलिङ्गिन्	२६४	४५
संवहन, टी.	३२२	२२		७०	३४	सर्ववेदस्	१८३	६
संवाहन	३२२	२२	सराव, टी.	२४३	३२	सर्वसंवाहनार्थक	२२५	६४
संवि	३४	१	सरित्	६६	२६	सर्वानुपृति	११५	१०८
संविद	३५	५	सरित्पति	६१	१	सर्वान्नभोजिन्	२६०	२२
	३६४	६६	सरिषप, टी.	२३८	१७	सर्वान्नीन	२६०	२२
संविदित, टी.	३१४	१०६	सरीसृग	५६	७	सर्वाभितार	२२५	६४
संवीक्षण	३२४	३०	सरु, टी.	२२४	६०	सर्वार्थसिद्ध	४	१५
संवीत	३०६	६०	सर्ग	३३६	२७	सर्वौष	२२५	६४
संवेग	५६	३४	सर्ज	१००	४४	सर्षप	२३७	१७
संवेद	३१८	६	सर्जक	१००	४४	सलिल	६२	३
संवेश	५७	३६	सर्जरस	१७७	१२७	सल्लको	११८	१२४
सर, टी.	२७३	८७	सर्जिका, टी.	२६८	१०६	सव	१८५	१३
सरक	२८२	४३	सर्जिकाक्षार, टी.	२६८	१०६	सवन	१६४	४७
सरघा	१३७	२६	सर्प	५६	६	सवयस्	२०१	१२
सरट्, टी.	१३३	१२	सर्पराज	५८	४	सवहा, टी.	११५	१०८
सरट	१३३	१२	सर्पिणी, टी	५६	६	सवितृ	२४	३१
सरणा	१२५	१५२	सर्पिस्	२५०	५२	सविध	३०२	६७
सरणि	७६	१५	सर्पा, टी.	५६	६	सवेश	३०२	६७
सरणी			सर्वसहा	७५	३	सव्य	३०७	८४
सरलि	१६६	८६	सर्व	३०२	६४	सव्येष्ट, टी.	२१६	६०
सरभ, टी.	१३३	११	सर्वज्ञ	४	१३	सव्येष्टृ	२१५	६०
सरमा	२७५	२२		८	३३	ससन, टी.	१८६	२६
सरल	१०३	६०	सर्वतस्	४४८	१३	सस्य	६२	१५
	२८६	८	सर्वतोभद्र	८३	१०	सस्यसम्बर	१००	४४
सरलद्रव	१७८	१२६	सर्वतोभद्रा	६७	३५			
सरला	११५	१०८	सर्वतोद्युल	६२	४			

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
सह, टी.	{ २२७	१०२	साचि	४४३	६	सामन्	{ ४०	३
	{ ४४२	४	सातला	१२३	१४३		{ २०४	२०
सहकार	६७	३३		{ ३२७	३८		{ २०४	२१
सहचा, टी.	१०८	७५	साति	{ ३५५	७४	सामनी, टी.	२०४	२६
सहचरी	१०७	७५		{ ४५६	६	सामाजिक	१८५	१६
सहज	१५१	३४	सातिसार	१५८	५६	सामान्य	{ ३४	३१
सहधर्मिणी	१४३	५	सातीनक, टी.	२३७	१६		{ ३०६	८२
सहन	२६२	३१	सात्त्विक	५१	१६	सामि	४३५	२५८
सहभोजन	२६१	५५	सादन, टी.	८१	५	सामुद्र	२४६	४१
	{ २६	१४	सादिन्	{ २१६	६०	साम्प्रायिक, टी.	२२८	१०४
सहस्र	{ २२७	१०२		{ ३७०	११४		{ ४४६	११
	{ ४२६	२४१	साधन	३७४	१२६	सांप्रतम्	{ ४५४	२३
सहसा	४४४	७	साधारण	{ २८०	३७	साम्बरी, टी.	२७३	११
सहस्य	२६	१५		{ ३०६	८२	सांवत्सर	२०२	१४
सहस्रदंष्ट्र	६६	१८	साधारण्या	३०६	८२	साय	२६	३
सहस्रपत्र	७२	४०	साधारणी	३०६	८२	सायक	३२६	२
सहस्रवीर्या	१२७	१५८	साधित	२६५	४०	सायम्	४५१	१६
सहस्रवेधि	२४५	४०	साधिष्ठ	३१५	११२			
सहस्रवेधिन्	१२३	१४१	साधीयस्	४२७	२४४	सार	{ ६१	१२
सहस्रांशु	२४	३१	साधीयसी, टी.	४२७	२४४		{ ३६८	१८०
सहस्राक्ष	१०	४४		{ १८२	३	सारङ्ग, टी.	{ १३५	१७
सहस्रिन्	२१६	६२	साधु	{ २६६	५२		{ ३३६	२८
				{ ३६७	१०८	सारधि	२१५	५६
सहा	{ १०७	७३	साधुवाहिन्	२११	४४	सारमेय	२७५	२१
	{ ११६	११३	साध्य	३	१०	सारव	७१	३६
सहाचर, टी.	१०८	७५	साध्वस	५३	२१	सारस	{ ७२	४०
सहाय	२१८	७१	साध्वी	१४३	६		{ १३६	२२
सहायता	३२७	४०	साधु	८७	५	सारसन	{ १७२	१०६
सहिष्णु	२६२	३१	सान्त्व	{ ४४	१८		{ २१६	६३
सहृदय, टी.	२८५	३		{ २०४	२१	सारिका	४६१	८
सहोदर, टी.	१५१	३४	सान्दृष्टिक	२०६	२६	सारोष्ट्रिक, टी.	६०	१०
सांयात्रिक	६४	१२	सान्द्र	३०२	६६	सार्ध	१४१	४१
सांयुगीन	२२०	७७	साबाध्य	१८६	२७	सार्धवाह	२५८	७८
सांशयिक	२८५	५	सापत्य, टी.	२०१	१०	सार्ध	३१३	१०५
साकम्	४४२	४	सासपदीन	२०१	१२	सार्धम्	४४२	४
साक्षात्	४३२	२५२	साबर, टी.	६७	३३			
सागर	६१	१	सामधेनी	१८७	२२			

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
सार्वभौम	{ १८	४	सितशिव, टी.	२४६	४२	सीत्य	२३४	८
	{ १६६	२	सितशुक्र	२३७	१५	सीमन्	८५	२०
	{ ८१	३	सितसिव, टी.	२४६	४२	सीमन्त	४६८	१६
साल	{ ६६	५	सिता	२४६	४३	सीमन्तिनी	१४२	२
	{ १००	४४	सिताम्न	१७८	१३०	सीमा	८५	२०
सालपथी	११७	११५	सिताम्भोज	७२	४१	सीर	२३६	१४
साला, टी.	८१	६	सिति, टी.	३६१	६०	सीरपाणि	६	२४
सालूर, टी.	६८	२४	सिद्ध	{ ४	११	सीवन	३१७	५
सालेय, टी.	११४	१०५		{ ३१२	१००	सीसक	२६७	१०५
सास्ना	२५३	६३	सिद्धान्त	३५	४	सीहुण्ड	११४	१०५
साहस	२०४	२१	सिद्धार्थ	२६८	१८	सु	{ ४४१	२
	{ २१६	६२	सिद्धि	११६	११२		{ ४४३	५
साहस	{ ३२८	४३	सिध्म	१५६	५३	सुकन्दक	२२४	१४७
सिंह	१३०	१	सिध्मन्, टी.	१५६	५३	सुकरा	२५६	७०
सिंहतल	१६५	८५	सिध्मल	१५८	६१	सुकल	२८६	८
सिंहनाद	२२८	१०७	सिध्मला	४६२	१०	सुकुमार	३०५	७८
सिंहपुच्छी	१११	६३	सिध्म	२२	२२	सुकृत	३२	२४
सिंहसंहनन	२८७	१२	सिध्मका	४६१	८	सुकृतिन्	२८५	३
सिहाण, टी.	२६५	६८	सिनीवाली	२८	६	सुकण, टी.	४६	२४
सिंहान, टी०	२६५	६८	सिन्दुक	१०५	६८	सुख	{ ३२	२५
सिंहासन	२०७	३१	सिन्दुवार	१०५	६८		{ ५७१	२३
सिंहास्य	११४	१०३	सिन्दूर	{ २६७	१०५	सुखवर्चक	२६८	१०६
	{ ११४	१०३		{ ४७७	३१	सुखसंदुब्धा, टी.	२५६	७१
सिंही	{ ११६	११४	सिन्धु	{ ६१	१	सुखसंदोब्धा	२५६	७१
				{ ३६७	१०८	सुगत	४	१३
सिकता	३५७	८०	सिन्धु, टी.	१०६	६८	सुगहनावृति	१८६	१८
सिकतामय	६३	६	सिन्धुज	२४६	४२	सुगन्धा	११६	११४
सिकतावत्	७८	११	सिन्धुवार	१०६	६८	सुगन्धि	{ ३७	११
सिकतिल, टी.	७८	११	सिन्धुसङ्गम	७०	३५		{ ११८	१२१
सिक्थक	२६८	१०७	सिन्धा	२३६	२३	सुगन्धिक, टी.	२६७	१०२
सिद्धाण, टी.	२६५	६८	सिरा, टी.	१६०	६५	सुचरित्रा	१४३	६
	{ ३७	१३	सिखकी	११६	१२४	सुचेलक	१७४	११६
	{ ३१०	६५	सिक्क	१७८	१२८		{ १४६	२७
सित	{ ३११	६८	सीकर, टी.	१६	११		{ ३५३	६७
	{ ३६०	८७	सीता	२३७	१४			
सितच्छत्रा	१२५	१५२						

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
सुतश्रेणी	११०	८८	सुमेरु	१२	४६	सुविद, टी.	२००	८
सुता, टी.	१४६	२७	सुरङ्गा	४६१	८	सुवता	२५६	७१
सुतात्मजा	१४६	२६	सुर	३	७	सुशवी, टी.	२४४	३७
सुत्या	१६४	४७	सुरज्येष्ठ	५	१६	सुषम	२६६	५२
सुत्रामन्	१०	४२	सुरत, टी.	२८८	१५	सुषमा	२१	१७
सुत्वन्	१८४	१०	सुरदीर्घिका	११	४६	सुषवी	{ १२६ १५५ २४४ ३७	
सुदर्शन	७	२८	सुरद्विष	४	१२	सुषि, टी.	५८	२
सुदाय	२०६	२८	सुरनिम्नगा	७०	३१	सुषिर	{ ४८ ४ ५८ १	
सुदिन	४४५	२६	सुरपति	१०	४३	सुषिरा, टी.	१२०	१२६
सुदूर	३०३	६६	सुरभि	{ ३० १८ ३७ ११ ३८३ १४६		सुषीम	२१	१६
सुधर्मन्	११	४८	सुरभी	११८	१२३	सुषेण	१०५	६७
सुधांशु	२०	१४	सुरभीरसा	११८	१२३	सुषेयिका	११५	१०८
सुधा	{ ११ ४८ ३६८ १०६		सुरभि	११	४८	सुष्टु	{ ४४१ २ ४५१ १६	
सुधी	१८२	५	सुरभूलोक	२	६	सुसंस्कृत	२४८	४५
सुनासीर	१०	४१	सुरवर्त्मन्	१७	१	सुसम, टी.	२६६	५२
सुनिषण्णक	१२५	१४६	सुरसा	११६	११४	सुसवी	२४४	१५५
सुन्दर	२६६	५२	सुरा	२८१	३६	सुहृदय	२८५	३
सुन्दरा, टी.	१४३	४	सुराचार्य	२३	२४	सुहृद्	{ २०१ १२ २०३ १७	
सुन्दरी	१४२	४	सुरामण्ड	२८१	४२	सूकर	१३१	२
सुपथिन्	७६	१६	सुरालय	१२	४६	सूक्ष्म	{ ३०१ ६१ ३८६ १२३	
सुपथ्य	७	२६	सुराज्ज	१२०	१३१	सूचक	२६७	४७
सुपर्वन्	३	७	सुरी	२३८	१६	सूचि	४६१	८
सुपार्वक	६६	४३	सुवचन	४४	१७	सूत	{ २१५ ५६ २६६ ६६ २७० ३ ३५३ ६६	
सुप्ति, टी.	५७	३६	सुवर्ण	{ २६१ ८६ २६४ ६४		सूतकायुह, टी.	८२	८
सुप्रतीक	१८	४	सुवर्णक	६४	२४	सूतिकायुह	८२	८
सुप्रयोगविशाल	२१८	६८	सुवर्णक	६४	२४			
सुप्रलाप	४४	१७	सुवर्ण	११२	६५			
सुभगासुत	१४८	२४	सुवर्ण	{ १०६ ७० ११६ ११५ ११७ ११६ ११८ १२३ १२३ १४०				
सुभिक्षा	११६	१२४	सुवर्ण	११२	६५			
सुम, टी.	६३	१७	सुवर्ण	{ १०६ ७० ११६ ११५ ११७ ११६ ११८ १२३ १२३ १४०				
सुमन	२३८	१८	सुवर्ण	११२	६५			
सुमनस्	{ ३ ७ ६३ १७		सुवर्ण	{ १०६ ७० ११६ ११५ ११७ ११६ ११८ १२३ १२३ १४०				
सुमना	१०७	७२	सुवर्ण	११२	६५			
सुमनोरजस्	६३	१७	सुवर्ण	११२	६५			

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
सूतिमास	१५२	३६	सुजिकाश्वार, टी.	२६८	१०६	सैरन्ध्री	१४६	१८
सूथान	२७५	१६	सुणि	२१०	४१	सैरिक	२५४	६४
सूत्र	२७७	२८	सुणिका	१६०	६७	सैरिन्ध्री, टी.	१४७	१८
सूत्रवेष्टन	३२३	२४	सुर्णाका, टी.	१६०	६७	सैरिभ	१३१	५
सूत्रामन्, टी.	१०	४२	सुति	७२	१५	सैरीयक	१०७	७५
सुद	{ २४१	२८	सुपाट, टी.	४८१	३८	सैरेयक, टी.	१०८	७५
	{ ३६४	६८	सुपाटी	४८१	३८	सोढ	३११	६७
सून, टी.	६३	१७	सुपर	१३३	११	सोत्प्राप्त	४५	२१
सूना	३७२	१२०	सुष्ट, टी.	१४६	४६	सोदर, टी.	१५१	३४
सूनु	१४६	२७	सुष्टि	१४५	४६	सोदर्प	१५१	३४
सूनुत	४४	१६	सेकपात्र	६५	१३	सोन्माद, टी.	२६०	२३
सून्द, टी.	२६०	२३	सेचन	६५	१३	सोपसव	२८	१०
सून्माद टी.	२६०	२३	सेतु	{ ७८	१४	सोपान	८५	१८
सूफकार	२४१	२७		{ ६५	२५	सोभाञ्जन, टी.	६६	३१
सूर	२४	२८	सेना	२२०	७८	सोम	२०	१४
सूरण	१२७	१५७	सेगाङ्ग	२०८	३३	सोमप	१८३	६
सूरत	२८८	१५	सेनानी	{ ६	३६	सोमपा	१८३	६
सूरसूत	२४	३२		{ २१६	६२	सोम गीतिन्	१८३	६
सूरि	१८२	६	सेनामुख	२२१	८१	सोमराजी	११२	६५
सूरी, टी.	१८२	६	सेनारक्ष	२१६	६१	सोमलता, टी.	१२२	१३७
सूर्प, टी.	२४०	२६	सेमुषी, टी.	३४	१	सोमवलक	{ १०१	५०
सूर्मी	२७६	३५	सेलु, टी.	६७	३४		{ ३३१	६
सूर्य	२४	२८	सेवक	२०१	६	सोमवल्लरि, टी.	१२२	१३७
सूर्यकान्त, टी.	४६७	१६	सेवन	३१७	५	सोमवल्लरी	१२२	१३७
सूर्यतनया	७०	३२	सेवा	२३२	२	सोमवल्लिका	११२	६५
सूर्यसूत	२४	३२	सेव्य	१२६	१६४	सोमवल्ली	१०६	८३
सूर्येन्दुसंगम	२७	८	सैहिकेय	२३	२६	सोमाद्भवा	७०	३२
सुक, टी.	१६७	६१	सैकत	६३	६	सोल्लुण्ठन	४५	२१
सुकुणि, टी.	१६७	६१	सैतवाहिनी	७०	३३	सौख्य, टी.	३२	२५
सुकणी	१६७	६१	सैनिक	२१६	६१	सौगन्धिक	{ ७१	३६
सुकणी, टी.	१६७	६१	सैन्धव	{ २११	४४		{ १२६	१६६
सुकुणि, टी.	१६७	६१		{ २४६	४२	सौचिक	२७१	६
सुक, टी.	१६७	६१	सैन्य	{ २१६	६१	सौदामनी		
सुग	२२४	६१		{ २२०	७८	सौदामिनी	{ १६	६
सुगाण	१३१	५				सौदाम्नी		

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
सौध	८२	१०	स्तनयिलु	१८	६	स्थपति	{ १८३	६
सौभागिनेय	१४८	२४	स्तनित	१६	८		{ ३५३	६८
सौभाजन, टी.	६६	३१	स्तभ	२५७	७६	स्थल	७६	५
सौम्य	{ २३	२६	स्तब्धरोमा	१३१	२	स्थला, टी.	७६	५
	{ ३६३	१७०	स्तम्ब	{ ६०	६	स्थली	७६	५
सौर, टी.	२३	२६		{ ३३६	२१	स्थविर	१५३	४२
सौरभेय	२५२	६०	स्तम्बकरि	३३६	२१	स्थविष्ठ	३१५	१११
सौरभेयी, टी.	{ २५२	६०	स्तम्बघन	३२६	३५		{ ८	३४
	{ २५४	६६	स्तम्बघ्न	३२६	३५	स्थाणु	{ ६०	८
सौराष्ट्रिक, टी.	{ ६०	१०	स्तम्बहनन, टी.	३२६	३५		{ ३४६	५६
	{ ४६४	१२	स्तम्बेरम	२०८	६५	स्थाण्डिल	१६४	४४
सौरि	२३	२६	स्तम्भ	३८२	१४४	स्थान	{ २०३	१६
सौवर्चल	{ २४६	४३	स्तव	४२	११		{ ३७४	१२४
	{ २६८	१०६	स्तवक	६२	१६	स्थानीय	८०	१
सौविद	२००	८	स्तिमित	३१३	१०५	स्थाने	४४६	११
सौविदल्ल	२००	८	स्तुत	३१४	११०	स्थापत्य	२००	८
सौवीर	{ ६८	३७	स्तुति	४२	११	स्थापनी	११०	८४
	{ २४५	३६	स्तुतिपाठक	२२६	६७	स्थामन्	२२७	१०२
	{ २६६	१००	स्तूप	४६८	१६	स्थापुक	२००	७
सौशमिकन्ध, टी.	४७५	२८	स्तेन	२७६	२४	स्थाल	४७८	३२
सौहित्य	२५१	५६	स्तेम	३२४	२६	स्थाली	२४२	३१
स्कन्द	६	३६	स्तेय	२७६	२५	स्थावर	३०४	७३
	{ ६०	१०	स्तैन्य	२७६	२५	स्थाविर	२५३	४०
स्कन्ध	{ १६३	७८	स्तोक	३०१	६१	स्थासक	१७६	१२२
	{ ३६७	१०७	स्तोकक	१३४	१७	स्थास्तु	३०४	७३
स्कन्धदेश	२०६	३६	स्तोत्र	४२	११	स्थिति	{ २०५	२६
स्कन्धशास्त्रा	६१	११	स्तोत्र	४२	११		{ ३२२	२१
स्कन्धस्	६०	१०	स्तोम	{ १४०	३६	स्थिरतर	३०४	७३
स्कन्न	३१३	१०४		{ ३८४	१५०	स्थिरा	{ ७५	२
स्वलन	५७	३६	स्त्री	१४२	२		{ ११७	११५
स्वलित	२२६	१०८	स्त्रीधर्मिणी	१४६	२०	स्थिरायु	१००	४६
स्तन	{ १६३	७७	स्त्रीपुंस	१४०	३८	स्थुरी, टी.	२११	४६
	{ ४६३	१२	स्थण्डिल	१८६	१८	स्थूणा	{ २७६	३५
स्तनन्धया, टी.	१५३	४१	स्थण्डिल	१८६	१८		{ ३५०	५८
स्तनन्धयी	१५३	४१	स्थण्डिलशायिन्	१६४	४४	स्थूल	{ २०१	६१
स्तनपा	१५३	४१					{ ४१२	२१३

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
स्थूललक्ष्म, टी.	२८५	६	स्फटा	५६	६	स्यूत	२४१	२६
स्थूललक्ष्य	२८५	६	स्फरण, टी.	३१६	१०		३१२	१०१
स्थूलशाटक	१७४	११६	स्फाति	३१८	६	स्यूति	३१७	५
स्थूलशाटका	१७४	११६	स्फारण, टी.	३१६	१०	स्योन, टी.	२४१	२६
स्थूलोच्चय	३८८	१५७	स्फिच्	१६२	७५	स्योनाक	१०२	५७
स्थेयस्	३०४	७३	स्फिर	३०२	६३	संसिन्	६६	२८
स्थौण्य	१२१	१३२				सज्	१७६	१३५
स्थौरिन्	२११	४६	स्फुट	६०	७	सव	३१८	६
स्नव	३१८	६		३०६	८१	सवद्रुर्भा	२५५	६६
स्नातक	१६३	४३	स्फुटन	३१७	५	सवन्ती	६६	३०
स्नान	१७६	१२२	स्फुर्नेथु, टी.	१६	१०	सवा	११०	८३
स्नायु	१६०	६६	स्फुरण	३१६	१०	सष्ट	५	१७
स्नाव, टी.	३१६	६	स्फुरणा	३१६	१०	सस्त	३१३	१०३
	२०१	१२	स्फुलन, टी.	३१६	१०	साक्	४४१	२
स्निग्ध	२४८	४६	स्फुलिङ्ग	१३	५७	साव, टी.	३१६	६
	२८७	१४	स्फूर्जक	६८	३८	सुच्	१८८	२५
स्तु	८७	५	स्फूर्जथु	१६	१०	सुत	३०६	६२
स्तुत	३०६	६२	स्फेष्ठ	३१५	११२	सुव	१८८	२५
स्तुषा	१४४	६	स्फोटन, टी.	३१७	५	सुवा, टी.	११०	८३
स्तुह	११४	१०५	स्फोरण, टी.	३१६	१०	सुवायुष	६८	३७
स्तुही	११४	१०५				सू, टी.	१८८	२५
स्नेह	५४	२७	स्म	४४३	५	सोतस्	६४	११
				४५०	१७		४२६	२४२
स्पर्श	३६	७	स्मर	६	२५	सोतस्वती	६६	३०
	३२०	१४	स्मरहर	८	३३	सोतस्विनी, टी.	६६	३०
स्पर्शन	१४	६१	स्मित	५६	३४	सोतोन्न	२६६	१००
	१८६	२६				सोतोवहा, टी.	६६	३०
स्पश	२०२	१३	स्मृति	४०	६	स्व	१५१	३४
	४१६	२२३		५५	२६		४१५	२२०
स्पष्ट	३०६	८१	स्यद	१५	६४	स्वच्छन्द	२८८	१५
स्पष्टं	३२०	१४	स्यन्दन	६५	२६	स्वजन	१५१	३४
स्पष्टु	३२०	१४		२१३	५१	स्वतन्त्र	२८८	१५
स्पृका	१२१	१३३	स्यन्दनारोह	२१६	६०	स्वधा	४४४	८
स्पृशी	११२	६३	स्यन्दिनी	१६०	६७	स्वधिति	२२४	६२
स्पृष्टि	४१८	६	स्यन्न	३०६	६२	स्वन	४५	२३
स्पृष्टा	५४	२७	स्याल, टी.	१५०	३२	स्वनिता	३१०	६४

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
स्वप्न	५७	३६	स्वादु	३६५	१०१	हठ	२२६	१०८
स्वप्नञ्	२६३	३३	स्वादुकण्टक	{ ६८ ३७		हण्डे	५१	१५
स्वभाजन, टी.	३१८	७		{ ११३ ६८		हत	२६५	४१
स्वभाव	५७	३८	स्वादुरसा	१२३	१४४	हनु	{ १२० १३०	
स्वभू	५	१८	स्वाद्री	११५	१०७		{ १६७ ६०	
स्वभ्र	५८	२	स्वाध्याय	१६४	४७	हनू, टी.	१६७	६०
स्वयम्	४४६	१६	स्वान	४५	२३	हन्त	४३२	२५३
स्वयम्भू	५	१६	स्वान्त	३४	३१	हण	३१०	६६
स्वयंवरा	१४३	७	स्वाप	५७	३६	हय	२११	४४
स्वर	{ २ ६		स्वापतेय	२६३	६०	हयन, टी.	२१३	५२
	{ ४३८ २६३		स्वामिन्	{ २०३ १७		हयपुच्छी	१२२	१३८
स्वर	४०	४		{ २८६ १०		हयमारक	१०८	७६
स्वर	{ ११ ४७		स्वार, टी.	३२०	१४	हयी	२११	४४
	{ ३६६ १७६		स्वाराञ् (ट्)	१०	४३	हर	८	३३
स्वरूप	{ ५७ ३७			{ १८७ २१		हरण	२०६	२८
	{ ३७६ १३८		स्वाहा	{ ४४४ ८		हरि	{ १३० १	
स्वरूपा	३७६	१३८	स्वित्	४३१	२५१		{ ३६६ १८४	
स्वर्ग	{ २ ६		स्वेद	५६	३३	हरिचन्दन	{ १२ ५०	
	{ ४६२ ११		स्वेदज	२६८	५१		{ १७८ १३१	
स्वर्जिकाक्षर	२६८	१०६	स्वेदनी	२४२	३०	हरिण	{ ३७ १३	
स्वर्ण	२६४	६४	स्वैर, टी.	४०६	२०१		{ १३२ ८	
स्वर्णकार	२७२	८	स्वैरिता	३१६	२		{ ३५० ५८	
स्वर्णक्षीरी	१२२	१३८	स्वैरिणी	१४४	११	हरिणी	३४६	५७
स्वर्णदी	११	४६	स्वैरिन्	२८८	१५		{ १७ १	
स्वर्णदी, टी.	११	४६	(ह)				{ ३८ १४	
स्वर्भाटु	२३	२६	हंस	{ २४ ३१		हरित्	{ ४६८ १६	
स्वर्भैद्य	१२	५१		{ १३६ २३		हरित	३८	१४
स्वर्भैश्या	१२	५२	हंसक	१७२	११०	हरितक	२४३	३४
स्ववासिनी, टी.	१४४	६	हंसी, टी.	१३६	२३	हरिताल	{ २६७ १०३	
स्वसृ	६४६	२६	ह	४४३	५		{ ४७८ ३२	
स्वस्ति	४३१	२५०	हजिका	१११	८६	हरितालक	२६७	१०३
स्वस्तिक	८३	१०	हजे	५१	१५	हरिदशव	२४	२६
स्वस्त्रीय	१५०	३२	हट्ट	४६८	१८	हरिम्रा	२४६	४१
स्वस्त्रीया, टी.	१५०	३२	हट्टविकासिनी	१२०	१३०	हरिम्राभ	३८	१४
स्वस्त्रेय, टी.	१५०	३२				हरिद्रु	११३	१०१
स्वाति	४८१	३८						

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
हरिन्माषि	२६४	६२	हस्तवारण	३१७	५	हिङ्गुल	४६६	२०
हरिप्रिया	७	२७	हस्तिन्	२०८	३४	हिङ्गुली	११६	११४
हरिमन्थक	२३८	१८	हस्तिनख	८४	१७	हिङ्गुल	१३०	६१
हरिवालुक	११८	१२१	हस्तिनी, टी.	२०८	३४	हिण्डर, टी.	२६७	१०५
हरिवालुक, टी.	११८	१२१	हस्तिपक	२१५	५६	हियडीर	२६७	१०५
हरिहय	१०	४३	हस्त्यारोह	२१५	५६	हिन्ताल	१३०	१६६
हरीतकी	१०३	१८	हहा, टी.	१२	५२		२१	१८
हरेणु	{ ११८ १२०		हा	४३६	२६५	हिम	{ २१ १६	
	२३७	१६	हाटक	२६४	६४		४७०	२२
हर्ष	८२	६	हायन	{ ३१ २०		हिमपुष्पक	१०४	६३
हर्षक्ष	१३०	१		३७०	११५	हिमवत्	८६	३
हर्ष	३२	२४	हार	१७१	१०५	हिमवालुका	१७८	१३०
हर्षमाण	२८६	७	हारीत	१३६	३४	हिमसंहति	२१	१८
हल	२६६	१३	हार्द	५४	२७	हिमांशु	२०	१३
हला	५१	१५	हाल, टी.	२३७	१३	हिमानी	२१	१८
हलायुध	६	२३	हालहल, टी.	६०	१०	हिमावती	१२२	१३८
हलाहल	६०	१०	हाला	२८१	३६		२६३	६०
हलिन्	६	२४	हालाहल, टी.	६०	१०	हिरण्य	{ २६३ ६१	
हलिप्रिय	६६	४२	हालिक	२५४	६४		२६४	६४
हलिप्रिया	२८१	३६	हाव	५५	३२	हिरण्यगर्भ	५	१६
हलय	२३४	८	हास	५२	१६	हिरण्यरेतस्	१३	५५
हल्या	३२७	४१	हास्तिक	२०८	३६	हिरण्यबाह, टी.	७०	३४
हल्लक	७१	३६	हास्य	५२	१७	हिरण्यबाहु	७०	३४
हव	४१३	२१६	हाहा	१२	५२	हिरक	{ ४४१ ३	
हविस्	{ १८६ २७		हाहाहह, टी.	१२	५२		४४४	७
	२५०	५२	हिंसा	४२४	२३८	हिलमोचिका	१२७	१५७
हव्य	१८८	२४	हिंसाकर्मन्	३२१	१६	ही	४४५	६
हव्यवाहन	१३	५५	हिंस	२५१	२८	हीन	{ ३१४ १०७	
हस	५२	१८	हि	{ ४४० २६६			३१८	१३५
हसनी	२४२	३०	हिका	४६१	८	हीरक, टी.	४०३	१६३
हसन्ती	२४२	२६	हिक्	२४५	४०	हुतमुक्मिया	१८७	२१
	{ १६६ ८६		हिक्	२४५	४०	हुतमुञ्ज	१३	५५
हस्त	{ १६६ ६८		हिक्	२४५	४०		{ ४३७ २६१	
	३५२	६६	हिक्	२४५	४०		४५१	१८
हस्तधारण, टी.	३१७	५	हिक्	२४५	४०			

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
हृत्, टी.	१२	५२	हेतु	३३	२८	ह्यस्	४५३	२२
हृति	{ ४१ ३१८	८	हेमकूट	८६	३	हृद्	६८	२५
हृद्	१२	५२	हेमदुग्धक	६४	२२	हृदिनी	६६	३०
हृणिया, टी.	३२५	३२	हेमन्	{ २६४ ४७१	६४ २३	हृसिष्ठ	३१५	११२
हृणीया	३२५	३२	हेमन्त	३०	१८	हृस्व	{ १५४ ३०३	४६ ७०
हृद्	{ ३४ १५६	३१ ६४	हेमपुष्पक, टी.	१०४	६३	हृस्वगवेयुका	११७	११७
हृदय	{ ३४ १५६	३१ ६४	हेमपुष्पिका	१०६	७१	हृस्वाक्ष	१२३	१४२
हृदयंगम	४४	१८	हेमाद्रि	१२	४६	हृदिनी, टी.	{ ११ १६ ३७२	४७ ६ ११६
हृदयवत्, टी.	२८५	३	हेरम्ब	६	३८	हृषेर, टी.	११८	१२२
हृदयालु	२८५	३	हेला	५५	३२	ह्री	{ ५३ ४५६	२३ ३
हृदयिक, टी.	२८५	३	हेषा	२१२	४७	ह्रीण	३०६	६१
हृदयिन्, टी.	२८५	३	हृ	४४४	७	ह्रीत	३०६	६१
हृद्य	२६६	५३	हृमवती	{ ६ १०३ ११४ १२२	३६ ५६ १०३ १३८	ह्रीरेर	११८	१२२
हृषीक	३६	८	हृयङ्गवीन	२५०	५२	हृषा	२१२	४७
हृषीकेश	५	१८	होतृ	१८६	१७	ह्लादिनी	११८	१२४
हृष्ट	३१३	१०३	होम	१८५	१४	ह्लेषा, टी.	२१२	४७
हृष्टमानस	२८६	७	होरा	४६२	१०			
हृ	४४४	७						
हृति	{ १३ ३५६	५७ ७८						

ॐ परमात्मने नमः ॥

श्रीमदमरसिंहविरचितः अमरकोषः ।

रसालाख्यया व्याख्यया समेतः ॥

प्रथमं काण्डम् ।

विघ्नव्यूहविनाशनैकनिपुणो विद्यानिधिः कामदो,
विद्वद्वृन्दकवीन्द्रवन्दितपदः कल्याणकल्पद्रुमः ।
यो गीतो वरगौरवेण गणितो गुरयो गणेशो गुरुः,
सोयं नो विदधातु वाञ्छितफलं श्रीविघ्नराजो विभुः ॥ १ ॥
नत्वा कृष्णं कजाक्षं कलिमलहरणं कामिनीकेलिलोलं,
कालिन्दीतीरवासं कलितरवयुतं कल्पयन्तं सुखेलम् ।
केकीकण्ठाभनीलं करधृतकमलं कामदं कामयानं,
कुर्वे व्याख्यां रसालां बुधवरमतिदामामरीं भाषयाहम् ॥ २ ॥

यस्य ज्ञानदयासिन्धोरगाधस्यानघा गुणाः ।

सेव्यतामक्षयो धीराः स श्रिये चामृताय च ॥ १ ॥

हे धीरजोगो ! जिस ज्ञान व दयाके सागर अपार महिमावाले परमात्मा के निष्पाप वा हृदय में टिकनेहारे गुण विद्यमान हैं उस अविनाशी को धर्म, अर्थ, काम और मोक्षके लिये आपलोग सेवन करें ॥ १ ॥

अथ परिभाषा ॥

समाहृत्यान्यतन्त्राणि संक्षिप्तैः प्रतिसंस्कृतैः ।

संपूर्णमुच्यते वर्गेर्नामलिङ्गानुशासनम् ॥ १ ॥

अन्य सिद्धान्तों को संग्रहकर संक्षिप्त, असारांशरहित, वर्गों से नामों व लिङ्गों का अनुशासन (व्युत्पादकशास्त्र) संपूर्णता से कहा जाता है ॥ २ ॥

प्रायशो रूपभेदेन साहचर्याच्च कुत्रचित् ।

स्त्रीपुंनपुंसकं ज्ञेयं तद्विशेषविधेः कचित् ॥ ३ ॥

प्रायः रूपभेद से यानी क्यन्त, टाबन्त, विसर्गान्त व बिन्दुरूप से स्त्री, पुं, नपुंसकलिङ्ग जानना चाहिये जैसे कि 'लक्ष्मीः, पद्मालया, पद्मा, पिनाकः, अजगबम्, धनुः' ये होते हैं फिर कहीं साहचर्य से स्त्री, पुं, और नपुंसकलिङ्ग जानना चाहिये जैसे कि 'अश्वयुग्मानुवियन्ति' इन शब्दों को 'अश्विनी, भानुः विष्णुपदम्' के साहचर्य से स्त्री, पुं, नपुंसकलिङ्ग होते हैं और कहीं उन स्त्री, पुं, नपुंसकों के विशेषविधान से स्त्री, पुं, नपुंसक जानना चाहिये जैसे कि, 'भेरी स्त्री दुन्दुभिः पुमान्' 'रोचिः शोचिरुभे क्लीबे' आदि होते हैं ॥ ३ ॥

भेदाख्यानाय न द्वन्द्वो नैकशेषो न संकरः ।

कृतोऽत्र भिन्नलिङ्गानामनुक्रानां क्रमादृते ॥ ४ ॥

इस कोष में अनुक्त भिन्नलिङ्गों का द्वन्द्व समास नहीं किया गया जैसे कि, "देवतादैवतामराः" यहां द्वन्द्वसमास नहीं होता है तथा एकशेष भी नहीं किया जैसे कि "नमः खं आवाणो नभाः" नहीं तो "खआवाणौ तु नभसी" ऐसा हो जाता और क्रम के बिना भिन्नलिङ्गों का मेल भी नहीं किया जैसे कि "स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः" नहीं तो "स्तुतिः स्तोत्रं स्तवो नुतिः" ऐसा होजाता और जहां क्रममात्र विवक्षित है वहां अनुक्त भिन्नलिङ्गों के द्वन्द्व आदि भी किये हैं ॥ ४ ॥

त्रिलिङ्ग्यां (त्रिष्विति पदं) मिथुने (तु) द्वयोरिति ।

निषिद्धलिङ्गं शेषार्थं (त्वन्तःथादि) न पूर्वभाक् ॥ ५ ॥

'त्रिषु' यह पद तीनों लिङ्गों में जानना चाहिये जैसे कि "त्रिषु स्फुलिङ्गोष्णिक्काः" यहां स्फुलिङ्ग शब्द तीनों लिङ्गों में होता है और 'द्वयोः' यह पद स्त्रीलिङ्ग व पुलिङ्ग में जानना चाहिये जैसे कि "द्वयोज्ज्वलकीलौ" यहां ज्वाल व कील शब्द स्त्रीलिङ्ग व पुलिङ्ग में होते हैं और निषिद्धलिङ्ग शेषके लिये जानना चाहिये जैसे कि 'वज्रमखी स्यादिति' यहां वज्र शब्द स्त्रीलिङ्ग में निषिद्ध हुआ पुलिङ्ग व नपुंसक लिङ्ग में होता है और जिसके अन्त में 'तु' हो और आदि में 'अथ' हो वह पूर्वान्वयी नहीं होता है जैसे कि, 'नगरी त्वमरावती' यहां नगरी त्वन्तपद इन्द्राणी के साथ सम्बन्ध नहीं रखता वरन अमरावती के साथ सम्बन्ध करता है तथा 'जवोऽथ शीघ्रं त्वरितम्' यहां अथादि शीघ्रपद 'जव' के साथ सम्बन्ध नहीं रखता है ॥ ५ ॥

अथ स्वर्गवर्गो व्याख्यायते ।

स्वर्गं ^{अ.}स्वर्गव्ययं ^{पु.}स्वर्गनाक ^{पु.}त्रिदिव ^{पु.}त्रिदशालयाः ।

^{पु.}सुरलोको ^{स.}द्योदिवौ ^{स.}(द्वे स्त्रियां) ^{न.}'क्लीबे' ^{न.}त्रिविष्टपम् ॥ ६ ॥

स्वः, स्वर्ग, नाक, त्रिदिव, त्रिदशालय, सुरलोक, धो, दिव् और त्रिविष्टप ये ६ स्वर्ग के नाम हैं इनमें स्वर यह अव्यय है, धो और दिव् ये दोनों स्त्रीलिङ्ग हैं पहला ओकारान्त और दूसरा वकारान्त है और त्रिविष्टप या “ त्रिपिष्टप ” यह नपुंसक में जानना चाहिये ॥ ६ ॥

देवता ^{पु.} अमरा ^{पु.} निर्जरा ^{पु.} देवास्त्रिदशा ^{पु.} विबुधाः ^{पु.} सुराः ।

^{पु.} सुपर्वाणः ^{पु.} सुमनसस्त्रिदिवेशा ^{पु.} दिवौकसः ॥ ७ ॥

^{पु.} आदितेया ^{पु.} दिविषदो ^{पु.} लेखा ^{पु.} अदितिनन्दनाः ।

^{पु.} आदित्या ^{पु.} ऋभवोऽस्वप्ना ^{पु.} अमर्त्या ^{पु.} अमृतान्धसः ॥ ८ ॥

^{पु.} बर्हिर्मुखाः ^{पु.} क्रतुभुजो ^{पु.} गीर्वाणा ^{पु.} दानवारयः ।

^{पु.} वृन्दारका ^{पु.न.} दैवतानि ^{स.} (पुंसि वा) देवताः (स्त्रियाम्) ॥ ९ ॥

अमर, निर्जर, देव, त्रिदश, विबुध, सुर, सुपर्वन, सुमनस्, त्रिदिवेश, दिवौकस्, आदितेय, दिविषद्, लेख, अदितिनन्दन, आदित्य, ऋभु, अस्वप्न, अमर्त्य, अमृतान्धस्, बर्हिर्मुख, क्रतुभुक्, गीर्वाण, दानवारि, वृन्दारक, दैवत और देवता ये २६ देवताओं के नाम हैं इनमें दैवतशब्द विकल्पसे पुलिङ्ग में होता है और देवता शब्द स्त्रीलिङ्ग में रहता है ॥ ७ । ८ ॥

गणदेवता ^{पु.} आदित्यविश्ववसवस्तुषिताभास्वरानिलाः ।

^{पु.} महाराजिकसाध्याश्च ^{पु.} रुद्रा ^{पु.} (श्च गणदेवताः) ॥ १० ॥

आदित्य १२ विश्वेदेव १० तुषित ३६ आभास्वर ६४ अनिल ४६ महाराजिक २२० साध्या १२ और रुद्र ११ कहाते हैं ये गणदेवताओं के नाम हैं ॥ १० ॥

१ आदित्या द्वादश प्रोक्ता विश्वेदेवा दश स्मृताः । वसवश्चाष्ट संख्याताः षट्त्रिंशत्तुषिता मताः ॥ आभा-
स्वराश्चतुष्पृषिताः पञ्चाशदूनकाः । महाराजिकनामानो द्वे शते विंशतिस्तथा । साध्या द्वादश विख्याता
वद्राश्चैकादश स्मृताः ॥

पु. स. पु. न. पु. पु.
देवजाति विद्याधरोऽप्सरोयक्षैरक्षोगन्धर्वकिन्नराः ।

पु. पु. पु. पु.
पिशाचो गुह्यैकः सिद्धो^१ भूतो(ऽमी देवयोनयः)॥ ११॥

विद्याधर, अप्सरस्, यक्ष, रक्षस्, गन्धर्व, किन्नर, पिशाच, गुह्यक, सिद्ध और भूत ये देवयोनियाँ हैं याने देवांशक कहाते हैं ॥ ११ ॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु.
असुर असुरा दैत्यदैतेयदनुजेन्द्रारिदानवाः^२ ।

पु. पु. पु. पु.
शुकशिष्या दितिसुताः पूर्वदेवाः सुरद्विषः ॥ १२ ॥

असुर दैत्य, दैतेय, दनुज, इन्द्रारि, दानव, शुकशिष्य, दितिसुत, पूर्वदेव और सुरद्विष ये १० असुरों के नाम हैं ॥ १२ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
जिन या बुध सर्वज्ञः सुगतो बुद्धो धर्मराजस्तथागतः ।

पु. पु. पु. पु. पु.
समन्तभद्रो भगवान्मारजिल्लोकजिजिनैः ॥ १३ ॥

पु. पु. पु. पु.
षडभिज्ञो दशबलोऽद्वयवादी विनायकः ।

पु. पु. पु. पु. पु.
मुनीन्द्रः श्रीघनः शास्ता मुनिः(शाक्यमुनिस्तु)यः॥ १४॥

सर्वज्ञ, सुगत, बुद्ध, धर्मराज, तथागत, समन्तभद्र, भगवान्, मारजित्, लोकजित्, जिन, षडभिज्ञ, दशबल, अद्वयवादी, विनायक, मुनीन्द्र, श्रीघन, शास्ता, (तृ) और मुनि ये १८ जिन या बुद्ध के नाम हैं ॥ १३ । १४ ॥

पु. पु. पु.
बौद्धमती. (स) शाक्यसिंहः सर्वार्थसिद्धः शौद्धोदनिश्च (सः) ।

पु. पु. पु.
गौतमश्चार्कबन्धुश्च मायादेवीसुतश्च (सः) ॥ १५ ॥

१ इः कामस्तस्येवाक्षिणी अस्येति, इरक्षिषु यस्येति वा ॥

२ 'निधिं रक्षन्ति ये यक्षास्ते स्युर्युध्यकसंज्ञकाः' गुह्यं कुत्सितं कायतीति; गुह्यं गोपनीयं कं गुह्यं यस्येति वा ॥

३ असेधीदितैः सिद्धः विष्णु हिंसासंराद्धशोरित्यस्मात्कर्तरि क्तः ॥

४ पूर्वं देवा अन्यायाद्धि देवत्वादभ्रष्टाः ॥

५ कचित्पुस्तके इत उत्तरं "सर्वज्ञो वीतरागोर्हन् केवली तीर्थकृञ्जिनः" जिनदेवतानामानि षट् इत्यधिकम् ।

६ दिव्यं चक्षुः, श्रोत्रम्, परचित्तज्ञानम्, पूर्वनिधासावुत्पत्तिः, आत्मज्ञानम्, वियद्वमनम्, कायबुद्धिः-
द्विरचेति षट् अभितो ज्ञायमानानि यस्येति ॥

७ दानं शीघ्रं क्षमा वीर्यं ध्यानप्रज्ञाबलानि च । उपायः प्रथिधिज्ञानं दरा बुद्धनज्ञानि वै ॥

शाक्यमुनि, शाक्यसिंह, सर्वार्थसिद्ध, शौद्धोदनि, गौतम, अर्कबन्धु और माया-
देवीसुत ये ७ शाक्यमुनिभेद के नाम हैं ॥ १५ ॥

ब्रह्मा^{पु.} ब्रह्मा^{पु.} आत्मभूः^{पु.} सुरज्येष्ठः^{पु.} परमेष्ठी^{पु.} पितामहः ।

हिरण्यगर्भो^{पु.} लोकेशः^{पु.} स्वयम्भूश्चतुराननः^{पु.} ॥ १६ ॥

धाताब्जयोनिर्द्रुहिणो^{पु.} विरिञ्चिः^{पु.} कमलासनः ।

स्रष्टा^{पु.} प्रजापतिर्वेधा^{पु.} विधाता^{पु.} विश्वसृष्टिधिः^{पु.} ॥ १७ ॥

ब्रह्मा (ब्रह्मन्) आत्मभू, सुरज्येष्ठ, परमेष्ठी (ष्ठिन्) पितामह, हिरण्यगर्भ,
लोकेश, स्वयंभू, चतुरानन, धाता (तृ) अज्जयोनि, द्रुहिण, विरिञ्चि, विरञ्चि,
विरिञ्च, कमलासन, स्रष्टा, (ष्टृ) प्रजापति, वेधाः, (धस्) विधाता, (तृ) विश्व-
सृष्ट, (ज्) और विधि ये २० ब्रह्मा के नाम हैं ॥ १६ । १७ ॥

विष्णु^{पु.} विष्णुर्नारायणः^{पु.} कृष्णो^{पु.} वैकुण्ठो^{पु.} विष्टरश्रवाः ।

दामोदरो^{पु.} हृषीकेशः^{पु.} केशवो^{पु.} माधवः^{पु.} स्वभूः^{पु.} ॥ १८ ॥

दैत्यारिः^{पु.} पुण्डरीकाक्षो^{पु.} गोविन्दो^{पु.} गरुडध्वजः ।

पीताम्बरोऽच्युतः^{पु.} शार्ङ्गी^{पु.} विष्वक्सेनो^{पु.} जनार्दनः^{पु.} ॥ १९ ॥

उपेन्द्र^{पु.} इन्द्रावरजश्चक्रपाणिश्चतुर्भुजः ।

पद्मनाभो^{पु.} मधुरिपुर्वासुदेवस्त्रिविक्रमः^{पु.} ॥ २० ॥

देवकीनन्दनः^{पु.} शौरिः^{पु.} श्रीपतिः^{पु.} पुरुषोत्तमः ।

वनमाली^{पु.} बलिध्वंसी^{पु.} कंसारातिरधोक्षजः^{पु.} ॥ २१ ॥

१ कृषिकृष्टवक्त्रो नश्च निर्वृतिवाचकः । तयोरैक्यं परं ब्रह्म कृष्ण इत्यभिधीयत इति त्वौपनिषदाः ॥

२ यदोज्येष्ठः पुत्रो मधुस्तद्वश्याः सर्वेपि माधवाः ॥

पु. पु. पु. पु.
विश्वम्भरः कैटभजिद्विधुः श्रीवत्सलाञ्छनः ।

विष्णु, नारायण (नरायण) कृष्ण, वैकुण्ठ, विष्टरश्रवस्, दामोदर, हृषीकेश, केशव, माधव, स्वभू, दैत्यारि, पुण्डरीकाक्ष, गोविन्द, गरुडध्वज, पीताम्बर, अच्युत, शाङ्गी (इन्) विश्वक्सेन, जनार्दन, उपेन्द्र, इन्द्रावरज, चक्रपाणि, चतुर्भुज, पद्मनाभ, मधुरिपु, वासुदेव, त्रिविक्रम, देवकीनन्दन, शौरि, श्रीपति, पुरुषोत्तम, वनमाली (लिन्) बलिध्वंसी (सिन्) कंसाराति, अभोक्षज, विश्वम्भर, कैटभजित्, विधु और श्रीवत्स-
लाञ्छन ये ३६ विष्णु के नाम हैं ॥ १८ । २१ । ३ ॥

पु. पु.
वसुदेव वसुदेवोऽस्य जनकः स एवानकदुन्दुभिः ॥ २२ ॥

इन श्रीकृष्णजी के पिता वसुदेव और वही ' आनकदुन्दुभि ' कहाते हैं ये २ वसुदेव के नाम हैं ॥ २२ ॥

पु. पु. पु. पु.
बलदेव या बलभद्रः प्रलम्बघ्नो बलदेवोऽच्युताग्रजः ।

बलदाऊ पु. पु. पु. पु.
रेवतीरमणो रामः कामपालो हलायुधः ॥ २३ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
नीलाम्बरो रौहिण्येस्तालाङ्को मुशली हली ।

पु. पु. पु. पु.
संकर्षणः सीरपाणिः कालिन्दीभेदनो बलः ॥ २४ ॥

बलभद्र, प्रलम्बघ्न, बलदेव, अच्युताग्रज, रेवतीरमण, राम, कामपाल, हलायुध, नीलाम्बर, रौहिण्ये, तालाङ्क, मुसली (लिन्) हली (लिन्) संकर्षण, सीरपाणि, कालिन्दीभेदन और बल ये १७ बलभद्र के नाम हैं ॥ २३ । २४ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
प्रयुक्त मदनो मन्मथो मारः प्रयुक्तो मीनकेतनः ।

पु. पु. पु. पु. पु. पु.
कन्दर्पो दर्पकोऽनङ्गः कामः पञ्चशरः स्मरः ॥ २५ ॥

पु. पु. पु. पु.
सम्बरारिर्मनसिजः कुसुमेषुरनन्यजः ।

पु. पु. पु. पु.
पुष्पधन्वा रतिपतिर्मकरध्वज आत्स भूः ॥ २६ ॥

अनिरुद्ध ^{पु.} ब्रह्मसू ^{पु.}र्विश्वकेतुः स्यादनिरुद्ध उषापतिः ।

मदन, मन्मथ, मार, प्रद्युम्न, मीनकेतन, कन्दर्प, दर्पक, अनङ्ग, काम, पञ्चशर, स्मर, संवरारि या शंवरारि, मनसिज (मनोज) कुसुमेषु, अनन्यज, पुष्पधन्वा, (न्वन्) रतिपति, मकरध्वज, आत्मभू, ब्रह्मसू और विश्वकेतु ये २१ कामदेव के नाम हैं अनिरुद्ध, उषापति, (उषापति) ये २ अनिरुद्ध के नाम हैं ॥ २५ । २६ ॥

लक्ष्मीजी लक्ष्मीः पद्मालया पद्मा कमला श्रीहरिप्रिया ॥ २७ ॥

लक्ष्मी, पद्मालया, पद्मा, कमला, श्री और हरिप्रिया ये ६ लक्ष्मीके नाम हैं ॥ २७ ॥

शङ्खो लक्ष्मीपतेः पाञ्चजन्यश्चक्रं सुदर्शनः ।
कौमोदकी (गदा) खड्गो (नन्दकः) कौस्तुभो (मणिः) ॥ २८ ॥

लक्ष्मीपति का शङ्ख ' पाञ्चजन्य ' कहाता है यह १ विष्णुके शङ्ख का नाम है । उनकी चक्र ' सुदर्शन ' कहा जाता है यह १ विष्णुके चक्र का नाम है । उनकी गदा कौमोदकी कहाती है । यह १ विष्णु की गदा का नाम है । उनकी खड्ग (तलवार) नन्दक कहाती है यह १ विष्णु की तलवार का नाम है और उनकी मणिकौस्तुभ कहाती है यह १ विष्णुमणि का नाम है ॥ २८ ॥

गरुड गरुत्मान् गरुडस्ताक्षर्यो वैनतेयः खगेश्वरः ।

नागान्तको विष्णुरथः सुपर्णः पन्नगाशनः ॥ २९ ॥

गरुत्मान्, गरुड, ताक्षर्य, वैनतेय, खगेश्वर, नागान्तक, विष्णुरथ, सुपर्ण और गाशन ये ६ गरुड के नाम हैं ॥ २९ ॥

शिव या शम्भुरीशः पशुपतिः शिवः शूली महेश्वरः ।
ईश्वरः शर्व ईशानः शंकरश्चन्द्रशेखरः ॥ ३० ॥

१ श्रीलक्ष्मीशब्दौ (कृदिकारादिति) लीषन्ताविति मैत्रेयः ।

* चापः शार्ङ्गो घुरारिस्तु श्रीवत्सो लाम्बमं स्मृतम् । अश्वारश्च शैव्यसुग्रीवमेधपुष्पबलाहकाः । सारथिर्द्वारको मन्त्री छुद्रवश्चातुजो गदः ॥

भूतेशः खण्डपरशुगिरीशो गिरिशो मृडः ।

मृत्युञ्जयः कृत्तिवासाः पिनाकी प्रमथाधिपः ॥ ३१ ॥

उग्रः कपर्दी श्रीकण्ठः शितिकण्ठः कपालभृत् ।

वामदेवो महादेवो विरूपाक्षस्त्रिलोचनः ॥ ३२ ॥

कृशानुरेताः सर्वज्ञो धूर्जटिर्नीललोहितः ।

हरः स्मरहरो भर्गस्त्यम्बकस्त्रिपुरान्तकः ॥ ३३ ॥

गङ्गाधरोऽन्धकरिपुः क्रतुध्वंसी वृषध्वजः ।

व्योमकेशो भवो भीमः स्थाणू रुद्र उमापतिः ॥ ३४ ॥

शम्भु, ईश, पशुपति, शिव, शूली, (लिन्) महेश्वर, ईश्वर, शर्व (सर्व) ईशान, शङ्कर, चन्द्रशेखर, भूतेश, खण्डपरशु, गिरीश, गिरिश, मृड, मृत्युञ्जय, कृत्तिवासाः, (सस्) पिनाकी, (किन्) प्रमथाधिप, उग्र, कपर्दी, (दिन्) श्रीकण्ठ, शितिकण्ठ, कपालभृत्, वामदेव, महादेव, विरूपाक्ष, त्रिलोचन, कृशानुरेताः, (तस्) सर्वज्ञ, धूर्जटि, नीललोहित, हर, स्मरहर, भर्ग, (भर्ग्य) त्र्यम्बक, त्रिपुरान्तक, गङ्गाधर, अन्धकरिपु, क्रतुध्वंसी, (सिन्) वृषध्वज, व्योमकेश, भव, भीम, स्थाणू, रुद्र और उमापति ये ४८ शिवजी के नाम हैं ॥ ३० ॥ ३४ ॥

जटा धनुष सेवक मातायें कपर्दी “स्य जटाजूटः” पिनाकोऽजगवं (धनुः) ।

प्रमथाः (स्युः पारिषदा) ब्राह्मी “त्याद्यास्तु मातरः” ॥ ३५ ॥

इन शिवजी के जटाजूट (जटाबन्ध) को कपर्द कहते हैं यह १ जटाबन्ध का नाम है । पिनाक, अजगव या आजगव ये २ शिवधनुष के नाम हैं । प्रमथ, पारिषद, पारिषद्य—पार्षद ये २ शिवानुचरों (गणों) के नाम हैं । और ब्राह्मी आदि मातायें कहाती हैं जैसे ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राक्षी, चामुण्डा और चर्चिका ये ब्रह्मादिदेवताओं की शक्तियों के नाम हैं ॥ ३५ ॥

स. स. न.
सिद्धिं विभूतिर्भूतिरैश्वर्यं 'मणिमादिकमष्टधा' ।

विभूति, भूति, ऐश्वर्य ये ३ अणिमादि सिद्धियों के नाम हैं 'अणिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, महिमा, ईशिता, वशिता और कामावशायिता ये ८ सिद्धियां कहाती हैं ॥

स. स. स. स. स. स.
पार्वती उमा कात्यायनी गौरी काली हैमवतीश्वरा ॥ ३६ ॥

स. स. स. स. स.
शिवा भवानी रुद्राणी शर्वाणी सर्वमङ्गला

स. स. स. स. स. स.
† अपर्णा पार्वती दुर्गा मृडानी चण्डिका म्बिका ॥ ३७ ॥

उमा, कात्यायनी, गौरी, काली, (काला) हैमवती, ईश्वरा, (ईश्वरी) शिवा, भवानी, रुद्राणी, शर्वाणी, सर्वमङ्गला, अपर्णा, पार्वती, दुर्गा, मृडानी, चण्डिका और अम्बिका ये १७ पार्वती के नाम हैं ॥ ३६ । ३७ ॥

पु. पु. पु. पु.
गणेश विनायको विघ्नराजद्वैमातुरगणाधिपः ।

पु. पु. पु. पु.
(अप्ये) कदन्तहेरम्बलम्बोदरगजाननाः ॥ ३८ ॥

विनायक, विघ्नराज, द्वैमातुर, गणाधिप, एकदन्त, हेरम्ब, लम्बोदर और गजानन ये ८ गणेश के नाम हैं ॥ ३८ ॥

पु. पु. पु. पु.
स्वामिकार्तिकेय कार्तिकेयो महासेनः शरजन्मा षडाननः ।

पु. पु. पु. पु. पु.
पार्वतीनन्दनः स्कन्दः सेनानीरग्निभूर्गुहः ॥ ३९ ॥

पु. पु. पु. पु.
बाहुलेयस्तारकजिद्विशालः शिखिवाहनः ।

पु. पु. पु. पु.
बाँरमातुरः शक्तिधरः कुमारः क्रौञ्चदारणः ॥ ४० ॥

कार्तिकेय, महासेन, शरजन्मा, षडानन, पार्वतीनन्दन, स्कन्द, सेनानी, अग्निभू,

* ईडे, "स्थेशमास" वाचि, टापि च ईश्वरा । वनिपि, "वनोरच्" इति लीङ्गो ईश्वरी अपि ॥

† आर्यो द्रष्टव्यणी चैव गिरिजा मेनकात्मजा ।

१ " इः शंकरे हरी इति रणरोमाश्वजिषु " इति नानार्थरत्नमाला । हे उषसि रम्बते इति स्वामी ।

२ श्रद्धा श्रद्धा रिष्टितुण्डा नन्दिकी नन्दिकेश्वरः । कर्ममोदी तु चापुण्डा कर्ममुण्डा तु चर्चिका ॥

गृह, बाहुलेय, तारकजित्, विशाख, शिखिवाहन, धारमातुर, शक्तिधर, कुमार और कौश्वदारणा या “कौश्वदारणा” ये १७ स्वामिकार्तिकेय के नाम हैं ॥ ३६।४० ॥

इन्द्र पु. पु. पु. पु. पु.
इन्द्रो मरुत्वान्मघवा विडौजाः पाकशासनः ।

पु. पु. पु. पु.
वृद्धश्रवाः सुनासीरः पुरुहूतः पुरन्दरः ॥ ४१ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
जिष्णुर्लेखर्षभः शक्रः शतमन्युर्दिवस्पतिः ।

पु. पु. पु. पु. पु.
सुत्रामागोत्रभिद्रज्जी वासवो वृत्रहा वृषा ॥ ४२ ॥

पु. पु. पु. पु.
वास्तोष्पतिः सुरपतिर्बलारातिः शचीपतिः ।

पु. पु. पु. पु.
जम्भभेदी हरिहयः स्वाराणनमुचिसूदनः ॥ ४३ ॥

पु. पु. पु. पु.
संक्रन्दनो दुश्च्यवनस्तुराषाणमेघवाहनः ।

पु. पु. पु.
आखण्डलः सहस्राक्ष ऋभुक्षा (तस्य तु प्रिया) ॥४४॥

इन्द्र, मरुत्वान्, मघवा (मघवान्) विडौजाः (जस्) पाकशासन, वृद्धश्रवाः, (वस्) सुनासीर, (शुनाशीर) पुरुहूत, पुरन्दर, जिष्णु, लेखर्षभ, शक्र, शतमन्यु, दिवस्पति, सुत्रामा, (सूत्रामा) गोत्रभिद्र, वज्री, (जिन्) वासव, वृत्रहा, (हन्) वृषा (षन्) वास्तोष्पति, सुरपति, बलाराति, शचीपति, जम्भभेदी (दिन्) हरिहय, स्वाराण, (ज्) नमुचिसूदन, संक्रन्दन, दुश्च्यवन, तुराषाण (ह्) मेघवाहन, आखण्डल, सहस्राक्ष और ऋभुक्षा (क्षिन्) ये ३५ इन्द्रके नाम हैं ॥ ४१ । ४४ ॥

इन्द्राणी
नगरी
योद्धा
सारथी
वन

स. स. स. स.
पुलोमजाशचीन्द्राणी (नगरी त्वमरावती) ।

पु. पु. न.
(हय)उच्चैःश्रवाः(सूतो)मातलिर्नन्दनं (वनम्) ॥४५॥

उन इन्द्रकी प्रिया (प्यारी) पुलोमजा, “ पौलोमी ” शची, ‘ सची ’ इन्द्राणी

१ श्वन्नुक्षभित्यादिना मघवमिति निपातितं ‘ मघवा बहुल ’ मिति त्रिदेशपक्षे तु मघवानित्यपि बोध्यम्—यस्य त्रिदेशो दीर्घाभावान्मघवमिति स्वामिनोक्तं तत्र सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धाविति दीर्घसंभवात्—न च संयोगान्त-लोपस्याक्षिप्तत्वं मघवान्बहुलमिति बहुलग्रहणेन तद्वधाधनात् । अतएव मतुपा त्रन्तादेशाप्रत्याख्यानपरं वार्तिकं तद्वाच्यं च संगच्छते ‘ इविर्जक्षिति मिःशङ्को मत्सेषु मघवान्ता ’ मिति भट्टिः एतेन मघवा, मघवन्, मघवानिति त्रैक्यमिति ।

कहाती हैं ये ३ इन्द्राणी के नाम हैं और नगरी (पुरी) अमरावती कही जाती है यह १ इन्द्रपुरी का नाम है । तथा उनका घोड़ा उच्चैःश्रवाः (वस्) कहाता है यह १ इन्द्रके घोड़े का नाम है । और उनका सारथी मातलि कहाजाता है यह १ इन्द्रके सारथी का नाम है । और उनका वन (बागीचा) नन्दन कहाजाता है यह १ इन्द्रके बाग का नाम है ॥ ४५ ॥

इन्द्रवर पुत्र हाथी ^{पु.} स्यात्प्रासादो ^{पु.} वैजयन्तः ^{पु.} जयन्तः ^{पु.} पाकशासनिः ।
^{पु.} ऐरावतो ^{पुं.} भ्रमातङ्गैरावणा ^{पु.} भ्रमुवल्लभाः ॥ ४६ ॥

उनका घर वैजयन्त होता है यह १ इन्द्र के घरका नाम है — और जयन्त, पाक-शासनि ये २ इन्द्रपुत्रके नाम हैं और ऐरावत, भ्रमातङ्ग, ऐरावण और भ्रमुवल्लभ ये ४ इन्द्रके हाथी के नाम हैं ॥ ४६ ॥

वज्र ^{स.} ह्लादिनी ^{पु. न.} वज्रमस्त्री ^{पु. न.} स्यात्कुलिशं ^{न.} भिदुरं ^{पु.} पविः ।

^{पु.} शतकोटिः ^{पु.} स्वरुः ^{पु.} शम्बो ^{पु.} दम्भोलिरशनि ^{पु. स.} (द्वयोः) ॥ ४७ ॥

ह्लादिनी, वज्र, कुलिश, भिदुर, पवि, शतकोटि, स्वरुः, (रूप) शम्ब, (सम्ब) दम्भोलि और अशनि ये १० वज्रके नाम हैं इनमें वज्र, कुलिश शब्द पुं. नपुंसकम होते हैं और अशनि दोनों लिङ्गों (स्त्री, पुं.) में कहाता है ॥ ४७ ॥

विमान ^{न.} देवर्षि ^{पु. न.} व्योमयानं ^{पु.} विमानो ^{पु.} 'स्त्री' (नारदाद्याः) ^{पु.} सुरर्षयः ।

^{स.} सभा ^{स.} अमृत ^{न.} स्यात्सुधर्मा ^{न.} देवसभा ^{न.} पीयूषममृतं ^{स.} सुधा ॥ ४८ ॥

व्योमयान, विमान ये २ विमान के नाम हैं इनमें विमान शब्द स्त्रीलिङ्ग में नहीं होता है किन्तु पुं. नपुंसक में रहता है । नारद, पर्वत, तुम्बुरु, देवज आदि सुरर्षि कहाते हैं । सुधर्मा, देवसभा ये २ देवताओं की सभा के नाम हैं । और पीयूष (पीयूष) अमृत, सुधा ये ३ अमृत के नाम हैं ॥ ४८ ॥

^{स.} आकारागता ^{स.} मन्दाकिनी ^{स.} वियद्गङ्गा ^{स.} स्वर्णादी ^{स.} सुरदीर्घिका ।

१ अक्षिणी वज्रकुशिराविति संसारावर्तः “वज्रं स्यादबालके धान्यां क्लीबं योगान्तरे पुमान् । वज्रास्तुद्यां दृश्य्यां च वज्री स्तुष्यन्तरे स्मृता ॥ दम्भोलौ शीरकेऽप्यस्त्री” इति ॥

२ दम्भोति सेदवति “दम्भु दम्भने” इत्यस्मादौषादिक ओलिरिति ॥

उमेरु ^{पु.} मेरुः ^{पु.} सुमेरुर्हेमाद्री ^{पु.} रत्नसानुः ^{पु.} सुरालयः ^{पु.} ॥ ४६ ॥

मन्दाकिनी, वियद्रङ्गा, स्वर्णादी, सुरदीर्घिका ये ४ देवगङ्गा (आकाशगङ्गा) के नाम हैं । मेरु, सुमेरु, हेमाद्रि, रत्नसानु और सुरालय ये ५ सुमेरु पर्वत के नाम हैं ॥ ४६ ॥

कल्पवृक्ष ^{पु.} (पञ्चैते देवतरवो) ^{पु.} मन्दारः ^{पु.} पारिजातकः ^{पु.} ।

^{पु.} सन्तानः ^{पु.} कल्पवृक्षश्च ^{पु.} (पुंसि वा) ^{पु.} हरिचन्दनम् ॥ ५० ॥

ये पांच देववृक्ष हैं—मन्दार, पारिजातक, सन्तान, कल्पवृक्ष और हरिचन्दन यह एक २ पांच देववृक्षों के नाम हैं इनमें हरिचन्दन यह विकल्प से पुंलिङ्ग में होता है ॥ ५० ॥

सनत्कुमार ^{पु.} सनत्कुमारो ^{पु.} वैधात्रः ^{पु.} स्वर्वैद्यावश्विनीसुतौ ^{पु.} ।

स्वर्गवैद्य ^{पु.} नासत्यावश्विनौ ^{पु.} दस्त्रावाश्विनेयौ ^{पु.} च ^{पु.} (तावुभौ) ॥ ५१ ॥

सनत्कुमार, वैधात्र ये २ ब्रह्मपुत्रों (सनत्कुमारों) के नाम हैं । स्वर्वैद्य, अश्विनीसुत, नासत्य, अश्विन, दस्त्र और आश्विनेय ये ६ अश्विनीकुमारों के नाम हैं ॥ ५१ ॥

अप्सरा ^{स.} स्त्रियां बहुष्वप्सरसः ^{स.} स्वर्वेश्या ^{स.} (उर्वशीमुखाः) ।

गन्धर्व ^{पु.} हाहा ^{पु.} हूहूश्चैवमाद्या ^{पु.} 'गन्धर्वास्त्रिदिवौकसाम्' ॥ ५२ ॥

उर्वशीआदि स्वर्वेश्या और अप्सराः (रस्) कहाती हैं । ये २ स्वर्वेश्याओं के नाम हैं इनमें अप्सरस् यह स्त्रीलिङ्ग बहुवचन में है और भाष्य प्रयोगादिकों से एकवचन भी होता है ऐसेही हाहा, हहा, हाहास्—हूहू—हुहु—तुम्बुरु, विश्वावसु, चित्ररथ आदि देवताओं के गन्धर्व (गवैया) कहलाते हैं यह १ देवगायकों का नाम है ॥ ५२ ॥

१ “ स्त्रियां बहुष्वप्सरसः स्यादेकत्वे अप्सरा अपि ” इति शब्दार्थेवात् ॥

२ घृताची मेनका रम्भा उर्वशी च तिलोत्तमा । सुकेशी मञ्जुषोषाद्याः कथ्यन्तेऽप्सरसो बुधैरिति ॥

३ अन्युत्पत्तिपथे “आतो धातोः” (६ । ४ । १४०) इत्यस्वाप्तासेः शक्तिः हाहान्—घोः सुप्रीत्यस्या-
प्रासेर्हूहूनित्यादि ॥ ‘हहा, हुहू’ इत्युभावादिहस्वौ च “गीतमाधुर्यसम्पन्नौ विख्यातौ च हहाहुहू”
इति व्या गोरक्षच ॥

अग्निदेव ^{पु.} अग्निर्वै ^{पु.} श्वानरो ^{पु.} वह्निर्वीतिहोत्रो ^{पु.} धनञ्जयः ।

^{पु.} कृपीटयोनिर्ज्वलनो ^{पु.} जातवेदास्तनूनपात् ॥ ५३ ॥

^{पु.} बर्हिःशुष्मा ^{पु.} कृष्णवर्त्मा ^{पु.} शोचिष्केश ^{पु.} उषर्बुधः ।

^{पु.} आश्रयाशो ^{पु.} बृहद्भानुः ^{पु.} कृशानुः ^{पु.} पावकोऽनलः ॥ ५४ ॥

^{पु.} लोहिताश्वो ^{पु.} वायुसखः ^{पु.} शिखावानाशुशुक्षणिः ।

^{पु.} हिरण्यरेता ^{पु.} हुतभुग् ^{पु.} दहनो ^{पु.} हव्यवाहनः ॥ ५५ ॥

^{पु.} सप्तार्चिर्दमुनाः ^{पु.} शुक्रश्चित्रभानुर्विभावसुः ।

^{पु.} ^{न.} शुचिरप्यित्तमौर्वस्तु ^{पु.} वाडवो ^{पु.} वडवानलः ॥ ५६ ॥

अग्नि, वैश्वानर, वह्नि, वीतिहोत्र, धनञ्जय, कृपीटयोनि, ज्वलन, जातवेदाः (दस्) तनूनपात् (द्) बर्हिःशुष्मा, (मन्) कृष्णवर्त्मा, शोचिष्केश, उषर्बुध, आश्रयाश (आश-याश) बृहद्भानु, कृशानु, पावक, अनल, लोहिताश्व, वायुसख (खा) शिखावान्, आशुशुक्षणि, हिरण्यरेताः (तस्) हुतभुग्, (ज्) दहन, हव्यवाहन, सप्तार्चिः (चि) दमुनाः (नस्) शुक्र, चित्रभानु, विभावसु, शुचि और अप्यित्त ये ३४ अग्नि के नाम हैं । और्व, वाडव, वडवानल ये ३ वडवानल के नाम हैं ॥ ५३ । ५६ ॥

^{पु.स.} अग्निज्वाला ^{पु.स.} (वह्नेर्द्वयो)र्ज्वाला ^{स.स.} कीलावर्चिर्हेतिः ^{स.} शिखा स्त्रियाम् ।

^{पु.स.न.} अग्निके टुकड़े ^{पु.} ज्वलना ^{पु.} (त्रिषु)स्फुलिङ्गो ^{पु.} ग्निकणः ^{पु.} सन्तापः ^{पु.} संज्वरः (समौ) ॥ ५७ ॥

ज्वाला, कीला, अर्चि, हेति और शिखा ये पांच अग्नि की ज्वाला के नाम हैं इनमें ज्वाला, कीला ये २ पुं. स्त्री में होते हैं और शिखा स्त्रीलिङ्ग में होता है । स्फुलिङ्ग अग्निकण ये दो अग्निके टुकड़ों के नाम हैं इनमें स्फुलिङ्ग शब्द तीनों लिङ्गों में होता है । सन्ताप, संज्वर ये २ आगी जलने के नाम हैं ये दोनों समानार्थ व समानलिङ्ग कहे जाते हैं ॥ ५७ ॥

यमराजः ^{पु.} धर्मराजः ^{पु.} पितृपतिः ^{पु.} समवर्ती ^{पु.} परेतराद् ।

^{पु.} कृतान्तो ^{पु.} यमुनाभ्राता ^{पु.} श्मनो ^{पु.} यमराज्यमः ^{पु.} ॥ ५८ ॥

^{पु.} कौलो ^{पु.} दण्डधरः ^{पु.} श्राद्धदेवो ^{पु.} वैवस्वतोन्तकः ^{पु.} ।

धर्मराज, पितृपति, समवर्ती, (तिन्) परेतराद्, (ज्) कृतान्त, यमुनाभ्राता, (तृ) श्मन, यमराद् (ज्) यम, काल, दण्डधर, श्राद्धदेव, वैवस्वत और अन्तक ये १४ यमराज के नाम हैं ॥ ५८ । १ ॥

राक्षसः ^{पु.} कौणपः ^{पु.} क्रव्यात्क्रव्यादोऽस्रपः ^{पु.} आशरः ^{पु.} ॥ ५९ ॥

^{पु.} रात्रिचरो ^{पु.} रात्रिचरो ^{पु.} कर्बुरो ^{पु.} निकषात्मजः ^{पु.} ।

^{पु.} यातुधानः ^{पु.} पुण्यजनो ^{पु.} नैर्ऋतो ^{न.} यातुरक्षसी ^{न.} ॥ ६० ॥

राक्षस, कौणप, क्रव्यात्, क्रव्याद, अस्रप (अश्रप) आशर (आशिर) रात्रिचर, रात्रिचर, कर्बुर, निकषात्मज, यातुधान (जातुधान) पुण्यजन, नैर्ऋत, यातु और रक्षः ये १५ राक्षसों के नाम हैं ॥ ५९ । ६० ॥

वरुणः ^{पु.} प्रचेता ^{पु.} वरुणः ^{पु.} पाशी ^{पु.} यादसांपतिरप्पतिः ^{पु.} ।

प्रचेताः (तस्) वरुण या “वरुण” पाशी (शिन्) यादसांपति और अप्पति ये ५ वरुण के नाम हैं ॥

पवनः ^{पु.} श्वसनः ^{पु.} स्पर्शनो ^{पु.} वायुर्मातरिश्वा ^{पु.} सदागतिः ^{पु.} ॥ ६१ ॥

^{पु.} पृषदश्वो ^{पु.} गन्धवहो ^{पु.} गन्धवाहानिलाशुगाः ^{पु.} ।

^{पु.} समीरमारुतमरुज्जगत्प्रा ^{पु.} समीरणाः ^{पु.} ॥ ६२ ॥

^{पु.} नभस्वा ^{पु.} तपवनपवमानप्रभञ्जनाः ^{पु.} ।

श्वसन, स्पर्शन, वायु, मातरिश्वा, सदागति, पृषदश्व, गन्धवह, गन्धवाह, अनिल,

आशुग, समीर, मारुत, मरुत्, जगत्प्राण, समीरण, नभस्वान्, वात, पवन, पवमान
और प्रभञ्जन ये २० वायु के नाम हैं ॥ ६१ । ६२ ॥

शरीरस्थ प्राणोऽपानः समानश्चोदानव्यानौ (च वायवः) ॥ ६३ ॥
पवन पु. पु. पु. पु. पु.
न. न. पु. पु.

(शरीरस्था) इमे रंहस्तरसी तु रयःस्यदः ।

प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान ये प्राणादि पञ्च वायु शरीरस्थ कहलाते हैं । हृदय में प्राण, गुदा में अपान, नाभि में समान, कण्ठदेश में उदान और व्यान सारी देह में टिका रहता है—रंहः (हस्) तरः (रस्) रयः, स्यद और जब ये ५ वेग के नाम हैं ॥ ६३ ॥

शीघ्रता जवो (ऽथ) शीघ्रं त्वरितं लघु क्षिप्रमरंद्भुतम् ॥ ६४ ॥
या वेग पु. न. न. न. न. न.
न. न. न. न. न.

सत्वरं चपलं तूर्णमविलम्बितमाशु (च) ।

शीघ्र, त्वरित, लघु, क्षिप्र, अर, द्रुत, सत्वर, चपल, तूर्ण, अविलम्बित और आशु ये ११ शीघ्र के नाम हैं ॥ ६४ । ६५ ॥

नित्य या सततानारताश्रान्तसन्तताविरतानिशम् ॥ ६५ ॥
न. न. न. न. न. न.
न. न. न. पु. पु.

नित्यानवरताजस्रमप्यथातिशयो भरः ।

बारंवार अतिवेलभृशात्यर्थातिमात्रोद्गाढनिर्भरम् ॥ ६६ ॥
न. न. न. न. न. न.
न. न. न. न. न. न.

तीव्रैकान्तनितान्तानि गाढबाढदृढानि (च) ।

(क्लीबे शीघ्राद्यसत्त्वे स्यात्त्रिष्वेषां सत्त्वगामि यत्) ॥ ६७ ॥

सतत, अनारत, अश्रान्त, संतत, विरत, अनिश, नित्य, अनवरत और अजस्र ये ६ नित्य के नाम हैं क्रियान्तर से अव्यवधान में संतत होता है और पुनः पुनः में अतिशब्द है यह दोनों में भेद है—अतिशय, भर, अतिवेल, भृश, अत्यर्थ, अतिमात्र, उद्गाढ, निर्भर, तीव्र, एकान्त, नितान्त, गाढ, बाढ और दृढ ये १४ अतिशय यानी बारम्बार के नाम हैं । शीघ्र आदि दृढपर्यन्त क्रियाविशेषण होनेसे अद्रव्य में वर्तमान होकर नपुंसक में रहते हैं जैसे 'शीघ्रं जुहोति' जल्द होमता है 'सततं भुङ्क्ते' हमेशा खाता है इन्हीं के बीच में जो द्रव्यगामी है, वह तीनों लिङ्ग में होता है जैसे 'शीघ्रो मृत्युः, शीघ्रा जरा, शीघ्रं वयः आदि होते हैं ॥ ६५ । ६७ ॥

कुबेर^{पु.} कुबेरस्त्र्यम्बकसखो^{पु.} यक्षराड्गुह्यकेश्वरः^{पु.} ।

मनुष्यधर्मा^{पु.} धनदो^{पु.} राजराजो^{पु.} धनाधिपः^{पु.} ॥ ६८ ॥

किन्नरेशो^{पु.} वैश्रवणः^{पु.} पौलस्त्यो^{पु.} नरवाहनः^{पु.} ।

यक्षैकपिङ्गैडविडश्रीदपुण्यजनेश्वराः^{पु. पु. पु. पु. पु.} ॥ ६९ ॥

कुबेर, त्र्यम्बकसख, यक्षराट्, गुह्यकेश्वर, मनुष्यधर्मा (मन्) धनद, राजराज, धनाधिप, किन्नरेश, वैश्रवण, पौलस्त्य, नरवाहन, यक्ष 'यक्षेश्वर' एकपिङ्ग-एकपिङ्गल, ऐलविल 'ऐडविड' श्रीद और पुण्यजनेश्वर ये १७ कुबेर के नाम हैं ॥ ६८।६९ ॥

बाण^{पु.} पुत्र (अस्योद्यानं)^{न.} चैत्ररथम्पुत्रस्तु^{पु.} नलकूबरः ।

स्थान पुरी^{पु.} विमान^{न.} कैलासः(स्थान)मलका'पू'“विमानं”तु पुष्पकम् ॥७०॥

इसका बाणीचा चैत्ररथ कहलाता है यह १ कुबेरके बाणीचा का नाम है । और पुत्र नलकूबर कहाजाता है यह १ कुबेर के पुत्र का नाम है । और स्थान 'कैलास' कहाजाता है यह १ कुबेर के स्थान का नाम है व इसकी पुरी 'अलका' कहाती है यह १ कुबेर की पुरी का नाम है और इसका विमान 'पुष्पक' कहलाता है यह १ कुबेर के विमान का नाम है ॥ ७० ॥

किन्नर^{पु.} स्यात्किन्नरः^{पु.} किंपुरुषस्तुरंगवदनो^{पु.} मयुः^{पु.} ।

खजाना^{पु.} खजानेकेभेद^{पु.} निधिर्ना शेवधि (भेदाः पद्मशङ्खादयो निधेः) ॥ ७१ ॥

इति स्वर्गवर्गः ॥

किन्नर, किंपुरुष, तुरङ्गवदन और मयु ये ४ किन्नर के नाम हैं । निधि व शेवधि ये २ सामान्यनिधि के नाम हैं । ये दोनों पुंलिङ्ग में रहते हैं (काकाक्षिगोलक) यानी कौवे की आँख की पुतली के न्यायकी नाई 'ना' शब्द का संबन्ध दोनों में रहता है और पद्म, शङ्ख आदि निधियों के भेद कहलाते हैं यानी पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील और खर्ब ये ६ निधियां कहलाती हैं ॥ ७१ ॥

इति स्वर्गवर्गविवरणम् ॥

अथ व्योमवर्गो व्याख्यायते ॥

आकाशः ^{स.}द्यौः ^{स.}दिवः ^{न.}अभ्रः ^{न.}व्योमः ^{न.}पुष्करः ^{न.}अम्बरम् ।

^{न.}नभोऽन्तरीक्षं ^{न.}गगनमनन्तं ^{न.}सुरवर्त्म ^{न.}खम् ॥ १ ॥

^{न.}वियद्विष्णुपदं ^{पु.न.}वा तु ^{पु.न.}पुंस्याकाशविहायसी ।

इति व्योमवर्गः ॥

द्यौः, दिवः, अभ्रः, व्योमः (मन्) पुष्करः, अम्बरः, नभः (स्) अन्तरीक्ष-अन्त-
रिक्षः, गगनः, अनन्तः, सुरवर्त्म (त्मन्) खः, वियत्, विष्णुपदः, आकाश और विहा-
यस् ये १६ आकाश के नाम हैं । इनमें द्यौः, दिवः ये २ खीलिङ्ग में होते हैं और
आकाशः, विहायस् ये २ विकल्प से पुल्लिङ्ग में रहते हैं ॥ १ । १ ॥

इति व्योमवर्गविवरणम् ॥

अथ दिग्बर्गो व्याख्यायते ॥

दिशाः ^{१ स.}दिशस्तु ^{स.}ककुभः ^{स.}काष्ठा ^{स.}आशाश्च ^{स.}हरितश्च (ताः) ।

दिशा के भेदः ^{स.}प्राच्यः ^{स.}प्राची ^{स.}प्रतीच्यस्ताः (पूर्वदक्षिणपश्चिमाः) ॥ १ ॥

^{स.}दिशाकीवस्तु ^{पु.स.न.}उत्तरा ^{पु.}दिगुदीची ^{पु.}स्याद्विश्यन्तु (त्रिषु) दिग्भवे ।

दिशः, ककुभः, काष्ठा, आशा और हरित् ये ५ दिशाओं के नाम हैं । उनमें दिश्
शब्द एकवचन में दिक् बहुवचन में 'दिशः' होता है । भागुरि के मत में टावन्त भी
हैं और ककुभः भान्त है वे पूर्व, दक्षिण, पश्चिम क्रमसे प्राची, अवाची, प्रतीची
दिशायें कहाती हैं । जैसे पूर्वदिशा प्राची, दक्षिणदिशा अवाची और पश्चिमदिशा
प्रतीची कहाती है और उत्तरदिशा उदीची कहलाती है ये चारों दिशाओं के
दो २ नाम हैं और जो दिशाओं में हुआ पदार्थ है उसे 'दिश्य' कहते हैं यह तीनों
लिङ्गों में होता है ॥ १ । १ ॥

^{पु.}दिशाओंकेस्वामी ^{पु.}इन्द्रो ^{पु.}वह्निः ^{पु.}पितृपतिर्नैऋतो ^{पु.}वरुणो ^{पु.}मरुत् ॥ २ ॥

^{पु.}कुबेर ईशः (पतयः पूर्वादीनां दिशां क्रमात्) ।

इन्द्रः, वह्निः, पितृपतिः, नैऋतः, वरुणः, मरुत्, कुबेर और ईश ये क्रम से पूर्वादि

दिशाओं के स्वामी कहाते हैं । जैसे कि पूर्व का स्वामी इन्द्र, आग्नेय का अग्नि, दक्षिण का पितृपति, नैऋत्य का नैऋत, पश्चिम का वरुण, वायव्य का मरुत्, उत्तर का कुबेर और ईशान का स्वामी ईश कहाता है ॥ २ । ३ ॥

दिग्गज पु. पु. पु. पु. पु.
ऐरावतःपुण्डरीको वामनः कुमुदोऽञ्जनः ॥ ३ ॥

पु. पु. पु.
पुष्पदन्तः सार्वभौमःसुप्रतीकश्च (दिग्गजाः) ।

ऐरावत, पुण्डरीक, वामन, कुमुद, अञ्जन, पुष्पदन्त, सार्वभौम और सुप्रतीक ये ८ दिग्गजों के नाम हैं । जैसे पूर्वदिशा का ऐरावत, आग्नेय का पुण्डरीक, दक्षिण का वामन, नैऋत्य का कुमुद, पश्चिम का अञ्जन, वायव्य का पुष्पदन्त, उत्तर का सार्वभौम और ईशानका सुप्रतीक ये आठ दिग्गज दिशाओं के हाथी कहलाते हैं ॥ ३ । ३ ॥

स. स. स. स.
हथिनियां (करिण्यो)ऽभ्रमुकपिलापिङ्गलानुपमाःक्रमात् ॥ ४ ॥

स. स. स. स.
ताम्रकर्णी शुभ्रदन्ती चाङ्गना चाञ्जनावती ।

न. स.
दिशाओंकामध्य या कोन क्लीबाव्ययं त्वपदिशं दिशोर्मध्ये विदिक् स्त्रियाम् ॥ ५ ॥

अभ्रमु, कपिला, पिङ्गला, अनुपमा, ताम्रकर्णी, शुभ्रदन्ती, अङ्गना और अञ्जनावती ये ८ क्रम से ऐरावतादि गजों की हथिनियों के नाम हैं । जैसे ऐरावत की अभ्रमु, पुण्डरीक की कपिला, वामन की पिङ्गला, कुमुद की अनुपमा, अञ्जन की ताम्रकर्णी, पुष्पदन्त की शुभ्रदन्ती, सार्वभौम की अङ्गना और सुप्रतीक की अञ्जनावती हथिनी कहाती है । अपदिश, विदिक्, प्रदिक् ये २ दिशाओं के मध्य या कोन के नाम हैं । इनमें “अपदिशम्” यह नपुंसक और अव्यय है और ‘विदिक्’ स्त्रीलिङ्ग है ॥ ४ । ५ ॥

न. न. पु.न. न.
बीच बवण्डर अभ्यन्तरं त्वन्तरालं चक्रवालं(तु)मण्डलम् ।

अभ्यन्तर, अन्तराल ये २ मध्य या बीच के नाम हैं । चक्रवाल, ‘चक्रवाड’ और मण्डल ये २ घेर वा मण्डल के नाम हैं याने बवण्डर के नाम कहाते हैं ॥

न. पु. पु. पु. पु.
नादल अभ्रं मेघो वारिवाहः स्तनयितुर्बलाहकः ॥ ६ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
धाराधरो जलधरस्तडित्वान्वारिदोम्बुभृत् ।

पु. पु. पु. पु. पु.
घनजीमूतमुदिरजलमुग्धूमयोऽनयः ॥ ७ ॥

१ “मेघास्तु त्रिविधास्तत्र बहिजा धूमयोनयः । निःश्वासजास्तु जीमूतास्ते श्रेया जीवरूपिणः । यज्ञास्तु घना घे.तः पुष्करावर्तकादयः” (इति शब्दार्थः) ।

अभ्र—अभ्र, मेघ, वारिवाह, स्तनयिन्, बलाहक, धाराधर, जलधर, तडित्वान्, वारिद, अम्बुभृत्, घन, जीमूत, मुदिर, जलमुक् और धूमयोनि ये १५ मेघ याने बादल के नाम हैं ॥ ६ । ७ ॥

स. स. पु.म.न.
मेघों की पांति कादम्बिनी मेघमाला (त्रिषु) मेघभवे 'ऽभ्रियम्' ।

मेघों की वस्तु न. न. पु. न.
मेघगर्जना स्तनितं गर्जितं मेघनिर्घोषोरसितादि च ॥ ८ ॥

कादम्बिनी, मेघमाला ये २ मेघपङ्क्ति के नाम हैं । मेघ से उपजे पदार्थ में अभ्रिय, यह १ मेघोत्पन्न वस्तु का नाम है । जोकि तीनों लिङ्गों में कहा जाता है । स्तनित, गर्जित, मेघनिर्घोष और रसित आदिपद से ध्वनित आदि ये ४ मेघगर्जना के नाम हैं ॥ ८ ॥

स. स. स. स. स.
विजली शंपा शतहृदा ह्यादिन्यैराधत्यः क्षणप्रभा ।

स. स. स. स. स.
तडित्सौदामनी विद्युच्चञ्चला चपला (अपि) ॥ ९ ॥

शंपा—(शम्बा) शतहृदा, ह्यादिनी, ऐरावती, क्षणप्रभा, तडित्, सौदामनी (सौदामिनी, सौदाम्नी) विद्युत्, चञ्चला और चपला ये १० विजली के नाम हैं ॥ ९ ॥

विजली का पु. पु. पु. पु.
तडपना, मेघों की स्फूर्जथुर्वज्रनिर्घोषे मेघज्योतिरिरंमदः ।

चमक, इन्द्रध- न. न. न.
नुष, सीधा इन्द्र धनुष इन्द्रायुधं शक्रधनु (स्तदेव ऋजु) रोहितम् ॥ १० ॥

वज्र के शब्द में स्फूर्जथु—स्फुर्जथु होता है यह १ वज्र की ध्वनि का नाम है । मेघज्योति, इरंमद ये २ मेघ की ज्योति के नाम हैं । इन्द्रायुध, शक्रधनु ये २ इन्द्रधनुष के नाम हैं और वही जब सीधा हो तो 'रोहित' कहाता है यह १ सरल इन्द्रधनुष का नाम है ॥ १० ॥

स. न. पु. पु.
वर्षा भूरा मेघ वृष्टिर्वर्ष तद्विघातेवग्राहावग्रहौ (समौ) ।

पु. पु. पु.
धारा फ़ारा धारासंपात आसारः शीकरोम्बुकणाः सृताः ॥ ११ ॥

वृष्टि, वर्ष ये २ वर्षा के नाम हैं । अवग्राह, अवग्रह ये २ वर्षा के न होनेके यानी भूरा के नाम हैं । धारासंपात, आसार ये २ महावर्षा के नाम हैं । शीकर-शीकर यह १ जलकण या फ़ारे का नाम है ॥ ११ ॥

श्रीला पु. पु.स. न.
दुर्दिन वर्षोपलस्तु करका “मेघच्छन्नेऽहि” दुर्दिनम् ।

वर्षोपल, करका, ‘करक’ ये २ पत्थर या ओला के नाम हैं । और मेघों से ओंधेरा किये हुए दिन में ‘दुर्दिन’ कहा जाता है ‘अहि’ यह रात्रि का भी उपलक्षण है इसलिये रात्रि में भी दुर्दिन होता है यह १ मेघों से ढके हुए दिन का नाम है ॥

स. स. पु. न.
दांपना या अन्तर्धा व्यवधा पुंसि त्वन्तर्धिरपवारणम् ॥ १२ ॥
छिपजाना न. न. न. न.

अपिधानतिरोधानपिधानाऽऽच्छादनानि (च) ।

अन्तर्धा, व्यवधा, अन्तर्धि, अपवारण, अपिधान, तिरोधान, पिधान और आच्छादन वा छदन ये आठ अन्तर्धान (छिपजाने) के नाम हैं । इनमें अन्तर्धा-व्यवधा ये २ स्त्रीलिङ्ग हैं और अन्तर्धि यह पुल्लिङ्ग में कहा जाता है ॥ १२ । १ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
चन्द्रमा हिमांशुश्चन्द्रमाश्चन्द्र इन्दुःकुमुदवान्धवः ॥ १३ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
विधुः सुधांशुः शुभ्रांशुरोषधीशो निशापतिः ।

पु. पु. पु. पु. पु. पु.
अब्जो जैवातृकः सोमो ग्लौर्मृगाङ्कः कलानिधिः ॥ १४ ॥

पु. पु. पु. पु.
द्विजराजः शशधरो नक्षत्रेशः क्षपाकरः ।

हिमांशु, चन्द्रमाः (मस्) चन्द्र ‘चन्द’ इन्दु, कुमुदवान्धव “कुमुदवन्धु” विधु, सुधांशु, शुभ्रांशु, ओषधीश, निशापति, अब्ज, जैवातृक, सोम, ग्लौ, मृगाङ्क, कलानिधि, द्विजराज, शशधर, शशाङ्क, शशी (शिन्) नक्षत्रेश और क्षपाकर उसी प्रकार निशाकर ये २० चन्द्रमा के नाम हैं ॥ १३ । १४ । १ ॥

स. पु.न. पु.स.न.
कला, बिम्ब, कला(तु) षोडशो भागो बिम्बोऽस्त्रीमण्डलं(त्रिषु) ॥ १५ ॥

न. पु.न. पु.न. पु. न.
हिस्ता, बाधा भित्तं शकलखण्डे वा पुंस्यर्द्धोऽर्ध (समेऽशके) ।

चन्द्रमा का सोलहवां भाग ‘कला’ कहाती है यह १ चन्द्रमा के षोडशांश का नाम है । बिम्ब, मण्डल ये २ सूर्य और चन्द्रमण्डल के नाम हैं इनमें ‘बिम्ब’ स्त्रीलिङ्ग नहीं है किन्तु पुल्लिङ्ग व नपुंसकलिङ्ग है और ‘मण्डल’ तीनों लिङ्ग में है ।

भित्त, शकल, खण्ड और अर्ध ये ४ टुकड़ेमात्र के नाम हैं । इनमें ' भित्त ' नपुंसक है शकल व खण्ड ये २ विकल्प से पुलिङ्ग में रहते हैं और ' अर्धशब्द ' बाच्यलिङ्ग है जैसे " अर्धा शाटी, अर्धः पटः, अर्धं वस्त्रम् " और समानभाग में अर्ध शब्द नपुंसकलिङ्ग में ही रहता है यह १ बराबर दो खण्डों के बीच में से एक खण्ड का नाम है ॥ १५ । १ ॥

चांदनी स. चन्द्रिका स. कौमुदी स. ज्योत्स्ना पु. प्रसाद स. (स्तु)प्रसन्नता ॥ १६ ॥

स्वच्छता पु. पु. न. न. न. कलङ्क कलङ्काङ्गौ लाञ्छनं च चिह्नं लक्षम् (च) लक्षणम् ।

चन्द्रिका, कौमुदी, ज्योत्स्ना ये ३ चांदनी के नाम हैं । प्रसाद, प्रसन्नता ये २ स्वच्छता या निर्मलता के नाम हैं और कलङ्क, अङ्क, लाञ्छन, चिह्न, लक्ष्म, " लक्षण " 'लक्ष्मण' ये ६ चन्द्रमा के अन्तरीय निशान के नाम हैं ॥ १६ । १ ॥

बड़ीशोभा स. सुषमा स. 'परमाशोभा' शोभा स. कान्ति स. द्युति स. द्युती स. द्युत्ति स. छवि स. छवी ये ४ शोभा के नाम हैं यानी शोभामात्र के नाम कहाते हैं ॥ १७ ॥

सुषमा यह १ महाशोभा का नाम है और शोभा, कान्ति, द्युति-द्युती-द्युत्ति, छवि-छवी ये ४ शोभा के नाम हैं यानी शोभामात्र के नाम कहाते हैं ॥ १७ ॥

पाला पु. अवश्याय पु. स्तु नीहार पु. स्तु तुषार पु. स्तु तुहिनं न. हिमम् न. ।

महापाला न. स. स. स. प्रालेयं महिका चाथ हिमानी हिमसंहतिः ॥ १८ ॥

अवश्याय, नीहार, तुषार, तुहिन, हिम, प्रालेय, महिका-मिहिका ये ७ हिम (पाला) के नाम हैं और हिमानी, हिमसंहति ये २ हिमसमूह (महापाला) के नाम हैं ॥ १८ ॥

ठंड न. शीतं पु. स. न. गुणेतद्र्दार्थाः पु. स. न. सुषीमः पु. स. न. शिशिरो पु. स. न. जडः ।

ठंड पर्याय पु. स. न. तुषारः पु. स. न. शीतलः पु. स. न. शीतो पु. स. न. हिमः पु. स. न. (सत्तान्यलिङ्गकाः) ॥ १९ ॥

गुणमें यानी स्पर्शविषय में शीत होता है यह १ शीतगुण का नाम है और सुषीम, शिशिर, जड, तुषार, शीतल, शीत और हिम ये ७ शीतआदि के पर्यायवाची हैं और जिन्हों का शीतगुणवान् अर्थ है वे अन्यलिङ्ग यानी बाच्यलिङ्ग हैं जैसा बाच्यका लिङ्ग होता है उसीके समान इनका भी लिङ्ग कहाजाता है ॥ १९ ॥

ध्रुव औत्तानपादिः स्यादगस्त्यः कुम्भसंभवः ।
 अगस्त्य पु. पु. पु. पु.

अगस्त्यभार्या मैत्रावरुणिरस्यैव लोपामुद्रा (सधर्मिणी) ॥ २० ॥

ध्रुव, औत्तानपादि ये २ ध्रुव के नाम हैं । अगस्त्य—अगस्ति, कुम्भसंभव, मैत्रा-
 वरुणि ये ३ अगस्त्य के नाम हैं । और इनकी सधर्मिणी (पत्नी) 'लोपामुद्रा'
 कहाती है यह १ अगस्त्य की भार्या का नाम है ॥ २० ॥

तारा नक्षत्रमृक्षं भं तारा तारकाप्युडु (वा स्त्रियाम्) ।
 दक्षकीकन्या न. न. न. स. स. स.न. स. स.

अश्विनी दाक्षायणी (अश्विनीत्यादितारा) अश्वयुगश्विनी ॥ २१ ॥

नक्षत्र, मृक्ष, भ, तारा—तारका—तारक और उडु ये ६ नक्षत्र सामान्य के नाम
 हैं । इनमें उडु विकल्प से खीलिङ्ग में होता है और अपिशब्द से तारका शब्द
 भी वैसाही रहता है और अश्विनी आदि २७ नक्षत्र दाक्षायणीसंज्ञक कहलाते
 हैं । यह १ अश्विन्यादिनक्षत्रों का नाम है और अश्वयुक्, अश्विनी ये २ अ-
 श्विनी नक्षत्र के नाम हैं ॥ २१ ॥

विशाखा पुण्य धनिष्ठा राधाविशाखा पुष्येतु सिध्यतिष्यौ (अविष्टया) ।
 पु. पु. पु. पु. स. स. स. स.

पूर्व और उत्तर भाद्रपद (समा) धनिष्ठा स्युः प्रौष्ठपदा भद्रपदाः (स्त्रियः) ॥ २२ ॥

राधा, विशाखा ये २ विशाखा के नाम हैं । पुष्य, सिध्य, तिष्य ये ३ पुष्य
 के नाम हैं । धनिष्ठा, अविष्टा के समान है यानी अविष्टा, धनिष्ठा ये २ धनिष्ठा के
 नाम हैं । प्रौष्ठपदा—प्रौष्ठपदा, भद्रपदा—भाद्रपदा ये २ पूर्वाभाद्रपद और उत्तरा-
 भाद्रपद के नाम हैं । पूर्वे—प्रौष्ठपदे २ और उत्तरे—प्रौष्ठपदे २ ऐसे चार होने से
 इनमें बहुवचन है और ये खीलिङ्ग हैं ॥ २२ ॥

मृगशिरा मृगशीर्षमृगशिरस्तस्मिन्नेवाग्रहायणी ।
 पु. न. पु. न. स. स.

इत्थल इन्वका (स्तच्छिरोदेशे तारका निवसन्ति याः) ॥ २३ ॥

१ एवं चाद्याश्चतस्रः जियां बहुल्ये, मृगशिरोलियामेकल्ये, आर्द्रा स्थेकल्ये, पुनर्वसुपुण्यौ पुंस्थेकल्ये,
 आश्लेषाद्ये स्त्रीबहुल्ये, फल्गुन्यौ स्त्रीद्विल्ये, इस्तो मिथुनैकल्ये, चित्रा स्थेकल्ये, स्वातिमिथुनैकल्ये, विशाखस्ये
 स्त्रीबहुल्ये, ज्येष्ठा स्थेकल्ये, मूलमस्त्रियामेकल्ये, आषाढाद्वये स्त्रीबहुल्ये, अश्विनो मिथुनैकल्ये, धनिष्ठाय स्त्री-
 बहुल्ये, भाद्रपदाद्वयं स्त्रीद्विल्ये, रेवती स्थेकल्ये इति ॥

२ इन्वका नक्षत्रमिति श्रुतेः ।

मृगशीर्ष, मृगशिर (स्) मृग, आप्रहायणी ये ३ मृगशिरा के नाम हैं । और उसी मृगशिरा के शिरोदेश में जो छोटी सी पांच तारायें रहती हैं उन्हें इन्वका—इल्वका या इल्वला कहते हैं ॥ २३ ॥

बृहस्पति ^{पु.} बृहस्पतिः ^{पु.} सुराचार्यो ^{पु.} गीर्षतिर्धिषणोगुरुः ^{पु.} ।

^{पु.} जीवआङ्गिरसोवाचस्पतिश्चित्रशिखण्डिजः ^{पु.} ॥ २४ ॥

बृहस्पति, सुराचार्य, गीर्षति, गीः पति, गीष्पति, धिषण, गुरु, जीव, आङ्गिरस, वाचस्पति और चित्रशिखण्डिज ये ६ बृहस्पति के नाम हैं ॥ २४ ॥

शुक्र, ^{पु.} शुक्रो ^{पु.} दैत्यगुरुः ^{पु.} काव्य ^{पु.} उशना ^{पु.} भार्गवः ^{पु.} कविः ^{पु.} ।

मंगल ^{पु.} अङ्गारकः ^{पु.} कुजो ^{पु.} भौमो ^{पु.} लोहिताङ्गो ^{पु.} महीसुतः ^{पु.} ॥ २५ ॥

शुक्र, दैत्यगुरु, काव्य, उशना (स्) भार्गव और कवि ये ६ शुक्र के नाम हैं और अङ्गारक, कुज, भौम, लोहिताङ्ग और महीसुत ये ५ मंगल के नाम हैं ॥ २५ ॥

बुध, शनैश्चर, ^{पु.} रौहिणेयो ^{पु.} बुधः ^{पु.} सौम्यः ^{पु.} (समौ) ^{पु.} सौरिशनैश्चरौ ^{पु.} ।

राहु, केतु ^{न.} तमस्तु ^{पु.} राहुः ^{पु.} स्वर्भानुः ^{पु.} सैहिकेयो ^{पु.} विधुंतुदः ^{पु.} ॥ २६ ॥

रौहिणेय, बुध, सौम्य ये ३ बुध के नाम हैं और सौरि (सौर) शनैश्चर—“ शनि ” ये २ शनैश्चर के नाम हैं । तम, राहु, स्वर्भानु, सैहिकेय और विधुन्तुद ये ५ राहुके नाम हैं और केतु, शिखी ये २ केतु के नाम हैं ॥ २६ ॥

सप्तर्षि, ^{पु.} सप्तर्षयोमरीच्यत्रिमुखाश्चित्रशिखण्डिनः ^{न.} ।

लग्न, राशि ^{न.} राशीनामुदयो लग्नं (ते तु मेषवृषादयः) ॥ २७ ॥

मरीचि, अत्रिआदि सप्तर्षि चित्रशिखण्डिसंज्ञक होते हैं । मुखशब्द से पुलस्त्य, पुलह आदि सप्तर्षि हैं वे सब ये हैं मरीचि, अङ्गिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, वसिष्ठ ये ७ सात चित्रशिखण्डिनामक सप्तर्षि कहलाते हैं । राशियों के उदय को ‘ लग्न ’ कहते हैं वे राशियां मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ और मीन बारह होती हैं ॥ २७ ॥

१ मरीचिरङ्गिरा अत्रिः पुलस्त्यः पुलहः क्रतुः । वसिष्ठश्चेति सप्तैते ज्ञेयाश्चित्रशिखण्डिनः ॥

२ मेषो वृषोर्षे मिथुनं कर्कटः सिंहकन्यके । तुलाश्च वृश्चिको धन्वी मकरः कुम्भमीनकौचित् ॥

सूर्य ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} सूरसूर्यार्यमादित्यद्वादशात्मदिवाकराः ।-

^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} भास्कराऽहस्करब्रध्नप्रभाकरविभाकराः ॥ २८ ॥

^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} भास्वद्विवस्वत्सप्ताश्वहरिदश्वोष्णरश्मयः ।

^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} विकर्तनार्कमार्तण्डमिहिरारुणपूषणः ॥ २९ ॥

^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} द्युमणिस्तरणिर्मित्रश्चित्रभानुर्विरोचनः ।

^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} विभावसुर्ग्रहपतिस्त्रिषांपतिरहर्पतिः ॥ ३० ॥

^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} भानुर्हंसः सहस्रांशुस्तपनः सविता रविः ।

सूर, (शूर) सूर्य, अर्यमा (मन्) आदित्य, द्वादशात्मा (त्मन्) दिवाकर, भास्कर, अहस्कर, ब्रध्न, प्रभाकर, विभाकर, भास्वान् (स्वत्) विवस्वान् (स्वत्) सप्ताश्व, हरिदश्व, उष्णारश्मि, विकर्तन, अर्क, मार्तण्ड, “मार्तण्डः” मिहिर, अरुण, पूषा (षन्) द्युमणि (दिनमणि) तरणि, मित्र, ‘मित्र’ चित्रभानु, विरोचन, विभावसु, ग्रहपति, त्रिषांपति, अहर्पति, भानु, हंस, सहस्रांशु, तपन (तापन) सविता और रवि ये ३७ सूर्य के नाम हैं ॥ २८ । ३० । ३१ ॥

^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} आसपास रहने वाले सूर्यगण माठरःपिङ्गलोदण्ड (श्चण्डांशोःपारिपार्श्वकाः) ॥ ३१ ॥

^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} सारथि सूर्यसूतोऽरुणोनूरुः काश्यपिर्गुरुडाग्रजः ।

^{पु.} ^{पु.} ^{न.} ^{न.} मण्डल परिवेषस्तु परिधिरुपसूर्यकमण्डले ॥ ३२ ॥

माठर, पिङ्गल, दण्ड ये ३ सूर्य के आसपास रहनेवाले गणों के नाम हैं । सौर-तन्त्र में इन्द्र आदि अठारह सूर्य परिचारक हैं उनमें प्रधानता से माठर आदि तीन कहे हैं और सूर्यसूत, अरुण, अनूरु, काश्यपि और गरुडाग्रज ये ५ सूर्यसारथी के नाम हैं । और परिवेष—परिवेश, परिधि, उपसूर्यक और मण्डल ये ४ सूर्य व चन्द्रमा के उत्पातादि से उपजे मण्डल (घेर) के नाम हैं ॥ ३१ । ३२ ॥

किरण ^{पु. पु. पु. पु. पु. पु.} किरणोत्तमयूखांशुगभस्तिघृणिरश्मयः ।

^{पु. पु. पु.स. स.} भानुःकरोमरीचिः(स्त्रीपुंसयोर्)दीधितिः(स्त्रियाम्)॥३३॥

किरण, उत्त, मयूख, अंशु, गभस्ति, घृणि, रश्मि-“वृष्णि-वृश्नि” भानु, करे, मरीचि और दीधिति ये ११ सूर्यकिरणों के नाम हैं । इनमें मरीचि स्त्री व पुंलिङ्ग है और दीधिति स्त्रीलिङ्ग में रहता है ॥ ३३ ॥

^{स. स. स. स. स. स. स. स.} प्रभा (स्युः)प्रभारुचिस्त्विड्भाभाश्छेविद्युतिदीप्तयः ।

^{न. न. पु. पु. पु.} घाम राचिः शोचि (रुभे क्लीबे) प्रकाशो द्योत आतपः॥ ३४ ॥

प्रभा, रुक् (च्) रुचि, त्विट् (ष्) भा, भाः (स्) छवि, ‘छवी’ द्युति, दीप्ति, रोचिः, शोचिः ये ११ प्रभामात्र के नाम हैं । इनमें भास् सान्त पुंलिङ्ग भी है और दीप्तिपर्यन्त स्त्रीलिङ्ग हैं और रोचिः, शोचिः ये २ सेन्तं व नपुंसकलिङ्ग हैं । प्रकाश, द्योत, आतप ये ३ सूर्य की प्रभा या घाम के नाम हैं ॥ ३४ ॥

^{न. न. न. न.} योडागरम कोष्णां कवोष्णां मन्दोष्णां कदुष्णां (त्रिषु तद्वति) ।

^{न. न. न. स. स.} बडागरम मृगतृष्णां तिग्मं तीक्ष्णं खरं(तद्वन्)मृगतृष्णा मरीचिका ॥ ३५ ॥

इति दिग्वर्गः॥

कोष्णा, कवोष्णा, मन्दोष्णा, कदुष्णा ये गुण में नपुंसक लिङ्ग होते हैं और गुणवान् में तीनों लिङ्ग रहते हैं ये ४ कुठ्ठेक गरम के नाम हैं । तिग्म, तीक्ष्ण और खर ये गुण में नपुंसक हैं और गुणवान् में विशेष्यनिम्न कहाते हैं । जैसे कि “तीक्ष्णोऽसिः, तीक्ष्णा गदा, तीक्ष्णं चक्रम्” आदि होते हैं ये ३ बड़े गरम के नाम हैं । मृगतृष्णा, मरीचिका ये २ मृगतृष्णा के नाम हैं ॥ ३५ ॥

इति दिग्वर्गविवरणम् ॥

अथ कालवर्गो व्याख्यायते ॥

^{पु. पु. पु. पु. स.} समय, कालो दिष्टोऽप्यनेहापि समयो (प्यथ) पक्षतिः ।

^{स.} पक्षति तिथि प्रतिपद् (द्वे इमे स्त्रीत्वे) तद्वन्ति स्थितयो (द्वयोः) ॥ ३६ ॥

काल, दिष्ट, इनेहा (स्) समय ये ४ सामान्यकाल के नाम हैं । पक्षति, प्रतिपद् ये दोनों स्त्रीलिङ्ग में रहते हैं । ये २ परेवा के नाम हैं । और परेवा आदि तिथियां पुंलिङ्ग व स्त्रीलिङ्ग में रहती हैं यह १ सामान्यतिथि का नाम है ॥ १ ॥

दिन पु. न. न. पु. न. पु. न.
घस्रोदिनाहनी (वा) तु (क्लीबे)दिवसवासरौ ।

प्रभात पु. न. न. न. न. पु. न. अ. स. स.
प्रत्यूषोहर्मुखं कल्यमुषः प्रत्यूषसी (अपि) ॥ २ ॥

शाम गोधूली प्रभातं च दिनान्ते तु सायः सन्ध्या पितृप्रसूः ।

घस्र, दिन, अहः, (न) दिवस, वासर—वाशर, ये पांच दिनके नाम हैं इनमें दिवस—वासर ये दो पुं. नपुंसक हैं । प्रत्यूष, अहर्मुख, कल्य—काल्य उपः (स्) 'उपा' प्रत्यूषः (स्) प्रभात—विभात—भात ये ६ प्रातःकाल (सुबह) के नाम हैं और दिनान्त में साय वा सायम् होता है यह १ सायंकाल (शाम) का नाम है । इसमें साय शब्द पुं. व नपुंसक है और मान्त अव्यय भी अव्यय वर्ग में कहा जावेगा । और सन्ध्या, (सन्धा) पितृप्रसू ये २ सन्ध्या के नाम हैं ॥ २ । ३ ॥

दिनके भाग पु. पु. पु. स.
प्राह्णापराह्णमध्याह्ना(त्रिसन्ध्य)मथ शर्वरी ॥ ३ ॥

रात्रि स. स. स. स. स. स.
निशा निशीथिनी रात्रिस्त्रियामा क्षणदा क्षपा ।

स. स. स. स. स.
विभावरीतमस्विन्यौ रजनी यामिनी तमी ॥ ४ ॥

प्राह्ण, अपराह्ण, मध्याह्ण—इनमें प्रातःकाल से लेकर दोपहर तक 'प्राह्ण' कहा जाता है । ठीक दोपहर को 'मध्याह्ण' व तीसरे पहर को 'अपराह्ण' कहते हैं और जब इन तीनों को एक शब्द से कहना होता है तो 'त्रिसन्ध्य' वा 'त्रिसन्ध्या' कहते हैं । यह एक दिनान्त मध्यों का नाम है । शर्वरी, शार्वरी, निशा, निशीथिनी, रात्रि—रात्री, त्रियामा, क्षणदा, क्षपा, विभावरी, तमस्विनी, रजनी, रजनि, यामिनी, तमि—तमी 'तमा' भी ये बारह रात्रि के नाम हैं ॥ ३ । ४ ॥

अँधेरी राति स. स. स.
चौदनीराति तमिस्रा तामसी रात्रिर्ज्योत्स्नी (चन्द्रिकयान्विता) ।

पूर्व व परदिन संयुत राति स.
(आगामिवर्तमानाहर्गुक्रायां निशि) पक्षिणी ॥ ५ ॥

जो बड़े अँधेरे से संयुक्त रात्रि है उसको 'तमिस्रा' कहते हैं यह १ बड़ी अँधेरी राति का नाम है । अथवा तमिस्रा व तामसी ये ३ नाम अँधेरी राति के कहाते हैं

और जो चाँदनीसे संयुक्त रात्रि है उसे 'ज्यौत्स्नी' कहते हैं यह १ चाँदनी राति का नाम है । पूर्व व परदिन से युक्त रात्रि को 'पक्षिणी' कहते हैं यह १ दो दिन के बीच में प्राप्त हुई राति का नाम है ॥ ५ ॥

रात्रिसमूह प्रदोष न. पु. न. गणरात्रं(निशाबह्वथः) प्रदोषो रजनीमुखम् ।

आधी रात पहर पु. पु. पु. पु. अर्धरात्रनिशीथौ द्वौ द्वौ यामप्रहरौ(समौ) ॥ ६ ॥

बहुत रात्रियों को 'गणरात्र' कहते हैं यह १ रात्रिसमुदाय का नाम है । प्रदोष, रजनीमुख ये २ रात्र्यारम्भ के नाम हैं । अर्धरात्र, निशीथ ये २ आधी-रात्रि के नाम हैं । ये दोनों समानार्थ व समानलिङ्ग कहाते हैं और याम, प्रहर ये भी दोनों समानार्थ व समानलिङ्ग कहे जाते हैं । ये २ पहर यानी रात्रि व दिनके आठवें भागके नाम हैं ॥ ६ ॥

पर्वसन्धि अमा व पूर्णिमा पु. (स)पर्वसन्धिः(प्रतिपत्पञ्चदशयोर्यदन्तरम्) ।

पूर्यमासी स. स. स. पक्षान्तौ पञ्चदशौ द्वे पौर्णमासी(तु)पूर्णिमा ॥ ७ ॥

परेवा और पौर्णमासी का जो अन्तर (मध्य) है उसे पर्व या सन्धि या पर्व-सन्धि कहते हैं यह १ पर्वसन्धि का नाम है । पूर्णिमा, अमावास्या दोनों पक्षान्त कहाती हैं अथवा पक्षान्त, पञ्चदशी ये २ अमा व पूर्णिमा के नाम हैं और 'पौर्णमासी-पूर्णामासी-पूर्णिमासी-पूर्णिमा-पूर्णामा-पौर्णिमा' ये २ पौर्णमासी के नाम हैं ॥ ७ ॥

कलाहीन पु. स. स. (कलाहीने)सानुमतिः (पूर्णे) राकां (निशाकरे) ।

साहित पूर्णिमा स. पु. पु. अमावास्या अमावास्या त्वमावस्या दर्शःसूर्येन्दुसंगमः ॥ ८ ॥

उदयकाल में परेवा के योग से कलाहीन चन्द्रमा के रहने पर वह पूर्णमासी 'अनु-मति' कहाती है यह १ कलाहीन पूर्णिमा का नाम है । और पूर्णचन्द्रमा के रहन पर वही पूर्णिमा 'राका' कही जाती है यह १ कलासाहित पूर्णिमा का नाम है । और अमावास्या, अमावस्या, अमावासी, अमावसी, अमामासी, अमामसी, अमा, दर्श और सूर्येन्दुसंगम ये चार अमावस्या के नाम हैं ॥ ८ ॥

अमा विशेष (सादृष्टेन्दुः) सिनीवाली (सानष्टेन्दुकला) कुहूः ।

कुहू पु. उपरागो ग्रहो (राहुग्रस्ते त्विन्दौ च पूष्णि च) ॥ ६ ॥

महर्ष पु. धूमकेतु सोपपन्नोपरक्तौ द्वावग्न्युत्पात उपाहितः ।

चतुर्दशी के योग से जिस अमावास्या में चन्द्रमा देखा गया हो उसे सिनीवाली कहते हैं व जिसमें चन्द्रकला नष्ट होगई हो उसे कुहू या कुहु कहते हैं ये २ अमा-विशेष के नाम हैं । राहु भी चन्द्रमा व सूर्य के ग्रस्त होने पर उपराग, ग्रह, सोपपन्न, उपरक्त ये ४ ग्रहण के नाम हैं । अग्न्युत्पात, उपाहित ये २ आकाशादिकों में अग्नि-कृत उत्पत्ति के नाम हैं । या जो तारा टूटकर गिरता है उसे कहते हैं या धूमकेतु तथा उत्का को भी कहते हैं ॥ ६ । १ ॥

एकत्र स्थित पु. चन्द्र सूर्य (एकयोक्त्या) पुष्पवन्तौ (दिवाकरनिशाकरौ) ॥ १० ॥

साधारण वचन से सूर्य चन्द्रमा पुष्पवन्त कहाते हैं यह मतुवन्त व अकारान्त भी कहाता है और कहीं पुष्पदन्त भी है यह १ एकत्र स्थित चन्द्रसूर्य का नाम है ॥ १० ॥

काष्ठा, कला, स. (अष्टादश निमेषास्तु) काष्ठा ' त्रिंशत्तु ताः ' कला ।

क्षुब्ध, मुहूर्त पु. त्रिंशत्क्षणस्ते तु मुहूर्तो (द्वादशास्त्रियाम्) ॥ ११ ॥

दो क्षणों का लव कहाता है और दो लवों का निमेष इत्यादि शास्त्रसिद्ध अठारह निमेषों की काष्ठा होती है तीस काष्ठाओं की कला कहाती है व तीस कलाओं का क्षण होता है और बारह क्षणों का मुहूर्त कहा जाता है यह खिलिङ्ग में नहीं होता है वरन पुं. नपुंसक में रहता है यह एक २ काष्ठादिकों का नाम है ॥ ११ ॥

पु.न. पु. ते तु त्रिंशदहोरात्रः पक्ष (स्ते दशपञ्च च) ।

पक्ष पु. पक्षमेद पु. मास पु. पक्षौ पूर्वापरौ शुक्लकृष्णौ मासस्तु तावुभौ ॥ १२ ॥

उन तीस मुहूर्तों का 'अहोरात्र' होता है व उन पन्द्रह अहोरात्रों का 'पक्ष' कहा

१ जो पूर्व अमावास्या है वह सिनीवाली और जो उत्तर अमावास्या है उसे कुहू कहते हैं यह श्रुति का प्रमाण है ॥

३ निमेषोऽष्टिपन्दनकालः " अष्टिपन्दनपरिधेपो निमेषः परिकीर्तितः " इत्युक्तम् ॥

जाता है और शुक्लपक्ष पूर्वसंज्ञक व कृष्णपक्ष अपरसंज्ञक कहाता है और उन दोनों पक्षों का मास और (माम्) भी होता है यह एक २ अहोरात्रादिकों का नाम है ॥ १२ ॥

श्रुत^{पु.} (द्वौ द्वौ मार्गादिमासौ) स्यादृतुस्तैरयनं (त्रिभिः) ।

आधा वर्ष

वर्ष

(अयनेद्वे) (गतिरुदग्दक्षिणार्कस्य) वत्सरः ॥ १३ ॥

मार्गशीर्ष आदि दो २ मासों का श्रुत होता है वह हेमन्तादिसंज्ञक है और कहीं “माघादी” भी पाठ है उसका जो उपक्रम है वह अयनारम्भ के वश से जानना चाहिये यह १ श्रुत का नाम है । उन तीन श्रुतों का ‘अयन’ होता है यह १ अयन का नाम है । वह अयन सूर्य की गतिभेद से दो भाँति का है जैसे कि सूर्य की उत्तर गति को ‘उत्तरायण’ और दक्षिण गति को ‘दक्षिणायन’ कहते हैं इस भाँति दो अयनों का बरस कहा जाता है ॥ १३ ॥

समरात्रिदिन^{न.} (समरात्रिदिवे काले) विषुवद्विषुवं (च तत्) ।

विषुवत्, विषुवान्, विपुन, विपुय और विपुण ये २ समरात्रिदिन के नाम हैं । यानी जिस समय तुला की संक्रान्ति और मेष की संक्रान्ति में दिन व राति बराबर होते हैं उस काल को कहते हैं ॥

अगहन^{पु.} मार्गशीर्षे^{पु.} सहा मार्ग^{पु.} आम्रहायणिकश्च सः ॥ १४ ॥

मार्गशीर्ष, सहा (स्) सह, मार्ग, आम्रहायणिक और अमहायण भी ये ४ मार्गमास (अगहन) के नाम हैं ॥ १४ ॥

पौष, माघ,^{पु. २} पौषे^{पु.} तैष^{पु.} सहस्यौ^{पु.} (द्वौ) तपामाघे^{पु.} (ऽथ) फाल्गुने ।

फाल्गुन, चैत^{पु.} स्यात्तपस्यः^{पु.} फाल्गुनिकः^{पु.} स्याच्चैत्रे^{पु.} चैत्रिको^{पु.} मधुः ॥ १५ ॥

पौष, तैष, सहस्य ये ३ पौष (पूस्) मास के नाम हैं । तपाः (स्) तप, माघ ये २ माघमास के नाम हैं । फाल्गुन, तपस्य, फाल्गुनिक ये ३ फाल्गुनमास के नाम हैं । और चैत्र, चैत्रिक, मधु ये ३ चैत्रमास (चैतमहीना) के नाम हैं ॥ १५ ॥

वैशाख^{पु.} ज्येष्ठ^{पु.} वैशाखे^{पु.} माधवो^{पु.} राधो^{पु.} ज्यैष्ठे^{पु.} शुक्रश्शुचि^{पु.} (स्त्वयम्) ।

आषाढ^{पु.} श्रावण^{पु.} तु स्यान्नभाः^{पु.} श्रावणिकश्च^{पु.} (सः) ॥ १६ ॥

१ ‘अर्कस्य’ इति ग्रहणं चान्द्रत्वव्यावृत्त्यर्थं पश्चादिकं तु चान्द्रगुक्तम्—अयनन्तु न चान्द्रं किन्तु सौरमेवेति दीक्षितः ॥

२ पुण्यमुक्ता पौषमासी पौषी मासे तु यत्र सा । नाम्ना स पौषो माघाद्याश्चैवमेकादशापरे ॥ १ ॥ इति कृत्वा तत्त्वानां व्याख्यातम् ॥

वैशाख, माघ, राघ ये ३ वैशाखमासके नाम हैं । ज्येष्ठ 'ज्येष्ठ' और शुक्ल ये २ ज्येष्ठमास के नाम हैं । शुचि, आषाढ 'आषाढक' ये २ आषाढ मास के नाम हैं । और आवण, नभाः (स्) नभ, आवणिक—ये ३ आवण मास के नाम हैं ॥ १६ ॥

भादौ, ^{पु.} स्युर्नभस्यप्रौष्ठपदभाद्रभाद्रपदाः (समाः) ।

कुआर, ^{पु.} स्यादाश्विनइषोप्याश्वयुजोपि स्यात्तु कार्तिकः ॥ १७ ॥

नभस्य, प्रौष्ठपद, भाद्र, भाद्रपद—ये ४ भाद्रमास (भादों) के नाम हैं । ये समानार्थ व समानलिङ्ग कहाते हैं और आश्विन, इष, आश्वयुज 'अश्वयुज' ये ३ आश्विन (कार) मास के नाम हैं ॥ १७ ॥

हेमन्त ^{पु.} बाहुलोजौ कार्तिकिको हेमन्तः शिशिरो (ऽस्त्रियाम्) ।

शिशिर ^{पु.} वसन्ते पुष्पसमयः सुरभिर्ग्रीष्म ऊष्मकः ॥ १८ ॥

वसन्त ^{पु.} निदाघ उष्णोपगम उष्ण ऊष्मागमस्तपः ।

कार्तिक, बाहुल, ऊर्ज, कार्तिकिक ये ४ कार्तिक (कार्तिक) मास के नाम हैं । हेमन्त यह १ मार्ग पौष से उपजे (हेमन्त) ऋतु का नाम है । शिशिर खीलिङ्ग में नहीं किन्तु पुं. नपुंसक में होता है यह १ माघ फाल्गुन से उपजे शिशिर ऋतु का नाम है । वसन्त, पुष्पसमय, सुरभि ये ३ चैत्र वैशाख से उपजे (वसन्त) ऋतु के नाम हैं । और ग्रीष्म, ऊष्मक—ऊष्मा—ऊष्म, निदाघ, उष्णोपगम, उष्ण, ऊष्मागम और तप ये सात ज्येष्ठ आषाढ से उपजे (ग्रीष्म) ऋतु के नाम हैं ॥ १८ ॥

वर्षा ^{स.} स्त्रियां प्रावृट्(स्त्रियांभूम्नि)वर्षा(अथ)शरस्त्रियाम् ॥ १९ ॥

शरत् ^{पु.} (षडमी ऋतवः पुंसि मार्गादीनां युगैः क्रमात्) ।

प्रावृट्—'प्रावृष' वर्षा ये २ वर्षा ऋतुके नाम हैं । उनमें 'प्रावृट्' शब्द पकारान्त होकर खीलिङ्ग में रहता है और वर्षा शब्द खीलिङ्ग व बहुवचनान्त है और शरद्—शरदा यह १ शरद् ऋतु का नाम है । ये हेमन्त आदि ६ ऋतुसंज्ञक पुंसिङ्ग में रहते हैं और वे मार्गशीर्षादि मासों के षट्‌युगों के क्रम से जानना चाहिये यह १ हेमन्तादि षट्‌ऋतुओं का नाम है ॥ १९ ॥

पङ्क, पाप्मा, (न) पाप, किल्बिष, कल्मष, कलुष, वृजिन, एनः (स्) अघ, अंहः (स्) अङ्गस्, दुरित और दुष्कृत ये १२ पाप के नाम हैं। इनमें पङ्क शब्द स्त्रीलिङ्ग नहीं है बरन पुं. नपुंसक में होता है और नकारान्त पाप्मा पुलिङ्ग में रहता है ॥ २३ ॥

पु. न. न. पु.
पुण्य स्याद्धर्ममस्त्रियां पुण्यश्रेयसी सुकृतं वृषः ।

स. स. पु. पु. पु. पु.
हर्ष मुत्प्रीतिः प्रमदो हर्षप्रमोदामोदसंमदाः ॥ २४ ॥

पु. पु. न. न. न.
स्यादानन्दधुरानन्दः शर्मशातसुखानि (च) ।

धर्म, पुण्य, श्रेयस्, सुकृत और वृष ये ५ सुकृत यानी धर्म या पुण्य के नाम हैं। इनमें धर्म शब्द पुं. नपुंसक में है और वृष पुलिङ्ग में है और पुण्य शब्द जब विशेषण होता है तो इसका लिङ्ग विशेष्य के समान होजाता है और—मुत्—मुदा मुदिता, प्रीति, प्रमद, हर्ष, प्रमोद, आमोद, संमद, आनन्दथु, आनन्द, आनन्दि—नन्दि, शर्म, शात—सात, सुख—सौख्य ये १२ सुख या हर्ष के नाम हैं ॥ २४ । ३ ॥

न. न. न. न. न. न.
कल्याण श्वःश्रेयसं शिवं भद्रं कल्याणं मङ्गलं शुभम् ॥ २५ ॥

न. न. न. न. पु. न.
भावुकं भविकं भव्यं कुशलं क्षेम (मस्त्रियाम्) ।

न.
शस्तं (चाथ त्रिषु द्रव्ये)पापं पुण्यं सुखादि (च) ॥ २६ ॥

श्वःश्रेयस, शिव, भद्र—भद—भन्द, शिव, कल्याण स्त्री—“कल्याणी”, मङ्गल, शुभ, भावुक, भविक, भव्य, कुशल—कुषल—कुसल, क्षेम और शस्त ये १२ कल्याण-मात्र के नाम हैं। इनमें क्षेम व शस्त पुं. नपुंसक हैं और पाप पुण्य शब्द व सुखादि तथा शस्तान्त शब्दजात द्रव्य में वर्तमान तीनों लिङ्गों में होते हैं यानी इनका लिङ्ग विशेष्य के समान कहा जाता है जैसे कि, “पापो बैरी पापा बैरिणी, पापं धनम्” आदि होते हैं ॥ २५ । २६ ॥

स. स. पु. न. पु. पु.
अष्टा या मतल्लिका मचर्चिका प्रकाण्डमुद्धतल्लजौ ।

प्रशस्त

शुभभाग्य

पु.
प्रशस्तवाचकान्यमून्ययः (शुभावहो विधिः) ॥ २७ ॥

मतल्लिका, मचर्चिका, प्रकाण्ड, उद्ध और तल्लज ये ५ प्रशस्त (अष्टे) के नाम हैं। जैसे कि प्रशस्तो ब्राह्मणो ब्राह्मणमतल्लिका, प्रशस्तो ब्राह्मणो ब्राह्मण-

मच्चर्चिका, प्रशस्ता गौर्गोप्रकाण्डः, प्रशस्तो मनुष्यो मनुष्योद्घः, प्रशस्ता कुमारी कु-
 मारीतल्लजः—ये पांचो नित्य द्रव्यवाची हैं । लिङ्गान्तर के साथ होने पर भी अपने
 लिङ्गको नहीं त्यागते हैं इसीसे ‘प्रशंसावचनैश्च’ (२।१।६६) इस सूत्र से “कृष्णासर्पः,
 वाप्यश्वः” आदि के समान नित्यसमास हैं और उद्घ शब्द तो समासरहित भी
 है ये ५ प्रशस्त के नाम हैं । और शुभप्रापक भाग्य को ‘अग्य’ कहते हैं वह अदन्त
 पुंलिङ्ग एकवचनान्त है यह १ शुभभाग्य का नाम है ॥ २७ ॥

	पु.न.	पु.न.	पु.न.	पु.न.	स.	पु.
भाग्य	द्वैवं	दिष्टं	भागधेयं	भाग्यं	(स्त्री)	नियतिर्विधिः ।
कारण	पु.	न.	न.		न.	
आदिकारण	हेतु	(र्ना)	कारणं	बीजं	(निदानं)	त्वादिकारणम् ॥ २८ ॥

द्वैव, दिष्ट, भागधेय, भाग्य, नियति और विधि ये ६ प्राक्तन (पूर्वजन्म) के शुभ
 व अशुभ कर्म के नाम हैं । इनमें नियति स्त्रीलिङ्ग व विधि पुंलिङ्ग है । हेतु, कारण,
 बीज ये ३ कारणमात्र के नाम हैं । इनमें हेतुशब्द पुंलिङ्ग है और निदान, आदि
 कारण ये २ मुख्यकारण के नाम हैं ॥ २८ ॥

	पु.	पु.	पु.	न.	स.
चैतन्यपुरुष	क्षेत्रज्ञ	आत्मा	पुरुषः	प्रधानं	प्रकृतिः(स्त्रियाम्) ।
प्रकृति			स.	न.	न.
अवस्था गुण	(विशेषः)	कालिको	वस्था	(गुणाः)	सत्त्वं रजस्तमः ॥ २९ ॥

क्षेत्रज्ञ, आत्मा, पुरुष—‘पुरुष’ ये ३ आत्मा यानी शरीर के अधिदेवता के नाम हैं ।
 प्रधान, प्रकृति ये २ सत्त्वादिगुणों की साम्यावस्था के नाम हैं और जो कालिक यानी
 कालकृत देहादि का यौवन आदि विशेष है उसे अवस्था कहते हैं यह १ अवस्था
 का नाम है । और सत्त्व, रजः (स्) तमः (स्) ये ३ गुण कहाते हैं और ये तीनों
 प्रकृति के धर्म भी कहे जाते हैं इन तीनों का भी एक २ नाम है ॥ २९ ॥

	न.	न.	न.	स.	स.	पु.
जन्म	जनुर्जनन	जन्मानि	जनिरुत्पत्तिरुद्भवः ।			

	पु.	पु.	पु.	पु.	पु.	पु.
जीवधारी	प्राणी	तु	चेतनो	जन्मी	जन्तु	जन्युशरीरिणः ॥ ३० ॥

जनुः (स्) जनन, जन्म (न्) या जन्म अदन्त भी है । जनि, उत्पत्ति और
 उद्भव ये ६ उत्पत्ति के नाम हैं । इनमें जनि शब्द उत्पत्ति के साहचर्य से स्त्रीलिङ्ग
 है और “किमर्थं जनिना जन्तोः” आदि प्रयोगों के दर्शन से पुंलिङ्ग भी कहाता
 है और प्राणी (न्) चेतन, जन्मी (न्) जन्तु, जन्यु और शरीरी (न्) ये ६
 प्राणियों के नाम हैं ॥ ३० ॥

जाति व्यक्ति स. न. न. स. स.
 जातिर्जातं च सामान्यं व्यक्तिस्तु पृथगात्मता ।
 मन चित्तन्तु चेतो हृदयं स्वान्तं हृन्मानसं मनः ॥ ३१ ॥
 इति कालवर्गः ॥

जाति, जात, सामान्य ये ३ घटत्व आदि जाति के नाम हैं। व्यक्ति, पृथगात्मता ये २ घट आदि व्यक्ति या स्वरूप के नाम हैं। और चित्त, चेतः (स्) हृदय, स्वान्त, हृत्, मानस और मनः (स्) और कितेक आचार्य (अर्धर्धादि) मानकर पुंलिङ्ग भी कहते हैं ये ७ मन के नाम हैं ॥ ३१ ॥

इति कालवर्गविवरणम् ॥

अथ धीवर्गो व्याख्यायते ॥

बुद्धि या स. स. स. स. स. स.
 बुद्धिर्मनीषा धिषणा धीः प्रज्ञा शेमुषी मतिः ।
 अत्रल स. स. स. स. स. स.
 प्रेक्षोपलब्धिश्चित्संवित्प्रतिपज्ज्ञप्तिचेतनाः ॥ १ ॥

बुद्धि, मनीषा, धिषणा, धी, प्रज्ञा—‘प्राज्ञा’ शेमुषी—सेमुषी, मति, प्रेक्षा, उपलब्धि, चित्, संवित्, प्रतिपत्, ज्ञप्ति और चेतना ये १४ बुद्धि के नाम हैं। इनमें चित् तान्त और संवित्, प्रतिपत् दान्त कहाते हैं ॥ १ ॥

मेधा स. पु.
 संकल्प (धीर्धारणावती) मेधा संकल्पः (कर्म मानसम्) ।
 सुखेच्छा पु. पु. स. स. स.
 विचार चित्ताभोगो मनस्कारश्चर्चा संख्या विचारणा ॥ २ ॥

धारणावती बुद्धि को मेधा कहते हैं यह १ धारणावती बुद्धि का नाम है। मानस व्यापार को संकल्प व विकल्प भी कहते हैं यह १ मनोव्यापार का नाम है। चित्ताभोग, मनस्कार ये २ सुखादि में परायण मन के नाम हैं। और चर्चा, संख्या, विचारणा ये तीन विचार के नाम हैं ॥ २ ॥

तर्क सु. पु. पु. स. पु.
 सदेह पु. पु. पु. पु.
 निश्चय अध्याहारस्तर्क ऊहो विचिकित्सा तु संशयः ।
 संदेहद्वापरो चाथ (समौ) निश्चयनिश्चयो ॥ ३ ॥

१ हृदयस्य “पक्षसिति हृदादेराः प्रभृतिप्रहृणस्य नन्वस्यस्यति ।

२ कृतति कृतवते वा अच्—यनौ पुषोदरादित्वाद्दर्शविपर्ययोः ॥

अध्याहार, तर्क, ऊह ये ३ तर्क के नाम हैं । विचिकित्सा, संशय, सन्देह और द्वापर ये ४ सन्देह “ विरुद्ध अनेक कोटि के अवगाहन करनेवाले ज्ञान ” के नाम हैं । और निर्णय, निश्चय ये दोनों समानार्थ होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ निश्चय-ज्ञान के नाम हैं ॥ ३ ॥

स. पु. न. मिथ्याज्ञान परद्रोह सिद्धान्त भ्रान्तिज्ञान **मिथ्यादृष्टिर्नास्तिकता व्यापादो द्रोहचिन्तनम् ।**
 पु. पु. स. स. पु. **(समौ) सिद्धान्तराद्धान्तौ भ्रान्तिर्मिथ्यामतिभ्रमः ॥४॥**

मिथ्यादृष्टि, नास्तिकता ये २ “ परजोक नहीं है इत्यादि बुद्धि ” यानी मिथ्याज्ञान के नाम हैं । व्यापाद, द्रोहचिन्तन ये २ परद्रोहचिन्तन के नाम हैं । सिद्धान्त, राद्धान्त ये दोनों समानार्थ होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ सिद्धान्त के नाम हैं । और भ्रान्ति, मिथ्यामति, भ्रम ये ३ भ्रमज्ञान के नाम हैं ॥ ४ ॥

स. स. न. पु. पु. पु. अङ्गीकार **संविदागूः प्रतिज्ञानं नियमाश्रवसंश्रवाः ।**
 पु. पु. पु. पु.

अङ्गीकाराभ्युपगमप्रतिश्रवसमाधयः ॥ ५ ॥

संविद, आगू, प्रतिज्ञान, नियम, आश्रव, संश्रव, अङ्गीकार, अभ्युपगम, प्रतिश्रव और समाधि ये १० अङ्गीकार के नाम हैं । इनमें संविद दान्त स्त्रीलिङ्ग है और आगू बधू के समान या क्तिवन्त होनेसे वर्षाभू के समान या रेफान्त होने से धुरू के समान है और समाधि शब्द पुंलिङ्ग है ॥ ५ ॥

न. न. शान विज्ञान **(मोक्षे धी) ज्ञानं (मन्यत्र) विज्ञानं (शिल्पशास्त्रयोः) ।**

स. न. न. न. न. न. मोक्ष **मुक्तिः कैवल्यनिर्वाणश्रेयोनिःश्रेयसामृतम् ॥ ६ ॥**
 पु. पु. न. स. स.

अज्ञान **मोक्षोपवर्गोऽज्ञानमविद्याहंमतिः (स्त्रियाम्) ।**

मोक्ष के विषय में जो बुद्धि है उसे ज्ञान या ‘धी’ कहते हैं यह १ मोक्षविषयक बुद्धि का नाम है । और अन्यविषयिणी शिल्प (कारीगरी) व शास्त्र में जो बुद्धि है उसे विज्ञान कहते हैं यह एक शिल्पादिविषयक बुद्धि का नाम है । और मुक्ति, कैवल्य, निर्वाण, श्रेयः (स) निःश्रेयस, अमृत, मोक्ष, अपवर्ग ये ८ मोक्ष के नाम हैं । अज्ञान, अविद्या, अहंमति ये ३ अज्ञान के नाम हैं ॥ ६ । १ ॥

१ स्थायी पुत्रोऽयमितिज्ञानं भ्रान्तिः, स्थाणुर्वा पुत्रो वायमित्येककोटिकं ज्ञानं संशयः, स्थायी स्थाणु रिति ज्ञानं निश्चयोऽवगन्तव्यः ॥

विषय रूपं शब्दो गन्धरसस्पर्शाश्च विषया (अमी) ॥ ७ ॥

इन्द्रिय गोचरा इन्द्रियार्थाश्च हृषीकं विषयीन्द्रियम् ।

रूप, शब्द, गन्ध, रस, स्पर्श ये ५ विषय-गोचर व इन्द्रियार्थ कहलाते हैं ये रूपादि पांचों के प्रत्येक तीन २ नाम हैं । और हृषीक, विषयि और इन्द्रिय ये ३ चक्षुरादि इन्द्रियों के नाम हैं ॥ ७ । १ ॥

कर्मैन्द्रिय ज्ञानेन्द्रिय कर्मैन्द्रियं (तु पायवादि) मनोनेत्रादि(धीन्द्रियम्) ॥ ८ ॥

रस मीठा तुवरस्तु कषायो(स्त्री) मधुरो लवणः कटुः ।

तीखा आदि तिक्तोऽम्बलश्च रसाः पुंसि (तद्वत्सु षडमी त्रिषु) ॥ ९ ॥

पायु आदि यानी पायु, उपस्थ, पाणि, पाद और वाक् ये पांच कर्मैन्द्रियां क-
हाती हैं और उत्सर्ग, आनन्द, आदान, गति, आल्लाप ये पांच कर्मैन्द्रियों की क्रियायें
हैं और मन, नेत्र आदि यानी मन, कान, नेत्र, जीभ, खाल और नासिका ये ६
ज्ञानेन्द्रियां कहलाती हैं यह एक २ कर्मैन्द्रिय वा ज्ञानेन्द्रियों का नाम है “अब रसों
का निरूपण करते हैं” तुवर, ‘तूवर’ कषाय ये २ स्त्रीलिङ्ग नहीं हैं बरन पुंलिङ्ग व
नपुंसकलिङ्ग कहाते हैं ये २ कषाय (कषैले) रस के नाम हैं । मधुर यह १ मीठे
रस का नाम है । लवण यह १ नोनखरे रस का नाम है । कटु-कटवी, यह एक कडुये
चर्फरे रस का नाम है । तिक्त यह १ तीखे रस का नाम है । अम्बल-अम्बल यह
१ खट्टे रसका नाम है । तूवर आदि ६ रस शब्द वाच्य हैं और वहां तूवर कषाय दोनों
का अस्तीत्व कहा गया है इसलिये इतर शब्दों का लिङ्ग निर्णय कहते हैं कि गुण-
मात्र में मधुर आदि पांच पुंलिङ्ग हैं ये ६ गुणवानों में वर्तमान होकर तीनों लिङ्गों
में रहते हैं इनमें तूवर हड़ आदिकों में, मधुर जलादि में, लवण सैन्धवादि में, कटु
सरिचादि में, तिक्त निम्बादि में और अम्बल इमली आदिकों में विल्यात है ॥ ८ । ९ ॥

गन्ध या (विमर्दोत्थे) परिमलो (गन्धे जनमनोहरे) ।

अमोदः(सोतिनिहारी)(वाच्यलिङ्गत्वमागुणात्) ॥ १० ॥

सुरत आदि विमर्द से उठे “माल्यादिकों में” व घिसने की आगि से उपजे
“चन्दनादि में” व जनों के मन हरनेवाले गन्ध (सुशबू) में ‘परिमल’ कहाता है यह १
परिमल गन्ध का नाम है । और यदि वही परिमल गन्ध अतिनिहारी यानी अत्यन्त मनो-

हर हो तो 'आमोद' कहाता है यह १ आमोद गन्धका नाम है । इससे आगे " गुणे शुक्लादयः" इससे पूर्व वाच्यलिङ्गता का अधिकार किया जाता है ॥ १० ॥

वही दूर जाने वाला सुगन्ध वड़ा सुगन्ध पान की गन्ध ^{पु.}समाकर्षी ^{पु.}तु ^{पु.}निर्हारी ^{पु.}सुरभिर्ग्राणतर्पणः ।

इष्टगन्धः सुगन्धिः स्यादामोदी मुखवासनः ॥ ११ ॥

समाकर्षी (र्षिन्) निर्हारी (रिन्) ये २ दूर जानेवाले गन्ध के नाम हैं । सुरभि—सुरभी, ग्राणतर्पण, इष्टगन्ध, सुगन्धि ये ४ इष्टगन्ध के नाम हैं । और आमोदी, मुखवासन ये २ मुखवास गुटिकादि के नाम हैं । शब्दार्णव में कहा है (कस्तूरिकायामामोदः कर्पूरमुखवासनः । बकुले स्यात्परिमलश्चम्पके सुरभिस्तथा) कस्तूरी में आमोद, कपूर में मुखवासन, बकुल में परिमल और चम्पक में सुरभिगन्ध रहता है ॥ ११ ॥

दुर्गन्ध विनापके मांस का गन्ध ^{पु.}पूतिगन्धिस्तु ^{पु.}दुर्गन्धो ^{न.}विस्त्रं ^{न.}(स्या) दामगन्धि (यत्) ।

पूतिगन्धि, दुर्गन्ध ये २ दुर्गन्ध (बदबू) के नाम हैं और जो कच्चे मांसादि का गन्ध है उसे विस्त्र, या विश्र कहते हैं अथवा विस्त्र, आमगन्धि ये २ कच्चे मांसादिकी गन्ध के नाम हैं ॥

सफ़ेद या ^{पु.}शुक्ल ^{पु.}शुभ्र ^{पु.}शुचि ^{पु. १}श्वेत ^{पु.}विशद ^{पु.}श्येत ^{पु.}पाण्डुराः ॥ १२ ॥

उज्जला ^{पु.}अवदातः ^{पु.}सितो ^{पु.}गौरो ^{पु.}वलक्षो ^{पु.}धवलो ^{पु.}ऽर्जुनः ।

शुक्ल, शुभ्र, शुचि, श्वेत—श्वेता, विशद, विषद, श्येत—श्येता—श्येनी, पाण्डुर, "पाण्डुर", अवदात, सित—सिता, गौर, वलक्ष, अवलक्ष, धवल और अर्जुन ये १३ सफ़ेद वर्ण के नाम हैं ॥ १२ । १ ॥

कुछ उज्जला ^{पु.}हरियाः ^{पु.}पाण्डुरः ^{पु.}पाण्डु ^{पु.}(रीषत्पाण्डुस्तु) ^{पु.}धूसरः ॥ १३ ॥

ब पीला कुछ ^{पु.}कृष्णो ^{पु.}नीला ^{पु.}सित ^{पु.}श्याम ^{पु.}काल ^{पु.}श्यामल ^{पु.}मेचकाः ।

हरिया, पाण्डुर, पाण्डु ये ३ पीलेसे मिले सफ़ेद वर्ण के नाम हैं । और कुछ एक पीला धूसर कहाता है अथवा र्षत्पाण्डु, धूसर ये २ थोड़े सफ़ेद के नाम हैं । और कृष्ण, नील—नीला, असित, श्याम, काल, श्यामल, मेचक ये ७ श्यामवर्ण के नाम हैं ॥ १३ । १ ॥

१ " श्वेतस्तु समपीतोत्तौ रक्तेतजपाकचिः । वलक्षस्तु सितः शावः कदलीकुसुमोपमः ॥ अर्जुनस्तु सितः कृष्णलेखावान् कुमुदः ॥ पाण्डुस्तु पीतभागार्धः केतकीधूलिसन्निभः " (इति शब्दार्थः) ॥

पीला पु. पु. पु. पु. पु. पु.
हारा पु.
लाल पु. पु. पु. पु. पु.
लालकमलसमरोहितोलोहितोरक्तः शोणः कोकनदच्छविः ।

पीत, गौर, हरिद्राभ ये ३ पीले वर्ण के नाम हैं । पालाश, हरित, हरित् ये ३ हरे वर्ण के नाम हैं । इनमें हरित् तान्त है हरिता—हरिणी स्त्रीलिङ्ग में होता है रोहित—रोहिता, रोहिणी, लोहित—लोहिता—लोहिनी, रक्तरक्ता ये ३ लालवर्ण के नाम हैं । और शोण—शोणा—शोणी, कोकनदच्छवि ये २ लालकमल के समान वर्ण के नाम हैं ॥ १४ । ३ ॥

थोड़ा लाल पु. उजला लाल पु. (अव्यक्तराग) स्वरुणः (श्वेतरक्तस्तु) पाटलः ॥ १५ ॥
वानरसमपीला पु. धूमिल पु. श्यावः स्यात्कपिशो धूम्रधूमलौ कृष्णलोहिते ।

अव्यक्तराग, अरुण ये २ कुछेक लालवर्ण के नाम हैं । श्वेतरक्त, पाटल ये २ सफेद से मिले लालवर्ण के नाम हैं । श्याव, कपिश ये २ काले से मिले पीले वर्ण के नाम हैं और धूम्र, धूमल, कृष्णलोहित ये ३ काले से मिले लालवर्ण के नाम हैं ॥ १५ । ३ ॥

पीला पु. पु. पु. पु. पु. पु.
कडारः कपिलः पिङ्गपिशङ्गौ कटु पु. ॥ १६ ॥

चित्रविचित्र पु.न. पु. पु. पु. पु. पु.
चित्रं किर्मीरकल्माषशबलैताश्च कर्बुरे ।

“गुणे ाक्कादयः पुंसि गुणिलिङ्गास्तु तद्वति” ॥ १७ ॥

इति धीवर्गः ॥

कडार, कपिल, पिङ्ग, पिशङ्ग—पिशङ्गा, कटु या बभ्रु, पिङ्गल, पिङ्गला ये ६ पीले वर्ण के नाम हैं । ये गौरे बालक या महर्षि आदिकों की जटा में बिल्यात हैं । चित्र—चित्रा, किर्मीर—‘कमीर’, कल्माष, शबल, एत—एता—एनी, कर्बुर और कर्बुरा ये ६ चितकबरे या चित्र विचित्र वर्ण के नाम हैं । शुक्ल आदि शब्द गुणमात्र में वर्तमान होते हुए पुंलिङ्ग में होते हैं और गुणवान् में वर्तमान शुक्लादि विशेष्य के समान लिङ्ग में रहते हैं जैसे ‘शुक्लं वस्त्रम्’ यहां वस्त्र के समान नपुंसक हुआ ‘शुक्लः पटः’ इसमें पट के समान पुंलिङ्ग हुआ और ‘शुक्ला शाटी’ इसमें शाटी के समान स्त्रीलिङ्ग हुआ इत्यादि जानना चाहिये ॥ १६ । १७ ॥

इति धीवर्गविवरणम् ॥

अथ शब्दादिवर्गो व्याख्यायते ॥

सरस्वती ^{स. स. स. स. स. स.} ब्राह्मी तु भारती भाषा गीर्वाण्वाणी सरस्वती ।

मोलना ^{पु. स. न. न. न. न.} व्याहार उक्तिर्लपितं भाषितं वचनं वचः ॥ १ ॥

ब्राह्मी, 'ब्राह्मणी' भारती, भाषा, गीः (र्) गिरा, वाक्, वाणी—वाणि, सरस्वती ये ७ वाग्देवता (सरस्वती) के नाम हैं । व्याहार, उक्ति, लपित, भाषित, वचन और वचः (स्) ये ६ वचन के नाम हैं और कितेक आचार्य ब्राह्मी आदि १३ वचन के पर्याय कहते हैं ॥ १ ॥

अपशब्द ^{पु. पु. पु. पु.} शब्द अपभ्रंशोपशब्दः स्या (च्छास्त्रे) शब्द (स्तु) वाचकः ।

अपभ्रंश, अपशब्द ये २ व्याकरण से नहीं सिद्ध हुए । गात्री—गोता व गोणी आदि अपशब्द के नाम हैं और व्याकरण आदि शास्त्र में जो वाचकशब्द हैं वह शब्द कहाता है जैसे कि ओत प्रोत तन्तुओं का वाचक पट कहा जाता है यह १ शब्द का नाम है ॥

वाक्य ^{न.} (तिङ्मुबन्तचयो) वाक्यं क्रिया (वा) कारकान्विता ॥ २ ॥

तिङ्गु व मुबन्तके पदसमूह को वाक्य कहते हैं जैसे सुबन्तचय (चैत्रेण शयित-व्यम्) व जैसे तिङ्गुन्तचय (पचति भवति, पाको भवतीत्यर्थः) और जैसे सुमिङ्गुन्तचय ' चैत्रः पचति ' अथवा कारकविशिष्ट क्रिया को वाक्य कहते हैं जैसे (यज्ञदत्त ! घटमानय, गां पालय घासादिना) ओ यज्ञदत्त ! घट लावो, व घास आदिकों से गौकी पालना करो यहां कारकविशिष्ट क्रियाबोधक शब्दजात वाक्य हुआ यह १ वाक्य का नाम है ॥ २ ॥

वेद धर्म ^{स. पु. पु. स. पु.} श्रुतिः (स्त्री) वेद आम्नाय त्रयी धर्मस्तु (तद्विधिः) ।

श्रुति, वेद, आम्नाय, त्रयी ये ४ वेद के नाम हैं । इनमें श्रुति और त्रयी ये २ स्त्रीलिङ्ग हैं और वेद व आम्नाय पुंलिङ्ग कहाते हैं । उस वेद से विधान किया हुआ यज्ञादि कर्म धर्म कहाता है यह १ वेदविहित कर्म का नाम है ॥

१ प्रयुज्यमानमप्रयुज्यमानं वाक्यान् प्रयुज्यमानैरप्रयुज्यमानैर्वा कर्त्रादिभिर्विशेषणैः सहितं वाक्य-पुण्यते यथा ' धर्मो वो रक्षतु ' अप्रयुज्यमानमाख्यातं यथा ' शीलन्ते स्वम् ' अत्र सर्वपदेषु चास्ति वाक्यश-क्तिरिति गम्यते अप्रयुज्यमानविशेषणं यथा—' प्रविश ' अत्र गृहमिति गम्यते । अनयोरर्थात्प्रकरणा-द्वा आख्यातादेरप्युक्तयोः आख्यातामित्यत्र चैकत्वस्य विवक्षितत्वात् ' ओदनं पच तव भविष्यती ' त्यादौ वाक्यवैदः । एकतिक् वाक्यमिति भाष्यकारः । आख्यातं सविशेषणं वाक्यमिति वार्तिककारश्चेति ॥

स. न. न. स.
वेदभेद **स्त्रियामृक्सामयजुषी (इतिवेदास्त्रय)स्त्रयी ॥ ३ ॥**

मृक्, साम, यजुः यह एक २ वेदों का नाम है और ये तीनों 'वेदत्रयी' कहाते हैं यह १ तीनों वेद के समूह का नाम है ॥ ३ ॥

वेदाङ्ग, वेदारम्भ, (^१ शिक्षेत्यादि श्रुते) ^{न.} रङ्गमोङ्कारप्रणवौ (^{पु.} समौ) ।
महाभारत आदि, ^{पु.} ^{न.} ^{पु.}

स्वर **इतिहासः पुरावृत्त (मुदात्ताद्यास्त्रयः) स्वराः ॥ ४ ॥**

शिक्षा आदि यानी शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और छन्द ये ६ वेदाङ्ग कहाते हैं यह १ वेदाङ्गों का नाम है । अङ्कार, प्रणव ये दोनों समानार्थ हो कर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ अङ्कार के नाम हैं । इतिहास, पुरावृत्त ये २ पूर्वाचरित-प्रतिपादक महाभारतादि ग्रन्थों के नाम हैं और उदात्त, अनुदात्त, स्वरित ते तीनों स्वर कहाते हैं यह १ उदात्तादि स्वरों का नाम है ॥ ४ ॥

स. स.
न्याय **आन्वीक्षिकी दण्डनीति (स्तर्कविद्यार्थशास्त्रयोः) ।**

कहानी स. न. न.
पुराण **आख्यायिकोपलब्धार्था पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥ ५ ॥**

आन्वीक्षिकी यह १ गौतम आदि की रची तर्कविद्या यानी न्यायशास्त्र का नाम है । दण्डनीति यह १ बृहस्पतिके रचे अर्थशास्त्र यानी नीतिशास्त्र का नाम है । आख्यायिका, उपलब्धार्था ये २ जानी हुई सत्यार्थभूत कथा (कहानी) का नाम है और जिसमें "सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर व वंशयानुचरित " ये पांच लक्षण हों उसे पुराण कहते हैं यानी पुराण, पञ्चलक्षण ये २ व्यासादिप्रणीत मत्स्यपुराण आदिकों के नाम हैं ॥ ५ ॥

स. स. स. ४
कथा, पहेली **" प्रबन्धकल्पना " कथा प्रवल्हिका प्रहेलिका ।**

स. स. स. पु.
स्मृति, संग्रह **स्मृतिस्तु धर्मसंहिता समाह्वतिस्तु संग्रहः ॥ ६ ॥**

प्रबन्धकल्पना, कथा ये २ कादम्बरी, नाटक व रामायण आदि कथा के नाम हैं ।

१ शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं ज्योतिषां गतिः । छन्दोविचित्रितिरित्येतैः षडङ्गो वेद उच्यते ॥

२ "मद्वयं भद्रयं चैव व्रत्रयं वा चतुष्टयम् । अनापलिङ्गकूस्कानि पुराणानि पृषक् पृषक्" (इति देवीभागवते)

३ सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराश्च च । वंशयानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥

४ पानीयं पातुमिच्छामि त्वत्तः कमललोचने । यदि दास्यसि नेच्छामि नो दास्यसि पिबाम्यहम् ॥

प्रवल्हिका—प्रवल्हि—प्रवल्ही, प्रहेलिका—प्रहेलि ये २ दुर्विज्ञानार्थं प्रश्न याने पहेली के नाम हैं । जैसे स्वरूपार्थ के छिपाने से किसी अर्थ को भी ज़ाहिर कर जहां बाहिरी अर्थ का संबन्ध होता है उसे प्रहेलिका (पहेली) कहते हैं । स्मृति, धर्मसंहिता ये २ मन्वादि स्मृतिके नाम हैं और समाहृति, संग्रह ये २ संग्रह ग्रन्थ के नाम हैं ॥ ६ ॥

स. स. स. स.
समस्या पूरा समस्या तु समासार्था किंवदन्ती जनश्रुतिः ।
करना, गौणा स. स. पु. पु. पु.

ज्ञात्वा, वार्ताप्रवृत्तिवृत्तान्त उदन्तः स्यादथाह्वयः ॥ ७ ॥

स. स. न. न. न. १
नाम आख्याह्वे अभिधानं च नामधेयं च नाम च ।

समस्या, समासार्था—‘असमासार्था’ ये २ समस्या के नाम हैं । जैसे “शतचन्द्रं नभस्तजम्” इसका पूर्ण करना जैसे “दामोदरकराघातविह्वलीकृतचेतसा । दृष्टं चाणूरमल्लेन” इससे पूरा हुआ । किंवदन्ती—किंवदन्ति, जनश्रुति ये २ लोकापवाद यानी (गौणा) के नाम हैं । वार्ता, प्रवृत्ति, वृत्तान्त, उदन्त ये ४ वृत्तान्त के नाम हैं और आह्वय, आख्या, आह्वा, अभिधान, अभिधा, अभिख्या—नामधेय, नाम ये ६ संज्ञा के नाम हैं । इनमें आख्या—आह्वा—अभिधा—अभिख्या ये स्त्रीलिङ्ग हैं और नाम यह नान्त है ॥ ७ । १ ॥

पुकारना स. स. न. स.
गङ्गागप हूतिराकारणाह्वानं संहूति (बहुभिःकृता) ॥ ८ ॥
भ्रगका पु. २ पु. पु. न.

आरम्भ विवादो व्यवहारः स्यादुपन्यासस्तु वाङ्मुखम् ।

उदाहरण पु. ३ पु. न. पु.
सौगन्द उपोद्घात उदाहारः शपनं शपथः (पुमान्) ॥ ९ ॥

हूति, आकारणा—आकरणा, आह्वान ये ३ बुलाने या पुकारने के नाम हैं और जो बहुत जनों से की हुई हूति है वह ‘संहूति’ कहाती है । यह १ संहूति यानी गप्प का नाम है । विवाद, व्यवहार—व्यवहरण ये २ कर्ज आदि लेने या देने में भ्रगका के नाम हैं । उपन्यास, वाङ्मुख ये २ वचनारम्भ के नाम हैं । उपोद्घात, उदाहार ये २ चिन्ता या उदाहरण के नाम हैं और शपन, शपथ ये २ सौगन्द के नाम हैं । इनमें ‘शपथ’ पुलिङ्ग में रहता है ॥ ८ । ९ ॥

१ उपाख्यन्तं कृदन्तं च तद्धितं च समासजम् । शब्दादुत्तरणं चैव नाम पञ्चविधं स्मृतम् ॥

२ “मिनानार्थेऽवसंदेहे हरणं हार उच्यते । नानासंदेहहरणाद्व्यवहार इति स्मृतः” (इति कात्यायनः) ॥

३ चिन्तां प्रकृतसिद्धयर्थोपोद्घातं प्रचक्षत इति ॥

पृच्छना सवाल पु. पु. स. न. न.
प्रत्युत्तर जवाब प्रश्नोनुयोगः पृच्छा च प्रतिवाक्योत्तरे (समे) ।
सांच को

कूठ करना पु. न. न.
कूठ दोष मिथ्याभियोगोऽभ्याख्यानमथमिथ्याभिशंसनम् ॥१०॥
लगाना

प्रीतिसे उपजा पु. पु.
शब्द अभिशापः प्रणादस्तु (शब्दस्स्यादनुरागजः) ।

प्रश्न, अनुयोग, पृच्छा ये ३ प्रश्न (सवाल) करने के नाम हैं । इनमें प्रश्न शब्द में “प्रश्ने चासन्नकाले” इस पाणिनीय शास्त्र के प्रमाण से संप्रसारण नहीं होता है । प्रतिवाक्य, उत्तर ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहते हैं । ये २ उत्तर (जवाब) देने के नाम हैं । मिथ्याभियोग, अभ्याख्यान ये २ सबे को मिथ्या करने के नाम हैं अथवा ‘मेरे सौ चाहते हो’ इत्यादि झूठे झगड़े के नाम हैं । मिथ्याभिशंसन, अभिशाप ये २ झूठे दोष लगाने यानी सुरापान आदि मिथ्या पाप प्रकट करने के नाम हैं । प्रीति से उपजे शब्द को ‘प्रणाद’ कहते हैं यह १ विशेष प्रीति से पैदा हुए मुख व कण्ठ आदि के शब्द का नाम है ॥ १० । ३ ॥ *

न. स. स. पु. न. स. स.
यशः कीर्तिः समज्ञा च स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः ॥ ११ ॥
यशः स्तुति
द्विरुक्त न. न. स.
ऊंचे घोषना आम्नेडितं (द्विस्त्रिरुक्त) मुच्चैर्घुष्टं तु घोषणा ।
शोकादि से स.

नोलना काकुः “स्त्रियां विकारो यः शोकभीत्यादिभिर्ध्वनेः” ॥ १२ ॥

यशः (स्) कीर्ति, समज्ञा-समाज्ञा, समज्या-समाज्या ये ३ यश के नाम हैं । स्तव, स्तोत्र, स्तुति, नुति ये ४ स्तुति (बड़ाई करना) के नाम हैं और जो दो तीनबार कहा गया है उसे ‘आम्नेडित’ कहते हैं जैसे (सर्प, सर्प) यह १ दो तीनबार कहने का नाम है । उच्चैर्घुष्ट, घोषणा ये २ ऊंचे स्वर से घोषने या पढ़ने के नाम हैं । शोक, भीति, काम व क्रोधादि की ध्वनि से जो विकार उपजता है उसे ‘काकु’ कहते हैं यह क्षीलिङ्ग में रहता है । यह १ शोक आदि से दोलने का नाम है ॥ ११ । १२ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
निन्दा या अवर्णाक्षेपनिर्वादपरीवा अपवाद (वत्) ।

पु. स. स. स. न.
बुराई करना उपक्रोशो जुगुप्सा च कुत्सा निन्दा च गर्हणे ॥ १३ ॥

अवर्णा, आक्षेप, निर्वाद, परिवाद-परीवाद, अपवाद-अववाद, उपक्रोश, जुगुप्सा, कुत्सा, निन्दा और गर्हण-गर्हा ये १० निन्दा (बुराई करना) के नाम हैं । इनमें ‘अप-वादवत्’ इस वत्प्रत्यय से अवर्णा आदि उपक्रोश पर्यन्त पुलिङ्ग कहाते हैं ॥ १३ ॥

न. पु. न. स.
कठोर,
डराना, **मतिवादः स्याद्भर्त्सनं त्वपकारगीः ।**

न.
स्त्रिभक्तानां **यः सनिन्द उपालम्भ (स्तत्र स्यात्) परिभाषणम् ॥ १४ ॥**

पारुष्य, अतिवाद—अभिवाद ये २ अप्रिय यानी कठोर वचनके नाम हैं। भर्त्सन, अपकारगीः ये २ ‘चोर है तुम्हें मारूंगा’ इत्यादि अपकारार्थ वाक्य के नाम हैं अथवा जो अपकार के लिये कहना है यानी ‘चोर है तुम्हें मारूंगा’ इत्यादि को ‘भर्त्सन’ कहते हैं यह १ डरवाने या घुड़कने का नाम है और जो निन्दा समेत उपालम्भ यानी उल्लाना देना है उसे “परिभाषण” कहते हैं। उपालम्भ दोभांति के हैं। गुण का प्रकाश करना वा निन्दा का प्रकाश करना तहां पहिला जैसे अहो महाकुलीन ! आपको क्या यही उचित है, दूसरा जैसे अहो कुलटानन्दन ! तुम्हें यह ऐसाही उचित है इनमें जो दूसरा है वह “परिभाषण” कहा जाता है यह १ बोलने या स्त्रिभक्ताने का नाम है ॥ १४ ॥

स.न.

निन्दा करना तत्र त्वाक्षारणा यः स्या “दाक्रोशो मैथुनं प्रति” ।
प्रिय बोलना

न. पु. पु.
बकना **स्यादाभाषणमालापः प्रलापो (ऽनर्थकं वचः) ॥ १५ ॥**

मैथुन (रति) के लिये जो आक्रोश (कहना या निन्दा करना) है वहां आक्षारणा—क्षारणा और आक्षारण भी होता है यह १ भोग करने के निमित्त परस्त्री के लिये पुरुष का और परपुरुष के लिये स्त्री का जो आक्रोशन यानी बात चीत करना है उसका नाम है। आभाषण, आलाप ये २ परस्पर संयोजनपूर्वक कहने के नाम हैं और जो अर्थशून्य वचन है उसे प्रलाप कहते हैं। यह १ प्रयोजनशून्य मतवाले आदि के बकने का नाम है ॥ १५ ॥

बार२ कहना पु. स. पु. न.
रोना **अनुलापो मुहुर्भाषा विलापः परिदेवनम् ।**
उल्टा कहना

पु. स. पु.
परस्पर **विप्रलापो विरोधोक्तिः संलापो (भाषणं मिथः) ॥ १६ ॥**
कहना

अनुलाप, मुहुर्भाषा ये २ बारम्बार कहने के नाम हैं। विलाप, परिदेवन—‘परिदेवना’ ये २ रोदनपूर्वक वचन के नाम हैं। विप्रलाप, विरोधोक्ति ये २ परस्पर विरुद्ध वचन के नाम हैं और जो परस्पर उक्ति व प्रत्युक्ति से भाषण होता है उसे ‘संलाप’ कहते हैं और ‘आलाप’ एकही से किया जाता है। यह १ परस्पर कहने का नाम है ॥ १६ ॥

पु. न. पु. पु.
सुन्दर कहना सुप्रलापः सुवचनमपलापस्तु निहवः ।
छिपाना स. न.

दूतका कहना संदेशवाग्वाचिकं स्या “द्वाग्भेदास्तु त्रिषूत्तरे” ॥ १७ ॥

सुप्रलाप, सुवचन ये २ सुन्दर वचन के नाम हैं । अपलाप, निहव ये २ धारण करते हुए नहीं धारता हूं इत्यादि वचन के नाम हैं या छिपाने या नहीं करने के नाम हैं । संदेशवाक्, वाचिक ये २ संदेश वचन के नाम हैं या दूत आदि के मुख से निकले हुए वचन के नाम हैं । इसके आगे कहे जानेवाले वाणी के भेद तीनों लिङ्गों में होते हैं ॥ १७ ॥

पु.स. स.
बुरी वाणी रुशतीवाग “कल्याणी” स्यात्कल्या “तु शुभात्मिका” ।
मली वाणी न. न. न.
मधुर कहना “अत्यर्थमधुरं” सान्त्वं संगतं हृदयंगमम् ॥ १८ ॥
ठीक कहना

जो अकल्याणी वाक् (वाणी) है उसे रुशती-उशती और उषती कहते हैं ऐसेही रुशन्-उशन् व उषन् ‘शब्द’ कहाता है और रुशत्-उशत् व उषत् वचन हैं ये तीनों लिङ्ग में रहते हैं यह १ कल्याणविहीन वाणी का नाम है । जो शुभात्मिका (कल्याणवती) वाणी है उसे ‘कल्या’ या ‘काल्या’ कहते हैं यह १ शुभवाणी का नाम है । जो बड़ा मीठा वचन है उसे ‘सान्त्व’ कहते हैं यह १ अत्यन्त मधुर वचन का नाम है और संगत, हृदयंगम ये २ युक्ति से मिले हुए (ठीक) वचन के नाम हैं ॥ १८ ॥

कठोर वचन न. न. न. न. न.
गमेल्ला वचन निधुरं परुषं ग्राम्यमश्लीलं सूनुतं (प्रिये) ।
प्रिय वसत्य न. न. न.
व अस्तंभव सत्येऽथ संकुलक्लिष्टे परस्परपराहते ॥ १९ ॥
कहना

निधुर, परुष ये २ कर्कश वचन के नाम हैं । ग्राम्य, अश्लील ये २ भांड आदिकों के कहे वचन के नाम हैं । जो प्रिय वसत्य वचन है उसमें ‘सूनुत’ कहा जाता है यह १ ध्यारे व सच्चे वचन का नाम है और परस्पर पराहत में संकुल, क्लिष्ट ये दोनों होते हैं अथवा संकुल, क्लिष्ट और परस्परपराहत ये ३ मेरी “ मा बाँझ है ” इसके समान विरुद्ध अर्थवाले वचन के नाम हैं ॥ १९ ॥

ग्रस्त न. न. न.
धमकाया न. न. न.
शूकसहित न.
अर्थशून्य “लुप्तवर्णपदं” ग्रस्तं निरस्तं त्वरितोदितम् ।
(अम्बूकृतं) सनिष्ठेवमबं स्यादनर्थकम् ॥ २० ॥

लुप्तवर्णपद, प्रस्त ये २ अशक्ति आदि से असंपूर्ण उच्चारित वचन के नाम हैं ।
निरस्त, त्वरितोदित ये २ शीघ्र कहे (धमकाये) हुए वचन के नाम हैं । अम्बूकृत,
सनिष्ठेव—सनिष्ठीव ये २ झार—थूक व कफ समेत वचन के नाम हैं और अवद्ध या
'अवध्य' अनर्थक ये २ समुदायार्थशून्य वचन के नाम हैं ॥ २० ॥

अयोग्य वचन न. न. न. न.
असंभावित **अनक्षरमवाच्यं स्यादाहतं तु मृषार्थकम् ।**
हाससमेत

कहना न. न. न. न.
रतिकूजित **सोल्लुण्ठनं तु सोत्प्रासं मणितं रतिकूजितम् ॥ २१ ॥**

अनक्षर, अवाच्य ये २ निन्दा (कहने के अयोग्य) वचन के नाम हैं । आहत,
मृषार्थक ये २ ' यह बन्ध्या का सुत जाता है ' इत्यादि वचन के नाम हैं अथवा
मृषार्थक जो अत्यन्त अभूतार्थक वचन है वह आहत कहाता है यह १ असंभावित
वचन का नाम है । सोल्लुण्ठन, सोत्प्रास ये २ उपहाससमेत वचन के नाम हैं और
मणित, रतिकूजित ये २ रतिकूजित के नाम हैं ॥ २१ ॥

न. न. न. न.
अस्पष्ट **अथ स्मिष्टमविस्पष्टं वितथं त्वनृतं वचः ।**
असत्य न. न. न. न.

सत्य **सत्यं तथ्यमृतं सम्य "गमूनि त्रिषु तद्वति" ॥ २२ ॥**

स्मिष्ट, अविस्पष्ट ये २ अप्रकटित वचन के नाम हैं । वितथ, अनृत ये २ अनृत
(असत्य) वचन के नाम हैं । अथवा जो अनृत (भूठ) वचन है उसे वितथ क-
हते हैं यह १ भूठे वचन का नाम है और सत्य, तथ्य, मृत, सम्यक् ये ४ सत्य
वचन के नाम हैं । इनमें सम्यक् चकारान्त है ये सत्यादिक सत्यवान् वस्तु में वर्तमान
होते हुए तीनों लिङ्ग में होते हैं जैसे—'सत्यः पुरुषः, सत्या स्त्री, सत्यं कुलम्'
आदि जानना चाहिये ॥ २२ ॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु. पु.
शब्द **शब्दे निनादनिनदध्वनिध्वानरवस्वनाः ।**

पु. पु. पु. पु. पु. पु.
स्वाननिर्घोषनिर्हार्दनादनिस्वाननिस्वनाः ।

पु. पु. पु. पु. पु.
सकलशब्दा **आरवारावसंरावविरावा (अथ) मर्मरः ॥ २३ ॥**

न.
गहनोंका शब्द **"स्वनिते वस्त्रपर्णानां भूषणानां च" शिञ्जितम् ।**

१ मर्मरी वस्त्रभेदे न शुष्कपर्षध्वनौ तथा । पुंसि स्त्रियां पुनः प्रोक्ता मर्मरी पीतदारुणि ॥

शब्द—शब्दन, निनाद, निनद, ध्वनि, ध्वान, रव—राव, स्वन—स्वान, निर्घोष, निर्हादि, नाद, निस्वान, निस्वन, आरव, आराव, संराव, विराव ये १७ शब्दमात्र के नाम हैं । वल्ल और पत्तों के शब्द में 'मर्मर' होता है यह १ वल्ल व पत्तों की ध्वनि का नाम है और भूषणों यानी नूपुर आदिकों के शब्द में शिञ्जित या शिञ्जा भी होता है यह १ भूषणों की ध्वनि का नाम है ॥ २३ । १ ॥

पु. पु. पु. पु. न.

वीणाआदि निक्काणो निकणः काणः कणः कणानमित्यपि ॥ २४ ॥

पु. पु.

का शब्द "वीणायाः कणिते प्रादेः" प्रकाणप्रकणादयः ।

वीणा के शब्द में निक्काण, निकण, काण, कण, कणान ये होते हैं ये ५ वीणा आदि शब्द के नाम हैं और प्रादि-उपसर्ग से प्रकाण, प्रकण तथा आदि शब्द से उपकण—मुकण ये भी वीणा के शब्द में ही जानना चाहिये ॥ २४ । १ ॥

पु. पु. न. न.

गुल पक्षियों का कोलाहलः कलकल (स्तिरश्चां) वासितं रुतम् ॥ २५ ॥

शब्द स. पु. न. न.

प्रतिध्वनि स्त्री प्रतिश्रुत्प्रतिध्वाने गीतं गानमिमे(समे) ॥ २६ ॥

इति शब्दादेवर्गः ॥

कोलाहल, कलकल ये २ बहुत लोगों के किये अप्रकटित शब्द के नाम हैं । तिरिङ्गे चलनेवाले जीवों का जो शब्द है उसे वाशित या वासित कहते हैं अथवा वाशित, रुत ये २ पक्षियों के शब्द के नाम हैं । प्रतिध्वान=प्रतिशब्द में प्रतिश्रुत स्त्री-लिङ्ग होता है अथवा प्रतिश्रुत्, प्रतिध्वान ये २ प्रतिध्वनि (गूंज) के नाम हैं और गीत, गान ये दोनों समानार्थ व समानलिङ्ग कहते हैं ये २ गाने के नाम हैं ॥ २५ । २६ ॥

इति शब्दादिवर्गविवरणम् ॥

अथ नादवर्गो व्याख्यायते ॥

१पु. पु. पु. पु. पु. पु.

गाने के स्वर निषाद्वर्षभगान्धारषड्जमध्यमधैवताः ।

पु.

पञ्चम (श्चेत्यमी सप्त तन्त्रीकः षोडशिताः स्वराः) ॥ ११ ॥

१ निषादः स्वरभेदेऽपि चण्डाले धीवरान्तरे—अपभस्ववैषधान्तरे । स्वरभिद्वययोः कर्णरन्ध्रकुम्भीरपञ्चयोः । उत्तरस्थः स्मृतः श्रेष्ठे स्त्रीनराकारयोषिति । “ गान्धारोरागसिन्दूरस्वरेषु नीवृद्धन्तरे ” इति हैमः । नासाकण्ठघुरस्तालुनिह्नां दन्ताश्च संस्पृशन् । पञ्चमः संजायते यस्मात्तस्मात्पञ्च इति स्मृतः ॥ तद्वदेवोत्थितो वायुः स्वरः कण्ठसमावृतः । नाभिं प्राप्नोति महानादो मध्यस्थस्तेन मध्यमः ॥ धीमत्पुण्यमित्यत्र संज्ञायामिति वक्तव्यम् । वायुः सप्तद्वीपानामेवोत्सृज्य कण्ठमूर्धसु । विचरन्पञ्चमस्थानं प्राप्य पञ्चम उच्यते ॥ तच्चान्यत्वात्पञ्चमः स्वर इति ॥

निषाद—निषद, ऋषभ, गान्धार, षड्ज, मध्यम, धैवत और पञ्चम ये ७ तन्त्री व कण्ठ से निकले हुए स्वर कहाते हैं और दारवी (काष्ठमयी) तथा गात्रवीणा ये स्वर की धारनेवाजी २ वीणायें कहाती हैं और बांसुरी व मुरचङ्ग आदि अनुकरणमात्र के उपयोगी होते हैं । यह भाव जानना चाहिये “ मयूर षड्ज स्वर से बोलता है, गौर्वे ऋषभ से बोलती हैं, बकरी व भेड़ गान्धार से बोलती हैं, कराकुल नामक पक्षी मध्यम स्वर से बोलता है, वसन्त समयमें कोकिला पञ्चम स्वर से नाद करती है, घोड़ा धैवत स्वर से बोलता है आर हाथी निषाद से बोलता है यह नारदजीका वचन है ” यह सात स्वरा का एक २ नाम है ॥ १ ॥

स.

सूक्ष्मस्वर, ककली “तु कले सूक्ष्मे” ध्वनौ तु मधुरास्फुटे ।
मधुरस्वर, पु. पु. पु.
गम्भीरस्वर, उच्चस्वर

कलो मन्द्रस्तु गम्भीरे तारोत्युच्चैः(स्त्रयस्त्रिषु) ॥ २ ॥

सूक्ष्मकल में ‘काकली, काकलि’ कहा जाता है इसीसे कुलीनों ने काकली स्वरों से अच्छा कहा यह प्रयोग संगत होता है । यह १ सूक्ष्म स्वर का नाम है । कानों को सुखदायक अव्यक्ताक्षरवाले ध्वनि में ‘कल’ होता है । यह १ मधुर स्वर का नाम है व गम्भीर ध्वनि में यानी मेघादिकों के शब्द में मन्द्र—मद्र होता है यह १ गम्भीर स्वर का नाम है और बड़े ऊंचे शब्द में ‘तार’ होता है यह १ बड़े उच्चस्वर का नाम है कल—मन्द्र—तार ये ३ तीनों लिङ्ग में होते हैं यानी विशेष्य के समान इनके लिङ्ग कहे जाते हैं ॥ २ ॥

पु.

स.

स.

वीणा (समन्वितलयस्त्वे) कतालौ वीणा तु वल्लकी ।

स.

स.

वीणाविशेष विपञ्ची (सा तु तन्त्रीभिः सप्तभिः) परिवादिनी ॥ ३ ॥

जो अच्छी लय से संयुक्त होकर नाच, गान व बाजा के समान है उसे एकताल या एकतान कहते हैं यह १ एकताल याने तुल्यस्वर का नाम है । वीणा, वल्लकी, विपञ्ची ये ३ वीणा के नाम हैं और वही वीणा जब सात तन्त्रियों (तारों) से उपलक्षित होती है तो उसे ‘परिवादिनी’ कहते हैं यह १ वीणाविशेष का नाम है ॥ ३ ॥

वीणाशब्द

न.

न.

पृदङ्ग आदि ततं “वीणादिकं वाद्य” मानद्धं “मुरजादिकम्” ।

बंसी आदि

न.

न.

वयदाभासरिआदिवंशादिकं तु शुषिरं कांस्यतालादिकं घनम् ॥ ४ ॥

१. सूर्य्यं शुषिगामिव पस्परादिकं भाष्यस्थश्रुताविति प्रयोगात् शुषिरं दन्त्याद्यपि—प्राच्यास्तु तालव्याद्येवेत्याहुः ॥

वीणा—सैरन्धी—रावण—हस्त व किन्नरादिकों का जो वाद्य है उसे 'तत' कहते हैं यह १ वीणादि वाद्य का नाम है । मुरज, पटह आदिकों का जो वाद्य है उसे 'आनद्ध या अवनद्ध' कहते हैं यह १ मुरजादि वाद्य का नाम है । बांसुरी व शंख आदिकों का जो वाद्य है उसे शुषिर या सुषिर कहते हैं यह १ वंशादि वाद्य का नाम है और जो कांस्यमय तालादिक घण्टा—झांजर व मंजीरा आदिकों का वाद्य है उसे 'घन' कहते हैं यह १ कांस्यतालादि वाद्य का नाम है ॥ ४ ॥

वाद्य भेद न. न. न.
 "चतुर्विधमिदं" वाद्यवादित्रातोद्यनामकम् ।

मृदङ्ग पु. पु. पु. पु. पु.
 मृदङ्ग भेद मृदङ्गा मुरजाभेदास्त्वङ्गधालिङ्गयोर्ध्वकास्त्रयः ॥ ५ ॥

ये जो तत आदि चार प्रकार के वाद्य हैं उनको वाद्य, वादित्र और आतोद्य कहते हैं ये ३ तत आदि चतुष्टय के नाम हैं । मृदङ्ग, मुरज ये २ मृदङ्ग के नाम हैं । ये अनेक भांति के हैं इसलिये बहुवचनान्त हैं और अङ्क्य, आलिङ्ग्य, ऊर्ध्वक यानी 'अङ्के एव निधाय वादनादङ्क्यः, आलिङ्ग्य वादनादालिङ्ग्यः, ऊर्ध्वीकृतेन मुखेन वादनादूर्ध्वकः' गोद में धारकर बजाने से हड़ के समान अङ्क्य, आलिङ्गन कर बजाने से गोपुच्छसम आलिङ्ग्य, ऊपर किये मुँह से बजाने में जवतुल्य मध्य वाला ऊर्ध्वक कहा जाता है ये ३ मृदङ्ग भेद के नाम हैं ॥ ५ ॥

ढोल नगाड़ा, पु. स. स. पु.
 तुरही, बड़ा स्याद्यशःपटहो ढक्का भेरी (स्त्री) दुन्दुभिः (पुमान्) ।
 नगाड़ा बजाने पु. पु. न. पु.
 का दण्ड आनकः पटहोऽस्त्री स्यात्कोणो वीणादिवादनम् ॥ ६ ॥

यशःपटह, ढक्का ये २ ढोलक-ढंका व डमरू के नाम हैं । भेरी-भेरि-दुन्दुभि ये २ नगाड़ा या तुरही के नाम हैं इनमें भेरी स्त्रीलिङ्ग है और दुन्दुभि पुल्लिङ्ग कहाता है अथवा कितेक आचार्य 'भेर्यामानकदुन्दुभी' ऐसा पाठ पढ़ते हैं उनके मत में भेरी, आनक, दुन्दुभि ये ३ तुरही या नगाड़ियों के नाम हैं । आनक, पटह ये २ बड़े नगाड़े के नाम हैं इनमें 'पटह' स्त्रीलिङ्ग नहीं, पुं० नपुंसक में रहता है और जिससे वीणा आदि बाजे बजाये जाते हैं उस धनुषादि आकार वाले काष्ठ को 'कोण' कहते हैं यह १ वीणा आदि बजाने के दण्ड का नाम है ॥ ६ ॥

१ ततं चैवावनद्धं च घनं सुषिरमेव च । चतुर्विधन्तु विज्ञेयमातोद्यं लक्षणाभितमिति ॥

२ नृतावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां नवपञ्चवारम् । उद्धर्तुकामः सनकादिसिद्धानेतद्विमर्शोऽशेषसूत्रजाश्च ॥

वीणा का दण्ड पु. पु. पु. पु.
 वीणा की मदी वीणादण्डः प्रवालः स्यात्ककुभस्तु प्रसेवकः ।
 तुम्बी वीणा का पु. पु. न.
 स्वरूप वीणाका कोलम्बकस्तु कायोस्या उपानाहो निबन्धनम् ॥ ७ ॥
 बन्धन

वीणादण्ड, प्रवाल ये २ वीणादण्ड के नाम हैं । ककुभ, प्रसेवक—प्रसेव ये २ वीणा दण्ड के नीचे स्थित शब्द की गम्भीरता के लिये चमड़े से मढ़े काष्ठमय भाण्ड के नाम हैं । अथवा वीणा के प्रान्त में स्थित काष्ठविशेष के नाम हैं । इस वीणा के तन्त्रीरहित दण्ड आदि समुदायरूप कायको 'कोलम्बक' कहते हैं यह १ वीणा के स्वरूप का नाम है । उपानाह, निबन्धन ये २ जहां तन्त्रियां बांधी जाती हैं उसके ऊपरले भाग के नाम हैं ॥ ७ ॥

वाजों का भेद पु. पु. पु. पु.
 “वाद्यप्रभेदा” डमरुमड्डुडिण्डिमभर्भराः ।

पु. पु. स. स.
 नाचने वाली मर्दलः पणवोन्ये च नर्तकीलासिके (समे) ॥ ८ ॥

डमरु आदि वाद्य विशेषों के भेद होते हैं वहां डमरु—डमरुक यह १ डमरु का नाम है । यह बाजा प्रायः कापालिकों का होता है, वही जब अच्छा बजाया जावे तो 'मड्डु' कहा जाता है यह १ महाडमरु का नाम है । 'डिण्डिम' यह १ तम्बूरा का नाम है । 'भर्भर' यह १ भ्रांभ्र का नाम है । 'मर्दल' यह १ मृदङ्ग के समान वाद्य विशेष का नाम है । पणव यह १ छोटी ढोल आदिकों का नाम है और अन्य गोमुख (नरसिंहा) हुडुक आदि भी वाज्यों के भेद होते हैं यह १ अलग २ एक २ वाद्य विशेषों का नाम जानना चाहिये और नर्तक, नर्तकी, लासक, लासकी ये दोनों समानार्थ व समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ नाचनेवाली वेश्या के नाम हैं ॥ ८ ॥

न. पु. न.
 विलम्ब, शीघ्र विलम्बितं द्रुतं मध्यं तत्त्वमोघो घनं (क्रमात्) ।

मध्यतात्पदेना पु. पु.
 ताल मिलाना तालः “काल दृष्ट्यामानं” लयः साम्यमथास्त्रियाम् ॥ ९ ॥

पु.न. न. न. न. न.
 नाचना लाण्डवं नटनं नाटयं लास्यं नृत्यं च नर्तने ।

विलम्बित, द्रुत, मध्य इन तीनों में तत्त्व, ओघ व घन ये क्रम से होते हैं यानी जो विलम्ब से नृत्य आदि होते हैं उसे 'तत्त्व' कहते हैं व जो शीघ्रता से नृत्य आदि होते हैं उसे 'ओघ' कहते हैं और जो मध्य रीति से नृत्यादि होते हैं यानी न विलम्ब हो न शीघ्रता हो उसे 'घन' कहते हैं ये तत्त्वादि क्रम से एक १

विलम्बित द्रुत मध्यवाले नाच गीत वाद्यो के नाम हैं । काल और क्रिया के मानको ' ताल ' कहते हैं यह १ ताल देनेका नाम है । गीत, वाद्य व पादादि रखने और क्रिया, काल की साम्यता को 'लय' कहते हैं यह १ ताल मिलाने का नाम है । इस के अनन्तर ताण्डव आदि स्त्रीलिङ्ग में नहीं होते हैं बरन पुंलिङ्ग, नपुंसक में कहाते हैं । ताण्डव, नटन, नाट्य, लास्य, नृत्य, नर्तन—नृत्त ये ६ नाच के नाम हैं ॥ ६।३ ॥

नाचना, गाना, ^{न.} तौर्यत्रिकं “ ^{न.} नृत्यगीतवाद्यं ” नाट्यमिदं त्रयम् ॥ १० ॥

बजाना इनका ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} एकस्वर नाच-भ्रकुंसश्च भ्रुकुंसश्च भ्रूकुंस (श्वेति नर्तकः) ।

नेवाला पुरुष

नाचकी वेश्या स्त्रीवेषधारी पुरुषो “ नाट्योक्तौ ” गणिकाज्जुका ॥ ११ ॥

नाचना, गाना, बजाना ये तीनों मिलकर ' तौर्यत्रिक ' व ' नाट्य ' कहाते हैं ये २ नाचने, गाने व बजाने के नाम हैं । जो पुरुष स्त्रीवेषधारी (सखी) होकर नाचता है उसमें भ्रकुंस, भ्रुकुंस, भ्रुकुंस और भ्रूकुंस ये होते हैं ये ३ स्त्रीवेषधारी नाचनेवाले पुरुष के नाम हैं और “ अङ्गहारोङ्गविशेषः ” इसके पूर्वपर्यन्त “ नाट्योक्तौ ” इसका अधिकार किया जाता है और जो गणिका है उसे ' अज्जुका ' कहते हैं यह १ नाच की वेश्या का नाम है ॥ १० । ११ ॥

बहनोई, पण्डित ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} “ भगिनीपति ” राबुत्तो भावो विद्वानथावुकः ।

बाप, राजकुमार ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} जनको युवराजस्तु कुमारो भर्तृदारकः ॥ १२ ॥

नाट्य के वचन में बहिन का पति ' आबुत्त ' या ' आवुत्त ' कहाजाता है । यह १ (बहनोई) का नाम है । जो विद्वान् है उसे ' भाव ' कहते हैं यह १ पण्डित का नाम है । जो पिता है उसे ' जनक ' कहते हैं यह १ बाप का नाम है और जो युवराज है उस कुमार, भर्तृदारक कहते हैं ये २ राजकुमार के नाम हैं ॥ १२ ॥

राजा ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{स.} राजकन्या राजा भट्टारको देवस्तत्तु ता भर्तृदारिका ।

महारानी ^{स.}

अन्यरानी ^{स.} देवी कृताभिषेकायामितरासु तु भट्टिनी ॥ १३ ॥

नाट्य की उक्ति में जो राजा है उसे भट्टारक व देव कहते हैं ये २ राजाके नाम हैं । जो राजपुत्री है उसे ' भर्तृदारिका ' कहते हैं यह १ राजकुमारी का नाम है । जिसका अभिषेक किया गया हो उसे ' देवी ' कहते हैं यह १ महारानी का नाम है और जो इतर रानियां हैं उनको ' भट्टिनी ' कहते हैं यह १ अन्य रानियों का नाम है ॥ १३ ॥

न. पु.
 अवध्यकथन, अब्रह्मण्य (मवध्योक्तौ) 'राजश्यालस्तु' राष्ट्रियः ।
 राजाका साला, स. स. स. स. पु. पु.
 माता, कन्या, अम्बा माताथ बाला स्याद्वासूरार्यस्तु मारिषः॥ १४ ॥
 मान्य

वध के योग्य नहीं ऐसे कथन में 'अब्रह्मण्य' होता है यह १ ब्राह्मणादि अवध्य का नाम है । जो राजा का साला है उसे 'राष्ट्रिय' कहते हैं यह १ राजा के साले का नाम है । जो माता है उसे 'अम्बा' कहते हैं यह १ मा का नाम है । व जो बालिका है उसे 'वासू' कहते हैं यह १ बालिका (लड़की) का नाम है और जो आर्य (श्रेष्ठ) है उसे 'मारिष' कहते हैं यह १ मान्य का नाम है ॥ १४ ॥

स. स. न.
 जेठी बहिन अत्तिका "भगिनी ज्येष्ठा" निष्ठानिर्वहणे समे ।
 नाव्यसन्धि स. स. स.
 ठीक कहना हरडे हजे हलाह्वानं नीचां चेटीं सखीं प्रति ॥ १५ ॥

जो जेठी बहिन है उसे 'अत्तिका' या 'अन्तिका' कहते हैं यह १ बड़ी बहिन का नाम है । निष्ठा, निर्वहण ये दोनों समानार्थ होकर समानलिङ्ग नहीं होते हैं ये २ पांचवीं सन्धि के नाम हैं । नीच सहेली के पुकारने में 'हरडे' होता है यह १ नीच के बुलाने का नाम है । चेटी के पुकारने में 'हजे' होता है यह १ चेटी के बुलाने का नाम है और सखी के बुलाने में 'हला' होता है यह १ सखी के पुकारने का नाम है ॥ १५ ॥

स. पु. पु. पु.
 लचककरना- अङ्गहारोङ्गविक्षेपो व्यञ्जकाभिनयौ (समौ) ।
 चना, अभि-
 प्रायकाप्रकाशक पु.स.न. पु.स.न.
 शरीर और निर्वृत्ते त्वङ्गसत्त्वाभ्यां द्वे त्रिष्वङ्गिकसात्त्विके ॥ १६ ॥
 मन की चेष्टा

अङ्ग के स्थान से स्थानान्तर में ले जाने को 'अङ्गहार' अङ्गुली आदि से मन के अभिप्राय जताने को 'अङ्गविक्षेपे' कहते हैं ये २ नृत्यविशेष में लचकने के नाम हैं । व्यञ्जक, अभिनय ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ मनोगत भाव बताने के नाम हैं । अङ्ग से सिद्ध अर्थ को 'आङ्गिक' कहते हैं यह १ भौह मटकाने आदिका नाम है और सत्त्व याने अन्तःकरण से सिद्ध अर्थ को 'सात्त्विक' कहते हैं । "स्तम्भ-स्वेद, रोमाञ्च, स्वरभङ्ग, वेपथु, वैवर्ण्य, आसु, प्रलय ये सात्त्विक गुण हैं" यह १ अन्तःकरण के भाव बताने का नाम है ये दोनों तीनों लिङ्ग में रहते हैं ॥ १६ ॥

१ "कर्तव्यमाचरन्काममकर्तव्यमनाचरन् । तिष्ठति प्रकृताचारे स तु आर्य इति स्मृत" (इति वसिष्ठः) ॥

२ हरडे-हजे-हजेति त्रीण्यप्ययानि ॥

आठरस शृङ्गारवीरकरुणाद्भुतहास्यभयानकाः ।

शृङ्गाररस बीभत्सरौद्रौ च रसाः शृङ्गारः शुचिरुज्ज्वलः ॥ १७ ॥

शृङ्गार, वीर, करुणा, अद्भुत, हास्य, भयानक, बीभत्स, रौद्र ये ८ रस हैं और च शब्द से नव्वां शान्त और दशवां वात्सल्य रस है उनमें शान्त को अलौकिक होने से व वात्सल्य को पुत्र आदि स्नेहरूप रत्यात्मक होनेसे नहीं दिखलाया है इसलिये आठों काही विवरण कहते हैं शृङ्गार, शुचि, उज्ज्वल ये ३ शृङ्गार रस के नाम हैं ॥ १७ ॥

वीर करुणा उत्साहवर्धनो वीरः कारुण्यं करुणा घृणा ।
हास्य स. स. स. पु. पु.
बीभत्स रस कृपा दयानुकम्पा स्यादनुक्रोशोऽप्यथो हसः ॥ १८ ॥

आ चिदाना हासो हास्यं च बीभत्सं विकृतं (त्रिष्विदं द्वयम्) ।

उत्साहवर्धन, वीर ये २ वीर रस के नाम हैं । कारुण्य, करुणा, घृणा, कृपा, दया, अनुकम्पा, अनुक्रोश ये ७ करुणा रस के नाम हैं । हस, हास, हास्य ये ३ हास्य रस के नाम हैं । बीभत्स, विकृत, 'वैकृत' ये २ बीभत्स रस के नाम हैं । ये दोनों त्रिलिङ्ग में जानना चाहिये अर्थात् रस में वर्तमान ये २ पुंलिङ्ग हैं और रसवान् में त्रिलिङ्ग कहाते हैं ॥ १८ । १ ॥

आश्चर्ये विस्मयोद्भुतमाश्चर्यं चित्रमप्यथ भैरवम् ॥ १९ ॥

भयानक दारुणं भीषणं भीष्मं भीमं घोरं भयानकम् ।

१ "विभवैरनुभावैश्च युक्तो वा व्यभिचारिभिः । आस्वाद्यत्वात्प्रधानत्वात् स्थाव्येव तु रसो भवेदित्युक्तेः रत्यादिः स्थायीभाव एव सामाजिकैश्चैर्व्यमाणो रसपदव्यपदेश्यो भवति तत्र रतिस्थापिभावकः कान्ताद्यालम्बनकः स्रक्चन्दनाद्युदीपितः कटाक्षद्यनुभावितो ब्रीडादिसंचारितः शृङ्गारः १ उत्साह-स्थापिभावको द्विषद्विजनादीनालम्बनकोऽपकारगुणापदुदीपितः प्रतीकारकरुणदानाद्यनुभावितो हर्ष-वेगचिन्तादिसंचारितो वीरः २ शोकस्थापिभावको मृताद्यालम्बनकस्तदगुणाद्यदीपितारोदनाद्यनुभावितो दैन्यादिसंचारितः करुणः ३ विस्मयस्थापिको विस्मयजनककर्मकर्तालम्बनको विस्मयकर्माद्युदीपितश्च कितताद्यनुभावितो हर्षादिसंचारितोद्भुतः ४ हासस्थापिभावको विकृतकृपालम्बनको वैकुण्ठाद्यदीपितो गलफुल्लाद्यनुभावितः श्रमादिसंचारितो हास्यः ५ भयस्थापिभावको विकटाद्यालम्बनकस्तदिकटकमो-द्यदीपितः पलायताद्यनुभावितो जडतादिसंचारितो भयानकः ६ जुगुप्सास्थापिभावको विषयूनाद्यालम्बनको दुर्गन्धाद्यदीपितो निष्ठीवनाद्यनुभावितो ग्लान्यादिसंचारितो बीभत्सः ७ क्रोधस्थापिभावको द्विषदा-लम्बनकस्तदपकाराद्यदीपितो विकट्यनाद्यनुभावितो गर्वादिसंचारितो रौद्रः ८" इत्यष्टानां सङ्ख्यम् ॥

उग्ररस भयंकरं प्रतिभयं रौद्रं तूग्र (ममी त्रिषु) ॥ २० ॥

भय चतुर्दश दरत्रासौ भीतिभीः साध्वसं भयम् ।

विस्मय, अद्भुत, आश्चर्य, चित्र ये ४ अद्भुत रस के नाम हैं । भैरव, दारुण, भी-
षण, भीष्म, भीम, घोर, भयानक, भयंकर, प्रतिभय ये ६ भयानक रस के नाम हैं ।
रुद्र, उग्र ये २ उग्र रस के नाम हैं । ये अद्भुत आदि १४ शब्द तद्वान् में तीनों
लिङ्ग होते हैं यानी विशेष्यलिङ्ग कहाते हैं । दर, त्रास-उत्पास-वित्रास-संत्रास, भीति,
भी, भिया, साध्वस, भय ये ६ भय (डर) के नाम हैं ॥ १६ । २० । ३ ॥

मन का विकार
अर्थप्रकारक
गर्व या घमण्ड
प्रतिष्ठा या बड़-
प्पन
गर्वोऽभिमानोऽहंकारो मानश्चित्तसमुन्नतिः ।

मन के विकार को 'भाव' कहते हैं यह १ मनोविकार का नाम है । जो भाव
का सूचक गुण क्रियादि है उसे 'अनुभाव' कहते हैं यह १ रत्यादिसूचक रोमांच
आदि का नाम है । गर्व, अभिमान, अहंकार ये ३ गर्व (घमण्ड) के नाम हैं और
मान, चित्तसमुन्नति ये २ बड़प्पन के नाम हैं ॥ २१ । ३ ॥

अपमान अनादरः परिभवः परीभावस्तिरस्क्रिया ॥ २२ ॥

लज्जा रीढावमाननावज्ञावहेलनमसूक्ष्णम् ।

नौरसे लज्जा मन्दाक्षं ह्रीत्रपा व्रीडा लज्जा (सापत्रपान्यतः) ॥ २३ ॥

अनादर, परिभव, परिभाव-परीभाव, 'पराभव' तिरस्क्रिया, रीढा, अवमानना,
विमानना, अवहेलन-अवहेला-हेला, असूक्ष्ण-असूक्ष्ण-असूक्ष्ण-संसूक्ष्ण ये ६
अनादर के नाम हैं । मन्दाक्ष, 'मन्दास्य' ह्री, त्रपा, व्रीडा-व्रीडन, व्रीडित, लज्जा-
लज्जा ये ५ लज्जा के नाम हैं और वही लज्जा यदि दूसरे से हो तो 'अपत्रपा'
कहाती है यह १ पिता आदि के आगे उपजी हुई लाज (शर्म) का नाम है ॥ २२ । २३ ॥

धन की चाह क्षान्तिर्नैस्ति तिक्षाभिध्या (तु नृत्तवाचैव ये स्पृहा) ।

वै लगाना अक्षान्तिरीर्ष्यासूया तु "दोषारोपो गुणेष्वपि" ॥ २४ ॥

१ "शृङ्गरो विष्णुदेवः स्याद्वात्यः प्रमथदैवतः । कण्ठो यमदैवस्तु स्याद्रौद्रो रुद्रदैवत इति भरतः ॥

२ दूर्पोवलेप्रोवध्मभित्तोद्रेकस्सयो मदः इति षट्मदस्य ॥

३ अजन्ति ते मूढाधिपः पराभवमिति प्रयोगश्च ॥

४ अपितः क्षान्तिः क्षान्तिः पितस्तु क्षमतेः क्षमेति कौशिकम् ॥

क्षान्ति, तितिक्षा ये २ क्षमा (सहने) क नाम हैं । पराये द्रव्य के विषय में चोरी आदि से वाञ्छा को ' अभिध्या ' कहते हैं यह १ परधन हरने की चिन्ता का नाम है । अक्षान्ति, ईर्ष्या ये २ पराये अनभल चाहने के नाम हैं अथवा पराये ऐश्वर्य के असहन के नाम हैं और जो गुणों में दोष लगाना है उसे ' असूया ' या ' अभ्यसूया ' कहते हैं यह १ अर्थ दान आदि गुणों में दम्भकत्वादिरूप दोषारोपण का नाम है ॥ २४ ॥

वैर शोक ^{न.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{स.} **वैरं विरोधो विद्वेषो मन्युशोकौ तु शुक् (स्त्रियाम्) ।**

^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} **पश्चात्तापोनुतापश्च विप्रतीसार (इत्यपि) ॥ २५ ॥**

वैर, विरोध, विद्वेष ये ३ वैर के नाम हैं । मन्यु, शोक, शुक् ये ३ शोच के नाम हैं इनमें संपदादि क्तिवन्त शुक्शब्द स्त्रीलिङ्ग में रहता है और पश्चात्ताप, अनुताप, विप्रतीसार—विप्रतिसार ये ३ कुछ कर पीछे से पछिताने के नाम हैं ॥ २५ ॥

^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{स.} ^{स.} **क्रोध कोपक्रोधामर्षरोषप्रतिघातृकुधौ (स्त्रियाम्) ।**

^{न.} ^{पु.} ^{पु.} **शील, पागल शुचौ तु चरिते शीलमुन्मादश्चित्तविभ्रमः ॥ २६ ॥**

कोप, क्रोध, ' अमर्ष—आमर्ष, ' रोष, प्रतिघ, रुट्—रुषा, कुध्—कुधा और भाम्मी ये ७ क्रोध के नाम हैं । इनमें षकारान्त रुट् और धान्त कुध् ये २ स्त्रीलिङ्ग हैं और शुद्ध चरित यानी यश आदि के आचरण में ' शील ' होता है यह १ शील का नाम है और उन्माद—चित्तविभ्रम ये २ उन्माद (पागलपने) के नाम हैं ॥ २६ ॥

^{पु.} ^{स.} ^{न.} ^{न.} ^{पु.} ^{पु.न.} **प्रेम प्रेमा (ना) प्रियता हार्द प्रेम स्नेहो (ऽथ) दोहदम् ।**

^{स.} ^{स.} ^{स.} ^{स.} ^{स.} ^{स.} ^{पु.} **मनोरथ इच्छा कांक्षा स्पृहेहातृङ्वाञ्छा लिप्सा मनोरथः ॥ २७ ॥**

^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.स.} **नवी चाहना कामोभिलाषस्तर्षश्च सोत्यर्थ क्षालसा (द्वयोः) ।**

^{धर्मचिन्ता} ^{पु.} ^{स.} ^{पु.} ^{स.} **मानसी पीडा उपाधि (ना) धर्मचिन्ता पुंस्याधि (मानसी व्यथा) ॥ २८ ॥**

प्रेमा, प्रियता, हार्द, प्रेम—स्नेह ये ५ स्नेह (प्रेम) के नाम हैं इनमें प्रेमा पुंलिङ्ग

१ अमरों हस्तादिः " किमप्यमरोंऽनुनये श्रुतायते " (इति भारविः) ' दीर्घादिरपि ' इति हट्टचन्द्रः निरुद्धोऽगं निरामर्षं निर्वायमरिन्दनमिति विशालः ॥

है और प्रेम नपुंसक है । दोहद, इच्छा, काङ्क्षा—आकाङ्क्षा, स्पृहा, ईहा, तृट्-तृषा, वाञ्छा, लिप्सा, मनोरथ, काम, अभिलाष (स) तर्ष ये १२ इच्छा (चाहना) के नाम हैं । इनमें ' दोहद ' यह इच्छामात्रवाची होकर विशेषतासे गर्भिणी की इच्छा में प्रयोग किया जाता है और वह तर्ष यदि बड़ी भारी हो तो लालसा—लालषा भी कहाती है यह पुंलिङ्ग व स्त्रीलिङ्ग में रहता है यह १ बड़ी चाहना का नाम है । उपाधि, धर्मचिन्ता ये २ धर्मविचार के नाम हैं । इनमें उपाधि पुंलिङ्ग है और जो मानसी पीड़ा है उसे ' आधि ' कहते हैं यह पुंलिङ्ग में रहता है यह १ मानसी व्यथा (मनोदुःख) का नाम है ॥ २७ । २८ ॥

स्मरण मित्र स. स. न. स. स.
मिलने की स्याच्चिन्ता स्मृतिराध्यानमुत्कण्ठोत्कलिके (समे) ।

जल्दी उत्साह पु. पु. पु.न.
नदा उत्साह उत्साहोऽध्यवसायस्स्यात्सवीर्यमतिशक्तिभाक् ॥ २९ ॥

चिन्ता—चिन्तिया, स्मृति, आध्यान—आध्या ये ३ स्मरण के नाम हैं । उत्कण्ठा, उत्कलिका ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहते हैं ये २ कामादिकों से उपजी स्मृति के नाम हैं । अथवा मित्र मिलने की उतावली के नाम हैं । उत्साह, अध्यवसाय ये २ उत्साह के नाम हैं और वही उत्साह यदि बड़ी शक्तिवाला हो तो वीर्य—वीर्या कहा जाता है यह १ बड़े उत्साह का नाम है ॥ २९ ॥

पु.न. पु. पु. पु. न. न.
बल या ठगई कपटोऽस्त्रीव्याजदम्भोपधयश्छद्मकैतवे ।

स. स. न. पु. स.
भूल कुसृतिर्निकृतिः शाठ्यं प्रमादोऽनवधानता ॥ ३० ॥

कपट, व्याज, दम्भ, उपधि, छद्म, कैतव, कुसृति, निकृति, शाठ्य ये ६ कपट के नाम हैं । इनमें कपट पुं० नपुंसक में होता है । छद्म—कैतव—शाठ्य ये नपुंसक में रहते हैं और प्रमाद, अनवधानता ये २ असावधानी या भूल के नाम हैं ॥ ३० ॥

न. न. न. न.
खेल कौतूहलं कौतुकं च कुतुकं च कुतूहलम् ।
स्त्रियों का रस स्त्रीणां विलासविब्वोकविभ्रमा ललितं तथा ॥ ३१ ॥
विशेष या चोचला, नलरा
आदि हेलालीलित्यमी हावाः क्रियाः शृङ्गारभावजाः ।

कौतूहल, कौतुक, कुतुक, कुतूहल ये ४ कौतुक (खेल) के नाम हैं । विलास, विब्वोक, विभ्रम, ललित, हेलाल, लीला, विच्छित्ति, किलकिञ्चित्, मोट्टायित, कुट्टि-

१ लीला विलासो विच्छित्तिर्विभ्रमः किलकिञ्चित् । मोट्टायितं कुट्टिमितं विब्वोको ललितं तथा ॥
विहृतं चेति मन्तव्या दश स्त्रीणां स्वभावजाः (इति नाट्यरत्नकोषः) ॥

मित और विहृत ये ११ स्त्रियों के शृङ्गार रससे व मनोविकार से उपजी क्रिया व चेष्टा 'हाव' कहते हैं यानी चोचले व नखरे आदि कहे जाते हैं उनमें सुन्दरियों की आंखें मुँह व भौंह आदिकों से जो कुछ विशेषरस उपजता है उसे 'विलास' कहते हैं। अहं-कार से उपजे अनादरात्मक विशेष को 'विव्वोक' कहा है। वाणी, वस्त्र व आभूषण आदि का जो स्थान से उलट पलट, होजाना है वह 'विभ्रम' कहाता है। समस्त अङ्गों के अञ्छे विन्यास को 'ललित' कहते हैं। अवगणनपूर्वक दीनता दिखाने को 'हेला' कहते हैं। पतिके भूषण वचन आदि के अनुकरण को 'लीला'। प्यारे से दिये प्रीति के लिये थोड़े से आभूषणों को 'विच्छित्ति'। हर्ष से सूखे रोने गाने आदि को 'किलकिञ्चित्' और प्यारे की कथाओं में अँगड़ाने, जँभुआने, कान खुजलाने आदि को 'ओट्टायित' व हर्ष से सुखमें भी दुःख करने को 'कुट्टिमित' कहते हैं और अवसर में आये वचन को छल आदिकों से हरने को 'विहृत' कहते हैं ये क्रम से स्त्रियों के हावभाव जानना चाहिये ॥ ३१ । ३ ॥

क्रीडामात्र	पु.	पु.स.	पु.	स.	स.	न.
स्वरूप का	द्रवकेलिपरीहासः क्रीडा खेला नर्म च ॥ ३२ ॥					
छिपाना	पु.	पु.	न.	स.	स.	न.
कूदना	व्याजोपदेशो लक्ष्यं च क्रीडा खेला च कूर्दनम् ।					

द्रव, केलि—केली, परीहास, क्रीडा, खेला, नर्म (न) ये ६ क्रीडामात्र के नाम हैं। व्याज, उपदेश, लक्ष्य—लक्ष्य ये ३ स्वरूप छिपाने के नाम हैं। क्रीडा, खेला, कूर्दन—कूर्दन ये ३ गेद आदि खेलने के नाम हैं ॥ ३२ । ३ ॥

पसीना	पु.	पु.	पु.	पु.	स.
मूर्च्छा	धर्मो निदाघः स्वेदः स्यात्प्रलयो नष्टचेष्टता ॥ ३३ ॥				
आकारगोपन	स.	स.	पु.	पु.	
दौडादौड	अवहित्थाकारगुप्तिः (समौ) संवेगसंभ्रमौ ।				
सशब्दहास	न.				
थोड़ा हास	स्यादाच्छुरितकं(हासः सोत्प्रासः) समनाक् स्मितम् ३४				

धर्म, निदाघ, स्वेद ये ३ पसीना के नाम हैं। प्रलय, नष्टचेष्टता ये २ मूर्च्छा के नाम हैं। अवहित्था, आकारगुप्ति ये २ शोक से उपजी मुखादि की म्लानि या आकार छिपाने के नाम हैं। संवेग, संभ्रम ये दोनों समानार्थ होकर समानलिङ्ग कहते हैं ये २ हर्ष आदि से कार्यों में शीघ्रता करने के नाम हैं। अधिकता समेत हासको 'आच्छुरितक' या 'आच्छुरित' कहते हैं यह १ ठंडाकर हँसने का नाम है और जो थोड़ा हास्य है उसे 'स्मित' कहते हैं यह १ अल्पहास का नाम है ॥ ३३।३४ ॥

२ "संसिद्धिः प्रकृतौ सिद्धौमदोग्रायामपि क्षियाम्" ॥

काँपने के नाम हैं । क्षण, उद्धर्ष, महस्, मह, उद्धव, उत्सव ये ५ उत्सव (महफिल) के नाम हैं । इनमें मह शब्द अदन्त है ॥ ३८ ॥

इति नाट्यवर्गविवरणम् ॥

अथ पातालवर्गो व्याख्यायते ॥

पाताल निल ^{न.} अधो ^{न.} भुवन ^{न.} पाताल ^{न.} बलिस ^{न.} द्भर ^{न.} सातलम् ।

या ^{पु.} पोलमात्र ^{न.} नागलोकोथ ^{न.} कुहरं ^{न.} शुषिरं ^{न.} विवरं ^{न.} बिलम् ॥ १ ॥

पृथ्वी में ^{न.} पोल ^{न.} छिद्रं ^{न.} निर्व्यथनं ^{न.} रोकं ^{न.} रन्ध्रं ^{न.} स्वभ्रं ^{स.} वपा ^{स.} शुषिः ।

^{पु.स.} भेदसमेत ^{पु.} वस्तु ^{पु.स.न.} गर्तावटौ “भुवि स्वभ्रे” सरन्ध्रे ^{पु.स.न.} शुषिरं (त्रिषु) ॥ २ ॥

अधोभुवन, पाताल, बलिसद्व (न) रसातल, नागलोक “अधोलोक-फणिभुवन आदि भी ” ये ५ पाताल के नाम हैं । कुहर, शुषिर या “सुषिर” विवर, बिल, छिद्र, निर्व्यथन, रोक, रन्ध्र, स्वभ्र, वपा, शुषि-सुषि, ये ११ बिलमात्र के नाम हैं । पृथ्वी में गड़हे कं होनेपर गर्त, ‘अवट-अवटि’ होते हैं ये २ भूरन्ध्र के नाम हैं । और छिद्रसमेत वस्तु में शुषिर तीनों लिङ्ग में होता है यह १ सरन्ध्र (छेदकिये) वस्तु का नाम है ॥ १ । २ ॥

^{पु.न.} अंधेरा ^{न.} अन्धकारो ^{न.} (ऽस्त्रियां) ^{न.} ध्वान्तं ^{न.} तमिस्रं ^{न.} तिमिरं ^{न.} तमः ।

^{न.} थोड़ा ^{न.} अंधेरा ^{न.} (ध्वान्ते गाढे) ^{न.} अन्धतमसं ^{न.} (क्षीणे) ^{न.} वतमसं ^{न.} (तमः) ॥ ३ ॥

अन्धकार, ध्वान्त, तमिस्र, “तमिस्रा” तिमिर, तम ‘तमस्’ ये ५ अन्धकारके नाम हैं । इनमें अन्धकार पुनपुंसक है और तम अदन्त व सान्तभी है । घने अन्धकार में ‘अन्धतमस’ होता है यह १ बड़े अंधेरे का नाम है और अल्प अन्धकार में अवतमस कहलाता है यह १ थोड़े से अंधेरे का नाम है ॥ ३ ॥

^{न.} चारों ओर ^{पु.} अंधेरा ^{पु.} विष्वक् ^{पु.} सन्तमसं ^{पु.} नागाः ^{पु.} काद्रवेया ^{पु.} (स्तदा वरः) ।

^{पु.} नाग ^{पु.} शेषोऽनन्तो ^{पु.} वासुकिस्तु ^{पु.} सर्पराजो ^{पु.} (ऽथ) ^{पु.} गौनसे ॥ ४ ॥

^{पु.} नागेश्वर ^{पु.} नागराज ^{पु.} छोटा सांप ^{पु.} अजगर ^{पु.} तिलित्सः ^{पु.} स्या ^{पु.} (दजगरे) ^{पु.} शयुर्वाहस ^{पु.} (इत्युमौ) ।

१ “रन्ध्र, दृष्येच्छिद्रे इति विश्वमेदिन्यौ” ॥

२ “गोनासाय नियोजितागदराजाः” (इति राजशेखरः) ॥

सर्वव्यापी अन्धकार को 'संतमस' कहते हैं यह १ व्यापक अंधेरे का नाम है । नाग, काइवेय ये सर्पों से अन्य देवयोनियां कहलाती हैं ये २ फन पृच्छधारी नराकस सर्पों के नाम हैं अथवा नागों के नाम हैं । उनके स्वामी शेष व अनन्त कहते हैं ये २ नागेश्वर के नाम हैं । वासुकि, सर्पराज ये २ सर्पराज के नाम हैं । गोमस, गोनास, तिलित्स ये २ सर्पविशेष (घोणस) या छोटे सांप के नाम हैं । अजगर, शयु, वाहस ये ३ अजगर सांप के नाम हैं ॥ ४ ॥ १ ॥

विषशून्य उ. पु. पु. पु. पु.
डेहहा अलर्गर्दो जलव्यालः(समौ) राजंलडुगडुभौ ॥ ५ ॥
कराहत पु. पु. पु. पु.
केंचुलीहीन मालुधानो मातुलाहिर्निर्मुक्तो मुक्तकञ्चुकः ।

अलर्गर्द—“अलर्गर्ध” जलव्याल ये २ पनिहां सांप के नाम हैं । राजिल, डुगडुभ ये दोनों समानार्थ होकर समानलिङ्ग कहलाते हैं ये २ निर्विष दोमुहां सांप के नाम हैं । मालुधान, मातुलाहि ये २ चित्रसर्प के नाम हैं और निर्मुक्त, मुक्तकञ्चुक ये २ केंचुल छोड़े हुए सांप के नाम हैं ॥ ५ ॥ १ ॥

सर्पमान पु. पु. पु. पु. पु.
सर्पः पृदाकुर्भुजगो भुजङ्गोहिर्भुजंगमः ॥ ६ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
आशीविषो विषधरश्चक्री व्यालः सरीसृपः ।

पु. पु. पु. पु. पु.
कुण्डली गूढपाच्चक्षुःश्रवाः काकोदरः फणी ॥ ७ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
दर्वीकरो दीर्घपृष्ठो दन्दशूको बिलेशयः ।

पु. पु. पु. पु. पु.
उरगः पन्नगो भोगी जिह्मगः पवनाशनः ॥ ८ ॥

। सर्प—सर्पा—सर्पिणी, पृदाकु, भुजग, भुजङ्ग, अहि, भुजंगम, आशीविष, विषधर, चक्री (क्रिन्) व्याल—व्याड, सरीसृप, कुण्डली (लिन्) गूढपाद—गूढपद—गूढपाद, चक्षुःश्रवाः (स्) काकोदर, फणी (स्त्रिन्) दर्वीकर, दीर्घपृष्ठ, दन्दशूक, बिलेशय—बिलशय, उरग—“उरङ्ग—उरंगम” पन्नग, भोगी, (गिन्) जिह्मग और पवनाशन ये २५ सांपों के नाम हैं ॥ ८ ॥

सर्पसन्धी पु.स.न. पु.स. पु.स.
फण त्रिष्वहियं “विषास्थ्यादि” (स्फटायान्तु) फणा (द्वयोः) ।

केंचुली पु. पु. पु. पु. पु.
विषमात्र (समौ) कञ्चुकनिर्मोकौ श्वेडस्तु गरलं विषम् ॥ ९ ॥

१ “निर्मुक्तो निर्विषः सर्पो राजिलः परिश्रितः इति स्मरणात् ॥

२ ऐषिहानोदिरसनो गोकर्णः कन्बुकी तथा । कुम्भीनसः फणधरो हरिभोगधरस्तथा ॥ अहेः शरीरं भोगः स्वादासीर्यविदंष्ट्रका । इयोर्विषमात्रास्तकथायां फणपि इयोरिति केचित् ॥

३ “गरलं पन्नगविषे तुण्यूलकमानयोः (इति हैमः) ॥

सर्पसम्बन्धी विष, हड्डी व केंचुलि आदिकों को 'आहेय' कहते हैं यह १ सर्प के विषादिकों का नाम है । स्फटा-फटा, फणा ये दोनों पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग कहलाते हैं ये २ फणा के नाम हैं । कंचुक, निमोंक ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहलाते हैं ये २ केंचली के नाम हैं और क्ष्वेड, गरल, विष ये ३ विषमात्र के नाम हैं । इनमें क्ष्वेड पुंलिङ्ग, गरल नपुंसक और विष पुं० नपुंसक में रहता है ॥ ६ ॥

विष भेद ^{पु.न.} “ पुंसि ^{पु.न.} झीबे ^{पु.न.१} च ” काकोलकाल ^{पु.} हलाहलाः ।

^{पु.} सौराष्ट्रिकः ^{पु.} शौक्लिकेयो ^{पु.} ब्रह्मपुत्रः ^{पु.} प्रदीपनः ॥ १० ॥

^{पु.} दारदो ^{पु.} वत्सनाभ (श्व विषभेदा अमी नव) ।

काकोल, कालकूट, हलाहल—“ हलाहल—हलाहल ” ये तीनों पुंलिङ्ग नपुंसक हैं । सौराष्ट्रिक, 'सारोष्ट्रिक' शौक्लिकेय, ब्रह्मपुत्र, प्रदीपन, दारद, वत्सनाभ ये नव विषों के भेद हैं यह एक २ स्थावर विष भेदों का नाम है ॥ १० । १ ॥

विषवैद्य सांप ^{पु.} ^{पु.} जाङ्गुलिको ^{पु.} व्यालप्राह्याहितुगिडकः ॥ ११ ॥

इति पातालभोगिवर्गः ॥

विषवैद्य, जाङ्गुलिक ये २ गारुडिक या मदारी के नाम हैं । व्यालप्राही, आहि-तुगिडक, 'अहितुगिडक' ये २ सांप पकड़नेवाले के नाम हैं ॥ ११ ॥

इति पातालभोगिवर्गविवरणाः ।

अथ न कवगो व्याख्य यते ॥

^{पु.} नरक, ^{पु.} स्यान्नारकस्तु ^{पु.} नरको ^{स.} निरयो ^{स.} दुर्गतिः (स्त्रियाम्) ।

^{पु.} नरकभेद, ^{पु.स.} तज्जेदास्तपनावीचम ^{पु.} रौरवरौरवाः ॥ १ ॥

^{पु.} भेत, ^{न.} संहारः ^{पु.} कालसूत्रं (चेत्याद्याः) “ सत्त्वास्तु ” नारकाः ।

^{पु.} वैतरणीनदी ^{स.} ^{स.} प्रेता ^{स.} वैतर ^{स.} गी (सिन्धुः) स्यात् ^{स.} लक्ष्मीस्तु ^{स.} निर्धृतिः ॥ २ ॥

नारक, नरक, निरय, दुर्गति ये ४ नरक के नाम हैं । इनमें दुर्गति स्त्रीलिङ्ग में रहता है उनके भेद ये हैं । तपन, अवीचि, महारौरव, रौरव, संहार—संचात, कालसूत्र

१ “ स्निग्धं भवत्यमृततुल्यमहो कलत्रं हलाहलं विषमिवाक-वं तदेव । यथा काममक्षयिमयेन्द्रिय-कुपदैर्यद्यपि दुष्कृतहलाहलसौषः ” ॥

ये ६ नरकों के भेद हैं आद्यपद से तामिस्र, अन्धतामिस्र, असिपत्रवन, कुम्भीपाक आदिकों को जानना चाहिये जो जलके समान देखने में आता है परन्तु जिसमें पत्थरसमान पीठ होने से जहर या सुख न हो तो उसे 'अवीचि' कहते हैं । कबे मांसाहारी अतिक्रूरप्राणी का नाम (महारु) है उसके नरकको 'महारौरव' कहते हैं । सर्प से भी अधिक हिंसाकारी प्राणी 'रुह' कहा जाता है उसके नरकको 'रौरव' कहते हैं । जिसमें कालरूप सूत्र होते हैं उसे 'कालसूत्र' कहते हैं । नरकमें रहनेवाले प्राणी प्रेत या परेत भी होते हैं यह १ नरकस्थ प्राणियों का नाम है । नरककी नदीको वैतरणी या 'वैतरणि' कहते हैं यह १ नारकीय नदी का नाम है और अलक्ष्मी, निर्भृति ये २ नारकीय अशोभा के नाम हैं ॥ १ । २ ॥

नरकमें इकेलना ^{१स. स. स. स. स.} विष्टिराजुः कारणा तु यातना तीव्रवेदना ।

तीव्रपीडा ^{स. स. स. न. न. न.}

दुःख यामानसीपीडा बाधा व्यथा दुःखमामनस्यं प्रसूतिजम् ॥ ३ ॥

व्यथा

^{न. न. न.}

शरीरपीडा स्यात्कष्टं कृच्छ्रमाभीलं (त्रिष्वेषां भेद्यगामि यत्) ।

इति न कथनः ॥

विष्टि, आजू ये २ हठ से नरकमें फेंकने के नाम हैं । कारणा, कारिका, यातना—याचना, तीव्रवेदना ये ३ नारकीय तीव्र दुःख के नाम हैं । पीडा, बाधा—आबाधा, व्यथा, दुःख, अमानस्य—आमनस्य, प्रसूतिज ये ६ मनोवेदना के नाम हैं । कष्ट, कृच्छ्र, आभील ये ३ शरीरपीडा के नाम हैं । अथवा ये ६ दुःख के ही नाम हैं । ऐसा कितेक आचार्य मानते हैं परन्तु स्वामी के मत में पीडा आदि ४ मानसी व्यथाके नाम हैं । आमनस्य, प्रसूतिज ये २ वैमनस्य के नाम हैं और कष्ट आदि ३ शरीरपीडा के नाम हैं । यह भेद जानना चाहिये इन्हींके बीच जो द्रव्यगामी (विशेष्यवादी) हैं वे त्रिलिङ्ग कहाते हैं जैसे "दुःखा सेवा, दुःखः सुतो निर्गुणः, सर्वं दुःखं विवेकिनः" आदि जानना चाहिये और भेद्यगामी के अभावमें उनके पूर्वोक्त लिङ्ग होते हैं ॥ ३ । ३ ॥

इति नरकवर्गावेवरणः ॥

अथ चावर्गो व्याख्यायते ॥

समुद्रोऽब्धिरकूपारः पारावारः सरित्पतिः ।

समुद्रभेद उ. न्वानुदधिः सिन्धुः सरस्वान्सागोऽर्णवः ॥ १ ॥

१ विष्टिः कर्मकरे तु वाच्यलितो यथा "विशन्तु विष्टयः सर्वे दया इव महोजसः" ॥

२ "हठादभ्युक्तिः केरो विष्टिराजुश्च कीर्त्यते" (इति काकीर्त्तरम्) ॥

पु. पु. पु. पु.
रत्नाकरो जलनिधिर्यादःपतिरपांपतिः ।

समुद्रभेद

(तस्य प्रभेदाः) क्षीरोदो लवणोद (स्तथापरे) ॥ २ ॥

समुद्र, अग्नि, अकूपार-आकूपार, कूपार-कूपार, पारावार-पारापार-अवार-पार, सरित्पति, उदन्वान्, उदधि, सिन्धु, सरस्वान्, सागर, अर्णाव, रत्नाकर, जल-निधि, यादःपति, अपांपति ये १५ सागरमात्र के नाम हैं। उनके ये भेद हैं-क्षीरोद, लवणोद तथा इक्षुरसोद, सुरोद, दधिमण्डोद, स्वादूद और घृतोद ये अपरभेद कहाते हैं यह अलग २ एक २ समुद्रविशेषों का नाम है ॥ १ । २ ॥

स. बहु. व.

न.

न.

न.

न.

न.

जलमात्र

आपः(स्त्री भूमि) वार्वारि सलिलं कमलं जलम् ।

न.

न.

न.

न.

न.

न.

न.

पयः कीलालममृतं जीवनं भुवनं वनम् ॥ ३ ॥

न.

न.

न.

न.

न.

न.

न.

कबन्धमुदकं पाथः पुष्करः सर्वतोमुखम् ।

न.

न.

न.

न.

न.

न.

न.

अम्भोर्णस्तोयपानीयनीरक्षीराम्बुशंवरम् ॥ ४ ॥

व.

पु. न.

पु. स. न.

पु. स. न.

जलविकार

मेघपुष्पं घनरस (स्त्रिषु द्वे) आप्यमम्मयम् ।

अप्-आपस्, वार, वारि, सलिल, कमल, जल, पयः (स्) कीलाल, अमृत, जीवन, भुवन, वन, कबन्ध-“कम्, अन्धम्”, उदक, ‘उद-दक’, पाथः (स्) सर्वतोमुख, अम्भः (स्) अर्णः (स्) तोय, पानीय, नीर, ‘नार’ क्षीर, अम्बु, शंवर-शम्बर, मेघपुष्प, घनरस ये २७ जलके नाम हैं। इनमें अप् शब्द स्त्रीलिङ्ग बहु-वचन में रहता है और सान्त आपस् नपुंसक भी है घनरस पुलिङ्ग नपुंसक है और आप्य-आप्या, अम्मय-अम्मयी ये दोनों तीनों लिङ्ग में रहते हैं ये दो जल विकार के नाम हैं ॥ ३ । ४ । १ ॥

पु.

पु.

पु. स.

पु. स.

लहर

भङ्गस्तरङ्ग ऊर्मि(र्वा स्त्रियां) वीचि “रथोर्मिषु” ॥ ५ ॥

हिलकोरा

पु.

पु.

पु.

अंबर

महत्सूक्ष्मालकल्लोलौ स्यादावतौ (ऽम्भसां भ्रमः) ।

न.

पु.

पु.

स.

वृंद

पृषन्ति बिन्दुपृषताः (पुमांसो) विपृषः(स्त्रियः) ॥ ६ ॥

१ “अप्योभिर्गोचरं कृतेति स्मृतेः” ॥

२ उदकरान्दसपानार्थं उदशब्दो विद्यते । तथा च ‘प्रसन्नोदप’ इत्यसंज्ञायाम्पुदशब्दः प्रयुज्यते इति कैटः । ‘श्रोतं श्रोतैर्धुवनममृतं जीवनं यं दकं चेति’ इत्याहुषः ॥

३ “पयः पृषन्तिभिः स्फुटा वान्ति नादाः शनैः शनैः” इति आम्भवतीमिजयवाक्यम् ॥

भङ्ग, तरङ्ग, ऊर्मि—ऊर्मि, वीचि—वीची, विचि—विची ये ४ लहरियों के नाम हैं । इनमें ऊर्मि, वीचि ये २ खीलिङ्ग हैं और बड़ी लहरियों में उत्तोल, वल्लोल होते हैं ये २ महातरङ्ग (हलकोरे) के नाम हैं व जलों का भ्रम ' आवर्त ' कहलाता है यह १ भ्रवर का नाम है और पृषत्—पृषन्ति, विन्दु, पृषत्, विपृष् ये ४ जलकणों के नाम हैं इनमें पृषत् नपुंसक, विन्दु—पृषत् पुलिङ्ग और विपृष्ट खीलिङ्ग है ॥ ५ ॥ ६०

न.

पु.

पु.

पु.

जल का निक-वक्राणि पुटभेदाः स्युर्भ्रमाश्च जलनिर्गमाः ।

खानाली या न.

न.

न.

न.

पु.स.न.

नल, किनारा कूलं रोधश्च तीरं (च) प्रतीरं (च) तटं (त्रिषु) ॥ ७ ॥

वक्र या चक्र, पुटभेद ये २ चक्राकार से जलों के नीचे जाने के नाम हैं । भ्रम, जलनिर्गम ये २ जल निकलनेवाले जालके या नदी आदिकों में नीचे टिके जल के ऊपर निकलने के नाम हैं अथवा ये ४ जो जलचक्र के आकार नीचे जाते हैं उनके नाम हैं । कूल, रोध, तीर, प्रतीर, तट ये ५ किनारे के नाम हैं । इनमें रोध सान्त व अदन्त है और तट तीनों लिङ्ग में रहता है ॥ ७ ॥

न. न.

न.

दोनों किनारा पारावारे (परार्वाची तीरे) पात्रं (तदन्तरम्) ।

दोनों कामध्य पु.न.

पु.न.

द्वीप या टापू द्वीपोऽस्त्रियामन्तरीपं (यदन्तर्वारिणस्तटम्) ॥ ८ ॥

परतीर व अवारतीर ये पारावारे कहाते हैं यानी परतीरको पार व अवारतीर को अवार कहते हैं यह १ नदी आदिके इस पार और उस पारका नाम है । पार व अवार दोनों के मध्यको ' पात्र ' कहते हैं यह १ दोनों किनारों के बीचका नाम है । जल के मध्यका जो तट है उसे ' द्वीप ' व ' अन्तरीप ' कहते हैं ये दोनों खीलिङ्ग में नहीं होते हैं बरन पुं० नपुंसक में रहते हैं ये २ द्वीप या टापू के नाम हैं ॥ ८ ॥

न.

न.

न.

जलमध्य का स्थल, बालू (तोयोत्थितं) तत्पुलिनं सैकतं सिकतामयम् ।

का स्थल,

पु.

पु.

पु.न.

पु.

पु.

कीचक

निषद्वरस्तु जम्बालः पङ्को (ज्वी) शादकर्मौ ॥ ९ ॥

जलसे उठा हुआ जो स्थल है उसे ' पुलिन ' कहते हैं यह १ जलसे थोड़े समय से निकले तटका नाम है । सैकत, सिकतामय ये २ बालू से युक्तस्थान के नाम हैं और निषद्वर, जम्बाल, पङ्क, शाद, कर्म ये ५ कीचक (बोदा) के नाम हैं इनमें पङ्क शब्द खीलिङ्ग नहीं है बरन पुं० नपुंसक में रहता है ॥ ९ ॥

नहर गङ्गा जल नाव ^{पु.} जलोच्छ्वासाः ^{पु.} परीवाहाः ^{पु.} कूपकास्तु ^{पु.} विदारकाः ।
^{पु.स.न.} नाव्यं (त्रिलिङ्गं नौतार्ये) ^{स. स. स.} स्त्रियां नौस्तरणिस्तरिः ॥१०॥

जलोच्छ्वास, परीवाह—‘ परीवाह ’ ये २ बड़े हुए जलके निकलने की मार्ग के नाम या बहुत बड़े जलके चारों तरफ बहने (नहर) के नाम हैं । नावसे तरने योग्य जलमें ‘ नाव्य ’ तीनों लिङ्ग में होता है यह १ नौकासे पार होने योग्य जलका नाम है और नौ-नौका, तरणि-तरणी, तरि-तरी ये तीनों स्त्रीलिङ्ग कहलाते हैं ये ३ नौका के नाम हैं ॥ १० ॥

वेड़ा सोता छतराई डोंगी ^{पु.न.} उडुपं (तु) ^{पु.} प्रवः ^{पु.} कोलः ^{पु.न.} स्रोतो (म्बुसरणं स्वतः) ।
^{पु.} आतरस्तरपण्यं ^{न.} स्याद् ^{स.} द्रोणी ^{स.} काष्ठाम्बुवाहिनी ॥ ११ ॥

उडुप, प्रव, कोल ये ३ वेड़ा या छतराई के नाम हैं । जो आपसे ही जल बहता या निकलता है उसे स्रोतः— स्रोत या ओतभी कहते हैं यह १ अकृत्रिम जल बहने या सोताके नाम हैं । आतर-आतार-अनुतर, तरपण्य ते २ खेवाई या छतराई के नाम हैं और काष्ठमयी जलवाहिनी को द्रोणी, द्रोणि, दुग्घी, दूणि, काष्ठाम्बुवाहिनी, अम्बुवाहिनी, अम्बुसेचनी ये २ काठ से बनी नौकाकार अम्बुसेचनी (डोंगी) के नाम हैं ॥ ११ ॥

नाविक या जहाजी ^{पु.} सांयात्रिकः ^{पु.} पोतवाणिक् ^{पु.} कर्णधारस्तु ^{पु.} नाविकः ।
^{पु.} पतवार पकड़ने वाला खैया ^{पु.} नियामकाः ^{पु.} पोतवाहाः ^{पु.} कूपको ^{पु.} गुणवृक्षकः ॥ १२ ॥

सांयात्रिक, पोतवाणिक् ये २ नाविक या जहाजी के नाम हैं अथवा नावसे व्यवहार करनेवाले के नाम हैं । कर्णधार, नाविक ये २ पतवार पकड़नेवाले के या नावके पीछे खड़े हुए लकड़ी घुमानेवाले के नाम हैं । नियामक, पोतवाह ये २ खैया के नाम हैं और कूपक, गुणवृक्षक ये २ नाव के मध्य में स्थित रस्सी बांधनेवाले काष्ठ के या जिस में नाव बाँधी जाती है उस खूँटे या मस्तूल के नाम हैं ॥ १२ ॥

१ उपार्जितानामर्थानां त्याग एव हि रक्षणम् । तडागोदरसंस्थानां परीवाह इवाग्मसामिति दीर्घत्वस्यम्, दीर्घाभावे ‘परिवाहो जगतः करोति किमिति माघः’ ॥

२ “ द्रोणीभिरग्मसि चरन्ति महार्थवस्य ” इत्यनेकार्थकैरवाकारकौषुदी ॥

३ संपूर्वस्य यातिर्द्विपान्तरगमने वृत्तिः इति चाणक्यटीकेति कलिवः ॥

डांड पु. स. न. पु.
पतवार नौकादण्डः क्षेपणी स्यादरित्रं केनिपातकः ।

काठ की कुदार स. पु. न. न.
डोलची अभ्रिः (स्त्री) काष्ठकुदालः सेकपात्रं (तु) सेचनम् ॥ १३ ॥

नौकादण्ड, “क्षेपणी-क्षेपणि-क्षिपणी-क्षिपणि” ये २ नौका के दोनों तरफ बँधे चलानेवाले काष्ठ या डांड के नाम हैं । अरित्र, केनिपातक ये २ करिया या पतवार के नाम हैं । अभ्रि-अभी, अम्ब्रि-अम्भी, काष्ठकुदाल-काष्ठकूदाल-कुदाल ये २ नावआदि के मैलके दूर करने के लिये काठकी बनी कुदाली के नाम हैं और सेकपात्र, सेचन ये २ चमड़े आदिकी बनी जल फेंकनेवाली डोलचीके नाम हैं ॥ १३ ॥

आधीनाव, (कूबे)ऽर्धनावं (नावोऽर्धे) “ऽतीतनौके”ऽतिनु (त्रिषु) ।
तैरनेवाला, पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
निर्मल, गन्दा (त्रिष्वगाधात्) प्रसन्नोच्छः कलुषोनच्छ आविलः ॥ १४ ॥

नौका के आधे भाग में ‘अर्धनाव’ नपुंसक में होता है यह एक आधी नाव का नाम है । जिसने नौका को अतिक्रामण किया है उस पुरुष को ‘अतिनु’ कहते हैं यह तीनों लिङ्गमें रहता है यह १ बड़े तैरनवाला का नाम है । इसके अनन्तर अगाध पर्यन्त तीनों लिङ्ग जानना चाहिये । प्रसन्न, अच्छ ये २ निर्मल (साफ़) के नाम हैं और कलुष, अनच्छ, आविल ये ३ मैले जलके नाम हैं ॥ १४ ॥

गहरा, उथला पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
निम्नं गभीरं गम्भीरमुत्तानं (तद्विपर्यये) ।

बड़ा गहरा पु.स.न. पु.स.न. पु. पु. पु.
मलाह अगाधमतलस्पर्शं कैवर्तं दासधीवरौ ॥ १५ ॥

‘निम्न, गभीर, गम्भीर ये ३ गहरे के नाम हैं । गहरे से भिन्नस्थल में ‘उत्तान’ कहा जाता है यह १ उथले का नाम है । अगाध, “आगाध”, अतलस्पर्श ये २ महागम्भीर के नाम हैं अथवा अत्यन्त गहरे में ‘अगाध’ होता है यह १ बड़े गहरे का नाम है और कैवर्त, दास-दाश, धीवर ये ३ मलाह के नाम हैं ॥ १५ ॥

जाल, सुतरी पु. न. न. न.
आनायः (पुंसि) जालं स्याच्छृणसूत्रं पवित्रकर्म ।

दोकरी, बंसी स. स. न. न.
मत्स्याधानी कुवेणी स्याद् बलिशं मत्स्यवेधनम् ॥ १६ ॥

आनाय, जाल ये २ जालक नाम हैं । इनमें आनाय पुलिङ्ग है । शृणसूत्र, पवित्रक ये २ सनसूत (सुतरी) के नाम हैं । मत्स्याधानी, कुवेणी “ कुवेणि-कुवेणा ”

ये २ मछली धरनेके पात्र यानी टोकरी के नाम हैं और बलिश—बलिशी—बलिशा, बडिश—बडिशी—बडिशा, मत्स्यवेधन—मत्स्यवेधनी ये २ मछली पकड़ने की कटिया (बंसी) के नाम हैं ॥ १६ ॥

मछली ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}
गलफटी मछली पृथुरोमा भूषो मत्स्यो मीनो वैसारिणोऽण्डजः ।

या बच्चे ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}
विसारः शकली (चाथ) गडकः शकुलार्भकः ॥ १७ ॥

पृथुरोमा (मन्) भूष—भूष, मत्स्य—मत्सी—मत्स, मीन, वैसारिण, अण्डज, विसार, शकली (लिन) शकली (न्) ये ८ सामान्य मछली के नाम हैं और गडक, शकुलार्भक ये २ मछलियों के बच्चे या गलफटी मछली के नाम हैं ॥ १७ ॥

पढ़िना ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}
सूस ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.स.} ^{पु.स.}
भिंगवा ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.स.} ^{पु.स.}
सहरी नलमीनश्चिलिचिमः प्रोष्ठी (तु) शफरी (द्वयोः) ॥ १८ ॥

सहस्रदंष्ट्र, पाठीन ये २ बहुतसे दांतवाली या पढ़िना मछली के नाम हैं । उलूपी, शिशुक ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ सूसमछली के नाम हैं । नलमीन—नडमीन—तलमीन, चिलिचिम—चिलीचिमी—चिलीचिमि ये २ नलवनचारी मत्स्यविशेष (भिंगा) के नाम हैं और प्रोष्ठी, शफरी, प्रोष्ठ, शफर ये दोनों स्त्रीलिङ्ग व पुंलिङ्ग में होते हैं ये २ सहरी मछली के नाम हैं ॥ १८ ॥

छोटी मछली ^{पु.} ^{न.} ^{पु.}
बहुतही छोटी ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}
तिमिंगिल क्षुद्राण्डमत्स्यसंघातः पोताधानमथो भूषाः ।
रोहितो मद्गुरः शालो राजीवः शकुलस्तिमिः ॥ १९ ॥

जलजन्तु ^{पु.} ^{न.} ^{पु.}
तिमिंगिलादयश्चाथ यादांसि जलजन्तवः ।

जलजीव भेद ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}
(तद्भेदाः) शिशुमारोद्रशङ्खवो मकरा “दयः” ॥ २० ॥

क्षुद्राण्डमत्स्यसंघात, पोताधान ये २ छोटे अण्ड से उपजी छोटी मछली समूहों के नाम हैं । “अथ मत्स्यविशेषों को कहते हैं” रोहित—रोहित्—‘लोहित’ यह १ रोहू मछली का नाम है । ‘मद्गुर’ यह १ मगरी का नाम है । शाल या साल यह १ चक्राङ्कित सौरी मछली का नाम है । ‘राजीव’ यह १ राया मछली का नाम है ।

१ “अण्डजः कृकलासे स्यात्त्वगे मीने भुजंगमे । कस्तूर्यामण्डजा प्रोक्ता” इत्युपलभ्यते ॥

२ “सहस्रदंष्ट्रे वादासः पाठीने चित्रवलिचकः । शकुले स्यात्कलकः” इति विशेषमत्स्यत्वेनोक्तः ॥

शकुल, सकुल यह १ महाबलवान् सौरा मछली का नाम है । 'तिमि' यह १ बड़ी भारी मछली का नाम है । 'तिमिगिल' यह १ तिमिकी निगलनेवाली मछली का नाम है । आदि शब्दसे 'तिमिगिलगिल' व 'नन्दावर्त' आदि जानना चाहिये यह अलग २ एक २ मछली विशेषों का नाम है । यादस्, जलजन्तु ये २ जलजन्तुओं के के नाम हैं । (अब उन जलजन्तुओं के भेद कहे जाते हैं) कि 'शिशुमार' यह १ शिरस का नाम है । 'उद्र' यह १ जलविलाव का नाम है । 'शङ्कु' यह १ मछली विशेष का नाम है । 'मकर' यह १ मगर का नाम है और आदिशब्द से 'ग्रह' व 'कुम्भीर' आदि जानना चाहिये यह अलग एक २ जलजन्तु विशेषों का नाम है ॥ १६।२०॥

केकड़ा, कछुआ ^{पु.} स्यात्कुलीरः ^{पु.} कर्कटकः ^{पु.} कूर्मे ^{पु.} कमठकच्छपौ । ^{पु.}

घड़ियाल, नाक ^{पु.} ग्राहोऽवहारो ^{पु.} नक्रैस्तु ^{पु.} कुम्भीरोऽथ ^{स.} महीलता ॥ २१ ॥

केचुआ, गोह ^{पु.} गरुडूपदः ^{पु.} किञ्चुलको ^{स.} निहाका ^{स.} गोधिका (समे) ।

कुलीर, 'कुलिर' कर्कटक " कर्कट, करकट व कर्कड " ये २ केकड़ा के नाम हैं । कूर्म, कमठ, कच्छप ये ३ कछुआ के नाम हैं । ग्राह, अवहार, " अवराह " ये २ घड़ियाल के नाम हैं । नक्र, कुम्भीर, कुम्भील ये २ नाक के नाम हैं । महीलता, गरुडूपद, किञ्चुलक—किञ्चुलु—किञ्चलूक—किञ्चिलिक ये ३ केचुआ के नाम हैं । इनमें महीलता स्त्रीलिङ्ग है और निहाका, गोधिका—गोधा ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ गोह के नाम हैं ॥ २१।३॥

जोंक ^{स.} रक्तपा तु (जलौकैयां) ^{स.} " स्त्रियां भूमि " जलौकसः ॥ २२ ॥

सीपी, शंख ^{पु.} मुक्तास्फोटः ^{स. पु.न.} (स्त्रियां) शुक्तिः ^{पु.न.} शङ्खः ^{पु.स.} स्यात्कम्बु (रस्त्रियाम्) । ^{स.}

जोदारंख, गोंवा ^{पु.} क्षुद्रशङ्खाः ^{पु.} शङ्खनकाः ^{पु.स.} शम्बूका ^{स.} जलशुक्रयः ॥ २३ ॥

रक्तपा, जलौका— " जलौका—जलूका—जलजन्तुका, जलोरगी, जलौकस—जलौकसी—जलौकस् " ये ३ जोंक के नाम हैं । इनमें जलौकस् स्त्रीलिङ्ग बहुवचनान्त वा एकवचनान्त भी है । मुक्तास्फोट, शुक्ति, शुक्तिका ये २ सीपी के नाम हैं । शङ्ख, कम्बु ये दोनों पुलिङ्ग व नपुंसक में रहते हैं ये २ शङ्ख के नाम हैं । क्षुद्रशङ्ख—शङ्खनख, शङ्खनक—शङ्खनक ये २ छोटे शङ्ख के नाम हैं और शम्बूक—शम्बुक—शम्बु—शाम्बुक—

१ " ग्राहो ग्रहे जलचरे " (इति हैमः) ॥

२ " नक्रो नासामदारणोः " नक्रो यादसि (इति हैमः) ॥

३ " जलौकपि जलौका स्यान्जलूका जलजन्तुकाः " (इति तारपालः) ॥

शम्बूक, जलशुक्ति ये २ घोंघा के नाम हैं । इनमें शम्बूक पुंलिङ्ग व स्त्रीलिङ्ग है और जलशुक्ति स्त्रीलिङ्ग कहाता है और बहुवचनान्त व एकवचनान्त भी है ॥ २२।२३॥

मेघा या मेड़क, पु. पु. पु. पु. पु. पु.
छोटे कीड़े, मेके मण्डूकवर्षाभूशालूरप्लवददुंराः ।

मेड़की, स. स. स. स. स. स.
कछुई शिली गण्डूपदी मेकी वर्षाभ्वी कमठी दुलिः ॥ २४ ॥

मेक, मण्डूक, वर्षाभू, वृष्टिभू, शालूर— 'शालूर' प्लव, ददुंर ये ६ मेड़क या मेघा के नाम हैं । शिली, गण्डूपदी ये २ केचुवा की भार्या या छोटे केचुवों के नाम हैं । मेकी, वर्षाभ्वी ये २ मेड़कीके नाम या छोटे मेड़कके नाम हैं । इनमें 'वर्षाभ्वी' असाधु है ङीव्विधायक सूत्रका अभाव है इसलिये (वर्षाभू) ऐसाही स्त्रीलिङ्ग में भी होगा अन्य आचार्य गौरादित्वसे 'ङीष्' चाहते हैं उनके मतमें (वर्षाभ्वी) भी सिद्ध होता है । इसीसे भागुरि और अमरमाला में भी देखा जाता है और कमठी, दुली—दुलि—डुलि—दुडि ये २ कछुई के नाम हैं ॥ २४ ॥

मद्गुरी स. पु. स.
जोंकभेद (मद्गुरस्य प्रिया)शृङ्गी दुर्नामा दीर्घकोशिका ।

जलाशय पु. पु. पु.
कुण्ड जलाशया जलाधारा (स्तत्रागाधजलो)हृदः ॥ २५ ॥

मद्गुरनामक मत्स्यविशेष की प्यारी (भार्या) को शृङ्गी वा मद्गुरी कहते हैं । यह १ मद्गुरीका नाम है । दुर्नामा—दुर्नामन्—दुर्नाम्नी, दीर्घकोशिका—'दीर्घकोषिका' ये २ जोंकभेद या फिनाई (घिनाई) के नाम हैं । जलाशय, जलाधार ये २ तालाब व झील आदि के नाम हैं और उनमें जो अगाध (अथाह) जलाशय है उसे हृद या (हुह) भी कहते हैं यह १ अथाह जलाशय (कुण्ड) का नाम है ॥ २५ ॥

पु. न.
चरही या आहावस्तु निपानं(स्यादुपकूपजलाशये) ।

प्याऊ पु. पु. पु. पु.न.
कुआं पुंस्येवान्धुःप्रहिःकूप उदपानं तु (पुंसि वा) ॥ २६ ॥

कुआं के समीप जलाशय में आहाव, निपान होते हैं ये २ चरही या प्याऊ के नाम हैं । इनमें आहाव पुंलिङ्ग व निपान नपुंसक है और अन्धु, प्रहि, कूप, उदपान ये ४ कुआं के नाम हैं । इनमें अन्धु, प्रहि, कूप ये ३ पुंलिङ्ग हैं और उदपान विकल्प से पुंलिङ्ग में रहता है ॥ २६ ॥

गङ्गाडी स. स. पु.
जगति नेमिस्त्रिकास्य वीनाहो (मुखबन्धनमस्य यत्) ।

पुत्तरिया स. न. पु.न. पु.न.
विना बनाया पुष्करिण्यान्तु खातं स्यादखातं देवखातकम् ॥ २७ ॥

तालाब

इस कुआँ के नेमिको 'त्रिका' कहते हैं अथवा नेमि, त्रिका ये २ कुआँके ऊपर रस्सी आदि के धारने के लिये जो काठ का यंत्र (गड़ारी) है उसके नाम हैं या पाढ़ि के नाम हैं और इस कुआँका जो मुखबन्धन है उसे "वीनाह, विनाह" भी कहते हैं यह १ पक्षी जगति का नाम है । पुष्करिणी, खात ये २ पुखरिया या तलैया के नाम हैं अथवा चौकोन ताल के नाम हैं और अखात, देवखातक ये २ विना बनाये जलाशयके या देवालय के समीप वाले तालके नाम हैं ये नपुंसक व पुंलिङ्ग भी हैं ॥ २७ ॥

तालाब पु. पु.न. पु. स. न.
बड़ा सरोवर पु. पु.न. न. स. स.
छोटा सरोवर पु. पु.न. न. स. स.
बावड़ी पु. पु.न. न. स. स.

पद्माकरस्तडागो (ऽस्त्री) कासारः सरसी सरः ।

पद्माकर, तडाग, तडाक, तटाक, तटाग ये २ पद्मसमेत अगाध जलाशय (तालाब) के नाम हैं । इनमें तडाग पुंलिङ्ग व नपुंसक है । कासार, सरसी, सर ये ३ बनायेहुए सामान्य तालाबके नाम हैं । इनमें सरसी स्त्रीलिङ्ग है और सर (स्) सान्त नपुंसक है अथवा पद्माकर आदि पाँचों भी तडागमात्रके नाम हैं । वेशन्त, पल्लव, अल्पसर ये ३ छोटी तलैयाके नाम हैं । इनमें वेशन्त पुंलिङ्ग है और पल्लव नपुंसक व पुंलिङ्ग भी है और वापी—वापि, दीर्घिका ये २ बावली के नाम हैं ॥ २८ ॥

खाँई, बांध न. स. पु.
खेयन्तु परिखाधार (स्त्वम्भसां यत्र धारणम्) ।

थावला न. न. पु. स. स.
स्यादालवालमावालमावापो (ऽथ) नदी सरित् ॥२९॥

नदी स. स. स. स. स.
तरङ्गिणी शैवलिनी तटिनी हृदिनी धुनी ।

स. स. स. स. स.
स्रोतस्वती द्वीपवती स्रवन्ती निम्नगापगा ॥ ३० ॥

खेय, परिखा ये २ क़िला आदि के चारों तरफ़ जो खात बनाया जाता है उसके या खाँवा के नाम हैं । जहाँ खेत आदि के सींचने के लिये जलों का धारण होता है उसे 'आधार' कहते हैं । यह १ बांधका नाम है । आलवाल—अलवाल—आवाल—आवाप ये ३ वृक्षकी जड़ में किये जलाधार (थाल्हा) के नाम हैं (अब नदियों को कहते हैं) नदी, सरित्, तरङ्गिणी, शैवलिनी, तटिनी, हृदिनी—ह्लादिनी, धुनी—धुनि—धुनी, स्रोतस्वती—स्रोतस्विनी, स्रोतोवहा, द्वीपवती, स्रवन्ती, निम्नगा, आपगा—अपगा ये १२ नदी के नाम हैं ॥ २९ । ३० ॥

१ "इहैव जम्भूतरुमालवालवत्परीयुषोच्चैर्मरतेऽन्धिनवृते" इति प्रयोगादीर्घादिः । अलवालरोधिपुद्गः सुविप्रतः स पलाशिराशिरिव मूलसंततिः " इति माघादृक्षादिरपि ॥

स. स. स. स.
गङ्गा गङ्गा विष्णुपदी जहुतनया सुरनिम्नगा ।

स. स. स. स.
भागीरथी त्रिपथगा त्रिस्रोता भीष्मसूरपि ॥ ३१ ॥

गङ्गा, विष्णुपदी, जहुतनया, सुरनिम्नगा, भागीरथी, त्रिपथगा, त्रिस्रोता, भीष्मसू
ये ८ गङ्गाजी के नाम हैं ॥ ३१ ॥

स. स. स. स.
यमुना कालिन्दी सूर्यतनया यमुना शमनस्वसा ।

स. स. स. स.
नर्मदा रेवा तु नर्मदा सोमोद्भवा मेकलकन्यका ॥ ३२ ॥

कालिन्दी, सूर्यतनया—‘सूर्यात्मजा’ यमुना, शमनस्वसा (सु) ये ४ यमुनाके नाम
हैं और रेवा, नर्मदा, सोमोद्भवा—सोमभवा, मेकलकन्यका—मेखलकन्यका ये ४ नर्मदा
के नाम हैं ॥ ३२ ॥

नदी विशेष स. स. स. स.
कार्तवीर्य की करतोया सदानीरा बाहुदा सैतवाहिनी ।
नदी, सतलज स. स. स. स.

व्यासानदी शतद्रुस्तु शुतुद्रिः स्याद्विपाशा तु विपाट् (स्त्रियाम्) ॥ ३३ ॥

करतोया, सदानीरा ये २ गौरी के व्याह में शङ्करजी के हाथसे गिरेहुए जल से
उपजी नदीके नाम हैं । ‘बाहुदा, सैतवाहिनी’ ये २ कार्तवीर्य की नदी के नाम हैं ।
शतद्रु, शुतुद्रि ये २ “सतलज” नदी के नाम हैं । विपाशा, विपाट् ये २ व्यासा
नदीके नाम हैं । इनमें विपाशा टाबन्त व विपाट् पान्त होकर दोनों खीलिझ हैं ॥ ३३ ॥

शु. पु. स.
शोणभद्र शोणो हिरण्यवाहुः स्यात्कुल्या (ल्पा कृत्रिमा सरित्) ।

नहर स. स. स. स.
शरावती, वेत्रवती शरावती वेत्रवती चान्द्रभागा सरस्वती ॥ ३४ ॥

कवेरी, नद्यादि, स. स. पु. पु.
संगम कावेरी (सरितोऽन्याश्च) संभेदः सिन्धुसंगमः ।

शोण, हिरण्यवाहु, ‘हिरण्यवाह’ ये २ शोणभद्रके नाम हैं । छोटी बनाई नदी

१ तथा च भारते “ श्रितौ तारयते मर्त्यान्नागांस्तारयतेऽप्यधः । दिवि तारयते देवांस्तेन त्रिपथगा स्मृता ”
(इति मुकुटः) ॥

२ “प्रथमं कर्कटे देवीं ध्येयं गङ्गा रजस्वला । सर्वा रक्तवहा नद्यः करतोयाश्चवाहिनी” (इति स्मृतेः) ॥

३ चन्द्रभागायोः पर्वतयोरियम्, तत्प्रभवत्वात् “ तस्येदमित्यपि ” टिड्देति ऋषिभासः चन्द्रभागाश्चा-
मिति बह्नादिगणसूत्राच्च भवति स्वरूपयोरविशेषादिति ॥

को 'कुल्या' कहते हैं यह १ नहर का नाम है । शरावती, वेत्रवती, चान्द्रभागा, चन्द्रभागा, चान्द्रभागी-चन्द्रभागी, चन्द्रिका, सरस्वती, कावेरी ये ५ नदी विशेषों के नाम हैं । यानी 'शरावती' यह १ शरावती का नाम है । 'वेत्रवती' वेतवा का नाम है । 'चन्द्रभागा' यह चिनाव नदी का नाम है । 'सरस्वती' सरस्वती का नाम है । 'कावेरी' कावेरी का नाम है और अन्य भी कौशिकी, गण्डकी, चर्मण्वती, तापी, तपती, गोदावरी आदि नदियां हैं व जहां पर दो नदियों का मेल हुआ है उसे संभेद, सिन्धुसंगम कहते हैं ये २ नद्यादिसंगम के नाम हैं ॥ ३४ । १ ॥

पु.स.

पनारा (द्रयोः) प्रणाली (पयसः पदव्यां) त्रिषु (तूत्तरौ) ॥ ३५ ॥

दाविक

पु.स.न. पु.स.न.

सारव (देविकायां सरय्वां च) भवे दाविकसारवौ ।

जलके निकलने की राहमें 'प्रणाली, प्रणाल' यह दोनों लिङ्गमें यानी स्त्री, पुंलिङ्ग में होता है यह १ पनारा या पनरिया का नाम है । इसके उपरान्त आनेवाले दा-विक, सारव ये दोनों तीनों लिङ्ग में होते हैं यानी देविका नदी में जो हुआ है उसे 'दाविक' कहते हैं और जो सरयू नदी में हुआ है वह 'सारव' कहलाता है यह क्रम से एक २ नाम हैं ॥ ३५ । १ ॥

न.

न.

न.

न.

कुई, सफेद

सौगन्धिकन्तु कङ्गारं हल्लकं रक्तसन्ध्यकम् ॥ ३६ ॥

कमल,

न.

न.

न.

लालकमल,

फफूला,

नील कमल,

स्यादुत्पलं कुवलय (मथ) नीलाम्बुजन्म (च) ।

सफेद कमल

न.

न.

न.

इन्दीवरं (च नीलेस्मिन्) (सिते) कुमुदकैरवे ॥ ३७ ॥

सौगन्धिक, कङ्गार ये २ सन्ध्या समय फूलनेवाले सफेद कमल या कोई के नाम हैं । हल्लक, रक्तसन्ध्यक ये २ लाल कमल या तीनों समय फूलनेवाले फूलके नाम हैं । उत्पल, कुवलय, "कुवलय, कुव" ये २ कुमुद या साधारण कमलके नाम हैं । नीला-म्बुजन्म, इन्दीवर-इन्दीवर-इन्दीवर भी ये २ काले कमल के नाम हैं और 'कुमुद-कुमुद,' कैरव ये २ सफेद कमल के नाम हैं ॥ ३६ । ३७ ॥

न.

स.

स.

मकरन्द या

कमलकन्द

पुरइन, सेवार

कुमुदिनी

कमलिनी

शालूक (मेषां कन्दः) स्याद्वारिपर्णी (तु) कुम्भिका ।

स.

न.

पु.

स.

जलनीली (तु) शैवालं शैवलोथ कुमुद्रती ॥ ३८ ॥

१ " शैवलश्चैव शैवालः शैवलो जलनीलिका " (इति वाचस्पतिः) ॥

२ " कुमुद्रती कैरवियां दयितायां कुशस्य च " (इति कोषान्तरम्) ॥

स. स. स. स.
कुमुदिन्यां नलिन्यां विसिनी पद्मिनी (मुखाः) ।

इन सौगन्धिक आदि उत्पल विशेषोंकी मूलको 'शालूक' कहते हैं यह १ कमल-कन्दका नाम है । वारिपर्णी, कुम्भिका ये २ जलकुम्भी (पुरइन) के नाम हैं । जलनीली, शेवाल-शैवल-शेवल-शेवाल, शेपाल-शेयाल ये ३ सेवारके नाम हैं । कुमुद्वती-कुमुदवती, कुमुदिनी ये २ कुमुदयुक्त देश या फफूली के नाम हैं । नलिनी-नडिनी, विसिनी, पद्मिनी ये ३ पद्मसमूह या कमलिनी के नाम हैं और मुख शब्द आद्यर्थ है इसलिये "मृणालिनी, कमलिनी, पुटकिनी, सरोजिनी" आदि भी जानना चाहिये ॥ ३८ । १ ॥

पु.न. न. न. न.
कमल (वा पुंसि) पद्मं नलिनमरविन्दं महोत्पलम् ॥ ३९ ॥

न. न. न. न.
सहस्रपत्रं कमलं शतपत्रं कुशेशयम् ।

न. न. न. न.
पङ्केरुहं तामरसं सारसं सरसीरुहम् ॥ ४० ॥

न. न. न. न.
विसप्रसूनराजीवपुष्कराम्भोरुहाणि (च) ।

पद्म, नलिन, अरविन्द, महोत्पल, सहस्रपत्र, कमल, शतपत्र, कुशेशय, पङ्केरुह, तामरस, सारस, सरसीरुह-सरसिरुह-सरोरुह, विसप्रसून, राजीव, पुष्कर, अम्भोरुह ये १६ सामान्य कमलक नाम हैं । इनमें "पद्म" विकल्पस पुंलिङ्ग है ॥ ३९।४०।१ ॥

न. न. न.
सफेद कमल, पुण्डरीकं सिताम्भोज (मथ) रक्तसरोरुहे ॥ ४१ ॥

लाल कमल, न. न. स. न.
कमलदण्ड, रक्तोत्पलं कोकनदं नाला नाल (मथास्त्रियाम्) ।

पु.न. न. पु.न.
कमल समूलमृणालं विस(मब्जादिकदम्बे)षण्ड(मस्त्रियाम्) ॥ ४२ ॥

पुण्डरीक, सिताम्भोज ये २ सफेद कमल के नाम हैं । रक्तसरोरुह, रक्तोत्पल, कोकनद ये ३ लाल कमल के नाम हैं । नाला-नाली, नाल ये २ पद्मादि क नाल

१ "नलःपोटगले राक्षि पितृदेवे कपीश्वरे । नली मनःशिलायां तु नलिनेऽपि नलं मतम्" (इति विश्वः) नलिनी पुनः । "पद्माकरे गङ्गाञ्जिन्योः" (इति हैमः) ॥

२ "पद्मिनी पद्मसंघाते स्त्रीविशेषे सरोऽम्बुजे" (इति मेदिनी) ॥

३ सरसि रोहतीति विग्रहे "तत्पुरुषे कृति बहुलम् (६ । ३ । १४) इत्यलुकि ह्रस्वेकारोऽपि । तथा च भारविः "अयमच्युतस्य वचनैः सरसिरुहर्जन्मनः" इति मुकुटः ॥

४ "सान्द्रं चन्दनमङ्गके वलयिता पाथी मृणालालता" (इति राजशेखरः) ॥

या दण्ड के नाम हैं । मृणाल, मृणाली, विस-विश-विष ये २ कमलादिकोंकी मूल या भँसीड़े के नाम हैं । ये खीलिङ्ग नहीं हैं । वरन पुंलिङ्ग व नपुंसक में रहते हैं परन्तु अपचय विवक्षा में गौरादित्व से मृणाली भी होता है उसीसे (पाणौ मृणालीलता) यह भी संगत होता है और पद्मादिकों के समूह में षण्ड व शण्ड भी पुंलिङ्ग व नपुंसक में रहता है यह १ कमलादिसमूह का नाम है ॥ ४१ । ४२ ॥

कमल की जड़ पु. पु. पु. पु.न.
 कमलकी धूलि करहाटः शिफाकन्दः किञ्जल्कः केसरो (ऽस्त्रियाम्) ।
 कमल आदि त. न. पु. पु.
 के नये पत्ते संवर्तिका नवदलं बीजकोषो वराटकः ॥ ४३ ॥
 कमलगट्टा

करहाट, शिफाकन्द अथवा कितेक आचार्यों के मतमें शिफा, कन्द ये दो नाम कहाते हैं ये २ कमल की जड़ के नाम हैं । किञ्जल्क, केसर या “केशर” ये २ कमलकी केसर (धूलि) के नाम हैं । इनमें ‘किञ्जल्क’ पुंलिङ्ग है और केसर पुंलिङ्ग व नपुंसक में रहता है । संवर्तिका, संवर्ति, नवदल और “नवपत्रिका” ये २ कमलादि के नवीन पत्तों के नाम हैं और बीजकोष-बीजकोश, वराटक ये २ कमलबीज (कमलगट्टे) के नाम हैं ॥ ४३ ॥

इति वारिवर्गविवरणम् ॥

उक्तवर्गसंग्रहेणोपसंहरन्नाह—

उक्तं स्वर्ग्योमदिक्कालधीशब्दादिसनाढ्यकम् ।

पातालभोगिनरकं वारि चैषां च संगतम् ॥ ४४ ॥

इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने ।

स्वरादिकाण्डः प्रथमः साङ्ग एव समर्थितः ॥ ४५ ॥

स्वर्ग, व्योम, दिशा, काल, धी, शब्दादि, नाट्य, पातालभोगि, नरक और वारि-वर्ग इन्होंको कहा और इन्हींके सम्बन्धवश से प्राप्त जो देव, असुर, मेघ आदि वह भी मैंने कहा इस भांति अमरसिंह के बनाये नामों व लिङ्गों के कहनेवाले ग्रन्थ में अङ्ग उपाङ्गों समेत पहला स्वरादिकाण्ड कहा गया आदि शब्द से पातालवर्ग का ग्रहण किया जाता है यहां यह भाव है कि इस काण्ड में दोही मुख्य वर्ग कहे हैं पहला स्वर्गवर्ग और दूसरा पातालवर्ग है वहां नाट्यवर्गपर्यन्त स्वर्ग के साधारण पदार्थों का निरूपण किया है इसलिये स्वर्गवर्ग कहाता है उसके उपरान्त पाताल

के संगत अर्थों के निरूपण करने से पातालवर्ग कहा जाता है यह जानना चाहिये ॥ ४४ । ४५ ॥

दो० अमरसिंह कृत कोष महँ, काण्डत्रय सुखान ।

प्रथमकाण्ड वर्णन कस्यो, द्विजवर शक्ति सुजान ॥ १ ॥

इति श्रीमदमरसिंहविरचितेऽमरकोषे श्रीमद्रायबहादुरभार्गवप्रयागनारायणाक्षया

द्विजवरशक्तिधरविरचितायां सभाषायां रसालाख्यायां व्याख्यायां

प्रथमः काण्डः समाप्तिमगादिति शिवम् ॥ १ ॥



ॐ परमात्मने नमः ॥

श्रीमदमरसि विरचितः अमरकोषः ।

सभाषया रसालाख्यया व्याख्यया समेतः ॥

द्वितीयं काण्डम् ।

वर्गाः पृथ्वीपुरक्षमाभृद्वनौषधिमृगादिभिः ।

नृब्रह्मक्षत्रविदशूद्रैः साङ्गोपाङ्गैरिहोदिताः ॥ १ ॥

इस दूसरे काण्डमें अङ्ग व उपाङ्ग समेत, पृथ्वी, पुर, क्षमाभृत, (शैल) वनौषधि, मृगादि, (सिंह) नृ, ब्रह्म, क्षत्र, विद और शूद्र इन दशवर्गों से उपलक्षित वर्गों को कहने के लिये आरम्भ करते हैं ॥ १ ॥

स. स. स. स. स. स. स.
पृथ्वी भूर्भूमिरचलानन्ता रसा विश्वंभरा स्थिरा ।

स. स. स. स. स. स. स.
धरा धरित्री धरणी क्षोणी ज्या काश्यपी क्षितिः ॥ २ ॥

स. स. स. स.
सर्वसहा वसुमती वसुधोर्वी वसुंधरा ।

स. स. स. स. स. स. स. स.
गोत्रा कुः पृथिवी पृथ्वी क्षमाऽवनिर्मेदिनी मही ॥ ३ ॥

भू, भूमि-भूमी अचला, अनन्ता, रसा, विश्वम्भरा, स्थिरा, धरा, धरित्री, धरणी-धरणि, क्षोणी-क्षोणि, ज्या, काश्यपी, क्षिति, सर्वसहा, वसुमती, वसुधा, उर्वी, वसुंधरा, गोत्रा, कु, पृथिवी-पृथ्वी-पृथ्वी, क्षमा-क्षमा, अवनि-अवनी, मेदिनी, मही-महि ये २७ पृथ्वी के नाम हैं और “विपुला गह्वरी धात्री गौरिला कुम्भिनी क्षमा । भूतधात्री रत्नगर्भा जगती सागराम्बरा” विपुला, गह्वरी, धात्री, इला-इडा, कुम्भिनी, क्षमा, भूतधात्री, रत्नगर्भा, जगती, सागराम्बरा ये भी ११ पृथ्वी के नाम हैं ॥ २।३ ॥

१ “मृगशब्द आरण्यापशुमात्रपरः “आरण्याः पशवो मृगाः” (इति स्मृतेः) आदिशब्देन पक्षिकीटादीनां ग्रहणम् तस्य चाङ्गोपाङ्गानि पक्षिपक्षादीनि । मृगान्तुं शीलं यस्येति मृगादी सिंहस्ताण्डील्ये णिनिर्वा ॥

मिट्टी स. स. स. स.
 अच्छी मिट्टी स. पु. स.
 सर्वसस्ययुक्त स. पु. स.
 लार मिट्टी स. पु. स.
मृत्-मृदा-मृत्ति, मृत्तिका ये २ मिट्टी के नाम हैं । मृत्सा, मृत्स्ना ये २ अच्छी मिट्टी के नाम हैं । जो सर्वधान्यों से सम्पन्न मिट्टी है उसे उर्वरा कहते हैं यह १ सर्व सस्ययुक्त मिट्टी का नाम है । ऊषः क्षारमृत्तिका ये २ लोना मिट्टी के नाम हैं ॥ ४ ॥

उत्तर पु.स.न. पु.स.न. न. स.
 कृत्रिम स्थान पु. पु. पु.स.न. पु.स.न.
 मरुस्थल पु. पु. पु.स.न. पु.स.न.
 जंगल पु. पु. पु.स.न. पु.स.न.
 जगत् या स. पु. न. न. न.
 भूतल स. पु. न. न. न.
**ऊषवानूषरो(द्रावप्यन्यलिङ्गौ) स्थलं स्थली ।
 (समानौ)मरुधन्वानौ द्वे खिलाप्रहते(समे) ॥ ५ ॥
 (त्रिष्वथो) जगती लोको विष्टपं भुवनं जगत् ।**

ऊषवान्, ऊषर ये दोनों अन्यलिङ्ग हैं ये २ उत्तर के नाम हैं । स्थल, स्थली ये २ अकृत्रिमस्थान के नाम हैं और कृत्रिमस्थल को स्थला कहते हैं । मरु, धन्वा ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहते हैं ये २ मरुस्थल (माड़वार आदि निर्जलदेश) के नाम हैं । खिल, अप्रहत ये दोनों समानार्थक होकर तीनों लिङ्ग में होते हैं ये २ बिना जोते खेत या धरती के नाम हैं इसके अनन्तर जगती, लोक, विष्टप 'विष्टप' भुवन, जगत् ये ५ भूतल के नाम हैं "एकं महाभूतं पृथ्वी, पञ्चमहाभूतेन्द्रियविषयात्मकं जगदिति पृथ्वीजगतोभेदोऽवगन्तव्य इति" एक महाभूत पृथ्वी है और पञ्चभूत, इन्द्रियविषयात्मक जगत् (दुनिया) है यह पृथ्वी और जगत् का भेद जानना चाहिये ॥ ५ । १ ॥

न.
 भारत या वर्ष (लोकोऽयं)भारतं वर्षं शरावत्यास्तु योऽवधेः ॥ ६ ॥

पु. पु.
 सब देश पु. पु.
 पूर्व उत्तर पु. पु.
 म्लेच्छदेश पु. पु.
 मध्यदेश पु. पु.
**(देशः प्राग् दक्षिणः) प्राच्य उदीच्यः(पश्चिमोत्तरः) ।
 प्रत्यन्तो म्लेच्छदेशः स्यान्मध्यदेश(स्तु)मध्यमः ॥ ७ ॥**

इस जम्बूद्वीप के वर्ती नवम अंशवाले लोक को भारतवर्ष या भरतवर्ष कहते हैं " समुद्रकं उत्तर व हिमाचल के दक्षिण जो वर्ष है उसको भारत (हिन्दुस्थान) कहते हैं जहां भारती सन्तान रहती है । भारत, वर्ष इन दोनों में से भारत नपुंसक व वर्ष पुलिङ्ग व नपुंसक है इस भांति इलाहूत आदि द्विवर्ष और भी हैं और शरावती

नदी से पूर्व व दक्षिण देशको 'प्राच्य' कहते हैं यह १ शरावती से पूर्व दक्षिणदेश का नाम है। तथा पश्चिम व उत्तर देशको 'उदीच्य' कहते हैं यह १ शरावती से पश्चिमोत्तर देश का नाम है और प्रत्यन्त, म्लेच्छदेश "जिस देशमें चारों वणों की व्यवस्था न हो उसको 'म्लेच्छदेश' कहते हैं इसके अनन्तर 'आर्यावर्त' कहाता है" ये २ शिष्टाचाररहित खशादि देशों (फारस, रूम आदिकों) के नाम हैं और मध्यदेश, मध्यम "विन्ध्याचल से उत्तर, हिमालयसे दक्षिण, कुरुक्षेत्र से पूर्व और प्रयाग से पश्चिम देश को मध्यदेश कहते हैं" ये २ मध्यदेश के नाम हैं ॥ ६ । ७ ॥

पु. पु.
आर्यावर्त आर्यावर्तः पुण्यभूमि (मध्यं विन्ध्यहिमागयोः) ।
राज्य या देश पु.स. पु. पु. पु. न.
देशानगरग्रामनीवृज्जनपदो देशविषयौ तूपवर्तनम् ॥ ८ ॥

विन्ध्याचल व हिमालय के मध्य को यानी बङ्गाल के समुद्र से पश्चिम, अरब समुद्र से पूर्व, हिमालय से दक्षिण व विन्ध्याचल के उत्तर देश को आर्यावर्त व पुण्य भूमि कहते हैं ये २ विन्ध्याचल व हिमाचल के मध्य देश के नाम हैं । नीवृत्, जनपद ये २ राज्य व जनों के निवासस्थान (बस्ती) के नाम हैं और देश, विषय, उपवर्तन ये ३ देशमात्र के नाम हैं ॥ ८ ॥

पु.स.न. पु.स.न.
नरसलकादेश (त्रिष्वागोष्ठान्नडप्राये) नड्वान्नड्वल (इत्यपि) ।

फफूलाकादेश पु.स.न. पु.स.न.
बहुवेतका कुमुद्वान् (कुमुदप्राये) वेतस्वान् (बहुवेतसे) ॥ ९ ॥

गोष्ठ शब्द पर्यन्त वक्ष्यमाण शब्द तीनों लिङ्ग में जानना चाहिये जिस देश में नरकुल अधिकता से होते हैं उसे 'नड्वान्' व 'नड्वल' कहते हैं ये २ नडाधिक देश के नाम हैं व जहां कुमुद (फफूला) अधिकतासे होते हैं उसको 'कुमुद्वान्' कहते हैं यह १ कुमुदाधिक देशके नाम हैं व जहां बहुत से वेत होते हैं उस देशको 'वेतस्वान्' कहते हैं यह १ बहुतवेतवाले देशका नाम है ॥ ९ ॥

पु.स.न. पु.स.न.
घासवालादेश शाद्वलः (शादहरिते) (सजम्बाले तु) पङ्किलः ।

कीचङ्गुक्त पु.स.न. पु.स.न. पु.
सजल जलप्रायमनूपं स्यात्पुंसि कच्छ (स्तथाविधः) ॥१०॥

जहां हरी घास होती है उस देश को 'शाद्वल' कहते हैं यह १ हरी घासवाले देशका नाम है जो कीचङ्समेत देश है उसे 'पङ्किल' कहते हैं यह १ बोवहे देश का नाम है । जहां जल अधिकता से होता है उसे जलप्राय व अनूप कहते हैं ये २

बहुत जलवाले देशके नाम हैं तैसेही अनूप के समान किसी नदी आदिके समीप देशको 'कच्छ' कहते हैं यह १ कछारदेशका नाम है यह पुंलिङ्ग में रहता है यहां (त्रिपु) इसके बाधनके लिये 'पुंसि' ऐसा कहा है ॥ १० ॥

स. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
बालूयुक्त स्त्री शर्करा शर्करिलः शार्करः शर्करावति ।
कंकड़युक्त पु.स.न.

बालूवाला 'देशएवादि' मावेवमुन्नेयाः सिकतावति ॥ ११ ॥

शर्करा, शर्करिल, शार्कर, शर्करावान् ये ४ बहुत पथरीली अधिक मिट्टी के नाम हैं । शर्करा, शर्करिल ये २ बालूयुक्त देश के नाम हैं इनमें शर्करा स्त्रीलिङ्ग है और शार्कर, शर्करावान् ये २ देश या प्रदेश के नाम हैं इसी प्रकार सिकता, सिकतिल ये २ कंकड़युक्त देशके नाम हैं और सैकत, सिकतावान् ये २ देश वा प्रदेशमें होते हैं ये ४ बहुतसी बालूवाले या सिटकहे देश के नाम हैं ॥ ११ ॥

नदीमातृक (देशो) नद्यम्बुवृष्ट्यम्बुसपन्नव्रीहिपालितः ।

पु.स.न. पु.स.न.
देवमातृक स्यान्नदीमातृको देवमातृकश्च (यथाक्रमम्) ॥ १२ ॥

नदी के जलसे सींचेहुए धान्य से पालित देशको 'नदीमातृक' कहते हैं यह १ नदीके जल से सींचे खेतवाले देशका नाम है और जो वर्षा के जल से सींचे हुए धान्य से पालित देश है उसको 'देवमातृक' कहते हैं यह १ बरसाती पानी से सींचे खेतवाले देशका नाम है ॥ १२ ॥

पु.स.न. पु.स.न.
नीतिमानराजा (सुराज्ञि देशे) राजन्वान् स्या(ततोऽन्यत्र) राजवान् ।
राजाज्ञायुक्त न. न. न.
गैयों का स्थान पहला स्थान गोष्ठं गोस्थानकं (तत्तु) गौष्ठीनं (भूतपूर्वकम्) ॥ १३ ॥

जहां धर्मात्मा राजा हो उस देश में 'राजन्वान्' होता है यह १ सुराजयुक्त देश का नाम है व जहां सामान्य राजा रहता है उस देश में 'राजवान्' होता है यह १ सामान्य राजयुक्त देश का नाम है । गोष्ठ, गोस्थानक ये २ गोस्थान (गोठ) के नाम हैं व जहां पहले गौवों का स्थान रहा हो उसको 'गौष्ठीन' कहते हैं यह १ भूत-पूर्व गोस्थान का नाम है ॥ १३ ॥

स. पु. स.
नदी पहाड़ के पर्यन्तभूः परिसरः सेतुरालौ (स्त्रियां पुमान्) ।
निकटका पुल पु. पु. पु.न.

व्यमौर वामलूरश्च नाकुश्च बल्मीकं (पुंनपुंसकम्) ॥ १४ ॥

पर्यन्तभू, परिसर ये २ नदी पर्वतादि के समीप भूमि के नाम हैं । सेतु, आलि—
आली ये २ सेतु या पुल के नाम हैं । इनमें सेतु पुलिङ्ग है और आलि खीलिङ्ग है ।
वामलूर, नाकु, वल्मीक ये ३ चींटी आदिकों से निकाली मिट्टी के ढेर (व्यमौर)
के नाम हैं इनमें व (व) ल्मीक पुलिङ्ग व नपुंसक में रहता है ॥ १४ ॥

न. न. पु. पु. पु. स. स.

सड़क या रास्ता अयनं वर्त्ममागार्ध्वपन्थानः पदवी सृतिः ।

स. स. स. स. स.

सरणिः पद्धतिः पद्यावर्तन्येकपदीति च ॥ १५ ॥

अयन, वर्त्म (न्) मार्ग, अर्ध्वा (न्) पन्था (थिन्) पथ, पथन (वाट)
पदवी—पदवि, सृति—सरणि—सरणी, शरणि—शरणी, पद्धति (पद्धती) पद्या, व-
र्तनी—वर्तनि—वर्त्मनी—वर्त्मनि, एकपदी, एकपाद् ये १२ मार्ग (गली—सड़क) के
नाम हैं ॥ १५ ॥

पु. पु. पु.

अच्छी रास्ता अतिपन्थाः सुपन्थाश्च सत्पथ(श्चार्चितेऽध्वनि) ।

पु. पु. पु. पु. पु.

कुमार्ग व्यध्वो दुरध्वो विपथः कदध्वा कापथः (समाः) ॥ १६ ॥

अतिपन्था (थिन्) सुपन्था, सत्पथ ये ३ अच्छे मार्ग के नाम हैं और व्यध्व,
दुरध्व, विपथ, कदध्वा (न्) कापथ और कुपथ ये समानार्थक होकर समानलिङ्ग
कहाते हैं ये ५ गुरीमार्ग के नाम हैं ॥ १६ ॥

अमार्ग पु. न. न. न.

चौराहा अपन्थास्त्वपथं तुल्ये शृङ्गाटकचतुष्पथे ।

दूर या शला न. पु. न.

दुर्गममार्ग प्रान्तरं(दूरशून्योऽध्वा)कान्तारं (वर्त्मदुर्गमम्) ॥ १७ ॥

अपन्था, अपथ ये दोनों समानार्थक कहाते हैं ये २ जहां मार्ग न हो उसके नाम
हैं इनमें 'अपन्था' पुलिङ्ग है और 'अपथ' नपुंसक कहाता है । शृङ्गाटक, चतुष्पथ ये २
चौराहे के नाम हैं ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं । दूर और सूने
मार्ग को 'प्रान्तर' कहते हैं यह १ जहां बड़ी दूरतक जाया, जल व मनुष्यादि न
हों उसका नाम है और दुर्गम मार्ग को 'कान्तार' कहते हैं यह १ चोर व कांटे
आदिकों से घिरे मार्ग का नाम है ॥ १७ ॥

दो कोस स. पु. न. पु.

चार सौ हाथ गव्यूतिः (स्त्री) क्रोशयुगं नल्वः(किञ्चतुःशतम्) ।

राजमार्ग पु. न. न.

ग्रामार्ग घण्टापथः संसरणं तत्पुरस्योपनिष्करम् ॥ १८ ॥

इति २ भिन्नः ॥

गव्यूति, क्रोशयुग ये २ दो कोस के नाम हैं इनमें गव्यूति स्त्रीलिङ्ग है चार हाथ का धनुष होता है, दो हजार धनुषों की गव्यूति कहाती है वह शब्दार्णव व वाचस्पति के प्रमाण से पुंलिङ्ग व स्त्रीलिङ्ग है चारसौ हाथों का 'नल्व' होता है व कात्यने सौ हाथका व भट्टक्षीर स्वामी तथा मुकुटने एकसौ बीस हाथका 'नल्व' दिखलाया है और घण्टापथ, संसरण ये २ राजमार्ग के नाम हैं और यदि वह मार्ग पुरके निकलने का हो तो 'उपनिष्कर' या उपस्कर कहत हैं "द्यावापृथिव्यौरोदस्यौद्यावाभूमी च रोदसी । दिवस्पृथिव्यौ गञ्जातु रुमास्याल्लवणाकरः " यह क्षेपक है ॥ १८ ॥

इति भूमिवर्गविवरणम् ॥

अथ पुरवर्गो व्यख्यायते ॥

नगर या नगरी, पूः (स्त्री) पुरी नगर्यौ (वा) पत्तनं पुटभेदनम् ।
 उपनगर या न. पु.
 शास्त्रानगर, स्थानीयं निगमौ "ऽन्यत्तु यन्मूलनगरात्पुरम्" ॥ १ ॥
 न. पु. पु.
 वेश्या का घर तच्छाखानगरं वेशो वेश्याजनसमाश्रयः ।

पूः, पुरी, नगरी, पत्तन, पट्टन-पट्टनी, पुटभेदन-पटभेदन, स्थानीय, निगम ये ७ नगर या राजधानी के नाम हैं इनमें पूः स्त्रीलिङ्ग है और पुरी-नगरी ये विकल्प से स्त्रीलिङ्ग हैं पक्षमें पुर-नगर नपुंसक में रहते हैं परन्तु यहां पर कितेक आचार्यों ने भेद प्रकट किया है कि जहां अनेक व्यापारी व कारीगरों का व्यवहार होता है उसको पुर आदि कहते हैं व जहां राजा व राजसेवक रहते हैं उस पुर (शहर) को पत्तन आदि कहते हैं और जो परकोटों से घिरकर विस्तीर्ण हो उसे स्थानीय आदि कहते हैं और जो मूलनगर (राजधानी) से अन्यपुर है वह शास्त्रानगर कहाता है यह १ उपनगर का नाम है और वेश, वेश्याजनसमाश्रय ये २ वेश्याघर के नाम हैं " नेपथ्ये गृहमात्रे च वेशो वेश्यागृहेपि चेति तालव्यान्ते रभसः " गृहमात्र व वेश्याके घरमें वेश और अहङ्कार में पान्त वा शान्त भी कहाता है ॥ १ । १ ॥

बाज़ार पु. स. पु.स. स.
 हाट आदि आपणस्तु निषद्यायां विपणिः परायवीथिका ॥ २ ॥
 भीतरकीरास्ता स. स. स. पु. पु.न.
 लार्ह रथ्या प्रतोली विशिखा स्याच्चयोवप्र (मस्त्रियाम्) ।

आपणा, निषद्या 'हट्ट' ये २ बाज़ारके नाम हैं । विपणि-विपणी, परायवीथिका,

१ पट्टनं पुटभेदनमिति वाचस्पतिः ॥

२ "निगमाः पूर्वविश्वेदनिश्चयाज्जवविषयाः (इति हैमः) ॥

पण्यवीथी ये २ बाज़ार रहित विक्रयस्थान के नाम हैं व किसीके मतमें चारो बाज़ार के नाम हैं । रथ्या, प्रतोली, विशिखा ये ३ गाँव की भीतरी मार्ग के नाम हैं । चय, वप्र ये २ रक्कबा के पङ्केड़ के नाम हैं इनमें वप्र पुंलिङ्ग व नपुंसकलिङ्ग है (वप्रश्चावरणे वृन्दे प्राकारे मूलबन्धने इति धरणिः) यह धरणीकोषमें कहा है ॥ २ । ३ ॥

पु. पु. पु. न.

घेर घिरा भीति प्राकारो वरणः सालः प्राचीनं (प्रान्ततो वृतिः) ॥ ३ ॥

या दीवाल स. न. न.

पत्थर वा हड्डी भित्तिः (स्त्री) कुड्यमेडूकं (यदन्तर्न्यस्तकीकसम्) ।

प्राकार, वरण, शाल, साल ये ३ प्राकार (घेर या रक्कबा) के नाम हैं या बांस व कण्टकादिकों से घिरे के नाम हैं । नगर आदिकों के किनारे जो बांस व कण्टकादिकों से घिरा स्थान है उसे 'प्राचीन' या 'प्राचीर' कहते हैं यह १ बारी या व्यनई का नाम है । भित्ति, कुड्य, कुय, ये २ भीत या दीवार के नाम हैं । इनमें भित्ति स्त्रीलिङ्ग है और वही 'कुड्य' कि जिसके भीतर हड्डियां हों उसे एडूक, एडुक वा एडोक भी कहते हैं यह १ जिस भीत में पुष्टता के लिये हड्डियां रक्खी गई हों उसका नाम है ॥ ३ । ३ ॥

न. पु. न. न. न. न. न.

घर

गृहं गेहोदवसितं वेश्म सद्य निकेतनम् ॥ ४ ॥

न. न. न. न. न. न.

निशान्तवस्त्यसदनं भवनाऽऽगारमन्दिरम् ।

पु. पु. पु. पु.

गृहाः (पुंसि च भूमन्येव) निकाय्यनिलयाऽऽलयाः ॥ ५ ॥

पु. पु. स. स. न.

कचहरी चौक वासः कुटी (द्वयोः) शाला सभा संजवनं (त्विदम्) ।

न. स. पु. न.

भोपड़ी चतुःशालं (मुनीनां तु) पर्णशालोटजो (ऽस्त्रियाम्) ॥ ६ ॥

गृह, गेह, उदवसित, वेश्म (न्) सद्य (न्) निकेतन, निशान्त, वस्त्य, सदन, भवन, आगार-आगार, मन्दिर, गृह, निकाय्य, निकाय, निलय, आलय ये १६ घरके नाम हैं । इनमें गृह नित्य बहुवचनान्त होकर पुंलिङ्गमें रहता है चकार से नपुंसक भी है । वास, कुटी-कुटि, कुटीर, कुट, शाला, साला, सभा ये ४ सभाघरके नाम हैं व किसी के मत में ये भी चार घरही के नाम हैं इनको मिलाकर २० नाम हैं । संजवन, संय-मन, चतुरशाल-चतुरशाला ये २ चौक के नाम हैं । पण्यशिला, उटज ये २ मुनियों की कुटी घर के नाम हैं इनमें 'उटज' घास व पत्तों से छाये भोपड़े को कहते हैं यह पुंलिङ्ग व नपुंसक है ॥ ४ । ६ ॥

यज्ञवेदी न. न. स.
 अश्वशाला चैत्यमायतनं (तुल्ये) वाजिशाला (तु) मन्दुरा ।
 घुनार आदिका न. स. स. स.
 घर जलशाला आवेशनं शिल्पिशाला प्रपा पानीयशालिका ॥ ७ ॥
 प्याऊ

चैत्य, आयतन ये २ यज्ञस्थान या उद्देश्यवृक्षके नाम हैं । ये दोनों समानार्थ होकर समानलिङ्ग कहाते हैं । वाजिशाला, मन्दुरा ये २ घोड़शाल (स्तबल) के नाम हैं । आवेशन, शिल्पिशाला, शिल्पिशाल, शिल्पशाला, शिल्पशाल ये २ सोनार आदिकों की शाला के नाम हैं और प्रपा, पानीयशालिका—पानीयशाला ये २ पय-शाला (प्याऊ) के नाम हैं ॥ ७ ॥

पु. स. न.
 पाठशाला मठ (श्छात्रादिनिलयो) गञ्जा (तु) मदिरागृहम् ।
 मद्यघर न. न. न. न.
 घर का मध्य गर्भागारं वासगृहमरिष्टं सूतिकागृहम् ॥ ८ ॥
 सोवरि

विद्यार्थी, परिव्राजक व क्षपणाक आदिकों के निवासस्थान को 'मठ' कहते हैं यह १ विद्यार्थी आदिके निवासस्थान का नाम है । गञ्जा, गुञ्जा, मदिरागृह ये २ जहां शराब निकालाजाता या धराजाता है उसके नाम हैं । गर्भागार, वासगृह ये २ घरके मध्यके नाम हैं और अरिष्ट, सूतिकागृह—सूतकागृह ये २ प्रसवस्थान (सोवरिघर) के नाम हैं अथवा ये चारो पर्यायवाचक हैं यह कितेक आचार्योंका मत है "कुट्टिमोऽस्त्रीनिबद्धा भृश्चन्द्रशाला शिरोगृहम्" जिसमें पाषाण आदिसे बँधी भूमिहै उसे 'कुट्टिम' कहते हैं यह पुंलिङ्ग व नपुंसक है और चन्द्रशाला, शिरोगृह ये २ घरके धुर ऊपर अटारीके नाम हैं ॥ ८ ॥

न. पु. पु.न. पु.
 ऋरोला वातायनं गवाक्षोऽथ मण्डपो (स्त्री) जनाश्रयः ।
 मण्डप धनियों का घर न. पु.
 देवालय, महल हर्म्यादि "धनिनां वासः" प्रासादो (देवभूभुजाम्) ६ ॥

वातायन, गवाक्ष ये २ ऋरोले के नाम हैं । मण्डप, जनाश्रय ये २ मण्डप के नाम हैं । इनमें मण्डप पुंलिङ्ग व नपुंसक है । धनियों के घरको 'हर्म्य' कहते हैं आदि शब्द से 'स्वस्तिक' आदिकों का ग्रहण किया जाता है । देवता व राजाओं के घरको प्रासाद कहते हैं यह १ देवमन्दिर या राजमहल का नाम है ॥ ६ ॥

पु.न. न. स. स.
 राजघर सौधो (स्त्री) राजसदनमुपकार्योपकारिका ।

१ भाष्येतु वा सूतकापुत्रिकावृन्दारकाणामित्युपलभ्यते ॥

२ " उपकार्युपकारिका " इति द्विरूपकोषदर्शनादुपकारीत्यपि ॥

डेरु या तंभु पु.न. पु.न. पु.न.
गृह भेद स्वस्तिकः सर्वतोभद्रो नन्द्यावर्तादयोपि च ॥ १० ॥
पु.न.

विच्छन्दक “प्रभेदा हि भवन्ति श्वरसन्ननाम्” ।

सौध, राजसदन ये २ राजघर के नाम हैं । इनमें सौध पुंलिङ्ग व नपुंसक है ।
उपकार्या ‘उपकारी,’ उपकारिका ये २ सामान्य राजघर के या डेरु तम्बूके नाम हैं
अथवा ये ४ राजघर के ही नाम हैं ‘स्वस्तिक’ आदि और ईश्वरसन्न पर्यन्त राजघरों
के भेद हैं उनमें चार दरवाजे व तोरण समेत जो घर है उसे (स्वस्तिक) कहते हैं ।
दुमहले पँचमहले घरको ‘सर्वतोभद्र’ कहते हैं । गोलाकार बँगलेनुमा घरको नन्द्यावर्त
कहते हैं और बड़े सुन्दर घरको ‘विच्छन्दक’ या ‘विच्छन्दक’ कहते हैं और आदि शब्द
से ‘रुचक’ व ‘वर्धमान’ आदिकों का ग्रहण किया जाता है यह एक २ ईश्वरगृहवि-
शेषों के नाम हैं ॥ १० । ३ ॥

रनिवास न. न.
“रुयगारं भूभुजा” मन्तःपुरं स्यादवरोधनम् ॥ ११ ॥

अट्टा पु. पु. पु. पु.न.
दरवाजे के शुद्धान्तश्चावरोधश्च स्यादट्टः क्षोममस्त्रियाम् ।
बाहर का चौ- पु. पु. पु.
तरा या चौपार प्रघा गप्रघणालिन्दा ‘बहिर्द्वारप्रकोष्ठके’ ॥ १२ ॥

राजाओं की रानियों के घरको अन्तःपुर, अवरोधन, शुद्धान्त और अवरोध
कहते हैं ये ४ रनिवासेके नाम हैं । अट्ट, क्षोम-क्षोम ये २ हर्म्य आदिके पिछले या
ऊपरले भाग या अट्टारी के नाम हैं इनमें ‘क्षोम’ पुंलिङ्ग व नपुंसक में रहता है
और दरवाजेके बाहिरी प्रकोष्ठमें प्रघाण, प्रघण, आलिन्द अलिन्द, ये ३ द्वारप्रकोष्ठ
के बाहर या द्वार के आगे चौपार के नाम हैं ॥ ११ । १२ ॥

स. स. न. न. न.
देहली गृहावग्रहणी देहल्यङ्गनं चत्वरजिरे ।
आंगन स. स.

मस्तकपट्टी ‘अधस्तादारुणि’ शिला नासा ‘दारूपरिस्थितम्’ ॥ १३ ॥

गृहावग्रहणी, देहली ये २ चौकठे के नाम हैं । अङ्गन, (अङ्गण) चत्वर, अजिर,
‘प्राङ्गण’ ये ३ आंगन के नाम हैं । शिला, शिल, शिली यह १ द्वारस्तम्भके नीचे धरे
काष्ठ का नाम है अथवा लतखोरा का नाम है ‘नासा’ यह द्वारस्तम्भ के ऊपर स्थित
काष्ठ या उत्तरङ्ग का नाम है अथवा मस्तकपट्टी या गणेशपट्टी का नाम है ॥ १३ ॥

न. न. न. पु.
खिड़की, गुप्तद्वार प्रच्छन्नमन्तद्वारं स्यात्पक्षद्वारन्तु पक्षकः ।

घरके छाने का पु.न. न. पु. न. स.
सामान
छावना वलीकनीध्रे पटलप्रान्ते(ऽथ) पटलं छदिः ॥ १४ ॥

प्रच्छन्न, अन्तद्वार ये २ गुप्तद्वार (खिड़की) के नाम हैं । पक्षद्वार, पक्षक ये २ बगल के द्वार के नाम हैं । वलीक, नीध्र, (नीत्र) पटलप्रान्त (पट-चाल) ये ३ वरौनी के नाम हैं अथवा घर छानेके लिये भीतिसे बाहर गढ़े घोरा या घुरिया या बड़ेर के नाम हैं और पटल, छदि (स्) ये २ छानी के नाम हैं इनमें इसन्त छदि शब्द नपुंसक व स्त्रीलिङ्ग भी है ॥ १४ ॥

स. स.
धरनि, कूवा या गोपानसी (तु) वलभी (छादने वक्रदारुणि) ।
बज्जा, कबूतरों स. पु.न.
का घर कपोतपालिकायान्तु विटङ्कं (पुंनपुंसकम्) ॥ १५ ॥

गोपानसी, वलभी—वलभि ये २ छाने के लिये जो टेढ़ा काष्ठ है उसमें रहते हैं, ये २ भित्तियों में छानेके लिये दिये टेढ़े काष्ठ के या छाने के आधारवंश पञ्जर के या बज्जा के नाम हैं । कपोतपालिका, विटङ्क ये २ कबूतरखाने के नाम हैं इनमें कपोतपालिका स्त्रीलिङ्ग है और विटङ्क पुंलिङ्ग व नपुंसक में रहता है ॥ १५ ॥

मोहरा या द्वार स. न. पु. स. स.
वेदी या चौतरा (स्त्री) द्वाद्वारं प्रतीहारः स्याद्वितर्दिस्तु वेदिका ।
बाहिरी फाटक पु. न. न. न.

नगरका फाटक तोरणो(ऽस्त्री) बहिर्द्वारं पुरद्वारन्तु गोपुरम् ॥ १६ ॥

द्वाः, द्वार, प्रतीहार—प्रतिहार ये ३ द्वार या मोहार के नाम हैं इनमें रेफान्त द्वार स्त्रीलिङ्ग है । वितर्दि—वितर्दी, वेदिका, वेदि—वेदी ये २ वेदी या आंगन आदि में बनाये बैठने के स्थान (नहा) के नाम हैं । तोरण, बहिर्द्वार ये २ घरके बाहिरी फाटक के नाम हैं इनमें तोरण पुंलिङ्ग व नपुंसक है और पुरद्वार, गोपुर ये २ शहरके बाहिरी फाटक के नाम हैं ॥ १६ ॥

पु.
सुखसे आनेजाने के लिये बनी कूटं पुर्द्वारि य ' छस्तिनखस्तस्मि(अथ त्रिषु) ।

मिट्टीकीसीदी पु.स.न. पु.स.न. न.स.
केवल, बेंवड़ा कपाटमररं(तुल्ये)तद्विष्कम्भोऽर्गलं (न ना) ॥ १७ ॥

पुरद्वार यानी नगरद्वार में सुखसे आने जाने के लिये जो मृत्कूट है उसे 'इस्तिनख' कहते हैं यह १ पुरद्वार में उतरने के लिये बनाये ज़ीना (खुरा, खजुरा) का नाम है

इसके अनन्तर वक्ष्यमाण शब्द तीनों लिङ्ग में होते हैं । कपाट-कपाटी, कवाट-कवाटी, अरर-अररी-अररि ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं और उस कपाट को रोकने के लिये जो बेंड़ना है उसे अर्गल या अर्गला या अर्गली कहते हैं यह पुंलिङ्ग नहीं है वरन स्त्री व नपुंसक कहाता है यह १ बेंवड़ा या शाकल या अगरीका नाम है ॥ १७ ॥

सीढ़ी काठआदि न. न. स. स.
की सीढ़ी आरोहणं स्यात्सोपानं निश्रेणिस्त्वधिरोहणी ।

बढ़नी या झाड़ू स. स. पु. पु.
कूड़ा, करकट संमार्जनी शोधनी स्यात्संकरोवकर (स्तथा) ॥ १८ ॥

आरोहण, सोपान ये २ मिट्टी व पत्थर आदि की बनी सीढ़ी के नाम हैं । निश्रेणि-निश्रेणी-निश्रेणी, अधिरोहणी-अधिरोहिणी ये २ काठ की सीढ़ी के नाम हैं । संमार्जनी, शोधनी ये २ बढ़नी या झाड़ू (बुहारी) के नाम हैं और संकर-संकार, अवकर-अवकार ये २ कूड़े या करकट के नाम हैं ॥ १८ ॥

निकलनेके द्वार न. न. पु. पु.
अच्छा स्थान 'क्षिप्ते' मुखं निःसरणं संनिवेशो निकर्षणः ।

ग्राम या गांव घर पु. पु. स. पु.न.
बनाने की भूमि (समौ) संवसथग्रामौ वेश्मभूर्वास्तु (रस्त्रियाम्) ॥ १९ ॥

मुख, निःसरण ये २ निकलने व पैठने की मार्ग के नाम हैं । संनिवेश, निकर्षण ये २ पुरादिकों में गृहादिकों की रचना से युतदेश के नाम हैं या अच्छे वासस्थान के नाम हैं । संवसथ, ग्राम ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ गांव के नाम हैं और वेश्मभू, वास्तु ये २ घर बनाने की भूमि के नाम हैं इनमें वास्तु पुंलिङ्ग व नपुंसक में रहता है ॥ १९ ॥

गोंयड़ या पड़ोस पु. न. स. स.
डांड या सीमा ग्रामान्त उपशल्यं स्यात्सीमसीमे (स्त्रियामुभे) ।

अहीरों का गांव पु. स. पु. पु.
जंगलियों का घोष आभीरपल्ली स्यात्पक्काः शबराक्षयः ॥ २० ॥

इति पुरवर्गः ॥

ग्रामान्त, उपशल्य ये २ ग्रामादि के समीप देश (पड़ोस) के नाम हैं । सीमा, सीमा (आघाट) भी ये २ ग्रामादि की मर्यादा (हद्द-डांड) के नाम हैं । इनमें पहिला नान्त व दूसरा डाबन्त है ये दोनों स्त्रीलिङ्ग में रहते हैं । घोष, आभीरपल्ली-आभीरपल्लि ये २ अहीरों के पुर के नाम हैं और पक्का, शबराक्षय ये २ भिस्लों (जंगलियों) के ग्राम के नाम हैं ॥ २० ॥

इति पुरवर्गविवरणम् ॥

अथ पर्वतगो व्याख्यायते ॥

पर्वत ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}
महीध्रेशिखरिक्षमाभृदहार्यधरपर्वताः ।

^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}
अद्रिगोत्रगिरिप्रावाचलशैलशिलोच्चयाः ॥ १ ॥

महीध्र—‘महीधर, महिध्र’ शिखरी (रिन्) क्षमाभृत्, अहार्य, धर, पर्वत, अद्रि, गोत्र, गिरि, प्रावा (न्) अचल, शैल, शिलोच्चय ये १३ सामान्य पर्वत के नाम हैं ॥ १ ॥

पृथ्वीको घेरहुआ ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}
पर्वत, त्रिकूट ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}
जिसपर लंका ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}
बसती है ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}
अस्ताचल, ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}
उदयाचल ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}
लोकालोकश्चक्रवालस्त्रिकूटस्त्रिककु (त्समौ) ।
अस्तस्तु चरमक्षमाभृदुदयः (पूर्वपर्वतः) ॥ २ ॥

लोकालोक, चक्रवाल—‘चक्रवाड’ ये २ सप्तद्वीपवती पृथ्वी को जिसने घेर लिया है उस पर्वत के नाम हैं। त्रिकूट, त्रिकुत् (द्) ये २ त्रिकूटाचल कि जिस पर लंका बसी है उसके नाम हैं ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं। अस्त, चरमक्षमाभृत् ये २ अस्ताचल के नाम हैं और उदय, पूर्वपर्वत ये २ उदयाचल के नाम हैं ॥ २ ॥

^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}
पर्वतों के भेद हिमवान्निषधो विन्ध्यो माल्यवान्पारियात्रकः ।
^{न.} ^{पु.}

गन्धमादन (मन्ये च हेमकूटादयो) नगाः ॥ ३ ॥

हिमवान्, निषध, माल्यवान्, पारियात्रक—पारियात्रिक, गन्धमादन और अन्य भी हेमकूट, मलय, मन्दर, दुर्दुर, चित्रकूट, मैनाक, सह्य आदि पर्वत हैं ये पर्वतभेदों के नाम हैं ॥ ३ ॥

^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{स.} ^{स.}
पत्थरपहाड़ की ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{स.} ^{स.}
चोटी बीहड़ ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{स.} ^{स.}
या पर्वत से ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{स.} ^{स.}
पानी गिरनेका ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{स.} ^{स.}
स्थान ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{स.} ^{स.}
पाषाणप्रस्तरप्रावोपलाशमानः शिला दृषत् ।
कूटो(ऽस्त्री) शिखरं शृङ्गं प्रपातस्त्वतटोभृगुः ॥ ४ ॥

पाषाण, प्रस्तर, प्रावा (न्) उपल, अशम (न्) शिला, दृषत् ये ७ पत्थर के नाम हैं इनमें शिला के सादृश्य से दृषत् स्त्रीलिङ्ग है यानी शिला—दृषत् ये दोनों

खील्लिङ्ग में रहते हैं । कूट, शिखर, शृङ्ग ये ३ पर्वत के शिखर या चोटी (कँगूरा) के नाम हैं इनमें कूट पुंलिङ्ग व नपुंसक है (अस्त्री) यह पूर्व या उत्तर पदों से संबन्ध रखता है व शिखरवाची शृङ्गशब्द नपुंसक में ही रहता है और प्रपात, अतट या कितेक आचार्य (प्रपातस्तु तटो भृगुः) ऐसा पढ़ते हैं उनके मतमें प्रपात, तट, भृगु ये ३ बीहड़ या पर्वत से जल गिरने के स्थान के नाम हैं ॥ ४ ॥

पर्वतका बीच पु.न.

पु.न. पु.न. पु.न.

पर्वतोंकासमभू-

भागया किनारा पु. न. पु. पु. पु.

भरनाकास्थान

भरना

कटकोऽस्त्री (नितम्बोऽद्रेः) स्तुःप्रस्थः सानु (रस्त्रियौ) ।

उत्सः प्रस्त्रवणं वारिप्रवाहो निर्भरः भरः ॥ ५ ॥

पर्वत के मध्यभाग को 'कटक' कहते हैं यह १ पर्वत के बिचले भाग का नाम है यह खील्लिङ्ग नहीं है बरन पुंलिङ्ग व नपुंसकमें रहताहै । स्तु, प्रस्थ, सानु ये ३ पर्वत के समभूभाग या किनारे के नाम हैं इनमें स्तु नितम्ब के साहचर्य से पुंलिङ्ग व नपुंसक है और सर्वधर आदिकों के मत में पुंलिङ्गही है व सानु-प्रस्थ ये दोनों पुंलिङ्ग व नपुंसक हैं । उत्स, प्रस्त्रवण ये २ जहां पर्वत से जल गिरकर अधिकतासे भर जाताहै उस (कुण्ड) के नाम हैं और वारिप्रवाह, निर्भर, भर-भरा, भरी-भरि ये ३ भरना के नाम हैं अथवा ये ५ भरना के ही पर्याय हैं ऐसा कितेक आचार्यों का मतहै ॥५॥

बनाईहुईगुफा स. पु.स.

न.

न.

स.

बिना बनाई दरी तु कन्दरो (वा स्त्री) देवखातबिले गुहा ।

गुफा

पु.न.

पु.

भारी पत्थर गह्वरं गण्डशैलास्तु “च्युताःस्थूलोपलागिरेः” ॥६॥

दरी, कन्दर—कन्दरा—कन्दरी ये २ घर के समान पर्वत में बनाये बिल (गुफा के नाम हैं इनमें 'कन्दर' पुंलिङ्ग व खील्लिङ्ग है । देवखात, बिल, गुहा, गह्वर ये ४ अपने आप बनी गुफा के नाम हैं और पर्वत से गिरे मोटे पत्थर 'गण्डशैल' कहाते हैं और “दन्तकास्तु बहिस्तिर्यक्प्रदेशान्निर्गतागिरेः,” पर्वत के वक्र प्रदेश से गिरे नोकदार टुकड़ों को “दन्तक” कहते हैं ॥ ६ ॥

खानि पर्वतस- स.

पु.

पु.

पु.

मीपीछोटेपर्वत खनिः स्त्रियामाकरः स्यात्पादाः प्रत्यन्तपर्वताः ।

पहाड़ की नि-

स.

स.

बल्लीभूमि,ऊपर

की भूमि

उपत्यका “द्रेरासन्ना भूमि” “रुध्व”मधिर्यका॥७॥

खनि, खनी, खानि, खानी, आकर ये २ खानि (जहां रत्न आदि उपजते हैं उस स्थान) के नाम हैं इनमें खनि खील्लिङ्ग में रहता है । पाद, प्रत्यन्तपर्वत ये २ महापर्वत के निकटवर्ती छोटे पर्वत के नाम हैं पर्वत के नीचे निकट भूमि को

‘उपत्यका’ कहते हैं यह १ पर्वत की निचली भूमि का नाम है और पर्वत की उपरली भूमि को ‘अधित्यका’ कहते हैं यह १ पहाड़ की ऊपर की भूमिका नाम है ॥ ७ ॥

पु.

पु.स.न.

पहाड़से उपजी धातु ‘मनःशिलाद्यद्रे’ गैरिक ‘न्तु’ विशेषतः ।

वस्तु मनःशिला

पु.न. पु.न.

आदि व गेरू

कुञ्ज

निकुञ्जकुञ्जौ (वा क्लीबे लतादिपिहितोदरे) ॥ ८ ॥

इति शैलवर्गः ॥

पर्वत से उपजी जो मनःशिला आदि हैं वे धातु कहाती हैं आदि शब्द से सोना, चाँदी, तांबा, हरतार, मनःशिला, गेरू, आंजन, कसीस, लोह, ईशुर, गन्धक और अभ्रक आदि पहाड़ी धातु हैं और ‘गैरिक’ यह विशेषता से धातु कहाती है यह १ गेरू का नाम है और लता, तृण आदिकों से ढँके उदरवाले स्थान में निकुञ्ज, कुञ्ज ये दोनों विकल्प से नपुंसक में होते हैं ये २ कुञ्ज के नाम हैं ॥ ८ ॥

इति शैलवर्गविवरणम् ॥

अथ वनौषधिवर्गो व्याख्यायते ॥

वन या जंगल

स.

न.

न.

न.

न.

न.

बड़ावन

अटव्यरणं विपिनं गहनं काननं वनम् ।

घर के समीप

न.

स.

पु.

पु.

बाग

महारण्यमरण्यानी गृहारामास्तु निष्कुटाः ॥ १ ॥

अटवी, अरण्य, विपिन, गहन, कानन, वन ये ६ वनके नाम हैं । इनमें ‘अटवी’ खीलिङ्ग है । महारण्य, अरण्यानी ये २ बड़े वनके नाम हैं इनमें ‘अरण्यानी’ खीलिङ्ग है और गृहाराम, निष्कुट ये २ घर के निकट बनाये बागीचा के नाम हैं ॥ १ ॥

पु.

न.

न.

बनाया बाग

आरामः स्यादुपवनं (कृत्रिमं वनमेव यत्) ।

राजमन्त्री व

वेश्या का बाग

स.

“ अमात्यगणिकागेहोपवने ” वृक्षवाटिका ॥ २ ॥

जो बनाने से सिद्धवन है उसे आराम और उपवन कहते हैं ये २ उपवन के नाम हैं और राजमन्त्री व वेश्याओं के घर में जो उपवन है उसे ‘वृक्षवाटिका’ कहते हैं यह १ राजमन्त्री व वेश्याओं के बाग का नाम है ॥ २ ॥

पु.

न.

राजा का बाग

(पुमाना) ऽऽक्रीड उद्यानं “ राज्ञः साधारणं वनम् ” ।

न.

रानी का बाग

“ स्यादत्ते वं ” प्रमदवने “ मन्तःपुरोचितम् ” ॥ ३ ॥

राजा का जो साधारण वन है उसे 'आक्रीड' व 'उद्यान' कहते हैं ये २ राजा के सर्वोपभोग्य वन के नाम हैं और जो रानियों के क्रीड़ा करने योग्य वन है उसको ही 'प्रमदवन' या 'प्रमदावन' कहते हैं यह १ रानी समेत राजा जहां क्रीड़ा करता है उस वनका नाम है ॥ ३ ॥

पंक्ति या पांति स. स. स. स. स. स. स.
लेखा या लकीरवीथ्यालिरावलिः पंक्तिः श्रेणीलेखास्तु राजयः ।

वनसमूह स. पु. पु. पु.
अखुआ वन्या (वनसमूहे) स्यादङ्कुरो (ऽभिनवोद्भिदि) ॥ ४ ॥

वीथी, 'वीथि' आलि, आली, आवलि, आवली, पङ्क्ति, पङ्की, श्रेणी, श्रेणि ये ५ अन्तरसमेत पङ्क्ति (पांति) के नाम हैं । लेखा, राजि, 'राजी' ये २ निरन्तर पङ्क्ति अपङ्क्ति साधारण यानी लकीर के नाम हैं । वन्या, वनसमूह ये २ वनसमुदाय के नाम हैं अथवा वनसमूह को 'वन्या' कहते हैं यह १ वनसमूह का नाम है और अङ्कुर, अभिनवोद्भिद् ये २ अङ्कुर या 'अखुआ' के नाम हैं ॥ ४ ॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु.
वृक्ष या पेड वृक्षो महीरुहः शाखी विटपी पादपस्तुरुः ।

पु. पु. पु. पु. पु. पु. पु.
अनोकहः कुटः सालः पलाशी दुद्रुमागमाः ॥ ५ ॥

वृक्ष, महीरुह, शाखी (न) विटपी (न) पादप, तरु, अनोकह, कुट, साल, पलाशी, दुद्रु, दुम, अगम ये १३ वृक्ष (पेड़) के नाम हैं ॥ ५ ॥

पु. पु.
वानस्पत्य वानस्पत्यः " फलैः पुष्पा " तैरपुष्पाद्रनस्पतिः ।

पु. पु.
ओषधी ओषध्यः ('फलपाकान्ताः') स्यादबन्ध्यः फलेग्रहिः ॥ ६ ॥

फूलों से उपजे फलों से जाना हुआ वृक्ष " वानस्पत्य " कहाता है यह १ आम्र आदि वानस्पत्य का नाम है । फूलों के बिना उपजे फलों से जाना हुआ वृक्ष " वनस्पति " कहाता है यह १ कटहर, गूलर आदि या वृक्षमात्र का नाम है । जिन्हों का फल पकनाही अन्त है वे " ओषध्यः " हैं यानी ओषधियां कहाती हैं यह १ धान व यव आदि अन्न का नाम है यह इकारान्त व छीषन्त भी हैं इसीसे (यत्रोषधयो रजन्यामिति कुमारः) यह पद भी संगत होता है और अबन्ध्य, फलेग्रहि ये २ फल समय में फलनेहारे वृक्ष के नाम हैं ॥ ६ ॥

१ अनोकहाकम्पितपुष्पगन्धिरिति रघुः ॥

२ यत्रान्या ओषधयो स्तः यन्त इति श्रुतिः ॥
१२

वाँम् ^{पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.} बन्ध्योऽफलोऽवकेशी (च) फलवान् फलिनः फली ।

सफल ^{पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.} प्रफुल्लोत्फुल्लसंफुल्लव्याकोशविकचस्फुटाः ॥ ७ ॥

^{पु.स.न. पु.स.न.} फूले हुए ^{पु.स.न.} फुल्लश्चैते विकसिते स्यु “रबन्ध्यादयस्त्रिषु” ।

बन्ध्य, अफल, अवकेशी ये ३ ऋतुमें भी जो न फले उस वृक्ष (वाँम्) के नाम हैं । फलवान्, फलिन, फली ये ३ फले हुए वृक्ष के नाम हैं । इनमें फलिन अदन्त है । प्रफुल्ल, उत्फुल्ल, संफुल्ल, व्याकोष—व्याकोश, विकच, स्फुट, फुल्ल और विकसित ये ८ फूले हुए वृक्ष के नाम हैं और अबन्ध्य आदि व विकसितान्त शब्द तीनों लिङ्ग में वर्तमान रहते हैं ॥ ७ । ३ ॥

शाखापत्रशय्य ^{पु.न. पु. पु. पु.} छोटा वृक्ष ^{पु.} स्थाणु(र्वा ना)ध्रुवः शङ्कु(र्हस्वशाखाशिफः)क्षुपः ॥ ८ ॥

शाखाशय्य या ^{पु. पु. स. स. स.} टूठ लता या (अप्रकाण्डे) स्तम्बगुल्मौ वल्ली(तु)व्रततिर्लता ।

बेल, ^{स. स. पु.} फैली लता (लता प्रतानिनी) वीरुद्गुल्मिन्युलप (इत्यपि) ॥ ९ ॥

स्थाणु, ध्रुव, शङ्कु ये ३ शाखापत्ररहित यानी छांटे हुए वृक्ष के नाम हैं इनमें ‘स्थाणु’ विकल्प से पुंलिङ्ग है व रूपभेद से नपुंसक भी है जिसकी शाखायें व जड़ें छोटीसी हों उसको ‘क्षुप’ कहते हैं यह १ छोटी डाल व मूलवाले वृक्ष का नाम है । स्तम्ब, गुल्म ये २ स्कन्धरहित (टूठ) के नाम हैं । वल्ली, वल्लि, वेल्लि, प्रतति, व्रतति, व्रतती, लता ये ३ लतामात्र के नाम हैं और वीरुत्, गुल्मिनी, उलप ये ३ अतिविस्तृत शाखा आदि से बड़ी लता के नाम हैं इनमें वीरुत् धान्त है ॥ ८ । ९ ॥

^{पु. पु. पु.} वृक्ष व पर्वत ^{पु.न. पु.} की उँचाई नगादारोह उच्छ्राय उत्सेधश्चोच्छ्रयश्च (सः) ।

वृक्षका भाग ^{पु.न. पु.} अस्त्री प्रकाण्डःस्कन्धःस्यान्मूलाच्छाखावधिस्तरोः १०

वृक्ष, पर्वत और देवालय आदिकों की जो उँचाई है उसे उच्छ्राय, उत्सेध और उच्छ्रय भी कहते हैं ये ३ वृक्षादिकों की दीर्घता के नाम हैं और वृक्ष की जड़ से लेकर शाखा पर्यन्त जो भाग है उसे ‘प्रकाण्ड’ व ‘स्कन्ध’ कहते हैं इनमें प्रकाण्ड स्त्रीलिङ्ग नहीं है वरन पुंलिङ्ग व नपुंसक में रहता है ये २ वृक्ष की पीढ़ के नाम हैं ॥ १० ॥

शाखा स. स. स. स. स. स.
 वशीशाखा वृक्ष (समे) शाखालते स्कन्धशाखाशाले शिफाजटे ।

मूल वरोह पु. स.
 ऊपर गई लता (शाखाशिफा) वरोहः स्या “न्मूलाच्चाग्रंगता” लता ॥११॥

शाखा, लता ये २ शाखा (डाल) के नाम हैं ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं । स्कन्धशाखा, शाखा ये २ स्कन्ध से पहले उपजी शाखा या मोटी जंघा के नाम हैं । शिफा, जटा ये २ वृक्ष की जड़ के नाम हैं । बरगद आदि की शाखा को अवलम्बन करती हुई जड़ ‘अवरोह’ कहाती है यह १ वरोह का नाम है । मूल से ऊपर गई ‘शिफा’ भी लता कहाती है और प्रसंग से यहां पर मुकुटने अवरोह का अर्थान्तर कहा है कि, वृक्ष की मूल से लेकर वृक्षाम पर्यन्त गई गुड़च व कुम्हड़ा आदि की लता भी ‘अवरोह’ कहाती है यह १ ऊपर गई लता का नाम है ॥ ११ ॥

वृक्षकी चोटी न. न. पु.न. न. पु. पु.
 वृक्ष की जड़ शिरोग्रं शिखरं (वा ना) मूलं बुध्नोद्धिनामकः ।
 सार या हीर पु. पु. स. पु.न. पु.न.
 बकला या सारोमज्जा(नरि)त्वक्(स्त्री)वल्कंवल्कलमस्त्रियाम् ॥१२॥
 झिलका

शिर (स्) अग्र, शिखर ये ३ वृक्ष आदि की चोटी के नाम हैं । शिर आदि तीनों भी पर्याय हैं यह किसीका मत है शिखर पक्ष में पुंलिङ्ग है । मूल, ब्रध्न-बुध्न, अंघ्रिनामक ये ३ मिट्टी के भीतरी जड़ के नाम हैं । सार, मज्जा (न्) ये २ वृक्ष आदि के हीर (गुदा) के नाम हैं इनमें मज्जा शब्द नान्त होकर पुंलिङ्ग में रहता है और “मज्जोक्ता मज्जयासह” इस द्विरूपकोष के प्रमाण से टाचन्त भी पाया जाता है । त्वक्-त्वचा, वल्क, वल्कल ये ३ बकला के नाम हैं इनमें चान्त त्वक् स्त्रीलिङ्ग है और वल्क, वल्कल ये दोनों पुंलिङ्ग व नपुंसक में रहते हैं ॥ १२ ॥

काष्ठ न. पु.न. न. न. न. स.
 इन्धन काष्ठं दार्विन्धनं त्वेध इध्ममेधः समि (स्त्रियाम्) ।
 सोलसा पु. पु.न. स. स.
 मंजरी निष्कुहः कोटरं (वा ना) वल्लरिर्मञ्जरिः (स्त्रियौ) ॥१३॥

काष्ठ, दारु ये २ काष्ठमात्र के नाम हैं इनमें ‘दारु’ पुंलिङ्ग व नपुंसक है । इन्धन, एध (स्) इध्म, एध, समित् ये ५ सूखे तृण काष्ठ आदि (इन्धन) के नाम हैं अथवा आदि के तीन आगि जलाने के लिये तृण व काष्ठादि के नाम हैं । अन्त्य के २ यज्ञादि में होम के लिये समिधों के नाम हैं यह मत है इनमें पहला एध सान्त

नपुंसक है और दूसरा घनन्त पुंलिङ्ग है और समित् धकारान्त है । निष्कुह, कोटर ये २ वृक्ष में हुए खोड़र (खुड़िला) के नाम हैं इनमें 'कोटर' विकल्प से पुंलिङ्ग है और वल्जरि-वल्जरी, मञ्जरि-मञ्जरी ये २ तुलसी आदि की मञ्जरी के नाम हैं ये दोनों स्त्रीलिङ्ग हैं ॥ १३ ॥

न. न. न. न. न. पु.
पत्ता नया पत्ता पत्रं पलाशं छदनं दलं पर्णं छदः (पुमान्) ।

पु.न. न. पु. पु.न.
बालांका फैलना पल्लवो (स्त्री) किसलयं विस्तारो विटपो (स्त्रियाम्) ॥ १४ ॥

पत्र, पलाश, छदन, दल, पर्ण, छद ये ६ पत्तों के नाम हैं इनमें अदन्त 'छद' पुंलिङ्ग है । पल्लव, किसलय ये २ नये पत्तों के नाम हैं इनमें 'पल्लव' पुंलिङ्ग व नपुंसक है और दन्त्य सकारवान् 'किसलय' नपुंसक है और विस्तार, विटप ये २ डालों के फैलने के नाम हैं इनमें 'विटप' पुंलिङ्ग व नपुंसक है ॥ १४ ॥

न. न. न. न.
फल, गुच्छा, (वृक्षादीनां) फलं सस्यं वृन्तं प्रसवबन्धनम् ।
गीला पु.स.न. पु.स.न.

फल, सूताफल (आमे फले) शलाटुः स्या 'च्लुष्के' वान (मुभे त्रिषु) ॥ १५ ॥

वृक्ष आदिकों के फल को 'फल' व 'सस्य' या 'शस्य' भी कहते हैं ये २ सस्य के नाम हैं । वृन्त, प्रसवबन्धन ये २ गुच्छा के नाम हैं । कच्चे फल में 'शलाटु' होता है यह १ गीले फलका नाम है और सूखे फल में 'वान' कहाता है यह १ सूखे फल का नाम है ये दोनों तीनों लिङ्ग में रहते हैं ॥ १५ ॥

नई कली, पु. न. स. पु.
कली, फूलका क्षारको जालकं 'क्लीबे' कलिका कोरकः (पुमान्) ।

गुच्छा, पु. पु. पु.न. पु.न.
फूलती कली स्याद्भुत्सकस्तु स्तवकः कुड्मलो मुकुलो (स्त्रियाम्) ॥ १६ ॥

क्षारक, जालक ये २ नई कली के नाम हैं । इनमें 'जालक' नपुंसक मेंही रहता है । कलिका, कजि-कली, कोरक ये २ बिना फूली कली के नाम हैं इनमें कोरक पुंलिङ्ग है और मेदिनी आदि कोषों के प्रमाण से नपुंसक भी है । गुत्सक-गुच्छक, स्तवक-स्तवक ये २ फूलने के सन्मुख कली या कलियों के समूह या गुच्छा के नाम हैं और कुड्मल, मुकुल ये २ कुछेक फूलती कली के नाम हैं ये दोनों पुंलिङ्ग व नपुंसक में रहते हैं ॥ १६ ॥

१ स्तवके द्वारभेदे च गुत्सः स्तम्बेपि कर्तित इति दन्त्यान्ते (रुद्रः) । पुष्पादिस्तवके गुच्छ इति ताव-
व्यान्ते (रन्तिदेवः) ॥

स. न. न. न. न.
 फूल, फूलकारस (स्त्रियः) सुमनसः पुष्पं प्रसूनं कुसुमं समम् ।
 पु. पु. पु. न.

फूलकी धूलि मकरन्दः पुष्परसः परागः सुमनोरजः ॥ १७ ॥

सुमनस्-सुमनाः (स्) पुष्प, प्रसून, सूत, कुसुम, सम और सुमभी ये ५ फूलके नाम हैं । इनमें सुमनस् बहुवचनान्त स्त्रीलिङ्ग है और रत्नकोष व मेदिनी आदि कोषों के प्रमाण से एकवचनान्त भी है (पुष्पं सुमनाः कुसुममिति नाममाला) इस नाममाला के प्रमाण से भी एकवचनान्त पाया जाता है । मकरन्द, पुष्परस ये २ फूल के रस के नाम हैं और पराग, सुमनोरज (स्) ये २ पुष्पधूलि के नाम हैं ॥ १७ ॥

इशों का फल दिहीनं प्रसवे सर्वं हरीतक्यादयः (स्त्रियाम्) ।

न. न. न. न. न.
 आश्वत्थवैणवग्लोक्षनैयग्रोधैर्द्वादं (फले) ॥ १८ ॥

फल, फूल व पत्र में वर्तमान सम्पूर्ण कहें जानेवाले आश्वत्थ व कपित्थ आदि स्त्रीलिङ्ग व पुंलिङ्गसे रहित होकर नपुंसकमें रहते हैं और हरीतकी आदि फल पुष्पादि में भी स्त्रीलिङ्ग होते हैं जैसे 'हरीतक्याः फलं हरीतकी' आदि शब्द से कोशातकी, बदरी, कण्टकारिका आदिकों का ग्रहण होता है और फल में आश्वत्थ का फल 'आश्वत्थम्' वैणुका वैणवम्, सक्षका साक्षम्, न्यग्रोधका नैयग्रोधम्, इगुदीका फल ऐगुदम् कहाता है यह अलग २ एक २ का नाम है ॥ १८ ॥

भटकटैयाका बार्हतं च (फले जम्बूवा) जम्बूः (स्त्री) जम्बु जाम्बवम् ।

फल जामुन (पुष्पे) जातिप्रभृतयः स्वलिङ्गाः ब्रीहयः (फले) ॥ १९ ॥

बृहती के फल को 'बार्हत' कहते हैं यह १ भटकटैया के फल का नाम है । जामुन के फल में जम्बू, जम्बु, जाम्बव ये होते हैं ये ३ जामुन फल के नाम हैं इन में 'जम्बू' स्त्रीलिङ्ग है फूल में वर्तमान जाती, यूथिका, शेफालिका और मल्लिका आदि स्वलिङ्ग होते हैं । जाती (चमेली) के फूल को 'जाति' या 'जाती' कहते हैं एवं यूथिका के फूल को 'यूथिका' शेफालिका के फूल को शेफालिका, मल्लिका के फूल को 'मल्लिका' कहते हैं इत्यादि जानना चाहिये और फल में वर्तमान धान्य-वाचक यवादि शब्द अपने लिङ्गवाले होते हैं जैसे यव के फलों को (यवाः) कहते हैं एवं माषों के फलों को (माषाः) और मुद्गों (मूगों) के फलों को (मुद्गाः) कहते हैं इत्यादि जानना चाहिये ॥ १९ ॥

कुम्हडा आदि “विदार्याद्यास्तु मूलेपि पुष्पे क्लीबेऽपि” पाटला ।

बोधिद्रुमश्चलदलः पिप्पलः कुञ्जराशनः ॥ २० ॥

पीपर अश्वत्थे (ऽथ) कपित्थे स्युर्दधित्थग्राहिमन्मथाः ।

कैथा “तस्मि”न्दधिफलः पुष्पफलदन्तशठावपि ॥ २१ ॥

मूल में वर्तमान विदारी आदि भी स्वलिङ्ग होते हैं जैसे विदारी (भूमिकूष्माण्ड) का मूल, फूल व फल भी ‘विदारी’ कहाता है आदि शब्द से गम्भारी के मूलादिको ‘गम्भारी’ व शालपर्णी के मूलादि को ‘शालपर्णी’ कहते हैं इत्यादि जानना चाहिये व फूल में वर्तमान ‘पाटला’ शब्द नपुंसक है व अपि शब्द से स्वलिङ्ग भी होता है जैसे पाटला के फूल को ‘पाटल’या ‘पाटला’ कहते हैं और मेदिनीकोष के प्रमाण से ‘पाटल’ पुंलिङ्ग नहीं है परन्तु शाश्वतके प्रमाणसे पुंलिङ्ग भी पाया जाता है। बोधिद्रुम, चलदल, पिप्पल, कुञ्जराशन, अश्वत्थ ये ५ पीपल वृक्षके नाम हैं और कपित्थ-कवित्थ, दधित्थ, ग्राही (हिन्) मन्मथ, दधिफल, पुष्पफल, दन्तशठ ये ७ कैथाके नाम हैं ॥ २०।२१ ॥

गूलर उदुम्बरो जन्तुफलो यज्ञाङ्गो हेमदुग्धकः ।

कचनार कोविदारे चमरिकः कुदालो युगपत्रकः ॥ २२ ॥

उदुम्बर (उडुम्बर) जन्तुफल, यज्ञाङ्ग, हेमदुग्धक ये ४ गूलर के नाम हैं और कोविदार, चमरिक, कुदाल, युगपत्रक ये ४ कचनार के नाम हैं ॥ २२ ॥

सातपत्तौवाला सप्तपर्णे विशालत्वक् शारदो विषमच्छदः ।

छितिवन आरग्वधे राजवृक्षसंपाकचतुरङ्गुलाः ॥ २३ ॥

अमिलतास आरेवैतव्याधिघातकृतमालसुवर्णकाः ।

जम्बीरीनां वि (स्यु)र्जम्बीरे दन्तशठजम्भजम्भीरजम्भलाः ॥ २४ ॥

सप्तपर्ण, विशालत्वक्, शारद-शारदी, विषमच्छद ये ४ सतवन्ना (छितिवन)

१ पाटलः कुम्हरे वर्णेप्याशुनीदिश्च पाटल इति शाश्वतासुलिङ्गोपि ॥

या सातपत्ते वाले वृक्ष के नाम हैं । आरग्वध, अग्वध, आग्वध, राजवृक्ष, संपाक-
शंपाक, शम्याक, चतुरंगुल, आरेवत, व्याधिघात, कृतमाल, सुवर्णाक या सुपर्णाक
ये ८ सोनालु, धन बहेड़ या (अमिलतास) के नाम हैं । जम्बीर, दन्तशठ, जम्भ,
जम्भीर, जम्भल ये ५ जम्बीरी नीचू के नाम हैं ॥ २३ । २४ ॥

वरना वरणे वरुणः सेतुस्तिक्कशाकः कुमारकः ।

नागकेसर पुंनागे पुरुषस्तुङ्गः केसरो देववल्लभः ॥ २५ ॥

वरण, वरुण, सेतु, तिक्तशाक, कुमारक ये ५ वरना के नाम हैं और पुंनाग,
पुरुष, तुङ्ग, केसर-केशर, देववल्लभ ये ५ नागकेसर के नाम हैं अथवा गुर्जर देश
में 'सदेशरा' इस प्रख्यात वृक्ष के नाम हैं 'केसरो नागकेशरे' "तुरङ्गसिंहयोः स्कन्ध-
केशेषु बकुलद्रुमे । पुंनागवृक्षे किञ्चलके स्यात्केसरं तु हिङ्गुनीति हैमः" ॥ २५ ॥

नींब वडा तेंदुआ पारिभद्रे निम्बतरुर्मन्दारः पारिजातकः ।

या तिनिश तिनिशे स्यन्दनो नेमीरथदुरतिमुक्ककः ॥ २६ ॥

अम्बाडा या वञ्जुलश्चित्रकृचाथ (द्वौ) पीतनकपीतनौ ।

अमरा महुआ आम्रातके मधूके (तु) गुडपुष्पमधुद्रुमौ ॥ २७ ॥

पहाड़ी या वानप्रस्थमधुष्ठीलौ (जलजेऽत्र) मधूलकः ।

पारिभद्र, निम्बतरु, मन्दार, पारिजातक ये ४ नींब या बकायन के नाम हैं । ति-
निश, स्यन्दन, नेमि-नेमी, नेमिन् " पुंलिङ्गस्तिनिशे नेमिश्चक्रप्रान्ते स्त्रियामपीति "
(रुद्रः) रथदु, अतिमुक्कक, वञ्जुल, चित्रकृत् ये ७ तिनिश या बड़े तेंदुआ के नाम
हैं । पीतन, कपीतन, आम्रातक ये ३ 'अम्बाडा' या 'अमरा' के नाम हैं । मधूक-
मधुक, मधूल, मधुल, मधु, गुडपुष्प, मधुद्रुम, वानप्रस्थ, मधुष्ठील ये ५ महुआ के नाम
हैं और जल से उपजे इस महुआ में 'मधूलक' होता है यदि (गिरिजेत्र मधूलकः)
ऐसा सुभूति के मत में मूलपाठ है तो यह १ पहाड़ी महुआ का नाम है "गौरशा-
कोमधूकोन्योगिरिजः सोल्पपत्रकः" (इति माधवः) " मधूकोऽन्यो मधूलस्तु जलजो
दीर्घपत्रक " (इति स्वामी) जो पहाड़ी महुआ है वह छोटे पत्तोंवाला होता है यह
माधवका मत है और जो जल से उपजा महुआ है वह बड़े पत्तोंवाला होता है यह
स्वामी का मत है ॥ २६ । २७ । ३ ॥

पु. पु. पु.
 पीलुआ पहाड़ी पीलौ गुडफलः खंसी (तस्मिंस्तु गिरिसंभवे) ॥ २८ ॥
 पु. पु. पु. पु.
 पीलुआ अंकुहर या पिस्ता अक्षोट कर्परालौ द्वावङ्कोटे तु निकोचकः ।

पीलू, गुडफल, खंसी (न) ये ३ गुजरात में प्रख्यात पीलू के नाम हैं और वह पीलू यदि पहाड़ी हो तो उसमें अक्षोट, कर्पराल या 'कन्दराल' भी ये दो होते हैं ये २ पहाड़ी पीलू (अखरोट) के नाम हैं । अङ्कोट, 'अङ्कोल' निकोचक, 'लिकोचक' भी ये २ अंकुहर या पिस्ता के नाम हैं ॥ २८ । ३ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
 ढाख या छिउल पलाशे किंशुकः पर्णो वातपोथो (ऽथ वेतसे) ॥ २९ ॥
 पु. पु. पु. पु. पु.
 वेत रथाभ्रपुष्पविदुलशीतवानीरवञ्जुलाः ।
 पु. पु. स. पु.
 जलवेत (द्रौ) परिव्याधविदुलौ नादेयी (चाम्बुवेतसे) ॥ ३० ॥

पलाश, किंशुक, पर्ण, वातपोथ ये ४ ढाख या छिउल के नाम हैं । वेतस, रथ, अभ्रपुष्प, विदुल, शीत, वानीर, वञ्जुल ये ७ वेत के नाम हैं और परिव्याध, विदुल, नादेयी, अम्बुवेतस ये ४ जलवेत के नाम हैं इनमें परिव्याध, विदुल ये दोनों पुंलिङ्ग हैं और नादेयी स्त्रीलिङ्ग में रहता है ॥ २९ । ३० ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
 सईजना लाल शोभाञ्जने शिशुतीक्ष्णगन्धकाक्षीवमोचकाः ।

पु. पु. पु.
 फूलका सईजना (रक्तोऽसौ) मधुशिशुः स्यादरिष्टः फेनिलः (समौ) ॥ ३१ ॥
 रीठा

शोभाञ्जन, शौभाञ्जन, सौभाञ्जन, शिशु, तीक्ष्णगन्धक, आक्षीव-अक्षीव, मोचक ये ५ सईजना के नाम हैं और यदि यह सईजना लाल फूलवाला हो तो 'मधुशिशु' कहलाता है यह १ लाल फूलवाले सईजने का नाम है और अरिष्ट, फेनिल ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ रीठा के नाम हैं (अरिष्टो लघुने निम्बे फेनिले काककङ्कयोः 'रिष्टोपि' रिष्टक्षेमाशुभाभावे पुंसि खङ्गे च फेनिले) इस मेदिनीकोष के प्रमाण से 'रिष्ट' भी होता है ॥ ३१ ॥

बेल, ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} बिल्वेशाण्डिल्यशैलूषौ मालूरश्रीफलावपि ।

^{पु.} ^{पु.स.} ^{पु.स.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} पाकरि बरगद प्लक्षो जटी पर्कटी स्यान्न्यग्रोधो बहुपाद्वटः ॥ ३२ ॥

बिल्व, शाण्डिल्य, शैलूष, मालूर, श्रीफल ये ५ बिल्व (बेल) वृक्ष के नाम हैं । प्लक्ष, जटी, जटि, जटिन्, पर्कटी, पर्कटि, पर्कटिन् ये ३ पकरिया के नाम हैं । न्यग्रोध, बहुपाद्, वट ये ३ बरगद के नाम हैं ॥ ३२ ॥

^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} लोध, गालवः शावरो लोध्रस्तिरीटस्तिवमार्जनौ ।

^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} आँव, लुरावदार आँव आम्रश्चूतो रसालो (सौ) सहकारो (ऽतिसौरभः) ॥ ३३ ॥

गालव, शावर—सावर, लोध्र—रोध्र, तिरीट, तिल्व, मार्जन ये ६ लोध्र के नाम हैं । इनमें गालव, शावर ये २ सफ़ेद लोध्र के नाम हैं और लोध्र, तिरीट, तिल्व, मार्जन ये ४ लाल लोध्र के नाम हैं यह स्वामी का मत है । आम्र, चूत, रसाल ये ३ आम के नाम हैं और यदि यह आम महासुगन्धित हो तो उसे ' सहकार ' कहते हैं यह १ अति सुगन्धित आम का नाम है ॥ ३३ ॥

^{पु.} ^{न.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} गुग्गुलु कुम्भोलूखलकं (क्लीबे) कौशिको गुग्गुलुः पुरः ।

^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} लसोडा शेलुः श्लेष्मातकः शीत उद्दालो बहुवारकः ॥ ३४ ॥

कुम्भ, उलूखलक, कुम्भोलु, खलक, कुम्भोलूखक, कौशिक, गुग्गुलु—गुग्गुल, पुर ये ५ गुग्गुल (गूगुल) के नाम हैं इनमें पुर शब्द अकारान्त है । शेलु—सेलु, श्लेष्मातक, शीत, उद्दाल, बहुवारक और बहुवार भी ये ५ लसोडा के नाम हैं ॥ ३४ ॥

^{पु.न.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} चिरोजी राजादनं पियालः “स्या” त्सन्नकद्रुर्धनुषटः ।

^{स.} ^{स.} ^{स.} ^{स.} लंभारी या गम्भारी सर्वतोभद्रा काश्मरी मधुपर्णिका ॥ ३५ ॥

^{स.} ^{स.} ^{पु.} श्रीपर्णी भद्रपर्णी (च) काश्मर्यश्चा (प्यथ द्वयोः) ।

१ “ कौशिको नकुले व्यासग्राहे गुग्गुलुशुक्रयोः । कोशणोलूकयोश्च स्याद्विरवामित्रमुनावपि ॥ कौशिकी चण्डिकायां च नदीभेदे च योषिति ” (इति कोषान्तरम्) ॥

राजादन, 'राजातन' पियाल-प्रियाल, सन्नकटु (सन्न, कटु) धनुष्पट (धनुः-पट) ये ४ चिरौंजी के नाम हैं इनमें राजादन, राजातन ये दोनों पुंलिङ्ग व नपुंसक हैं और 'धनु' उकारान्त वा सान्त भी है। गम्भारी-कम्भारी, सर्वतोभद्रा, काश्मरी, मधु-यर्षिका, श्रीपर्णी, भद्रपर्णी, काश्मर्य ये ७ खम्भारी के नाम हैं। इसके अनन्तर वक्ष्यमाणा 'कर्कन्धू' दोनों लिङ्ग में होता है ॥ ३५ ॥ ३ ॥

पु.स. स. स. न. न. न.

वेर कर्कन्धूर्बदरी कोली कोलं कुवलफेनिले ॥ ३६ ॥

वेरके फल न. न. स. पु.

कंठाय या शमी सौवीरं बदरं घोयटा "प्यथ स्या" त्स्वादुकण्टकः ।

पु. पु. पु. पु.

विकङ्कतः सुवावृक्षो ग्रन्थिलो व्याघ्रपादपि ॥ ३७ ॥

कर्कन्धू, बदरी, कोली-कोलि, कुवली भी ये ३ बदरी (बेरी) वृक्ष के नाम हैं इनमें कर्कन्धू पुंलिङ्ग व स्त्रीलिङ्ग है। कोल, कुवल, फेनिल, सौवीर, बदर, घोयटा ये ६ बेरीफल (बेर) के नाम हैं इनमें घोयटा स्त्रीलिङ्ग है (बदरीसदृशाकारो वृक्षः सूक्ष्मफलो भवेत् । अटव्यामेव सा घोयटा गोपघण्टेति चोच्यते) बेरी के समान आकारवाला वृक्ष सूक्ष्म फलवाला होता है और वन में वही बेरी घोयटा और गोपघोयटा कहाती है यह वृक्ष व फल दोनों का वाचक है। स्वादुकण्टक, विकङ्कत-वैकङ्कत, सुवावृक्ष, ग्रन्थिल, व्याघ्रपाद् ये ५ कंठाय या शमी (यक्ष्मीयवृक्ष) के नाम हैं ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

पु. पु. स. स.

नारंगी ऐरावतो नागरङ्गो नादेयी भूमिजम्बुका ।

पु. पु. पु. पु.

तेंदुआ तिन्दुकः स्फूर्जकः कालस्कन्धश्च (शितिसारके) ॥ ३८ ॥

ऐरावत, नागरङ्ग, नारङ्ग-नार्यङ्ग, नादेयी, भूमिजम्बुका ये ४ नारङ्गी के नाम हैं। इनमें आदिके दो पुंलिङ्ग हैं और अन्त के दो स्त्रीलिङ्ग में रहते हैं और तिन्दुक, स्फूर्जक, कालस्कन्ध, शितिसारक ये ४ तेंदुआ के नाम हैं ॥ ३८ ॥

पु. पु. पु. पु.

कडवा तेंदुआ काकेन्दुः कुलकः काकपीलुकः काकतिन्दुके ।

पु. पु. पु.स. पु. पु.

काली पादरि गोलीढो भाटलो घण्टापाटलिर्मोक्षमुष्ककौ ॥ ३९ ॥

१ उक्तं च समन्वयप्रदीपे-यत्र वाक्यार्थविश्रान्तिः श्लोकेनैकेन जायते । तन्मुक्तं युगं द्वाभ्यां त्रिभिः स्यात्तुल्यं पुनः । चतुर्भिः स्याच्च कलकं पञ्चभिः कुलकं ततः । महाकुलकमित्त्वार्थाः कथयन्ति ततः परमिति ॥

काकेन्दु, कुलक, काकपीलुक, काकतिन्दुक ये ४ कङ्कवेतेंदुआ या कङ्किला के नाम हैं । गोलीढ, गोलिह, माटल, घगटापाटलि, मोक्ष. मुष्कक ये ५ काली पादरि या लोध्रविशेष के नाम हैं । इनमें 'घगटापाटलि' पुंलिङ्ग है और स्वामी के मत में घगटा, पाटलि ये २ नाम हैं ॥ ३६ ॥

तिलक, भाऊ ^{पु.} तिलकः ^{पु.} क्षुरकः ^{पु.} श्रीमा (न्समौ) ^{पु.} पिचुलभावुकौ ^{पु.} ।

कायफर ^{स.} श्रीपर्णिका ^{स.} कुमुदिका ^{स.} कुम्भी ^{पु.} कैटयकट्फलौ ^{पु.} ॥ ४० ॥

तिलक, क्षुरक, श्रीमान् ये ३ तिलकवृक्ष के नाम हैं । पिचुल, भावुक ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ भाऊ के नाम हैं । श्रीपर्णिका, कुमुदिका, कुम्भी, कैटय, कैडय, कट्फल ये ५ कायफरा के नाम हैं । इनमें "पृश्निकायां च कुम्भी स्यात्पाटलौ कट्फलेपि चेति" (रन्तिदेवः) इस प्रमाण से 'कुम्भी' स्त्रीलिङ्ग है ॥ ४० ॥

लाल लोध ^{पु.} क्रमुकः ^{पु.} पट्टिकाख्यः ^{स.} स्यात्पट्टी ^{पु.} लाक्षाप्रसादनः ।

शहत्त ^{पु.} नूद (स्तु) ^{पु.} यूपः ^{पु.} क्रमुको ^{पु.} ब्रह्मण्यो ^{न.} ब्रह्मदारु (च) ॥ ४१ ॥

कदम्ब ^{न.} तूलं (च) ^{पु.} नीपप्रियक ^{पु.} कदम्बास्तु ^{पु.} हलिप्रिये ।

मिलावां ^{पु.} वीरवृक्षो ^{पु.} ऽरुष्करो ^{स.} ग्निमुखी ^{पु.स.न.} भस्मातकी (त्रिषु) ॥ ४२ ॥

क्रमुक, पट्टिकाख्य, पट्टी (न्) पट्टी, पट्टि, लाक्षाप्रसादन ये ४ पठानीलोध के नाम हैं । नूद—तूद, यूप, क्रमुक, ब्रह्मण्य, ब्रह्मदारु, तूल "पुंलिङ्गस्तु पिचौ क्लीबं स्याद्ब्रह्मदारुणीति" (रुद्रः) इस प्रमाण से 'तूल' पुंलिङ्ग भी है ये ६ अश्वत्थाकार, पार्श्व-पिप्पल या शहत्त के नाम हैं । नीप, प्रियक, कदम्ब, हलिप्रिय ये ४ कदम्ब के नाम हैं । वीरवृक्ष, अरुष्कर, अग्निमुखी, भस्मातकी ये ४ मिलावां के नाम हैं इनमें 'भस्मातकी' तीनों लिङ्ग में रहता है ॥ ४१ । ४२ ॥

गेंडी अमिली ^{पु.} गर्दभाण्डे ^{पु.} कन्दरालक ^{पु.} पीतनसु ^{पु.} पार्श्वकाः ।

विजयसार ^{पु.} प्रक्षश्च ^{स.} तिन्तिडी ^{स.} चिआम्बिलकाथो ^{स.} पीतसालके ॥ ४३ ॥

सैलुआ या ^{पु.}सर्जकासनबन्धूकपुष्पप्रियकजीवकाः ।

शाल या कोरों ^{पु.}साले (तु) ^{पु.}सर्जकार्प्याश्वकर्णकाः ^{पु.}सस्यसंवरः ॥ ४४ ॥

गर्दभाण्ड, कन्दराल, कपीतन, सुपार्श्वक, प्लक्ष ये ५ गेढी या पारसपीपल के नाम हैं । तिन्तिडी, तिन्तिडीका, चिञ्चा, अम्ब्लिका, अम्ब्लीका ये ३ अमिली के नाम हैं । पीतसालक, सर्जक, असन-आसन, अशन, बन्धूकपुष्प, प्रियक, जीवक ये ६ विजयसार के नाम हैं । साल-शाल, सर्ज, कार्प्य-कार्प्य, अश्वकर्णक, सस्य-संवर, 'शस्यसम्बर' ये ५ सालवृक्ष या सैलुआ या कोरोंवृक्ष के नाम हैं ॥ ४३ । ४४ ॥

^{पु.}अर्जुन, ^{पु.}खिषी ^{पु.}नदीसर्जो ^{पु.}वीरतरु ^{पु.}रिन्द्रद्रुः ^{पु.}ककुभोऽर्जुनः ।

या खिरिणी ^{पु.न.}राजादनः ^{पु.}फलाध्यक्षः ^{स.}क्षीरिकायामथ (द्वयोः) ॥ ४५ ॥

^{पु.स.}गोंदी, या ^{पु.}पांखी ^{पु.}इङ्गुदी ^{पु.}तापसतरु ^{पु.}भूर्जे ^{पु.}चर्मिमृदुत्वचौ ।

^{स.}भोजपत्र, ^{स.}सेमर ^{स.}पिच्छला ^{पु.}पूरणी ^{पु.स.}मोचा ^{पु.स.}स्थिरायुः ^{पु.स.}शाल्मलि (द्वयोः) ४६ ॥

नदीसर्ज, वीरतरु, इन्द्रद्रु, ककुभ, अर्जुन ये ५ अर्जुन वृक्ष के नाम हैं । राजादन, फलाध्यक्ष, क्षीरिका ये ३ खित्री के नाम हैं । इंगुदी, तापसतरु ये २ गोंदी या पांखी या जियापोता के नाम हैं । इनमें इंगुदी दोनों में यानी खीलिङ्ग व पुंलिङ्ग में रहता है । भूर्ज, चर्मी, (न) मृदुत्वच ये ३ भोजपत्र वृक्ष के नाम हैं और पिच्छला, पूरणी, मोचा, स्थिरायुः, शाल्मली-शाल्मलि-शाल्मल ये ५ सेमर के नाम हैं इनमें शाल्मलि खीलिङ्ग व पुंलिङ्ग है ॥ ४५ । ४६ ॥

^{स.}सेमर का ^{पु.}गोंद ^{पु.}पिच्छा (तु) ^{पु.}शाल्मलीवेष्टे ^{पु.}रोचनः ^{पु.}कूटशाल्मलिः ।

^{पु.}काला ^{पु.}सेमर ^{पु.}चिरविल्वो ^{पु.}नक्तमालः ^{पु.}करज (श्व) ^{पु.}करञ्जके ॥ ४७ ॥

पिच्छा, शाल्मलीवेष्टे ये २ सेमर गोंद के नाम हैं । रोचन, कूटशाल्मलि ये २ काले सेमर या निन्दित सेमर के नाम हैं । चिरविल्व, " चिरिविल्व, " नक्तमाल, " रक्तमाल " करज, करञ्जक ये ४ कञ्जा के नाम हैं ॥ ४७ ॥

कांटेंदार कंजा प्रकीर्यः पूतिकरजः पूतीकः कलिमारकः ।

कंजा के भेद (करञ्जभेदाः) षड्ग्रन्थो मर्कट्यङ्गारवल्लरी ॥ ४८ ॥

प्रकीर्य, पूतिकरज, पूतिकरञ्ज, पूतीकरज, पूतीकरञ्ज, पूतिक-पूतीक-कलि-मारक, कलिकारक भी ये ४ कांटेंदार कंजा के नाम हैं । षड्ग्रन्थ “षड्ग्रन्थातु व-चायां स्त्री स्यात्करजान्तरे पुमान् ” मर्कटी, “ करञ्जभिच्छूकशिम्ब्योः पुंसि वानर-लूतयोः ” अङ्गारवल्लरी ये ३ कंजा के भेद के नाम हैं ॥ ४८ ॥

खालकंजा रोही रोहितकः ग्रीहशत्रुर्दाडिमपुष्पकः ।

खैर या कत्था गायत्री बालतनयः खदिरो दन्तधावनः ॥ ४९ ॥

रोही (हिन्) रोहितक, ‘रोहीतक’ ग्रीहशत्रु, दाडिमपुष्पक ये ४ खालकंजा या गुलेनार या रुहेड़ावृक्ष के नाम हैं और गायत्री, बालतनय, बालपत्र-बालदलक, खदिर, दन्तधावन ये ४ कत्था के नाम हैं । इनमें गायत्री स्त्रीषन्त व इजन्त भी है ॥ ४९ ॥

दुर्गन्धवाला खैर अरिमेदो विट्खदिरे कदरः (खदिरे सिते) ।

सफेद कत्था सोमवल्को (प्यथ) व्याघ्रपुच्छगन्धर्वहस्तकौ ॥ ५० ॥

एरण्ड उरुवूकश्च रुचकश्चित्रकश्च (सः) ।

चञ्चुः पञ्चाङ्गुलो मण्डवर्धमानव्यडम्बकः ॥ ५१ ॥

अरिमेद, विट्खदिर ये २ दुर्गन्धयुक्त कत्था के नाम हैं । सफेद कत्था में कदर, सोमवल्क ये दोनों होते हैं ये २ सफेद कत्था या खयरसार के नाम हैं । व्याघ्रपुच्छ, गन्धर्वहस्तक, एरण्ड, उरुवूक, उरुवुक, रुचक, रुवुक, रुवुक-रुवूक, चित्रक, चञ्चु, पञ्चाङ्गुल, मण्ड, “ अमण्ड, आमण्ड, ” वर्धमान, व्यडम्बक और व्यडम्बन भी ये ११ एरण्ड (रेंड) के नाम हैं ॥ ५० । ५१ ॥

बोटी शमी (अल्पा शमी) शमीरः “स्या”च्छमी सकुफला शिवा ।

शमी या बौकरापिण्डीतको मरुवकः श्वसनः करहाटकः ॥ ५२ ॥

मयनफर ^{पु.} शल्यश्च ^{पु.} मदने ^{पु.} शक्रपादपः ^{पु.} पारिभद्रकः ।

देवदारु ^{पु.न.} भद्रदारुद्रु ^{न.} किलिमं ^{न.} पीतदारु ^{न.} (च) दारु ^{न.} (च) ॥ ५३ ॥

^{न.} पूतिकाष्ठं च ^{पु.न.} (सप्त स्यु) देवदारुण्यथ (द्वयोः) ।

छोटे आकारवाली शमी को 'शमीर' कहते हैं यह १ छोटी शमी का नाम है । शमी, सक्तुफला, शिवा ये ३ शमी के नाम हैं । पिण्डीतक, मरुवक, श्वसन, करहाटक, शल्य, मदन ये ६ मयनफल के नाम हैं । शक्रपादप, पारिभद्रक, भद्रदारु, द्रुकिलिम, पीतदारु, दारु, पूतिकाष्ठ ये सात "देवदारु" में होते हैं ये ८ देवदारु के नाम हैं ॥ ५२ । ५३ । १ ॥

पादरि ^{पु.स.} पाटलिः ^{स.} पाटलामोघा ^{स.} काचस्थाली ^{स.} फलेरुहा ^{स.} ॥ ५४ ॥

कांकुनि ^{स.} कृष्णवृन्ता ^{स.} कुबेराक्षी ^{स.} श्यामा ^{स.} (तु) ^{स.} महिलाह्वया ।

^{स.} लता ^{स.} गोवन्दनी ^{स.} गुन्द्रा ^{स.} प्रियङ्गुः ^{पु.} फलिनी ^{पु.} फली ॥ ५५ ॥

^{स.} विष्वक्सेना ^{स.} गन्धफली ^{स.} कारम्भा ^{पु.} प्रियक (श्च सा) ।

पाटलि, पाटली, पाटला, आमोघा, 'मोघा' काचस्थाली, काष्ठा, स्थाली, फलेरुहा, कृष्णवृन्ता, कुबेराक्षी ये ७ पादरि के नाम हैं इनमें 'पाटलि' पुंलिङ्ग व स्त्री-लिङ्ग दोनों में रहता है । श्यामा, महिलाह्वया, लता, गोवन्दनी, गोवन्दिनी, गुन्द्रा, प्रियङ्गु, फलिनी, फली, विष्वक्सेना, गन्धफली, कारम्भा, प्रियक ये १२ ककुनी के नाम हैं । इनमें 'प्रियक' पुंलिङ्ग में रहता है ॥ ५४ । ५५ । १ ॥

सरिवन ^{पु.} मण्डूकपर्ण ^{पु.} पत्रोर्ण ^{पु.} नटक ^{पु.} दृङ्ग ^{पु.} दुण्डुकाः ॥ ५६ ॥

आंवला ^{पु.} स्योना ^{पु.} कशुकना ^{पु.} सक्ष्दी ^{पु.} र्धवृन्त ^{पु.} कुटन्नटाः ।

बहेरा ^{पु.} शोणक ^{पु.} श्चारत्तौ ^{स.} तिष्य ^{पु.स.न.} फलात्वा ^{पु.} लकी (त्रिषु) ॥ ५७ ॥

स. स. पु.
अमृता (च) वयस्था (च) 'त्रिलिङ्गस्तु' विभीतकः ।

पु. पु. पु. पु. पु.
नाक्षस्तुषः कर्षफलो भूतावासः कलिद्रुमेः ॥ ५८ ॥

मण्डूकपर्णा, पक्षोर्णा, नट, कटुङ्ग, दुग्दुक, स्योनाक, “श्योनाक—शोणाक,” शुक्रनास, ऋक्ष, दीर्घवृन्त, कुटन्नट, शोणाक ‘शोनक’ ‘अरल—अरलु’ और अरदु भी ये १२ स्योनाक (सरिवन) के नाम हैं। तिष्यफला, आमलकी, अमृता, वय-स्था—वयःस्था, कायस्था भी ये ४ आँवला के नाम हैं इनमें “तिष्ये कलियुगे फल-मस्याः सेवया इति वा” ‘तिष्यफला’ खिलिङ्ग है और “आमलकी, आमलकः, आम-लकम्” तीनों लिङ्ग में रहता है। विभीतक, अक्ष, तुष, कर्षफल, भूतावास, कलिद्रुम ये ६ बहेड़ा के नाम हैं। इनमें “विभीतकः, विभीतकी, विभीतकम्” यह तीनों लिङ्ग में रहता है और ‘अक्ष’ पुंलिङ्ग है और “धान्यत्वचि तुषः पुंसि विभीतकतरावपि” (इति रुद्रः) इस प्रमाण से ‘तुष’ भी पुंलिङ्ग है ॥ ५६ । ५८ ॥

स. स. स. स. स. स.
१६ अभया त्वव्यथा पथ्या कायस्था पूतनामृता ।

स. स. स. स. स.
हरीतकी हैमवती चेतकी श्रेयसी शिवा ॥ ५९ ॥

अभया, अव्यथा, पथ्या, कायस्था, वयस्था—वयःस्था—वयःस्था, पूतना, अमृता, हरीतकी, हैमवती, चेतकी, श्रेयसी, शिवा ये ११ हरीतकी (इड) के नाम हैं ॥ ५९ ॥

पु. पु. न. पु.
सरल पीतद्रुः सरलः पूतिकाष्ठं (चाथ) द्रुमोत्पलः ।
कठचम्पा पु. पु. पु. पु. पु.
वडहल कर्णिकारः परिव्याधे लकुचो लिकुचो डहुः ॥ ६० ॥

पीतद्रु, सरल, पूतिकाष्ठ ये ३ सरखा के नाम हैं। द्रुमोत्पल, कर्णिकार, परिव्याध ये ३ कठचम्पा के नाम हैं। इनमें “कर्णिकारः पुमानारग्वधद्रौ च द्रुमोत्पले” और “परिव्याधस्तु पुंसि स्याद्वेतसे च द्रुमोत्पले” इस मेदिनीकोषके प्रमाण से कर्णिकार, परिव्याध ये दोनों पुंलिङ्ग में रहते हैं। लकुच, लिकुच, डहु और ‘अडहु’ भी ये ३ बड़हर के नाम हैं ॥ ६० ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
कटहल पनसः कण्टकिफलो निचुलोहिज्जलोम्बुजः ।
समुद्रफल स. स. स. स.
कटुवरि काकोदुम्बरिका फल्गुर्मलपूर्जघनेफला ॥ ६१ ॥

पनस, 'पणस' कण्टकीफल, कण्टकीफल, कण्टकफल ये २ कटहर के नाम हैं । निचुल, हिजल-इजल, अम्बुज ये ३ स्थलवेतस या समुद्रफल के नाम हैं और काकोदुम्बरिका, फल्गु, मलपू, या "मलयू" जघनेफला ये ४ कालेगूलर या कटूबरि के नाम हैं ॥ ६१ ॥

नीब ^{पु.} अरिष्टः ^{पु.} सर्वतोभद्रहिङ्गुनिर्यासमालकाः ^{पु.} ।

शीशम ^{पु.} पिचुमर्दश्च ^{पु.} निम्बेऽथ ^{स.} पिच्छिलागुरु ^{न.} शिशपा ^{स.} ॥ ६२ ॥

अरिष्ट, सर्वतोभद्र, हिङ्गुनिर्यास, मालक, पिचुमर्द, 'पिचुमन्द' निम्ब ये ६ नीबके नाम हैं । पिच्छिला, अगुरु, शिशपा ये ३ सीसम के नाम हैं इनमें 'शिशपा' खीलिङ्ग है और स्वामी के मत में "अगुरुशिशपा" यह एकही नाम है सो रुद्रकोष के विरोध से ठीक नहीं समझना चाहिये ॥ ६२ ॥

काला शीशम ^{स.} कपिला ^{स.} भस्मगर्भा ^{पु.} (सा) शिरीष ^{पु.} (स्तु) कपीतनः ^{पु.} ।

सिरसा ^{पु.} भगिडलो ^{पु.} (प्यथ) चाम्पेयश्चम्पके ^{पु.} हिमपुष्पकः ^{पु.} ॥ ६३ ॥

कपिला, भस्मगर्भा ये २ काली शीशम के नाम हैं । वास्तव में कपिलादिक भी शिशपा के सामान्य पर्याय हैं इसलिये पिच्छिला, अगुरु, शिशपा, कपिला, भस्मगर्भा ये ५ नाम सीसम के हैं ऐसे अर्थ का होना योग्य है । शिरीष, कपीतन, भगिडल, भगिडर भी है ये ३ शिरीस (सिरसा) के नाम हैं । चाम्पेय, चम्पक, हेमपुष्पक ये ३ चम्पा के नाम हैं ॥ ६३ ॥

चम्पा की कली ^{स.} (एतस्य कलिका) ^{पु.} गन्धफली ^{पु.} स्यादथ ^{पु.} केसरे ।

मौलसिरी ^{पु.} वकुलो ^{पु.} वज्जुलो ^{पु.} शोके ^{पु.} (समौ) ^{पु.} करकदाडिमौ ^{पु.} ॥ ६४ ॥

इस चम्पा की कली को 'गन्धफली' कहते हैं यह १ चम्पा की कली का नाम है । केसर, केशर, वकुल ये २ मौलसिरी (मवशली) के नाम हैं इनमें 'वकुल' अन्तःस्थादि है इसीसे मुकुटने (उच्यते वर्यते कविभिः) ऐसा विग्रह दिखलाया है दहां (वययोरेकत्वात्) इससे निर्वाह नहीं हो सका है । वज्जुल, अशोक ये २ अशोक के नाम हैं । करक, दाडिम ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २

१ न वटपदो गन्धफलीमजिघ्रदिति संगच्छते ॥

२ मुकुटमते वकुलशब्देऽन्तःस्थादिरन्येषां मते तु पर्वगादिसि ॥

अनार के नाम हैं इनमें “दाडिम्बस्तु त्रिलिङ्गः स्यादेजायां करके त्रिविविति” (मेदिनी) इस प्रमाण से त्रिलिङ्ग है और “दाडिम्बसारपिण्डीरस्वाद्वम्बलशुकवल्गुभा” (इति रभसः) इस प्रमाण से “दाडिम्ब” भी है ॥ ६४ ॥

नागकेसर पु. पु. पु. पु.
चाम्पेयः केसरो नागकेसरः काञ्चनाह्वयः ।

जाही स. स. स. स. स.
जया जयन्ती तर्कारी नादेयी वैजयन्तिका ॥ ६५ ॥

चाम्पेय, केसर-केशर, नागकेसर-नागकेशर, काञ्चनाह्वय ये ४ नागकेसर के नाम हैं । जया, जयन्ती, तर्कारी, नादेयी, वैजयन्तिका ये ५ जाही के नाम हैं अथवा अरणी के नाम कहाते हैं ॥ ६५ ॥

न. पु. स. स.
अरणी श्रीपर्णमग्निमन्थः ‘स्या’त्कणिका गणिकारिका ।

पु. पु. पु. पु. स.
कुरैया जयो(ऽथ)कुटजः शक्रो वत्सको गिरिमल्लिका ॥ ६६ ॥

श्रीपर्ण, अग्निमन्थ, कणिका, गणिकारिका, जय ये ५ जयपर्ण या अरणी के नाम हैं इनमें “जया जयन्ती तिथिभित्पथ्योमा तत्सखीषु च । अग्निमन्थे ना जयन्ते विजये च युधिष्ठिर” (इति मेदिनी) इस प्रमाण से ‘जय’ पुंलिङ्ग में रहता है । कुटज, कौटज, कोटी, शक्र, वत्सक, गिरिमल्लिका ये ४ कुरैया के नाम हैं ॥ ६६ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
इन्द्रयव (एतस्यैव) कलिङ्गेन्द्रयवभद्रयवं (फले) ।

पु. पु. पु. पु.
करौदा कृष्णपाकफलाविग्नसुषेणाः (करमर्दके) ॥ ६७ ॥

इस कुरैया केही फलमें कलिङ्ग, इन्द्रयव, भद्रयव ये तीनों होते हैं ये ३ इन्द्रयव के नाम हैं इनमें “कलिङ्गेन्द्रयवः पुमानित्यमरमालादर्शनात्” इस प्रमाण से कलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग भी है और इन्द्रयव भी पुंलिङ्ग है यानी ये तीनों लिङ्ग में होते हैं । कृष्ण-पाकफल, “कृष्णपाक, पाकफल, कृष्णफल,” आविग्न, ‘अविग्न, सुषेण, करमर्दक ये ४ करौदा के नाम हैं ॥ ६७ ॥

पु. पु. पु. पु.
तमाल कालस्कन्धस्तमालः ‘स्या’त्तापिच्छो(प्यथ)सिन्दुकः ।

पु. पु. स. स.
म्योकी सिन्दुर्वारेन्द्रसुरसौ निर्गुण्डीन्द्राणिके (त्यपि) ॥ ६८ ॥

कालस्कन्ध, तमाल, तापिन्ध्र, “तापिज्ज” भी है ये ३ तमाल वृक्ष के नाम हैं । सिन्दुक, सिन्धुक, सिन्दुवार, सिन्धुवार, इन्द्रसुरस, ‘इन्द्रसुरिस’ निर्गुण्डी, निर्गुण्डी भी है । इन्द्राणिका—‘इन्द्राणी’ ये ५ म्योड़ी के नाम हैं इनमें “इन्द्राणी करणे स्त्रीणां पौलोमीसिन्दुवारयोरिति” (मेदिनी) इस कोष के प्रमाण से ‘इन्द्राणिका’ स्त्रीलिङ्ग है ॥ ६८ ॥

स. स. स. पु. पु.
वन्दास, हाथी-वेणी खरागरी देवताडो जीमूत (इत्यपि) ।

स. स. न. स.
शुण्डा या घु-श्रीहस्तिनी (तु) भूरुण्डी तृणशून्यं (तु) मल्लिका ॥ ६९ ॥

इयां बेला स. पु. स.
जंगली बेला भूपदी शीतभीरुश्च (सैवा)ऽऽस्फोता (वनोज्जवा) ।

वेणी, खरा, गरी, खरागरी, ‘गरागरी’ देवताड, जीमूत ये ५ वन्दास वृक्ष या देवताली के नाम हैं अथवा गुजराती गोड़ी के नाम हैं । श्रीहस्तिनी, भूरुण्डी ये २ घुइयां या हाथीशुण्डा के नाम हैं । तृणशून्य, ‘तृणशूल्य’ मल्लिका, भूपदी, शीतभीरु, ‘शतभीरु’ ये ४ बेला के नाम हैं और यदि वही मल्लिका वन में उपजी हो तो उसे ‘आस्फोता’ कहते हैं “आस्फोता विष्णुक्रान्तायां वनमल्ल्य-कपर्णयोरिति” (रभसः) यह १ जंगली बेला या मोगरा का नाम है ॥ ६९।३ ॥

स. स. स. स.
स्याह फूल शेफालिका (तु) सुवहा निर्गुण्डी नीलिका (च सा) ॥ ७० ॥

स. स. स.
सफेद फूल (सितासौ) श्वेतसुरसा भूतवेश्यथ मागधी ।

स. स. स.
जूही पीले फूल वाली जूही गणिका यूथिकाम्बष्ठा (सा पीता) हेमपुष्पिका ॥ ७१ ॥

शेफालिका, ‘शेफाली’ शेफालि, शीफालिका, सुवहा, निर्गुण्डी, नीलिका ये ४ कालेफूल की नेवारी के नाम हैं । यदि यही नेवारी सफेद फूलवाली हो तो श्वेत सुरसा व भूतवेशी कहती है ये २ सफेद फूल की नेवारी के नाम हैं । मागधी, गणिका, यूथिका, अम्बष्ठा ये ४ जूही के नाम हैं और यदि वह जूही पीले फूलवाली हो तो उसे ‘हेमपुष्पिका’ कहते हैं यह १ पीले फूल की जूही का नाम है ॥ ७० । ७१ ॥

वासन्ती लता या पु. पु. स. स. स.
 बेल मालती अतिमुक्तः पुण्ड्रकः “ स्या ” द्रासन्ती माधवी लता ।
 या चमेली, नेवारी स. स. स. स.
 या वर्षा की बेल सुमना मालती जातिः सप्तला नवमालिका ॥ ७२ ॥

अतिमुक्त, पुण्ड्रक, वासन्ती, माधवी, लता, माधवीलता ये ५ वासन्तीलता या बेल के नाम हैं । सुमनाः (स) सुमना, मालती, जाति, जाती ये ३ मालती या चमेली के नाम हैं इनमें सुमना यह सान्त है और “ सुमनायाश्च पत्रेण ” इस सुश्रुत के प्रमाण से टाबन्त भी पाया जाता है और सप्तला, नवमालिका ये २ प्रशंसनीयमाला, नेवारी, वासन्ती या वर्षा की बेल के नाम हैं ॥ ७२ ॥

पु.न. पु.न. पु. पु. पु.
 कुन्द, दुपहरिया माध्यं कुन्दं रक्तक (स्तु) बन्धूको बन्धुजीवकः ।
 धीकुआरि स. स. स. पु. स.
 कटसरैया सहा कुमारी तरणिरम्लान (स्तु) महासहा ॥ ७३ ॥

माध्य, कुन्द ये २ कुन्द के नाम हैं और रक्तकोष तथा मेदिनीकोष के प्रमाण से पुंलिङ्ग भी हैं । रक्तक, बन्धूक, बन्धु, बन्धुजीवक ये ३ दुपहरिया के नाम हैं । सहा, कुमारी, तरणि ये ३ धीकुआरि के नाम हैं । अम्लान, महासहा ये २ सामान्य कटसरैया के नाम हैं इनमें “ अम्लानो महासहायां ना वाच्यलिङ्गस्तु निर्मले ” (इति मेदिनी) इस कोष के प्रमाण से ‘अम्लान’ पुंलिङ्ग है और “महासहामाषपर्यामम्लानेपि च योषिति” इस मेदिनीकोषके प्रमाण से ‘महासहा’ स्त्रीलिङ्ग है ॥ ७३ ॥

शालफूलवाली (तत्र शोणे) कुरवक (स्तत्र पीते) कुरुण्टकः ।
 पीलेफूलवाली पु.स. स. पु.
 कालेफूलवाली पु.स. स. पु.
 या फिण्टी (नीलाफिण्टीद्वयो) वाणा दासी चार्तगलश्च (सा) ७४ ॥

यदि वह कटसरैया लाल हो तो उसे ‘कुरवक’ या ‘कुरुवक’ कहते हैं यह १ लालकटसरैया का नाम है और यदि वह कटसरैया पीले फूलवाली हो तो उसे ‘कुरुण्टक’ या ‘कुरण्टक’ या ‘कुरण्टी’ कहते हैं यह १ पीली कटसरैया या पियावासा का नाम है । यदि काले फूलवाली फिण्टी हो तो उसे वाणा, दासी और ‘आर्तगल’ कहते हैं ये ३ नीली फिण्टी या पियावासा के नाम हैं इनमें वाणा स्त्रीलिङ्ग व पुंलिङ्ग है ॥ ७४ ॥

पियावासामात्र पु. स. पु.
 या फिण्टीमात्र सैरीयक (स्तु) फिण्टी (स्यात्तस्मि) न्कुरवको (ऽरुणे) ।
 लालफूलवाली पु. पु.स.
 बैजनी पु.स.
 सोनहरी (पीता) कुरण्टको (फिण्टी) तस्मिन्सहचरी (द्वयोः) ७५ ॥

सैरीयक, सैरेयक, फ़िण्टी ये २ फ़िण्टीमात्र के नाम हैं । यदि वह फ़िण्टी लाल फूलवाली हो तो उसे 'कुरवक' कहते हैं यह १ लालफ़िण्टी का नाम है । यदि पीली (सोनहरी) फ़िण्टी हो तो उसे 'कुरण्टक' कहते हैं और उसी कुरण्टक में सहचरी, सहाचरी दोनों खीलिङ्ग व पुंलिङ्ग में रहते हैं ये २ पीली फ़िण्टी के नाम हैं इनमें "सैरीयकः सहचरः सैरेयश्च सहाचरः । पीतो रक्तोऽथ नीलश्च कुसुमैस्तं विभावयेत् । पीतः कुरण्टको ज्ञेयो रक्तः कुरवकः स्मृतः । नील आर्तगलो दासी बाणाओदनपाक्यपीति" (मेदिनी) इस प्रमाण से सैरीयक पुंलिङ्ग है और सहचरी दोनों लिङ्गों में बना रहता है ॥ ७५ ॥

गुड़हर ^{न.} ओडूपुष्पं ^{न.} जवापुष्पं ^{न.} वज्रपुष्पं (तिलस्य यत्) ।
तिलपुष्प ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}

कनेर ^{पु.} प्रतिहासशतप्रासचण्डातहयमारकाः ॥ ७६ ॥
^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}

करील ^{पु.} करवीरे ^{पु.} करीरे (तु) क्रकरग्रन्थिला (वुभौ) ।
^{पु.} ^{पु.}

ओडूपुष्प, जवापुष्प, 'जपापुष्प' ये २ गुड़हर फूल के नाम हैं और जो तिल का फूल है उसे 'वज्रपुष्प' कहते हैं यह १ तिल के फूलका नाम है । प्रतिहास, प्रतीहास, शतप्रास, चण्डात, हयमारक, करवीर ये ५ कनेर (कंदइल) के नाम हैं और करीर, क्रकर, ग्रन्थिल ये ३ करील के नाम हैं इनमें "वंशाङ्कुरोऽकरीरोऽस्त्री वृक्षभिद्घटयोः पुमान् । करीरीचीरिकायान्तु दन्तमूले च दन्तिनामिति" (मेदिनी) इस प्रमाण से 'करीर' पुंलिङ्ग है ॥ ७६ । १ ॥

^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}
धतूरा ^{पु.} उन्मत्तः ^{पु.} कितवो ^{पु.} धूर्तो ^{पु.} धतूरः ^{पु.} कनकाह्वयः ॥ ७७ ॥

धतूरा का फल ^{पु.} मातुलो ^{पु.} मदनश्चा (स्य फले) ^{पु.} मातुलपुत्रकः ।

उन्मत्त, कितव, धूर्त, धुस्तूर, धुस्तुर, धूस्तूर, धतूर, कनक, कनकाह्वय, मातुल, मदन ये ७ धतूरा के नाम हैं और इसके फल को "मातुलपुत्रक" कहते हैं यह १ धतूरा के फल का नाम है ॥ ७७ । १ ॥

^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}
विजौरा नींबू ^{पु.} फलपूरो ^{पु.} बीजपूरो ^{पु.} रुचको ^{पु.} मातुलुङ्गके ॥ ७८ ॥
^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}

मरुआयादवना ^{पु.} समीरणो ^{पु.} मरुवकः ^{पु.} प्रस्थपुष्पः ^{पु.} फणिजकः ।

बवई या पर्णास ^{पु.} जंबीरो (प्यथ) ^{पु.} पर्णासे ^{पु.} कठिंजर ^{पु.} ढेरकौ ॥ ७९ ॥

१ सौवर्चल मातुलुङ्ग शिला चन्दनपेषणी । ग्रीवामरणकं चैव चतुर्षु रुचकं स्मृतम् ॥ १ ॥

फलपूर, बीजपूर, रुचक, मातुलुङ्गक ये ४ विजौरा नीबू के नाम हैं “फलपूरो बीजपूरः केशरी बीजपूरकः । बीजकः केशराम्लश्च मातुलुङ्गश्च पूरकः” इस प्रमाण से स्वामी के मत में चार नाम हैं । समीरण, मरुवक, प्रस्थपुष्प, फणिज्झक—फणि-ज्झक, जंवीर—जम्बीर, ‘जम्भीर’ ये ५ दवना या मरुआ के नाम हैं । पर्णास, कठि-अर, कुठेरक ये ३ पर्णास या बवई के नाम हैं ॥ ७८ । ७९ ॥

उजली बवई (सिते)ऽर्जको (ऽत्र) पाठी (तु) चित्रको वहिसंज्ञकः ।
 चीता पु. पु. पु. पु. पु.
 मदार अर्काह्वसुकास्फोटगणरूपविकीरणाः ॥ ८० ॥
 सफेद मदार पु. पु. पु. पु. पु.
 मन्दारश्चार्कपर्णे (ऽत्रशुक्ले)ऽलर्कप्रतापसौ ।

यदि यह ‘पर्णास’ सफेद हो तो उसे ‘अर्जक’ कहते हैं यह १ उजली बवई या सफेद पर्णास का नाम है । पाठी, चित्रक, वहिसंज्ञक ये ३ चीता के नाम हैं । अर्काह्व, वसुक, ‘वसूक’ आस्फोट, ‘आस्फोट’ गणरूप, विकीरण, ‘विकीरण’ मन्दार, अर्क-पर्ण ये ७ मदार या आक के नाम हैं और अलर्क, प्रतापस ये २ सफेद आक के नाम हैं ॥ ८० । १ ॥

बक या गूमा शिवमल्ली पाशुपत एकाष्ठीलो बुको वसुः ॥ ८१ ॥
 स. पु. पु. पु. पु.
 बांदा बन्दा वृक्षादनी वृक्षरुहा जीवन्तिके (त्यपि) ।
 स. स. स. स.

शिवमल्ली, पाशुपत, एकाष्ठील, बुक, ‘बक’ वसु ये ५ बकपुष्प या गूमा के नाम हैं । बन्दा, वृक्षादनी, वृक्षरुहा, जीवन्तिका ये ४ वृक्ष के ऊपर उपजी लताविशेष या बांदा के नाम हैं इनमें “बन्दा लतान्तरे स्मृता । भिक्षुक्यामपि बन्दां चेति स्पर्शादौ भेदिनी” इस कोष के प्रमाण से ‘बन्दा’ स्पर्शादि भी है ॥ ८१ । १ ॥

नीव गिलोय वत्सादनी छिन्नरुहा गुडूची तन्त्रिकामृता ॥ ८२ ॥
 स. स. स. स. स.
 या शुद्ध जीवन्तिका सोमवल्ली विशल्या मधुपर्यपि ।
 स. स. स. स.

वत्सादनी, छिन्नरुहा, गुडूची, ‘गुडुची’ तन्त्रिका, अमृता, जीवन्तिका, सोम-वल्ली, विशल्या, मधुपर्णी ये ६ गुडुच या गिलोय के नाम हैं ॥ ८२ । १ ॥

स. स. स. स. स. स.
मूर्वा, मुहार मूर्वा देवी मधुरसा मोरटा तेजनी स्रवा ॥ ८३ ॥

स. स. स. स.
या चिनार मधूलिका मधुश्रेणी गोकर्णी पीलुपर्ण्य (पि) ।

मूर्वा, देवी, मधुरसा, मोरटा, तेजनी, स्रवा, 'स्रवा' मधूलिका, मधुश्रेणी, गोकर्णी, पीलुपर्णी ये १० मूर्वा या धनुष की उपयोगी लता विशेष या चिनार या मुहार के नाम हैं ॥ ८३ । ३ ॥

स. स. स. स. स. स.
पादा या पाठाम्बष्ठा विद्धकर्णी स्थापनी श्रेयसी रसा ॥ ८४ ॥

स. स. स. स.
पादरि एकाष्टीला पापचेली प्राचीना वनतिक्रिका ।

पाठा, अम्बष्ठा, विद्धकर्णी, प्राचीना, अविद्धकर्णी, स्थापनी, श्रेयसी, रसा, एकाष्टीला, पापचेली, वनतिक्रिका ये १० विद्धकर्णी, पहाड़मूल, पाठा (पादरि) के नाम हैं ॥ ८४ । ३ ॥

स. स. स. स.
कुटकी कटुः कटंवराशोकरोहिणी कटुरोहिणी ॥ ८५ ॥

स. स. स. स.
मत्स्यपित्ता कृष्णभेदी चक्राङ्गी शकुलादनी ।

कटु, कटंवरा, "कटम्बरा—कटम्बरा" अशोकरोहिणी, 'अशोक' कटुरोहिणी), मत्स्यपित्ता, कृष्णभेदी, चक्राङ्गी, शकुलादनी ये ८ कुटकी के नाम हैं ॥ ८५ । ३ ॥

स. स. स. स. स.
क्यवांच आत्मगुप्ता जडाऽव्यगडा कण्डूरा प्रावृषायणी ॥ ८६ ॥

स. स. स. स.
अव्यप्रोक्ता शूकशिम्बिः कपिकच्छूच मर्कटी ।

आत्मगुप्ता, जडा, 'अजहा' 'अव्यगडा—अव्यगडा' कण्डूरा, कण्डूरा, प्रावृषायणी, अव्यप्रोक्ता, शूकशिम्बि, 'शूकशिम्बा' कपिकच्छू, 'कपिकच्छू' मर्कटी ये ६ क्यवांच के नाम हैं ॥ ८६ । ३ ॥

स. स. स. स. स. स.
मूसरि या चित्रोपचित्रान्यग्रोधी द्रवन्ती शंवरी वृषा ॥ ८७ ॥

स. स. स. स.
मूसाकर्णी प्रत्यक्षश्रेणी सुतश्रेणी रण्डामूषिकपर्ण्यपि ।

चित्रा, उपचित्रा, न्यग्रोधी, द्रवन्ती, शंवरी, 'संवरी' वृषा, प्रत्यक्षश्रेणी, सुतश्रेणी, रण्डा, चण्डा, मूषिकपर्णी अपिशब्द से 'आखुपर्णिका' भी है ये १० मूसाकर्णी या मूसरी के नाम हैं ॥ ८७ । ३ ॥

अपामार्ग अपामार्गःशैखरिको धामार्गवमयूरकौ ॥ ८८ ॥

चिचिदा या

आँधीभाड़ा

प्रत्यक्पर्णी कीशपर्णी किणिहीखरमञ्जरिः ।

अपामार्ग, शैखरिक, 'शैखरेय' धामार्गव, 'अधामार्गव,' मयूरक, प्रत्यक्पर्णी, 'प्रत्यक्पुष्पी' कपिपर्णी, कीशपर्णी, केशपर्णी, किणिही, खरमञ्जरि, खरमञ्जरी ये ८ अपामार्ग या चिचिदा, आँधीभाड़ा या लटजीरा के नाम हैं ॥ ८८ । ३ ॥

स. स. स. स. स.

भँगरा या हज्रिका ब्राह्मणी पद्मा भार्गी ब्राह्मणयष्टिकाः ॥ ८९ ॥

स. पु. पु. पु.

भँगरैया अङ्गारवल्ली वालेयशाकवर्वरवर्धकाः ।

हज्रिका, 'फज्रिका,' ब्राह्मणी, पद्मा, भार्गी, ब्राह्मणयष्टिका, अङ्गारवल्ली, वालेय, वालेयशाक, वर्वर, वर्धक ये ६ भारङ्गी के नाम हैं ॥ ८९ । ३ ॥

स. स. स. स. स.

मंजीठ मज्जिष्ठा विकसाजिङ्गी समङ्गा कालमेशिका ॥ ९० ॥

स. स. स. स.

मण्डूकपर्णी भण्डीरी भण्डी योजनवल्ल्यपि ।

मज्जिष्ठा, विकसा, "विकपा," जिङ्गी, समङ्गा, कालमेशिका, "कालमेषिका," मण्डूकपर्णी, भण्डीरी, भाण्डीरी, भण्डीरिका, भण्डी, योजनवल्ली और 'योजनपर्णी' भी है ये ६ मंजीठ के नाम हैं ॥ ९० । ३ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.

यवासा या यासो यवासो दुःस्पर्शो धन्वयासः कुनाशकः ॥ ९१ ॥

पु. पु. स. स. स.

धमासा रोदनी कच्छुरानन्ता समुद्रान्ता दुरालभा ।

यास, यवास, 'पासः, अपवास' दुःस्पर्श, "धन्वयास, धन्वयवास, धनुर्यास" कुनाशक, रोदनी, 'चोदनी,' कच्छुरा, 'कच्छूरा,' अनन्ता, समुद्रान्ता, दुरालभा ये १० यवासा या धमासा के नाम हैं ॥ ९१ । ३ ॥

स. स. स. स.

पिठवन पृश्निपर्णी पृथक्पर्णी चित्रपर्यङ्गप्रिपर्णिका ॥ ९२ ॥

स. स. स. स. स.

क्रोष्टुविन्नासिंहपुच्छी कलशिर्धावनिर्गुहा ।

पृश्निपर्णी, 'पृष्णिपर्णी' पृथक्पर्णी, चित्रपर्णी, अङ्गप्रिपर्णिका 'अङ्गप्रि-वल्लिका, क्रोष्टुविन्ना, सिंहपुच्छी, कलशि, 'कलशी,' 'कलसि,' धावनि, धावनी, गुहा ये ६ सिंहपुच्छी या पिठवन के नाम हैं ॥ ९२ । ३ ॥

स. स. स. स. स.
भटकटैया निदिग्धिकास्पृशीव्याघ्री बृहतीकण्टकारिका ॥ ६३ ॥

स. स. स. स. स.
प्रचोदनी कुली क्षुद्रा दुःस्पर्शा राष्ट्रिकेत्यपि ।

निदिग्धिका, स्पृशी, व्याघ्री, बृहती, कण्टकारिका, प्रचोदनी, कुली, क्षुद्रा, दुःस्पर्शा, राष्ट्रिका ये १० कण्टकारी (भटकटैया) के नाम हैं ॥ ६३ । ३ ॥

स. १ स. स. स. स.
नील नीली काला क्लीतकिका ग्रामीणा मधुपर्णिका ॥ ६४ ॥

स. स. स. स. स. स.
रञ्जनी श्रीफली तुत्था द्रोणी दोला(च)नीलिनी ।

नीली, काला, क्लीतकिका, ग्रामीणा, मधुपर्णिका, रञ्जनी, श्रीफली, तुत्था, द्रोणी, “तूणी, तूली”, दोला, “मेला” नीलिनी ये ११ नील यानी वस्त्र आदि के रंगने के लिये काले वर्ण के नाम हैं ॥ ६४ । ३ ॥

पु. पु. स. स.
बकुची अवल्गुजः सोमराजी सुवल्लिः सोमवल्लिका ॥ ६५ ॥

स. स. स. स.
कालमेषी कृष्णफला वाकूची पूतिफल्यपि ।

अवल्गुज, सोमराजी (इन्) वा (जी) सुवल्लि, सोमवल्लिका, कालमेषी, “कालमेशी ” कृष्णफला, वाकूची, वाकुची, “ वागुजी ” पूतिफली ये ८ बकुची के नाम हैं ॥ ६५ । ३ ॥

स. स. स. स. स. स.
गजपीपरि कृष्णोपकुल्यावैदेही मागधी चपला कणा ॥ ६६ ॥

स. स. स. स. स.
उषणा पिप्पली शौण्डी कोला(थ)करिपिप्पली ।

स. स. स.
छोटी पीपरि कपिवल्ली कोलवल्ली श्रेयसी वसिरः (पुमान्) ॥ ६७ ॥

कृष्णा, उपकुल्या, वैदेही, मागधी, चपला, कणा, उषणा, ऊषणा, पिप्पली, ‘ पिप्पलि ’ शौण्डी, कोला ये १० पीपली (पीपरि) के नाम हैं । करिपिप्पली, कपिवल्ली, कोलवल्ली, श्रेयसी, वसिर, वशिर ये ५ गजपीपरि के नाम हैं इनमें वशिर पुंलिङ्ग में रहता है ॥ ६६ । ६७ ॥

न. १ न. स. स. स.
अथ वा चव्यं (तु) चविकं काकचिञ्चागुञ्जे(तु)कृष्णाला ।

स. स. पु.स. पु.
पीपरि की ल-पलंकषा त्विक्षुगन्धा श्वदंष्ट्रा स्वादुकण्टकः ॥ ६८ ॥

कडी धुंधुची पु. पु. पु.
गोक्षरु गोकण्टको गोक्षुरको वनशृङ्गाट (इत्यपि) ।

चव्य, 'चव्या' चविक, 'चविका' ये २ पीपरि की लकड़ी या चाव के नाम हैं । काकचिञ्चा, 'काकचिञ्चो' काकचिञ्चि, गुञ्जा, कृष्णाला ये ३ लाल या धुंधुची के नाम हैं । पलंकषा, इक्षुगन्धा, श्वदंष्ट्रा, स्वादुकण्टक, गोकण्टक, गोक्षुरक, वनशृङ्गाट ये ७ गोक्षरु के नाम हैं ॥ ६८ । ३ ॥

स. स. स. स. स. स.
अतीस विश्वा विषा प्रतिविषातिविषोपविषारुणा ॥ ६९ ॥

स. न. स. स.
इधिया शृङ्गी महौषधं (चाथ) क्षीरावी दुग्धिका (समे) ।

विश्वा, विषा, प्रतिविषा, अतिविषा, उपविषा, अरुणा, शृङ्गी, महौषध ये ८ अतीस के नाम हैं इनमें "महौषधन्तु शुण्ठ्यां स्याद्विषायां लघुनेपि च" इस मेदिनीकोष के प्रमाण से "महौषध" शब्द नपुंसक में रहता है । क्षीरावी, दुग्धिका ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहते हैं ये २ दूधी या दुधिया के नाम हैं ॥ ६९ । ३ ॥

स. स. स. स. स.
शतावरी शतमूली बहुसुताभीरुइन्दीवरी वरी ॥ १०० ॥

स. स. स. स.
दारुहल्दी ऋष्यप्रोक्ताभीरुपत्रीनारायण्यः शतावरी ।

स. पु. पु. पु.
अहेरु (रथ) पीतद्रुकालेयकहरिद्रवः ॥ १०१ ॥

स. स. स. स.
दावी पचंपचा दारुहरिद्रा पर्जनी (त्यपि) ।

शतमूली, बहुसुता, अभीरु, इन्दीवरी, वरी, ऋष्यप्रोक्ता, अभीरुपत्री, नारायणी, शतावरी, अहेरु ये १० शतावरी के नाम हैं । पीतद्रु, कालेयक, "कालीयक" हरिद्रु, दावी, पचंपचा, "पचंपचा" दारुहरिद्रा, पर्जनी ये ७ दारुहल्दी के नाम हैं ॥ १०० । १०१ । ३ ॥

१ केषिषु पूर्वान्वयमाहुः, यदाह चन्द्रमन्दनः— "चव्या कोलाय चविका श्रेयसी गजपिप्पली । च्यवना कोकचञ्ची तु चव्यं कुञ्जरापिप्पली" अत्र पक्षे तुरधाने चः पाठः ॥

स. स. स. स. स.
खुरासानीबच वचोम्रगन्धा षड्ग्रन्था गोलोमी शतपर्विका ॥ १०२ ॥

स. स. स. स.
सफेदबच (शुक्ला) हैमवतीवैद्यमातृसिंहौ (तु) वाशिका ।

पु. पु. पु. पु. पु.
रूसा वृषोटरूषः सिंहास्यो वासको वाजिदन्तकः ॥ १०३ ॥

बचा, उग्रगन्धा, षड्ग्रन्था, गोलोमी, शतपर्विका ये ५ बच या खुरासानी बच के नाम हैं । यदि सफेद बच हो तो उसे “हैमवती” कहते हैं यह १ उजली बच का नाम है । वैद्यमाता, सिंही, वाशिका, वासिका, “वाशा, वासा” वृष, अट-रूष “अटरूष” सिंहास्य, वासक, वाशक, वाजिदन्तक ये ८ अट्रूमा (रूसा) के नाम हैं ॥ १०२ । १०३ ॥

स. स. स. स.
विष्णुकान्ता आस्फोता गिरिकर्णी “स्या” द्विष्णुकान्तापराजिता ।

स. पु. पु. पु. पु.
तालमखाना इक्षुगन्धा (तु) काण्डेक्षुकोकिलाक्षेशुरक्षुराः ॥ १०४ ॥

आस्फोता, “आस्फोटा” गिरिकर्णी, विष्णुकान्ता, अपराजिता ये ४ अपराजिता या विष्णुकान्ता के नाम हैं । इक्षुगन्धा, काण्डेक्षु, कोकिलाक्ष, इक्षुर, क्षुर ये ५ तालमखाना के नाम हैं ॥ १०४ ॥

पु. पु. स. स. स.
सौफ शालेयः “स्या” च्छीतशिवश्छत्रा मधुरिका मिसिः ।

स. पु. पु. स. स. स.
सेहुँड मिश्रेया (प्यथ) सीहुण्डो वज्रदुःस्नुक्स्नुहीगुडा ॥ १०५ ॥

स. पु.न. स. स.
बायविडङ्ग समन्तदुग्धा (थो) वेल्मममोघा चित्रतण्डुला ।

पु. पु. पु.न.
तण्डुलश्च कृमिघ्नश्च विडङ्गं (पुंनपुंसकम्) ॥ १०६ ॥

शालेय, “शालेय” शीतशिव, छत्रा, मधुरिका, मिशी, “मिशि-मिसी-मिसि” मिश्रेया ये ६ सौँफ के नाम हैं । सीहुण्ड, “सिहुण्ड-शीहुण्ड-शिहुण्ड” वज्रदु, वज्र, स्नुक्, स्नुही “स्नुहा” गुडा, “गुड” समन्तदुग्धा ये ६ सेहुँड के नाम हैं । वेल्म, अमोघा, “मोघा” चित्रतण्डुला, तण्डुल, “तन्तुल” कृमिघ्न, विडङ्ग ये ६ विडङ्ग या बायविडङ्ग के नाम हैं इनमें “विडङ्गस्त्रिष्वभिज्ञे स्यात्कृमिघ्ने पुंनपुंसकम्” इस मेदिनीकोषके प्रमाण से विडङ्ग पुलिङ्ग व नपुंसक में रहता है ॥ १०५ । १०६ ॥

वरिष्ठारा स. पु. स. स.
सनई बला वाट्यालकोघरगटारवा(तु)शणपुष्पिका ।

दाल स. स. स. स. स.
मृद्वीका गोस्तनी द्राक्षा स्वाद्वी मधुरसेति(च) ॥१०७॥

बला, वाट्यालक ये २ बारियाग के नाम हैं । घरगटारवा, शणपुष्पिका ये २ सनई के नाम हैं यानी शणशब्द उसके पुष्पों की समता में लाक्षणिक है । मृद्वीका, गोस्तनी, “गोस्तना” द्राक्षा, स्वाद्वी, मधुरसाये ५ दाख या मुनका के नाम हैं ॥ १०७ ॥

स. स. स. स. स.
निसोत या सर्वानुभूतिः सरला त्रिपुटा त्रिवृता त्रिवृत् ।

स. स. स. स. स.
त्रिधारा त्रिभण्डीरोचनीश्यामापालिन्धौ(तु)सुषेणिका १०८ ॥

स. स. स. स.
कालानिसोत कालामसूरविदलार्धचन्द्रा कालमेषिका ।

सर्वानुभूति, सरला, “सरणा, सवहा, सुवहा, सरसा” त्रिपुटा, त्रिपुटी, त्रिवृता, त्रिवृत्, त्रिभण्डी, रोचनी, “रेचनी” ये ७ सफेद त्रिधारा या निसोथ या उपविषादि के नाम हैं । श्यामा, पालिन्दी, “पालिन्धी” सुषेणिका, काला, मसूरविदला, अर्धचन्द्रा, कालमेषिका ये ७ काले त्रिधारा या काले निसोथ के नाम हैं ॥ १०८ । ३ ॥

न. न. स. स.
मुलेठी मधुकं क्लीतकं यष्टिमधुका मधुयष्टिका ॥ १०९ ॥

स. स. स. स.
कल विदारी क्षीरशुक्लक्षुगन्धा क्रोष्ट्री (च या सिता) ।

स. स. स.
उजला गंगा कल (अन्या)क्षीरविदारी‘स्या’न्महाश्वेतर्क्षगन्धिका ११० ॥

मधुक, क्लीतक, यष्टिमधुका, यष्टीमधुका, यष्टी, यष्टिमधुक, यष्टीमधुक, मधुयष्टिका ये ४ जेठी मधु या मुलेठी के नाम हैं । विदारी, क्षीरशुक्ला, क्षुगन्धा ये ३ सफेद-भूमि कुन्हड़ा या कोहड़ा या गंगाफल के नाम हैं । क्रोष्ट्री, क्षीरविदारी, महाश्वेता, मृक्षगन्धिका ये ४ कालेभूमि कुन्हड़ा के नाम हैं ॥ १०९ । ११० ॥

स. स. स. स.
कलपीवरि लाङ्गली शारदी तोयपिप्पली शकुलादनी ।

स. पु. पु. पु.
अजमोद या खराश्वा कारवी दीप्यो मयूरोलोचमस्तकः ॥ १११ ॥

१ एवं च विदार्योदितं शुक्रवाचकम् । क्रोष्ट्रादिचतुष्टयं कृष्णवाचकमिति भन्तव्यम् ॥

लाङ्गली, शारदी, तोयपिप्पली, शकुलादनी ये ४ जलपीपरि या शाकभेद के नाम हैं । खराश्वा, कारवी, दीप्य, “ दीपक ” मयूर, लोचमस्तक “ लोचमर्कट ” ये ५ अजमोदा या मयूरशिखा के नाम हैं ॥ १११ ॥

स. स. स. स. स.
काली सारिवा गोपी श्यामा शारिवा(स्या)दनन्तोत्पलशारिवा ।

श्रद्धि न. स. स. स. १
वृद्धि योग्यमृद्धिःसिद्धिलक्ष्म्यौ वृद्धे(रप्याह्वया इमे) ॥११२॥

गोपी, “गोपा” श्यामा, शारिवा, “सारिवा” अनन्ता, उत्पलशारिवा ये ५ काली सारिवा, पीपरि, कर्गियाट, कर्गिघट या श्यामलता के नाम हैं । योग्य, श्रद्धि, सिद्धि, लक्ष्मी ये ४ श्रद्धिनामक ओषधि के नाम हैं और ये कहेहुए चारो वृद्धयाख्य ओषधि के भी नाम हैं यानी योग्य, श्रद्धि, सिद्धि, लक्ष्मी, वृद्धि ये ५ वृद्धयाख्य ओषधि के नाम हैं ॥ ११२ ॥

स. स. स. स. स.
केला कदली वारणवुसा रम्भा मोचांशुमत्फला ।

स. स. म. म.
वनमृग काष्ठीला मुद्रपर्णी (तु) काकमुद्रा सहे (त्यपि) ॥११३॥

कदली, ‘कदला’ वारणवुसा, वारणवुषा , रम्भा, मोचा, अंशुमत्फला, “भानु-फला” काष्ठीला ये ६ कदली (केला) के नाम हैं । मुद्रपर्णी, काकमुद्रा, सहा ये ३ मुगौनी या वनमृग के नाम हैं ॥ ११३ ॥

स. स. स. स. स.
वैगन या भांटा वार्ताकी हिङ्गुली सिंही भगटाकी दुष्प्रधर्षणी ।

स. स. स. स. स.
रासन या नाकुली सुरसा रास्ना सुगन्धा गन्धनाकुली ॥११४ ॥

स. स. स. स.
जताविशेष नकुलेष्टा भुजङ्गाक्षी छत्राकी सुवहा (च सा) ।

वार्ताकी, “वार्ताक, वार्ता, वार्ताकु” हिङ्गुली, सिंही, भगटाकी, दुष्प्रधर्षणी, “दुष्प्रधर्षिणी” ये ५ वैनभांटा या वैगन के नाम हैं इनमें रमसकोष के प्रमाण से वार्ताकी पुंलिङ्ग भी है । नाकुली, सुरसा, रास्ना, सुगन्धा, “नागसुगन्धा” “धर्ष-सुगन्धा” गन्धनाकुली, नकुलेष्टा, भुजङ्गाक्षी, छत्राकी, सुवहा ये ६ रास्ना (रासन) या जताविशेष के नाम हैं ॥ ११४ । ३ ॥

स. स. स. स. स.
सरिवन विदारिगन्धांशुमती सालपर्णी स्थिरा ध्रुवा ॥ ११५ ॥

स. स. स. स.
कपास तुण्डिकेरी समुद्रान्ता कार्पासी बदरेति (च) ।

विदारिगन्धा, “विदारीगन्धा, विदारी” अंशुमती, सालपर्णी, शालपर्णी, स्थिरा, ध्रुवा ये ५ शालपर्णी या सरिवन के नाम हैं । तुण्डिकेरी, समुद्रान्ता, कार्पासी, “कार्पासी ” बदरा ये ४ कपास के नाम हैं ॥ ११५ । ३ ॥

स. स. पु. पु.
नर्माकपास भारद्वाजी (तुसावन्या) शृङ्गी (तु) ऋषभो वृषः ॥ ११६ ॥
काकडासिंगी स. स. स. स.
कंकही या गंगे- गङ्गेरुकी नागबला भूषा ह्रस्वगवेधुका ।
रन

यदि वह कपास वनमें उपजी हो तो उसे “ भारद्वाजी ” कहते हैं यह १ ब-
नेली कपास या नर्माकपास का नाम है । शृङ्गी, ऋषभ, वृष ये ३ काकडासिंगी के
नाम हैं । गङ्गेरुकी, नागबला, भूषा, ह्रस्वगवेधुका ये ४ कंकही या गंगेरन के नाम
हैं ॥ ११६ । ३ ॥

सफेद फूल की पु. पु. स.
तुरई धामार्गवो घोषकः “स्या” न्महाजाली (स पीतकः) ॥ ११७ ॥
पीले फूल की स. स. स. स. स.
तुरई स्यौत्स्नी पटोलिका जाली नादेयी भूमिजम्बुका ।
चचेड़ा भूमिजायुन स. स. स. स.
भूमिजामुन कलिहारी
कौआठोड़ी स्याल्लाङ्गलिक्यग्निशिखाकाकाङ्गीकाकनासिका ॥ ११८ ॥

धामार्गव, घोषक ये २ सफेद फूलवाली तोरई के नाम हैं । यदि वह पीले फूल
वाली हो तो उसे “ महाजाली ” कहते हैं यह १ घियातोरई का नाम है ।
स्यौत्स्नी, पटोलिका, जाली ये ३ चचेड़ा के नाम हैं । नादेयी, भूमिजम्बुका ये २
भूमिजामुनि या अम्बुवेतस के नाम हैं । लालाङ्गलिकी, अग्निशिखा ये २ विपविशेष
या कलि (रि) हारी के नाम हैं । काकाङ्गी, काकनासिका ये २ काकजम्बु या
कौआठोड़ी के नाम हैं ॥ ११७ । ११८ ॥

हंसपदी या स. स. स. स.
लज्जालु गोधापदी (तु) सुवहा मुसली तालमूलिका ।
मुसली स. स. स. स.
मेदासिंगी
गोभी अजशृङ्गी विषाणी (स्याद्) गोजिह्वादर्विके (समे) ॥ ११९ ॥

गोधापदी, सुवहा ये २ हंसपदी या लज्जालु या करमुआ के नाम हैं ।

मुशली, मुषली, तालमूलिका ये २ मुसली के नाम हैं । अजशृङ्गी, विषाणी ये २ मेढासिंगी के नाम हैं । गोजिह्वा, दर्विका, 'दार्विका' ये २ गोभी या बनगोभी के नाम हैं ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ॥ ११६ ॥

स. स. स. स.
ताम्बूल या पान ताम्बूलवल्ली ताम्बूली नागवल्ल्य (प्यथ) द्विजा ।

स. स. स. स. स.
गगनधूरि हरेणू रेणुका कौन्ती कपिला भस्मगन्धिनी ॥ १२० ॥

ताम्बूजवल्ली, ताम्बूली, नागवल्ली ये ३ नागवेलि या पानके नाम हैं । द्विजा, हरेणु, 'हरेणुका', रेणुका, कौन्ती, कपिला, भस्मगन्धिनी ये ६ हरेणुका या गगनधूरि के नाम हैं इनमें 'कपिला रेणुकायां च शिशपागोविशेषयोः । पुण्डरीक-कारिण्यां स्त्री वर्णभेदे त्रिलिङ्गकम् । नानले वासुदेवे च मुनिभेदे च कुङ्कुरे' (इति मेदिनी) इस कोषके प्रमाण से कपिला रेणुका में स्त्रीलिङ्ग है ॥ १२० ॥

न. न. न. न.
एलुवा एलवालुकमैलेयं सुगन्धि हरिवालुकम् ।
पालक न. स. पु. पु. पु.स.न.

या कुंदरु बालुकं (चाथ) पालङ्कया मुकुन्दः कुन्दकुन्दुरू ॥ १२१ ॥

एलावालुक, 'एलवालुक' एजेय, सुगन्धि, हरिवालुक, 'हरिवासुक' बालुक ये ५ एलुआ, गन्धद्रव्य, हरिवालुक या मूसघर के नाम हैं । पालङ्कया, पालकी, मुकुन्द, मुकुन्दु, कुन्द, कुन्दु, कुन्दुर, कुन्दुर ये ४ पालकसाग या कुंदुरू या पोई के नाम हैं ॥ १२१ ॥

न. न. न. न. न.
नेत्रवाला बालं ह्रीवेरवर्हिष्ठोदीच्यं केशाम्बुनाम (च) ।

न. न. न. न.
शिलाजीत कालानुसार्यवृक्षाश्मपुष्पशीतशिवानि तु ॥ १२२ ॥

न. स. स. स. स.
तालीसपत्र शैलेयं तालपर्णी (तु) दैत्या गन्धकुटी मुरा ।

स. स. स. स. स.
ताल या गन्धिनी गजभक्ष्या (तु) सुवहा सुरभी रसा ॥ १२३ ॥

स. स. स. स.
सालर्ष महेरणा कुन्दुरूकी सल्लकी ह्लादिनीति (च) ।

बाल, ह्रीवेर, 'ह्रीवेर' वर्हिष्ठ, उदीच्य, केशाम्बुनाम या 'केश और अम्बु' ये ५ नेत्रवाला या हाऊवेरके नाम हैं । कालानुसार्य, वृक्ष, अश्मपुष्प, शीतशिव, मुरा,

शैलेय ये ५ शिलाजित के नाम हैं । तालपर्णी, वैत्या, गन्धकुटी, मुरा, गन्धिनी ये ५ मुरा, मरोरफली या तालीसपत्र के नाम हैं । गजभक्ष्या, गजभक्षा, सुवहा, सुरभि, सुरभी, रसा, सुरभीरसा, महेरणा, महेरुणा, कुन्दुरुकी, सल्लकी, सिल्लकी, शल्लकी, शिल्लकी, ह्लादिनी, ह्लादिनी ये ८ सालवृक्ष या सालई के नाम हैं ॥ १२२।१२३।३ ॥

भर्वई या धाय ^{स.}अग्निज्वाला ^{स.}सुभिक्षे ^{स.}(तु)धातकी ^{स.}धातुपुष्पिका ॥१२४॥

बड़ी इलायची ^{स.}पृथ्वीका ^{स.}चन्द्रवालैला ^{स.}निष्कुटिर्बहुला (थ सा) ।

छोटी इलायची ^{स.}(सूक्ष्मो) ^{स.}पकुञ्चिका ^{स.}तुत्था ^{स.}कोरङ्गी ^{स.}त्रिपुटा ^{स.}त्रुटिः ॥१२५॥

अग्निज्वाला, सुभिक्षा, धातकी, धातुपुष्पिका “धातुपुष्पिका” ये ४ भर्वई या धायके नाम हैं । पृथ्वीका, चन्द्रवाला, एला, निष्कुटि, “निष्कुटी” बहुला ये ५ इलायची के नाम हैं और यदि वह छोटी इलायची हो तो उसे उपकुञ्चिका, तुत्था, कोरङ्गी, त्रिपुटा और त्रुटि कहते हैं ये ५ गुजराती इलायची के नाम हैं ॥ १२४ । १२५ ॥

कूट ^{पु.}व्याधिः ^{न.}कुष्ठं ^{न.}पारिभाष्यं ^{न.}वाप्यं ^{न.}पाकलमुत्पलम् ।

शंखाहूली ^{स.}शङ्खिनी ^{स.}चोरपुष्पी ^{स.}(स्यात्)केशि ^{पु.}(न्यथ)वितुन्नकः ॥१२६॥

भूमिआंवला ^{स.}भट्टा ^{स.}मला ^{स.}ज्भट्टा ^{स.}ताली ^{स.}शिवातामलकीति (च) ।

व्याधि, कुष्ठ, पारिभाष्य, व्याप्य, “वाप्य, आप्य” पाकल, उत्पल ये ६ कूट के नाम हैं । शङ्खिनी, चोरपुष्पी, केशिनी ये ३ शङ्खाहूली, चोरवल्ली, लाहुला या शङ्ख-कौड़ी के नाम हैं । वितुन्नक, भट्टा, भ्रमला, “भट्टामला, भट्टामला” ज्भट्टा, ताली, तामलकी ये ७ भूमिआंवला के नाम हैं ॥ १२६।३ ॥

^{पु.}पुण्डर्य (मथ) ^{पु.}तुन्नः ^{पु.}कुबेरकः ॥ १२७ ॥

^{पु.}कान्तलको ^{पु.}नन्दिवृक्षो ^{स.}(थ) राक्षसी ।

^{पु.}री ^{पु.}क्षेमदुष्पन्नगणा ^{पु.}हासकाः ॥ १२८ ॥

पण्डर्य ये २ गुलाब या स्थलकमलके नाम हैं । तुन्न, कुबे-

रक, कुश, “तुशि” कच्छ, कान्तलक, नन्दिवृक्ष, “नन्दीवृक्ष” ये ६ तून या नन्दी-
वृक्ष या पीपलपत्रके समान पत्तेवाले वृक्ष के नाम हैं । राक्षसी, चण्डा, धनहरी,
क्षेम, दुष्पत्र, गणहासक, “गण” ये ६ धनहरी या चोराख्य गन्धद्रव्य के
नाम हैं ॥ १२७ । १२८ ॥

नखनामक गन्ध न. न. न. न.

द्रव्य माल- व्याडायुधं व्याघ्रनखं करजं चक्रकारकम् ।

कांगनी, पवारी या स. स. स. स. स.

नलीनामक गन्धद्रव्य शुषिरा विद्रुमलता कपोताङ्घ्रिनी नली ॥ १२६ ॥

व्याडायुध, “व्यालायुध” व्याघ्रनख, करज, चक्रकारक ये ४ व्याघ्रनखनामक
गन्धद्रव्य के नाम हैं । शुषिरा, “सुषिरा” विद्रुमलता, कपोताङ्घ्रि, नटी, नली ये ५
मालकांगनी या पवारी या नलीनामक गन्धद्रव्य के नाम हैं ॥ १२६ ॥

स. स. स. स.

ककुंदनि धमन्यञ्जनकेशी (च) हनुर्हृदविलासिनी ।

स. पु. पु. न. न. स.

अरहर या अही शुक्तिः शङ्खः खुरः कोलदलं नख (मथा) ढकी ॥ १३० ॥

स. स. स. न. न.

काक्षी मृत्सना तुवरिका मृतालकसुराष्ट्रजे ।

धमनी, “धमनि” अञ्जनकेशी, हनु, हृदविलासिनी ये ४ ककुंदनि के नाम हैं ।
इनमें धमनी, अञ्जनकेशी इन दोनों का पूर्व में अन्वय होता है ऐसा कितेक आ-
चार्यों ने कहा है । शुक्ति, शङ्ख, खुर, कोलदल, नख, “नखी” ये ५ कोलदल या
नखीनामक गन्धद्रव्य के नाम हैं । इनमें “नखी स्त्रीकलीवयोः शुक्तौ नखरे पुं-
नपुंसकम्” (इति मेदनी) इस कोषके प्रमाण से नख स्त्री व नपुंसक है । आढकी,
काक्षी, मृत्सना, तुवरिका, ‘तूवरी’ “मृतालक” मृत्तालक, सुराष्ट्रजे ये ६ अरहर या
अही या खरो मिट्टी के नाम हैं ॥ १३० ॥

न. न. न. न.

नागरमोथा, कुटन्नटं दाशपुरं वानेयं परिपेक्ष-

जलमोथा,

गोया या छोटा

मोथा

न. न. न. न.

प्रवगोपुरगोनर्दकैवर्तीमुस्तकानि

कुटन्नट, दाशपुर “दाशपूर-दशपूर-दशपूर” वानेय
परिपेक्ष” सब, गोपुर, गोनर्द, कैवर्तीमुस्तक, कैवर्तमुस्त
मोथा, गोया या छोटे मोथा के नाम हैं ॥ १३१ ॥

व “परिपेक्ष-
रमोथा, जल-

कुक्कुरौधा न. न. न. न. न.
ग्रन्थिपर्णं शुक्रं बर्हिपुष्पं स्थौण्यकुक्कुरे ॥ १३२ ॥

स. स. स. स. स. स.
अस्परक मरुन्माला (तु) पिशुना स्पृक्षा देवी लता लघुः ।

स. स. स. स.
समुद्रान्ता वधूः कोटिवर्षालङ्कोपिके (त्यपि) ॥ १३३ ॥

ग्रन्थिपर्ण, शुक्र “शुक्रवर्ह” बर्हि, पुष्प, बर्हिपुष्प, बर्हपुष्प, ‘वर्ह’, स्थौण्य, कुक्कुर ये ५ कुक्कुरौधा या भटोरा या गठिवन के नाम हैं । मरुन्माला, मरुन्, माला, पिशुना, स्पृक्षा, पृक्षा, देवी, लता, लघु, समुद्रान्ता, वधू, कोटिवर्षा, कोटी, वर्षा, लङ्कोपिका, लङ्कापिका और लङ्कायिका ये १० अस्परक या बिडारनामक शाक-विशेष के नाम हैं ॥ १३२ । १३३ ॥

स. स. स. स. स.
जटामांसी तपस्विनी जटामांसी जटिला लोमशा मिसी ।

न. न. न. न. न. न.
या तज त्वक्पत्रमुत्कटं भृङ्गं त्वचं चोचं वराङ्गकम् ॥ १३४ ॥

तपस्विनी, जटा, मांसी, जटामांसी, जटिला, लोमशा, मिसी, मिसि, मसी, मसि, मिशी, मिशि, मपी, मषि, मिपी, मिषि ये ६ जटामांसी के नाम हैं । त्वक्पत्र, त्वक् (च) पत्र, उत्कट, भृङ्ग, त्वच, चोच, वराङ्गक ये ६ तज या दालचीनी के नाम हैं ॥ १३४ ॥

कचूर कर्चूरको द्राविडकः काल्पको वेधमुख्यकः ।

अजमात्र औषध औषध्यो जातिमात्रे स्युरजातौ सर्वमौषधम् ॥ १३५ ॥

कर्चूरक, “कर्चूरक” द्राविडक, काल्पक, काल्यक, वेधमुख्यक ये ४ कचूरके नाम हैं । जातिमात्र की विवक्षा में औषधीशब्दका प्रयोग होता है यानी जिन्हींका फल पकनाही अन्त है ऐसे ब्रीहि, जब आदिकों की जाति में “औषध्यः” ऐसा प्रयोग कहाजाता है यहां बहुत्व की विवक्षा में बहुवचन हुआ है नित्य नहीं है । जैसे कहा है कि औषधी को रोगहारित्वमात्र जानाजाता है और अन्य कुछ नहीं तब “औषध” शब्द का प्रयोग होता है क्योंकि औषधिशब्दसे “औषधरजातौ ” इस सूत्र से ‘अण्’ प्रत्ययका विधान किया है, केवल “औषधिरैव” इससे औषधीशब्द बाध्य नहीं है वरन् रोगहारित्व से घृत, मधु, तैल व त्रिफलादि के कषयादिकों का भी औषधत्व है वह “सर्व” इस विशेषण से जानना चाहिये । औषधी, औषधि ये २ अजमात्र के नाम हैं और “औषध” यह १ औषधमात्रका नाम है ॥ १३५ ॥

न. पु. पु.
साग या तर-शाकाख्यं (पत्रपुष्पादि) तण्डुलीयोल्पमारिषः ।
कारी, चौराई, स. स. स. स. स.

इन्द्रपुष्पी विशल्याग्निशिखानन्ता फलिनी शक्रपुष्प्यपि ॥१३६॥

पत्र, पुष्प, फल, मूल आदि शाक कहाते हैं, जैसेकि—(मूलपत्रकरीराग्रफल-
काण्डाधिरूढकम् । त्वक्पुष्पं कवकं चैव शाकं दशविधं स्मृतम्) मूली आदिकों की
मूल, बथुई आदिकों का पत्र, बांस का अँखुवा, करीर, वेत्रआदिकों का अग्र, कुम्हड़ा
आदिकों का फल, काण्डईपका दण्ड, अधिरूढक—बीजांकुर, विजौरा आदिकों की
त्वचा, इमली आदिकों का फूल और कवकछत्रिका—(भुईंफोड़ या धरतीका फूल)
यह दशभांति का शाक कह। है यह १ शाक या तरकारीमात्र का नाम है । तण्डु-
लीय, अल्पमारिष ये २ चौराई साग के नाम हैं । विशल्या, अग्निशिखा, अनन्ता,
फलिनी, शक्रपुष्पी ये ५ इन्द्रपुष्पी के नाम हैं ॥ १३६ ॥

स. स. स. पु.
विधारा, (स्याट)क्षगन्धा छगलान्त्यावेगी वृद्धदारकः ।

ब्राह्मी, क्ष्योटा पु. स. स. स.
या उजली दूब जुङ्गो ब्राह्मी तु मत्स्याक्षी वयस्था सोमवल्लरी ॥१३७॥

अक्षगन्धा, “अक्ष्यगन्धा,” छगलान्त्री, “छगलान्त्री, छगला, अन्त्री” आवेगी,
वृद्धदारक, जुङ्ग, जुङ्गा ये ५ विधारा के नाम हैं । ब्राह्मी, ब्रह्मी, मत्स्याक्षी, वयस्था,
वयःस्था, वयस्स्था, सोमवल्लरी, सोमवल्लरि, चन्द्रवल्लरी, सोमलता ये ४ ब्राह्मी,
क्ष्योटा या उजली दूब या सोमलता के नाम हैं ॥ १३७ ॥

स. स. स. स.
मकोय पटुपर्णी हैमवती स्वर्णक्षीरी हिमावती ।

स. स. स. स.
माषपर्णी हयपुच्छी (तु) काम्बोजी माषपर्णी महासहा ॥१३८॥

पटुपर्णी, हैमवती, स्वर्णक्षीरी, हिमावती ये ४ मकोय के नाम हैं । हयपुच्छी,
काम्बोजी, माषपर्णी, मासपर्णी, महासहा ये ४ माषपर्णी या मूंग के नाम हैं ॥ १३८ ॥

स. स. स. स.
कुंदरु तुण्डिकेरी रक्तफला बिम्बिका पीलुपर्ण्य (पि) ।

स. स. स. स. स.
बर्बई वर्वरा कवरी तुङ्गी खरपुष्पाजगन्धिका ॥१३९॥

तुण्डिकेरी, “तुण्डकेरी” रक्तफला, बिम्बिका, पीलुपर्णी ये ४ कुंदरु के नाम
हैं । वर्वरा, कवरी, तुङ्गी, खरपुष्पा, अजगन्धिका ये ५ बर्बई के नाम हैं ॥ १३९ ॥

स. स. स. स.
कोलिन्दण एलापर्णी(तु) सुवहा रास्ना युक्तरसा (च सा) ।

अम्लोनियां स. स. स. स. स.
या चूक चाङ्गेरी चुक्रिका दन्तशठाम्बष्ठाम्ललोणिका ॥ १४० ॥

एलापर्णी, सुवहा, रास्ना, युक्तरसा ये ४ एलापर्णी या कोलिन्दण के नाम हैं ।
चाङ्गेरी, चुक्रिका, दन्तशठा, अम्बष्ठा, अम्ललोणिका “अम्ललोणिका” ये ५
अम्लोनियां या चूक के नाम हैं ॥ १४० ॥

पु. पु. पु. पु.
अम्लवेतस सहस्रवेधी चुक्रोम्लवेतसः शतवेध्य(पि) ।

स. स. स. स.
लजालू नमस्कारी गण्डकाली समङ्गा खदिरा (त्यपि) ॥ १४१ ॥

सहस्रवेधी, चुक्र, अम्लवेतस, शतवेधी ये ४ अम्लवेतसके नाम हैं अथवा चाङ्गेरी
आदि व शतवेधी पर्यन्त नव नाम अम्लवेतस के ही हैं यह मुकुटका मत है ।
नमस्कारी, गण्डकाली, समङ्गा, खदिरा ये ४ लजालू या हाताजोड़ी के नाम हैं ॥ १४१ ॥

स. स. स. स. स.
जीवन्ती या जीवन्ती जीवनी जीवा जीवनीया मधुस्रवा ।

पु. पु. पु. पु. पु.
डोड़ी जीवक कूर्चशीर्षो मधुरकः शृङ्गह्रस्वाङ्गजीवकाः ॥ १४२ ॥

जीवन्ती, जीवनी, जीवा, जीवनीया, मधु, स्रवा, मधुस्रवा, मधुस्रुवा ये ५ जी-
वन्ती या गुर्जर देश में उपजी “डोड़ी” के नाम हैं । कूर्चशीर्ष, मधुरक, शृङ्ग,
ह्रस्वाङ्ग, जीवक ये ५ जीवक या अष्टवर्गान्तर्गत जीवक के नाम हैं ॥ १४२ ॥

पु. पु. पु. स.
चिरायता किराततिक्तो भूनिम्बोऽनार्यतिक्तो (५थ) सप्तला ।

स. स. स. स.
सेहूँड के भेद विमला सातला भूरिफेना चर्मकषे (त्यपि) ॥ १४३ ॥

किराततिक्त, भूनिम्ब, अनार्यतिक्त, “चिरात्तिक्त” ये ३ चिरायता के नाम हैं ।
सप्तला, विमला, सातला, भूरिफेना, चर्मकषा ये ५ सीहुण्डभेद या चर्मघास के
नाम हैं ॥ १४३ ॥

स. स. स. पु.
काकोली या वायसोली स्वादुरसा वयस्था (थ) मकूलकः ।

काकोली दैतिया पु. स. स. स.
सा जयपाल निकुम्भो दन्तिका प्रत्यक्ष्रेणयुदुम्बरपर्य(पि) १४४ ॥

१. “लदिस शाकभेदे जी ना चन्द्रे दन्तधावने” (इति मेदिनी) ॥

वायसोली, स्वादुरसा, वयस्था, “कयस्था, कायस्था” ये ३ काकोली या काकोड़ी के नाम हैं । मकूलक, “मुकूलक” निकुम्भ, निधुम्भ, दन्तिका, “दन्तिजा” प्रत्यक्ष्रेणी, उदुम्बरपर्णी ये ५ वज्रदन्ती या दँतिया (जमालगोटा) जिसके बीज को ‘जयपाल’ कहते हैं उसके नाम हैं ॥ १४४ ॥

स. स. स. स.

अजवाइन **अजमोदा तूग्रगन्धा ब्रह्मदर्भा यवानिका ।**

न. न. न.

पुष्करमूल (मूले) पुष्करकाश्मीरपद्मपत्राणि (पौष्करे) ॥१४५॥

अजमोदा, उग्रगन्धा ये २ अजमोदा के नाम हैं । ब्रह्मदर्भा, यवानिका, “यमानिका” यवानी, “यमानी” ये २ अजवाइन के नाम हैं अथवा ये चारो अजवाइनि केही नाम हैं यह कितेक आचार्यों का मत है । पुष्कर, काश्मीर, पद्मपत्र, “पद्मपर्णा” ये ३ पुष्करमूल के नाम हैं ॥ १४५ ॥

स. स. स. स. स.

कपिला या **अव्यथातिचरा पद्मा चारटी पद्मचारिणी ।**

स्थलकमलिनी पु. पु. पु. पु. स.

कवीला **काम्पिल्यः कर्कशश्चन्द्रोरक्ताङ्गो रोचनी(त्यपि) ॥१४६॥**

अव्यथा, अतिचरा, पद्मा, चारटी, पद्मचारिणी ये ५ पद्माक, कपिला या स्थलकमलिनी के नाम हैं । काम्पिल्य, “काम्पिल, कम्पिल, कम्पील ” कर्कश, चन्द्र, रक्ताङ्ग, रोचनी, रेचनी ये ५ कवीला, शुण्डारोचनी या कपीला के नाम हैं ॥ १४६ ॥

पु. पु. पु. पु.

चकवड **प्रपुन्नाडस्त्वेडगजो दद्रुघ्नचक्रमर्दकः ।**

पु. पु. पु. पु.

प्याज **पद्माट उरणाख्य(श्च)पलाण्डु(स्तु)सुकन्दकः ॥ १४७ ॥**

प्रपुन्नाड, “प्रपुन्नाड, प्रपुनाड, ” एडगज, दद्रुघ्न, चक्रमर्दक, पद्माट, उरणाख्य, “उरणाक्ष” ये ६ पवांड या चकवड या बाकला के नाम हैं । पलाण्डु, सुकन्दक, “सुकन्दक, मुकुन्दक” ये २ पलाण्डु या कांदा या प्याज के नाम हैं ॥ १४७ ॥

पु. पु. न.

हराप्याज **लतार्कदुर्दुमौ (तत्र हरिते) ‘थ’ महौषधम् ।**

न. पु. पु. पु. पु.

लहसुन **लशुनं गृञ्जनारिष्टमहाकन्दरसोनकाः ॥ १४८ ॥**

१ लशुनं गृञ्जनं चैव पलाण्डु कवकानि च । वृत्ताकारास्त्रिकालाजुजातीया जातिदूषितमिति । श्वेतकन्दः पलाण्डुविरोधो गृञ्जनम् । लशुनं दीर्घपत्रश्च पिच्छगन्धो महौषधम् । करपत्र पलाण्डुश्च लता-कम्पापराजितः । गृञ्जनं यवनेष्टश्च पलाण्डोर्दश जातयः” इति सुश्रुतेनोक्तत्वात् ॥

लतार्क, दुद्रुम “दुर्द्रुम” ये २ हरे प्याज या कांदा के नाम हैं । महौषध, लशुन, “लशून” गृञ्जन, अरिष्ट, महाकन्द, रसोनक ये ६ लहसुन के नाम हैं ॥ १४८ ॥

स. स. न. न.
गदहपुञ्जा पुनर्नवा (तु) शोथघ्नी वितुन्नं सुनिषण्णकम् ।
विसखपरिया पु. पु. स. स.
पटसन या स्याद्वातकः शीतलोऽपराजिता शणपण्यं (पि) ॥ १४९ ॥
पटुआ

पुनर्नवा, शोथघ्नी ये २ गदहपुञ्जा के नाम हैं । वितुन्न, सुनिषण्णक ये २ विसखपरिया के नाम हैं । वातक, शीतल, “शीतलवातक” अपराजिता, शणपण्यं, “अशनपण्यं, असनपण्यं, आसनपण्यं” ये ४ पटसन या पटुआ के नाम हैं ॥ १४९ ॥

स. स. स. स. स.
मालकांगनी पारावताङ्घ्रिः कटभी पणया ज्योतिष्मती लता ।
चिरायता के न. स. स. स.
बीज वार्षिकं त्रायमाणा (स्यात्) त्रायन्ती बलभद्रिका ॥ १५० ॥

पारावताङ्घ्रि, कटभी, पणया, “पणया” ज्योतिष्मती, लता ये ५ मालकांगनी के नाम हैं । वार्षिक, त्रायमाणा, त्रायन्ती, बलभद्रिका ये ४ त्रायमाणा या चिरायताबीज के नाम हैं ॥ १५० ॥

स. स. स. स.
विलाईकन्द विष्वक्सेनप्रिया गृष्टिर्वाही बदरेति (च) ।
भैंगरा, काकजंघा पु. पु. स. स.
या काकमाची मार्कवो भृङ्गराजः (स्यात्) काकमाची (तु) वायसी १५१ ॥

विष्वक्सेनप्रिया, गृष्टि, “गृष्टि” वाराही, बदरा ये ४ वाराहीकन्द या विलाईकन्द के नाम हैं । मार्कव, “मार्कर” “भृङ्गराज, भृङ्गराजा, भृङ्गरजः” “सुजागर” ये २ भृङ्गराज (भैंगरा) के नाम हैं । काकमाची, वायसी ये २ काकमाची या काकप्रिया या कौवाहाड़ीगोड़ी के नाम हैं ॥ १५१ ॥

स. स. स. स.
सौंफ शतपुष्पा सितच्छत्राऽतिच्छत्रा मधुरा मिसिः ।
आकारावेलि स. स. स. स.
बैवरि या अवाक्पुष्पी कारवी (च) सरणा (तु) प्रसारिणी ॥ १५२ ॥
स. स. स.

लता विशेष (तस्यां) कटंभरा राजबला भद्रबलै (ति च) ।

शतपुष्पा, सितच्छत्रा, अतिच्छत्रा, मधुरा, मिसि, “मिशि, मिषि” अवाक्पुष्पी, कारवी ये ७ सौंफ के नाम हैं । सरणा, सरणी, प्रसारिणी, प्रसारणी,

सारिणी, सारणी, कटम्भरा, राजबला, भद्रबला ये ५ कुब्जप्रसारिणी या चांद-
बेल या पसारनि के नाम हैं ॥ १५२ । ३ ॥

स. स. स. स. स.
चकवत ना- जनी जतूका रजनी जातुकुचक्रवर्तिनी ॥ १५३ ॥

मक औषध स. स. स. स.
कचूर या संस्पर्शा(थ) शटी गन्धमूली षड्ग्रन्थिकेत्यपि ।

आंबाहल्दी पु. पु. पु. पु.
करेला कर्चूरो(पि) पलाशो(थ) कारवेल्लः कटिल्लकः ॥ १५४ ॥

स. न. पु. पु. पु.
परवर सुषवी(चाथ) कुलकं पटोलस्तिक्तकः पटुः ।

जनी, जनि, जतूका, “जतुका,” रजनी, “जननी” जतुकुच, चक्रवर्तिनी, सं-
स्पर्शा ये ६ चकवतनामक औषधी के नाम हैं । शटी, शठी, सटी, षटी, गन्धमूली,
“गन्धमूला, गन्धशटी,” षड्ग्रन्थिका, कर्चूर, “कर्बूर, कर्बुर” पलाश ये ५ छोटे
कचूर या आंबाहल्दी के नाम हैं । कारवेल्ल, कटिल्लक, कठिल्लक, सुषवी, “सु-
सवी, सुशवी,” ये ३ करेला के नाम हैं । कुलक, कूलक, पटोल, तिक्तक, पटु ये ४
परवर या परोरा के नाम हैं ॥ १५३ । १५४ । ३ ॥

पु. पु. पु.स. स.
कुम्हड़ा ककड़ी कूष्माण्डक (स्तु) कर्कारुरीर्वारुः कर्कटी (स्त्रियौ) १५५ ॥

कड़ईलौकी स. स. स. स.
लौकी जेठऊ इक्ष्वाकुः कटुतुम्बी (स्यात्) तुम्ब्यलाबू (रुमे समे) ।

ककड़ी स. स. स. स. स.
इन्द्रायनि चित्रा गवाक्षी गोडुम्बा विशाला (स्त्रि) इन्द्रवारुणी १५६ ॥

कूष्माण्डक, कुष्माण्डक, कूष्माण्ड, कर्कारु ये २ कुम्हड़ा या गंगाफल के
नाम हैं । ईर्वारु, ईवारु, “ईर्वालु, उर्वारु,” एर्वारु, कर्कटी ये २ ककड़ी के नाम हैं ।
ये दोनों स्त्रीलिङ्ग में रहते हैं । इक्ष्वाकु, कटुतुम्बी ये २ कड़ई लौकी के नाम हैं ।
तुम्बी, तुम्बि, अलाबू, “अलाबु, आलाबु, लाबु” ये दोनों समानार्थक होकर
समानलिङ्ग कहते हैं ये २ लौकी के नाम हैं । चित्रा, गवाक्षी, गोडुम्बा ये ३ जेठऊ
ककड़ी के नाम हैं “दशाङ्गुलं तु खर्वूजं” दशाङ्गुल, खर्वूज ये २ खर्वूजा के नाम हैं ।
विशाला, इन्द्रवारुणी ये २ इन्द्रारुणि या इन्द्रायनि के नाम हैं ॥ १५५ । १५६ ॥

१ “रज्जेः क्युन्” (उ. २ । ७६) इति क्युनि कित्वात्रलोपः गौरादित्वान्डीप्-इति बोध्यम् ॥

२ कारोवधे निश्चये च बलौयले यतावपि । तुषारशौलेपि पुमान् स्त्रियां दूयां प्रसेवके । सुवर्षकति-
१ च बन्धनसारबन्धयोः (इति मेदिनी) ॥

जिर्मिकन्द या अशोन्नः सूरणः कन्दो गण्डीर (स्तु) समष्टिला ।

सूरन गांडरि कलम्ब्युपोदिका (स्त्री तु) मूलकं हिलमोचिका १५७ ॥

अशोन्न, शूरण, “सूरण” कन्द ये ३ सूरण या जिर्मिकन्द के नाम हैं । गण्डीर, समष्टिला ये २ गांडरि या गँडरी साग के नाम हैं । कलम्बी, “कलम्बू, कलम्ब” यह १ कर्मुवा साग का नाम है । उपोदिका, “उत्पादिका, उपोदकी, अपोदिका, पोतकी, पोतिका, पूतिका” यह १ पोई का नाम है । मूलक यह १ मूली का नाम है । हिलमोचिका यह १ हिलसा या (हुलहुल) साग का नाम है ॥ १५७ ॥

बथुई या क- न- स- स-
लम्बी आदि- वास्तूकं (शाकभेदाःस्यु) दूर्वा (तु) शतपर्विका ।

पांच शाकों के भेद सहस्रवीर्या भार्गव्यौ रुहानन्ता (थसासिता) ॥१५८॥

दूव स- स- स- स-
उजली दूव गोलोमी शतवीर्या (च) गण्डाली शकुलाक्षकः ।

वास्तूक, ‘वास्तूक’ यह १ बथुवा या बथुई का नाम है, ये कलम्बी आदि पांच शाकों के भेद होते हैं । दूर्वा, शतपर्विका, “शतपर्विका” सहस्रवीर्या, भार्गवी, रुहा, अनन्ता ये ६ दूव के नाम हैं और यदि वह दूव सफेद हो तो गोलोमी, शतवीर्या, गण्डाली, शकुलाक्षक ये ४ उजली दूव के नाम हैं ॥ १५८ । ३ ॥

मोथा नागर- पु- पु- स- पु- न-
मोथा या कुरुविन्दो मेघनामा मुस्तामस्तक(मस्त्रियाम्) ॥१५९॥

पु- स- स- स- स-
निर्विषी घास (स्यान्न) द्रमुस्तको गुन्द्रा चूडाला चक्रलोच्चटा ।

कुरुविन्द, मेघनामा, मुस्ता, मुस्तक ये ४ मोथा के नाम हैं इनमें “मुस्तक” स्त्रीलिङ्ग नहीं है वरन पुंलिङ्ग व नपुंसक में रहता है । भद्रमुस्तक, “भद्र” गुन्द्रा ये २ नागरमोथा या भद्रमोथा के नाम हैं । चूडाला, चक्रला, उच्चटा ये ३ मोथा-विशेष या निर्विषी घास के नाम हैं ॥ १५९ । ३ ॥

पु- पु- पु- पु- पु-
कांस वंशे त्वक्सारकर्मारत्वचिसारतृणध्वजाः ॥ १६० ॥

पु- पु- पु- पु- पु-
शतपर्वा यवफलो वेणुमस्करतेजनाः ।

१ “मण्डूकपर्णी पालङ्क्या चिल्लिका चाप्यपोदिका । चाङ्गेरी हिलमोचा च कलम्बी शाकजातयः” (इति माला) ॥

वंश, त्वक्सार, कर्मार, त्वचिसार, तृणाध्वज, शतपर्वा, यवफल, वेणु, मस्कर, तेजन ये १० बांस के नाम हैं इनमें वंश शब्द “वंशो वेणौ कुले वर्गे पृष्ठाद्यवयवेपि च” (इति विश्वः) इस कोष के प्रमाण से बांस, कुल, वर्ग व पीठ आदि के अवयव में भी रहता है ॥ १६० । ३ ॥

हवासे बजने पु.

वाले बांस गांठिवेणवः कीचका (स्ते स्युर्ये स्वनन्त्यनिलोद्धताः) ॥ १६१ ॥

या पोर रामसर, पु.

न. न.

पु.

पु.

पु.

सरकण्डा या सरई ग्रन्थि (नर्) पर्वपरुषी गुन्द्रस्तेजनकः शरः ।

जो बांस हवा से ताड़ित या चालित होते हुए चीकते हैं वे “ कीचक ” कहते हैं यहां बहुत्व से बहुवचन है यह १ हवासे बजते बांस का नाम है । ग्रन्थि, पर्व (न) परुष, “ परु ” ये ३ गांठि या पोर के नाम हैं । इनमें ग्रन्थि पुल्लिङ्ग है और उकारान्त परु भी पुल्लिङ्ग में रहता है । गुन्द्र, तेजनक, शर “ सर ” ये ३ रामसर, सरहरी, सरकण्डा या सरई के नाम हैं ॥ १६१ । ३ ॥

पु.

पु.

पु.

पु.न.

नरकुल या नरई

काश या कास

बगई या वेद

ईख या ऊँख

पौड़ा

काला पौड़ा

नडस्तु धमनः पोटगलो (ज्यो) काश (मस्त्रियाम्) ॥ १६२ ॥

स.

पु.

पु.

इक्षुगन्धा. पोटगलः (पुंभूमनि तु) वल्वजाः ।

पु.

पु.

रसाल इक्षु (स्तद्भेदोः) पुण्ड्रकान्तारकादयः ॥ १६३ ॥

नड, “ नल ” धमन, पोटगल ये ३ नरकुल या नरई के नाम हैं । काश, “ कास ” इक्षुगन्धा, पोटगल ये ३ काश के नाम हैं इनमें काशशब्द स्त्रीलिङ्ग नहीं है बरन पुंनपुंसक में रहता है । वल्वज यह १ बगई या वेद या तृणविशेष (बाइ) का नाम है यह पुल्लिङ्ग में बहुवचनान्त है और (एको वल्वजः १ । २ । ४५) । इस सूत्र में भाष्यकार के वचन से एकवचनान्त भी पाया जाता है । रसाल, इक्षु ये २ ऊख या ईख के नाम हैं । पुण्ड्र, “ पौण्ड्र ” यह १ पौड़ा का नाम है । कान्तार यह १ केतारा यः काले गन्ना का नाम है आदि शब्द से कोषकार आदिकों का ग्रहण किया जाता है ये ईख के भेद कहाते हैं ॥ १६२ । १६३ ॥

१ सकीचकैर्मांसतपूर्थरन्ध्रैरिति (रघुवंशकाव्ये) ॥

२ “ पौण्ड्रको भीवकश्चैव वंशकः शतपोरकः । कान्तारस्तापसेक्षुश्च काण्डेक्षुः सृषिपत्रकः । नैपालो दीर्घपत्रश्च नीलपोसेथ कोषकः । इतिता जातयस्तेषां कथयामि गुणानपीति (भावप्रकाशः) ॥

गांडर न. न. पु. न. (स्या) वीरणं वीरतरं (मूलेऽस्योशीरमस्त्रियाम्) ।

खस न. न. न. न. न. अभयं नलदं सेव्यममृणालं जलाशयम् ॥ १६४ ॥

लामज्जकं लघुलयमवदाहेष्टकापथे ।

वीरण, वीरतर ये २ गांडर के नाम हैं इसकी मूल में उशीर, “उपीर” अभय, नलद, सेव्य, अमृणाल, “मृणाल,” जलाशय, लामज्जक, लघु, लय, लघुलय, अवदाह, “अवदान, अवदाहेष्ट, कापथ,” “इष्टकापथ” ये १० गांडर की जड़ “खस” के नाम हैं इनमें उशीर खिलिङ्ग नहीं बरन पुंनपुंसकमें रहता है ॥ १६४ ॥

तृणजातियां न. स. स. ‘नलादय’ स्तृणं गर्मुच्छ्रयामाकप्रमुखा(अपि) ॥ १६५ ॥

कुश या डाम न. पु. पु. न. न. (अस्त्री) कुशं कुथो दर्भः पवित्र (मथ) कतृणम् ।

सुगन्धतृण न. न. न. न. न. पौरसौगन्धिकध्यामदेवजग्धकरौहिषम् ॥ १६६ ॥

नल आदि या नड आदि तृण की जातियां कहाती हैं और जो गर्मुत्-श्यामाक “सांवां” आदि हैं वे भी तृणधान्यविशेष हैं, प्रमुख शब्द से वक्ष्यमाण कुशआदि व कोदव आदि हैं वे भी तृणजाति हैं यहां पर प्रमुख शब्द से “नीवार” आदि मुनि आज्ञा का ग्रहण करना चाहिये नहीं तो कोदव आदिकों का हृदियत्व होजायगा यह १ नडादि, गर्मुत्, श्यामा आदिकों का नाम है । कुश, कुथ, दर्भ, पवित्र ये ४ कुश या डाम के नाम हैं । कतृण, पौर, सौगन्धिक, ध्याम, देवजग्धक, रौहिष ये ६ सौधियातृण या तृणविशेष के नाम हैं ॥ १६५ । १६६ ॥

पानी के तृण स. पु. पु. न. न. छत्रातिच्छत्रपालघ्नौ मालातृणकभूस्तृणे ।

या खर न. न. पु. न. न. शष्पं बालतृणं घासो यवासं तृणमर्जुनम् ॥ १६७ ॥

छत्रा, अतिच्छत्र, पालघ्न ये ३ जल से उपजे तृणविशेष के नाम हैं । माला-तृणक, मालातृण, भूस्तृण ये २ तृणविशेष के नाम हैं अथवा स्वामी के मत में ये ५ खरविशेष के नाम हैं । शष्प, बालतृण ये २ नये तृण या खर के नाम हैं । घास, यवास, “यबस” ये २ गौ आदि की भक्षणीय घास के नाम हैं । तृण, अर्जुन ये २ तृणमात्र के नाम हैं ॥ १६७ ॥

खरही या घूर ^{स.} ^{स.} (तृणानां संहति) स्तृण्या नड्या (तु नडसंहतिः) ।
 नरई का ढेर ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{स.}
 ताड़ वृक्ष ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{स.}
 नारियल तृणराजाह्वयस्तालो नालिकेर (स्तु) लाङ्गली ॥ १६८ ॥

तृणों के समूह को “ तृण्या ” कहते हैं यह १ तृणासमुदाय या खरही या घूर का नाम है । नलों या नडों के समुदाय को “ नड्या ” कहते हैं यह १ नड-समूह या नरई आदि के ढेर का नाम है । तृणराज, ताल, “ तल ” ये २ ताड़ वृक्ष के नाम हैं । नालिकेर, “ नारिकेल, नाड़िकेल, नारीकेल, नारिकेली, नारिकेली ” लाङ्गली (लिन) ये २ नारियर के नाम हैं इनमें लाङ्गलीशब्द स्त्रीलिङ्ग व पुलिङ्ग है ॥ १६८ ॥

^{स.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}
 सुपारी सुपारी घोण्टा तु पूगः क्रमुको गुवाकः खपुरो (ऽस्य तु) ।

^{न.} ^{पु.}
 का फल खजूर (फल) मुद्गेगमेते च हिन्तालसहितास्त्रयः) ॥

^{पु.} ^{पु.स.} ^{स.} ^{स.} ^{पु.}
 केतकीवृक्ष ताल खर्जूरः केतकी ताली खर्जूरी (च) तृणाद्रुमाः ॥ १६९ ॥
 भेद वनखजूरी

इति वनौषधिवर्गः ॥

घोण्टा, पूग, क्रमुक, गुवाक, “गूवाक,” खपुर ये ५ सुपारी के नाम हैं और इसके फल को “ उद्गेग ” कहते हैं यह १ सुपारी के फल का नाम है । ये नालिकेर आदि तीन चौथे हिन्ताल समेत और खर्जूर आदि चार ये आठ तृणजातीय वृक्ष कहते हैं । “हिन्ताल” यह १ छोटे ताड़ वृक्ष का नाम है । “खर्जूर” यह १ खजूर का नाम है । “ केतकी ” यह १ केतकीवृक्ष का नाम है । ताली, “तालि, ताड़ी, ताडि ” यह १ ताड़भेद का नाम है । खर्जूरी यह १ वनखजूरी का नाम है ॥ १६९ ॥

इति वनौषधिवर्गविवरणम् ॥

अथ सिंहवर्गो व्याख्यायते ॥

^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}
 सिंह बाघ सिंहो मृगेन्द्रः पञ्चास्यो हर्यक्षः केसरी हरिः ।

^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}
 भीता शार्दूलद्वीपिनौव्याघ्रे तरक्षस्तु मृगादनः ॥ १ ॥

सिंह, मृगेन्द्र, पञ्चास्य, हर्यक्ष, केसरी, केशरी (रिम्) हरि “कण्ठीरव, मृगरिपु, मृगदृष्टि, मृगाशन” ये ६ सिंह के नाम हैं । शार्दूल, द्वीपी, व्याघ्र ये ३ बाघ

के नाम हैं । तरक्षु, मृगादन ये २ तेंदुवा, चीता या हुँडार के नाम हैं ॥ १ ॥

सूअर ^{पु.} वराहः ^{पु.} शूकरो ^{पु.} घृष्टिः ^{पु.} कोलः ^{पु.} पोत्री ^{पु.} किरः ^{पु.} किटिः ।

^{पु.} दंष्ट्री ^{पु.} घोणी ^{पु.} स्तब्धरोमा ^{पु.} क्रोडो ^{पु.} भूदार (इत्यपि) ॥ २ ॥

वराह, सूकर, “शूकर” घृष्टि “गृष्टि” कोल, पोत्री, (त्रिन्) किर, “किरि” किटि, दंष्ट्री, (ष्ट्रिन्) घोणी, (गिन्) स्तब्धरोमा, (मन्) क्रोड, भूदार ये १२ सूअर के नाम हैं ॥ २ ॥

^{पु.} वानर ^{पु.} यावन्दर ^{पु.} कपि ^{पु.} स्रवंग ^{पु.} स्रवंगम ^{पु.} शाखा ^{पु.} मृग ^{पु.} बली ^{पु.} मुखाः ।

मालू ^{पु.} मर्कटो ^{पु.} वानरः ^{पु.} कीशो ^{पु.} वनौका ^{पु.} (अथ) भल्लुके ॥ ३ ॥

गैडा ^{पु.} अक्षा ^{पु.} च्छ ^{पु.} भल्ल ^{पु.} भालू ^{पु.} का ^{पु.} गण्डके ^{पु.} खड्ग ^{पु.} खड्गिनौ ।

कपि, स्रवंग, स्रवंगम, स्रवंग, शाखा मृग, बलीमुख, मर्कट, वानर, कीश, वनौका ये ६ वानर के नाम हैं । भल्लुक, भल्लूक, भाल्लुक, भाल्लूक, भ्रूक्ष, अक्ष भल्ल, “भल्लः स्यात्पुंसि भल्लूके शस्त्रभेदे तु न द्वयोः । भल्लातक्यां स्त्रियां भल्लीति ” (मेदिनी) भालूक ये ४ भालू के नाम हैं । गण्डक, खड्ग, खड्गी ये ३ गैडा के नाम हैं ॥ ३ । १ ॥

भैंसा ^{पु.} लुला ^{पु.} पो ^{पु.} महिषो ^{पु.} वाह ^{पु.} द्विषत्का ^{पु.} सरसैरिभाः ॥ ४ ॥

(स्त्रियां) ^{पु.} शिवा ^{पु.} भूरिमाय ^{पु.} गोमायु ^{पु.} मृगधूर्तकाः ।

सियार ^{पु.} सृगाल ^{पु.} वञ्चक ^{पु.} क्रोष्टु ^{पु.} फेरु ^{पु.} फेरव ^{पु.} जम्बुकाः ॥ ५ ॥

लुलाप, “लुलाय” महिष, “महिषी” वाहद्विषन्, कासर, सैरिभ ये ५ भैंसा के नाम हैं । शिवा, भूरिमाय, गोमायु, मृगधूर्तक, सृगाल, शृगाल, वञ्चक, क्रोष्टा, क्रोष्ट्री, फेरु, फेरव, जम्बुक, जम्बूक ये १० सियार या गीदड़ के नाम हैं इनमें

१ संघातविपृहीतनाम, “अक्षः स्फटिकभल्लूकनिर्मलेष्वक्षमव्ययम् । आभिमुख्ये” (इति मेदिनी) ॥
अक्षभल्लपरिषद्विहरन्तीत्यभिनन्दः ॥ २ खुरविधुतधरित्री चित्रकायो लुलायः इति ॥

३ “तालव्या अपि दन्त्याश्च शम्भशम्बरशकराः । रशनापि च जिह्वायां शृगालः कलशेपि च ” (इति शभेदः) ॥

“ शिवः कीलः शिवा क्रोष्टा भवेदामलकी शिवा ” इस शाश्वतकोष के प्रमाण से
 “ शिवा ” स्त्रीलिङ्ग है ॥ ४ । ५ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
 विलार गोह ओतुर्विडालो मार्जारो वृषदंशक आखुभुक् ।

पु. पु. पु.
 विसखोपड़ा (त्रयो) गौधारगौधेरगौधेया (गोधिकात्मजे) ॥ ६ ॥

ओतु, विडाल, “ विलाल, विगल,” मार्जार, वृषदंशक, आखुभुक् ये ५ विलार
 या विल्ली के नाम हैं । गौधार, गौधेर, गौधेय ये ३ गोहके बच्चे या चन्दनगोह या
 विसखोपड़ा के नाम हैं ॥ ६ ॥

साही साही पु. पु. स. न. न.
 के लोम श्वावित्तु शल्य (स्तल्लोम्नि) शलली शललं शलम् ।
 वातचारी मृग पु. पु. पु. पु. पु.

भेड़िया या बीग वातप्रमीर्वातमृगः कोक ईहामृगो वृकः ॥ ७ ॥

श्वावित्तु शल्य ये २ साही या सेही के नाम हैं । उसके लोम में शलली, श-
 लल, शल ये तीनों होते हैं ये ३ साही लोम के नाम हैं । वातप्रमी, वातमृग ये २
 हवा के सामने दौड़नेवाले हिरन के नाम हैं । इनमें वातप्रमी पुंलिङ्ग व स्त्रीलिङ्ग
 भी है । कोक, ईहामृग, वृक ये ३ भेड़िया या भ्यड़हा या बीगके नाम हैं ॥ ७ ॥

हरिण हरिणी पु. पु. पु. पु. पु.
 के चाम आदिमृगे कुरङ्गवातायुहरिणाजिनयोनयः ।

हरिण के चाम पु.स.न. पु.स.न.

आदि ऐणोयमेणयाश्चर्माद्यमेणस्यैण (मुभे त्रिषु) ॥ ८ ॥

मृग, कुरङ्ग, वातायु “ वानायु ” हरिण, अजिनयोनि ये ५ हरिण के नाम हैं ।
 हरिणी क चाम, हड्डी व मांस आदिको “ ऐणोय ” कहते हैं यह १ हिरनी के चाम
 आदिका नाम है और हिरन के चाम आदिको “ ऐण ” कहते हैं ये दोनों ऐणोय,
 ऐण तीनों लिङ्ग में रहते हैं यह १ हिरन के चाम आदि का नाम है ॥ ८ ॥

स. स. पु. पु. पु.
 हरिणों के कर्दली कन्दली चीनश्चमूरुप्रियकावपि ।

भेद समूरु(श्चेति हरिणा अमी अजिनयोनयः) ॥ ९ ॥

कदली, कन्दली, चीन, चमूरु, प्रियक, समूरु ये ६ हरिणों के भेद “ अजिन-

१ रम्भावृक्ष च कदली पताकामृगभेदयोरिति (लान्तेषु भेदिनी) ॥

२ चीनी देशांशुकवीहिभेदे तन्तो मृगान्तरे (इति भेदिनी) ॥

योनि” कहाते हैं अथवा ये ६ हरिण और वक्ष्यमाण कृष्णसार आदि “अजिनयो-
नयः” कहलाते हैं क्योंकि ये चाम में उपकारी होते हैं ॥ ६ ॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु.

मृगभेद कृष्णसाररुन्यङ्कुरङ्कुशंवररौहिषाः ।

पु. पु. पु. पु. पु. पु.

गोकर्णपृषतैर्गर्शरोहिताश्रमरो (मृगाः) ॥ १० ॥

कृष्णसार, “कृष्णशार” रू, न्यङ्कुर, रङ्कु, शंवर “संवर” रौहिष, रौहिट् (ष्)
गोकर्ण, पृषत, “पृषत्, पृषती” ऐश, ऋश्य, “ऋष्य, रिष्य” रोहित, “ रोहित् ”
लोहित, चमर ये १२ मृगभेद के नाम हैं ॥ १० ॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु.

मृग वा हरिण गन्धर्वः शरभो रामः सृमरो गवयः शशः ।

भेद पशुजाति (इत्यादयो मृगेन्द्राद्या गवाद्याः) पशुजातयः ॥ ११ ॥

गन्धर्व, शरभ, “सरभ” राम, सृमर, गवय, शश ये ६ हरिणभेद के नाम हैं
इनमें “गन्धर्व” यह गन्धर्वशिष्ट मृग का नाम है । “शरभ” यह लड़ीसरा या वानर
विशेष का नाम है । “राम” यह रमणीयरूप मृगभेदका नाम है । “सृमर” यह
भागनेवाले मृगका नाम है । “गवय” यह नीलगाह या वनगैयाका नाम है । “शश”
यह खरहा का नाम है इत्यादि व मृगेन्द्रादि व गवादि ये पशुजातियां कहातीहैं यानी
सिंह आदि चमर पर्यन्त जो शब्द व वक्ष्यमाण गवय, गो, मेढ़ा, हाथी, घोड़ा
आदि शब्द हैं वे समस्त पशुशब्दवाच्य हैं ॥ ११ ॥

पु. पु. पु. स. स.

मूसा या चूहा, उन्दुरुर्मूषिकोऽप्याखुर्गिरिका बालमूषिका ।

छोटे चूहे, पु. पु. स. स.
गिरगिट

सरटः कृकलासः स्यान्मुशली गृहगोधिका ॥ १२ ॥

उन्दुरु, “उन्दुर” मूषिक “मूषक, मूषी” आखु ये ३ मूसे या चूहे के नाम हैं ।
गिरिका, बालमूषिका ये २ छोटे जाति के चूहे या मुसरियों के नाम हैं । सरट,
“सरट्-शरट्” कृकलास या कृकुलास ये २ गिरगिट “गिरगिटान” के नाम हैं ।
मुसली, “मुशली-मुषली” गृहगोधिका “गृहगोधा, गृहालिका ” ये २ छिपकली
या बिस्तुइया के नाम हैं ॥ १२ ॥

स. पु. पु. पु.

मकड़ी लूता (ली) तन्तुवायोर्णनाभमर्कटकाः (समाः) ।

छोटे कीड़े पु. स. स.

लनलज्जर नीलङ्ग(स्तु)क्रिमिः कर्णजलौकाः शतपशुभे ॥ १३ ॥

लूता, तन्तुवाय “तन्त्रवाय” ऊर्णनाभ, “ऊर्णनाभि” मर्कटक ये ४ मकड़ी के नाम हैं । इनमें लूता खीलिङ्ग है और तन्तुवाय आदि तीनों समानार्थक होकर समान-लिङ्ग कहाते हैं । नीलङ्ग, “नीलाङ्ग” किमि या कृमि ये २ सोनकीड़ा या छोटे कीड़े के नाम हैं । कर्णजलौकाः (कस्) शतपदी ये २ गोजर या खनखजूर के नाम हैं ये दोनों खीलिङ्ग हैं ॥ १३ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
कीड़े, बीबी, वृश्चिकः शूककीटः स्यादलिद्रुणौ (तु) वृश्चिके ।
परेवा पु. पु. पु. पु.

बाज पारावतः कलरवः कपोतो (ऽथ) शशादनः ॥ १४ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
उल्लू, भईल, पत्त्री श्येन उलूके तु वायसारातिपेचकौ ।

पु. पु. पु. पु.
खँडरैचा व्याघ्राटः (स्याद्) रद्वाजः खञ्जरीट (स्तु) खञ्जनः ॥ १५ ॥

वृश्चिक, शूककीट ये २ उनके खानेवाले कीड़े या केचुआ के नाम हैं । अलि, अली, “आलि, आली” दुग्ण “द्रोण” वृश्चिक ये ३ बिच्छू या बीछी के नाम हैं । इनमें आलि इदन्त व इन्नन्त भी है । पारावत, “पारापत” कलरव, कपोत ये ३ कबूतर या जङ्गली कबूतर के नाम हैं । शशादन, पत्त्री, श्येन ये ३ बाज (शिकरा) के नाम हैं । उलूक, वायसाराति, पेचक ये ३ उल्लू या घुघू के नाम हैं । व्याघ्राट, भरद्वाज और भारद्वाजभी ये २ लवा या भईल के नाम हैं और खञ्जरीट, खञ्जन ये २ खँडरैचा के नाम हैं ॥ १४ । १५ ॥

पु. पु. पु. पु.
उजली चील्ह लोहपृष्ठ(स्तु) कङ्कः (स्यादथ) चाषः किकीदिविः ।
नीलकण्ठ

पु. पु. पु. पु.
भुजंगा कलिङ्गभृङ्गधूम्याटा (अथ) स्याच्छतपत्रकः ॥ १६ ॥

पु. पु. पु. पु.
कठफोरवा दार्वाघाटो (थ) शारङ्गः स्तोककश्चातकः (समाः) ।
पर्याहा

पु. पु. पु. पु.
धर्मा कृकवाकुस्ताम्रचूडः कुकुटश्चरणायुधः ॥ १७ ॥

लोहपृष्ठ, कङ्क ये २ उजली चील्ह के नाम हैं । चाष, ‘चार’ किकीदिवि, ‘किकि-दिवि’ ‘किकीदिव’ ये २ नीलकण्ठ के नाम हैं । कलिङ्ग, भृङ्ग, धूम्याट ये ३

१ अथ शक्राख्यो दिवान्धो वक्रनासिकः । हरिनेत्रो दिवाभीतो नखाशीपीयुषधैरौ । काकभीर्नक्तचारी (इति त्रिकाण्डशेषः) ॥

भुजेटा या भुजेंगा के नाम हैं । शतपत्रक, दारवाघाट ये २ कठफोरवा के नाम हैं । शारङ्ग, “ सारङ्ग ” स्तोकक, चातक ये ३ पपीहा के नाम हैं और कृकवाकु, ताम्र-चूड, कुकुट, चरणायुध ये ४ मुर्गा के नाम हैं ॥ १६ । १७ ॥

गर्गोवा, गर्गैया ^{पु.} चटकः ^{पु.} कलविङ्कः ^{स.} “ स्या ” “ तस्य स्त्री ” चटका (तयोः) ।

बच्चा, बच्ची ^{पु.} (पुमपत्ये) चाटकैरः ^{स.} (स्त्र्यपत्ये) चटकैव (हि) ॥ १८ ॥

चटक, कलविङ्क ये २ गर्गोवा “ घल्लपक्षी ” के नाम हैं । उसकी स्त्रीको “ चटका ” कहते हैं यह १ गर्गैया का नाम है । उन दोनों का बच्चा “ चाटकैर ” कहाता है और उनकी बच्ची को “ चटका ” कहते हैं यह १ छोटी गर्गैया का नाम है ॥ १८ ॥

कौडिला ^{पु.स.} कर्करेटुः ^{पु.} करेटुः ^{पु.} (स्यात्) कृकणकरौ ^{पु.} (समौ) ।

मुआचिड़ी ^{पु.} वनप्रियः ^{पु.} परभृतः ^{पु.} कोकिलः ^{पु.} पिकं (इत्यपि) ॥ १९ ॥

कर्करेटु, “ कर्करेटु ” करेटु, “ करटु ” ये २ अशुभभाषी पक्षी या देशान्तरीय सारस या कौडिला के नाम हैं । कृकण, करक ये २ तीतरविशेष या मुआचिरई के नाम हैं ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं और वनप्रिय, परभृत, कोकिल, पिक ये ४ कोकिला या कोयल के नाम हैं ॥ १९ ॥

कौवा ^{पु.} काँके (तु) ^{पु.} करटारिष्टबलिपुष्टसकृत्प्रजाः ^{पु.} ।

^{पु.} ध्वाङ्क्षात्मघोषपरभृद्वलिभुग्वायसा (अपि) ॥ २० ॥

काक, करट, अरिष्ट, बलिपुष्ट, सकृत्प्रज, ध्वाक्ष, आत्मघोष, परभृत, बलिभुक् और वायस ये १० कौवा के नाम हैं और अपि शब्द से “ चिरञ्जीवी, एकदृष्टि, मौकुलि या मौकली ये भी ३ कौवा के नाम हैं ॥ २० ॥

वनकौवा ^{पु.} द्रोणकाक ^{पु.} ‘ स्तु ’ काकोलो ^{पु.} दात्यूहः ^{पु.} कालकण्ठकः ।

काला कौवा ^{पु.} आतायिचिल्लौ ^{पु.} दाक्षाय्यगृध्रौ ^{पु.} कीरशुकौ ^{पु. पु.} (समौ) ॥ २१ ॥

चील,
गोध, मुआ

द्रोणकाक, “द्रोण”काकोल ये २ वनकौवा या डोमकौवा के नाम हैं। दात्यूह, कालकयठक ये २ कालेकौवा या जलकौवा के नाम हैं। आतायी “आतापी” चिल्लये २ चील्ह के नाम हैं। दाक्षाय्य, गृध ये २ गीध के नाम हैं और कीर, शुक्र ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ सुभ्रा के नाम हैं आतायी से लेकर शुक्रपर्यन्त तीनों में ‘समौ’ इस पदकी योजना करना चाहिये ॥२१॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु.
कराकुल, कुङ् कुञ्चो (थ) वकः कहः पुष्कराहस्तु सारसः ।
बगला, पु. पु. पु. पु.
सारस, कोकश्चक्रश्चक्रवाको रथाङ्गाह्वयनामकः ॥ २२ ॥
चक्रवाक

कुङ्, कुञ्च, कुञ्चः, कुञ्चा ये २ कराकुल के नाम हैं। वक, कह ये २ बगुला के नाम हैं। पुष्कराह, सारस ये २ सारस के नाम हैं। कोक “कुक्” चक्र, चक्रवाक, रथाङ्ग ये ४ चक्रवाक या चक्रवा चकई के नाम हैं यानी रथाङ्गचक्र के नाम वाले कहाते हैं ॥ २२ ॥

पु. पु. पु. पु.
वत्सल, कादम्बः कलहंसः स्यादुत्क्रोशकुररौ (समौ) ।
कुररी पु. पु. पु.
हंस हंसा (स्तु) श्वेतगरुतश्चक्राङ्गा मानसौकसः ॥ २३ ॥

कादम्ब, कलहंस ये २ वत्सल के नाम हैं। उत्क्रोश, कुरर “कुररी” ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ कुररी के नाम हैं और हंस, श्वेतगरुत, चक्राङ्ग, मानसौकस् ये ४ हंस के नाम हैं ये बहुत्व की विवक्षा में बहुवचनान्त हैं ॥२३॥

पु.
राजहंस, राजहंसा (स्तु ते चञ्चुचरणैर्लोहितैः सिताः) ।
हंसभेद, पु. पु.
हंसविशेष (मलिनैर्मल्लिका(ख्यास्ते)धार्तराष्ट्राः(सितेतरैः))॥२४॥

लालवर्णवाले चोंच समेत चरणों से उपलक्षित जो हंस वे ‘राजहंस’ कहाते हैं यह १ राजहंसों का नाम है। कुङ्केक धूमिल वर्णवाले चोंच समेत चरणों से उपलक्षित जो हंस वे मल्लिकनामवाले कहाते हैं यह १ हंसभेद का नाम है और जो काले चोंच समेत चरणों से उपलक्षित हंस वे ‘धार्तराष्ट्र’ कहाते हैं यह १ काले चरण व बोंचवाले हंसविशेष का नाम है ये बहुत्व की विवक्षा में बहुवचनान्त हैं ॥२४॥

स. स. स. स. स.
आषी शरारिराटिराडिश्च बलाकाविसकण्ठिका ।
बगुला भेद स. स.
हंसी हंसस्य योषिद्वरटा (सारसस्य तु) लक्ष्मणा ॥ २५ ॥
सारसी

शरारि, “शरालि, शराली, शराति, शराटि, शराडि” आटि, आटी, आडि, आडी ये ३ आडीनामक पक्षीविशेष या देशान्तरीय तीतर के नाम हैं । ये तीनों रत्नकोष के प्रमाण से खीलिङ्ग में रहते हैं । बलाका, विसकयिठका ये २ बगुला भेद के नाम हैं । हंस की स्त्री को “वरटा या वरटी” कहते हैं यह १ हंसी का नाम है और सारस की स्त्री को “लक्ष्मणा या लक्षणा” कहते हैं यह १ सारस की स्त्री का नाम है ॥ २५ ॥

चमगीदड़ी, स. स. स. स.
गीदड़, जतुकाऽजिनपत्रा ‘स्या’त्परोष्णी तैलपायिका ।
मक्खी स. स. स. स. स.
मधुमक्खी वर्वणा मक्षिका नीला सरघा मधुमक्षिका ॥ २६ ॥

जतुका “जतूका” अजिनपत्रा ये २ चमगीदड़ी या चमगूदरी पक्षिविशेष के नाम हैं । परोष्णी “परोष्ठी” तैलपायिका ये २ गीदड़ या पंखसमेत कीड़े के नाम हैं । वर्वणा ‘बर्वणा’ मक्षिका, नीला या नीली ये ३ नीलमक्खी के नाम हैं और सरघा, मधुमक्षिका ये २ शहदमक्खी के नाम हैं ॥ २६ ॥

पतङ्ग, स. स. पु. म.
वनमक्खी, पतङ्गिका पुत्तिका ‘स्या’दंश ‘स्तु’ वनमक्षिका ।
मसा, स. स. पु.स.
बरी, दंशी(तज्जातिरल्पा स्याद्)गन्धोली वरटा(द्वयोः)॥ २७॥

पतङ्गिका, पुत्तिका ये २ मधुमक्खी विशेष या पांखी के नाम हैं । दंश, वनमक्षिका ये २ वनमक्खी या डांस के नाम हैं । दंशी यह १ उन डांसों की जातिवाली छोटी मक्खी का नाम है या मसा का नाम है । गन्धोली, वरटा, वरटी, वरट ये २ बरों के नाम हैं इनमें “वरटा” खीलिङ्ग व पुंलिङ्ग में रहता है ॥ २७ ॥

स. स. स. स.
भीरु, भृङ्गारी चीरुका चीरी भिल्लिका (च समा इमाः) ।
फनिगा पु. पु. पु. पु.
जगन् (समौ) पतङ्गशलभौ खद्योतो ज्योतिरिङ्गणः ॥ २८ ॥

भृङ्गारी, चीरुका, भीरुका, भिल्लिका, भीरिका, भीरीका, चीरी, चीरिका, भिल्लिका, चिल्लिका ये चारों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये ४ भीरुगुर के नाम हैं । पतङ्ग, शलभ ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ दीपपतङ्ग या फनिगा के नाम हैं और खद्योत, ज्योतिरिङ्गण ये दो जुगन् के नाम हैं ॥ २८ ॥

भौरा ^{पु.} मधुव्रतो ^{पु.} मधुकरो ^{पु.} मधुलियमधुपालिनः । ^{पु.}

^{पु.} द्विरेफपुष्पलिङ् ^{पु.} भृङ्गषट्पदभ्रमरालयः ॥ २६ ॥ ^{पु.}

मधुव्रत, मधुकर, मधुलिङ्, मधुपा, अली, 'मधुपायी' द्विरेफ, पुष्पलिङ्, भृङ्ग, षट्पद, भ्रमर और अलि ये ११ भ्रमर (भौरा) के नाम हैं ॥ २६ ॥

मोर या ^{पु.} मयूरो ^{पु.} बर्हिणो ^{पु.} बर्ही ^{पु.} नीलकण्ठो ^{पु.} भुजङ्गमुक् । ^{पु.}

धुरैला ^{पु.} शिखावलः ^{पु.} शिखी ^{पु.} केकी ^{पु.} मेघनादानुलास्य (पि) ॥ ३० ॥ ^{पु.}

मयूर, बर्हिण, बर्ही (हिन्) नीलकण्ठ, भुजङ्गमुक् (ज्) शिखावल, शिखी (खिन्) केकी (किन्) मेघनादानुजासी (सिन्) ये ६ मयूर के नाम हैं ॥ ३० ॥

मोर की बोली स.

पु.

पु.

चन्द्रिका ^{पु.} केका (वाणी मयूरस्य) (समौ) चन्द्रकमेचकौ ।

चोटी

स.

स.

पु.

न. न.

पंख

शिखा चूडा शिखण्डश्च पिच्छबर्ह (नपुंसके) ॥ ३१ ॥

मोर की वाणी (बोली) को ' केका ' कहते हैं यह १ मोर की वाणी का नाम है । चन्द्रक, मेचक ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ मोरपङ्ख की चन्द्रिका के नाम हैं । शिखा, चूडा ये २ मोर की चोटी या शिखा के नाम हैं और शिखण्ड, पिच्छ, बर्ह ये ३ मोरपङ्ख के नाम हैं इनमें पिच्छ, बर्ह ये दोनों नपुंसक में रहते हैं ॥ ३१ ॥

पथिमात्र ^{पु.} खगे ^{पु.} विहंगविहगविहंगमविहायसः । ^{पु.}

^{पु.} शकुन्तिपक्षिशकुनिशकुन्तशकुनद्विजाः ॥ ३२ ॥ ^{पु.}

^{पु.} पतत्रिपत्रिपतगपतत्पत्ररथाण्डजाः । ^{पु.}

^{पु.} नगौको वाजिविकिरविविष्किरपतत्रयः ॥ ३३ ॥ ^{पु.}

^{पु.} नीडोद्भवा गरुत्मन्तः पित्सन्तो नभसंगमाः । ^{पु.}

खग, विहङ्ग, विहग, विहङ्गम, विहायाः (यस्) शकुन्ति, पक्षी (क्षिन्) शकुनि, शकुन्त, शकुम, द्विज, पतत्त्री, पत्त्री (त्रिन्) पतग, पतन् (तत्) पत्ररथ, अयडज, नगौकाः (कस्) वाजी (जिन्) विकिर, वि, विष्किर, पतत्रि, नीडोद्भव, गरुत्मान्, पित्सन् और नभसङ्गम ये २७ पक्षीमात्र के नाम हैं इनमें विहायस्, नगौकस् ये २ सान्त हैं शकुन्ति इकारान्त है, शकुन्त अकारान्त है, वि इकारान्त, पतत्त्री-पत्त्री इभन्त हैं, पतन्-पित्सन् ये शत्रन्त हैं ॥ ३२ । ३३ । ३४ ॥

हारिल, (तेषां विशेषा) हारीतो महुः कारण्डवः प्लवः ॥ ३४ ॥
 जलमुर्गा, पु. पु. पु. पु.
 वत्स, पु. पु. पु. पु.
 तीतर, वनमुर्गा, तित्तिरिः कुकुभो लावो जीवञ्जीवश्चकोरकः ।
 लवा, चकोर, पु. पु. पु. स.
 बटेर आदि कायष्टिकष्टिष्टिभको वर्तको वर्तिका (दयः) ॥ ३५ ॥

अब इन्होंके बीच विशेषभेदों को कहते हैं—‘हारीत’ यह १ हारिल का नाम है । मद्गु यह १ जलकौवा या जलमुर्गा का नाम है । कारण्डव, प्लव ये २ वत्स के नाम हैं इनमें कौवा के समान चोंच, दीर्घ पैरवाले काले पक्षी को ‘कारण्डव’ कहते हैं । तित्तिर या तित्तिरि यह १ तीतर का नाम है । कुकुभ यह १ वनमुर्गा का नाम है । लाव यह १ लवा पक्षी का नाम है । जिसके दर्शन से विष का बिनाश होता और जीव को जिलाता है इसलिये वह जीवञ्जीव कहाता है यह १ मोर-पंख के समान पंखवाले पक्षीविशेष का नाम है व अथवा जीवञ्जीव, चकोरक या कोरक ये २ चकोर पक्षी के नाम हैं । कायष्टिक, टिट्ठिभक, “ टिट्ठिभक ” ये २ टिट्ठरी के नाम हैं और वर्तक, वर्तका, वर्तिका ये २ बटेर के नाम हैं । आदि शब्द से सारिका व कपिखज आदि पक्षियों को जानना चाहिये ॥ ३४ । ३५ ॥

पु. पु. पु. न. न. न.
 पंख, पंख की गरुत्पक्षच्छदाः पत्रं पतत्रं (च) तनूरुहम् ।

स. न. स. स.
 जड़ चोंच (स्त्री) पक्षतिः पक्षमूलं चञ्चुत्रोटिरुभे (स्त्रियौ) ॥ ३६ ॥

गरुत्, पक्ष, ‘पक्षत्’ छद, पत्र, पतत्र, तनूरुह ये ६ पंख या पखना के नाम हैं । इनमें गरुत् पुंलिङ्ग है, अवन्तपक्ष पुंनपुंसक होकर सान्त भी है और छद पुंनपुंसक है । पक्षति, पक्षमूल ये २ पंख की जड़ के नाम हैं । इनमें पक्षति या पक्षती स्त्री-लिङ्ग है और चञ्चु, त्रोटि ये २ चोंच के नाम हैं ये दोनों स्त्रीलिङ्ग में रहते हैं । इनमें चञ्चु उदन्त और चञ्चू उदन्त भी है त्रोटि इदन्त और त्रोटि इदन्त भी कहाता है ॥ ३६ ॥

उड़ना ^{न. न. न.} प्रडीनोड्डीनसंडीनान्येताः (खगगतिक्रियाः) ।

अण्डा ^{स. पु. न. पु. पु.न.} पेशीकोषो(द्विहीनो)ऽण्डंकुलायो नीड(मस्त्रियाम्)३७॥
घोंसला

प्रडीन, उड़नि, सणडीन ये ३ पक्षियों (चिड़ियों) की गति की क्रिया या ग-
मनविशेष के ना हैं । इनमें तिरीछे गमन को 'प्रडीन' ऊपर के गमन को 'उड़नि' और
बारंबार के गमन को 'संडीन' कहते हैं । पेशी 'पेशि' कोष, कोश, " पेशीकोष"
अण्ड ये ३ अण्डा के नाम हैं इनमें 'पेशी' स्त्रीलिङ्ग, 'कोश' पुलिङ्ग और 'अण्ड'
नपुंसक में रहता है । कुलाय, नीड ये २ पक्षियों के घर या घोंसला के नाम हैं
इनमें " कुलाय" पुलिङ्ग और नीड पुंनपुंसक में रहता है ॥ ३७ ॥

^{पु. पु. पु. पु. पु. पु.} बच्चे पोतः पाकोऽर्भको डिम्भः पृथुकः शावकः शिशुः ।

नरमादा ^{न. न. न. न. न.} दो (स्त्रीपुंसौ) मिथुनं द्वन्द्वं युग्मं (तु) युगलं युगम् ॥ ३८॥

पोत, पोती, पाक, पाका, अर्भक, अर्भका, डिम्भ, डिम्भा, पृथुक, पृथुका, शा-
वक, शिशु ये ७ चिड़ियों के बच्चे या बच्चेमात्र के नाम हैं । स्त्रीपुंस, मिथुन, द्वन्द्व
ये ३ स्त्रीपुरुष के जोड़े या नरमादा के नाम हैं और युग्म, युगल, युग ये ३
दो के नाम हैं ॥ ३८ ॥

^{पु. पु. पु. पु. पु. पु.} समूह या झुण्ड समूहनिवहव्यूहसन्दोहविसरव्रजाः ।

^{पु. पु. पु. पु. पु. पु. पु.} स्तोमौघनिकरव्रातवारसंघातसंचयाः ॥ ३९ ॥

^{पु. पु. पु. पु. पु.} समुदायः समुदयः समवायश्चयो गणः ।

^{स. न. न. न.} (स्त्रियान्तु) संहतिर्वृन्दं निकुरम्बं कदम्बकम् ॥ ४०॥

समूह, निवह, व्यूह, सन्दोह, विसर, व्रज, स्तोम, ओघ, निकर, व्रात, वारसं-
घात, संचय, समुदाय, समुदय, समवाय, चय, गण, संहति, वृन्द, निकुरम्ब और
कदम्बक ये २२ समूह या झुण्ड के नाम हैं इनमें संहति स्त्रीलिङ्ग में रहता है । वृन्द,
निकुरम्ब और कदम्बक ये ३ नपुंसकलिङ्ग हैं ॥ ३९ । ४० ॥

समूहविशेष (वृन्दभेदाः) समैर्वर्गः ^{पु.} सङ्गसार्थो ^{पु.} (तु) ^{पु.} (जन्तुभिः) ।

^{न.} (सजातीयैः) ^{पु.न.} कुलं यूथं (तिरश्चां) पुंनपुंसकम् ॥ ४१ ॥

अब समूहों के विशेषभेद कहते हैं—सजातीय प्राणियों या अप्राणियों के समूह को ‘वर्ग’ कहते हैं। जैसे “मनुष्यवर्ग, शैलवर्गः” कहा जाता है। फिर सजातीय, विजातीय प्राणियों के समूह को सङ्ग या सार्थ कहते हैं जैसे ‘पशुसङ्गः वणिक्सार्थः’ फिर सजातीय जन्तुओं के समूह को ‘कुल’ कहते हैं जैसे “विप्रकुलम्” और टेढ़े जन्तुओं केही सजातीय समूह को ‘यूथ’ कहते हैं जैसे “मृगयूथम्” कहा जाता है यह ‘यूथ’ पुंनपुंसक लिङ्ग में रहता है ॥ ४१ ॥

पशुसमूह ^{पु.} (पशूनां) समजो ^{पु.} (न्येषां) समाजो (थ सधर्मिणाम्) ।

अन्यसमूह ^{पु.} सधर्मिसमूह ^{पु.} (स्या) ^{पु.स.} निकायः ^{पु.} पुञ्जराशी ^{पु.न.} तूत्करः ^{पु.} कूट (मस्त्रियाम्) ॥ ४२ ॥

पशुओं के समूह को ‘समज’ कहते हैं। औरों के समूह को यानी पशुओं से भिन्नों के समुदाय को ‘समाज’ कहते हैं जैसे “ओत्रियसमाजः, क्षत्रियसमाजः” वेदपाठी ब्राह्मणों के समुदाय को ‘ओत्रियसमाज’ और क्षत्रियों के समूह को ‘क्षत्रियसमाज’ कहते हैं। सधर्मियों (एक धर्मवालों) के समूह को “निकाय” कहते हैं जैसे “विप्रनिकायः” बुद्धिमान् ब्राह्मणों के समूह को ‘विप्रनिकाय’ कहते हैं यह वृन्द भेदों का अलग २ निरूपण किया गया पुञ्ज, “पिञ्ज, पुञ्ज” राशि उत्कर, कूट ये ४ अनाज आदि के ढेर के नाम हैं इन में ‘कूट’ पुंनपुंसक में रहता है ॥ ४२ ॥

कबूतर, सुवा, मोर, न. तीतर आदि का ^{न.} ^{न.} ^{न.} ^{न.} कापोतशौकमायूरतैत्तिरा (दीनि तद्रणे) ।

समुदाय ^{पु.} ^{पु.} पलाऊपक्षी, हिरन (गृहासक्ताः पक्षिमृगा) श्वेका (स्ते) गृह्यका (श्व ते) ४३ ॥

इति सिंहादिवर्गः ॥

उन कबूतर, सुवा, मोर, तीतर आदिकों के समुदाय में कापोत, शौक, मायूर और तैत्तिर आदि होते हैं जैसे कपोतों के समूहको “कापोत” कहते हैं यह १ कबूतरों के समूहका नाम है। सुवाओं के समूह को “शौक” कहते हैं यह १ सुवा समूह का नाम है। मोरों के समूहको “मायूर” कहते हैं यह १ मोरसमूहों का नाम है। तीतरों के समूह को “तैत्तिर” कहते हैं यह १ तीतरसमूह का नाम है। आदि शब्द से कौबों के समूह को “काक” कहते हैं यह १ काकसमूह का नाम

है । बटेरों के समूह को “वार्तक” कहते हैं यह १ बटेरसमूहका नाम है । बलूकों के समूह को “ओलूक” कहते हैं यह १ बलूसमुदाय का नाम है और जो घरमें आसक्त हैं यानी खेलने के लिये पिंजरा आदि में रखेगये हैं वे पक्षी और मृग “द्वेक” और “गृहक” कहाते हैं । ये पुंलिङ्ग होकर बहुत्व की विवक्षा में बहुवचनान्त और एकत्वकी विवक्षा में एकवचनान्त हैं ॥ ४३ ॥

इति सिंहादिवर्गविवरणम् ॥

अथ मनुष्यवर्गो व्याख्यायते ।

मनुष्य या मनुष्या मानुषा मर्त्या मनुजा मानवा नराः ।
पुरुषमात्र पु. पु. पु. पु. पु. पु.

(स्युः) पुमांसः पञ्चजनाः पुरुषाः पूरुषा नरः ॥ १ ॥

मनुष्य, मानुष, मर्त्य, मनुज, मानव, नर ये ६ मनुष्यमात्र के नाम हैं । ये एकत्व की विवक्षा में एकवचनान्त और बहुत्व की विवक्षा में बहुवचनान्त रहते हैं । पुमान्, पञ्चजन, पुरुष, पूरुष, ना ये ५ मनुष्यजाति में पुरुष के नाम हैं । अथवा कितेक आचार्यों के मत में ये ११ मनुष्यों के नाम हैं इनमें मनुष्य व मानुष शब्द से स्त्री व स्त्री करने पर मनुषी व मानुषी ये प्रयोग होते हैं ॥ १ ॥

स्त्रीमात्र स्त्री योषिदचला योषा नारी सीमन्तिनी वधूः ।
स. स. स. स. स. स. स.

प्रतीपदर्शिनी वामा वनिता महिला(तथा) ॥ २ ॥

स्त्री, योषित्, ‘जोषित्’ “योषिता, जोषिता” अबला, “योषा, जोषा” नारी, सीमन्तिनी, वधू, प्रतीपदर्शिनी, वामा, वनिता, महिला, “महीला, महेला” ये ११ स्त्रीमात्र के नाम हैं ॥ २ ॥

विशेष स्त्रियां (विशेषा)स्त्वङ्गना भीरुः कामिनी वामलोचना ।
स. स. स. स.

प्रमदा भामिनी कान्ता ललना(च)नितम्बिनी ॥ ३ ॥

कोपवती सुन्दरी रमणी रामा कोपना(सैव)भामिनी ।
स. स. स. स. स.

बहुत उत्तम वरारोहामत्तकाशिन्युत्तमा वरवर्णिनी ॥ ४ ॥

१ शांते सुलोचनसर्वाङ्गी श्रीर्भ्ये या हृत्परीतला । भर्तृभक्ता च या नारी सा भवेद्वरवर्णिनी (इति वदः) ॥

अब स्त्रियों के विशेष भेद कहते हैं—“अङ्गना” यह १ अङ्ग अङ्गवाली स्त्री का नाम है । “भीरु” यह १ डरभुतही स्त्री का नाम है । “कामिनी” यह १ कामयुत स्त्री का नाम है । “वामजोचना” यह १ सुन्दर नयनोंवाली का नाम है । “प्रमदा” यह १ बहुत कामवाली का नाम है । “मानिनी” या “भाविनी” यह १ प्रणयकोपवाली का नाम है । “कान्ता” यह १ मन हरनेवाली का नाम है । “जलना” यह १ लाड़िली लुगई का नाम है और “नितम्बिनी” यह १ कटि के पीछे सुन्दर या मोटे भाग की रखनेहारी का नाम है । “सुन्दरी या सुन्दरा” यह १ सुन्दर अङ्गवाली का नाम है । “रमणी, रमणा” यह १ क्रीड़ा को प्रिय करनेवाली का नाम है । “रामा, रमा” यह १ खेलने या खेलानेवाली का नाम है । “कोपना, कोपिनी” आमिनी ये २ कोप करनेवाली के नाम हैं । “वरारोहा” मत्तकाशिनी, ‘मत्तकासिनी’ “मत्तकापिणी” उत्तमा, वरवर्णिनी ये ४ बहुतही उत्तम या गुणों से बढ़ी मर्यादावाली के नाम हैं ॥ ३ । ४ ॥

पटरानी स. स. (कृताभिषेका) महिषी भोगिन्यो (ऽन्या नृपस्त्रियः) ।
अन्यरानी

जिस राजा की स्त्री का अभिषेक हुआ है उसे “महिषी” कहते हैं यह १ पटरानी का नाम है । जिन राजा की स्त्रियों का अभिषेक नहीं हुआ है उन्हें “भोगिन्यः” कहते हैं यह एकत्व की त्रिवक्षा में एकवचनान्त और बहुत्व की विदक्षा में बहुवचनान्त बना रहता है ॥ ३ ॥

व्याही स. स. स. स. पत्नी पाणिगृहीती(च)द्वितीया सहधर्मिणी ॥ ५ ॥

पतिपुत्रवती स. स. पु. व. स. भार्या जाया (थ पुंभूम्नि) दाराः(स्यात्)कुटुम्बिनी ।

पतिव्रता स. स. स. स. स. पुरन्ध्री सुचरित्रा (तु) सती साध्वी पतिव्रता ॥ ६ ॥

पत्नी, पाणिगृहीती, द्वितीया, सहधर्मिणी, “सधर्मिणी” भार्या, जाया, दारा ये ७ व्याही स्त्री के नाम हैं इनमें दारा पुंलिङ्ग व नित्य बहुवचनान्त होकर टा-धन्त एकवचनान्त भी है । कुटुम्बिनी, पुरन्ध्री, ‘पुरन्धि’ ये २ पतिपुत्रादिवती स्त्री के नाम हैं । सुचरित्रा, सती, साध्वी, पतिव्रता ये ४ पतिव्रता के नाम हैं ॥ ५ । ६ ॥

सपति स. स. स. स. कृतसपत्निकाऽध्यूढाऽधिविज्ञा(ऽथ) स्वयंवरा ।
स्वयं पतिकी स. स. स. स.

साहनेवाली स. स. स. स. पतिवरा(च)वर्या(च) कुलस्त्री कुलपालिका ॥ ७ ॥
कुलवती

कृतसपत्निका, “कृतसापत्निका, कृतसापत्निका” अर्थात्, अभिविज्ञा ये ३ अनेक व्याह करनेवाले पुरुष की जो पहिली विवाहित स्त्री है उसके नाम हैं । स्वयंवरा, पतिवरा, वर्या ये ३ जो अपनी चाहना से पतिको स्वीकार करती है उसके नाम हैं । कुलस्त्री, कुलपालिका “कुलपाली” ये २ दयमिचार के बराने से कुलकी रक्षा करनेवाली के नाम या कुलवती स्त्री के नाम हैं ॥ ७ ॥

कन्या स. स. स. स. स. स.
अट्ट रजोवती स. स. स. स.
दृष्टरजोवतीयुवती (स्या) न्मध्यमा दृष्टरजास्तरुणी युवतिः (समे) ॥ ८ ॥

कन्या “कन्यका” कुमारी “कुमारिका” ये २ प्रथम वय में वर्तमान कन्या के नाम हैं । गौरी, नग्निका, अनागतार्तवा ये ३ अट्टरजवाली कन्या के नाम हैं । मध्यमा, दृष्टरजा ये २ प्रथम रजोवती के नाम हैं । तरुणी “तलुनी” युवति, “युवती, यूनी” ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहते हैं ये २ युवती (जवान) स्त्री के नाम हैं ॥ ८ ॥

वहू, सुवासिनी, स. स. स. स. स.
धनादीच्छा- (समाः) स्नुषा जनी वध्वश्चिरगटी (तु) सुवासिनी ।
वती, मैथुनेच्छा- स. स. स. स.
वता इच्छावती कामुका (स्याद्) षस्यन्ती (तु) कामुकी ॥ ९ ॥

स्नुषा, जनी, वधू “वधु” ये तीनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहते हैं ये ३ पुत्रआदि की भार्या (बहू या पतोहू) के नाम हैं । चिरगटी, “चिरिगटी, चरिगटी, चरगटी” सुवासिनी, “स्ववासिनी” ये २ कुछ युवती व्याही पिता के घर रहती हुई स्त्री के नाम हैं । इच्छावती, कामुका ये २ धनादि की अभिलाषावाली के नाम हैं । षस्यन्ती, कामुकी ये २ बैल या घोड़े के समान मैथुन की चाहने वाली के नाम हैं ॥ ९ ॥

संकेतगामिनी (कान्तार्थिनी तु या याति संकेतं सा) ऽभिसारिका ।
स. स. स. स. स. स.
स्वैरिणी अपुत्रा पुंश्चली चर्षिणी बन्धक्यसती कुलटेत्वरी ॥ १० ॥

पतिपुत्रवती स. स. स.
स्वैरिणी पांशुला (च) स्यादशिश्वी (शिशुना विना) ।
स. स.
विधवा अवीरा (निष्पतिसुता) विश्वस्ताविधवे (समे) ॥ ११ ॥

जो कान्तार्थिनी होती हुई संकेत स्थान को जाती है उसे “अभिसारिका” कहते हैं यह १ भर्ता की चाहना से रतिस्थान में जानेवाली का नाम है या जो पति की इच्छा से कामार्ता होकर इशारे को जाती है उसका नाम है । पुंश्चली, चर्षिणी, “धर्षणी, धर्षिणी” बन्धकी, असती, कुलटा, इत्थरी, स्वैरिणी, पांशुला, ‘पांसुला’ ये ८ स्वैरिणी (द्विनारि) के नाम हैं । जो बिना पुत्रकी स्त्री है उसे ‘अशिश्वी’ कहते हैं यह १ पुत्ररहित स्त्री का नाम है । जो पति, पुत्र से विहीन स्त्री है उसे ‘अवीरा’ कहते हैं यह १ बिना पति पुत्र की स्त्री का नाम है और “पतिपुत्रवती वीरा” (इति नाममाला) इस कोष के प्रमाण से पतिपुत्रवती को ‘वीरा’ कहते हैं । विश्वस्ता, “विश्वस्था” विधवा ये दोनों समानार्थक व समानलिङ्ग होकर बने रहते हैं ये २ विधवा या रांड के नाम हैं ॥ १० । ११ ॥

सखी सहागिन स. स. स. स. स.
बूढ़ी बुद्धिमती **आलिः सखी वयस्या (च) पतिवती सभर्तृका ।**

स. स. स. स. स. स.
महामतिमती **वृद्धा पलिकी प्रज्ञा (तु) प्राज्ञी प्राज्ञा (तु) धीमती ॥ १२ ॥**

आलि, “आली” सखी, वयस्या ये ३ सहेली या सखी के नाम हैं । पतिवती, सभर्तृका ये २ जीते पतिवाली स्त्री के नाम हैं । वृद्धा, पलिकी “पलित्ता” ये २ बूढ़ी या पके केशवाली के नाम हैं । प्रज्ञा, प्राज्ञी ये २ आपही जाननेवाली या बुद्धिमती स्त्री के नाम हैं । प्राज्ञा, धीमती ये २ बड़ी बुद्धिवाली के नाम हैं ॥ १२ ॥

स. स.
सजातीय **शूद्री (शूद्रस्य भार्या स्यात्) शूद्रा (तज्जातिरेव च) ।**
विजातीय स. स.

अहिरिन **आभीरी (तु) महाशूद्री (जातिपुंयोगयोः समा) ॥ १३ ॥**

जो शूद्रकी सजातीय भार्या है उसे ‘शूद्री’ कहते हैं यह १ शूद्रकी सजातीय भार्या का नाम है और जो शूद्रजाति की अन्य भार्या है उसे ‘शूद्रा’ कहते हैं यह १ शूद्रकी विजातीय भार्या का नाम है । आभीरी, महाशूद्री ये २ अहिरिन के नाम हैं ये दोनों जाति और पुंयोग में समानार्थक होकर समानलिङ्ग रहते हैं ॥ १३ ॥

स. स. स. स.
बनियाइन **अर्याणी स्वयमर्या (स्यात्) क्षत्रिया क्षत्रियाण्यपि ।**
क्षत्रियाइन स. स.

पदानेवाली **उपाध्यायाप्युपाध्यायी स्यादाचार्यापि (च स्वतः) ॥ १४ ॥**
स्वयंन्यायात्री स. स. स.

अर्याणी, अर्या ये २ वैश्यजाति में उपजी स्त्री के नाम हैं यानी आप वैश्यजाति होकर जिस किसीकी भार्या हो ऐसा अर्थ करना चाहिये । एवं क्षत्रिया, क्षत्रियाणी

ये २ क्षत्रियजाति में उपजी जिस किसीकी भार्या के नाम हैं । उपाध्याया, उपाध्यायी ये २ पढ़ानेवाली के नाम हैं यानी जो आप पढ़ाती है उसके नाम हैं । जो आपही मन्त्र की व्याख्या करती है उसे ' आचार्या ' कहते हैं यह १ स्वयं मन्त्र व्याख्या करनेवाली का नाम है ॥ १४ ॥

आचार्यपत्नी

स.

स.

स.

वैश्यपत्नी

क्षत्रियपत्नी

पण्डितादिति

स.

स.

स.

स्त्रीपुंसलक्षण-

वती

आचार्यानी (तु पुंयोगे) स्यादर्यी क्षत्रियी(तथा) ।

उपाध्यायान्युपाध्यायी पोटा(स्त्रीपुंसलक्षणा) ॥ १५ ॥

आचार्य की भार्या को ' आचार्यानी ' कहते हैं यह १ आचार्यपत्नी का नाम है । अर्य की भार्या को ' अर्या ' कहते हैं यह १ अन्यजातिवाली वैश्यभार्या का नाम है । क्षत्रिय की भार्या को ' क्षत्रियी ' कहते हैं यह १ अन्य जातिवाली क्षत्रियभार्या का नाम है । उपाध्यायानी, उपाध्यायी ये २ पढ़ानेवाले की भार्या के नाम हैं । स्त्री पुरुषों के लक्षणोंवाली स्त्री को ' पोटा ' कहते हैं यह १ स्तन, मूछ, दाढ़ी आदि चिह्नोंवाली स्त्री का नाम है ॥ १५ ॥

स.

स.

स.

स.

वीर की स्त्री

वीर की माता

लड़के की उ-

पजानेवाली

वीरपत्नी वीरभार्या वीरमाता (तु) वीरसूः ।

जातापत्याप्रजाता (च) प्रसूता (च) प्रसूतिका ॥ १६ ॥

वीरपत्नी, वीरभार्या ये २ वीरभार्या के नाम हैं । वीरमाता, वीरसू ये २ वीर की माता के नाम हैं । जातापत्या, प्रजाता, प्रसूता, प्रसूतिका ये ४ लड़के उपजाने वाली (सौरिही) के नाम हैं ॥ १६ ॥

स.

स.

स.

स.

नङ्गी दूती

(स्त्री) नग्निका कोटवी (स्याद्) दूतीसंचारिके (समे) ।

स.

आधी बूढ़ीराङ्गकात्याय (न्यर्धवृद्धा या कषायवसनाधवा) ॥ १७ ॥

नग्निका, कोटवी, " कोटवी, कोटरी, कोटरा " ये २ नङ्गी स्त्री के नाम हैं । दूती, दूति, संचारिका ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं । ये २ दूती के नाम हैं । आधी बूढ़ी गेरुवा बख्खवाली विधवा स्त्री को " कात्यायनी " कहते हैं यह १ अधवयसू गेरुवे बख्खों की पहननेवाली पतिहीन स्त्री का नाम है ॥ १७ ॥

स.

लौंडी

सैरन्ध्री (परवेश्मस्था स्ववशा शिल्पकारिका) ।

स.

जवान लौंडी असिक्ती (स्याद्वृद्धा या प्रेष्यान्तःपुरचारिणी) ॥ १८ ॥

जो पराये घर में टिकी हुई अपने वश में रहकर शृङ्गार आदि की करनेवाली स्त्री हो उसे सैरन्ध्री, स्वैरन्ध्री या सैरिन्ध्री कहते हैं यह १ लौंडी या सेवकिन का नाम है । जो बूढ़ी न होकर आज्ञा को पालती हुई रनिवास में रहती हो उसे असिक्री या 'असिता' कहते हैं यह १ ज्वानी लौंडी का नाम है ॥ १८ ॥

वेश्या स. म. स. स.
वारस्त्री गणिका वेश्या रूपार्जीवाऽथ साजनैः ।

प्रधानवेश्या स. स. स.
कुटनी सत्कृता वारमुख्याऽस्यात् कुटनी शम्भलीऽसमे १९ ॥

वारस्त्री, गणिका, वेश्या, "वेष्या" रूपार्जीवा ये ४ वेश्या (रण्डी) के नाम हैं । वही वेश्या गुणों के कारण जनों से सत्कार को पाती हुई वारमुख्या कहाती है यह १ प्रधान वेश्या का नाम है । कुटनी, "कुटनी," शंभली "संभली" ये २ कुटनी के नाम हैं ॥ १९ ॥

शुभाशुभज्ञा स. स. स. स.
विप्रशिनका त्वीक्षणिका दैवज्ञाऽथ रजस्वला ।

रजस्वला स. स. स. स. स.
स्त्रीधर्मिण्यविरात्रेयी मलिनी पुष्पवत्यपि ॥ २० ॥

स्त्रीरज स. स. न. न. न.
ऋतुमत्यप्युदक्यापि स्याद्रजः पुष्पमार्तवम् ।

विप्रशिनका, ईक्षणिका, दैवज्ञा ये ३ शुभाशुभ की जाननेवाली के नाम हैं । रजस्वला, स्त्रीधर्मिणी, आवी, 'अवि' आत्रेयी, मलिनी, पुष्पवती, ऋतुमती, उदक्या ये ८ रजस्वला के नाम हैं । रजः (जस्) रज, पुष्प, आर्तव ये ३ स्त्रीरज के नाम हैं ॥ २० । ३ ॥

गर्भिणी की स. स. स. स.
अभिलाषा विना रजकी श्रद्धालुर्दोहदवती निष्कला विगतार्तवा ॥ २१ ॥

श्रद्धालु, दोहदवती ये २ गर्भ के वश से अन्न आदि विशेष अभिलाषावाली के नाम हैं । निष्कला, "निष्कली, निष्फला, निष्फली" विगतार्तवा ये २ रजविहीन स्त्री के नाम हैं ॥ २१ ॥

गर्भिणी स. स. स. स.
शृणिकासमूहः आपन्नसत्त्वाऽस्याद् गुर्विण्यन्तर्वल्लीऽच गर्भिणी ।
गर्भिणीसमूहः न. न. न.
युवतीसमूहः (गणिकादेस्तु) गाणिक्यं गाभिण्यं यौवतं गण्ये ॥ २२ ॥

आपन्नसत्त्वा, गुर्विणी, अन्तर्वल्ली, गर्भिणी ये ४ गर्भिणी स्त्री के नाम हैं ।

पु. पु.
भिक्षुकीपुत्र कौलटेयः कौलटेरो(भिक्षुकी तु सती यदि) ॥ २६ ॥

पु. पु.
तदा कौलटिनेयो(ऽस्याः)कौलटेयो(पि चात्मजः) ।

बान्धकिनेय, बन्धुल, असतीसुत, कौलटेय, कौलटेर ये ५ कुलटापुत्र के नाम हैं इनमें कौलटेय व कौलटेर ये स्त्रीलिङ्ग में कौलटेयी व कौलटेरा कहाते हैं और जो सती भिक्षुकी (भिखारिन) होजावे तो इसके सन्तान को कौलटिनेय या कौलटेय कहते हैं ये २ जार को छोड़कर भीख मांगने के लिये जो कुलमें जाती है उस कुलटाके पुत्र के नाम हैं ॥ २६ । ३ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
पुत्र आत्मजस्तनयःसूनुः सुतः पुत्रः स्त्रियां त्वमी ॥ २७ ॥

पुत्री स. न. न.
अपत्य (आहु)र्दुहितरं (सर्वे)ऽपत्यं तोकं(तयोःसमे) ।

औरसपुत्र पु. पु. पु. पु. पु.
बाप (स्वजाते) त्वौरसोरस्यौ तातस्तु जनकः पिता ॥२८॥

आत्मज, तनय, सूनु, सुत, पुत्र “ पुत्र ” ये ५ पुत्रके नाम हैं और जब ये आत्मज आदि सब स्त्रीलिङ्ग में वर्तमान होते हैं तब दुहिता को कहते हैं जैसे आत्मजा, तनया, सूनु, सुता, पुत्री, “ पुत्रिका या पुत्रका ” दुहिता ये ६ पुत्री के नाम हैं । अपत्य, तोक ये दोनों पुत्र, पुत्री में समानलिङ्ग रहते हैं । ये २ पुत्र कन्या के नाम हैं । औरस, उरस्य, “औरस्य” ये २ सवर्ण विवाहिता स्त्री में अपना से उपजे पुत्रके नाम हैं । तात, जनक, पिता ये ३ बापके नाम हैं ॥ २७ । २८ ॥

स. स. स. स. स. स.
माता, जनयित्री प्रसूमाता जननी भगिनी स्वसा ।

स. स. स.
ननन्दा, ननन्दा(तु स्वसा पत्युः)नप्त्री पौत्री सुतात्मजा ॥२९॥

जनयित्री, “ जनित्री ” प्रसू, माता, जननी “ जननि ” ये ४ माता के नाम हैं । भगिनी “ भग्नी ” स्वसा ये २ बहिन के नाम हैं । जो पतिकी बहिन है उसे ननन्दा, “ ननान्दा, नन्दना ” कहते हैं यह १ ननन्द का नाम है । नप्त्री, पौत्री, सुतात्मजा ये ३ पुत्र व पुत्री की लड़की के नाम हैं ॥ २९ ॥

स.
देवराणी, जेठानी, भौजाई (भार्यास्तु भ्रातृवर्गस्य) यातरः (स्युः परस्परम्) ।

स. स. स. स.
मामी प्रजावती भ्रातृजाया मातुलानी ‘तु’ मातुली ॥ ३० ॥

३ स्वभेदे संस्कृतायां तु स्वयमुत्पादयेद्वि यम् । तमौरस्यं विजानीयात्पुत्रं प्रथमकल्पितमिति श्रुतः ॥

जो भाइयों की स्त्रियां हैं वे परस्पर 'यातरः' कहाती हैं एकवचनमें याता द्विवचन में यातरौ होता है यहां बहुत्वकी विवक्षा में बहुवचन हुआ है यह १ देवराणी या जेठानी का नाम है । प्रजावती, भ्रातृजाया ये २ भाई की भार्या (भौजाई) के नाम हैं और मातुजानी, मातुली "मातुला" ये २ मामा की भार्या (मामी) के नाम हैं ॥ ३० ॥

स. पु.

सासु श्वशुर (पतिपत्न्योः प्रसूः) श्वश्रूः श्वसुर (स्तु पिता तयोः) ।

पु.

पु.

चाचा मामा (पितृभ्राता) पितृव्यः स्यान्मातृभ्राता तु मातुलः ॥ ३१ ॥

पति और पत्नी की उपजानेवाली माको 'श्वश्रू' कहते हैं यानी पतिकी माता पत्नीकी सासु और पत्नीकी माता पतिकी सासु कहाती है यह १ सासुका नाम है और उन पति पत्नी के बापको 'श्वशुर' कहते हैं यानी पतिका बाप पत्नीका श्वशुर और पत्नीका बाप पतिका श्वशुर कहाता है यह १ श्वशुरका नाम है । पिता के भाईको 'पितृव्य' कहते हैं यह १ चाचाका नाम है और माता के भाई को 'मातुल' कहते हैं यह १ मामाका नाम है ॥ ३१ ॥

पु.

पु.

पु.

साला देवर श्यालाः स्युः (भ्रातरः पत्न्याः) (स्वामिनो) देवृदेवरौ ।

पु.

पु.

पु.

पु.

भानजा दामाद स्वस्त्रीयो भागिनेयः स्याज्जामाता दुहितुः पतिः ॥ ३२ ॥

पत्नी के भाई पति के साले कहाते हैं, एकत्व में श्यालः और बहुत्व में श्यालाः और श्यालः दन्त्यादि भी है यह १ सालेका नाम है । स्वामी के भाई पत्नीके देवर कहाते हैं देवा (वृ) देवर, "देवा" (वृ) ये २ देवरके नाम हैं । स्वस्त्रीय, "स्वस्त्रेय" भागिनेय ये २ भानजे या भैने के नाम हैं तथा स्त्रीलिङ्गमें स्वस्त्रीया, भागिनेयी ये २ भानजी के नाम हैं और जामाता, "यामाता" दुहितुः पति, ये २ दामाद के नाम हैं ॥ ३२ ॥

ददा, दादी, पु.

पु.

पु.

परदादा, पर- पितामहः पितृपिता (तत्पिता) प्रपितामहः ।

दादी, नाना,

पु.

पु.

पु.

नानी, परनाना,

परनानी, भाई

बन्धु

(मातु) मातामहाद्येवं सपिण्डा (स्तु) सनाभयः ॥ ३३ ॥

पितामह, पितृपिता ये २ पिताके पिता (बाबा) के नाम हैं और स्त्रीलिङ्ग में 'पितामही' यह १ आजी का नाम है और पितामह के पिताको 'प्रपितामह' कहते

है यह १ परबाबा का नाम है और खीलिङ्ग में 'प्रपितामही' कहते हैं यह १ परदादी का नाम है । ऐसेही माता के पिता को 'मातामह' कहते हैं यह १ नाना का नाम है और खी को 'मातामही' कहते हैं यह १ नानी का नाम है और मातामह के पिता को "प्रमातामह" खी को प्रमातामही कहते हैं यह १ पर-नाना व परनानी का नाम है और सपिण्ड, सनाभि ये २ सपिण्ड भाई बन्धुओं के नाम हैं ॥ ३३ ॥

सगेभाई ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} समानोदर्यसोदर्यसगर्भ्यसहजाः (समाः) ।

^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} सगोत्री भाई सगोत्रबान्धवज्ञातिबन्धुस्वस्वजनाः (समाः) ॥ ३४ ॥

समानोदर्य, सोदर्य, सगर्भ्य, सहज "सोदर, सहोदर" ये चारो समानार्थक हो कर समानलिङ्ग कहाते हैं ये ४ सहोदर (सगे) भाई के नाम हैं । सगोत्र, बान्धव, ज्ञाति, बन्धु, स्व, स्वजन ये समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये ६ सगोत्री भाई के नाम हैं ॥ ३४ ॥

^{न.} ^{स.} ज्ञातिभाव ^{ज्ञातिभाव} ^{बन्धुसमूह} ^{मुख्यपति} ^{जारपति} बन्धुसमूह ^{बन्धुसमूह} ^{मुख्यपति} ^{जारपति} ज्ञातेयं बन्धुता (तेषां क्रमान्नावसमूहयोः) ।

^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} धवःप्रियःपतिर्भर्ता जारस्तूपपतिः (समौ) ॥ ३५ ॥

उन सबों के भाव और समूह में क्रम से ज्ञातेय और बन्धुता होती है जैसे ज्ञातियों के भाव को "ज्ञातेय" कहते हैं यह १ ज्ञातिभाव का नाम है और बन्धुओं के समूह को 'बन्धुता' कहते हैं यह १ बन्धुसमूह का नाम है । धव, प्रिय, पति, भर्ता ये ४ पति के नाम हैं और जार, उपपति ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ जारपति के नाम हैं ॥ ३५ ॥

^{पु.} ^{पु.} कुण्ड, गोल, (अमृते जारजः) कुण्डो (मृते भर्तरि) गोलकः ।

^{भतीजा,} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} भाई, बहिन भ्रात्रीयो भ्रातृजो भ्रातृभगिन्यौ भ्रातरा (बुभौ) ॥ ३६ ॥

स्वामी के नहीं मरने पर जार (व्यभिचार) से उपजे पुत्र को 'कुण्ड' कहते हैं और खीलिङ्ग में 'कुण्डी' होता है यह १ कुण्ड का नाम है । भर्ता के मरने पर जार से उपजा हुआ पुत्र 'गोल' कहलाता है । यह १ गोल (विधवापुत्र) का नाम है । भ्रात्रीय "भ्रातृव्य" भ्रातृज ये २ भाई के पुत्र के नाम हैं । भ्रातृभगिन्यौ, भ्रातरौ ये २ भाई बहिन के नाम हैं अथवा भाई और बहिन ये दोनों "भ्रा-

तरो" कहाते हैं यहां (उभौ) इस पद से साथ कहना यह सूचित किया जाता है और " भ्रातृपुत्रौ स्वस्तुदुहितृभ्याम् " (१ । २ । ६८) इस सूत्र से एकशेष समास होता है ॥ ३६ ॥

मा वाप ^{पु.} मातापितरौ ^{पु.} पितरौ ^{पु.} मातरपितरौ ^{पु.} प्रसूजनयितारौ ।

सासु ससुर ^{पु.} श्वश्रूश्च ^{पु.} श्वशुरौ ^{पु.} पुत्रौ (पुत्रश्च दुहिता च) ॥ ३७ ॥
कन्या पुत्र

मातापितरौ, पितरौ, मातरपितरौ, प्रसूजनयितारौ ये ४ द्विवचनान्त होकर माता के साथ पिता के नाम हैं यानी माता पिता के नाम हैं । श्वश्रूश्च श्वशुरौ, श्वशुरौ ये २ साथ कहे सासु व श्वशुर के नाम हैं और पुत्र व दुहिता (कन्या) को 'पुत्रौ' कहते हैं यह १ कन्या पुत्र के नाम हैं ॥ ३७ ॥

^{पु.} स्त्रीपुरुष ^{पु.} दम्पती ^{पु.} जम्पती ^{पु.} जायापती ^{पु.} भार्यापती (च तौ) ।
श्रीभरी या ^{पु.} गर्भाशयो ^{पु.} जरायुः 'स्या' ^{पु.न.} दुल्वं (च) ^{पु. न.} कललो (ऽस्त्रियाम्) ३८ ॥
जेर, रजबीज का मेल

दम्पती, जम्पती, जायापती, भार्यापती ये चारो 'तौ' इसके कहने से पुलिङ्ग हैं और " वाचस्पतिकोप " के प्रमाण से स्त्रीलिङ्ग भी हैं ये ४ स्त्री पुरुष के नाम हैं । गर्भाशय, जरायु ये २ जिस चामसे कोख में गर्भ घिरा रहता है उसके नाम हैं और उल्व, कलल ये २ रजबीज के मिलने के नाम हैं अथवा ये ४ गर्भ-वेष्टन चर्म केही नाम हैं इनमें उल्व, कलल ये दोनों स्त्रीलिङ्ग में नहीं होते हैं बरन पुंनपुंसक में बने रहते हैं अथवा गर्भाशय, जरायु, उल्व, उल्व ये ३ गर्भाशय के नाम हैं । 'कलल' यह १ रजबीज के मिलने का नाम है ॥ ३८ ॥

^{पु.} जन्ममास ^{पु.} सूतिमासो ^{पु. पु.} वैजननो ^{पु.} गर्भो ^{पु.} भ्रूण (इमौसमौ) ।

गर्भ ^{स.} तृतीयाप्रकृतिः ^{पु.} शरदः ^{पु.न.} क्लीबः ^{पु.} पण्डो ^{पु.न.} नपुंसकम् ॥ ३९ ॥
हिजरा

सूतिमास, वैजनन ये २ जिस नवयें या दशवें महीने में उपजता है उसके नाम हैं यानी जन्ममास के नाम हैं । गर्भ, भ्रूण ये २ कुक्षि में स्थित गर्भ के नाम हैं । तृतीयाप्रकृति, 'तृतीयप्रकृति,' शरद, " पण्ड, सण्ड, शण्ड " क्लीब, पण्ड, नपुंसक ये ५ नपुंसक के नाम हैं उनमें पहली प्रकृति स्त्री, दूसरी पुमान् और

१ राजदन्तादि (२ । २ । ३१) गणेषाठाज्जायाशब्दस्य दंजभावो वा निपात्यते । दाराः पुंस्ति बहुलं च दं कलत्रे नपुंसकमित्यमरमाला " पत्न्यां जं दमलिङ्गत्वे " इति नामप्रपञ्चः ॥

तीसरी क्लीब है और 'शयव' पुंलिङ्ग है, 'क्लीब' पुंनपुंसक है और पण्ड भी पुंनपुंसक है ॥ ३६ ॥

न. न. न. न. न.
बालपन युवापन वृद्धापन
शिशुत्वं शैशवं बाल्यं तारुण्यं यौवनं (समे) ।
न. न. पु. न.
बुढ़ाका समूह स्यात्स्थाविरं(तु)वृद्धत्वं वृद्धसंघे (ऽपि)वार्धकम् ॥ ४० ॥

शिशुत्व, शैशव, बाल्य ये ३ बालकपने के नाम हैं । तारुण्य, यौवन ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहते हैं ये २ युवापन (जवानी) के नाम हैं । स्थाविर, वृद्धत्व ये २ बूढ़ेपन के नाम हैं । वृद्धसंघ, वार्धक, "वार्धक्य" ये २ वृद्धसमूहों के नाम हैं ॥ ४० ॥

पु.न. स. स.
अतिबुढ़ापा बुढ़ाई
दूध पीनेवाले बच्चे
पलितं(जरसा शौकल्यं केशादौ)विस्त्रसा जरा ।
स. स. स. स.
स्यादुत्तानशयाडिम्भा स्तनपा (च)स्तनन्धयी ॥ ४१ ॥

केश आदिकों में जो बुढ़ाई से शुक्लता (सफेदीपना) आती है उसे 'पलित' कहते हैं । आदि पद से लोम, दाढ़ी व मूखों का ग्रहण किया जाता है और यह पुंनपुंसक में रहता है यह १ अत्यन्त बुढ़ापे का नाम है । विस्त्रसा, जरा ये २ बुढ़ाई के नाम हैं । उत्तानशया "उत्तानशयः" डिम्भा, स्तनपा, स्तनन्धया "स्तनन्धयी" ये चारो तीनों लिङ्ग में रहते हैं क्योंकि "त्रिपु जरावराः" यह कहा जावेगा स्त्रीलिङ्ग का निर्देश स्त्रीप्रत्ययों के दिखलाने के लिये है ये ४ दूध पीनेवाले बच्चे व बच्चियों के नाम हैं ॥ ४१ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
बालक युवापुरुष वरुपुरुष
बालस्तु स्यान्माणवको वयस्थस्तरुणो युवा ।
पु. पु. पु. पु. पु.
प्रवयाः स्थविरो वृद्धो जीनो जीर्णो जरन्नपि ॥ ४२ ॥

बाल, "बालक" माणवक ये २ बालक के नाम हैं और स्त्रीलिङ्ग में 'बाला' यह होता है । वयस्थ, तरुण, युवा (वन्) ये ३ युवापुरुष के नाम हैं । प्रवयाः (यस्) स्थविर, वृद्ध, जीन, जीर्ण, जरन् (रत्) ये ६ वृद्धपुरुष के नाम हैं ॥ ४२ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
वक्राबुद्धा जेठाभाई बौटा भाई
वर्षीयान्दशमी ज्यायान् पूर्वजस्त्वग्निः ।
पु. पु. पु. पु. पु.
जघन्यजे (स्युः) कान्धयवीयोव जानुजाः ॥ ४३ ॥

१ "वयःपक्षिणि बाल्यादौ वयो यौवनमावके" (इति विश्वः) ॥

वर्षीयान्, दशमी (मिन्) ज्यायान् (यस्) ये ३ महावृद्ध के नाम हैं । पूर्वज, अग्रिय, अग्रिम “ अग्रिय-अग्रय ” अग्रज ये ३ जेठे भाई के नाम हैं । जघन्यज, कनिष्ठ, कनीयान्, “ यवीयान्, यविष्ठ ” यवीय, अवरज, अनुज ये ५ छोटे भाई के नाम हैं ॥ ४३ ॥

दुर्बल, ^{पु.} अमांसो ^{पु.} दुर्बलश्छातो ^{पु.} बलवान्मांसलोसलः । ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}

बलवान्, ^{पु.} तुन्दिलस्तुन्दिकस्तुन्दी ^{पु.} बृहत्कुक्षिः ^{पु.} पिचिण्डिलः ॥ ४४ ॥ ^{पु.}

अमांस, दुर्बल, छात ‘ शात ’ ये ३ दुर्बल के नाम हैं । बलवान्, मांसल, अंसल ये ३ बलवान् के नाम हैं । तुन्दिल, “ तुण्डिल ” तुन्दिक, “ तुन्दिम, तुण्डिम ” तुन्दी (न्दिन्) तुण्डी (णिडन्) बृहत्कुक्षि, पिचिण्डिल “ पिचिण्डवान् ” ये ५ तुन्दिल (बड़े पेटवाले) के नाम हैं ॥ ४४ ॥

नकचयटा ^{पु.} अवटीटोऽवनाटश्चावभ्रटो (नतनासिके) । ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}

सुन्दर केश- ^{पु.} वाला सिमटी ^{पु.} केशवः ^{पु.} केशिकः ^{पु.} केशी ^{पु.} बलिनो ^{पु.} बलिभः (समौ) ॥ ४५ ॥

अवटीट, अवनाट, अवभ्रट, नतनासिक ये ४ चपटे नाकवाले के नाम हैं । अथवा कितेक आचार्यों के मत में (नतनासिके) इस अर्थ में तीनही नाम होते हैं । केशव, केशिक, केशी (शिन्) ये ३ अच्छे केशवाले या मोटे केशवाले के नाम हैं । बलिन, बलिभ ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ बुढ़ाई से सिमटी या ढीली खालवाले के नाम हैं ॥ ४५ ॥

विकल अङ्ग- ^{पु.} वाला वामन, ^{पु.} विकलाङ्ग (स्तु) पोगण्डः ^{पु.} खर्वो ^{पु.} ह्रस्व (श्र) वामनः । ^{पु.}

तीखी नाक- ^{पु.} वाला, नकटा ^{पु.} खरणाः ^{पु.} स्यात्खरणसः ^{पु.} विग्र (स्तु गतनासिकः) ॥ ४६ ॥

विकलाङ्ग, पोगण्ड, “अपोगण्ड” ये २ स्वभाव से न्यून या अधिक अङ्गवाले के नाम हैं अथवा जिसका कोई अङ्ग अपनेही से अधिक या कम हो उसके नाम हैं । खर्व, ह्रस्व, वामन स्त्री में ‘ वामनी ’ ये ३ वामन (बौना) के नाम हैं । खरणाः (णस्) खरणस ये २ तीखी नाकवाले के नाम हैं । विग्र, “ विखु, विखू, विख्य ” गतनासिक ये २ नकटे के नाम हैं ॥ ४६ ॥

धुरसमान नाक- ^{पु.} वाला लयचरा ^{पु.} खुरणाः (स्या) ^{पु.} त्खुरणसः ^{पु.} प्रजुः ^{पु.} प्रगतजानुकः ।

ऊंचीजाँघवाला ^{पु.} मिलीजाँघवाला ^{पु.} ऊर्ध्वजुर्ध्वजानुः (स्या) ^{पु.} त्संजुः ^{पु.} संहतजानुकः ॥ ४७ ॥

खुरणाः (गास्) खुरणस ये २ पशुखुर के समान नासिकावाले के नाम हैं । प्रभु, प्रगतजानुक, “प्रगतजानु” ये २ बातादि विकारभे विरल जानुवाले (ल्यचरा) के नाम हैं । ऊर्ध्वजु “ऊर्ध्वज” ऊर्ध्वजानु ये २ जिसके बैठने पर जङ्घा ऊपरको होजाती हैं उसके नाम हैं । संहु, संहतजानुक “संहतजानु” ये २ मिलीफलीवाले के नाम हैं ॥ ४७ ॥

वहिरा, कुबडा, ^{पु.} स्यादेडे ^{पु.} बधिरः ^{पु.} कुब्जे ^{पु.} गडुलः ^{पु.} कुकरे ^{पु.} कुंणिः ।
 टुंडा छोटी देह ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}
 बाला, पंगुला, ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}
 मुण्डा ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}

पृश्निरल्पतनौ श्रोणः पङ्गौ मुण्डस्तु मुण्डिते ॥ ४८ ॥

एड, बधिर ये २ बहिरे के नाम हैं । कुब्ज, गडुल “गगडुग, गगडुल” ये २ कुबड़े के नाम हैं । कुकर, कुणि “कूणि-कोणि” ये २ रोग आदि से टेढ़े हाथवाले “टुंडा” के नाम हैं । पृश्नि, “पृष्णि” अल्पतनु ये २ छोटी कायावाले के नाम हैं । श्रोण, पङ्गु, स्त्री में पङ्गु ये २ पंगुला के नाम हैं । मुण्ड, मुण्डित स्त्री में मुण्डा ये २ खगिडत केशवाले (मुंडिया) के नाम हैं ॥ ४८ ॥

^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}
 कञ्जा ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}
 लैगडा ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}
 सहसन ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}
 तिल ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}

वलिरः केकरे खोडे खञ्ज (स्त्रिषु जरावराः) ।

जडुलःकालकःपिप्लुस्तिलकस्तिलकालकः ॥ ४९ ॥

वलिर, केकर ये २ काने, कयरे, ऐंचाताने या कञ्जे के नाम हैं । खोड, “खोर, खोल” खञ्ज ये २ लैगड़े के नाम हैं । “जरावराः” जरा शब्द से पहले पढ़े हुए ‘उत्तानशय’ आदि और खञ्ज पर्यन्त तीनों लिङ्ग में रहते हैं या वाच्यलिङ्ग कहते हैं । जडुल “जडुल” कालक, पिप्लु ये ३ काले लसुनाकार विह्व के नाम हैं । तिलक, तिलकालक ये २ देहस्थ तिलचिह्न के नाम हैं ॥ ४९ ॥

^{न.} ^{न.} ^{स.} ^{स.}
 आरोग्य ^{न.} ^{न.} ^{न.} ^{पु.} ^{पु.}
 उपाय ^{न.} ^{न.} ^{न.} ^{पु.} ^{पु.}
 औषध ^{न.} ^{न.} ^{न.} ^{पु.} ^{पु.}

अनामयं (स्यादा) ऽऽरोग्यं चिकित्सा रुक्प्रतिक्रिया ।

भेषजौषधभेषज्यान्यगदो जायु(रित्यपि) ॥ ५० ॥

अनामय, आरोग्य ये २ आरोग्य (विनारोग) के नाम हैं । चिकित्सा, रुक्प्रतिक्रिया ये २ रोगहारी उपाय के नाम हैं । भेषज, औषध, भेषज्य, अगद और जायु ये ५ औषध (इलाज) के नाम हैं ॥ ५० ॥

^{स.} ^{स.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}
 रोग ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}
 क्षयी ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}
 पीनस ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}

(स्त्री)रुमुजा चोपतापरोगव्याधिगदामयाः ।

क्षयःशोषश्च यक्ष्मा(च) प्रतिश्यायस्तु पीनसः ॥ ५१ ॥

१ “निसर्गतः कृषिर्पशुपौगण्डः” इति नाममालायामार्यापाठारीर्षोकारवानपि ॥

२ “युक्ते शुषितशीर्षयोः । राहौ दैत्वान्तरे” (इति हैमः) ॥

रक्, रुजा, उपताप, रोग, व्याधि, गद, आमय ये ७ रोगमात्र के नाम हैं। इनमें रक्, रुजा ये २ स्त्रीलिङ्ग हैं और शेष पुंलिङ्ग कहाते हैं। क्षय, शोष, यक्ष्मा, जक्ष्मा (न्) यक्ष्म, राजयक्ष्मा (न्) ये ३ क्षयीरोग (कंज्यंसन्) के नाम हैं। “प्रतिश्याय, प्रतिश्याय, प्रतिश्या ” पीनस, “ आपीनस, पित्तस ” ये २ पीनसरोग के नाम हैं ॥ ५१ ॥

डीक, खांसी ^{स. न. पु. पु. पु.} (स्त्री) क्षुत् क्षुतं क्षवः (पुंसि) कास (स्तु) क्षवथुः (पुमान्) ।

^{पु. पु. पु. पु. स.} सृजन, ब्यँवाई शोफ (स्तु) श्वयथुः शोथः पादस्फोटो विपादिका ॥ ५२ ॥

क्षुत्, क्षुत, क्षव ये ३ स्त्री के नाम हैं “ स्त्रियां क्षुत् क्षुतं हञ्चिका ” (इति रभसः) इस कोष के प्रमाणसे भी क्षुत् स्त्रीलिङ्ग है, क्षुत नपुंसक और क्षव पुंलिङ्ग है। कास, “ काश ” क्षवथु ये २ खांसी के नाम हैं। ये दोनों पुंलिङ्ग हैं। शोफ, श्वयथु, शोथ ये ३ शोथ (सृजन) के नाम हैं। पादस्फोट, विपादिका ये २ ब्यँवाई के नाम हैं इनमें ‘ विपादिका ’ स्त्रीलिङ्ग में रहता है ॥ ५२ ॥

^{न. न. १ न. स. स.} सेहुवां ओदी किलाससिध्मे कच्छां (तु) पाम पामा विचर्चिका ।

^{साज, खुजली, स. स. स. पु. पु. स. न.} कोड़ा, फुड़िया कण्डूः खर्जूश्च कण्डूया विस्फोटः पिटक (स्त्रिषु) ॥ ५३ ॥

किलाससिध्म, सिध्म (मन्) ये २ सफेद कोढ़ या सेहुवां के नाम हैं इनमें ‘ सिध्म ’ अदन्त होकर किसीके मत में नान्त भी है। कच्छू, पाम (मन्) पामा द्वित्वमें पामानौ बहुत्व में ‘ पामानः ’ डाबन्त होने पर पामा द्वित्व में ‘ पामे ’ बहुत्व में पामाः और शेष रमाके समान है, विचर्चिका ये ४ ओदी खुजली के नाम हैं इनमें कच्छू, पामा, विचर्चिका ये तीन स्त्रीलिङ्ग हैं और पाम (मन्) नपुंसक है। कण्डू, खर्जू, कण्डूया ये ३ सूखी खाज (खुजली) के नाम हैं। विस्फोट, “ विस्फोटा ” पिटक, “ पिटका, विटिका ” ये २ कोड़ा-फुड़िया के नाम हैं इनमें ‘ पिटक ’ तीनों लिङ्ग में रहता है ॥ ५३ ॥

^{पु. न. पु. न. पु. न. पु. न.} घाव नसूर व्रणो (ऽस्त्रिया) मीर्ममरुः (स्त्रीबे) नाडीव्रणः (पुमान्) ।

^{गण्डलाकार कोढ़ सफेद कोढ़ वसासीर पु. न. न. न. न.} कोठो मण्डलकं कुष्ठश्चित्रे दुर्नामकार्शसी ॥ ५४ ॥

व्रण, ईर्म, मरुः (स्) वे ३ घाव के नाम हैं इनमें “ व्रण, ईर्म ” वे दो पुंलिङ्ग नपुंसक हैं और “ मरुः ” नपुंसक में रहता है। जो घाव सदा गलता रहता है

उसे “नाडीव्रण” कहते हैं यह पुंलिङ्ग है यह १ नसूर का नाम है । फोठ, मण्डलाक ये २ मण्डलाकार कुष्ठ या गजचर्म के नाम हैं । कुष्ठ, श्वित्र “श्वेत-श्वेत्र” ये २ सफेद फोड़ के नाम हैं । तुर्नामक, अर्शः (स्) “अर्सस्” ये २ बवासीर के नाम हैं ॥ ५४ ॥

कम्पितयत् ^{पु.} ^{पु.} ^{स.} ^{स.}
संग्रहणी ^{स.} ^{स.} ^{पु.}
वमन ^{स.} ^{स.} ^{पु.}
आनाहस्तु विबन्धः (स्याद्) ग्रहणी रुक्प्रवाहिका ।
प्रच्छर्दिका वमिश्र (स्त्री) “पुमांस्तु” वमथुः (समाः) ५५ ॥

आनाह, विबन्ध ये २ मलमूत्रनिरोध या मलबद्ध रोग (पेट फूलना) के नाम हैं । जो प्रवाहिका रोग है उसे ग्रहणी कहते हैं । ग्रहणी, प्रवाहिका या ग्रहणी, ग्रहणि, ग्रहणी, रुक्, प्रवाहिका ये २ संग्रहणीरोग के नाम हैं । प्रच्छर्दिका, “छर्दी, छर्दि, छर्दिः” वमि, वमथु ये ३ वमन, उल्लार या उलटी के नाम हैं ये समानार्थक कहते हैं इनमें ‘प्रच्छर्दिका, वमि’ ये दो स्त्रीलिङ्ग हैं और ‘वमथु’ पुंलिङ्ग में रहता है ॥ ५५ ॥

रोगविरोध ^{१ स.} ^{पु. पु.} ^{पु.}
(व्याधिभेदा) विद्रधिः (स्त्री) ज्वरमेहभगन्दराः ।

^{स.} ^{न.}
पथरी ^{स.} ^{न.}
अश्मरी मूत्रकृच्छ्रं ‘स्यात्’ (पूर्वे शुक्रावधेस्त्रिषु) ॥ ५६ ॥

अब व्याधियों के भेद कहते हैं—‘विद्रधि’ यह १ उदर आदि में गण्डभेद या व्यरथिया या एक प्रकार के फोड़े का नाम है यह स्त्रीलिङ्ग में रहता है परन्तु वैद्यक ग्रन्थों में पुंलिङ्ग है । ‘ज्वर’ यह १ बुखार का नाम है । ‘मेह’ यह १ प्रमेह का नाम है जोकि वैद्यकशास्त्र में बहुत प्रकार का है । ‘भगन्दर’ यह १ भगन्दर (गुदा के समीप फोड़े) का नाम है “श्लीपदं पादवल्मीकं केशघ्नस्त्रिन्द्रलुप्तकः” श्लीपद, पादवल्मीक ये २ पादरोग या हाडारोग के नाम हैं । केशघ्न, इन्द्रलुप्तक ये २ चाँईचूँई के नाम हैं । अश्मरी, मूत्रकृच्छ्र ये २ पथरीरोग या करकरोग के नाम हैं इससे परे शुक्र से पूर्व मूर्च्छित पर्यन्त पढ़े हुए शब्द तीनों लिङ्ग में रहते हैं यानी प्रच्छर्दिः कहते हैं ॥ ५६ ॥

^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}
वैद्य-इकीम, ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.}
वाक्तर ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.}
रोगहार्यगंकारा भिषग्वैद्यौ चिकित्सके ।

नीरोणी ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.}
वार्तो निरामयः कल्य उल्लाघो (निर्गतोगदात्) ॥ ५७ ॥

१ त्वप्रक्रमसमेदासि प्रद्व्यास्थिसमाभिताः । दोषाः शोथं शनैर्बोर् जनयन्त्युच्छ्रिताश्चराः ॥ १ ॥ महाशूलं कृष्णवर्णं कृतं कम्पयथायतम् । स विप्रधिरिति स्यात्तो विशेषः पश्चिधश्च सः ॥ २ ॥ इति भावप्रकाशाखं-विज्ञेयि ॥

रोगहारी (न) अगदंकार, भिषक् (ज्) वैद्य, चिकित्सक ये ५ वैद्य (हकीम, डाक्टर) के नाम हैं । वार्त (वार्ता) निरामय, कल्य ये ३ नीरोगी के नाम हैं और जो रोग से छूट गया है उसे “उल्लाघ” कहते हैं यह भी एक पूर्वका पर्याय है यानी वार्त से लेकर उल्लाघ पर्यन्त चार नीरोगी के नाम हैं ॥ ५७ ॥

रोगशीघ्र ^{पु.स.न.} ग्लानग्लान् ^{पु.स.न.} आमयावी ^{पु.स.न.} विकृतो ^{पु.स.न.} व्याधितो ^{पु.स.न.} अपदुः ।
रोगी ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.}
खाजवाला ^{पु.स.न.} आतुरोऽभ्यमितोऽभ्यान्तः(समौ)पामनकच्चुरौ॥५८॥

ग्लान, ग्लान् ये २ रोग से क्षीणपुरुष के नाम हैं । आमयावी (न) विकृत, व्याधित, अपदु, आतुर, अभ्यमित, अभ्यान्त ये ७ रोगी के नाम हैं । पामन, कच्चुर ये २ खसरा या खाजुवाले के नाम हैं ये दोनों समानार्थक होकर समान-लिङ्ग कहते हैं ॥ ५८ ॥

दादवाला ^{पु.स.न.} दद्रुणो ^{पु.स.न.} दद्रुरोगी ^{पु.स.न.} स्याद'शो'रोगयुतोऽर्शसः ।
बवासीरवाला ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.}
वातरोगी ^{पु.स.न.} वातकी ^{पु.स.न.} वातरोगी ^{पु.स.न.} स्यात्सातिसारोऽतिसारकी ॥ ५९ ॥
अतीसारवाला

दद्रुणः, “ दद्रूणः, दद्रुः, दद्रूः, दद्रुः, दद्रूः ” दद्रुरोगी (न) ये २ दादवाले के नाम हैं । अर्शरोगयुत, अर्शस ये २ बवासीरवाले के नाम हैं । वातकी (किन्) वातरोगी (गिन्) ये २ वातरोगवाले के नाम हैं । सातिसार, अतिसारकी (किन्) ये २ अतीसार (दस्त) वाले के नाम हैं यानी जिसको बहुत से दस्त आते हों उसके नाम हैं ॥ ५९ ॥

चिपडा चोंधर ^{पु.स.न.} स्युः ^{पु.स.न.} क्लिन्नाक्षे ^{पु.स.न.} चुल्ल ^{पु.स.न.} चिल्ल ^{पु.स.न.} पिल्ल ^{पु.स.न.} (क्लिन्नेऽक्षिणचाप्यमी) ।
चिपड़ी आंखें ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.}
पागल ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.}
कफी ^{पु.स.न.} उन्मत्त ^{पु.स.न.} उन्मादवति ^{पु.स.न.} श्लेष्मलः ^{पु.स.न.} श्लेष्मणः ^{पु.स.न.} कफी ॥ ६० ॥

क्लिन्नाक्ष, चुल्ल, चिल्ल, पिल्ल ये ४ चिपरा या चोंधरा के नाम हैं । और ये चुल्ल आदि चिपरी, चोंधरी आंखों के भी नाम हैं । उन्मत्त, उन्मादवान् ये २ वातविकार से चित्तविभ्रमवाले, पागल या बावले के नाम हैं । श्लेष्मल, श्लेष्मण, कफी ये ३ कफवाले के नाम हैं ॥ ६० ॥

कुबका ^{पु.स.न.} न्युब्जो ^{पु.स.न.} (भुग्नेरुजा) ^{पु.स.न.} “वृद्धनाभौ” ^{पु.स.न.} तुण्डिभतुण्डिभौ ।
दूरीला ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.}
सेहुवावाला ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.}
अन्धामूर्खित ^{पु.स.न.} किलासी ^{पु.स.न.} सिध्मलोऽन्धो ^{पु.स.न.} दृ ^{पु.स.न.} च्छाले ^{पु.स.न.} मूत्तः ^{पु.स.न.} च्छित्तो ॥ ६१ ॥

रोग से टेढ़ी पीठ व अधोमुखवाले पुरुष में न्युब्ज होता है यह १ कुबड़े का नाम है । वृद्धनाभि, तुण्डिम, तुण्डिल “तुन्दिल” ये ३ वात आदि से ऊंची नाभि वाले के नाम हैं । किलासी (सिन्) सिध्मल ये २ सेहूँवावाले के नाम हैं । अन्ध, अदक् (श्) ये २ अन्धे के नाम हैं । मूर्च्छालि, मूर्त, मूर्च्छित ये ३ मूर्च्छावाले के नाम हैं ॥ ६१ ॥

बीज, पित्त ^{न.}शुक्रं ^{न.}तेजोरेतसी (च) ^{न.}बीजवीर्येन्द्रियाणि (च) ।

^{पु.}कफ, ^{न.}खाल ^{पु.}मायुः ^{पु.}पित्तं ^{स.}कफः ^{स.}श्लेष्मा (स्त्रियां तु) त्वगसृग्धरा ॥ ६२ ॥

शुक्र, तेजः (स्) रेतः (स्) बीज, वीर्य, इन्द्रिय ये ६ वीर्य के नाम हैं । मायु, पित्त ये २ पित्त के नाम हैं । कफ, श्लेष्मा (मन्) ये २ कफ के नाम हैं । त्वक् (च्) “ त्वचा, त्वच ” असृग्धरा “ असृग्धरा, असृग्धरा ” ये २ खाल या चाम के नाम हैं ये दोनों खीलिङ्ग में रहते हैं और अदन्त त्वचशब्द नपुंसक में रहता है ॥ ६२ ॥

मांस ^{न.}पिशितं ^{न.}तरसं ^{न.}मांसं ^{न.}पल्लं ^{न.}क्रव्यमाऽऽमिषम् ।

^{न.}सूखामांसं ^{पु.स.न.}उत्तप्तं ^{न.}शुष्कमांसं (स्यात्तद्वल्लूरं त्रिलिङ्गकम्) ॥ ६३ ॥

पिशित, तरस, मांस, पल्ल, क्रव्य, आमिष और “अमिष” ये ६ मांस के नाम हैं । उत्तप्त, शुष्कमांस, बल्लूर “ बल्लूर, बल्लूरा ” ये ३ सूखे मांस के नाम हैं । इनमें जो बल्लूर वह तीनों लिङ्गवाला होता है ॥ ६३ ॥

रुधिर ^{न.}रुधिरेऽसृग्लोहितास्त्ररक्तक्षतजशोणितम् ।

^{पु.स.न.}कलेजा ^{न.}हृदयं ^{न.}बुक्काग्रमांसं ^{न.}हृदयं ^{न.}हृन्मेद (स्तु) वपा वसा ॥ ६४ ॥

रुधिर, असृक् (ग्) द्वित्वे असृजी, बहुत्वे असृजि, लोहित, अस्र, “अस्र” रक्त, क्षतज, शोणित ये ७ रक्त के नाम हैं । बुक्का, बुक्का (न्) बुक्क, वूक्का, बूक्क, वृक्का, वृक्का (न्) वृक्क, अग्रमांस या बुक्काग्रमांस ये २ कलेजा या हृदय के भीतर पद्याकार मांस के नाम हैं । हृदय, हृत् (इ) द्वित्व में हृदी बहुत्व में हृन्दि ये २ हृदयकमल के नाम हैं अथवा बुक्का, अग्रमांस, हृदय, हृत् ये ४ हृदयकमल के ही पर्याय हैं । मेदः (स्) “ मेद, ” वपा, वसा ये ३ मांस से उपजे चिकनाहट या चर्बी के नाम हैं ॥ ६४ ॥

गले की ^{स.} ^{स.} ^{स.} ^{स.}
 पिङ्गली नस, (पश्चाद्ग्रीवा शिरा) मन्या नाडी (तु) धमनिः(शिरा)।
 नाडी, फेफड़ा न. न. न. न. न. पु.न.
 मेल तिलकं क्लोम मस्तिष्कं गोर्दं किट्टं मंलो (ऽस्त्रियाम्) ॥ ६५ ॥

पिङ्गले भाग में स्थित ग्रीवा की शिरा को “मन्या” कहते हैं यह १ गले की पिङ्गली नस का नाम है। नाडी, “नाडि,” धमनी, “धमनि” शिरा, “शिरा” ये ३ नाडी के नाम हैं। तिलक, क्लोम (न्), “क्लोम” ये २ मांसपिण्ड विशेष, तिल, फुफ्फुस या फेफड़ा के नाम हैं इनमें क्लोम नान्त, नपुंसक होकर अवन्त भी है। मस्तिष्क, गोर्दं ये २ मस्तक में उपजे घीसमान चिकनाहट या गूदा के नाम हैं। किट्ट, मल ये २ कान आदि के निकले मल के नाम हैं, इनमें “मलोऽस्त्री पापविट्किट्टे कृपणो त्वभिधेयवदिति” (मेदिनी) इस प्रमाण से ‘मलं’ पुंनपुंसक में रहता है ॥ ६५ ॥

^{न.} ^{पु. न.} ^{पु.} ^{पु.} ^{स.}
 आंत पिलही अन्त्रं पुरीतद् गुल्म (स्तु) प्लीहा पुंस्य (थ) वस्नसा।
 नस कलेजा स. न. न.
 या जिगर स्नायुः (स्त्रियां) कालखण्डयकृती (तु समे इमे) ॥ ६६ ॥

अन्त्र “अन्त्र” पुरीतत् “परितत्” ये २ आंतों के नाम हैं इनमें “पुरीतत्” वाचस्पतिकोष के प्रमाण से पुंनपुंसक में रहता है। गुल्म, प्लीहा (न्) और टावन्त ‘प्लीहा’ ये २ बाईं कोख में स्थित विशेष मांसपिण्ड तापतिल्ली या पिच्छही के नाम हैं। वस्नसा, स्नायु ये दोनों खीलिङ्ग में रहते हैं ये २ वायुवाहिनी नाडी कि जिससे अङ्ग प्रत्यङ्ग के जोड़ बँधे रहते हैं उस नाडी या नस के नाम हैं। कालखण्ड, यकृत् ये २ दाहिनी कोख में स्थित मांसपिण्ड या कलेजा के नाम हैं ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ॥ ६६ ॥

^{स.} ^{स.} ^{स.} ^{स.}
 लार, कीचड़ सृणिका स्यन्दिनी लाला दूषिका (नेत्रयोर्मलम्)।

^{न.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{न.} ^{न.}
 मूत्र मूत्रं प्रस्राव उच्चारवस्करो शमलं शकृत् ॥ ६७ ॥

^{न.} ^{न. पु. न.} ^{स.} ^{स.}
 विषा गूथं पुरीषं वर्चस्क (मस्त्री) विष्ठाविषे (स्त्रियौ)।

सृणिका “सृणिका” स्यन्दिनी, लाला ये ३ लार के नाम हैं। नेत्रों के मल को दूषिका “दूषि, दूषी, दूषीका” कहते हैं यह १ कीचड़ का नाम है (नासा-

मलं तु सिंघाणं पिञ्जूपः कर्णयोर्मलम्) नासिका के मल को 'सिंघाण' कहते हैं यह १ नाक के मल का नाम है । कानों के मल को ' पिञ्जूप ' कहते हैं यह १ कानों के खंड का नाम है । मूत्र, प्रस्राव ये २ मूत्र के नाम हैं । उच्चार, अवस्कर, शमल, शकृत्, पुरीष, गृथ, वर्चस्क, विष्टा, " विट्-विपा, विट् विशा " ये ६ विष्टा के नाम हैं इनमें वर्चस्क पुंनपुंसक में रहता है और विष्टा, विट् ये दोनों स्त्रीलिङ्ग कहाते हैं ॥ ६७ । ३ ॥

कपाल हड्डी

पु.

पु.न.

न.

न.

न.

(स्या)त्कर्परः कपालो (ऽस्त्री) कीकसं कुल्यमस्थि (च) ६८ ॥

मांजरि रीड़

पु.

स.

(स्या)च्छरीरास्थि (न) कङ्कालः (पृष्ठास्थि तु) कशेरुका ।

खोपड़ी पशुड़ी

स.

स.

(शिरोस्थानि) करोटिः (स्त्री) पार्श्वस्थानि (तु) पशुका ॥ ६९ ॥

कर्पर, कपाल ये २ शीश की हड्डी के टुकड़े के नाम हैं । इनमें ' कपाल ' पुंनपुंसक में रहता है । कीकस, कुल्य, अस्थि ये ३ हाड़मात्र के नाम हैं ' कङ्काल ' शरीर की हड्डी में रहता है यह १ मांजरि का नाम है ' कशेरुका ' पीठ की हड्डी में रहता है यह १ रीड़ का नाम है । " करोटि-करोटी " शीश की हड्डी में वर्तता हुआ स्त्रीलिङ्ग में रहता है यह १ खोपड़ी का नाम है । पशुका, " पशू " यह पार्श्वों की हड्डी में रहता है यह १ पशुड़ी (पांजर की हड्डी) का नाम है ॥ ६८ । ६९ ॥

न.

पु.

पु.

पु.

न.

अङ्ग

अङ्गं प्रतीकोवयवोऽपघनो (ऽथ) कलेवरम् ।

न.

न.

न.

न.

न.

पु.

गात्रं वपुः संहननं शरीरं वर्ष्म विग्रहः ॥ ७० ॥

पु.

पु.न.

स.

स.

स.

देह

कायो देहः (स्त्रीवपुंसोः) स्त्रियां मूर्तिस्तनुस्तनूः ।

अङ्ग, प्रतीक, अवयव, अपघन ये ४ देह के अवयवों यानी हिस्सों के नाम हैं । कलेवर, गात्र, वपुः (स्) संहनन, शरीर, वर्ष्म (न्) विग्रह, काय, देह, मूर्ति, तनु " तनु " (स्) तनू ये १२ देह के नाम हैं इनमें ' देह ' पुंनपुंसक में रहता है मूर्ति, तनु, तनू ये तीनों स्त्रीलिङ्ग में रहते हैं ॥ ७० । ३ ॥

न.

न.

पु.

पु.

पु.

पु.न.

पादाम पैर पादाग्रं प्रपदं पादः पदं हि श्वरणो (ऽस्त्रियाम्) ॥ ७१ ॥

स.

पु.न.

पु.

गण्डा पैर (तद्ग्रन्थी) घुटिके गुरुफौ (पुमा) न्पार्णि (स्तयोरधः) ।

स.

स.

पु.न.

पु.न.

पु.न.

जंघा जांघ

जङ्घा (तु) प्रसृता जानूरुपर्वाष्ठीव (दस्त्रियाम्) ॥ ७२ ॥

पादाम्र, प्रपद ये २ पैर के अग्रभाग के नाम हैं । पाद, पद, “ पद ” अंहि, “ अङ्घ्रि ” चरगा ये ४ चरगा के नाम हैं । इनमें पाद, पद पुंनपुंसक हैं और चरगा स्त्रीलिङ्ग में नहीं रहता वरन पुंनपुंसक में बना रहता है पैरों की गांठों को घुटिका “ घुटि, घुटी ” गुल्फ ये २ टखना या पैर की गांठि (गंठे) के नाम हैं इनमें ‘घुटिका’ स्त्रीलिङ्ग द्विवचनान्त है और ‘गुल्फ’ पुंनपुंसक है । उन गुल्फों के निचले भाग को ‘पाथिग’ कहते हैं यह पुंलिङ्ग में रहता है यह १ पैड़ी का नाम है । जङ्घा, प्रसृता ये २ जङ्घा के नाम हैं । जानु, ऊरुपर्व, अष्टीवन ये तीनों पुंनपुंसक में रहते हैं ये ३ जानु या घुटनू के नाम हैं ॥ ७१ ॥ ७२ ॥

निर्गं^{न.}ह जांघ का^{पु.} सक्थि (क्लीबे पुमा) नूरु^{पु.} (स्तत्सन्धिः पुंसि) वङ्क्षणः ।
जोड़ गुदा^{न.} न.^{पु.} मूत्राशय^{पु.स.} गुदं त्वपानं पायु (नी) बस्ति (नीभेरधोद्वयोः) ॥ ७३ ॥

सक्थि, ऊरु ये २ जानु के ऊपरले भाग या निर्गंह के नाम हैं इनमें ‘सक्थि’ नपुंसक है और ‘ऊरु’ पुंलिङ्ग में रहता है । उस ऊरु की सन्धि (जोड़) को ‘वङ्क्षण’ कहते हैं वह पुंलिङ्ग में रहता है यह १ जांघों के जोड़ का नाम है । गुद, अपान, पायु ये ३ गुदा या विष्टा निकलने की मार्ग के नाम हैं इनमें ‘पायु’ पुंलिङ्ग में रहता है । नाभि के निचले भाग को बस्ति, बस्ती कहते हैं यह पुंलिङ्ग व स्त्रीलिङ्ग में रहता है यह १ मूत्राशय का नाम है ॥ ७३ ॥

कमर स्त्री की^{पु.} कमरका^{न.}पिछला^{स.} कटो^{स.} (ना) श्रोणिफलकं कटिः श्रोणिः ककुद्घती ।
भाग कमर का^{पु.} अगिला भाग^{न.} (पश्चा) न्नितम्बः (स्त्रीकट्याः) (क्लीबेतु) जघनं (पुरः) ७४ ॥

कट, श्रोणीफलक, कटि “ कटी ” श्रोणि, “ श्रोणी ” ककुद्घती ये ५ कमर के नाम हैं । इनमें ‘कट’ पुंलिङ्ग में रहता है और श्रोणीफलक नपुंसक है । स्त्रीकी कमर के पिछले भाग को ‘नितम्ब’ कहते हैं यह १ स्त्रीकी कमर के पिछले भाग (चूतर) का नाम है । स्त्रीकी कमर के अगिले भाग को ‘जघन’ कहते हैं यह १ स्त्री की नाभि या पेडू का नाम है यह नपुंसकलिङ्ग में रहता है ॥ ७४ ॥

नितम्बों के गड्ढे^{न.} (कूपकौ तु नितम्बस्थौ द्वयहीने) ककुन्दरे ।

कूले भग, लिङ्ग^{स.} (स्त्रियां) स्फिचौ कटिप्रोथावुपस्थो^{पु.} (वक्ष्यमाणयोः) ७५ ॥

नितम्बों में टिकनेवाले, पृष्ठवंश के निचले भाग में विद्यमान कूपरूप गड्ढों को

‘ककुन्दर या कुकुन्दर’ कहते हैं ये स्त्री पुंलिङ्ग से हीन होकर नपुंसक में रहते हैं यह १ पीठवांस के अधोभाग में स्थित गड़हों का नाम है । स्फिक् (चू) कटिप्रोथ, “कटी, प्रोथ” ये २ कूले के नाम हैं इनमें चकारान्त स्फिक् स्त्रीलिङ्ग में रहता है एकवचन में स्फिक् कटिप्रोथः द्विवचन में स्फिचौ, कटिप्रोथौ कहाते हैं । कहे जाने वाले भग, लिङ्गों को ‘उपस्थ’ कहते हैं यह १ भगलिङ्ग का नाम है ॥ ७५ ॥

भग-लिङ्ग न. पु.स. पु. न. न. न.
भगं योनि (द्वयोः) शिशनो मेढ्रं मेहनशेफसी ।

वृषण, मेकड़ पु. पु. पु. न.
मुष्कोऽण्डकोशो वृषणः (पृष्ठवंशाधरे) त्रिकम् ॥ ७६ ॥

भग, योनि “योनी” ये २ भग के नाम हैं इनमें ‘योनि’ स्त्रीलिङ्ग व पुंलिङ्ग में रहता है । शिशन, मेढ्र, मेहन, शेफ (स्) शेप (स्) “शेफ, शेप” ये ४ लिङ्ग के नाम हैं । इनमें ‘शिशन’ पुंलिङ्ग है और मेढ्र, मेहन, शेफ ये तीनों नपुंसक में रहते हैं उनमें शेफ सान्त व अदन्त है । मुष्क, अण्डकोश—“अण्डकोष” वृषण ये ३ अण्डकोष के नाम हैं । पृष्ठवंश के अधोभाग में तीन हड्डियों से बने स्थानको ‘त्रिक’ कहते हैं यह १ मेकड़ का नाम है ॥ ७६ ॥

पेट कुच १ पु. पु. पु.न. न. पु. पु.
पिचण्डकुक्षी जठरोदरतुन्दं स्तनौ कुचौ ।

कुचाग्र गोद पु.न. न. स.न. न.
चूचुकं (तु) कुचाग्रं स्या(न्नना)क्रोडं भुजान्तरम् ॥ ७७ ॥

पिचण्ड, “पिचिण्ड” कुक्षि, “कुक्ष” जठर, उदर, तुन्द ये ५ जठर यानी पेट के नाम हैं । स्तन, कुच ये २ कुचों (चूचियों) के नाम हैं । चूचुक, कुचाग्र ये २ कुचों के अग्रभाग या चूचियों की ढेपुनियों के नाम हैं इनमें “चूचुको ना कुचाननमिति” (ग्नकोषः) इस कोष के प्रमाण से ‘चूचुक’ नपुंसक होकर पुंलिङ्ग भी है । क्रोड, भुजान्तर ये २ कोर या गोद के नाम हैं इनमें ‘क्रोड’ पुंलिङ्ग नहीं है बरन स्त्री नपुंसक में रहता है ॥ ७७ ॥

ज्वाती पीठ न. न. न. न.
उरो वत्सं (च) वक्ष (श्च) पृष्ठन्तु (चरमं तनोः) ।

कन्धे हँसली पु. न. पु.न. न.
स्कन्धो भुजशिरोऽसो(ऽस्त्री)(सन्धी तस्यैव) जन्तुणी ७८ ॥

उरः (स्) वत्स, वक्षः (स्) ये ३ ज्वाती के नाम हैं अथवा कितेक आचार्यों के मतमें क्रोड, भुजान्तर, उरः, वत्स, वक्षः ये ५ वक्षस्थल के नाम हैं । शरीर के

पिछले भागको 'पृष्ठ' कहते हैं यह १ पीठ का नाम है । स्कन्धः (स्) स्कन्ध, भुजशिरः, (स्) अंस " अंश " ये ३ कन्धों के नाम हैं । इनमें स्कन्ध सान्त व अदन्त होकर पुंनपुंसक है और 'अंस' स्त्रीलिङ्ग नहीं है वरन पुंनपुंसक में रहता है उसकी सन्धि को 'जत्रु' द्वित्व में 'जत्रुणी' कहते हैं यह १ हँसुली का नाम है ॥ ७८ ॥

कांख बगल ^{न.} बाहुमूले ^{पु.} (उभौ) ^{पु.न.} कक्षौ ^{पु.} पार्श्व ^{पु.न.} (मस्त्री तयोरधः) ।

^{पु.न.} शरीर कामध्य ^{पु.न.} मध्यमं ^{पु.न.} चावलग्नं (च) ^{पु.न.} मध्योऽस्त्री ^{पु.न.} द्वौ परौ द्वयोः ॥ ७९ ॥

बाहुमूल, कक्ष ये २ कक्ष या कांख के नाम हैं । उन कांखों के निचले भाग को 'पार्श्व' कहते हैं वह पुंनपुंसक में रहता है यह १ कांखों के अधोभाग (बगल) का नाम है । मध्यम, अवलग्न, " विलग्न " मध्य ये ३ शरीर के मध्य या कमर के नाम हैं ये तीनों पुंनपुंसक में रहते हैं ॥ ७९ ॥

^{पु.स.} भुजा कोहनी ^{पु.स.} भुजबाहु ^{पु.} प्रवेष्टो ^{पु.} दोः (स्यात्) ^{पु.स.} कफोणिस्तु ^{पु.स.} कूर्परः ।

^{पु.} ऊपरला भाग ^{पु.} निचला भाग (अस्योपरि) ^{पु.} प्रगण्डः (स्यात्) ^{पु.} प्रकोष्ठ (स्तस्यचाप्यधः) ॥ ८० ॥

भुज, " भुजा " बाहु, वाह, " बाह्या " प्रवेष्ट, दोः (स्) " दोषा " ये ४ भुजा या बाहु के नाम हैं । इनमें भुज, बाहु ये दोनों स्त्री, पुंलिङ्ग में रहते हैं । 'प्रवेष्ट' पुंलिङ्ग है और 'दोः' पुंलिङ्ग है व स्त्रीलिङ्ग में 'दोषा' होता है । कफोणि, कफोणी, " कफणि, कफणी " कूर्पर, " कूर्परा " ये २ कोहनी के नाम हैं । इस कोहनी के ऊपरले भाग को 'प्रगण्ड' कहते हैं यह १ कोहनी के ऊर्ध्वभाग का नाम है और कोहनी के निचले भाग को 'प्रकोष्ठ' कहते हैं यह १ मणिबन्धपर्यन्त कोहनी के अधोभाग का नाम है ॥ ८० ॥

^{पु.} पहुँचा बाहिरी (मणिबन्धादाकनिष्ठं करस्य) ^{पु.} करभो (बहिः) ।

^{पु.} भाग हाथ ^{पु.} तर्जनी ^{पु.} पञ्चशाखः ^{पु.} शयः ^{पु.} पाणिस्तर्जनी ^{स.} (स्यात्) ^{स.} प्रदेशिनी ॥ ८१ ॥

प्रकोष्ठ और हाथ की सन्धि को 'मणिबन्ध' कहते हैं उससे लेकर कनिष्ठापर्यन्त हाथ के मोटे बाहिरी भाग को 'करभ' कहते हैं यह १ कर के बाह्यभाग का नाम है । पञ्चशाख, शय, " शम " पाणि, " कर-हस्त " ये ३ हाथ के नाम हैं । तर्जनी, प्रदेशनी " प्रदेशिनी " ये २ अँगूठे के समीप रहनेवाली अँगुली के नाम हैं ॥ ८१ ॥

अंगुलियां अङ्गुल्यः करशाखाः (स्युः) पुंस्यङ्गुष्ठः प्रदेशिनी ।

गूढा समस्त अङ्गुली मध्यमानामिका(चापि)कनिष्ठा(चेति ताः क्रमात्)॥८२॥

अंगुलि, अंगुली बहुत्व में अंगुल्यः, “अंगुरि, अङ्गुरी, अंगुल ” करशाखा ये २ नाम अङ्गुलीमात्र के नाम हैं । ‘अङ्गुष्ठ’ यह पुल्लिङ्ग है यह १ अङ्गूठे का नाम है । ‘प्रदेशिनी’ यह १ तर्जनी का नाम है । ‘मध्यमा’ यह १ बिचली अङ्गुली का नाम है । ‘अनामा’ यह १ अनामिका अङ्गुली का नाम है और ‘कनिष्ठा’ यह १ कनीनी, कनीनिका या छोटी अङ्गुली का नाम है इस प्रकार उन पांचों अङ्गुलियों को क्रम से जानना चाहिये ॥ ८२ ॥

नख=नह तीन पुनर्भवः कररुहो नखो(ऽस्त्री)नखरो(ऽस्त्रियाम) ।

प्रमाण विशेष प्रादेशतालगोकर्णा (स्तर्जन्यादियुते तते) ॥ ८३ ॥

पुनर्भव, “पुनर्नव ” कररुह, नख, नखर “नखरा” ये ४ नाखूनके नाम हैं । इनमें ‘नख’ पुंनपुंसक है और नखर भी पुंनपुंसक है परन्तु अमरमाला के प्रमाण से तीनों लिङ्ग में पाया जाता है । तर्जनी आदि तीनों अङ्गुलियों समेत फैले अङ्गूठे को प्रादेश आदि क्रम से कहते हैं । जैसे तर्जनी सहित फैले अङ्गूठे को प्रादेश या प्रदेश, मध्यमा समेत फैले अङ्गूठे को ‘ताल’ और अनामिका समेत फैले अङ्गूठे को ‘गोकर्ण’ कहते हैं यह एक २ क्रमसे तर्जन्यादि समेत फैले अङ्गूठे का नाम है ॥ ८३ ॥

वित्ता (अङ्गुष्ठे सकनिष्ठे स्या) द्वितस्तिर्द्वादशाङ्गुलः ।

चटकना (पाणौ) चपेटप्रतलप्रहस्ता (विस्तृताङ्गुलौ) ॥ ८४ ॥

कनिष्ठा समेत फैले अङ्गूठे को वितस्ति, द्वादशाङ्गुल कहते हैं ये २ वित्ता—त्रीता या बिलस्तके नाम हैं इनमें वितस्ति पुंस्त्रीलिङ्ग है और द्वादशाङ्गुल पुल्लिङ्ग है । चपेट “चर्पट, चपट” प्रतल ‘तल’ प्रहस्त ये ३ फैली अङ्गुलीवाले हाथ या चपेटों के नाम हैं ॥ ८४ ॥

इदथा चटकना(द्वौ संहतौ)सिंहतलः (प्रतलौ वामदक्षिणौ) ।

पसर बैङ्गरी (पाणिर्निकुब्जः)प्रसृति(स्तौ युता)वज्रलिः(पुमान्)८५॥

“अङ्गुलस्तु यवो मतः” (इत्यमरदत्तः) “अङ्गुलो ना यवमानमिति” (वाचस्पतिः) तत्राहो-
र्वाङ्गुलकाङ्गुलः ॥

वाम और दक्षिण दोनों हाथ तर ऊपर मिले हों तो उसे 'सिंहतल' या 'संह-तल' कहते हैं यह १ तुहत्था चटकने का नाम है। टेढ़ा किया हुआ हाथ 'प्रस्तुति' या 'प्रस्तुत' कहाता है यह १ 'पसर' का नाम है और जो दो प्रस्तुत मिलें तो उसे "अञ्जलि" कहते हैं यह १ अंजुरी का नाम है यह पुंलिङ्ग में रहता है ॥ ८५ ॥
हाथ मुण्डाहाथ पु.

कनिष्ठारहित (प्रकोष्ठे विस्तृतकरे) हस्तो (मुष्टया तु बद्धया) ।

पु.स. पु.स.
मूढनाला हाथ सरत्निः स्यादरत्नि (स्तु निष्कनिष्ठेन मुष्टिना) ॥ ८६ ॥

जिसमें हाथ फैलाया गया हो ऐसे 'प्रकोष्ठ' यानी कोहनी के निचले भाग को हस्त (हाथ) कहते हैं यह चौबीस अङ्गुल का सब सिद्धान्तों में कहा गया है यह १ हाथ का नाम है फिर वही बँधी मूठी से जाना गया हो तो 'रत्नि' कहते हैं यह १ मुण्डा हाथ का नाम है। फैली कनिष्ठा से संयुक्त मूठी से उपलक्षित हाथ को 'अरत्नि' कहते हैं यह १ कानी अंगुली को छोड़ मूठी से उपलक्षित हाथ का नाम है ॥ ८६ ॥

पु.
फैला हाथ व्यामो (बाह्योः सकरयोस्ततयोस्तिर्यगन्तरम्) ।

पु.स.न.
ऊपर उठा हाथ ऊर्ध्वविस्तृतदोःपाणि नृमाने पौरुषं (त्रिषु) ॥ ८७ ॥

टेढ़े फैले हाथों समेत बाहुओं के अन्तर (विचले भागको) 'व्याम' कहते हैं यह १ फैले हाथों का नाम है। जिसने भुजा और पाणि को ऊर्ध्वभागमें फैलाया है उस पुरुषका जो प्रमाण है उसे 'पौरुष' कहते हैं वह तीनों लिङ्ग में रहता है यह १ ऊपर उठे हाथों का नाम है और यह वाच्यलिङ्ग भी कहाता है जैसे "पौरुषो नदः, पौरुषी नदी, पौरुषं सरः" आदि होते हैं ॥ ८७ ॥

कण्ठ ग्रीवा पु.स.न. पु. स. स. स.
तीन रेखावाली कण्ठो गलो (थ) ग्रीवायां शिरोधिः कन्धरे (त्यपि) ।

स. पु.स. स. स.
ग्रीवा घांटी कम्बुग्रीवा (त्रिरेखा सा) ऽवदुर्घाटा कृकाटिका ॥ ८८ ॥

कण्ठ "कण्ठा, कण्ठी" गल ये २ ग्रीवा के अग्रभाग या कण्ठके नाम हैं। ग्रीवा, शिरोधि, कन्धरा 'कन्धर' ये ३ ग्रीवा के नाम हैं। जो ग्रीवा तीन रेखाओं से संयुक्त हो उसे "कम्बुग्रीवा" कहते हैं यह १ शङ्खसमान ग्रीवा का नाम है। अवदु, घाटा, कृकाटिका ये ३ गला व शिरकी सन्धि के पिछले भाग या गले में ऊँचे भाग या घांटी के नाम हैं ॥ ८८ ॥

न. न. न. न. न. न. न.
मुख वक्रास्ये वदनं तुण्डमाननं लपनं मुखम् ।

न. स. स. स. स.
नासिका (क्लीबे)घ्राणं गन्धवहा घोणा नासा(च)नासिका॥८६॥

वक्त्र, आस्य, वदन, तुण्ड, आनन, लपन और मुख ये ७ मुख के नाम हैं ।
घ्राण, गन्धवहा, घोणा, नासा, “ नसा, नस्या ” नासिका ये ५ नासिका (नाक)
के नाम हैं इनमें “ कुल्या गन्धवहा घोणा घ्राणं नासा च नासिका ” (इति
वात्यः) इस कोष के प्रमाण से ‘ घ्राण ’ नपुंसक है ॥ ८६ ॥

पु. पु. पु. न.
ओष्ठ, दाढी ओष्ठाधरौ(तु) रदनच्छदौ दशनवाससी ।

न. पु. पु. पु.स.
गाल, कनपटी (अधस्ता) चिबुकं गण्डौ कपोलौ (तत्परो) हनुः ॥ ८७ ॥

ओष्ठ, अधर, “ओष्ठौ, अधरौ, ओष्ठाधरौ” रदनच्छद, दशनवासः (स) ये ४ ओष्ठ
के नाम हैं अथवा कितेक आचार्यों के मत में ऊपरले ओष्ठ को ओष्ठ और निचले
ओष्ठ को अधर कहते हैं । निचले अधर के अधोभाग को ‘चिबुक’ या ‘चिबु’ कहते
हैं यह १ दाढ़ी का नाम है । गण्ड, कपोल ये २ गाल के नाम हैं । उनमें नेत्र और
कपोल के मध्यदेश को आचार्यों ने “ गण्ड ” कहा है । उन कपोलों से पर
और चिबुक के अधोभाग को हनु या हनू कहते हैं यह १ कनपटी का नाम है
यह स्त्री पुंलिङ्ग में बना रहता है ॥ ८७ ॥

पु. पु.न. पु. पु. न. न.
दांत, तालु, रदना दशना दन्ता रदास्तालु (तु) काकुदम् ।

जीभ स. स. स. न.
ओष्ठका किनारा रसज्ञा रसना जिह्वा (प्रान्तावोष्ठस्य) सूक्ष्मणी ॥ ८८ ॥

रदन, दशन, दन्त (दन्) रद ये ४ दांत के नाम हैं । इनमें दशन पुंनपुंसक में
रहता है और ये बहुत्व से बहुवचनान्त हैं । तालु, काकुद ये २ तालु के नाम हैं ।
रसज्ञा, रसना, ‘ रशना ’ जिह्वा ये ३ जीभ के नाम हैं इनमें ‘ रसना ’ स्त्री
नपुंसक में व ‘जिह्वा ’ पुंस्त्रीलिङ्ग में रहता है । बायें व दाहिने ओठों के किनारों को
‘ सूक्ष्मणी ’ कहते हैं यह १ ओठों के किनारों का नाम है यह नकारान्त नपुंसक
होकर द्विवचनान्त है या कवयुक्त (सूक्ष्मणी) है या डीबन्त है या अदन्त सूक्ष्म है या
इकारान्त नपुंसक ‘ वारि ’ के समान जानना चाहिये ॥ ८८ ॥

न. न. पु. स.
भाक्, भौह, ललाटमलिकं गोधि (रुध्वे हग्भ्यां) भ्रुवौ (स्त्रियौ) ।

भ्रूमध्य, पु.न. स. स.
नेत्र, तिल कूर्च (मस्त्रीभ्रुवोर्मध्यं) तारका (क्ष्णः) कनीनिका ॥ ८९ ॥

ललाट, अलिक, “अलीक” गोधि “भाल” ये ३ माथ या ललाट क नाम हैं इनमें “गोधि” पुंनपुंसक में रहता है । आंखों के ऊपरले भाग को “भ्रुवौ” कहते हैं एकत्व में ‘भ्रूः’ द्वित्व में “भ्रुवौ” होता है यह स्त्रीलिङ्ग में रहता है यह १ भौहों का नाम है । नासिका के ऊपर भौहों के बिचले भाग को ‘कूर्च’ कहते हैं यह पुंनपुंसक में रहता है । आंखों के बीच जो कृष्णमण्डल है उसे ‘तारका’ व ‘कनीनिका’ कहते हैं ये २ आंखों के तिलके नाम हैं ॥ ६२ ॥

आंख न. न. न. न. न. न.
लोचनं नयनं नेत्रमीक्षणं चक्षुरक्षिणी ।

स. स. न. न. न. न. न.
आंसू दृग्दृष्टी चासु नेत्राम्बु रोदनं चास्रमश्रु (च) ॥ ६३ ॥

लोचन, नयन, नेत्र, ईक्षण, चक्षु (स्) उदन्त भी ‘चक्षु’, अक्षि “अक्ष” दृक्, दृष्टि ये ८ आंखों के नाम हैं इनमें ‘लोचन’ से लेकर अक्षि पर्यन्त नपुंसक हैं और दृक् (श्) दृष्टि ये २ स्त्रीलिङ्ग में रहते हैं । अस्रु, नेत्राम्बुरोदन, अस्त्र, ‘अश्र’ अश्रु ये ५ आंसू के नाम हैं ॥ ६३ ॥

आंखों के पु. पु.
किनारे अपाङ्गौ (नेत्रयोरन्तौ) कटाक्षो (ऽपाङ्गदर्शने) ।
किनारों पु. पु. न. स. पु.न. न.
से देखना पु.
कान कर्णशब्दग्रहौ श्रोत्रं श्रुतिः(स्त्री)श्रवणं श्रवः ॥ ६४ ॥

नयनों के अन्तों (किनारों) को ‘अपाङ्ग’ कहते हैं एकत्व में ‘अपाङ्गः’ और द्वित्व में ‘अपाङ्गौ’ होता है यह १ आंखों के किनारों का नाम है । अपाङ्गों से देखने व चेष्टा करनेको ‘कटाक्ष’ कहते हैं यह १ आंखों के किनारों से देखने का नाम है अथवा कटाक्ष, अपाङ्गदर्शन ये २ नेत्रप्रान्त से देखने के नाम हैं । कर्ण, शब्दग्रह, श्रोत्र, श्रुति, श्रवण और श्रवः (स्) या अदन्त श्रव ये ६ कान के नाम हैं इनमें ‘श्रुति’ स्त्रीलिङ्ग व ‘श्रवण’ पुंनपुंसक है ॥ ६४ ॥

न. न. न. पु. पु.न.
शिर, मस्तक उत्तमाङ्गं शिरःशीर्षं मूर्धा(ना)मस्तको(ऽस्त्रियाम्) ।

पु. पु. पु. पु. पु. पु.
केश, बाल चिकुरः कुन्तलो बालः कचः केशः शिरोरुहः ॥ ६५ ॥

उत्तमाङ्ग, शिरः (स्) ‘शिर’ शीर्ष, मूर्धा (न्) मस्तक ‘मस्त’ ये ५ शिर के नाम हैं इनमें शिर सान्त व अदन्त है जैसे ‘शिरांसि पेतुरन्येषाम्’ अदन्त में जैसे “निच-कर्त शिराम्प्रौणिः” (इति महाभारते) नान्त ‘मूर्धा’ पुलिङ्ग में है और ‘मस्तक’ पुंनपुंसक में रहता है । चिकुर “चिकूर” कुन्तल, बाल, कच, केश और शिरोरुह ये ६ केशों (बालों) के नाम हैं ॥ ६५ ॥

केशसमूह (तद्वन्दे) केशिकं केश्यमलकाश्चूर्णकुन्तलाः ।
 टेढ़े बाल पु. पु. पु.
 ललाट पर पु. पु. पु.
 भुके जुलकै (ते ललाटे) भ्रमरकाः काकपक्षः शिखण्डकः ॥ ६६ ॥

केशिक, केश्य ये २ केशसमूहों के नाम हैं और ये दोनों नपुंसक में रहते हैं ।
 अलक, चूर्णकुन्तल ये २ टेढ़े बालों के नाम हैं और पुंलिङ्ग होकर एकत्व की
 विवक्षा में एकवचनान्त व बहुत्व की विवक्षा में बहुवचनान्त रहते हैं । और यदि वे
 बाल ललाट पे लम्बायमान होकर प्रतीत हों तो उनको 'भ्रमरक' कहते हैं यह १
 ललाट पर भुके केशों का नाम है और पुंलिङ्ग में रहता है । काकपक्ष, शिखण्डक,
 "शिखाण्डक, शिखण्ड" ये २ कुमारों की चोटी या जुलकों के नाम हैं ये दोनों
 पुंलिङ्ग में रहते हैं ॥ ६६ ॥

पटिया चूड़ा कवरी केशवेशो (ऽथ) धम्मिल्लः (संयताः कचाः) ।
 स. पु. पु.
 स. स. स. स. स.
 चोटी जटा शिखा चूड़ा केशपाशी (व्रतिनस्तु) जटा सटा ॥ ६७ ॥

कवरी, केशवेश ये २ केश बांधने की रचना (पटिया) के नाम हैं । इनमें 'कवरी'
 खीलिङ्ग और 'केशवेश' पुंलिङ्ग में रहता है । यदि मोती व मालादिकों से बँधे या
 गुथे केश हों तो उनको "धम्मिल्ल" कहते हैं यह १ जूड़ा का नाम है यह पुंलिङ्ग
 में रहता है । शिखा, चूड़ा, केशपाशी ये ३ चोटी के नाम हैं । व्रत करनेवाले
 तपस्वी आदिकों की शिखा को 'जटा' या 'सटा' कहते हैं ये २ तपस्वी की जटा के
 नाम हैं ॥ ६७ ॥

वेणी लुटरी वेणिः प्रवेणी शीर्षण्यशिरस्यौ (विशदे कचे) ।
 स. स. पु. पु.
 साक पु. पु. पु.
 केशसमूह पाशः पक्ष (श्च) हस्त (श्च कलापार्थाः कचात्परे) ॥ ६८ ॥

वेणि "वेणी" प्रवेणि "प्रवेणी" ये २ सर्पाकार बनाये केश (वेनी) के नाम हैं अ-
 थवा तैल आदि लगाने के कारण लटरे बाल होजानेके नाम हैं । शीर्षण्य, शिरस्य
 ये २ स्नानादिकों से निर्मल या सुन्दर केश के नाम हैं । इनमें "शीर्षण्यं तु शीर्षके,
 सुकेशे पुंसि" इस (मेदिनीकोष) के प्रमाण से 'शीर्षण्य' पुंलिङ्ग में रहता है ।
 कचवाचक से परे हुए पाश आदि तीनों केश समूहवाची होते हैं जैसे कचपाश,
 केशपाश, केशपक्ष और कुन्तलहस्त आदि कहाते हैं ये ३ केशसमूह के नाम हैं ॥ ६८ ॥

पु.न. न. न. न.
रोम दाढी तनूरुहं रोम लोम (तद्वद्धौ) श्मश्रु (पुंमुखे) ।

मोक्ष अलंकार पु. पु. न. न. न.
की शोभा आकल्पवेपौ नेपथ्यं प्रतिकर्म प्रसाधनम् ॥ ६६ ॥

तनूरुह, रोम, लोम ये ३ रोवां या लोम के नाम हैं । इनमें अदन्त 'तनूरुह' पुंनपुंसक है और नान्त रोम, लोम ये दोनों नपुंसक में रहते हैं । पुरुष के मुख में लोम के बढ़ने पर उन रोमों को 'श्मश्रु' कहते हैं यह १ दाढ़ी या मोक्ष का नाम है । आकल्प, वेप "वेश" नेपथ्य, प्रतिकर्म, प्रसाधन ये ५ किये हुए अलंकार की शोभा के नाम हैं ॥ ६६ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
अलंकार करो (दशैते त्रिष्व) लंकर्तालंकरिष्णुश्च मण्डितः ।

वाला पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
अलंकारयुत प्रसाधितोऽलंकृतश्च भूषितश्च परिष्कृतः ॥ १०० ॥

ये कहे जानेवाले 'अलंकर्ता' से लेकर 'रोचिष्णु' पर्यन्त दश शब्द तीनों लिङ्ग में होते हैं या वाच्यलिङ्ग कहाते हैं । अलंकर्ता, अलंकरिष्णु ये २ अलंकार करनेवाले के नाम हैं । मण्डित, प्रसाधित, अलंकृत, भूषित और परिष्कृत ये ५ अलंकार किये हुए के नाम हैं ॥ १०० ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. स. स.
अलंकारादिकों विभ्राद्भ्राजिष्णुरोचिष्णुभूषा (तु स्या) दलंक्रिया ।

से अति शोभित पु. न. पु. न.
अलंकारस्त्वाभरणं परिष्कारो विभूषणम् ॥ १०१ ॥

गृह्णार गहना न. न. पु.न.
मुकुट मण्डनं (चाथ) मकुटं किरीटं (पुंनपुंसकम्) ।

विभ्राद् (ड्) भ्राजिष्णु, रोचिष्णु ये ३ महाशोभायमान के नाम हैं । इनमें क्तिबन्त जकारान्त विभ्राज् है एकत्व में विभ्राट् द्वित्व में विभ्राजौ बहुत्व में विभ्राजः होता है । भूषा, 'भूषण' अलंक्रिया ये २ भूषण क्रिया के नाम हैं । अलंकार, आभरण, परिष्कार 'परिष्कार' विभूषण, मण्डन ये ५ अलंकार (गहना) के नाम हैं । मुकुट, 'मुकुट' किरीट ये २ किरीट (शिरोभूषण) के नाम हैं इनमें मुकुट नपुंसक है और किरीट पुंनपुंसक में रहता है ॥ १०१ ॥ ३ ॥

चोटीकी मणि पु. न. पु.
हारके बीच की चूडामणिः शिरोरत्नं तरलो (हारमध्यगः) ॥ १०२ ॥

नकी मणि चोटी स. स. स. स.
की सोनेकी पट्टाबालपाश्या पारितथ्या पत्रपाश्या ललाटिका ।

कर्णभूषण या स. न. न. न.
तर्की कुण्डल कर्णिका तालपत्रं (स्या) त्कुण्डलं कर्णविष्टनम् ॥ १०३ ॥

चूडामणि, शिरोरत्न ये २ चोटी की मणि या शीशमणि के नाम हैं । हार के बीच में प्राप्त महामणि को 'तरल' कहते हैं यह १ हार के मध्यगत बड़ीमणि का नाम है । बालपाश्या, पारित्य्या ये २ सीमन्तभूषण या स्वर्णपट्टी के नाम हैं । पत्रपाश्या, जलाटिका ये २ बन्दी या टीका के नाम हैं । कर्णिका, तालपत्र या ताडपत्र ये २ कर्णभूषण (कर्णफूल या तर्की) के नाम हैं यहां 'ताटङ्क' भी पढ़ा जाता है यह १ सोने से बनी ढारों का नाम है । कुण्डल, कर्णवेष्टन ये दो कुण्डलों के नाम हैं ॥ १०२ । १०३ ॥

कण्ठा, कण्ठी न. स. न. स.

लम्बीकण्ठी **त्रैवेयकं कण्ठभूषणलम्बनं (स्या) लललन्तिका ।**

सोने की लम्बी स. स.

कण्ठी मोतियों (स्वर्णैः) **प्रासम्बिकाथोरःसूत्रिका(मौक्तिकैःकृता)१०४॥**

त्रैवेयक, " त्रैवेय, त्रैव " कण्ठभूषा ये २ कण्ठभूषण या कण्ठा के नाम हैं । लम्बन, ललन्तिका ये २ नाभिपर्यन्त लम्बीकण्ठी के नाम हैं यदि वही ललन्तिका सोने से बनाई गई हो तो उसे ' प्रासम्बिका ' कहते हैं यह १ सोने की लम्बी कण्ठी का नाम है । और यदि वही 'ललन्तिका' मोतियों से गुही जावे तो उसे 'उरसूत्रिका' कहते हैं यह १ मोतियों से गुथी कण्ठी का नाम है ॥ १०४ ॥

पु. स. पु.

मोतियोंका हार **हारो मुक्तावली देवच्छन्दो (सौ शतयष्टिकः) ।**

सौलरका हार पु. पु. पु.

(हारभेदा यष्टिभेदा) हुत्सगुत्सार्धगोस्तनाः ॥ १०५ ॥

पु. पु. स.

हारभेद **अर्धहारो माणवक एकावल्ये (कयष्टिका) ।**

स.

(सैव) नक्षत्रमाला (स्यात्सप्तविंशतिमौक्तिकैः) ॥ १०६ ॥

हार, मुक्तावली ये २ मोतियों के हार के नाम हैं । वही मुक्तावली सौ लरों या एकसौआठ लरों या ८१ लरों से बनाई गई हो तो उसे देवच्छन्द कहते हैं यह १ सौ लरवाले हार का नाम है । लरों के भेद से गुत्स आदि हारों के भेद होते हैं जैसे कि ३२ लरोंवाले हार को 'गुत्स' या 'गुच्छ' तथा २४ लरोंवाले हार को गुत्सार्ध या गुच्छार्ध कहते हैं, चार लरवाले हारको 'गोस्तन' बागह लरवाले हार को 'अर्धहार' बीस लरवाले हारको 'माणवक' और एक लरवाले हार को 'एकावली' कहते हैं और यदि वही एकावली २७ मोतियों से बनाई गई हो तो उसे 'नक्षत्रमाला' कहते हैं यह प्रत्येक का एक २ नाम है ॥ १०५ । १०६ ॥

पहुँची व कड़े ^{पु.}आवापकः ^{पु.}पारिहार्यः ^{पु. न.}कटको ^{पु. न.}वलयो (ऽस्त्रियाम्) ।

बाजूबन्द ^{पु.न.}आदि अंगूठी ^{पु.न.}केयूरमङ्गद (न्तुल्ये) ^{स.}अङ्गुलीयकमूर्मिका ॥ १०७ ॥

आवापक, पारिहार्य, कटक, वलय ये ४ कङ्कण, कड़े या पहुँची आदि के नाम हैं । इनमें 'कटक' वलय ये दोनों पुंनपुंसक में वर्तते हैं । केयूर, अङ्गद ये २ बिजायठ या बाजूबन्द आदि के नाम हैं और ये दोनों समानार्थक व समानलिङ्ग होकर पुंनपुंसक में रहते हैं । अङ्गुलीयक, "अङ्गुरीयक" उर्मिका ये २ अंगूठी व छल्ले आदिकों के नाम हैं इनमें अङ्गुलीयक, अङ्गुरीयक ये २ पुंनपुंसक हैं और 'उर्मिका' स्त्रीलिङ्ग है ॥ १०७ ॥

मोहर करने- ^{स.}(साक्षरा)ङ्गुलिमुद्रा(सा)कङ्कणं ^{पु.न.}करभूषणम् । ^{न.}

व कड़ा अंगूठी ^{स.}स्त्रियों की ^{स.}(स्त्रीकट्यां)मेखलों ^{स.}काञ्ची ^{स.}ससकी ^{स.}रशना(तथा)॥१०८॥

करधनी पुरुषों ^{पु.स.न.}की करधनी ^{पु.स.न.}(क्रीबे)सारसनं(चाथ पुंस्कट्यां)शृङ्खलं(त्रिषु) ।

वही 'उर्मिका' राम नाम आदि अक्षरों से अङ्कित होवे तो वह 'अङ्गुलिमुद्रा' कहाती है । यह १ मोहर करने की अंगूठी का नाम है । कङ्कण, करभूषण ये २ कङ्कण या कड़े के नाम हैं इनमें 'कङ्कण' पुंनपुंसक है । मेखला, काञ्ची 'काञ्चि' ससकी, रशना "रसना" सारसन ये ५ स्त्रियों के कटिभूषण या करधनी के नाम हैं इनमें "सारसन" नपुंसक में रहता है और "शृङ्खल" यह त्रिलिङ्ग में वर्तमान रहता है यह पुरुषों की करधनी का नाम है ॥ १०८ । ३ ॥

बिछिया या ^{न.}पादाङ्गदं ^{पु.}तुलाकोटिर्मञ्जीरो ^{पु.न.}नूपुरो ^{पु.न.}(ऽस्त्रियाम्) ॥ १०९ ॥ ^{पु.}

पुंशुः ^{पु.}हंसकः ^{पु.}पादकटकः ^{स.}किङ्किणी ^{स.}क्षुद्रघण्टिका ।

बस्त्रों के बनाने ^{स.}का कारण ^{स.}(त्वक्फलकृमिरोमाणि) वस्त्रयोनि (दश त्रिषु) ॥११०॥

पादाङ्गद, तुलाकोटि "तुलाकोटी" मञ्जीर, "मञ्जील" नूपुर, हंसक, पादकटक ये ६ बिछिया या पायजेब के नाम हैं । अथवा पादाङ्गद, तुलाकोटि, "तुला-

१ "उर्मिः स्त्रीपुंसयोर्वीच्यां प्रकाशे वेगभङ्गयोरिति" (मेदिनी) ॥

२ "एका यष्टिर्भवेत्काञ्ची मेखला त्वष्टयष्टिका । रसना षोडशा ज्ञेयाः कलापः पञ्चविंशकः" इति भेदस्ति न विनियतः ॥

कोटी ये ३ बिद्धिया या पलनिया के नाम हैं । मञ्जीर, नृपुर ये २ पैजनियां के नाम हैं और ये दोनों पुनपुंसक हैं । हंसक, पादकटक ये २ कड़ा के नाम हैं । किङ्किणी, “किङ्किणि” “कङ्कणी” क्षुद्रचटिका ये २ घुंघुरू के नाम हैं । त्वक् आदि चार ‘वस्त्रयोनि’ वस्त्रों के कारण हैं इन कारणों को चार भांति होनेसे वस्त्र भी चारही प्रकार के हैं यह १ वस्त्रकारणों का नाम है । और कहे जानेवाले क्षौमादि को छोड़कर ‘वाल्क’ से लेकर ‘निष्प्रव’ पर्यन्त दश शब्द तीनों लिङ्ग में होते हैं और चकारसे ग्यारहवां ‘तन्त्रक’ भी तीनों लिङ्गमें रहता है ॥ १०६।११०॥

पु.स.न. १ पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
अलसी से बने वालकं(क्षौमादि)फालं‘तु’ कार्पासं बादरं (च तत्) ।
कपास से रचे पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
रेशमी कपड़े पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
पशमीना आदि कौशेयं कृमिकोशोत्थं राङ्गवं मृगरोमजम् ॥ १११ ॥

क्षौम आदि वस्त्रको ‘वाल्क’ कहते हैं यह १ अलसी आदि के बकले से बने वस्त्रका नाम है यानी अलसी से बने वस्त्र को ‘क्षौम’ शण से बने वस्त्र को ‘शाण’ और बकले से बने वस्त्र को ‘वाल्क’ कहते हैं । फाल, कार्पास, बादर ये ३ कपास से बने वस्त्र के नाम हैं । कौशेय, “कौषेय” कृमिकोशोत्थ ये २ रेशम से बने वस्त्रके नाम हैं । राङ्गव, मृगरोमज ये २ पशुरोमों से रचे वस्त्र के नाम हैं यहां पर मृग शब्दसे पशुमात्रका ग्रहण किया जाता है उसीसे कम्बल आदि वस्त्रों को भी ‘राङ्गव’ जानना चाहिये ॥ १११ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. न.
नवीन वस्त्र, अनाहतं निष्प्रवाणि तन्त्रकं (च) नवाम्बरं ।

न.
धोये वस्त्र (तत्स्यादु) द्रमनीयं (यद्धौतयोर्वस्त्रयोर्युगम्) ॥ ११२ ॥

अनाहत, निष्प्रवाणि, तन्त्रक, नवाम्बर ये ४ नये कपड़े के नाम हैं यानी कोरे मढ़िहाये वस्त्र के नाम हैं । इनमें ‘नवाम्बर’ यह नपुंसक है । धोयेहुए वस्त्रों का जो जोड़ा है उसे ‘द्रमनीय’ कहते हैं यह भी नपुंसक है यह १ धोये वस्त्रों के जोड़े का नाम है ॥ ११२ ॥

न. न. न. न.
धोये रेशमी पत्रोर्णं धौतकौशेयं बहुमूल्यं महाधनम् ।

दुराखा आदि पट्ट वस्त्र वस्त्रों न. न. पु.स.न. पु.स.न.
का किनारा क्षौमं दुकूलं (स्याद्) द्वे तु निवीतं प्रावृत्तं (त्रिषु) ॥ ११३ ॥

१ “वाल्कक्षौमफालकार्पासबादरकौशेयराङ्गवानाहतनिष्प्रवाणितन्त्रकाणि” (इति स्वामी) ॥

२ युगमित्यविवक्षितम् ॥

पत्रोर्णा, धौतकौशिय 'धौतकौषेय' ये २ धोये गेशमी कपड़े के नाम हैं । बहु-
मूल्य, महाधन ये २ शाल, दुशाले आदि के नाम हैं । क्षौम, 'क्षोम' दुकूल ये २
पट्टवस्त्र या पीताम्बर आदि के नाम हैं । और निवीत, निवीता, "निवृत्त" प्रावृत्त,
'प्रावृता' ये दोनों तीनों लिङ्ग में रहते हैं ये २ वस्त्रों के किनारे या बन्ध से बनेहुए
के नाम हैं ॥ ११३ ॥

वस्त्रों का बीर (स्त्रियां बहुत्वे वस्त्रस्य) दशाः (स्यु) वस्तयो (द्वयोः) ।
न. पु. पु. पु. स.
लम्बाई चौड़ाई दैर्घ्यमायाम आनाहः परिणाहो विशालता ॥ ११४ ॥

दशाः, वस्तयः ये २ वस्त्रों के दोनों किनारों या छीराके नाम हैं इनमें 'दशा'
स्त्रीलिङ्ग में नित्य बहुवचनान्त है और 'वस्ति' एकत्व में 'वस्तिः' और बहुत्व में 'वस्तयः'
होता है यह स्त्री, पुल्लिङ्ग दोनों के बहुवचन में रहता है । दैर्घ्य, आयाम, "आरोह"
आनाह ये ३ वस्त्रादिकों की लम्बाई के नाम हैं इनमें "दैर्घ्य" नपुंसक है ।
परिणाह, विशालता ये २ चौड़ाई, चकलाई, विस्तार या पनहा के नाम हैं । इनमें
'परिणाह' पुल्लिङ्ग है और विशालता स्त्रीलिङ्ग है ॥ ११४ ॥

न. न. पु. पु.
पुराना वस्त्र फटा पटञ्चरं जीर्णवस्त्रं (समौ) नक्तककर्पटौ ।

या चिथड़ा न. न. न. न. न.

वस्त्रमात्र वस्त्रमाच्छादनं वासश्चेलं वसनमंशुकम् ॥ ११५ ॥

पटञ्चर, जीर्णवस्त्र ये २ जीर्ण या पुराने वस्त्र के नाम हैं । नक्तक या 'नक्तक'
कर्पट ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ फटे या चिथड़े क-
पड़ों के नाम हैं । वस्त्र, आच्छादन, वासः (स्) चेल या चैल, वसन, मंशुक ये ४
वस्त्रमात्र के नाम हैं ॥ ११५ ॥

पु. पु.न. पु.प. पु.म.न.
अच्छेकपड़े मोटे सुचेलको पटोऽस्त्री (ना) वराशिः स्थूलशाटकः ।

कपड़े ओहार

पु.

पु.

पु.

पु.

कमल

निचोलः प्रच्छदपटः (समौ) रत्नककम्बलौ ॥ ११६ ॥

सुचेलक, पट ये २ अच्छे वस्त्र के नाम हैं इनमें 'पट' पुनपुंसक में रहता है ।
वराशि, 'वरासि' स्थूलशाटक ये २ मोटे कपड़े के नाम हैं इनमें 'वरासि' पुल्लिङ्ग
है व किसीके मत में पुनपुंसक है और 'स्थूलशाटक' तीनों लिङ्ग में रहता है ।

१ शोभनं चेलमेव स्वार्थे कम् स्वार्थिकाः प्रकृतितो लिङ्गवचनान्तरतिवर्तन्तेति ॥

२ " पटोऽस्त्री कर्पटः शाटः सिचयप्रोतलक्तकाः " (इति रमसः) ॥

निचोल, निचोली, 'निचुल' प्रच्छदपट ये २ बीणा आदिके धेठन या ओहार के नाम हैं इनमें 'निचोल' त्रिलिङ्ग है और 'प्रच्छदपट' पुंलिङ्ग है । रत्नक, कम्बल ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ कम्बलके नाम हैं ॥ ११६ ॥

ग. न. न. ग.
भौली आदि **अन्तरीयोपसंन्यानपरिधानान्यधोशुकै ।**

ग. पु. पु. त.
अंगौछा या **(द्वौ) प्रावारोत्तरासङ्गौ (समौ) बृहतिका (तथा) ॥ ११७ ॥**

दुपट्टा आदि न. न. पु.स. पु.न.
अंगिया या **संन्यानमुत्तरीयं (च) चोलकूर्पासकौ (स्त्रियाः) ।**

चोली रज्जई या पु.
अंगरखा **नीशारः (स्यात्प्रावरणे हिमानिलनिवारणे) ॥ ११८ ॥**

अन्तरीय, उपसंन्यान, परिधान, अधोशुक ये ४ देह के अधोभाग में पहिरनेवाले धोती आदि वस्त्रों के नाम हैं । प्रावार, 'प्रावर' उत्तरासङ्ग, बृहतिका, संन्यान, उत्तरीय ये ५ अंगौछा या दुपट्टा के नाम हैं । इनमें प्रावार, उत्तरासङ्ग ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं तथा बृहतिका स्त्रीलिङ्ग है । चोल, "चोली" कूर्पासक ये २ स्त्रियों की अंगिया या चोली के नाम हैं अथवा कितेक आचार्यों के मत में "चोलः कूर्पासकोऽस्त्रियाम्" ऐसा पाठ है वहां चोल स्त्री, पुंलिङ्ग है और 'कूर्पासक' स्त्रीलिङ्ग में नहीं है बरन पुंनपुंसक में रहता है । जिसके ओढ़ने से हवा और ठंड का बराब होता है उसे 'नीशार' कहते हैं यह १ रज्जई या अंगरखा का नाम है ॥ ११७ । ११८ ॥

पु.न.
चरडातक (अधोरुकं वरस्त्रीणां स्या) **चण्डातक (मंशुकम्) ।**

पु.स.न.
चण्डातक (स्यात्त्रिज्वा) **प्रपदीनं (तत्प्राप्तोत्थाप्रपदं हितत्) ११९ ॥**

वरस्त्रियो आधी जाय तक पहुँचनेवाले लहंगा को " चण्डातक " कहते हैं यह नपुंसक है परन्तु वोपालितकोष के प्रमाण से पुंलिङ्ग भी पाया जाता है यह १ उदंग लहंगा का नाम है । जो वस्त्र आदि पैरों के अग्र पर्यन्त प्राप्त होता है उसे 'आप्रपदीन' या 'आप्रपदीना' कहते हैं यह तीनों लिङ्ग में रहता है यह १ लहंगे लहंगा का नाम है ॥ ११९ ॥

पु.न. पु. न.
चंदरा तम्बु (अस्त्री) **वितानमुल्लोचो दूष्या (यं वस्त्रवेश्मनि) ।**

स. ग. स.
छेरा कनात **प्रतिसीरा जवनिका (स्या) तिरस्करणी (च सा) ॥ १२० ॥**

वितान, उल्लोच ये २ चैदवा या सामिआना के नाम हैं । इनमें 'वितान' पुनपुंसक है । कपड़ों से बने घर में 'दूश्य' या 'दूश्य' होता है आद्यशब्द से पटकुटी, पटवेश्म, पटवास और पटकुड्य आदिकों का ग्रहण होता है यह १ डेरा तन्धू या रावटी आदि का नाम है । प्रतिसीरा, जवनिका 'यमनिका' तिरस्करणी, 'तिरस्कारिणी' ये ३ कनात या पड़दा के नाम हैं । पर्यङ्किका, परिकर, पर्यङ्क, अवसन्धिका ये ४ पटुका के नाम हैं । 'अश्वल' यह १ आंचर का नाम है । 'नीवी' यह १ कोंछी या फुकुन्दी का नाम है ॥ ११० ॥

अङ्गसंस्कार न. पु. स. स. स.
पोछना उबटना परिकर्माङ्गसंस्कारः (स्या) न्मार्ष्टिर्मार्जना मृजा ।
नहाना न. न. पु. पु.
चन्दनादि से उद्धर्तनोत्सादने (द्वे समे) आप्लाव आप्लवः ॥ १२१ ॥
लेपे गये गन्ध न. स. न. पु. न.
को फिर करना स्नानं चर्चा (तु) चार्चिक्यं स्थासको (थ) प्रबोधनम् ।
स्तन, गाल आदिमें कस्तूरी पु. स. स.
आदि से चिह्न अनुबोधः पत्रलेखा पत्राङ्गुलि (रिमे समे) ॥ १२२ ॥
रचना

परिकर्म (न्) "प्रतिकर्म" अङ्गसंस्कार ये २ रोली आदिकों से गात्र में संस्कारमात्र के नाम हैं । मार्ष्टि, मार्जना, मृजा ये ३ पोछने आदि से अङ्ग के निर्मल करने के नाम हैं । उद्धर्तन, उत्सादन "उच्छादन" ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ पीसी द्रव्य से देहमल दूर करने या उबटने के नाम हैं । आप्लाव, आप्लव, स्नान ये ३ नहाने के नाम हैं । चर्चा, चार्चिक्य, स्थासक ये ३ चन्दन आदि से देहविलेपन के नाम हैं । प्रबोधन, अनुबोध (अनुरोध) ये २ गये गन्ध के फिर प्रकट करने के नाम हैं "जैसे कस्तूरी आदि को मद्य आदि से" पत्रलेखा, पत्राङ्गुलि (पत्रावली) ये २ कस्तूरी या केसर आदि से स्तन, कपोलादिकों में बनाये तिलकविशेष के नाम हैं और खिलिङ्ग हैं पत्ते के आकार 'पत्रलेखा' कहाती है जोकि कलिङ्गादि देशों में विल्यात है ॥ १२१।१२२ ॥

तिलक, न. न. न. पु.न.
तमालपत्रतिलकचित्रकाणि विशेषकम् ।
न.
(द्वितीयं च तुरीयं च न स्त्रिया) मथ कुङ्कुमम् ॥ १२३ ॥
कुङ्कुम न. न. न. न. न.
कश्मीरजन्माग्निशिखं वरं वाल्हीकपीतनम् ।
न. न. न. न. न.
रक्तसंकोचपिशुनं धीरलोहितचन्दनम् ॥ १२४ ॥

तमालपत्र, तिलक, चित्रक, विशेषक ये ४ ललाट में किये तिलक के नाम हैं ।
यहां दूसरा ' तिलक ' और चौथा ' विशेषक ' ये दोनों खीलिङ्ग नहीं हैं वरन
पुनपुंसक हैं । कुङ्कुम, कश्मीरजन्म, " काश्मीरजन्म " (न्) अग्निशिख, वर,
(चारु) बालहीक, " बाल्हीक " पीतन, रक्त, संकोच, पिशुन, धीर, लोहितचन्दन
और " लोहित " ये ११ कुङ्कुम या केसर के नाम हैं ॥ १२३ । १२४ ॥

स. स. न. पु. पु. पु.
महावर राक्षा लाक्षा जतु (क्लीबे) यावोऽलक्तो दुमामयः ।

न. न. न. न.
लवङ्ग लवङ्गं देवकुसुमं श्रीसंज्ञ (मथ) जायकम् ॥ १२५ ॥

पीतचन्दन कालीयकं (च) कालानुसार्यं (चाथ समार्थकम्) ।

न. न. न. न. न. न.
अगुरु वंशकागुरुराजार्हलोहकृमिजजोङ्गकम् ॥ १२६ ॥

राक्षा, ' रक्षा ' लाक्षा, ' लक्षा ' जतु, याव, अलक्त " अलक्तक " दुमामय
ये ६ लाख (लाह) या महावर के नाम हैं । इनमें 'जतु' नपुंसकमें रहता है । लवङ्ग,
देवकुसुम, श्रीसंज्ञ ये ३ लवङ्ग के नाम हैं ये तीनों नपुंसक हैं । जायक, (जापक)
कालीयक, " कालियक—कालेयक " कालानुसार्यं ये ३ पीलेचन्दन या तगर के
नाम हैं । वंशक, " वंशिक, वंशिका " अगुरु, " अगरु " राजार्ह, लोह, कृमिज,
जोङ्गक ये ६ अगुरु के नाम हैं इनमें ' अगुरु ' पुनपुंसक है और ये छहों समान
अर्थवाले कहते हैं ॥ १२५ । १२६ ॥

न. पु. न. स.
कालाग्रगुरु कालागुर्वगुरु (स्यात्त) न्मङ्गल्या (मल्लिगन्धियत्) ।

पु. पु. पु. पु.
अगुरुका भेद यक्षधूपः सर्जरसो रालसर्वरसावपि ॥ १२७ ॥

पु. पु.
यक्षधूप या राल दशार्क्षधूप बहुरूपो (ऽप्यथ) वृक्षधूपकृत्रिमधूपकौ ।

कालागुरु, अगुरु ये २ काले अगुरु के नाम हैं । जो अगुरु मल्लिका पुष्प के
समान गन्धवाला होता है उसे ' मङ्गल्या ' कहते हैं यह १ मल्लिकागन्धयुक्त
अगुरु का नाम है यह खीलिङ्ग है । यक्षधूप, सर्जरस, अराल " राल " सर्वरस,
बहुरूप ये ५ यक्षधूप या राल के नाम हैं, और पाँचों पुलिङ्ग हैं । वृक्षधूप (वृक्षधूप)
कृत्रिमधूपक ये २ बहुतसे सुगन्धित पदार्थों को मिलाकर बनाये दशाङ्गादि धूपके
नाम हैं और पुलिङ्ग कहाते हैं ॥ १२७ । १२८ ॥

लोबान ^{पु.} तुरुष्कः ^{पु.} पिण्डकः ^{पु.} सिल्हो ^{पु.} यावनो ^{पु.} (प्यथ) पायसः ॥१२८॥

देवदारु धूप ^{पु.} श्रीवासो ^{पु.} वृकधूपो ^{पु.} (ऽपि) ^{पु.} श्रीवेष्टसरलद्रवौ ।

तुरुष्क, पिण्डक, सिल्ह, 'सिल्हक' यावन ये ४ लोबानधूप के नाम हैं और चारो पुंलिङ्ग हैं । पायस, श्रीवास, वृकधूप, श्रीवेष्ट, "श्रीपिष्ट" सरलद्रव ये ५ सरलद्रव या देवदारुधूप के नाम हैं और ये सबही पुंलिङ्ग हैं ॥ १२८ । १ ॥

कस्तूरी ^{पु.} मृगनाभि ^{पु.} मृगमदः ^{स.} कस्तूरी ^{न.} (चाथ) कोलकम् ॥१२९॥

कषायचीनी ^{न.} कक्कोलकं ^{न.} कोशफल ^{पु.न.} (मथ) कर्पूर ^{पु.न.} (मस्त्रियाम्) ।

कपूर ^{पु.} घनसारश्चन्द्रसंज्ञः ^{पु.} सिताभ्रो ^{स.} हिमबालुका ॥ १३० ॥

मृगनाभि, "मृग-नाभि" मृगमद, "मद" कस्तूरी ये ३ कस्तूरी के नाम हैं । इनमें 'कस्तूरी' स्त्रीलिङ्ग है । कोलक, "कोरक" कक्कोलक, कोशफल ये ३ कषायचीनी के नाम हैं । ये तीनों नपुंसक हैं । कर्पूर, घनसार, चन्द्रसंज्ञ, सिताभ्र (सिताभ) हिमबालुका ये ५ कपूर के नाम हैं इनमें 'कर्पूर' पुंनपुंसक है और हिमबालुका स्त्रीलिङ्ग है ॥ १२९ । १३० ॥

मलयागिरि ^{पु.} गन्धसारो ^{पु.} मलयजो ^{पु.} भद्रश्रीश्चन्द्रनो ^{पु.न.} (ऽस्त्रियाम्) ।

चन्दन चन्दनों ^{न.} के भेद ^{न.} तैलपर्णिकगोशीर्षे ^{पु.न.} हरिचन्दन ^{पु.न.} (मस्त्रियाम्) ॥१३१॥

गन्धसार, मलयज, भद्रश्री, चन्दन ये ४ मलयागिरिचन्दन के नाम हैं । इनमें 'चन्दन' पुंनपुंसक है । 'तैलपर्णिक' यह १ सफेद शीतल चन्दनविशेषका नाम है । गोशीर्ष "गोशीर्षक" यह १ कमलसमान गन्धवाले चन्दन का नाम है और 'हरिचन्दन' यह १ पीले वर्णवाले चन्दन का नाम है यह पुंनपुंसक लिङ्ग है ॥ १३१ ॥

रक्तचन्दन ^{स.} तिलपर्णी ^{न.} (तु) पत्राङ्गं ^{न.} रञ्जनं ^{न.} रक्तचन्दनम् ।

जायफल ^{न.} कुचन्दनं ^{न.} (चाथ) जातीकोशजातीफले ^{न.} (समे) ॥१३२॥

तिलपर्णी, पत्राङ्ग, "पत्राङ्ग, पत्तङ्ग" रञ्जन, रक्तचन्दन, कुचन्दन ये ५ जाय

चन्दन (देवीचन्दन) के नाम हैं । जातीकोश ' जातीकोष ' जातीफल, जातिफल, (जाति, जाती, फल) ये २ जायफल के नाम हैं; और ये दोनों समानार्थक हैं यानी समान अर्थवाले कहाते हैं ॥ १३२ ॥

महासुगन्धित

लेप पीसे

सुगन्धित द्रव्य

पिसे चन्दनादि

लेप

(कर्पूरागरुकस्तूरीककोलै) र्यक्षक^{पु.}र्दमः ।

गात्रा^{स.} लेपनी^{स.} वर्तिर्वर्णकं^{न.} स्याद्विलेपनम्^{न.} ॥ १३३ ॥

कपूर, गूगल, कस्तूरी, कबाबचीनी बराबर मिलाने से जो लेप बनता है उसे ' र्यक्षक' कहते हैं । यह १ महासुगन्धित लेपविशेष का नाम है । गात्रानुलेपनी, वर्ति (वर्ती) ये २ पिसी हुई लेपनवस्तु के नाम हैं । वर्णक, विलेपन ये २ धिसे हुए चन्दनादि लेपमात्र के नाम हैं अथवा ये ४ देहके अनुलेपनयोग्य पिसे केशर आदि सुगन्धित द्रव्य के बने उबटने के नाम हैं ॥ १३३ ॥

सुगन्धकारक

न.

पु.

पु.स.न.

पु.स.न.

चूर्ण वासित

चूर्णानि वासयोगाः (स्यु) भावितं वासितं (त्रिषु) ।

वस्तु गन्धमालादि

न.

का धारण

(संस्कारो गन्धमाल्याद्यैर्यः स्यात्तद) धिवासनम् १३४ ॥

चूर्ण, वासयोग ये २ पटवस्त्र आदि के सुगन्धित करनेवाले चूर्ण के नाम हैं । इनमें " चूर्णो धूलौ क्षारभेदे चूर्णानिवासयुक्तिषु " (इति मेदिनी) इस प्रमाण से ' चूर्ण ' नपुंसक है और ' वासयोग ' पुलिङ्ग है । भावित, वासित ये २ गन्धद्रव्य से सुगन्धित किये वस्तु के नाम हैं और ये दोनों त्रिलिङ्ग हैं । गन्धमाल्य और धूप आदि से सुगन्ध बढ़ाने के लिये वस्त्र, ताम्बूल आदि का जो संस्कार किया जाता है उसे ' अधिवासन ' कहते हैं यह १ गन्धमालादि धारण का नाम है ॥ १३४ ॥

शीशमाल्यकेश

न.

स.

स.

मध्यमाल्य शिर

से चोटी तक

शिर से ललाट

तक

माल्यं मालास्त्रजौ (मूर्ध्नि) केशमध्ये (तु) गर्भकः ।

प्रभ्रष्टकं (शिखात्मि) (पुरोन्यस्तं) ललामकम् ॥ १३५ ॥

माल्य, माला, स्त्रज, " स्त्रज, द्वित्वे स्त्रजौ, बहुत्वे स्त्रजः " ये ३ शीश में धरे फूल माला के नाम हैं । इनमें ' माल्य ' नपुंसक है और माला व स्त्रज (ज्) ये दोनों स्त्रीलिङ्ग हैं । केशों के मध्य धरी मालाको ' गर्भक ' कहते हैं यह १ शीश के बीच धरी माला का नाम है यह पुलिङ्ग है । जो माला शिखा में जटकती है या लम्बमान होती है उसे ' प्रभ्रष्टक ' कहते हैं यह १ शीश से चोटीतक लम्बी माला

का नाम है । आगे रक्खी या ललाटपर्यन्त फैली मालाको ' ललामक ' कहते हैं
यह १ शीश से ललाटतक पहनी मालाका नाम है ॥ १३५ ॥

न. पु. न.
गलस्थमाला प्रालम्ब (मृजुलम्बि स्यात्कण्ठा) द्वैकक्षिकं (तु तत्) ।
बभ्रस्थमाला पु. पु.
शिखास्थमाला (यत्तिर्यक्क्षितमुरसि) (शिखास्वा) पीडशेखरौ ॥ १३६ ॥

जो माला कण्ठ से ऊपरले भाग में सीधी होकर लम्बमान देखी जावे तो उसे
' प्रालम्ब ' कहते हैं । यह १ गलेतक लटकी या लम्बीमालाका नाम है । जो माला
टेढ़ी होकर जनेऊ के समान छातीपर फैलाई गई हो उसे ' वैकक्षिक ' कहते हैं
यह १ जनेऊ के समान छातीपै लटकी माला का नाम है और जो माला शिखा
में रक्खी गई हो तो उसे आपीड वा शेखर कहते हैं ये दोनों पुंलिङ्ग हैं ये २ चोटी
में रक्खे माल्यमात्र के नाम हैं ॥ १३६ ॥

स. पु. पु. स.
मालादिका रचना (स्या) त्परिस्पन्द आभोगः परिपूर्णता ।
बनाना सव न. पु. स. न.
वस्तु से पूर्ण उपधानं तूपवर्हः शय्यायां शयनीय (वत्) ॥ १३७ ॥
तकिया शय्या न. पु. पु. पु. स.
पलंग शयनं मञ्चपर्यङ्कपल्यङ्काः खट्वा (समाः) ।

रचना, परिस्पन्द " परिस्पन्द " ये २ माल्य आदि की रचना के नाम हैं ।
आभोग, परिपूर्णता ये २ सव सामग्रीसे परिपूर्ण के नाम हैं । उपधान, उपवर्ह ये २
तकिया के नाम हैं । शय्या, शयनीय, शयन ये ३ तोशक, गलीचा आदि विछौने
के नाम हैं । मञ्च, पर्यङ्क, पल्यङ्क, खट्वा ये ४ पलंग के नाम हैं और ये समाना-
र्थक कहाते हैं ॥ १३७ । ३ ॥

पु. पु. पु. पु. न. न.
गेंद या छांटी गेन्दुकः कन्दुको दीपः प्रदीपः पीठमासनम् ॥ १३८ ॥
तकिया, दीप, पु. पु. पु. पु.

आसन, डब्बा, समुद्रकः संपुटकः प्रतिग्राहः पतद्ग्रहः ।

• पीकदान, कद्दी, स. * स. पु. पु.

इकवा प्रसाधनी कङ्कतिका पिष्टातः पटवासकः ॥ १३९ ॥

गेन्दुक " गेण्डुक " कन्दुक ये २ खेलने के गेंद या गाल की तकिया के नाम

१ " दीपस्तु स्नेहाशः कञ्जलध्वजः । दरोन्धनो गृहमणिर्दोषातिलक इत्यपि । शिखातदपि वृक्षो
अथोत्सावृक्षोऽथ लोचकः (इति त्रिकाण्डशेषः) ॥

हैं । दीप, प्रदीप ये २ दीपक (दिया) के नाम हैं । पीठ, आसन ये २ पीढ़ा, मचिया, मोढ़ा या कुरसी आदिके नाम हैं । समुद्रक “ समुद्रा ” संपुटक “संपुट” ये २ डब्बा या चौघड़ा के नाम हैं । प्रतिमह, ‘ प्रतिग्रह ’ पतद्ग्रह ये २ पीकदान के नाम हैं । प्रसाधनी, ‘ प्रसाधन ’ कङ्कतिका, कङ्कती, ‘ कङ्कत ’ ये २ हाथीदांत या अन्य की बनी कङ्क्री या ककवा, ककई के नाम हैं । पिष्टात, पटवासक ये २ बुकवा या चोवा या अर्गजा की बुकनी के नाम हैं और ये दोनों पुंलिङ्ग हैं ॥ १३८ ॥ १३९ ॥

सीसा या दर्पण पु.न.

पु.

पु.

न.

न.

वेना या पंखा

दर्पणे

मकुरादर्शौ

व्यजनं तालवृन्तकम् ॥ १४० ॥

इति मनुष्यवर्गः ॥

दर्पण, मकुर, “ मङ्कुर ” मुकुर, आदर्श, अदर्श ये ३ दर्पण (सीसा) या आरसी के नाम हैं; और ये तीनों पुंलिङ्ग हैं । व्यजन, तालवृन्तक, “तालवृन्त” ये २ ताडपत्र के बने व्यजना या पंखा के नाम हैं और ये दोनों नपुंसक हैं ॥ १४० ॥

इति मनुष्यवर्गविवरणम् ॥

अथ ब्रह्मवर्गो व्याख्यायते ।

स. न. न. न. पु. पु.
वंश सन्ततिर्गोत्रजननकुलान्यभिजनान्वयौ ।

पु. पु. पु. पु.
वर्ण वंशोऽन्ववायः सन्तानो वर्णाः (स्युर्ब्राह्मणादयः) ॥ १ ॥

सन्तति, गोत्र, जनन, कुल, अभिजन, अन्वय, वंश, अन्ववाय और सन्तान ये ६ वंश के नाम हैं; इनमें ‘ संतति ’ खीलिङ्ग है; गोत्र, जनन, कुल ये तीनों नपुंसक हैं और शेष पुंलिङ्ग कहाते हैं । ब्राह्मण आदि ‘ वर्णा ’ कहाते हैं यह १ वर्णमात्र का नाम है ॥ १ ॥

चारवर्ण राज-^{न.}(विप्रक्षत्रियविदूशूद्रा)श्चातुर्वर्ण्य (मिति स्मृतम्) ।

उ. पु. पु. पु.
वंश कुलीन राजबीजी राजवंश्यो बीज्यस्तु कुलसंभवः ॥ २ ॥

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ये चारो वर्ण ‘ चातुर्वर्ण्य ’ कहाते हैं यह १ चारों वर्णों का नाम है । राजबीजी, राजवंश्य ये २ राजवंश में उपजे हुए के नाम हैं । बीज्य, कुलसंभव ये २ कुलमात्र में उपजे (कुलीन) के नाम हैं ॥ २ ॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु.
 महाकुलीनं **माहाकुलकुलीनार्यसभ्यसज्जनसाधवः ।**
 ब्रह्मचारी आदि पु. पु. पु.
 चारो आश्रम **ब्रह्मचारी गृही वानप्रस्थो भिक्षु (श्चतुष्टये) ॥ ३ ॥**

पु. पु. पु. पु. पु.
 ब्राह्मण, **आश्रमो (ऽस्त्री) द्विजात्यग्रजन्मभूदेववाडवाः ।**

पु. पु.
 ब्राह्मणकर्म **विप्रश्च ब्राह्मणो (ऽसौ) षट्कर्मा (यागादिभिर्युतः) ॥ ४ ॥**

माहाकुल, 'महाकुल' कुलीन, "कुल्य, कौलेय, कौलेयक" आर्य, सभ्य, सज्जन, साधु ये ६ आर्य (सज्जन) के नाम हैं । ब्रह्मचारी, गृही, वानप्रस्थ और भिक्षु (संन्यासी) इन चारोंके स्थान को " आश्रम " कहते हैं वह पुनपुंसक है यह १ ब्रह्मचर्य आदि चारों आश्रम का नाम है । द्विजाति, " द्विज, द्विजन्मा " अग्रजन्मा (न्) भूदेव, (भूमिदेव) वाडव, विप्र, ब्राह्मण ये ६ ब्राह्मण के नाम हैं और जो यह ब्राह्मण याग आदि से युक्त होवे तो वह ' षट्कर्मा ' कहाता है जैसे कहा है कि " इज्याध्ययनदानानि याजनाध्यापने तथा । प्रतिग्रहश्च तैर्युक्तः षट्कर्मा विप्र उच्यते " यह १ षट्कर्म करनेवाले ब्राह्मण का नाम है ॥ ३ । ४ ॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु. पु.
 पण्डित वैदिक **विद्वान्विपश्चिदोषज्ञः सन्सुधीः कोविदो बुधः ।**

पु. पु. पु. पु. पु. पु. पु.
धीरो मनीषी ज्ञः प्राज्ञः संख्यावान् पण्डितः कविः ॥ ५ ॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु.
धीमान्सूरिः कृती कृष्टिर्लब्धवर्णो विचक्षणः ।

पु. पु. पु. पु.
दूरदर्शी दीर्घदर्शी श्रोत्रियच्छान्दसौ (समौ) ॥ ६ ॥

विद्वान्, विपश्चित्, दोषज्ञ, सन्, सुधी, कोविद, बुध, धीर, मनीषी, ज्ञ, ' प्रज्ञ ' प्राज्ञ, " प्राज्ञी " संख्यावान्, पण्डित, कवि, " कवी " धीमान्, सूरि 'सूरी' (न्) कृती (न्) कृष्टि, लब्धवर्ण, विचक्षण, दूरदर्शी (न्) दीर्घदर्शी (न्) ये २२ पण्डित के नाम हैं । श्रोत्रिय, छान्दस ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहते हैं ये २ समस्त शास्त्राध्यायी वैदिक (वेदुआ) के नाम हैं " मीमांसको जैमिनीय, वेदान्ती ब्रह्मवादिनि । वैशेषिकः स्यादौलूक्यः, सौगतः शून्यवादिनि १ नैयायिकस्त्वक्षपदः स्यात्स्थाद्वादिक आर्हकौ । चार्वाकलौकायतिकौ सत्कार्ये सांख्यकापिज्ञौ " इमौ प्रक्षिप्तौ पुस्तकान्तरादादाय मया लिखिताविति—मीमांसक, जैमिनीय

ये २ मीमांसाशास्त्रज्ञाता
हैं । वैशेषिक, श्रौतलूक्य
के नाम हैं । नैयायिक,
आर्हक ये २ मोक्षमार्ग
मतावलम्बी के नाम हैं और

पु.

पढ़ानेवाला, उपाध्याय
पिता आदि,
आचार्य, (मन्त्रव्यास)
यजमान, पु.

दीक्षित, बहुयाग्यष्टा (च
कर्ता सविधि पु.

यज्ञकर्ता इज्याशीलोपाचरू यज्वा (तु)(विधिनेष्टवान्) ॥८॥

उपाध्याय, अध्यापक ये २ पढ़ानेवाले के नाम हैं । गर्भाधान और पुंसवन
आदि कर्मों का करनेवाला पिता आदि 'गुरु' कहाता है यह १ गुरु का नाम है ।
मन्त्रव्याख्याकृत्, आचार्य ये २ आचार्य के नाम हैं अथवा वेदमन्त्रों की व्याख्या
करनेवाला 'आचार्य' कहाता है यह १ आचार्य का नाम है । यज्ञ में जो
ऋत्विजों को आज्ञा देता है वह प्रती, यष्टा और यजमान कहाता है ये ३ यजमान
के नाम हैं । वही यजमान सोमवान् यज्ञ में आज्ञाकारी हो तो 'दीक्षित' कहाता है
यह १ सोमवान् यज्ञ के यजमान का नाम है । इज्याशील, यायजूक ये २ बारंबार
यज्ञकरनेवाले के नाम हैं । जिसने विधिसे यज्ञ किया है उसे यज्वा, द्वित्वमें 'यज्वानो'
और बहुत्व में 'यज्वानः' कहते हैं यह १ सविधि यज्ञकर्ता का नाम है ॥ ७ । ८ ॥

बृहस्पति यज्ञ-
कर्ता सोमरस-
पायी, सर्वस्व
दक्षिणसियज्ञका
करनेवाला पु.

(सगीर्पतीष्ठ्या) स्थपतिः सोमपीती (तु) सोमपः ।

सर्ववेदाः (स येनेष्टो यागः सर्वस्वदक्षिणः) ॥ ६ ॥

जिसने बृहस्पति के कहे विधान से यज्ञ किया है वह 'स्थपति' कहाता है यह १
बृहस्पतिसवननामक यज्ञकर्ता का नाम है । सोमपीती, 'सोमपीथ' सोमप,
'सोमपा' ये २ सोमयज्ञ करनेवाले या सोमरस पीनेवाले यजमान के नाम हैं ।
सर्वस्वदक्षिणावाले विश्वजित् आदि यज्ञ को जिसने किया है उसे 'सर्ववेदाः' (स्)
कहते हैं यह १ यज्ञ में सर्वस्वदक्षिणादेनेवाले का नाम है ॥ ६ ॥

१ "गुरादन्धकारः स्याद्गुरादन्तभिषेधकृत् । अन्धकारनिरोधत्वाद्गुरित्यभिधीयते ॥ १ ॥ (इति
श्रुतीतायाम्) ॥ २ पदच्छेदः पदार्थोक्तिर्विग्रहो वाक्ययोजना । आक्षेपोऽथ समाधानं व्याख्यानं प्रबलक्षणम् ॥

साङ्गवेदपाठी पु.

गृहस्थाश्रम

आदि के लिये

गुरुते आज्ञापाने

वाला अभिषव

स्नानकरनेवाला

अनूचानः (प्रवचने साङ्ग

पु.

(लब्धानुज्ञः) समावृत्तः

स्तु यः ।

भेषवे कृते ॥१०॥

जिसने अङ्गसमेत वेदों को पढ़ा है उसे अनूचान कहते हैं । यह १ साङ्ग वेद-पाठी का नाम है । जिस अनूचान ने गुरु से आदि की प्राप्ति के लिये आज्ञा पाई है वह 'समावृत्त' कहा जाता है । यह आस से लौटिहुए का नाम है और जिसने अभिषव स्नान किया है उसे कहते हैं यह १ यज्ञान्त-स्नान करनेवाले का नाम है ॥ १० ॥

पु.

पु.

पु.

पु.

शिष्य नया

छात्रान्तेवासिनौ शिष्ये

प्राथमकल्पिकाः ।

शिष्य सपाठी (एकब्रह्मव्रताचारा मिथः) सब्रह्मचारिणः ॥ ११ ॥

छात्र, अन्तेवासी, शिष्य ये ३ शिष्य (चेला) के नाम हैं । शैक्ष, प्राथम-कल्पिक ये २ पहिले वेदारम्भ करनेवाले विद्यार्थी के नाम हैं ये एकत्व में शैक्षः, प्राथमकल्पिकः द्वित्व में शैक्षौ, प्राथमकल्पिकौ और बहुत्व में शैक्षाः, प्राथमकल्पिकाः होते हैं । जिन्होंका समान वेदव्रत व आचार है और जो एक शाखा के पढ़नेवाले ब्रह्मचारीलोग हैं वे परस्पर 'सब्रह्मचारिणः' कहाते हैं यह १ सहपाठियों का नाम है ॥ ११ ॥

पु.

पु.

पु.

सतीर्थ्यास्त्वेकगुरुव (श्रितवानग्नि) मग्निचित् ।

न.

(पारम्पर्योपदेशे) स्यादैतिह्यमितिहा (व्ययम्) ॥ १२ ॥

जिनके एक (समान) गुरु होते हैं वे 'सतीर्थ्य' व 'एकगुरु' कहाते हैं । ये २ एक गुरु के समीप पढ़नेवाले के नाम हैं ये एकत्व में सतीर्थ्यः, एकगुरुः द्वित्व में सतीर्थ्यौ, एकगुरु बहुत्व में 'सतीर्थ्याः' व 'एकगुरुवः' होते हैं । जिसने अग्नि का संग्रह किया है उसे 'अग्निचित्' कहते हैं यह १ अग्निसंग्रह करनेवाले का नाम है । लोकपरम्परा के उपदेश में ऐतिह्य, इतिह्य ये होते हैं ये २ परम्परा

उपदेश के नाम हैं इनमें 'ऐतिह्य' नपुंसक है और 'इतिह' या 'इतिहा' अन्यय है ॥ १२ ॥

प्रथम ज्ञान, ^{स.} उपज्ञा (ज्ञानमाद्यं स्या) (जज्ञात्वारम्भ) ^{पु.} उपक्रमः ।

ज्ञानकर आरम्भ ^{पु.} पु. पु. पु. पु. पु. पु.

करना, यज्ञ यज्ञः सवोध्वरो यागः सप्ततन्तुर्मखः क्रतुः ॥ १३ ॥

जो पहिला ज्ञान है उसे 'उपज्ञा' कहते हैं जैसे श्लोकरचना में बाल्मीकिजी का ज्ञान है यह १ प्रथम ज्ञान का नाम है । जानकर जो आरम्भ किया जाता है उसे 'उपक्रम' कहते हैं जैसे मान में नन्द का जो पहिला आरम्भ है वह उपक्रम है यह १ जानकर प्रथमारम्भ का नाम है । यज्ञ, सव, अध्वर, याग, सप्ततन्तु, मख और क्रतु ये ७ यज्ञ के नाम हैं ॥ १३ ॥

पञ्चमहायज्ञ ^{पु.} पाठो होम (श्रातिथीनां) ^{स.} सपर्या ^{न.} तर्पणं ^{पु.} बलिः ।

(एते पञ्च) महायज्ञा (ब्रह्मयज्ञादिनामकाः) ॥ १४ ॥

पाठ, होम, श्रातिथिपूजन, तर्पण और बलि ये ब्रह्मयज्ञ आदि नामवाले पांच महायज्ञ कहाते हैं इनमें जो विधि से वेद आदि का पढ़ना है वह 'ब्रह्मयज्ञ' कहाता है, वैश्वदेवका जो होम है वह 'देवयज्ञ' है, घर में आये हुए अतिथियों का अन्न आदि से जो सत्कार करना है वह 'मनुष्ययज्ञ' है, पितरों को अन्न व जल आदि से जो तृप्त करना है वह 'पितृयज्ञ' है और जीवों को जो अन्न आदि देना है वह 'भूतयज्ञ' कहा जाता है यह पञ्चमहायज्ञों का एक २ नाम है ॥ १४ ॥

सभा ^{स.} समज्या ^{स.} परिषद्गोष्ठी ^{स.} सभासमिति ^{स.} संसदः ।

^{स.} आस्थानी (क्लीब) ^{न.} मास्थानं (स्त्रीनपुंसकयोः) ^{स.न.} सदः ॥ १५ ॥

समज्या, परिषद्, " पर्वद् " गोष्ठी, सभा, समिति, संसद, आस्थानी, आस्थान, सदः (स्) ये ६ सभा के नाम हैं इनमें 'आस्थान' नपुंसक है और सान्त सदशब्द स्त्री नपुंसक में रहता है ॥ १५ ॥

यज्ञगृहविशेष, ^{पु.} प्राग्बंशः (प्राग्घविर्गेहा) ^{पु.} त्सदस्या (विधिदर्शिनः) ।

सभामें बैठने ^{पु.} सभासदः ^{पु.} सभास्ताराः ^{पु.} सभ्याः ^{पु.} सामाजिका (श्र ते) ॥ १६ ॥

वाले

हवि के घर से पूर्वदेश में सदस्य आदि का जो घर है उसे “प्राग्वंशः” कहते हैं अथवा यज्ञशाला से पूर्व और पश्चिमके खम्भों के रखे बड़े काष्ठ को “प्राग्वंशः” कहते हैं यह १ यज्ञगृहविशेष का नाम है । यज्ञकर्म में विधि यानी वेदोक्त क्रिया कलाप के जो देखनेवाले हैं वे ‘सदस्य’ कहाते हैं यह १ न्यून या अधिक विचार करनेवाले ऋत्विग्विशेषों का नाम है और सभासद, सभास्तार, सभ्य, सामाजिक ये ४ सभा में बैठनेवालों के नाम हैं ॥ १६ ॥

पु. पु. पु.
वेदययी ज्ञाता, अध्वर्यूद्गातृहोतारो (यजुःसामग्विदः क्रमात्) ।

ऋत्विक् (आग्नीध्राद्या धनैर्वार्या) ऋत्विजो याजका (अ ते) ॥ १७ ॥

यजुर्वेद, सामवेद और ऋग्वेद इन्हींके जाननेवाले क्रमसे अध्वर्यु, उद्गाता और होता संज्ञक होते हैं यानी यजुर्वेद का ज्ञाता ‘अध्वर्यु’ सामवेद का ज्ञाता, ‘उद्गाता’ और ऋग्वेद का वेत्ता ‘होता’ कहाता है यह एक २ क्रम से ऋत्विग्विशेषों का नाम है । यज्ञ में यजमान धन आदि देकर जिनका वरण करता है वे आग्नीध्र, ब्रह्मा, उद्गाता, होता, अध्वर्यु, ब्राह्मणाच्छंसी, अच्छावाक, नेष्टा आदि सोलह हैं, वेही ऋत्विक् (ज्) और ‘याजक’ कहाते हैं ये २ याजकों के नाम हैं ॥ १७ ॥

यज्ञवेदी यज्ञ स. न. न.
का चौतरा यरु वेदिः (परिष्कृता भूमिः) (समे) स्थण्डिलचत्वरे ।

स्तम्भविशेष पु. पु. स.
रक्षार्थदृष्टी चषालो यूपकटकः कुम्बा (सुगहना वृत्तिः) ॥ १८ ॥

यज्ञके लिये डमरु के आकार बनाई भूमि को वेदि या वेदी कहते हैं यह १ यज्ञवेदी का नाम है । स्थण्डिल, चत्वर ये २ यज्ञार्थ संस्कार किये भूमिभाग यज्ञार्थ (चौतरा) के नाम हैं ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं । यूप के शीश में कङ्कण के आकार काष्ठविकार को ‘चषाल’ और ‘यूपकटक’ कहते हैं ये २ खम्भा के ऊपरले भाग में कंकणाकार काष्ठ के नाम हैं । यज्ञभूमि में चाण्डाल आदि की दृष्टि बराने के लिये जो आवरण किया जाता है उसे ‘कुम्बा’ कहते हैं यह १ रक्षार्थ दृष्टी आदि का नाम है ॥ १८ ॥

यज्ञस्तम्भशीर्ष न. न. पु.स.
अग्नि निका यूपग्रं तर्म (निर्मन्थ्यदारुणि) त्वरणि (द्वयोः) ।

लकड़ी तीनों पु. पु. पु.
यज्ञाग्नियां दक्षिणाग्निगार्हपत्याहवनीयौ (त्रयोऽग्नयः) ॥ १९ ॥

यूपग्र, तर्म (न) ये २ यज्ञस्तम्भ के अग्रभाग के नाम हैं । अग्नि की सिद्धि

के लिये मथने की दो लकड़ियों को 'अरणि' या 'अरणी' कहते हैं यह पुंस्त्रीलिङ्ग में रहता है यह १ अग्नि निकालने की दो लकड़ियों का नाम है । दक्षिणाग्नि, गार्हपत्य, आहवनीय ये तीनों यज्ञों में विशेष अग्नियां कहाती हैं यह एक २ तीनों यज्ञाग्नियों का नाम है ॥ १६ ॥

तीनों अग्नि, (^{स.} अग्नित्रयमिदं) ^{पु.} त्रेता ^{स.} प्रणीतः (संस्कृतोऽनलः) ।

यज्ञाग्निविशेष, ^{पु.} समूहः ^{पु.} परिचाय्योपचाय्या (^{पु.} वग्नौ प्रयोगिणः) ॥ २० ॥

यह तीनों अग्नियों का समुदाय 'त्रेता' कहाता है यह १ तीनों अग्नियों का नाम है । मन्त्र आदिकों से संस्कार किया हुआ अग्नि 'प्रणीत' कहा जाता है यह १ संस्कार किये हुए यज्ञाग्निविशेष का नाम है । समूह, परिचाय्य, उपचाय्य ये ३ अग्नि में प्रयोगी होते हैं ये ३ अग्निधारणार्थ स्थलविशेष के नाम हैं ॥ २० ॥

अग्निविशेष, (यो गार्हपत्यादानीय दक्षिणाग्निः प्रणीयते) ।

अग्निप्रिया (^{पु.} तस्मि) ^{स.} व्रानाययो ^{स.} धाग्नायी ^{स.} स्वाहा (^{स.} च) हुतभुक्प्रिया २१ ॥

गार्हपत्य से लेकर जो दक्षिणाग्नि संस्कारित किया जाता है उसमें 'आनाय्य' होता है " और जो भाड़ व वैश्यकुल से उपजा अग्नि है वह 'आनेय' कहाता है " यह १ गार्हपत्य से ल्याये हुए अग्निविशेष का नाम है । अग्नायी, स्वाहा और हुतभुक्प्रिया ये ३ अग्निप्रिया के नाम हैं इनमें टावन्त स्वाहा अव्यय है परन्तु " स्वाहा तु दक्षिणे पार्ष्वे " इस उदाहरण से द्रव्यवाची भी पाया जाता है ॥ २१ ॥

अग्न्युदीपन मन्त्र, गाय- ^{स.} (ऋक्) सामधेनी ^{स.} धाय्या (^{स.} च या स्यादग्निसमिन्धने) ।

यथादि बन्द, ^{पु.} (गायत्रीप्रमुखं) छन्दो (हव्यपाके) चरुः (पुमान्) ॥ २२ ॥

अग्नि के जलाने में जो ऋचा पढ़ी जाती है उसे 'सामधेनी' और 'धाय्या' भी कहते हैं ये २ अग्निसमुदीपनमन्त्र के नाम हैं । गायत्री, " गायत्री " उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप्, जगती, अतिजगती आदि 'छन्दः' (स) कहते हैं यह १ गायत्री आदिकों का नाम है यह सान्त होकर नपुंसक है । हव्यपाक में 'चरु' पुंलिङ्ग है यानी (चरन्ति भक्षयन्ति देवा इममिति चरुः) इसको देवता लोग भक्षण करते हैं इसलिये 'चरु' कहा जाता है यह १ यज्ञ की जाउरि या खीर का नाम है ॥ २२ ॥

१ मीमांसकैरपि निवृत्तवर्षिकरणे अन्नपरत्वे चरुशब्दस्याभ्युपगमत् । " उगवादिभ्यो बद्ध " केवदन्तु स्थासीवाची चरुशब्दस्तत्तत्स्थयादौदने भाक्तः इत्याह ॥

स.
दधिमिलादूध **आमिक्षा** (साशृतोष्णोया क्षीरे स्यादधियोगतः) ।

न.
यज्ञ का पंखा **धुवित्रं** (व्यजनं तद्यद्रचितं मृगचर्मणा) ॥ २३ ॥

भल्लीभांति पके और गरम दूध में जो दही के योग से विकार उपजता है उसे “आमिक्षा” या “आमीक्षा” कहते हैं यह १ दहीमिले पके गरम दूध का नाम है । मृगचर्म से बनाया हुआ जो बेना (पंखा) है उसे ‘धुवित्र’ या ‘धुवित्र’ कहते हैं यह १ अग्नि जलाने के लिये हिरन की खालसे बने पंखे का नाम है ॥ २३ ॥

न. न. पु.न.
दही समेत घी **पृषदाज्यं** (सदध्याज्ये) परमान्न (न्तु) पायसम् ।

खीर देवपित्रभ न. पु.न.
यज्ञपात्र **हव्यकव्ये** (दैवपैत्रे अन्ने) पात्रं (सुवादिकम्) ॥ २४ ॥

दही से मिला घी ‘पृषदाज्य’ कहाता है यह १ दहीमिश्रित घी का नाम है । परमान्न, पायस ये २ खीर के नाम हैं । देवताओं के अन्न को ‘हव्य’ कहते हैं यह १ देवान्न का नाम है । पितरों के अन्न को ‘कव्य’ कहते हैं यह १ पितरों के लिये दिये अन्न का नाम है । सुव, चमस, उलूखल, मुसल आदि ‘पात्र’ कहाते हैं “पात्रं तु भाजने योग्ये सुवादौ राजमन्त्रिणि । तीरद्वयान्तरे च” (इति मेदिनी) इस कोष के प्रमाण से ‘पात्र’ नपुंसक है यह १ सुवादि यज्ञपात्र का नाम है ॥ २४ ॥

स. स. स. पु.स. पु.स.
सुबभेद, **ध्रुवोपभृज्जुहू** (र्ना तु) **स्रुवो भेदाः स्रुचः** (स्त्रियः) ।

पु.
यज्ञपशु **उपाकृतः** (पशुरसौयोऽभिमन्त्र्यं क्रतौ हतः) ॥ २५ ॥

ध्रुवा, उपभृत्, जुहू, “जुहु” स्रुव, “स्रु, स्रुच्” ये ४ सुबभेद के नाम हैं । इनमें ध्रुवा, उपभृत्, जुहू ये तीनों स्त्रीलिङ्ग हैं और ‘स्रुव’ पुंलिङ्ग है अथवा स्त्रीपुंलिङ्ग है और चकारान्त स्रुक् (च्) पष्ठयन्तपद है यह भी पुंस्त्रीलिङ्ग में ही पाया जाता है । जो पशु यज्ञ में अभिमन्त्रित कर मारा जाता है उसे ‘उपाकृत’ कहते हैं यह १ यज्ञ में अभिमन्त्रित पशु का नाम है ॥ २५ ॥

न. न. न.
यागपशुवध **परम्पराकं श्मनं प्रोक्षणं** (च) (वधार्थकम्) ।

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
मारुह्य पशु **(वाच्यलिङ्गाः) प्रमीतोपराज्योक्षिता** (हते) ॥ २६ ॥

१ ध्रुवा वटपत्राकृतिः, उपभृच्छकाकृतिः, जुहूर्ध्वचन्द्राकृतिरिति मुकुटः ॥

२ “स्रुवो द्योर्होमपात्रे शत्सकीपूर्वयोः स्त्रियाम्” (इति मेदिनी) ॥

परम्पराक, शमन, “शसन, ससन” प्रोक्षणा ये तीनों वधार्थक हैं ये ३ यज्ञार्थ पशु मारने के नाम हैं । प्रमीत, उपसंपन्न, प्रोक्षित ये ३ यज्ञार्थ मारे हुए पशुमात्र के नाम हैं और वाच्यलिङ्ग कहाते हैं ॥ २६ ॥

साकल्यवि-

न.

न.

पु.स.न.

शेषद्वनी वस्तु **सान्नाय्यं हवि (रग्नौ तु हुतं त्रिषु) वषट्कृतम् ।**

यज्ञान्तस्नान

पु.

न.

यज्ञीयवस्तु

(दीक्षान्तो)वभृथो यज्ञ (स्तत्कर्मार्हन्तु) यज्ञियम् ॥ २७ ॥

यज्ञकर्म

न. न.

कर्मविशेष

(त्रिष्वथ क्रतुकर्म) ष्टं पूर्तं (खातादिकर्मणि) ।

यज्ञशेष,

न.

पु.

आद्रशेष

अमृतं विघसो (यज्ञशेषभोजनशेषयोः) ॥ २८ ॥

सान्नाय्य, हविः (स्) ये २ साकल्यविशेष के नाम हैं । अग्नि में होमा हुआ घी आदि ‘वषट्कृत’ कहाता है यह तीनों लिङ्ग में रहता है यह १ हवन किये हुए वस्तु के नाम हैं । यज्ञदीक्षा के अन्त में यज्ञदीक्षासमापक यज्ञपूर्वक स्नानविशेष को ‘अवभृथ’ कहते हैं यह १ यज्ञान्त स्नान का नाम है । यज्ञकर्म के योग्य वस्तु (द्विजद्रव्यादि) को ‘यज्ञिय’ कहते हैं यह तीनों लिङ्ग में रहता है यह १ यज्ञीयवस्तु का नाम है । जो क्रतुकर्म है या क्रतुयज्ञ है या कर्मदान है उसे ‘इष्ट’ कहते हैं यह १ यज्ञकर्म का नाम है । बावली, कुवां, तालाव और देवालय आदि जो कर्म है उसे ‘पूर्ण’ कहते हैं यह १ खातादिकर्म का नाम है । यज्ञशेष पुरोडाशादि को ‘अमृत’ कहते हैं यह १ यज्ञशेष का नाम है । देव, पितर आदि के भोजनशेष को ‘विघस’ कहते हैं यह १ भोजनशेष का नाम है ॥ २७ । २८ ॥

पु.

न.

न.

न.

न.

दान

त्यागो विहापितं दानमुत्सर्जनविसर्जने ।

न.

न.

न.

न.

मृतक के लिये **विश्राणनं वितरणं स्पर्शनं प्रतिपादनम् ॥ २९ ॥**

न.

न.

न.

स.

दान

प्रादेशनं निर्वपनमपवर्जनमंहतिः ।

मृतार्थं तदहे दानं त्रिषु स्यादौर्ध्वदैहिकम् ॥ ३० ॥

त्याग, विहापित, दान, उत्सर्जन, विसर्जन, विश्राणन, वितरण, स्पर्शन, प्रतिपादन, प्रादेशन, निर्वपन, अपवर्जन और अंहति ये १३ दान के नाम हैं । मृतक के

१ विघसाशी भवेन्नित्यं नित्यं चामृतभोजनः । विघसो मुक्तशेषः स्यादग्निशेषस्तथा मृतम् (इति मनुः) ॥

२ तदहर्दानमिति पाठे तु समासान्तविधेरनित्यत्वात् ऽच् ॥

लिये मरणदिन से लेकर दशदिन पर्यन्त जो पिण्डदान आदि दिया जाता है उसे 'और्ध्वदेहिक' या 'और्ध्वदेहिक' कहते हैं यह तीनों लिङ्ग है यानी वाच्यलिङ्ग कहाता है यह १ मरे के लिये दान देने का नाम है ॥ २६ । ३० ॥

पितृदान, ^{न.} ^{पु.} ^{न.} पितृदानं निवापः (स्या) च्छ्राच्छं (तत्कर्म शास्त्रतः) ।
 आद्ध, मासिके ^{न.} ^{न.} ^{पु.न.} अन्वाहार्यमासिके (ऽशोऽष्टमोहः) कुतपो (ऽस्त्रियाम्) ३१

पितृदान, निवाप ये २ सपिण्डन से ऊपर पितरों के उद्देश से जो दान किया जाता है उसके नाम हैं । शास्त्रविधान से उन पितरों का जो कर्म है उसे 'आद्ध' कहते हैं यह १ आद्ध का नाम है । अन्वाहार्य, मासिक ये २ मासिक या अमावास्या के आद्धविशेष के नाम हैं और जो दिनका आठवां भाग है वह 'कुतप' कहाता है यह १ आद्धकाल विशेष का नाम है यह पुनपुंसक है ॥ ३१ ॥

धर्मादि का ^{स.} ^{स.} ^{स.} ^{स.} पर्येषणा परीष्टिश्चान्वेषणा (च) गवेषणा ।
 खोजना ^{स.} ^{स.} ^{स.} ^{स.} ^{स.} ^{स.} सनिस्तवध्येषणा याच्ञाभिषस्तिर्याचनार्थना ॥ ३२ ॥

पर्येषणा, परीष्टि, अन्वेषणा, गवेषणा ये ४ धर्मादि के खोजने के नाम हैं अथवा पर्येषणा, परीष्टि ये २ आद्ध आदि में द्विजभक्ति या सेवा के नाम हैं । अन्वेषणा, गवेषणा ये २ धर्मादिकों के ढूँढ़ने के नाम हैं यह कितेक आचार्यों का मत है । सनि, " सनी, " अध्येषणा ये २ गुरु आदिकों के आराधन के नाम हैं अथवा गुरु आदि से किसी अर्थ में प्रार्थनापूर्वक विनय के नाम हैं । याच्ञा, अभिषस्ति, " अभिशस्ति " याचना और अर्थना ये ४ प्रार्थना (मांगना) के नाम हैं ॥ ३२ ॥

^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} पूजार्थं जल, (षट् तु त्रिष्व) धर्म्यमर्घार्थं पाद्यं (पादाय वारिणि) ।
 पांव धोना ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} अतिथिनि- क्रमादातिथ्यातिथये (अतिथ्यर्थेऽत्र साधुनि) ॥ ३३ ॥
 मित कर्म

अर्घ्य से लेकर आगन्तु पर्यन्त छः शब्द तीनों लिङ्ग में होते हैं यानी वाच्यलिङ्ग कहाते हैं । अर्घ के लिये जो जल दिया जाता है उसे 'अर्घ्य' कहते हैं यह १ अर्घ्य का नाम है । पांव धोने के लिये जो जल होता है वह 'पाद्य' कहाता है यह १ पाद्य का नाम है । अतिथि के लिये जो कर्म किया जाता है उसे 'आतिथ्य' कहते हैं यह १ अतिथि निमित्त कर्म का नाम है और जो अतिथि के लिये साधु है वह 'आतिथ्येय' कहाता है यह १ अतिथि निमित्त सिद्ध वस्तु का नाम है ॥ ३३ ॥

पाहुन, ^{पु.स.न. पु.स.न. पु.} (स्युरा)वेशिक आगन्तुरतिथि (नार् गृहागते) ।

^{स. स. स. स. स. स.} पूजा नमस्यापचितिः सपर्यार्चाहणाः (समाः) ॥ ३४ ॥

आवेशिक, आगन्तु “ आगन्तु ” अतिथि “ अतिथी ” ये ३ घर में आये हुए के नाम हैं अथवा आवेशिक, आगन्तु, अतिथि, गृहागत ये ४ पाहुन के नाम हैं इनमें ‘ अतिथि ’ पुंलिङ्ग है “ प्राघूर्णिकः प्राघुणकश्चाभ्युत्थानन्तु गौरवम् ” “ प्राघूर्णिक, प्राघुणक ये २ अभ्यागतके नाम हैं । अभ्युत्थान, गौरव ये २ उठकर सत्कार करने के नाम हैं ” पूजा, नमस्या, अपचिति, सपर्या, अर्चा और अर्हणा ये समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये ६ पूजा के नाम हैं ॥ ३४ ॥

^{स. स. स. स.} सेवा वरिवस्या(तु)शुश्रूषा परिचर्याप्युपासना ।

^{धूमना स. स. न. स.} ध्यानादि स्थितिब्रज्याटाट्या पर्यटनं चर्या(त्वीर्यापथस्थितिः) ॥ ३५ ॥

वरिवस्था, शुश्रूषा, परिचर्या, “ परिसर्या ”, उपासना, “ उपासन, उपास्ति ” ये ४ सेवा के नाम हैं । ब्रज्या, अटाट्या, “ अटा, अट्या ” पर्यटन ये ३ घूमने या फिरने के नाम हैं । ध्यान व मौन आदि योगमार्ग में जो टिकना है उसे ‘ चर्या ’ कहते हैं यह १ ध्यान व मौन आदि में टिकने का नाम है ॥ ३५ ॥

^{पु. न. न. न.} आचमन, उपस्पर्शस्त्वाचमन (मथ) मौनमभाषणम् ।

^{स. स. स. पु.} उपचाप, आनुपूर्वी (स्त्रियां वा) वृत्परिपाटी अनुक्रमः ॥ ३६ ॥

^{पु. पु. पु. पु.} अनुक्रम, पर्यायश्चातिपातस्तु स्यात्पर्याय उपात्ययः ।

उपस्पर्श, आचमन ये २ स्नान या आचमन के नाम हैं । मौन, अभाषण ये २ मौन (चुपचाप) के नाम हैं “ प्राचेतसश्चादिकविः स्यान्मैत्रावरुणिश्च सः । वाल्मीकिश्चाथ गाधेयो विश्वामित्रश्च कौशिकः । व्यासो द्वैपायनः पाराशर्यः सत्यवती-सुतः ” प्राचेतस, आदिकवि, मैत्रावरुणि, वाल्मीकि ये ४ वाल्मीकि मुनि के नाम हैं । गाधेय, विश्वामित्र, कौशिक ये ३ विश्वामित्र के नाम हैं । व्यास, द्वैपायन, पाराशर्य, सत्यवतीसुत ये ४ वेदव्यास के नाम हैं । आनुपूर्वी, “ आनुपूर्व्य, आनुपूर्व, आनु-पूर्वक ” आद्युत्, परिपाटि, “ परिपाटी ” अनुक्रम, पर्याय ये ५ अनुक्रम के नाम

हैं इनमें ' आनुपूर्वी ' विकल्प से खीलिङ्ग है । अतिपात, पर्यय, उपात्यय ये ३ अतिक्रम (क्रमोलङ्घन) के नाम हैं ॥ ३६ । १ ॥

व्रतमात्र पु. पु.न. न.
चान्द्रायणादि- नियमोव्रत (मन्त्री) तच्चोपवासादि पुण्यकम् ॥ ३७ ॥
उपवास न. पु. पु. स.
उपवास
विचार औपवस्तं (तू) पवासो विवेकः पृथगात्मता ।

नियम, व्रत ये २ व्रतमात्र के नाम हैं इनमें ' व्रत ' पुंनपुंसक है और वह उपवा-
सादि व्रत ' पुण्यक ' कहाता है यह १ चान्द्रायण, कृच्छ्रचान्द्रायण, प्राजापत्य
और नक्तव्रत आदि से विहित व्रत का नाम है । औपवस्त " उपवस्त, औपवस्त्र,"
उपवास, " उपोषण, उपोषित " ये २ उपवास के नाम हैं । विवेक, पृथगात्मता
ये २ प्रकृति पुरुषादि भेदज्ञान के नाम हैं ॥ ३७ । १ ॥

न. स.
सदाचार वा (स्या) द्ब्रह्मवर्चसं वृत्ताध्ययनार्धि (रथाञ्जलिः) ॥ ३८ ॥
वेदाभ्यासफल पु. पु.
वेदपाठ में (पाठे) ब्रह्माञ्जलिः (पाठे विप्रुषो) ब्रह्मविन्दवः ।
अञ्जलि अञ्जलि न. पु. पु. पु.
या मुख से (ध्यानयोगासने) ब्रह्मासनं कल्पे विधिक्रमौ ॥ ३९ ॥
जलकण आसन विशेष विधान

ब्रह्मवर्चस, संवृत्ताध्ययनार्धि ये २ सदाचार पालन व वेदाभ्यास की सम्पत्ति के
नाम हैं अथवा स्वामी के मत में तप और स्वाध्याय के तेज को ' ब्रह्मवर्चस '
कहते हैं । वेदपाठ करने में जो अञ्जलि की जाती है उसे ' ब्रह्माञ्जलि ' कहते हैं
यह १ पढ़ने के आदि में हाथों की प्रणवपूर्वक अञ्जलि का नाम है । वेदपाठ
करने के समय अञ्जलि या मुखसे निकले जलकणों को ' ब्रह्मविन्दु ' कहते हैं एकस्व
में ' ब्रह्मविन्दुः ' द्वित्व में ' ब्रह्मविन्दू ' और बहुत्व में ' ब्रह्मविन्दवः ' होते हैं यह १
वेदाध्ययन के समय मुख से निकले जलविन्दुओं का नाम है । ध्यान और योगासन
में ' ब्रह्मासन ' कहाता है यह १ स्वस्तिक, पद्मासन आदि आसनविशेषों का नाम
है । कल्प, विधि, क्रम ये ३ वेदविहित विधि (विधान) के नाम हैं ॥ ३८ । ३९ ॥

पु. पु.
मुख्यविधि मुख्यः (स्यात्प्रथमः कल्पो) ऽनुकल्प (स्ततोऽधमः) ।
गौणविधि न.
वेदाध्ययन (संस्कारपूर्वं ग्रहणं स्यादु) पाकरणं (श्रुतेः) ॥ ४० ॥

जो प्रथम कल्प यानी आदि विधि है वह ' मुख्य ' कही जाती है जैसे ' ग्रीहियों
से यजन करे " यह १ मुख्य विधि का नाम है । मुख्य से जो अधम (गौण)

विधि है उसे ' अनुकल्प ' कहते हैं। जैसे " व्रीहियों के अभाव में नीवारों से यजन करै " यह १ गौणविधि का नाम है और संस्कारपूर्वक जो श्रुति का ग्रहण किया जाता है वह ' उपाकरण ' कहाता है यह १ वेदपाठ आरम्भ करने के समय विशेषविधि का नाम है ॥ ४० ॥

नमस्कार (समे तु) पादग्रहणमभिवादन (मित्युभे) ।

संन्यासी भिक्षुः परिव्राट् कर्मन्दी पाराशर्यपि मस्करी ॥ ४१ ॥

पादग्रहण, अभिवादन ये २ नाम और गोत्र का उच्चारण कर संस्कृत प्रयोग से नमस्कार के नाम हैं ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कर्ताते हैं । भिक्षु, परिव्राट् " परिव्राजक " कर्मन्दी (न्) पाराशरी या पराशरी (न्) और मस्करी (न्) ये ५ संन्यासी के नाम हैं ॥ ४१ ॥

तपस्वी तपसः पारिकाङ्क्षी वाचंयमो मुनिः ।

ब्रह्मचारी तपःक्लेशसहो दान्तो वर्णिनो ब्रह्मचारिणः ॥ ४२ ॥

तपस्वी, तपस, पारिकाङ्क्षी ये ३ तपस्वी के नाम हैं । वाचंयम, मुनि ये २ मौनव्रती के नाम हैं । तपःक्लेशसह, दान्त ये २ तपस्याक्लेश के सहनेवाले के नाम हैं और वर्णि, ब्रह्मचारी ये २ ब्रह्मचारी के नाम हैं ये दोनों इन्नन्त हैं एकत्व में वर्णि, ब्रह्मचारी, द्वित्व में वर्णिनो, ब्रह्मचारिणो और बहुत्व में वर्णिनः, ब्रह्मचारिणः ये होते हैं ॥ ४२ ॥

ऋषि ऋषयः सत्यवचसः स्नातकस्त्वाम्रव्रती ।

जितेन्द्रिय (ये) निर्जितेन्द्रियग्रामा यतिनो यतयश्च (ते) ॥ ४३ ॥

ऋषि, ' रिषि ' स्त्री " ऋषी " सत्यवचाः (स्) ये २ सामान्य ऋषियों के नाम हैं ऋषियों के भेद तो महर्षि, देवर्षि, ब्रह्मर्षि, परमर्षि, काण्डर्षि, श्रुतर्षि और क्रमवर ये ७ हैं और ऋषि पुंस्त्रीलिङ्ग है । स्नातक, आम्रव्रती (न्) " आम्रव्रती ये २ वेदव्रत को धारते हुए जिन्होंने गुरुकी आज्ञा से स्नान किया है उन

१ इदमेव " किं तर्हि मा कृतकर्माणि शान्तिर्वः श्रेयसी इत्याह । अतो मरकरी परिव्राजकः " इति भाष्यसंमतम् ॥

२ श्रुते तु वरं कृत्वा स्नायाद्वा तदनुज्ञया । वेदव्रतानि वा पारं नीत्वा शुभयमेव वा ॥

के नाम हैं । जिन्होंने इन्द्रियसमूहों को जीत लिया यानी अपने वश में कर लिया है वे यती (न्) और यति कइते हैं अथवा निर्जितेन्द्रियग्राम, यती, यति ये ३ जितेन्द्रिय के नाम हैं ॥ ४३ ॥

भूमिशायी ^{पु.} (यः स्थण्डिले व्रतवशाच्छेते) ^{पु.} स्थण्डिलशाय्य (सौ) ।

व्यास आदि ^{पु.} स्थाण्डिलश्चा(थ) ^{पु.} विरजस्तमसः ^{पु.} (स्यु)र्द्वयातिगाः ॥ ४४ ॥

व्रतवश (नियम के वश) से यज्ञ चौतरा या भूमिविशेष में जो सोता है उसे स्थण्डिलशायी और स्थाण्डिल कहते हैं ये २ बिना बिछौना भूमिशायी व्रती के नाम हैं और विरजस्तमः (स्) द्वयातिग ये २ रजतमरहित सत्त्वगुणवाले व्यासादिकों के नाम हैं ॥ ४४ ॥

पवित्र ^{पु.} प्रयतः ^{पु.} पूतः ^{पु.} पाषण्डाः ^{पु.} सर्वलिङ्गिनः ।

पालाशदण्ड ^{पु.} (पालाशो दण्ड) ^{पु.} आषाढो(व्रते)राम्भ(स्तु वैणवः) ॥ ४५ ॥

पवित्र, प्रयत, पूत ये ३ पवित्रता के नाम हैं । पाषण्ड, ' पाखण्ड ' सर्वलिङ्गी ये २ बौद्ध, क्षणिक आदि दुःशास्त्रवर्तियों के नाम हैं । व्रत में ब्रह्मचारियों का जो पालाश (पलाशसम्बन्धी) दण्ड है वह ' आषाढ ' कहाता है यह १ ब्रह्मचारी के दण्ड का नाम है और जो बांस का दण्ड है उसे ' राम्भ ' कहते हैं यह १ ब्रह्मचर्य में वैणव दण्ड का नाम है ॥ ४५ ॥

कमण्डलु ^{पु.न.} (अस्त्री) ^{स.} कमण्डलुः ^{स.} कुण्डी ^{स.} (व्रतिनामासनं) वृषी ।

मृगचर्म ^{न.} अजिनं ^{न.} चर्मकृत्तिः ^{स.} (स्त्री) ^{न.} भैक्षं (भिक्षाकदम्बकम्) ॥ ४६ ॥

कमण्डलु, कुण्डी ये २ ऋषियों के पात्र के नाम हैं । इनमें ' कमण्डलु ' पुनपुंसक है और कुण्डी स्त्रीलिङ्ग है । व्रतियों के आसन को वृषी या ' वृसी ' कहते हैं यह १ ब्रह्मचारी आदिके आसन का नाम है । अजिन, चर्म (न्) कृत्ति ये ३ मृगचर्म के नाम हैं और भिक्षा के समुदाय को ' भैक्ष ' कहते हैं यह १ भिक्षासमूह का नाम है ॥ ४६ ॥

वेदाध्ययनसोम ^{पु.} स्वाध्यायः ^{पु.} (स्या) ^{स.} जपः ^{पु.} सुत्याभिषवः ^{न.} सवनं (च सा) ।

लताका कूटना
सर्वापिनाशन
मन्त्र

(सर्वेनसामपध्वंसि जप्यं) त्रिष्वधमर्षणम् ॥ ४७ ॥

स्वाध्याय, जप, “ जाप ” ये २ वेदाध्ययन या वेदाभ्यास के नाम हैं । सुत्या, अभिषव, सबन ये ३ यज्ञ में सोमलता या यज्ञौषधियों के कूटने के नाम हैं । इनमें ‘सूत्या’ कथयन्त होकर टाबन्त हैं । सर्वपाप नाशनेवाले जाप यानी ऋचा आदि को ‘अघमर्षण’ कहते हैं वह तीनों लिङ्ग में रहता है यह १ सर्वपापप्रणाशन मन्त्र का नाम है ॥ ४७ ॥

पु. पु.
दर्शयाग, पौर्ण-**दर्श**(श्च) **पौर्णमास** (श्च यागौ पक्षान्तयोः पृथक्) ।
मासयाग, पु.
नित्यकर्म **(शरीरसाधनापेक्षं नित्यं यत्कर्म) तद्यमः ॥ ४८ ॥**

अमावास्या और पौर्णमासी में विहित यागों को क्रम से दर्श और पौर्णमास कहते हैं यानी अमावास्या के दिन किया हुआ याग ‘दर्श’ कहा जाता है यह १ दर्श-याग का नाम है और पौर्णमासी में किया हुआ याग ‘पौर्णमास’ कहा जाता है यह १ पौर्णमास याग का नाम है । शरीरमात्र से साध्य नित्य जो कर्म है उसे ‘यम’ कहते हैं जैसे पातञ्जल सूत्र में कहा है । अहिंसा, सत्य, अस्तेय (चोरी नहीं करना) ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह ये यम कहे जाते हैं यह १ यम का नाम है ॥ ४८ ॥

पु.
कर्मविशेष, **नियम**(स्तु स यत्कर्मानित्यमागन्तुसाधनम्) ।
वामरकन्धा- न. न.

पित जनेऊ **उपवीतं यज्ञसूत्रं (प्रोद्धृते दक्षिणे करे) ॥ ४९ ॥**

जो कर्म आगन्तु साधन है यानी बाह्यसाधन है या मिट्टी जल आदि साधन नित्य और अकृत्रिम कर्म है वह ‘नियम’ कहा जाता है जैसे पातञ्जलसूत्र में कहा है कि “शौच, संतोष, तपस्या, स्वाध्याय, ईश्वरप्रणिधान” ये नियम कहाते हैं यह १ कर्मविशेष नियम का नाम है “ क्षौरन्तु भद्रकरणं मुण्डनं वपनं त्रिषु ” क्षौर, भद्रकरण, मुण्डन, वपन ये ४ बार बनवाने के नाम हैं इनमें ‘वपन’ त्रिलिङ्ग है यानी तीनों लिङ्ग में रहता है । दाहिने हाथ में जो जनेऊ धारण किया जाता है उसे ‘उपवीत’ और ‘यज्ञसूत्र’ कहते हैं ये २ बायें कांधे में धारे हुए यज्ञोपवीत के नाम हैं ॥ ४९ ॥

१ कर्मनित्यमिति वा पाठः ॥

२ तथा च गोभिलसूत्रे—“ दक्षिणं बाहुमुद्धृत्य शिरोऽध्यायं सन्ध्येऽस्ते प्रतिष्ठापयति दक्षिणं कक्षमन्वव-लम्बं भवतीत्येवं यज्ञोपवीती भवति” (१।२।२) ॥

दाहिने कांधेका

न.

न.

जनेऊ, कण्ठमें

मालाकार, देव

तीर्थ, प्रजा-

पतितीर्थ

प्राचीनावीत (मन्यस्मि) निवीतं (कण्ठलम्बितम्) ।

(अङ्गुल्यग्रे तीर्थं) दैवं (स्वल्पाङ्गुल्योर्मूले) कायम् ॥ ५० ॥

बायें हाथ में जो जनेऊ धारण किया जाता है उसे 'प्राचीनावीत' कहते हैं यह १ दाहिने कांधे में धारे हुए यज्ञोपवीत का नाम है । कण्ठ में सीधा लम्बा किया हुआ यज्ञोपवीत 'निवीत' कहाता है यह १ कण्ठ में मालाकार धारे हुए जनेऊ का नाम है । अङ्गुलियों के अग्रभाग में 'दैवतीर्थ' कहा जाता है यह १ देवतीर्थ का नाम है इसीसे कहा है कि (देवतीर्थेन तर्पयेत्) अङ्गुलियों के अग्रभाग से देवताओं का तर्पण करें । अनामिका और कनिष्ठिका के अधोभाग में 'कायतीर्थ' कहाता है "कायः कदैवते मूर्तो संघेलक्षस्वभावयोः । मनुष्यतीर्थे कायं स्यादिति" (वेदिनी) इस कोप के प्रमाण से प्रजापतितीर्थ में 'काय' नपुंसक है यह १ प्रजापति-तीर्थ का नाम है ॥ ५० ॥

पैत्रतीर्थ,

न.

न.

ब्रह्मतीर्थ

(मध्येऽङ्गुष्ठाङ्गुल्योः) पित्र्यं (मूले ह्यङ्गुष्ठस्य) ब्राह्मम् ।

ब्रह्म में

न.

न.

न.

लय होगा

(स्याद्) ब्रह्मभूयं ब्रह्मत्वं ब्रह्मसायुज्यं (मित्यपि) ॥ ५१ ॥

अङ्गूठा और तर्जनी के मध्यभाग में पित्र्य, पैत्र्य या पैत्रतीर्थ कहाता है यह १ पैत्र तीर्थ का नाम है । अङ्गूठे की मूल में ब्राह्म या ब्राह्म्य तीर्थ कहा जाता है यह १ ब्राह्मतीर्थ का नाम है और ब्रह्मभूय, ब्रह्मत्वं, ब्रह्मसायुज्य ये ३ ब्रह्म में मिल जाने के नाम हैं ॥ ५१ ॥

देवताओं में

न.

न.

मिलना, कृच्छ्र

चान्द्रायणादि,

संन्यासविशेष

नष्टाग्निवाला

मिथ्याधर्माश्रयी

लोभी या

दम्भी संस्कार

हीन वेदाभ्यास

विहीन

देवभूयादिकं (तद्वत्) कृच्छ्रं (सान्तपनादिकम्) ।

(संन्यासवत्यनशने पुमान्) प्रायो (थ) वीरहा ॥ ५२ ॥

नष्टाग्निः कुहना (लोभान्मिथ्येर्यापथकल्पना) ।

व्रात्यः संस्कारहीनः (स्याद्) स्वाध्यायो निराकृतिः ॥ ५३ ॥

देवभूय, देवत्व, देवसायुज्य ये ३ देवताओं में मिल जाने या देवभाव के नाम हैं । सान्तपन आदि 'कृच्छ्र' कहाता है यह १ कृच्छ्रचान्द्रायण आदि व्रतों का

१ "सर्वं बाहुमुदृत्य शिरोऽवभाव दक्षिणैस्ते प्रतिष्ठापयति सर्वं कक्षमन्ववसन् भवत्येवं प्राचीना वीती भवति (१।२।३) ॥

नाम है जैसे मनुजी ने कहा है कि, (गोमूत्र, गोबर, दूध, दही, घी और कुशोदक इन्होंका भक्षण कर एकरात्र व्रत करना कृच्छ्रसान्तपन कहा जाता है) आदि पद से चान्द्रायण, प्राजापत्य और पराक आदिकों का ग्रहण होता है । संन्यासपूर्वक जो भोजन का त्याग है उसे ' प्राय ' कहते हैं यह पुंलिङ्ग है यह १ संन्यास विशेष का नाम है । वीरहा (हन्) नष्टाग्नि ये २ जिस अग्निहोत्री आदि का प्रमाद से अग्नि नष्ट होगया है उसके नाम हैं । लोभ से परधन आदि की अभिलाषा से जो मिथ्यापदों से अर्थ की कल्पना की जाती है या दम् से जो ध्यान आदि का संपादन किया जाता है उसे ' कुहना ' कहते हैं यह १ दम्भ से किये ध्यान मौन आदि का नाम है । व्रात्य, संस्कारहीन ये २ गौण काल में भी यज्ञोपवीत आदि संस्कार से रहित के नाम हैं और अस्वाध्याय, निराकृति ये २ वेदाभ्यासरहित के नाम हैं ॥ ५२।५३ ॥

गु. गु. गु. गु.
बहुरूपिया, धर्मध्वजी लिङ्गवृत्तिरवकीर्णी क्षतव्रतः ।

ब्रह्मचर्यहीन (सुप्ते यस्मिन्नस्तमेति सुप्ते यस्मिन्नुदेति च) ॥ ५४ ॥

सूर्यास्तसुप्त, गु. गु.
सूर्योदय सुप्त, (अंशुमान) भिनिर्मुक्ताभ्युदितौ (च यथाक्रमम्) ।

गु.
छोटा भाई परिवेत्ता (नुजोनूढे ज्येष्ठे दारपरिग्रहात्) ॥ ५५ ॥

धर्मध्वजी (जिन्) लिङ्गवृत्ति ये २ भीख आदि के लिये जटादिधारी बहुरूप-पिया या ठग के नाम हैं । अवकीर्णी (गिन्) क्षतव्रत ये २ खरिडत ब्रह्मचर्यादि के नाम हैं । जिसके सोने में सूर्यनारायण अस्ताचल या उदयाचल को प्राप्त होते हैं उसे क्रम से ' अभिनिर्मुक्त ' व ' अभ्युदित ' कहते हैं यानी ' अभिनिर्मुक्त ' यह १ सूर्यास्त समय में सोनेवाले का नाम है फिर जिसके सोने में सूर्यनारायण उदय को प्राप्त होते हैं उसे ' अभ्युदित ' कहते हैं यह १ सूर्योदय में सोनेवाले का नाम है । बिना विवाह संस्कार किये जेठे भाई को छोड़कर जो छोटा भाई अपना विवाह संस्कार करलेता है या जिसने किया है उसे ' परिवेत्ता ' कहते हैं यह १ जेठे भाई के विवाहरहित होने पर विवाह किये छोटे भाई का नाम है ॥ ५४ । ५५ ॥

गु. गु. गु. गु.
बड़ा भाई, विवाहपरिवेत्तिस्तु (तज्ज्यायान्) विवाहोपयमौ (समौ) ।

गु. गु. गु. न.
(तथा) परिणयोद्वाहोपयामाः पाणिपीडनम् ॥ ५६ ॥

उस परिवेत्ता का जेठाभाई परिवित्ति, ' परिवृत्ति या परिवृत्ति ' कहाता है यह १ परिवेत्ता के जेठे भाई का नाम है । विवाह, उपयम, परिणय, उद्वाह, उपयाम, पाणिपीडन और ' पाणिग्रहण ' भी ये ६ विवाह के नाम हैं इनमें विवाह, उपयम ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ॥ ५६ ॥

पु. पु. न. न. न.

मैथुन, त्रिवर्ग, व्यवायो ग्राम्यधर्मो मैथुनं निधुवनं रतम् ।

पु.

पु.

चतुर्वर्ग

त्रिवर्गो (धर्मकामार्थे) श्रुतुर्वर्गः (समोक्षकैः) ॥ ५७ ॥

व्यवाय, ग्राम्यधर्म, मैथुन, निधुवन, रत " रमण, सुरत, रति " ये ५ मैथुन के नाम हैं इनमें व्यवाय, ग्राम्यधर्म ये दोनों पुल्लिङ्ग हैं और शेष नपुंसक हैं । धर्म, काम, अर्थ इन तीनों से उपलक्षित ' त्रिवर्ग ' कहाता है यह १ त्रिवर्ग का नाम है और मोक्षसमेत धर्म, काम, अर्थ इन चारों से उपलक्षित ' चतुर्वर्ग ' कहाजाता है यह १ चतुर्वर्ग का नाम है ॥ ५७ ॥

चतुर्भद्र वर के

मित्र या

सहवाला आदि

पु.

सबलैस्तैश्चतुर्भद्रं जन्याः (स्निग्धा वरस्य ये) ॥ ५८ ॥

इति ब्रह्मवर्गः ॥

बल समेत उन धर्म आदिकों से उपलक्षित ' चतुर्भद्र ' कहा जाता है यह १ चतुर्भद्र का नाम है और जो वर (दामाद) को बड़े प्यारे ज्ञाति, बान्धव व सखा आदि हैं वे ' जन्य ' कहाते हैं एकत्व में ' जन्यः ' द्वित्व में ' जन्यौ ' और बहुत्व में ' जन्याः ' ये होते हैं यह १ वर के मित्र या सहवाला आदि का नाम है ॥ ५८ ॥

इति ब्रह्मवर्गविवरणम् ॥

अथ क्षत्रियवर्गो व्याख्यायते ॥

क्षत्रिय राजा ^{पु.}मूर्धाभिषिक्तो ^{पु.}राजन्यो ^{पु.}बाहुजः ^{पु.}क्षत्रियो ^{पु.}विराट् ।

^{पु.}^{पु.}^{पु.}^{पु.}^{पु.}^{पु.}^{पु.}

राज्ञि राट्पार्थिवक्षमाभृन्तृप भूपमहीक्षितः ॥ १ ॥

मूर्धाभिषिक्त, राजन्य, बाहुज, क्षत्रिय, " क्षत्री (त्रिन्) क्षत्र, क्षत्र " विराट् ये ५ क्षत्रिय के नाम हैं । राजा (न) राट्, पार्थिव, क्षमाभृत् "महीभृत्, क्षमाभुक्, महीभुक् " तृप, " तृपति, नरपति, नरपाल, तृपाल " भूप, " भूपति, भूपाल, भूमिप, भूमिपति, भूमिपाल " महीक्षित्, " महिप, महीपति, महीपाल " ये ७ राजा के नाम हैं ॥ १ ॥

महाराजा (राजा तु प्रणाताशेषसामन्तः स्याद) धीश्वरः ।
 महाराजाधिराज पु. पु. पु.
 छोटा राजा चक्रवर्ती सार्वभौमो (नृपोऽन्यो) मण्डलेश्वरः ॥ २ ॥

सब देशों के समस्त प्रणत राजालोग जिसकी आज्ञा से राज्य करते हैं उसे
 “ अधीश्वर ” कहते हैं यह १ महाराजा का नाम है । चक्रवर्ती, सार्वभौम ये २
 समुद्रपर्यन्त पृथ्वीश्वर (शाहंशाह बादशाह) के नाम हैं उससे भिन्न राजा
 ‘ मण्डलेश्वर ’ कहाता है यह १ मण्डलेश्वर (छोटे राजा) का नाम है ॥ २ ॥

राजसूयादि कर्ता (येनेष्टं राजसूयेन मण्डलस्येश्वरश्च) यः ।

मण्डलेश्वर, शास्ति यश्चाज्ञया राज्ञः स) सम्राट् (थ) राजकम् ॥ ३ ॥

नृपाध्यक्ष, नृप न.

समूह, क्षत्रिय राजन्यकं (च) (नृपतिक्षत्रियाणां गणे क्रमात्) ।

समूह, मन्त्री
 या वज़ीर, छोटा
 मन्त्री

पु. पु. पु. पु.
 मन्त्री धीसचिवोऽमात्यो (ऽन्ये) कर्मसचिवा (स्ततः) ४ ॥

जिसने राजसूययज्ञविशेष को किया है व जो बारह मण्डल का ईश्वर है
 और जो सब राजाओं को आज्ञा देता है वह ‘ सम्राट् ’ कहा जाता है अथवा
 कितेक आचार्य तीन नामों को कहते हैं कि जिसने राजसूययज्ञ से पूजन किया है
 वह सम्राट् है जो द्वादश मण्डलों का अधीश्वर है वह सम्राट् है और जो समस्त
 राजाओं को शासन करता है वह भी ‘ सम्राट् ’ कहाता है यह १ सम्राट् विशेष का
 नाम है । राजाओं और क्षत्रियों के समुदाय को क्रम से ‘ राजक ’ और ‘ राजन्यक ’
 कहते हैं यानी राजाओं के समुदाय को ‘ राजक ’ कहते हैं यह १ राजसमूह का
 नाम है । क्षत्रियों के समुदाय को ‘ राजन्यक ’ कहते हैं यह १ क्षत्रियों के समूह
 का नाम है । मन्त्री, धीसचिव, अमात्य या “ अमात्य ” ये ३ बुद्धि सहायवाले
 मन्त्री या वज़ीर के नाम हैं और उस धीसचिव से अन्य “ कर्मसचिव ” कहाते
 हैं एकत्व में ‘ कर्मसचिवः ’ द्वित्व में ‘ कर्मसचिवौ ’ बहुत्व में ‘ कर्मसचिवाः ’ ये
 होते हैं ॥ ३ । ४ ॥

प्रधानमन्त्री,

पु.

पु.न.

पु.

पु.

पुरोहित, महामात्राः प्रधानानि पुरोधा (स्तु) पुरोहितः ।

पञ्च या

पु.

पु.

न्यायाधीश (द्रष्टरि व्यवहाराणां) प्राङ्निवाकाक्षदर्शकौ ॥ ५ ॥

महामात्र, प्रधान ये २ मुख्य राजसहायक (प्रधानमन्त्री) के नाम हैं । पुरोधाः (धस्) पुरोहित ये २ पुरोहित के नाम हैं । ऋण लेना आदि अट्टारह विवाद के स्थान यानी व्यवहार हैं उनके देखनेवालों या निर्णय करनेवालों में “ प्राङ्निवाक, अक्षदर्शक ” ये दोनों कहे जाते हैं ये २ धर्माध्यक्ष, पञ्च या न्यायाधीश के नाम हैं ॥ ५ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.

द्वारपाल, प्रतीहारो द्वारपालद्वाःस्थद्वाःस्थितदर्शकाः ।

रखवार, पु. पु. पु. पु.

अधिकारी रक्षिवर्ग (स्त्व) नीकस्थोऽथाध्यक्षाधिकृतौ(समौ)६॥

प्रतीहार, प्रतिहार, द्वारपाल, द्वाःस्थ, “ द्वारी (न) द्वारिक, दौवारिक ” द्वाः-स्थित, दर्शक “ उपदर्शक, द्वाःस्थित, दर्शक ” ये ५ द्वारपाल के नाम हैं । रक्षिवर्ग, अनीकस्थ ये २ राजरक्षकगणों के नाम हैं और अध्यक्ष, अधिकृत ये २ अधिकारी के नाम हैं ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहते हैं ॥ ६ ॥

एकग्रामाध्यक्ष, पु.

पु.

बहुग्रामाध्यक्ष, स्थायुको (अधिकृतो ग्रामे) गोपो (ग्रामेषु भूरिषु) ।

स्वर्णाधिकारी, पु.

पु.

पु.

पु.

रूप्याधिकारी भौरिकः कनकाध्यक्षो रूप्याध्यक्ष (स्तु) नैषिकः ॥ ७ ॥

एक गांव में जो अधिकार को प्राप्त हुआ है उसे ‘ स्थायुक ’ कहते हैं यह १ एकग्रामाध्यक्ष या ठेकेदार का नाम है । बहुतसे ग्रामों में जो अधिकारी हुआ है वह ‘ गोप ’ कहाता है यह १ बहुग्रामाध्यक्ष या बड़े ठेकेदार का नाम है । भौरिक, कनकाध्यक्ष ये २ स्वर्णाधिकारी के नाम हैं और ‘ रूप्याध्यक्ष ’ नैषिक “ टङ्कपति, टङ्कपति ” ये २ रुपयों के अधिकारी या खज़ांची के नाम हैं ॥ ७ ॥

पु.

रनिवासाधि- (अन्तःपुरे त्वधिकृतः स्या) दन्तर्वेशिको (जनः) ।

कारी, रनिवास पु.

पु.

पु.

पु.

का सेवक सौविदल्लाः कञ्चुकिनः स्थापत्याः सौविदाश्च (ते) ॥ ८ ॥

रनिवास में जो पुरुष अधिकार को प्राप्त हुआ है वह ‘ अन्तर्वेशिक ’ कहाता है यह १ रनिवास के अधिकारी का नाम है । सौविदल्ल, कञ्चुकी (न) स्थापत्य, सौविद “ सुविद ” ये ४ रनिवास के निकट रहनेवाले या रानियों के द्वारपाल के नाम हैं इनमें बहुत्व से बहुवचन किया गया है परन्तु ये नित्य बहुवचनान्त नहीं हैं ॥ ८ ॥

खोजा पु. पु. पु. पु. पु.
सेवक शयडो वर्षवर (स्तुल्यौ) सेवकार्थ्यनुजीविनः ।

पड़ोसी राजा पु. न.
अन्यराजा (विषयानन्तरो राजा) शत्रुर्मित्र (मतः परम्) ॥ ६ ॥

शयड , “षण्ड, शण्ड, षण्ड” वर्षवर ये २ रनवासमें रहनेवाले नपुंसकमात्र (खोजा) के नाम हैं । सेवक, अर्थी, अनुजीवी ये ३ सेवक के नाम हैं । स्वदेश-रूप विषय से अव्यवहित जो राजा वह ‘शत्रु’ कहाता है यह १ पड़ोसी राजा का नाम है और उस शत्रु से अन्य राजा को ‘मित्र’ या ‘मित्र’ कहते हैं यह १ अन्य राजा से व्यवहित राजा का नाम है ॥ ६ ॥

पु. पु.
दोनोंसे भिन्न, उदासीनः (परतरः) पार्ष्णिग्राह (स्तु पृष्ठतः) ।
अपने राज्य से पु. पु. पु. पु. पु. पु.
पीछे का राजा, रिपौवैरिसपत्नारिद्विषद्वेषणदुर्हृदः ॥ १० ॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु.
वैरी द्विद्विपक्षाहितामित्रदस्युशात्रवशत्रवः ।

पु. पु. पु. पु. पु.
अभिघातिपरारातिप्रत्यर्थिपरिपन्थिनः ॥ ११ ॥

शत्रु, मित्र से परतर=(जुदे) राजा को ‘उदासीन’ कहते हैं यानी अव्यवहित राजा “उदासीन” कहाता है यह १ शत्रु, मित्र से भिन्न राजा का नाम है । पीछे के देश में वर्तमान राजा ‘पार्ष्णिग्राह’ कहाता है यह १ अपने राज्य से पृष्ठवर्ती राजा का नाम है । रिपु, वैरी (न) सपत्न या ‘सापत्न्य’ अरि, द्विषन्। द्वेषण, दुर्हृद, द्विद्, विपक्ष, अहित, अमित्र, दस्यु, शात्रव, शत्रु, अभिघाति, “अभिघाति” पर, अराति, “अराति” प्रत्यर्थी और परिपन्थी (न) ये १६ शत्रु के नाम हैं ॥ १० । ११ ॥

समान वयवाले, पु. पु. पु. न. पु. पु.
मित्र, वयस्यः स्निग्धः सवया (अथ) मित्रं सखा सुहृत् ।
मित्रता या न. न. पु. न.
मित्राई, भलाई सख्यं साप्तपदीनं (स्याद) नुरोधोऽनुवर्तनम् ॥ १२ ॥

वयस्य, स्निग्ध, सवयाः (स्) ये ३ बराबर उमरवाले प्रिय के नाम हैं मित्र, सखा, सुहृत् ये ३ मित्र (दोस्त) के नाम हैं । सख्य, साप्तपदीन ये २ सखा

१ “मित्रं सुहृदि न द्वयोः । सूर्ये पुंसि ज्ञियां गन्धद्रव्ये दैत्यान्तरे प्रमानिति” (मेदिनी) ॥

२ बाहुलकादनादेशस्याभावः “अनुनासिकपरत्वाभावादानादेशो नेति” तु भाष्यसिद्धान्तः ॥

के धर्म, कर्मों या मिषता के नाम हैं और अनुरोध, अनुवर्तन ये २ अनुकूलता या भलाई के नाम हैं ॥ १२ ॥

दूत या ^{पु.} यथार्हवर्णः ^{पु.} प्रणिधिरपसर्पश्चरः ^{पु. पु.} स्पशः ^{पु.} ।
 हलकारा, ^{पु.} चार (श्च) ^{पु.} गूढपुरुष (श्च) ^{पु.} आप्तः ^{पु.} प्रत्ययित(स्त्रिषु) ॥ १३ ॥
 विश्वासी

यथार्हवर्ण, प्रणिधि, अपसर्प “अवसर्प” चर, स्पश, चार और गूढपुरुष ये ७ दूत, धावन, हलकारा या जासूस के नाम हैं । आप्त, प्रत्ययित ये २ निश्चय ज्ञानवाले या विश्वासवाले के नाम हैं इनमें ‘प्रत्ययित’ तीनों लिङ्ग में रहता है ॥ १३ ॥

^{पु.} ज्योतिर्विद ^{पु.} सांवत्सरो ^{पु.} ज्यौतिषिको ^{पु.} दैवज्ञगणका (वपि) ।
^{पु.} (स्यु)मौहूर्तिको ^{पु.} मौहूर्तज्ञानिकार्तान्तिका(अपि) ॥ १४ ॥

सांवत्सर, ज्यौतिषिक, या “ज्योतिषिक” दैवज्ञ, गणक, “स्त्री गणकी” मौहूर्तिका, “मौहूर्त” ज्ञानी (इन्) और कार्तान्तिक ये ८ ज्योतिषी के नाम हैं ॥ १४ ॥

^{पु.} शाल्बी, ^{पु.} तान्त्रिको ^{पु.} ज्ञातसिद्धान्तः ^{पु.} सत्री ^{पु.} गृहपतिः (समौ) ।
 मोदी, ^{पु.} लिपिकरो ^{पु.} ऽक्षरचणो ^{पु.} ऽक्षरचुञ्चु (श्च) ^{पु.} लेखके ॥ १५ ॥
 लेखक

तान्त्रिक, ज्ञातसिद्धान्त ये २ शास्त्रज्ञाता के नाम हैं । सत्री (न्) सत्री (न्) गृहपति ये २ सदा अन्नआदिकों के देनेवाले गृहस्थ, मोदी या कोठारी के नाम हैं । ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं और लिपिकर ‘लिपिकर’ अक्षर-चण, अक्षरचुञ्चु और लेखक ये ४ लिखनेवाले के नाम हैं ॥ १५ ॥

^{स.} लिखायाअक्षर ^{स.} (लिखिताक्षरविन्यासे) ^{पु.} लिपिलिबि(रुभे स्त्रियौ) ।

^{पु.} दूत, ^{पु.} दूतका काम ^{पु.} स्यात्संदेशहरो ^{पु.} दूतो ^{पु.} दूत्यं (तद्भावकर्मणि) ॥ १६ ॥

लिखित, “लिखन, लेखन” अक्षरविन्यास ‘अक्षरसंस्थान’ लिपि, “लिपी” लिबि, “लिबी” ये ४ लिखे हुए अक्षरके नाम हैं । संदेशहर, दूत, स्त्री ‘दूती’ ये २

दूत के नाम हैं और उस दूत के होने या कर्म में ' दूत्य ' या ' दौत्य ' कहा जाता है यह १ दूत के काम का नाम है ॥ १६ ॥

पथिक, अध्वनीनोऽध्वगोऽध्वन्यः पान्थः पथिक इत्यपि ।
स्वाम्यमात्यसुहृत्कोषराष्ट्रदुर्गबलानि च ॥ १७ ॥
राज्याङ्ग राज्याङ्गानि प्रकृतयः पौराणां श्रेण्याऽपि च) ।

अध्वनीन, अध्वग, अध्वन्य, पान्थ, पथिक ये ५ पथिक या डगरोही या राही के नाम हैं और खिलिङ्ग में अध्वनीना, अध्वगा, अध्वन्या, पान्था, पथिकी और पथिका ये भी होते हैं । स्वाभी=राजा, अमात्य=मन्त्री, सुहृन्=मित्र, कोष=धनका समूह (खज़ाना) राष्ट्र=जनपदवर्तीभूमि, दुर्ग दुर्गमस्थान (किला आदि) बल=फौज ये सात राज्याङ्ग, प्रकृति और श्रेणि कहाते हैं जैसे कामन्दकीयशास्त्र में कहा है कि (स्वाम्यमात्यश्च राष्ट्रं च दुर्गं कोषो बलं सुहृन् । परस्परपकारीदं सप्ताङ्गं राज्यमुच्यते) ये ही सब प्रकृतिवाच्य हैं और पुरवासियों का समूह भी प्रकृति शब्दवाच्य है पौरश्रेणी समेत आठ अङ्गवाली राज्य कहाती है ये २ या ३ राज्याङ्ग के नाम हैं ॥ १७ । १ ॥

पु. न. न. पु.
मिलाप आदि सन्धि (ना) विग्रहो यानमासनं द्वैधमाश्रयः ॥ १८ ॥

पु. स.
दृग्गुणशक्तियां (षट्) गुणाः शक्तयः (स्तिस्रः प्रभावोत्साहमन्त्रजाः) ।
विवर्ग (क्षयः स्थानं च वृद्धिश्च) त्रिवर्गो (नीतिवेदिनाम्) ॥ १९ ॥

सोना आदि देकर बैरी को मिला लेना ' सन्धि ' कहाती है, यह पुंलिङ्ग है, परराज्य के फूंकने या लूटने आदि को ' विग्रह ' कहते हैं, शत्रु के ऊपर चढ़जाने को ' यान ' कहाजाता है, शत्रु को बलवान् देखकर किला आदि में बैठ रहना ' आसन ' कहाता है, बलवान् शत्रु से मिलजाना व निर्बल को मारडालना ' द्वैध ' कहाता है, शत्रु से पीड़ित होकर किसी बलवान् के पीछे लुकजाने को ' आश्रय ' कहते हैं ये छः ' गुण ' शब्दवाच्य कहाते हैं यानी ' षट्गुणाः ' यह १ सन्धि आदिकों का नाम है । प्रभाव, उत्साह, मन्त्रज ये ३ शक्तियां कहाती हैं यह १ राजशक्तियों का नाम है इनमें कोष, दण्ड और तेज ये ' प्रभावशक्ति ' हैं, विक्रम आदि से उत्पत्ति ' उत्साहशक्ति ' है, सन्धिविग्रह आदि को मन्त्र से जैसा चाहिये वैसाही स्थापन करना ' मन्त्रशक्ति ' कहाती है अथवा कितेक आचार्यों के मत में पञ्चाङ्गमन्त्र ' मन्त्रशक्ति ' कहलाती है और क्षय, स्थान, वृद्धि ये ३ नीतिशास्त्र-

चेत्ताओं के 'त्रिवर्ग' हैं यह १ नीतिशास्त्रोक्त त्रिवर्ग का नाम है (कृषिर्वणिक्पथं दुर्गं सेतुःकुञ्जरबन्धनम् । खन्याकारबलादानं शून्यानां च निवेशनम्) ये आठ वर्ग हैं उनके अपचय को 'क्षय' और उपचय-अपचय से रहित होकर रहने को स्थान तथा उपचय को 'वृद्धि' कहते हैं ॥ १८ । १९ ॥

पु.

पु.

प्रभाव उपाय (स) प्रतापः प्रभावश्च (यत्तेजः कोषदण्डजम्) ।

पु.

(भेदो दण्डः सामदानमित्युपाय (चतुष्टयम्) ॥ २० ॥

धनसमूह, दम, सेना से उपजा हुआ जो तेज है वह 'प्रताप' और 'प्रभाव' कहाता है ये २ प्रभाव के नाम हैं । उपस्थित और मिले हुए शत्रुओं को भेद से स्वाधीन करना, दण्डदेना, प्रियवचन आदि कहना और धन आदि को समर्पण करना ये ४ उपायचतुष्टय कहाते हैं यह उपायचतुष्टयों का एक २ नाम है इनका बहुत सा विस्तार कामन्दकीयादि नीतिशास्त्रों में देखना चाहिये ॥ २० ॥

दण्ड मिलाप न.

पु.

पु.

न. न.

भेद मन्त्री आदि साहसं (तु) दमो दण्डः सामसान्त्व (मथो समौ) ।

के कामों को पु. पु. स.

देखना भेदोपजापा (उपधा) धर्माद्यैर्यत्परीक्षणम् ॥ २१ ॥

साहस, दम, दण्ड ये ३ दण्ड के नाम हैं । साम (न) " शाम (न) " सामन्त्व ये २ मिलाप के नाम हैं । भेद, उपजाप ये दोनों समानार्थक होकर समान-लिङ्ग कहाते हैं ये २ मिले हुए के भेद करने के नाम हैं और धर्म, अर्थ, काम और भय से परीक्षापूर्वक मन्त्री आदि के आशयके परखने को " उपधा " कहते हैं यह १ राजा करके धर्मादिकों से मन्त्री आदि की परीक्षा का नाम है ॥ २१ ॥

पु.स.न.

सलाह (पञ्च त्रिष्व) षडक्षीणो (यस्ततोयाद्यगोचरः) ।

एकान्त पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. न.

एकान्त की बात विविक्त्रविजनच्छन्ननिःशलाका (स्तथा) रहः ॥ २२ ॥

अ. * अ.

पु.स.न.

विश्वास रहश्चोपांशु (चालिङ्गे) रहस्यं (तज्जवे त्रिषु) ।

पु.

पु.

पु.

अन्याय (समौ) विस्त्रम्भविश्वासौ भ्रेषो (भ्रंशो यथोचितात्) २३ ।

अब ' षडक्षीण ' आदि निःशलाकपर्यन्त पांच शब्द त्रिलिङ्ग हैं यानी वाच्य-लिङ्ग कहाते हैं । जो तृतीय आदि से नहीं जाना जाता है वरन दोही से किया मन्त्र

(सलाह) आदि है वह “ अप्रवक्षीण ” कहाता है यह १ सलाह का नाम है । विविक्त, विजन, छन्न ‘छन्दः’ निःशलाक, रहः (स्) रहः और उपांशु ये ७ एकान्त के नाम हैं । इनमें पहिला ‘रहः’ सान्त होकर नपुंसक है और दूसरा ‘रहः’ और उपांशु ये दोनों अव्यय हैं जो एकान्त में हो उसे ‘रहस्य’ कहते हैं । यह त्रिलिङ्ग है यह १ एकान्त की बात का नाम है । विस्मम्भ “ विश्रम्भ ” विश्वास ये २ विश्वास के नाम हैं और जो यथाप्राप्त से गिर गया है उसे ‘भ्रेष’ कहते हैं यह १ अन्याय का नाम है ॥ २२।२३ ॥

पु. पु. पु. न. न.
न्याय न्याययुत अभ्रेषन्यायकल्पा (स्तु) देशरूपं समञ्जसम् ।

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
द्रव्ययुक्तयुक्त युक्तमौपयिकं लभ्यं भजमानाभिनीत (वत्) ॥ २४ ॥

पु.स.न. स. न.
परीक्षा न्याय्यं (च त्रिषु षट्) संप्रधारणा (तु) समर्थनम् ।

अभ्रेष, न्याय, कल्प, देशरूप, समञ्जस ये ५ न्याय के नाम हैं । युक्त “ युत ” औपयिक, लभ्य, भजमान, अभिनीत और न्याय ये ६ न्याय से युक्त द्रव्य के नाम हैं और ये छहो तीनों लिङ्ग हैं और संप्रधारणा, समर्थन ये २ युक्तयुक्त परीक्षा के नाम हैं इनमें ‘संप्रधारणा’ खीलिङ्ग है और ‘समर्थन’ नपुंसक है ॥ २४।१ ॥

पु. पु. पु. न.
आज्ञा या हुक्म अववाद (स्तु) निर्देशो निदेशः शासनं (चसः) ॥ २५ ॥

मर्यादा स. स. स. स. स. स.
अपराध शिष्टि (श्चा) ज्ञा (च) संस्था (तु) मर्यादा धारणा स्थितिः ।

न. पु. पु. न. न.
कैद करना आगोऽपराधो मन्तु (श्च) (समे तू) दानबन्धने ॥ २६ ॥

अववाद “ अपवाद ” निर्देश, निदेश, शासन, शिष्टि (शास्ति) और आज्ञा ये ६ काम करने की आज्ञा (हुक्म) के नाम हैं । संस्था, मर्यादा, धारणा, स्थिति ये ४ न्यायमार्ग में टिकने के नाम हैं । आगः (स्) अपराध, मन्तु ये ३ अपराध के नाम हैं । इनमें “ सोढाहेशतमागांसि ” इस माघकाव्य के प्रमाण से ‘आगः’ यह सान्त नपुंसक है और उद्दान, बन्धन ये २ बन्धन के नाम हैं ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ॥ २५ । २६ ॥

१ विश्वहैमसंवादप्राप्तप्रामाण्यमेदिनीपुस्तके “ युतः ” इति पाठस्थोपालम्बेन योग्यत्वेन चाश-
स्योपन्यासः श्रमादिकः ॥

दूना दण्ड पु. द्विपाद्यो (द्विगुणो दण्डो) भागधेयः करो बलिः ।
 पोत या राज- पु. न. न.
 भाग महसूल पु.न. न. न.
 भेंट या नज़र (घटादिदेयं) शुल्कोऽस्त्री) प्राभृत(न्तु)प्रदेशनम् २७॥

दूना दण्ड 'द्विपाद्य' कहाता है यह १ अपराध होने पर शास्त्रसे जतलाये हुए दण्ड से दूने दण्ड का नाम है । भागधेय, कर, "कार" बलि ये ३ काश्तकार आदि लोगों से जो राजा को मिलता है उसके नाम हैं यानी पोत के नाम हैं । घाट आदि नदी तीर स्थान में वस्तुओं को पार लेजाने और लेआने में जो राज-भाग दिया जाता है वह 'शुल्क' कहा जाता है यह १ महसूल का नाम है यह पुनपुंसक है और प्राभृत, प्रदेशन ये २ देवता और मित्र आदिकों के लिये दी हुई भेंट या नज़र के नाम हैं ॥ २७ ॥

उपहार दायज न. न. पु. स.
 या व्रत व उपायनमुपग्राह्यमुपहारस्तथोपदा ।

भील आदि में पु. न.
 देयधन (यौतकादि तु यदेयं) सुदायो हरणं (च तत्) ॥ २८ ॥

उपायन, उपग्राह्य, उपहार, उपदा ये ४ राजा व गुरु आदि के दर्शन के पहले समर्पण किये जानेवाले वस्तु, भेंट या नज़र के नाम हैं अथवा कितेक आचार्यों के मत में प्राभृत, प्रदेशन, उपायन, उपग्राह्य, उपहार और उपदा ये ६ भेंट या नज़र के ही नाम हैं । युतक=वर और वधूसम्बन्धी धन को 'यौतक' या 'यौतुक' कहते हैं बन्धु आदिकों के देय धन का जो देना है उसे 'सुदाय' या 'सदाय' और 'हरण' भी कहते हैं ये २ कन्यादान के समय और व्रत भिक्षा आदि में भी दिये जानेवाले द्रव्य के नाम हैं ॥ २८ ॥

पु. न. स.
 वर्तमान, भविष्यतत्काल(स्तु)तदात्वं (स्यादुत्तरः काल) आयतिः ।

शीघ्रफल, न. पु.
 आगामीफल सान्दष्टिकं (फलं सद्य) उदर्कः (फलमुत्तरः) ॥ २९ ॥

तत्काल, तदात्वं ये १ वर्तमानकाल (हाल) के नाम हैं । आनेवाले काल को आयति या 'आयत' कहते हैं यह १ भविष्यकाल का नाम है । जो शीघ्रही फल होता है उसे 'सान्दष्टिक' कहते हैं यह १ तत्काल फल का नाम है

१ "युतकं युगले युक्ते संशयेऽपि चेति" (रभसः) "युतकं संशये युगे । नारी वस्त्राञ्चले युक्ते वस्त्रनामे च यौतकं" (इति मेदिनी) ॥

और जो आगामी फल है वह ' उदर्क ' कहाता है यह १ आनेवाले फल का नाम है ॥ २६ ॥

न.

न.

अदृष्टभय, दृष्ट अदृष्टं (वह्नितोयादि) दृष्टं (स्वपरचक्रजम्) ।

भय, अपने

न.

पक्षियों से भय (महीभुजा) महिभयं (स्वपक्षप्रभवं भयम्) ॥ ३० ॥

अग्निकृत उत्पात और अतिवृष्टि आदि कृत भय को ' अदृष्ट ' कहते हैं यह १ अदृष्ट भय का नाम है आदि शब्द से अग्नि, जल, व्याधि, दुर्भिक्ष, मरण, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, मूपिका और शलभ (टीड़ी) आदि ग्रहण किये जाते हैं । अपने और अन्य राज्य से तथा चौरादिकों से उपजे भय को ' दृष्ट ' कहते हैं यह १ दृष्ट भय का नाम है और राजाओं को अपने सहायकों से उपजे भय को ' अहिभय ' कहते हैं यह १ अपने पक्षियों से उपजे भय का नाम है और पक्ष सात प्रकार का होता है जैसेकि " निजोऽथ मैत्रश्च समाश्रितश्च सम्बन्धतः कार्यसमुद्भवश्च । भृत्यागृहीतो विविधोपचारैः पक्षं बुधाः सप्तविधं वदन्ति " कहा है ॥ ३० ॥

स.

पु.

न.

न.

व्यवस्था प्रक्रिया (त्व) धिकारः (स्याच्) चामरं (तु) प्रकीर्णकम् ।

स्थापन, चैवर, न.

न.

न.

राजगद्दी, नृपासनं (तु) यद्भद्रासनं सिंहासनं (तु तत्) ॥ ३१ ॥

सिंहासन, छाता, न.

न.

न.

न.

राजछाता, (हैमं) छत्रं त्वातपत्रं (राजस्तु) नृपलक्ष्म (तत्) ।

पूर्णकलश, पु.

पु.

पु.

पु.

स.

भारी भद्रकुम्भः पूर्णकुम्भो भृङ्गारः कनकालुका ॥ ३२ ॥

प्रक्रिया, अधिकार ये २ व्यवस्थास्थापन (कानून चलाना) के नाम हैं चमर, " चामर " स्त्री " चामरा " प्रकीर्णक ये २ चमर के नाम हैं । नृपासन, भद्रासन, ये २ मणि आदिकों से रचेहुए राजासन (राजगद्दी) के नाम हैं यदि वही नृपासन सोनेसे बनाया गया हो तो वह ' सिंहासन ' कहाजाता है यह १ सिंहासन का नाम है । छत्र, ' छत्र ' आतपत्र ये २ छाता के नाम हैं और जो राजा का छाता है वह नृपलक्ष्म (नृ) कहाता है यह १ राजसम्बन्धी छाता का नाम है । भद्रकुम्भ, पूर्णकुम्भ ये २ पूर्णकलश के नाम हैं और भृङ्गार, कनकालुका ये २ सोने के बने पात्रविशेष या भारी के नाम हैं इनमें ' भृङ्गार ' पुलिङ्ग है और ' कनकालुका ' स्त्रीलिङ्ग है ॥ ३१ । ३२ ॥

सेनानिवास, ^{पु.} निवेशः ^{न.} शिविरं (षण्ढे) ^{न.} सज्जनं (तू) ^{न.} परक्षणम् ।
 गश्त या पहरा, ^{न.}
 सेनाङ्ग (हस्त्यश्वरथपादातं) सेनाङ्गं (स्याच्चतुष्टयम्) ॥ ३३ ॥

निवेश, शिविर ये २ सेनानिवासस्थान के नाम हैं इनमें 'निवेश' पुंलिङ्ग है और 'शिविर' नपुंसक कहाता है । सज्जन, उपरक्षण ये २ सेना के रक्षार्थ नियुक्त गश्त या पहरा के नाम हैं और हाथी, घोड़ा, रथ, पैदल ये ४ सेनाङ्ग कहाते हैं यह १ सेनाङ्ग का नाम है ॥ ३३ ॥

हाथी, ^{पु.} दन्ती ^{पु.} दन्तावलो ^{पु.} हस्ती ^{पु.} द्विरदोऽनेकपो ^{पु.} द्विपः ।
^{पु.} हाथियोंकाराजा, ^{पु.} मतङ्गजो ^{पु.} गजो ^{पु.} नागः ^{पु.} कुञ्जरो ^{पु.} वारणः ^{पु.} करी ॥ ३४ ॥
^{पु.} मदान्ध ^{पु.} इभः ^{पु.} स्तम्बेरमः ^{पु.} पद्मी ^{पु.} यूथनाथ (स्तु) ^{पु.} यूथपः ।
 हाथी, हाथी का ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}
 वच्चा ^{पु.} मदोत्कटो ^{पु.} मदकलः ^{पु.} कलभः ^{पु.} करिशावकः ॥ ३५ ॥

दन्ती (न) दन्तावल, हस्ती (न) द्विरद, अनेकप, द्विप, मतङ्गज, गज, नाग, कुञ्जर, वारण, करी (न) इभ, स्तम्बेरम, पद्मी (न) और पञ्च ये १५ हाथी के नाम हैं । यूथनाथ, यूथप ये २ यूथ में मुख्य हाथी (गजेन्द्र) के नाम हैं । मदोत्कट, मदकल ये २ मदवाले (मदान्ध) हाथी के नाम हैं और कलभ, स्त्री " कलभी " करिशावक ये २ हाथी के बच्चे के नाम हैं ॥ ३४ । ३५ ॥

मदसावीहाथी, ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}
 वे मदवाला, ^{न.} प्रभिन्नो ^{स.} गर्जितो ^{स.} मत्तः (समा) ^{स.} बुद्धान्तनिर्मदौ ।
 हाथियों का ^{न.} ^{स.} ^{स.} ^{स.} ^{स.}
 कुण्ड, हथिनी हास्तिकं गजता (वृन्दे) करिणी धेनुका वशा ॥ ३६ ॥

प्रभिन्न, गर्जित, मत्त ये ३ चुचुवाते मदवाले हाथी के नाम हैं । बुद्धान्त, निर्मद ये २ बिना मदवाले हाथी के नाम हैं । ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं । हाथियों के समुदाय में हास्तिक, गजता ये २ हाथियों के समूह के नाम हैं और करिणी, धेनुका और वशा " हस्तिनी " पश्मिनी, करेणु, वासिता आदि " ये ३ हथिनी के नाम हैं ॥ ३६ ॥

हाथी का गाल, पु. पु. पु. न. पु. पु.
 उसका मद, गण्डः कटो मदो दानं वमथुः करशीकरः ।
 सुंड से निकले
 जलकण, शीश पु.
 का मांसपिण्ड, कुम्भौ (तु पिण्डौ शिरसः) (स्तयोर्मध्ये) विदुः (पुमान्) ३७
 कुम्भों का मध्य
 भाग

हाथी का गाल गण्ड और कट या “करट” कहलाता है ये २ हाथी के गाल के नाम हैं उसीसे “कण्डूयमानेन कटं कदाचित्” यह रघुवंशकाव्य का वचन संगत होता है । मद, दान ये २ मद गिरने के नाम हैं । वमथु, करशीकर ये २ सुंड से निकले जलकण के नाम हैं । शीश के दोनों पिण्डों को ‘कुम्भ’ कहते हैं यह १ हाथी के शीश के मांसपिण्ड का नाम है एकत्र में ‘कुम्भः’ और द्वित्र में ‘कुम्भौ’ होते हैं और उन कुम्भों के मध्यभाग (आकाशस्थान) को ‘विदु’ या ‘विदू’ कहते हैं यह १ कुम्भों के विचले भाग का नाम है और यह पुल्लिङ्ग है ॥ ३७ ॥

हाथीका मत्था, पु. स.
 नेत्रोंकी गोलाई, अवग्रहो (ललाटं स्या) दिषीका (त्वक्षिकूटकम्) ।
 देखना, कानों न. स.
 की जड़ (अपाङ्गदेशो) निर्याणं (कर्णमूलं तु) चूलिका ॥ ३८ ॥

हाथी के मत्थाको ‘अवग्रह’ या ‘अवग्राह’ कहते हैं यह १ हाथी के ललाट का नाम है । इसकी आंखोंकी गोलाई को इषीका, इषीका या ईशीका कहते हैं यह १ हाथी की आंखों की गोलाई का नाम है । हाथी की आंखों के किनारे या देखने को ‘निर्याण’ कहते हैं यह १ हाथी के अपाङ्गदेश या देखने का नाम है और हाथी के कर्णमूल को ‘चूलिका’ कहते हैं यह १ हाथी के कानों की जड़ का नाम है ॥ ३८ ॥

ललाट का अधो-
 भाग, दांतों का
 मध्यभाग, कंधा,
 बिन्दुसमूह (अधः कुम्भस्य) वाहित्थं प्रतिमान (मधोऽस्य यत्) ।
 आसनं स्कन्धदेशः (स्यात्) पद्मकं बिन्दुजालकम् ॥ ३९ ॥

कुम्भ के अधोभाग को ‘वाहित्थ’ या ‘वातकुम्भ’ कहते हैं यह १ कुम्भ या ललाट देश के अधोभाग का नाम है । इस वाहित्थ के अधोभाग में दांतों के मध्य भाग को ‘प्रतिमान’ कहते हैं । यह १ दांतों के मध्यभाग का नाम है । आसन, स्कन्ध-देश ये २ गजस्कन्ध के नाम हैं और पद्मक, बिन्दुजालक ये २ हाथी के मुखादि में स्थित बिन्दुसमूह के नाम हैं ॥ ३९ ॥

पार्श्वभाग, अग्र पु. पु. पु.
 भाग, पूर्वजङ्घा पक्षभागः पार्श्वभागो दन्तभागः (स्तु योऽग्रतः) ।

भाग, अपरजङ्घा न. न.
 भाग (द्वौ पूर्वपश्चाजङ्घादिदेशौ) गात्रावरे (क्रमात्) ॥ ४० ॥

१ “गात्रावरे पूर्वपश्चात्पादयोः परिभाषिते” (इति भागुरिः) कश्चिन्तु अष्टीवद्भागादूर्ध्वमवरम् । अधस्तु गात्रमित्याह । अपरा पर्वगादिमध्या च । अपरं तूत्तरार्थे स्यात्पश्चाद्भागे च दन्तिनामिति (विश्वः) ॥

हाथी की बगल को 'पक्षभाग' और 'पार्श्वभाग' कहते हैं ये २ हाथी की बगल के नाम हैं । जो आगे का भाग है वह 'दन्तभाग' कहा जाता है यह १ हाथी के अग्रभाग का नाम है । हाथी के पूर्व पश्चात् जङ्घा आदि देशों को क्रम से 'गात्र' व 'अवर' कहते हैं यानी हाथी का पूर्वजङ्घा आदि देश 'गात्र' कहा जाता है यह १ अगिले जङ्घा आदि भाग का नाम है । और पीछे का जङ्घा आदि देश 'अवर' कहा जाता है यह १ पिछले जङ्घा आदि देश का नाम है ॥ ४० ॥

न. न. न.

पु.

पु.स.न.

चावुक, खूंटा, तोत्रं वैणुकमालानं बन्धस्तम्भे (५८) शृङ्खला ।

पु.

पु.न.

पु.न.

पु.स.

आंदू, अंकुश अर्न्दुकोनिगडोऽस्त्रीस्यादङ्कुशोऽस्त्री सृणिः स्त्रियाम् ४१

तोत्र, वैणुक "वैणुक" ये २ हांकने की लकड़ी (चावुक, कोड़ा आदि) के नाम हैं । आलान, बन्धस्तम्भ ये २ बन्धन के आधार खंभ (खूंटा) के नाम हैं । शृङ्खला, अर्न्दुक, "अर्न्दूक" निगड ये ३ हाथी बाँधने की शांकल या जंजीर के नाम हैं इन में "शृङ्खला पुंस्कटी वस्त्रबन्धेऽपि निगडे त्रिषु" (इति मेदिनी) इस कोष के प्रमाण से "शृङ्खला" त्रिलिङ्ग है और 'निगड' पुंनपुंसक है । अङ्कुश, सृणि या शृणि ये २ अङ्कुश के नाम हैं । इनमें 'अङ्कुश' पुंनपुंसक है और 'सृणि' पुंस्त्रीलिङ्ग है यानी (स्त्रियाम्) इस एकदेश से स्त्रीपुंस शब्दका समुदाय लक्षित होता है उसीसे 'सृणि' पुंलिङ्गभी है यह सुभूति आदि कहते हैं और मुकुट के मत से (स्त्रियाम्) यह प्रायिकत्व से कहा गया है ये २ अङ्कुश के नाम हैं ॥ ४१ ॥

कमर बांधने की

स.

स.

स.

स.

स.

रस्सी पलान

दूष्या कक्ष्या वरत्रा (च) कल्पना सज्जना (समे) ।

आदिसे सजना

स.

न.

पु.

पु.

पु.स.

गद्दी या झूल

प्रवेण्यास्तरणं वर्णः परिस्तोमः कुथो (द्वयोः) ॥ ४२ ॥

दूष्या, "चूषा, वूषा" कक्ष्या "कक्षा" वरत्रा ये ३ हाथी के कमर बांधने की उपयोगी चाम की रस्सी के नाम हैं । कल्पना, सज्जना ये २ नायक के चढ़नेके लिये हाथी को तैयार करने के नाम हैं और प्रवेण्या, प्रवेणी, आस्तरण, वर्ण, परिस्तोम 'परिष्टोम' कुथ ये ५ हाथीकी पीठ पर के बिछौना या गद्दी के नाम हैं इनमें प्रवेणी स्त्रीलिङ्ग और 'कुथ' पुंस्त्री या त्रिलिङ्ग है ॥ ४२ ॥

न.

स.

स.

निर्वल हाथी, वीतं (त्वसारं हस्त्यश्वं) वारी (तु) गजबन्धनी ।

१ अर्न्दुकः स्वार्थे कृन् "स्वार्थिकाः प्रकृतितो लिङ्गवचनान्यतिवर्तन्तेऽपि" इति पुंस्त्वम् ॥

२ तेन आरक्षमभनममत्यसृणिं सिताग्रमिति माधवाक्यं संगच्छते ॥

घोड़ा, हाथी ^{पु.}घोटके ^{पु.}पीतितुरग ^{पु.}तुरङ्गाश्व ^{पु.}तुरङ्गमाः ॥ ४३ ॥

बांधनेकी शाला, ^{पु.}वाजिवाहार्वा ^{पु.}गन्धर्व ^{पु.}हयसैन्धव ^{पु.}ससयः ।

बलरहित यानी युद्ध के अयोग्य जो हाथी और घोड़े हों तो वे ' वीत ' कहाते हैं । यह १ लड़ाई के अयोग्य हाथी व घोड़ों का नाम है । वारी, गजबन्धनी ये २ हाथी बांधने की शाला के नाम हैं और घोटक, घोट, पीति, ' पीती ' " वीति, वीती " तुरग, तुरङ्ग, अश्व, तुरंगम, वाजी (न), वाह, अर्वा (न), गन्धर्व, हय, स्त्री ' हयी ' सैन्धव और सप्ति ये १३ घोड़े के नाम हैं इनमें ' वाजी ' इत्यन्त और ' अर्वा ' नान्त है ॥ ४३ । ३ ॥

अच्छी जाति- ^{पु.}आजानेयाः ^{पु.}कुलीनाः ^{पु.}(स्यु)र्विनीताः ^{पु.}साधुवाहिनः ॥ ४४ ॥

सिखलाया ^{पु.}वनायुजाः ^{पु.}पारसीकाः ^{पु.}काम्बोजा ^{पु.}वाल्हिका (हयाः) ।

का भेद, अ- ^{पु.}श्वमेधीय ^{पु.}ययु (रश्वो) ^{पु.}श्वमेधीयो ^{पु.}जवन (स्तु) ^{पु.}जवाधिकः ॥ ४५ ॥

आजानेय, कुलीन ये २ अच्छी जाति में उपजे घोड़े के नाम हैं एकत्व में " आजानेयः, कुलीनः " द्वित्व में " आजानेयौ, कुलीनौ " और बहुत्व में " आजानेयाः, कुलीनाः " ये होते हैं । विनीत, साधुवाही (न) ये २ सिखलाये हुए घोड़ों के नाम हैं एकत्व में " विनीतः, साधुवाही " द्वित्व में " विनीतौ, साधुवाहिनौ " और बहुत्व में " विनीताः, साधुवाहिनः " ये होते हैं । वनायु देश में उपजे घोड़े ' वनायुज ' पारसीक देश में उपजे ' पारसीक ' काम्बोज देश में उपजे ' काम्बोज ' और वाल्हिक = (काबुल) देश में उपजे ' वाल्हिक या वाल्हीक ' कहाते हैं इनमें बहुत्व से बहुवचन हुआ है यह एक २ क्रम से विशेषदेशीय घोड़ों का नाम है । अश्वमेधीय घोड़े को ' ययु ' कहते हैं अथवा ययु, अश्वमेधीय ये २ जिसका एक कान काला हो व सारा अङ्ग उजला हो उस घोड़े के नाम हैं और जवन, जवाधिक ये २ अधिक वेगवाले घोड़े के नाम हैं ॥ ४४ । ४५ ॥

लडुवा उजला ^{पु.}पृष्ठयः ^{पु.}स्थौरी ^{पु.}(सितः) ^{पु.}कर्को ^{पु.}रथ्यो (वोढारथस्य यः) ।

घोड़ी, घो- ^{पु.}बालः ^{पु.}किशोरो ^{स.}वास्यश्वा ^{स.}वडवा ^{स.}वाडवं (गणे) ॥ ४६ ॥

रोह ^{पु.}पृष्ठय, स्थौरी " स्थुरी व स्थोरी " ये २ जल आदि में बोझा ढोनेवाले (लडुआ)

घोड़े के नाम हैं । सफेद घोड़े को 'कर्क' कहते हैं यह १ उजले घोड़े का नाम है । जो रथ का ले जानेवाला घोड़ा है वह 'रथ्य' कहाता है । इसके बच्चे को 'किशोर' कहते हैं यह १ बछेड़े का नाम है । बामी, अशवा, बडवा ये ३ घोड़ी के नाम हैं और घोड़ियों के समूह को (बाडव) कहते हैं यह १ घोड़ियों के समुदाय का नाम है ॥ ४६ ॥

घोड़ोंकी १दिन

पु.स.न.

की मंजिल,

(त्रिष्वा) श्वीनिं (यदश्वेन दिनेनैकेन गम्यते) ।

घोड़ोंकी बिचली न.

स. स.

देह, हिनहिनाना

कश्यं(तु मध्यमश्वानां)हेषा हेषा (च निस्वनः) ॥४७॥

जो एक घोड़े से एक दिन में जाया जाता है उस मार्ग को (आश्वीन) कहते हैं यह त्रिलिङ्ग है यह १ घोड़े की एक दिन की मंजिल का नाम है । घोड़ों के मध्यभाग (कमर) को 'कश्य' कहते हैं यह १ घोड़ों के बिचले भाग का नाम है और घोड़ों के शब्द को हेषा, हेषा और "हेषा" कहते हैं ये २ घोड़ों के हिन-हिनाने के नाम हैं ॥ ४७ ॥

पु.

पु.

न.

न.

घोड़ोंका गला,

निगाल(स्तु)गलोद्देशे(वृन्दे त्वा)श्वीयमाश्व (वत्) ।

घोड़ोंका गिरोह,

न.

न.

न.

न.

न.

घोड़ोंकी चालें,

आस्कन्दितं धोरितकं रेचितं वलितं भुतम् ॥ ४८ ॥

लगाम,

स.

स.

पु.न.

टाप

(गतयोऽमूःपञ्च)धारा घोणा(तु)प्रोथमस्त्रियाम् ।

स.

पु.न.

न.

पु.

कविका(तु)खलीनो(ऽस्त्री)शफं(क्लीबे)खुरः(पुमान्)४९॥

निगाल, गलोद्देश ये २ घोड़ों के गले की सन्धि के नाम हैं और घोड़ों के समूह में ' आश्वीय ' व ' आश्व ' कहते हैं ये २ घोड़ों के गिरोह के नाम हैं यहां (वत्) शब्द के निर्देश से ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं । जहां वेग से आर्त होकर घोड़ा न देखता न सुनता है उस गति को आस्कन्दित " सरपट चाल " कहते हैं । चतुराई समेत सीधीगति को 'धोरितक'=(दुलकी चाल) मध्यमवेग से चक्राकार घूमने को रेचित="पोड्याचाल" शरीर के अग्रभाग को समेटकर कुत्सित स्थल आदि में मुँह को टेढ़ा बनाय उछलकर चलने को 'वलित' और शरीर के पूर व परभाग को झुकाकर कम से रखने को प्लुत (चौकड़ी या कावा लगाना) कहते हैं ये घोड़ों की पांच चालें कहाती हैं उनको 'धारा' कहते हैं वह १ घोड़ों की पाचों चालों का नाम है । घोणा, प्रोथ ये २ घोड़े की नाक (थूथुन) के नाम हैं

इनमें ' घोणा ' खीलिङ्ग और प्रोथ पुनपुंसक है । कविका, खलीन ये २ लगाम के नाम हैं इनमें ' खलीन ' पुनपुंसक है और शफ, खुर और " खुर " ये २ टाप के नाम हैं इनमें ' शफ ' नपुंसक और ' खुर ' पुलिङ्ग है ॥ ४८ । ४९ ॥

पु.न.

न.

न.

पु.

पु.

पूँछ, बारयुत पुच्छो (ऽस्त्री) लूमलाङ्गूले बालहस्त (श्र) बालधिः ।

पूँछ, लोटना (त्रिषू) पावृत्तलुठितौ (परावृत्ते मुहुर्भुवि) ॥ ५० ॥

पुच्छ, लूम, लाङ्गूल या " लाङ्गूल " ये ३ घोड़े की पूँछ के नाम हैं । इनमें ' पुच्छ ' पुनपुंसक है । बालहस्त, बालधि ये २ बालसमूहों से युत पूँछ के अग्र-भाग के नाम हैं और उपावृत्त, लुठित ये २ थकावट के दूर करने के लिये वारंवार भूमि में दोनों पक्षों से लोटने के नाम हैं ये दोनों त्रिलिङ्ग हैं ॥ ५० ॥

पु.

पु.

पु.

लड़ाई का रथ, (याने चक्रिणि युद्धार्थे) शताङ्गः स्यन्दनो रथः ।

पु.

रथविशेष (असौ) पुष्यरथ (श्रक्रयानं न समराय यत्) ॥ ५१ ॥

युद्ध के लिये तैयार पहियों से युक्त यान को शताङ्ग, स्यन्दन और रथ कहते हैं ये ३ लड़ाई में चढ़नेवाले रथ के नाम हैं ये तीनों पुलिङ्ग हैं । जो चक्रयुत (पहियों से संयुत) यान संग्राम के लिये नहीं तैयार होता है वह ' पुष्यरथ ' या ' पुष्परथ ' कहाता है यह १ युद्ध के बिना यात्रा, सेवा आदि में सुख से घूमने के लिये रथ का नाम है जैसे कि, पुष्यनक्षत्र सुखकारी होता है वैसेही पुष्यरथ कहाता है ॥ ५१ ॥

पु.

न.

न.

जनाना रथ कर्णरिथः प्रवहणं डयनं (च समं त्रयम्) ।

न. पु.न.

स.

न.

गाड़ा, गाड़ी (क्लीबे) ऽनः शकटो ऽस्त्री स्याद्गन्त्री (कम्बलिवाहकम्) ५२

कर्णरिथ, प्रवहण " प्रहरण " डयन, " हयन " ये ३ लुगाइयों के आने जाने के लिये बल आदि से ढँके रथविशेष (डोला) के नाम हैं इनमें ' कर्णरिथ ' पुलिङ्ग और प्रवहण, डयन ये दोनों नपुंसक हैं उसीसे (कर्णरिथस्थां रघुनाथ-पत्नीम्) यह प्रयोग संगत होता है ये तीनों समानार्थक हैं । अनः (स्), शकट ये २ गाड़ा के नाम हैं । इनमें ' अनस् ' नपुंसक है और ' शकट ' पुनपुंसक है और गन्त्री, कम्बलिवाहक ये २ गाड़ी के नाम हैं अथवा बड़े बलवान् बैलों से पहुँचाने लायक गाड़े को गन्त्री या गान्त्री कहते हैं यह १ गाड़ी का नाम है ॥ ५२ ॥

पालकी हिंडोला^{स.} शिबिका^{न.} याप्ययानं^{स.} (स्याद्) दोला^{स.} प्रेङ्गा^{स.} (दिकाः स्त्रियाम्)।

या डोली बाघ

पु.स.न. पु.स.न.

चर्मसे घिरा रथ (उभौ तु) द्वैपवैयाघ्रौ (द्वीपिचर्मावृते रथे) ॥ ५३ ॥

शिबिका, याप्ययान ये २ अधम पुरुषों से लेजाने योग्य यानविशेष या पालकी के नाम हैं इनमें ' शिबिका ' स्त्रीलिङ्ग है और याप्ययान नपुंसक है । दोला, प्रेङ्गा ये २ हिंडोला या डोली के नाम हैं ये दोनों स्त्रीलिङ्ग हैं आदि शब्द से खट्वा आदि भी दोला कहाती हैं और जब बाघ की खाल से ढँका हुआ रथ हो तो उसे ' द्वैप ' और ' वैयाघ्र ' कहते हैं ये २ बाघचर्म से घिरे हुए रथ के नाम हैं ये दोनों त्रिलिङ्ग हैं ॥ ५३ ॥

सफेद कम्बल से

घिरा रथ,

कम्बल, वस्त्र व

दुकूलादि से

युक्त रथ

(पाण्डुकम्बलसंवीतः स्यन्दनः) पाण्डुकम्बली ।

पु.स.न.

पु.स.न.

(रथे) काम्बलवास्त्राद्याः (कम्बलादिभिरावृते) ॥ ५४ ॥

कुञ्ज पीले और सफेद कम्बल से घिरा हुआ रथ ' पाण्डुकम्बली ' कहाता हैं यह १ सफेद कम्बल के परदेवाले रथ का नाम है और कम्बल, वस्त्र व आदि शब्द से चर्म, क्षौम व दुकूलादि से ढँका हुआ रथ काम्बल, वास्त्र, चार्म, क्षौम और दौकूल आदि कहाते हैं यह एक २ कम्बल आदिकों से घिरे हुए रथ के नाम हैं ॥ ५४ ॥

स.

स.

रथसमूह, (त्रिषु द्वैपादयो) रथ्या रथकट्या (रथव्रजे) ।

न.

पु.

धुरी, तांगा धूः (स्त्री) ' क्लीबे ' यानमुखं (स्याद्) थाङ्गमपस्करः ॥ ५५ ॥

द्वैप आदि वास्त्र पर्यन्त कहे हुए शब्द तीनों लिङ्ग में होते हैं यानी वाच्यलिङ्ग कहाते हैं । रथों के समुदाय में रथ्या, रथकट्या ये दो होते हैं अथवा रथ्या, रथकट्या, रथव्रज ये ३ रथसमूह के नाम हैं । धूः, यानमुख ये २ धुरा या धुरी के नाम हैं इनमें ' धूः ' स्त्रीलिङ्ग और ' यानमुख ' नपुंसक है और रथाङ्ग, अपस्कर ये २ रथ के अवयवमन्त्र या तांगा के नाम हैं ॥ ५५ ॥

न.

न.

स.

पु.

पहिया, पुट्टी चक्रं रथाङ्गं (तस्यान्ते) नेमिः (स्त्री स्यात्) त्र्यधिः (पुमान्) ।

या हाल,

स.

स.

पु.

पु.स.

नाह, कुलावा पिण्डिका नाभिरक्षाग्रकीलके (तु द्वयो) रणिः ॥ ५६ ॥

चक्र, रथाङ्ग ये २ चाक या पहिया के नाम हैं । ये दोनों नपुंसक हैं । निमि, “नेमी” प्रधि ये २ उस पहिया का आखिरी भाग जोकि ज़मीन को छूता है उसके या पुट्टी या हाल के नाम हैं इनमें ‘नेमि’ स्त्रीलिङ्ग है और ‘प्रधि’ पुलिङ्ग है । पिण्डिका, पिण्ड “पिण्डी” नामि, “नामी” ये २ पहिया के बीच मण्डलाकार गड़ारी या ‘नाह’ के नाम हैं ये दोनों स्त्रीलिङ्ग हैं और अक्षामकीलक, अणि “अणी” और “आणि, आणी” ये २ नाह चलानेवाले काष्ठ के आगे पहिया धारने के लिये जो कील गाड़ते हैं उसके या (कुलाबा) के नाम हैं इनमें ‘अणि’ स्त्रीपुलिङ्ग है यानी दोनों लिङ्गों में रहता है ॥ ५६ ॥

लोह का परदा ^{स.} रथगुप्तिर्वरूथो (ना) कूवर (स्तु) युगन्धरः ।
जुआ का काठ ^{पु.}
रथ के नीचे का ^{पु.} अनुकर्षो (दार्वधःस्थं) प्रासङ्गो (ना) (युगान्तरम्) ॥ ५७ ॥
काठ दूसरा जुआ

रथगुप्ति, वरूथ ये २ हथियार आदि से बचाने के लिये रथको जिस लोह आदि से घेरते हैं यानी परदा डालते हैं उसके नाम हैं इनमें ‘वरूथ’ पुलिङ्ग है । कूवर, युगन्धर ये २ जिस काठ में रथ के घोड़े बांधे जाते हैं उसके या जुआ या बकौरा के नाम हैं । रथ के नीचे स्थित काष्ठ को अनुकर्ष या अनुकर्षा (न) कहते हैं यह १ सगुन का नाम है और जो जुआ से दूसरा जुआ बछड़े आदिकों के कांधे में लगाया जाता है उसको ‘प्रासंग’ कहते हैं यह १ जुआ का नाम है और यह पुलिङ्ग कहा जाता है ॥ ५७ ॥

सब सवारी, ^{न.} (सर्व स्याद्) वाहनं यानं युग्यं पत्रं (च) धोरणम् । -
कहार आदि से ^{पु.न.}
लेजानेवाली (परम्परावाहनं यत्त) द्वैनीतक (मस्त्रियाम्) ॥ ५८ ॥

सब हाथी, घोड़ा रथ आदि दोलापर्यन्त वाहन यानादि शब्दवाच्य कहाते हैं जैसे वाहन “वाहन” यान, युग्य, पत्र “पत्र” और धोरण ये ५ सारी सवारी के नाम हैं । और जो परम्परा से वाहन है और जो नर आदि से पहुँचाने लायक पालकी आदि है वह “वैनीतक” कहाता है यह पुलिङ्ग व नपुंसक लिङ्ग है यह १ कहार आदि से लेजानेवाले वाहन का नाम है ॥ ५८ ॥

श्रीलवान ^{पु.} आधोरणा हस्तिपका हस्त्यारोहा निषादिनः ।

रथवान या ^{पु.} नियन्ता ^{पु.} प्राजिता ^{पु.} यन्ता ^{पु.} सूतः क्षत्ता (च) सारथिः ॥ ५९ ॥

गाड़ीवान ^{पु.} सव्येष्टदक्षिणस्थौ (च संज्ञा रथकुटुम्बिनः) ।

आधोरण, हस्तिपक, हस्त्यारोह और निषादी (न्) ये ४ महावत या फ़ील-
वान क नाम हैं इनमें बहुत्व से बहुवचन हुआ है ये नित्य बहुवचनान्त नहीं हैं ।
नियन्ता (न्तृ) प्राज्ञिता (तृ) यन्ता (न्तृ) सूत, क्षत्ता (तृ) सारथि, सव्येष्टा
(ष्टृ) वा सव्येष्ट (ष्ट) दक्षिणस्थ ये ८ रथकुटुम्बी यानी सारथि के नाम हैं ॥५६॥

रथ में चढ़कर लड़नेवाले, सवार, लड़नेवाले, गश्तवाले, फ़ौज या सेना
रथिनः स्यन्दनारोहा अश्वारोहा (स्तु) सादिनः ॥६०॥
भटा योधा (श्र) योद्धारः सेनारक्षा (स्तु) सैनिकाः ।
(सेनायां समवेता ये) सैन्या (स्ते) सैनिका (श्र ते) ॥६१॥

रथी (न्) स्यन्दनारोह ये २ रथों में चढ़कर युद्ध करनेवालों के नाम हैं ।
अश्वारोह, सादी (न्) ये २ घोड़ों पर चढ़कर लड़नेवाले (सवार) के नाम
हैं । भट, योध, योद्धा (द्धृ) ये ३ लड़नेवाले वीर या योधा के नाम हैं । सेना-
रक्ष, सैनिक ये २ सेनारक्षक या गश्तवालों के नाम हैं और जो सेना में मिले हैं
या रहते हैं वे ' सैन्य ' और ' सैनिक ' कहाते हैं ये २ सेना (फ़ौज) के नाम
हैं इनमें बहुत्व से बहुवचन हुआ है और ये नित्य बहुवचनान्त नहीं हैं ॥६०॥६१॥

सूवेदार बहा-
दुर, सेना-
रक्षक,
सेनापति
बलिनो ये सहस्रेण (स्ते) साहस्रा (स्ते) सहस्रिणः ।
परिधिस्थः परिचरः सेनानीर्वाहिनीपतिः ॥ ६२ ॥

जो हज़ार बलवानों से फ़ौजवाले हैं या बलवान हैं वे साहस्र व सहस्री (न्)
कहाते हैं ये २ हज़ार सिपाहियों के मालिक के नाम हैं । परिधिस्थ, परिचर ये २
फ़ौज रखाने के लिये चारों ओर घूमनेवाले के नाम हैं या सेना में सज़ा करनेवाले
राजा के नाम हैं और सेनानी, वाहिनीपति ये २ फ़ौज के मालिक या फ़ौज
बग़शी (सिपहसालार) के नाम हैं ॥ ६२ ॥

बख़्तर कञ्चुको वारवाणो (ऽस्त्री) (यत्तु मध्ये सकञ्चुकाः) ।

कमरपट्टी (बध्नन्ति तत्) सारसनमधिकाङ्को (ऽथ) शीर्षकम् ॥६३॥

दोप शीर्षण्यं (च) शिरस्त्रे (ऽथ) तनुत्रं वर्म दंशनः ।

कवच उरश्छदः कटकाजगरः कवचो (ऽस्त्री) ॥ ६४ ॥

कञ्चुक, वारवाण “ वारवाण ” ये २ बखतर के नाम हैं इनमें ‘ वारवाण ’ पुनपुंसक है । कञ्चुक धारनेवाले वीर कमर में दड़ता के लिये कञ्चुक के ऊपर जिसको बांधते हैं उसे सारसन, अधिकाङ्ग या अधिपाङ्ग कहते हैं ये २ कमरपट्टी के नाम हैं । शीर्षक, शीर्षणय, शिरस्त्र ये ३ टोप के नाम हैं ये तीनों नपुंसक हैं और तनुत्र, वर्म (न्), दंशन, उरश्छद, कङ्कटक, जगर “ जागर ” कवच ये ७ कवच (बखतर या फिलिम) के नाम हैं इनमें तनुत्र, वर्म, दंशन ये ३ नपुंसक हैं, उरश्छद, कङ्कटक, जगर ये ३ पुलिङ्ग हैं और ‘ कवच ’ पुनपुंसक है ॥ ६३ । ६४ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

फिलिम आदि **आमुक्तः प्रतिमुक्तश्च पिनद्धश्चापिनद्ध (वत्) ।**

धारे दुर मन्त्र पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

आदिसे रक्षित **सन्नद्धो वर्मितः सज्जो दंशितो व्यूढकङ्कटः ॥ ६५ ॥**

आमुक्त, प्रतिमुक्त, पिनद्ध, अपिनद्ध ये ४ फिलिम आदि पहने हुए वीर के नाम हैं । ये चारो समानार्थक होकर वाच्यलिङ्ग कहाते हैं और सन्नद्ध, वर्मित, सज्ज, दंशित और व्यूढकङ्कट या ऊढकङ्कट ये ५ मन्त्र आदि से रक्षित कवच धारण किये हुए वीर के नाम हैं ॥ ६५ ॥

न.

कवचधारिसमूह (त्रिष्वामुक्तादयो) (वर्मभृतां) कावचिकं (गणे) ।

पु. पु. पु. पु. पु.

पैदल, पैदलों **पदातिपत्तिपदगपादातिकपदाजयः ॥ ६६ ॥**

पु. पु. न. स.

का गिरोह **पद्म (श्र) पदिक (श्राथ) पादातं पत्तिसंहतिः ।**

पु. पु. पु. पु.

हथियारबन्द **शस्त्राजीवे काण्डपृष्ठायुधीया युधिकाः (समाः) ॥ ६७ ॥**

आमुक्त आदि व्यूढकङ्कट पर्यन्त शब्द तीनों लिङ्ग में होते हैं जैसेकि, “आमुक्ता शाटी, आमुक्तो वारवाणः, आमुक्तं शस्त्रम् ” आदि जानना चाहिये । कवचधारियों के समुदाय को ‘ कावचिक ’ कहते हैं यह १ कवच धारण करनेवालों के समूह का नाम है । पदाति, “ पादात ” “ पादाति ” पत्ति, पदग, पादातिक, “ पादाविक ” “ पदाजि, पादाज ” पद्म और पदिक ये ७ पैदल के नाम हैं । पादात, पत्तिसंहति ये २ पैदलसमूह के नाम हैं और शस्त्राजीव, काण्डपृष्ठ या “ काण्डस्पृष्ट ” आयुधीय और आयुधिक ये ४ हथियार बाधकर जीविका करनेवालों के नाम हैं ये चारो समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ॥ ६६ । ६७ ॥

अच्छे तीरंदाज ^{पु.} कृतहस्तः ^{पु.} सुप्रयोगविशिखः ^{पु.} कृतपुङ्ख (वत्) ।
निशाना से चूके ^{पु.}

बाणवाला ^{पु.} अपराद्धपृषत्को (ऽसौ लक्ष्याद्यश्च्युतसायकः) ॥६८॥

कृतहस्त, सुप्रयोगविशिख, कृतपुङ्ख ये ३ बाण चलानेवालों में चतुर (अच्छे तीरं-
दाज) के नाम हैं । ये तीनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं और जो
निशाने से चूके हुए बाणवाला है वह ' अपराद्धपृषत्क ' कहाता है यह १ जिसका
तीर निशाना से अलग होगया है उसका नाम है ॥ ६८ ॥

धनुर्द्वारी ^{पु.} धन्वी ^{पु.} धनुष्मान् ^{पु.} धानुष्को ^{पु.} निषङ्गयस्त्री ^{पु.} धनुर्धरः ^{पु.} ।
बाणधारी ^{पु.} (स्या) त्काण्डवां (स्तु) काण्डीरः ^{पु.} शाक्तीकः ^{पु.} शक्तिहेतिकः ^{पु.} ६९

धन्वी (न्), धनुष्मान्, धानुष्क, निषङ्गी (न्), अस्त्री (न्), धनुर्धर ये ६ धनुष
धारनेवाले के नाम हैं । काण्डवान्, काण्डीर ये २ केवल बाणधारी के नाम हैं
और शाक्तीक, शक्तिहेतिक ये २ शक्ति आदि शस्त्रधारी के नाम हैं ॥ ६९ ॥

लट्टधारी, फरसा ^{पु.} याष्टीक ^{पु.} पारश्वधिकौ (यष्टिपश्वधहेतिकौ) ।
भारी, खड्गधारी, ^{पु.} नैस्त्रिंशिकौ ^{पु.} ऽसिहेतिः ^{पु.} स्या (त्समौ) प्रासिककौन्तिकौ ७०
सांगधारी, भालाधारी

जो लाठी से लड़नेवाला है वह ' याष्टिक ' कहाता है । यह १ लट्टवाज का नाम
है । जो फरसा से लड़नेवाला है वह ' पारश्वधिक ' कहाजाता है । यह १ परशुधारी
का नाम है । नैस्त्रिंशिक, असिहेति ये २ तलवार से लड़नेवाले के नाम हैं । सांगसे
लड़नेवाला ' प्रासिक ' कहलाता है यह १ सांगधारी का नाम है और जो भाला
से लड़नेवाला है उसे ' कौन्तिक ' कहते हैं यह १ भालाबरदार का नाम है ये
दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ॥ ७० ॥

ढालवाला, ^{पु.} चर्मी ^{पु.} फलकपाणिः ^{पु.} (स्यात्) पताकी ^{पु.} वैजयन्तिकः ^{पु.} ।
भण्डवाला, ^{पु.}

सहायक ^{पु.} अनुप्लवः ^{पु.} सहायश्चानुचरो ^{पु.} ऽभिसरः (समाः) ॥ ७१ ॥

चर्मी (न्), फलकपाणि ये २ ढाल धारनेवाले के नाम हैं । पताकी (न्),
वैजयन्तिक ये २ पताका या निशान धारनेवाले के नाम हैं और अनुप्लव, सहाय,

अनुचर, अभिसर ये ४ सहायक या मददगारके नाम हैं । ये चारो समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ॥ ७१ ॥

अगुआ, धीरे^{पु.} ^{पु.} पुरोगाग्रेसर^{पु.} प्रष्टा^{पु.} अतः^{पु.} सर^{पु.} पुरः^{पु.} सराः ।

चलनेवाला^{पु.} पुरोगमः^{पु.} पुरोगामी^{पु.} मन्दगामी^{पु.} (तु) मन्थरः ॥ ७२ ॥

पुरोग, अग्रेसर, “अप्रसर” प्रष्ट, अप्रतःसर, पुरःसर, पुरोगम और पुरोगामी (न) ये ७ आगे चलनेवाले या अगुआ के नाम हैं और मन्दगामी (न) मन्थर ये २ धीरे २ चलनेवाले के नाम हैं ॥ ७२ ॥

जल्द चलने-^{पु.} ^{पु.} जङ्गलोऽतिजव (स्तुल्यौ) ^{पु.} ^{पु.} जङ्गकरिकजाङ्घिकौ ।
वाला, हल-^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}
कारा, जल्द-
बाज तरस्वी त्वरितो वेगी प्रजवी जवनो जवः ॥ ७३ ॥

जङ्गल, “ जङ्घिल ” अतिजव, “ अतिवल ” ये २ अतिवेगवाले के नाम हैं । ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं । जङ्गकरिक, जाङ्घिक ये २ जङ्ग के बल से जीनेवाले (हलकारा) के नाम हैं ये भी दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं और तरस्वी (न), त्वरित, वेगी (न), प्रजवी (न), जवन और जव ये ६ वेगवाले या जल्दबाज के नाम हैं ॥ ७३ ॥

जीतनेशक्य,^{पु.} ^{पु.} जय्यो (यः शक्यते जेतुं) जेयो (जेतव्यमात्रके) ।
जीतनेयोग्य,
जीतनेवाला,^{पु.} ^{पु.} जैत्र (स्तु) जेता (यो गच्छत्यलं विद्विषतः प्रति) ॥ ७४ ॥
सामर्थ्य से
शत्रु के सा-^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}
मने जाने-
वाला पहल-
वान (सो) ऽभ्यमित्र्यो ऽभ्यमित्र्यो ऽप्यभ्यमित्र्यो (इत्यपि) ।

^{पु.} ^{पु.} ऊर्जस्वलः स्यादूर्जस्वी (य ऊर्जातिशयान्वितः) ॥ ७५ ॥

जो जीतने के लिये शक्य है उसे “ जय्य ” कहते हैं यह १ जीतने के शक्य का नाम है । जीतने योग्यमात्र में ‘ जेय ’ होता है यह १ जीतने के योग्य का नाम है जैसेकि (जेयं मनः) जीतने योग्य मन है । जैत्र, जेता ये २ जीतनेवाले के नाम हैं और जो शत्रुओं की ओर सामर्थ्य से लड़ने को जाता है वह अभ्यमित्र्य, अभ्यमित्र्य और अभ्यमित्र्यो कहाता है ये ३ सामर्थ्य से शत्रु के सामने लड़ने

को जानेवाले के नाम हैं और जो बल की अधिकता से संयुक्त है वह ऊर्जस्वल व ऊर्जस्वी (न्) कहलाता है ये २ पहलवान के नाम हैं और ऊर्जशब्द अदन्त और सान्त है ॥ ७४ । ७५ ॥

चौड़े छाती-
वाला रथका
स्वामी यथेष्ट-
गामी वारं-
वारगामी

पु. पु. पु. पु. पु.

(स्यादु) रस्वानुरसिलो रथिरो रथिको रथी ।

पु. पु. पु.

कामंगाम्यनुकामीनो ह्यत्यन्तीन (स्तथा भृशम्) ॥ ७६ ॥

उरस्वान्, उरसिल ये २ बड़ी छातीवाले के नाम हैं । रथिर, रथिक, रथी “रथिन” ये ३ रथस्वामी के नाम हैं । जो अपनी इच्छा से जाता है यानी स्वतन्त्रता से गमन करता है उसे कामंगामी या कामगामी (न्) व ‘अनुकामीन’ कहते हैं ये २ यथेष्टगमनशील के नाम हैं और जो अत्यन्त गमनशील है वह अत्यन्तीन कहाता है यह १ वारंवार चलनेवाले का नाम है ॥ ७६ ॥

बहादुर,
जीननेवाला

पु. पु. पु. पु. पु. पु.

शूरो वीरश्च विक्रान्तो जेता जिष्णु (श्र) जित्वरः ।

रणकुशल

पु.

सांयुगीनो (रणे साधुः) शस्त्राजीवादय (स्त्रिषु) ॥ ७७ ॥

शूर, वीर और विक्रान्त ये ३ बहादुर (शूरमा) के नाम हैं । जेता, जिष्णु और जित्वर ये ३ जयशील (जीतनेवाले) के नाम हैं । जो रण में साधु है वह ‘सांयुगीन’ कहाता है । यह १ युद्धकुशल का नाम है और शस्त्राजीव आदि सांयुगीन पर्यन्त शब्द तीनों लिङ्ग में होते हैं यानी वाच्यलिङ्ग कहाते हैं ॥ ७७ ॥

स. स. स. स. स. स.

सेना या ध्वजिनी वाहिनी सेना पृतनानीकिनी चमूः ।

स. न. न. न. पु.न.

फौज वरूथिनी बलं सैन्यं चक्रं चानीक (मस्त्रियाम्) ॥ ७८ ॥

ध्वजिनी, वाहिनी ‘वाहना’ सेना, पृतना “पूतना” अनीकिनी, चमू, वरूथिनी, बल “बल” सैन्य, चक्र और अनीक ये ११ सेना या फौज के नाम हैं इनमें ‘अनीक’ पुंनपुंसक है ॥ ७८ ॥

क्लिबांधना पु. पु.

सेना के वि-
शेषभेद, व्यूह
का पीछा पु.

व्यूह (स्तु) बलविन्यासो (भेदा दण्डादयो युधि) ।

सेनाका पीछा पु.

प्रत्यासारो व्यूहपार्ष्णिः (सैन्यपृष्ठे) प्रतिग्रहः ॥ ७९ ॥

१ मेधारथाभ्यामिरन्निचाविति पठित्वा रथिर इति व्याख्याय रथिन इत्यपपाठ इत्याह स्वामी भाष्योक्तं स्वीकृतवानिति ॥

व्यूह, बलविन्यास ये २ युद्धार्थ रचनाविशेष से फ़ौज के स्थापित करने के या क़िला बांधने के नाम हैं । संग्राम में दण्ड आदि विशेष भेद व्यूह के हैं जैसेकि, सेना का दण्ड के समान टेढ़ा होकर ठहरना 'दण्ड' कहाता है आदि पद से भोग, मण्डल आदिकों का ग्रहण होता है जैसेकि एक के पीछे एक की आवृत्ति होना भोग है, सर्पशरीर के समान टिकना 'मण्डल' है, विजातीयों से बिना मिले हाथियों का स्थान 'असंहत' कहाता है इनके भी शकट, मकर, पताका, सर्वतोभद्र, दुर्जय आदि भेद प्रत्येक के हैं यह एक २ फ़ौज के विशेष भेदों का नाम है । प्रत्यासार "प्रत्यासर" व्यूहपाणि ये २ व्यूह के पृष्ठभाग के नाम हैं और सैन्यपृष्ठ में प्रतिग्रह, परिग्रह या पतद्ग्रह कहाजाता है यह १ सेना के पृष्ठभाग का नाम है अथवा सैन्यपृष्ठ, प्रतिग्रह ये २ फ़ौज के पिछले भाग के नाम हैं ॥ ७६ ॥

सेना विशेष (एकेभैकरथाऽत्र्यश्वा) पत्तिः (पञ्चपदातिका) ।
(पत्यङ्गैस्त्रिगुणैः सर्वैः क्रमादाख्या यथोत्तरम्) ॥ ८० ॥

जिस सेना में एक हाथी, एक रथ, तीन घोड़े और पांच प्यादे रहते हों वह 'पत्ति' कहाती है यह १ फ़ौज विशेष का नाम है । समस्त पत्ति के अवयव गज आदिकों के त्रिगुणित होनेसे यथोत्तर क्रमसे सेनामुख आदि संज्ञा होती हैं ॥ ८० ॥

न. पु.न. पु. स. स. स.
सेनामुखं गुल्मगणौ वाहिनी पृतना चमूः ।

स. स.
अनीकिनी (दशानीकिन्यो)ऽक्षौहिण्य(थसंपदि) ८१ ॥

जैसेकि, तीन पत्तियों से १ सेनामुख, तीन सेनामुखों से १ गुल्म, तीन गुल्मों से १ गण, तीन गणों से १ वाहिनी, तीन वाहिनियों से १ पृतना, तीन पृतनासे १ चमू, तीन चमू से १ अनीकिनी होती है यह एक २ सेनाविशेष का नाम है । और दश अनीकिनियों से १ 'अक्षौहिणी' होती है यानी जिसमें २१८७० हाथी २१८७० रथ ६५६१० घोड़े और १०६३५० प्यादे हों उसे एक 'अक्षौहिणी' कहते हैं 'अथ संपदि' इसका अन्वय आगे कहा जावेगा ॥ ८१ ॥

तत्तत्सेनाविशेषे गजादीनां निर्णयाय चक्रमिदम् ।

सेना	पत्तिः	सेना- मुखम्	गुल्मः	गणः	वाहिनी	पृतना	चमूः	अनी- किनी	अक्षौहिणी
गजाः, रथाः	१	३	६	२७	८१	२४३	७२६	२१८७	२१८७०
अश्वाः	३	६	२७	८१	२४३	७२६	२१८७	६५६१	६५६१०
पदातयः	५	१५	४५	१३५	४०५	१२१५	३६४५	१०६३५	१०६३५०

सं. सं. सं. सं. सं. सं.
संपत्ति, विपत्ति सम्पत्तिः श्री (श्र) लक्ष्मी (श्र) विपत्तौ विपदापदौ।

न. न. न. न.
इधियार धनुष आयुध (न्तु) प्रहरणं शस्त्रमस्त्र (मथास्त्रियौ)॥८२॥

पु.न. पु.न. न. न. न. न.
राजा कर्ण का धनुश्चापौ धन्वशरासनकोदण्डकार्मुकम्।

पु. न.
इष्वासो (ऽप्यथ कर्णस्य) कालपृष्ठं (शरासनम्)॥८३॥

संपत्, “ संपद् और संपदा ” संपत्ति, श्री, लक्ष्मी ये ४ संपत्ति के नाम हैं। विपत्ति, विपद् “ विपदा ” आपत् “आपदा, आपत्ति” ये ३ आपत्ति के नाम हैं। आयुध, प्रहरण, शस्त्र, अस्त्र ये ४ शस्त्रमात्र के नाम हैं। धनुः (स्), धनु, धनू, चाप, धन्व, शरासन, कोदण्ड, कार्मुक और इष्वास ये ७ धनुष के नाम हैं। इनमें धनुः, चाप ये २ पुंनपुंसक हैं। और कर्ण के धनुष् को ‘ कालपृष्ठ’ कहते हैं यह १ राजा कर्ण के धनुष का नाम है ॥ ८२। ८३ ॥

पु.न. पु.न.
अर्जुन का धनुष (कपिध्वजस्य) गाण्डीवगाण्डिवौ (पुंनपुंसकौ)।

धनुषका किनारा स. स. स.न. स.न.
दास्ताना कोटि (रस्या) टनी गोधे तले (ज्याघातवारणे)॥८४॥

जिसकी ध्वजा में हनुमान् रहते हैं उस अर्जुन के धनुष में गाण्डीव, गाण्डिव ये दो होते हैं ये २ अर्जुनधनुष के नाम हैं ये दोनों पुंनपुंसक हैं। कोटि, “ कोटी ” अटनी, “ अटनि ” ये २ इस धनुष की कोटि=(किनारा) के नाम हैं। रोदा की चपेट बचाने में ‘गोधा’ द्वित्व में ‘ गोधे ’ तला या तलम् द्वित्व में तले ये २ चर्मरचित बाहुबन्धन या दास्तानाविशेष के नाम हैं ये दोनों व्यक्ति के द्वित्व से द्विवचनान्त हैं ॥ ८४ ॥

पु. न. स. स. स. पु.
धनुष का मध्य लस्तक (स्तु) धनुर्मध्यं मौर्वीज्याशिञ्जिनी गुणः।

रोदा धनियों के न. न.
आसन (स्यात्)प्रत्यालीढमालीढ(मित्यादिस्थानपञ्चकम्)८५

लस्तक, धनुर्मध्य ये २ धनुष के मध्यभाग या मूठि के नाम हैं। मौर्वी, ज्या, शिञ्जिनी, गुण ये ४ धनुष की रोदा या चिल्ला या रस्सी के नाम हैं इनमें ‘ गुण ’ पुलिङ्ग है। प्रत्यालीढ, आलीढ आदि पांच धनुषधारियों की स्थिति के भेद हैं

आदि पद से समपाद, वैशाख और मण्डल इन्होंका ग्रहण कियाजाता है वहां वाम जंघा को फैलाकर दाहिनी जांघ को समेट कर धनुष चलाना 'प्रत्यालीढ' कहाता है, दाहिनी जांघ को फैलाकर बाईं जांघ को समेट कर धनुष चलाना 'आ-लीढ' पांवों को बराबर कर ठहरना समपाद, बारह अङ्गुल के अन्तर पर पैरों को ठहराकर टिकना 'वैशाख' और मण्डल के समान दोनों पैरों को धारना 'मण्डल' कहा जाता है ये ५ धनुर्धारियों के स्थानभेदों के नाम हैं ॥ ८५ ॥

न. न. न. पु. न.

निशाना बाण लक्षं लक्ष्यं शरव्यं (च) शराभ्यास उपासनम् ।

पु. पु. पु. पु. पु.

संखिना बाण पृषत्कबाणविशिखा अजिह्मगखगाशुगाः ॥ ८६ ॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु.स.

या तीर कलम्बमार्गणशराः पञ्चीरोपइषु (द्वयोः) ।

लक्ष, लक्ष्य, शरव्य "सरव्य" ये ३ वेध या निशाना के नाम हैं । शराभ्यास, उपासन ये २ बाण चलाने के अभ्यास के नाम हैं और पृषत्क, बाण, विशिख, अजिह्मग, खग, आशुग, कलम्ब "कादम्ब" मार्गण, शर "सर" पञ्ची (न्), रोप और इषु ये १२ बाण के नाम हैं इनमें (इषु) पुंस्त्रीलिङ्ग में रहता है ॥ ८६ । ३ ॥

पु. पु. पु. पु.

लोहियाबाण, प्रक्ष्वेडना (स्तु) नाराचाः पक्षो वाज (स्त्रिपूत्तरे) ॥ ८७ ॥

फोंक, फेंकाबाण, पु.स.न.

पु.स.न. पु.स.न.

विषैलेबाण निरस्तः (प्रहिते बाणे) (विषाक्रे) दिग्धलितकौ ।

प्रक्ष्वेडन, स्त्री प्रक्ष्वेडना, नाराच ये २ लोहमय बाण के नाम हैं ये दोनों बहुत्व से बहुवचनान्त हैं नित्य बहुवचनान्त नहीं कहाते हैं । पक्ष, वाज ये २ बाण की फोंक के नाम हैं इसके अनन्तर निरस्त आदि लितक पर्यन्त कहे जानेवाले शब्द तीनों लिङ्ग में रहते हैं । फेंके हुए बाण को 'निरस्त' कहते हैं । यह १ चलाये हुए बाण का नाम है और दिग्ध, लितक ये २ विषैले बाण के नाम हैं ॥ ८७ । ३ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.स.

तरकस तूणोपासङ्गतूणीरनिषङ्गा इषुधि (द्वयोः) ॥ ८८ ॥

स. पु. पु. पु. पु. पु.

तक्षवार तूण्यां खड्गे (तु) निस्त्रिंशचन्द्रहासासिरिष्टयः ।

पु. पु. पु. पु.

कौक्षेयको मण्डलाग्रः करपालः कृपाण (वत्) ॥ ८९ ॥

तूण “ तूणा ” उपासङ्ग “ अपासङ्ग ” तूणीर, निषङ्ग, इषुभि और तूणी ये ६ तरकस के नाम हैं । इनमें “ इषुभि ” खीलिङ्ग व पुंलिङ्ग है । खङ्ग, निखिंश, चन्द्रहास, असि, रिष्टि “ ऋष्टि ” कौक्षेयक, मण्डलाग्र, करपाल “ करवाल ” और कृपाण ये ६ तलवार के नाम हैं ये समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ॥ ८८ । ८९ ॥

पु. स.
कञ्जा, परतला, त्सरुः (खड्गादिमुष्टौ स्यान्) मेखला (तन्निबन्धनम्) ।
पु.न. न. न. पु.
ढाल, हथकड़ा फलको (ऽस्त्री) फलं चर्म संग्राहो (मुष्टिरस्य यः) ॥ ९० ॥

खड्ग आदि की मूठि में ‘त्सरु’ और ‘सरु’ भी होता है यह १ तलवार की मूठि या कट्वा का नाम है । आदि पद से कटार व छूरी आदि का ग्रहण किया जाता है । उस खड्ग की मूठि के चर्मनिर्मित बन्धन को ‘मेखला’ कहते हैं यह १ परतला का नाम है । फलक, फल “ फर ” चर्म (न्) ये ३ ढाल के नाम हैं । इनमें ‘फलक’ पुंनपुंसक है और इस फलक की जो मूठि यानी पकड़ने का स्थान है उसे ‘संग्राह’ कहते हैं यह १ हथकड़ा का नाम है ॥ ९० ॥

मुद्गर, एक पु. पु. स. स.
धारवाली, खड्ग दुघणो मुद्गरघनौ (स्यादी) ली करपालिका ।
या खांडा, पु. पु. पु. पु.
गोफना, पु. पु. पु. पु.
लोहांगी भिन्दिपालः सृग (स्तुल्यौ) परिधः परिधातनः ॥ ९१ ॥

दुघण, “ दुघन ” मुद्गर, घन ये ३ मुद्गर के नाम हैं । ईली, “ ईलि, इली, इलि ” करपालिका, “ करवालिका ” ये २ एकधार की बनी छोटी तलवार, खांडा या गुप्ती के नाम हैं । भिन्दिपाल, सृग ये २ गोफना या डेलवांस के नाम हैं ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं और परिध, परिधातन ये २ लोह से बँधी लाठी (लोहांगी) के नाम हैं ॥ ९१ ॥

पु.स. पु.स. पु.स. पु.
फरसा या (द्वयोः) कुठारः स्वधितिः परशु (श्च) परश्वधः ।
कुल्हारा छूरी स. स. स. स.
या चाकू (स्या) च्छस्त्री (चा) सिपुत्री (च) छुरिका (चा) सिधेनुका ९२

कुठार, खी कुठारी, स्वधिति, परशु, “ पर्यु ” परश्वध, ‘ पश्वध ’ परस्वध ये ४ फरसा या कुल्हाड़ी के नाम हैं । इनमें कुठार, स्वधिति, परशु ये ३ खीलिङ्ग व पुंलिङ्ग हैं और ‘ परश्वध ’ पुंलिङ्ग है । शस्त्री, असिपुत्री, छुरिका, असिधेनुका ये ४ छूरी या चाकू के नाम हैं ॥ ९२ ॥

वर्णी, गुर्ज, सांग, (वा पुंसि) शल्यं शङ्कु (र्ना) शर्वला तोमरो (ऽस्त्रियाम्) ।
 भाखा, खडा- पु. पु. पु. स. पु.न.

दिकों की नोक प्रास (स्तु) कुन्तः कोण (स्तु स्त्रियः) पाल्यश्रिकोटयः ६३
 स. स. स.

शल्य, शङ्कु ये २ बाण के अग्रभाग, बछ्नीं, शेल या फर के नाम हैं इनमें 'शल्य' विकल्पता से पुंलिङ्ग है यानी पुंलिङ्ग व नपुंसकलिङ्ग है और 'शङ्कु' पुंलिङ्ग है । शर्वला, " सर्वला " तोमर ये २ गुर्ज या मथानी के आकार जोहमय अस्त्र विशेष के नाम हैं । प्रास, " प्राश " कुन्त ये २ भाखा के नाम हैं अथवा 'प्रास' यह १ सांग का नाम है और 'कुन्त' यह १ भाखा का नाम है और कोण, पालि " पाली " अश्रि, " अश्री " " अस्त, " कोटि, " कोटी " ये ४ तलवार आदि की नोक या किनारे के नाम हैं ॥ ६३ ॥

क्रौञ्चकी तैयारी सर्वाभिसारः सर्वोद्यः सर्वसंनहनार्थकः ।
 पु. पु. पु.

या जमाव शस्त्रपूजन लोहाभिहारो (ऽस्त्रभृतां राज्ञां नीराजनाविधिः) ॥ ६४ ॥
 पु.

सर्वाभिसार, सर्वोद्य, सर्वसंनहनार्थक ये ३ चतुरङ्गिणी सेनासमूह के जमाव के नाम हैं । और अस्त्रधारी राजाओं की महानवमी दशमी में आरती के समय शस्त्र आदि का समर्पण लक्षणरूप जो विधि उसे लोहाभिहार या लोहाभिसार कहते हैं यह १ महानवमी में प्रस्थान से पहले हथियार व वाहन आदि की पूजन विधि का नाम है ॥ ६४ ॥

शत्रु पर च- (यत्सेनयाभिगमनमरौ तद)भिषेणनम् ।
 न.

ढाई प्रस्थान या पयान यात्रा ब्रज्याभिनिर्द्याणं प्रस्थानं गमनं गमः ॥ ६५ ॥
 स. स. न. न. न. पु.

शत्रु के समीप जो सेना समेत गमन है उसे " अभिषेणन " कहते हैं यह १ शत्रु पर चढ़ाई करने का नाम है और यात्रा, ब्रज्या, अभिनिर्द्याण, प्रस्थान, गमन और गम ये ६ प्रस्थान के नाम हैं ॥ ६५ ॥

क्रौञ्च का कै- (स्यादा) सारः प्रसरणं प्रचक्रं चलिता (र्थकम्) ।
 पु. न. न. न.

भाव चलाती क्रौञ्च मय- (अहितान्प्रत्यभीतस्य रणे यान) मभिक्रमः ॥ ६६ ॥
 पु.

आसार, प्रसरण, " प्रसरणि, प्रसरणी, प्रसारणी " ये २ सब जगह फैली

हुई सेना के नाम हैं । प्रचक्र, चलित ये २ चलती सेना के नाम हैं और संग्राम में निडर वीर का जो शत्रुओं के सामने गमन है उसे अभिक्रम या अतिक्रम कहते हैं यह १ निशङ्क वीर के गमन का नाम है ॥ ६६ ॥

पु. पु. पु. पु.
प्रभात जगाने-
वाले षड्-
यात्री यश-
गायक भाट
वैतालिका बोधकराश्चाक्रिका घाण्टिका (रथकाः) ।
पु. पु. पु. पु.
(स्यु)र्मागधा(स्तु)मगधावन्दिनःस्तुतिपाठकाः॥६७॥

वैतालिक, बोधकर ये २ प्रातःकाल राजाओं को स्तुतिपाठ आदि से जगाने वालों के नाम हैं । चाक्रिक, 'चक्रिक' घाण्टिक, "घाटिक" ये २ घण्टा बजाने से स्तुति करनेवालों के नाम हैं । मागध, मगध, "मधुक" ये २ राजाओं के आगे वंशपरम्परा बखाननेवालों के नाम हैं और वन्दी (न्), स्तुतिपाठक ये २ राजा आदि की स्तुति करनेवाले भाट के नाम हैं इनमें बहुत्व से बहुवचन हुआ है ये नित्य बहुवचनान्त नहीं हैं ॥ ६७ ॥

पु.
लड़ाई से नहीं संशप्तका (स्तुसमयात्संग्रामादनिवर्तिनः) ।
भागनेवाला पु.स. स. पु. न.
धूरि या धूलि रेणु(द्रयोःस्त्रियां)धूलिःपांशु(र्ना न द्वयो)रजः॥६८॥

जो शपथ (सौगन्द) के कारण संग्राम (लड़ाई) से नहीं भागते हैं उनको 'संशप्तक' कहते हैं यह १ लड़ाई से नहीं भागनेवाले का नाम है । रेणु, धूलि, "धूली" पांशु या 'पांसु' और रज (स्) या रज ये ४ धूरि के नाम हैं । इनमें 'रेणु' स्त्री पुलिङ्ग है, धूलि स्त्रीलिङ्ग है, 'पांशु' पुलिङ्ग है और सान्त व अदन्त 'रज' स्त्री पुलिङ्ग नहीं है बरन नपुंसकलिङ्ग कहाता है ॥ ६८ ॥

पु.न. पु. पु. पु.
बड़ी धूलि
बड़ी व्याकुल
फौज भगडा
या निशाना
(चूर्ण)क्षोदःसमुत्पिञ्जपिञ्जलौ (भृशमाकुले) ।
स. स. न. पु.न.
पताका वैजयन्ती स्यात्केतनं ध्वज(मस्त्रियाम्)॥६९॥

चूर्ण, क्षोद ये २ गुट्टेली व कंकड़ियों समेत या पिसी धूलि के नाम हैं अथवा कितेक आचार्यों के मत में ये ६ धूलि के ही नाम हैं । अति आकुलतामें समुत्पिञ्ज, पिञ्जल और "उत्पिञ्जल" ये दोनों होते हैं ये २ अत्यन्त व्याकुल फौज आदि के नाम हैं और पताका, वैजयन्ती, केतन, ध्वज ये ४ पताका, भगडा या निशाना

के नाम हैं अथवा कितेक आचार्यों के मत में केतन आदि दो पताका दण्ड के नाम हैं इनमें 'ध्वज' पुनपुंसक है ॥ ९६ ॥

भयावनी युद्ध-भूमि हम पहले लड़ेंगे (सा) वीराशंसनं (युद्धभूमिर्याऽतिभयप्रदा) ।

(अहं पूर्वमहं पूर्वमित्य) हंपूर्विका (स्त्रियाम्) ॥ १०० ॥

जो युद्धभूमि खण्डित गज आदिकों से महाभयदायक होती है उसे 'वीराशंसन' कहते हैं यह १ अत्यन्त भयदायक रणाभूमि का नाम है और मैं पहले, मैं पहले, मैं आगे होऊँ इस हठपूर्वक लड़ाई को 'अहंपूर्विका' कहते हैं यह स्त्री-लिङ्ग में रहता है यह १ मैं पहले, मैं पहले इस प्रकार योधाओं के दौड़ने की क्रिया का नाम है ॥ १०० ॥

हमी पुरुष हैं या हमी लड़ेंगे आपस में घमंड करना आहोपुरुषिकादर्पाद्या स्यात्संभावनात्मनि ।
अहमहमिका तु सा स्यात्परस्परं यो भवत्यहंकारः १०१ ॥

अभिमान (घमण्ड) से अपने विषय में जो संभावना या सामर्थ्य का प्रकट करना है वह "आहोपुरुषिका" कहाती है यह १ अपना मैं सामर्थ्य जाहिर करने का नाम है और जो परस्पर मैं समर्थ हूँ मैं समर्थ हूँ यह अहंकार होता है उसे 'अहमहमिका' कहते हैं यह १ आपस में अहंकार करने का नाम है अथवा परस्पर इस कहने को कि हम समर्थ हैं या हमी लड़सके हैं उसका नाम है ॥ १०१ ॥

न. न. न. न. न. न. न.

सामर्थ्य द्रविणं तरःसहोबलशौर्याणि स्थाम शुष्मं (च) ।

स. पु. पु. पु. स.

अतिसामर्थ्य शक्तिः पराक्रमप्राणौ विक्रमस्त्वतिशक्तिता ॥ १०२ ॥

द्रविण, तर (स्) सह (स्) बल, शौर्य, स्थाम (न्) शुष्म या शुष्म (न्) शक्ति, पराक्रम, प्राण ये १० पराक्रम या सामर्थ्य के नाम हैं और विक्रम, अति-शक्तिता ये २ अति पराक्रम या बड़ी सामर्थ्य के नाम हैं ॥ १०२ ॥

न.

नशा करना वीरपाणं (तु यत्पानं वृत्ते भाविनि वा रणे) ।

युद्ध होजाने पर रण के परिभ्रम की शान्ति के लिये अथवा होनेवाले रण के उत्साह बढ़ाने के लिये जो वीरों का मद्यपान है उसे 'वीरपाण' या 'वीरपान' कहते हैं यह १ वीरों के नशा करने का नाम है ॥ ३ ॥

लकारे न. न. न. न. न.
युद्धमायोधनं जन्यं प्रधानं प्रविदारणम् ॥ १०३ ॥

न. न. न. न. न.
मृधमास्कन्दनं संख्यं समीकं संपरायकम् ।

पु. पु. पु. पु. पु.
(अस्त्रियां) समरानीकरणाः कलहविग्रहौ ॥ १०४ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
संप्रहाराभिसंपातकलिसंस्फोटसंयुगाः ।

पु. पु. पु. पु. पु.
अभ्यामर्दसमाघातसंग्रामाभ्यागमाहवाः ॥ १०५ ॥

पु. स. स. स. स. स.
समुदायः (स्त्रियः) संयत्समित्याजिसमिव्युधः ।

युद्ध, आयोधन, जन्य, प्रधान, प्रविदारण, मृध, आस्कन्दन, संख्य, समीक, सम्परायक “ सांपरायिक ” समर, अनीक, रण, कलह, विग्रह, संप्रहार, अभि-संपात, कलि, संस्फोट “ संस्फोट ” संयुग, अभ्यामर्द, समाघात, संग्राम, अभ्यागम, आहव, समुदाय, संयत्, समिति, आजि, “ आजी ” समित् और युत् (ध्) ये ३१ युद्ध के नाम हैं इनमें युद्ध से लेकर साम्परायिक पर्यन्त नपुंसकलिङ्ग, ‘ समर ’ से लेकर ‘ समुदाय ’ पर्यन्त पुलिङ्ग और ‘ संयत् ’ से लेकर ‘ युध् ’ पर्यन्त स्त्रीलिङ्ग हैं ॥ १०३ । १०५ । ३ ॥

न. न. न. न.
बाहुयुद्धं रण व्याकुलता नियुद्धं बाहुयुद्धे (स्यात्तुमुलं) रणसंकुले ॥ १०६ ॥
सिंहनाद हाथियों स. पु. स. स.
का गिरोह वीरों क्ष्वेडा (तु) सिंहनादः (स्यात्करिणां) घटना घटा ।
का निन्दापूर्वक न. पु. न. न.
पुकारना हाथियों की गर्जना क्रन्दनं योधसंरावो बृंहितं करिगर्जितम् ॥ १०७ ॥

नियुद्ध, बाहुयुद्ध ये २ बाहुयुद्ध (बाहांजोटी) के नाम हैं । तुमुल, “ तुमूल, तुमुर ” रणसंकुल ये २ रण की व्याकुलता या परस्पर संबाधमें वर्तमान के नाम हैं । क्ष्वेडा, सिंहनाद ये २ वीरों के सिंहनाद के समान (गर्जना) के नाम हैं । हाथियों के गिरोह या क्रतार में घटना, घटा ये दो होते हैं ये २ हाथियों की क्रतार के नाम

१ रथयुग इति निर्देशात्—प्रतिजनादिषु गण्ये संयुगशब्दपाठाद्वा गुणाभावः ॥

२ संयत्सुस्यपि “ लेजिसंयत्यतुलान्नगौरवे ” (इति दण्डी) ॥

३ क्ष्वेडो ध्वनौ कर्णामये विषे । क्ष्वेडा वंशशलाकायां सिंहनादे च योषिति । लोहितार्कपर्याफले धौष-पुण्ये नपुंसकम् । दुरासदे च कुटिले बाम्यसिद्धः प्रकीर्तितः (इति मेदिनी) ॥

हैं । क्रन्दन, योधसंराव ये २ वीरों के निद्रापूर्वक पुकारने के नाम हैं और बृंहित, करिगर्जित ये २ हाथियों की गर्जना के नाम हैं ॥ १०६ । १०७ ॥

धनुषका शब्द, ^{पु.} विस्फारो (^{पु.} धनुषः ^{पु.} स्वानः) ^{पु.} पटहाडम्बरौ (^{पु.} समौ) ।
जुम्हाऊ न- ^{न.} ^{पु.} ^{पु.} ^{न.} ^{न.}
गाड़ा, हठ ^{न.} ^{पु.} ^{पु.} ^{न.} ^{न.}
धोखा देना ^{न.} ^{पु.} ^{पु.} ^{न.} ^{न.} प्रसभं(तु) बलात्कारो हठो (ऽथ)स्खलितं छलम् ॥१०८॥

धनुष का शब्द विस्फार या विष्फार कहाता है यह १ धनुष के शब्द का नाम है । पटह, आडम्बर ये २ जुम्हाऊ नगाड़ा (दमदमा) के नाम हैं । ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं । प्रसभ, बलात्कार, हठ ये ३ बलात्कार या हठ के नाम हैं तथा प्रसङ्गवश से “ हेठो बाधाविहेठयोः ” (इति मेदिनी) इस कोष के प्रमाण से “हेठ” बाधा व विहेठ में जानना चाहिये । और स्खलित, छल ये २ युद्ध मर्यादा से विचलने या धोखा देने के नाम हैं ॥ १०८ ॥

उत्पात मूर्च्छा ^{न.} ^{पु.} ^{पु.} अजन्यं (क्लीबे) उत्पात उपसर्गः (समं त्रयम्) ।
देशों को ^{स.} ^{न.} ^{पु.} ^{पु.} ^{न.}
उपद्रव ^{स.} ^{न.} ^{पु.} ^{पु.} ^{न.}
पहुँचाना ^{स.} ^{न.} ^{पु.} ^{पु.} ^{न.} मूर्च्छा(तु) कश्मलं मोहोऽप्यवमर्द(स्तु) पीडनम् ॥१०९॥

अजन्य, उत्पात, उपसर्ग ये ३ शुभाशुभसूचक महाभूतविकार या उत्पात के नाम हैं इनमें ‘ अजन्य ’ नपुंसक है ये तीनों समानार्थक कहाते हैं । मूर्च्छा, कश्मल, मोह ये ३ मूर्च्छा के नाम हैं और अवमर्द, पीडन ये २ सस्य आदि से सम्पन्न देश का जो परचक्र से पीडित करना है उसके या क्रौञ्च की जतगुंजिया के नाम हैं ॥ १०९ ॥

धोखे से दवाना ^{न.} ^{न.} ^{पु.} ^{पु.} अभ्यवस्कन्दनं (त्व) भ्यासादनं विजयो जयः ।
विजय या कृतेपाना ^{स.} ^{पु.} ^{न.}
वैर मिट जाना ^{स.} ^{पु.} ^{न.} वैरशुद्धिः प्रतीकारो वैरनिर्यातनं (च सा) ॥ ११० ॥

अभ्यवस्कन्दन, अभ्यासादन ये २ छल से जीतने या डाका डालने या प्रहारादिकों से सामर्थ्य विहीन करने के नाम हैं । विजय, जय ये २ शत्रुओं को जीतकर कृतह पाने के नाम हैं और वैरशुद्धि, प्रतीकार, वैरनिर्यातन ये ३ वैर मिटा देने के नाम हैं इनमें पहला स्त्रीलिङ्ग दूसरा पुंलिङ्ग और तीसरा नपुंसकलिङ्ग है ॥ ११० ॥

^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}
भागना ^{पु.} ^{न.} ^{पु.} प्रद्रावोद्द्रावसंद्रावसंदावाविद्रवो द्रवः ।
^{पु.} ^{न.} ^{पु.}

हारना ^{पु.} ^{न.} ^{पु.} अपक्रमोपयानं च (रणे भङ्गः) पराजयः ॥ १११ ॥

प्रद्राव, उद्राव, सन्द्राव, संद्राव, विद्रव, द्रव, अपक्रम और अपयान ये ८ पला-
यन यानी भाग जाने के नाम हैं और जो लड़ाई में भङ्ग (भद्र या हार) होती
है उसे ' पराजय ' कहते हैं यह १ पराजय का नाम है अथवा " भङ्ग " और
" पराजय " ये २ हार के नाम हैं ॥ १११ ॥

पु. पु. पु. पु.
हारा, छिपा पराजितपराभूतौ (त्रिषु) नष्टतिरोहितौ ।

पराजित, पराभूत ये २ तिगस्कार को पाये या हारे हुए यानी हरैला के नाम हैं
और नष्ट, तिरोहित ये २ छिपे हुए के नाम हैं । यहां " त्रिषु " यह पद काकाक्षि-
गोलकन्याय से दोनों ओर सम्बन्ध रखता है इसलिये पराजित, पराभूत और
नष्ट, तिरोहित ये चारो त्रिलिङ्ग हैं ॥ १ ॥

न. न. न. न.
वधना, प्रमापणं निर्वहणं निकारणं विशारणम् ॥ ११२ ॥

न. न. न. न.
मारना या प्रवासनं परासनं निषूदनं निर्हिसनम् ।
कृतल करना

न. न. न. न.
निर्वासनं संज्ञपनं निर्ग्रन्थनमपासनम् ॥ ११३ ॥

न. न. न. न.
निस्तर्हणं निहननं क्षणनं परिवर्जनम् ।

न. न. न. न.
निर्वापणं विशसनं मारणं प्रतिघातनम् ॥ ११४ ॥

न. न. न. न.
उद्वासनप्रमथनक्रथनोजासनानि (च) ।

पु. पु. पु. पु. पु. पु.
आलम्भपिञ्जविशरघातोन्माथवधा (अपि) ॥ ११५ ॥

प्रमापण, निर्वहण, निकारण, विशारण, प्रवासन, परासन, निषूदन, निर्हिसन,
निर्वासन, संज्ञपन, निर्ग्रन्थन " निर्गन्धन " अपासन, निस्तर्हण, निहनन, क्षणन,
परिवर्जन, निर्वापण, विशसन, मारण, प्रतिघातन, उद्वासन, प्रमथन, क्रथन, उज्जा-
सन, आलम्भ, पिञ्ज, विशर, घात, उन्माथ " उन्मन्थ " और वध ये ३० मारने
या कृतल करने के नाम हैं ॥ ११२।११५ ॥

स. पु. पु. पु.
मृत्यु या (स्यात्) पञ्चता कालधर्मो दिष्टान्तः प्रलयोऽत्ययः ।
मौत पु. पु. पु.स. न. पु.न.

अन्तोनाशो (द्रयो) मृत्युर्मरणं निधनो (अजियाम्) ॥ ११६ ॥

पञ्चता, “पञ्चत्व” कालधर्म, दिष्टान्त, प्रलय, अत्यय, अन्त, नाश, मृत्यु, मरण और निधन ये १० मरण या मौत के नाम हैं । इनमें ‘मृत्यु’ स्त्री पुल्लिङ्ग और ‘निधन’ पुंनपुंसकलिङ्ग है ॥ ११६ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.पु.स.न. पु.स.न.

मुर्दा परासुप्राप्तपञ्चत्वपरेतप्रेतसंस्थिताः ।

पु.स.न.पु.स.न. स. स स.

चिता मृतप्रमीतौ(त्रिष्वेते)चिताचित्याचितिः(स्त्रियाम्)११७

परासु, प्राप्तपञ्चत्व, परेत, प्रेत, संस्थित, मृत और प्रमीत ये ७ मृतक या मुर्दे के नाम हैं । ये सातो त्रिलिङ्ग हैं यानी वाच्यलिङ्ग कहाते हैं और चिता, चित्या, चिति ये ३ चिता या प्रेतदाहाधार के नाम हैं ये तीनों स्त्रीलिङ्ग हैं ॥ ११७ ॥

पु.न.

मुंडकटा

श्मशान

निर्जीव या

लाश

कवन्धो(स्त्रीक्रियायुक्रमपमूर्धकलेवरम्) ।

न.

न.

पु.

पु.न.

श्मशानं(स्या)पितृवनंकुणपःशव(मस्त्रियाम्)॥११८॥

नाचता हुआ मस्तक विहीन जो शरीर “धड़” है वह ‘कवन्ध’ कहाता है यह १ बिना मुंडवाले (मुंडकटे) का नाम है । यह पुंनपुंसकलिङ्ग है । श्मशान, पितृवन “पितृकानन, पितृवसति” ये २ परेतभूमि यानी जिस भूमि में मुर्दे फूँके या गाड़ेजाते हैं उसके नाम हैं और कुणप, शव ये २ निर्जीव शरीर (लाश) के नाम हैं । इनमें ‘कुणप’ पुल्लिङ्ग और ‘शव’ पुंनपुंसक है ॥ ११८ ॥

पु.

पु.

स.

स.

पु.

कैदी, जेल-

प्रग्रहोपग्रहौ वन्द्यांकारा(स्यावन्धनालये) ।

खाना,

पु. पु.

पु.

न.

प्राण, प्राणी

(पुंसिभूम्न्य)सवःप्राणा(श्चैवं)जीवोऽसुधारणम्॥११९॥

प्रग्रह, उपग्रह, वन्दी “वन्दि” ये ३ बँधुवा या कैदी के नाम हैं । कारा, बन्धनालय ये २ बन्दीखाना या जेलखाना के नाम हैं । असु, प्राण ये २ प्राणों के नाम हैं । ये दोनों पुल्लिङ्ग होकर बहुवचनान्त हैं यानी जहाँ पञ्चवायुवों की विवक्षा है वहाँ ही “असवः, प्राणाः” ये नित्य बहुवचनान्त रहते हैं अन्यत्र “असुः, प्राणः” एकवचनान्त भी होते हैं और जीव, असुधारण ये २ प्राणधारण के नाम हैं इन में ‘जीव’ पुल्लिङ्ग और ‘असुधारण’ नपुंसकलिङ्ग है ॥ ११९ ॥

१. “को ब्रह्मणि समीरतमयमदम्भेषु भास्करे । मयूरान्नौ च पुंसि स्यात्सुलशीर्षजलोषु कम्” (इति मेदिनी) ॥

जीवनोपाय न. पु. पु.न. न.
आयुर्जीवितकालो (ना) जीवातुर्जीवनौषधम् ॥ १२० ॥
 हाते क्षात्रेयवर्गः ॥

आयु (स्) जीवितकाल ये २ आयुर्दाय या उमर के नाम हैं और जीवातु, जीवनौषध ये २ मृतसंजीवनौषध के नाम हैं । इनमें 'जीवातु' पुंलिङ्ग है परन्तु "अत्र, जीवितकाल, जीवनौषध इन अर्थों में वर्तमान 'जीवातु' पुंनपुंसकलिङ्ग है" इस मेदिनीकोष के प्रमाण से नपुंसक भी पाया जाता है ॥ १२० ॥

इति क्षत्रियवर्गविवरणम् ॥

अथ वैश्यवर्गो व्याख्यायते ॥

वैश्य पु. पु. पु. पु. पु. पु.
ऊरव्या ऊरुजा अर्या वैश्या भूमिस्पृशो विशः ।
 जीविका पु. पु. स. स. न. न.
आजीवो जीविका वार्ता वृत्तिर्वर्तनजीवने ॥ १ ॥

ऊरव्य, ऊरुज, अर्य, वैश्य, भूमिस्पृक् (श्) विट् (श्) ये ६ वैश्य (बनियां) के नाम हैं । ये बहुत्व से बहुवचनान्त हैं और आजीव, जीविका, वार्ता, वृत्ति, वर्तन, जीवन ये ६ जीवनोपाय यानी जीविकामात्र के नाम हैं ॥ १ ॥

वैश्यों की स. न. न.
 जीविका (स्त्रियां) कृषिः पाशुपाल्यं वाणिज्यं (चेति वृत्तयः) ।
 नौकरी खेती स. स. न. स. पु. न. न.
 सीला विनना सेवा श्ववृत्तिरनृतं कृषिरुञ्छशिलं (त्वं) तम् ॥ २ ॥

कृषि, पाशुपाल्य, वाणिज्य 'वाणिज्या' ये ३ वैश्योंकी वृत्तियां हैं यानी (कृषि) खेती करना (पाशुपाल्य) गौ आदि पशुओं की पालना करना (वाणिज्य) खरीदना, बेचना आदि ये ३ बनियों की जीविका के भेद कहाते हैं यह प्रत्येक जीवनोपाय का एक २ नाम है । इनमें 'कृषि' स्त्रीलिङ्ग है "अथ मृतमृताभ्यां जीवेत मृतेन प्रमृतेन वा । सैत्यानृताभ्यामपिवा न श्ववृत्त्या कथंचन" इत्यादि अतियोंमें कहेहुए वृत्तिभेदों को कहते हैं—सेवा, श्ववृत्ति ये २ पराये चित्त के अनुवर्तन करने के नाम हैं अथवा (श्ववृत्तिर्नीचसेवनम्) इस भागवत के प्रमाण से पराधीनी=(नौकरी चाकरी) के नाम हैं । अनृत, कृषि ये २ खेती करने के नाम हैं और रुञ्छ, शिल,

१ "भूमिस्पृक् पुंसि मानववैश्ययोः" (इति मेदिनी) ॥

२ "शुनो वृत्तिः स्मृता सेवा गृहितं तद्विजम्भनाम् । हिंसादोषप्रधानत्वादनृतं कृषिरुच्यते" इति ॥

ऋत ये ३ सीला बीनने के नाम हैं यानी बाज़ार आदि में बिथरे हुए कणों को लेना उच्छ और खेतों में खेतिहरों के गिराये हुए कणों को बीनलेना शिल (सीला) कहाता है इन दोनों को 'ऋत' कहते हैं उसीसे ऋतमुच्छशिलं स्मृतम् ” यह मनु जीका वचन संगत होता है इनमें 'उच्छ' पुलिङ्ग और शिल, ऋत ये दोनों नपुंसक हैं ॥ २ ॥

मांगने व न. न.
 बिना मांगने (द्वे याचितायाचितयोर्यथासंख्यं) मृतामृते ।
 पै मिले न. पु. न. न.
 बनियई सत्यानृतं वणिग्भावः (स्याद्) णं पर्युदञ्चनम् ॥ ३ ॥
 उधार लेना पु. पु. न. म.
 व्याज उद्धारोऽर्थप्रयोग (स्तु) कुसीदं वृद्धिजीविका ।
 मांगनेसे मिला न. न.
 वादे से मिला (याञ्जयाप्तं) याचितकं (निमयादा) अभित्यकम् ॥ ४ ॥

प्रार्थना करने पर जो मिला है उसे 'मृत' कहते हैं यह १ मांगने से मिले हुए का नाम है और जो नहीं प्रार्थना करने पर मिला है वह 'अमृत' कहाता है यह १ बिना मांगने से मिले हुए का नाम है । सत्यानृत, वणिग्भाव ये २ बनियई के नाम हैं । ऋण, पर्युदञ्चन, उद्धार ये ३ उधार (कर्ज) लेने के नाम हैं । अर्थ-प्रयोग, कुसीद “ कुसीद, कुपीद ” वृद्धिजीविका ये ३ व्याज के नाम हैं और जो मांगने से मिल गया है वह 'याचितक' कहाता है यह १ मांगने से मिलने का नाम है और जो निमय यानी विनिमय “ वादे ” से लब्ध हुआ है उसे “आपमित्यक” कहते हैं यह १ वादे पर मिले हुए का नाम है ॥ ३ । ४ ॥

पु. पु.
 महाजन, कर्जो उत्तमर्णाधमर्णौ (द्वौ प्रयोक्तृग्राहकौ क्रमात्) ।
पु. पु. पु. पु.
 व्याजखोर कुसीदिको वार्धुषिको वृद्ध्याजीवश्च वार्धुषिः ॥ ५ ॥

कर्जों का देनेवाला व लेनेवाला ये दोनों क्रम से 'उत्तमर्ण' व 'अधमर्ण' कहाते हैं यानी 'उत्तमर्ण' यह १ ऋणदाता महाजन का नाम है और 'अधमर्ण' यह १ ऋणमहीता (कर्जो) का नाम है और कुसीदिक, वार्धुषिक, वृद्ध्याजीव, वार्धुषि और (वार्धुषी) इन्नन्त भी है उसीसे “ ओत्रियस्य कदर्यस्य वदान्यापि वार्धुषी ” यह स्वामीजी का कहा हुआ वचन संगत होता है ये ४ कर्जा देकर कर्जों की बढ़ती से जो जीते हैं उनके या व्याजखोर के नाम हैं ॥ ५ ॥

पु. पु. पु. पु.
 किसान क्षेत्राजीवः कर्षकश्च कृषक(श्च) कृषीवलः ।
 सामान्य धान्य पु.स.न. पु.स.न.
 धान का खेत (क्षेत्रं) ब्रैहेयशालेयं (ब्रीहिशाल्युद्भवोचितम्) ॥ ६ ॥

क्षेत्राजीव, कर्षक, कृषक, “ कर्षक या कृषिक ” कृषीवल ये ४ खेतीवालों (खेतिहरों) के नाम हैं । धान्यमात्र की उत्पत्ति के योग्य खेत को वा धानों की उत्पत्ति योग्य खेत को “ ब्रैहेय ” कहते हैं यह १ सामान्य धान्य के उपजने योग्य खेत का नाम है और शाली धानविशेष की उत्पत्ति योग्य खेतको “ शालेय ” कहते हैं यह १ कलमादि धानों की उत्पत्ति योग्य खेत का नाम है ॥ ६ ॥

जव, सीकुररहित पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
 जव और साठीयव्यं यवक्यं षष्टिक्यं (यवादिभवनं हि यत्) ।
 का तिल, उड़द, पु.स.न. पु.स.न.
 अलसी, अणुवा, भांगका तिल्यतैलीन (वन्माषोमाणुभङ्गाद् द्विरूपता) ॥ ७ ॥

यव (जौ) आदि की उत्पत्ति योग्य जो खेत है उसे ‘यव्यादि’ कहते हैं जैसे कि, ‘ यव्य ’ यह १ यव होनेवाले खेत का नाम है । ‘ यवक्य ’ यह १ (शूक-हीन=सीकुररहित) छोटे यव होनेवाले का नाम है । ‘ षष्टिक्य ’ यह १ साठी उपजनेवाले का नाम है । तिल्य और तैलीन के समान माष, उमा, अणु और भङ्ग इन शब्दों से खेत की विषयता में द्विरूपता होती है जैसेकि, तिल्य, तैलीन ये २ तिल होनेवाले के नाम हैं । माष्य, माषीण ये २ उड़द के उपजनेवाले के नाम हैं । उम्य, औमीन ये २ अलसी होनेवाले के नाम हैं । अणव्य, अणवीन ये अणुवा (धान्यविशेष) होनेवाले के नाम हैं और भङ्ग्य, भाङ्गीन ये २ भांगवाले खेत के नाम हैं ॥ ७ ॥

मूंग, कोदो, गेहूं, पु.स.न. पु.स.न.
 क्यराव, कुल्थी, मौद्रीनकौद्रवीणा (दि शेषधान्योद्भवक्षमम्) ।
 ककुनी, चना पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
 आदि शाक व पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
 तरकारी बोंकर बीजाकृतं तूतकृष्टं सीत्यं कृष्टं (च) हल्य(वत) ॥ ८ ॥
 छतेखेत, छतेखेत

ब्रीहि आदि कहे हुए शेष मूंग आदि धान्यों की उत्पत्ति योग्य खेतों को मौद्रीन आदि कहते हैं जैसेकि मूंग होनेवाले खेत को ‘ मौद्रीन ’ कहते हैं यह १ मूंग उपजनेवाले खेत का नाम है । ‘ कौद्रवीण ’ यह १ कोदव होनेवाले का नाम है । आदि शब्द से ‘ गौधूमीन ’ यह १ गेहूं उपजनेवाले का नाम है । “ कासा-

यीन ” यह १ मटर या मटरी होनेवाले का नाम है । ‘ कौलत्थीन ’ यह १ कुल्थी होनेवाले का नाम है । ‘ प्रैयङ्गवीणा ’ यह १ काकुनि होनेवाले का नाम है । और ‘ चाणकीन ’ यह १ चना होनेवाले का नाम है ऐसे ही और भी जानो— और “ शाकक्षेत्रादिके शाकशाकटं शाकशाकिनम् ” इस श्लेषक के प्रमाण से शाक, शाकट, शाकशाकिन, “ शाकशाकीन ” या शाकशाकट, शाकशाकिन ये २ शाक (साग) क्षेत्र आदि के नाम हैं । बीजाकृत, उत्पकृष्ट ये २ बोकर जुते हुए खेत के नाम हैं और सीत्य “ शीत्य ” कृष्ट, हल्य ये ३ हल से जुते हुए खेत के नाम हैं ॥ ८ ॥

पु.स.न.

पु.स.न.

पु.स.न.

पु.स.न.

तीनवार जुते खेत त्रिगुणाकृतं तृतीयाकृतं त्रिहल्यं त्रिसीत्य (मपितस्मिन्)

पु.स.न.

पु.स.न.

दोवार जुते खेत द्विगुणाकृते (तु तत्सर्वं द्विपूर्वं) शम्बाकृत (मपीह) ॥ ९ ॥

त्रिगुणाकृत, तृतीयाकृत, त्रिहल्य, त्रिसीत्य ये ४ तीनवार जुते हुए खेत के नाम हैं और उस दो वार जुते हुए खेत में वह पूर्व कहा हुआ सम्पूर्ण ‘ द्विपूर्व ’ होता है जैसेकि, द्विगुणाकृत, द्वितीयाकृत, द्विहल्य, द्विसीत्य और यहां दो वार जुते हुए खेत में ‘ शम्बाकृत ’ या ‘ सम्बाकृत ’ भी नाम है शम्ब शब्द दो वार जोते खेत में वर्तमान रहता है ये ५ दो वार जुते हुए खेत के नाम हैं ॥ ९ ॥

द्रोण, आढक,

पु.स.न. पु.स.न.

प्रस्थ, कुडव व (द्रोणाढकादिवापादौ) द्रौणिकाढकिका (दयः) ।

खारीभर बोये

पु.स.न.

जानेवाले खेत (खारीवापस्तु) खारीक (उत्तमर्णादयस्त्रिषु) ॥ १० ॥

द्रोण, आढक आदि परिमित धान्य के बोने आदि में द्रौणिक, आढकिक आदि होते हैं जैसेकि, “ द्रौणिक ” यह १ जिसमें द्रोणभर बोया जावे उस खेत का नाम है । ‘ आढकिक ’ यह १ आढकभरवाले का नाम है । आदि शब्द से “ प्रास्थिक ” यह १ प्रस्थभर बोये जानेवाले का नाम है । “ कौडविक ” यह १ कुडवभर बोये जानेवाले का नाम है । “ वापादौ ” यहां आदि पद से पचादिका ग्रहण होता है उसीसे द्रोणभर पकाते हैं जिसमें उसे द्रौणिक या द्रौणीन कहते हैं ये २ बटलोही व कड़ाह आदि के नाम हैं ” इत्यादि जानना चाहिये और जिसमें खारी परिमित धान्य बोया जाता है उसे ‘ खारीक ’ कहते हैं यह १ खारीभर बोये जानेवाले का नाम है और ‘ उत्तमर्णा ’ आदि खारी पर्यन्त पढ़े हुए शब्द तीनों सिङ्गों में रहते हैं यानी वाच्यसिङ्ग होते हैं ॥ १० ॥

१ “ शरावान्यां भवेत्प्रस्थश्चतुःप्रस्थैस्तथाढकः । चतुराढको भवेद्द्रोणः खारी द्रोणचतुष्टयम् । कुडवोऽर्द्धशरावकः ” । (इति शार्ङ्गधरभावप्रकाशौ) ॥

खेत ^{पु. पु. न.} (पुंनपुंसकयो) वप्रः केदारः क्षेत्र (मस्य तु) ।
^{न. न. न. न.}

खेतों के समूह कैदारकं (स्या) त्रैदार्यं क्षेत्रं कैदारिकं (गणे) ॥ ११ ॥

वप्र, केदार, क्षेत्र ये ३ खेत के नाम हैं इनमें ' वप्र ' पुंनपुंसक, केदार पुल्लिङ्ग और ' क्षेत्र ' नपुंसक है। इस क्षेत्र के समूह अर्थ में केदारक, कैदार्य, क्षेत्र और कैदारिक ये होते हैं ये ४ खेतसमूह के नाम हैं ॥ ११ ॥

ढेला ^{पु.न. पु. पु. पु.} सरावनि लोष्टानि लेष्टवः (पुंसि) कोटिशो लोष्टभेदनः ।
^{चावुक खन्ता न. न. न. न. न.}

या कुदार प्राजनं तोदनं तोत्रं खनित्रमवदारणम् ॥ १२ ॥

लोष्ट, लेष्ट ये २ मिट्टी के ढेला के नाम हैं। इनमें ' लोष्ट ' पुंनपुंसक है एकत्व में लोष्टः, लोष्टम् द्वित्व में लोष्टौ, लोष्टे और बहुत्व में लोष्टाः, लोष्टानि ये होते हैं और लेष्ट पुल्लिङ्ग में रहता है एकत्व में लेष्टः, द्वित्व में लेष्टौ और बहुत्व में लेष्टवः होते हैं ये बहुत्व से बहुवचनान्त हैं। कोटिश, " कोटीश " लोष्टभेदन, " लोष्टन्न, लेष्टुन्न " ये २ ढेला के तोड़नेवाले मुद्गर या सरावनि हेंगा, पट्टेला तथा मई के नाम हैं। प्राजन, " प्रवयण " तोदन, तोत्र " तोत्र, " ये ३ बेल आदि के मारने के उपयोगी पयना या चावुक के नाम हैं और खनित्र, अवदारण ये २ खन्ता या कुदार आदि के नाम हैं ॥ १२ ॥

^{न. न. न. न. न. न.} हँसिया, दात्रं लवित्रमाबन्धो योत्रं योक्त्र (मथो) फलम् ।
^{जोत, न. न. पु. पु. न. न.} फार, निरीशं कुटकं फालः कृषिको लाङ्गलं हलम् ॥ १३ ॥
^{हर, न. पु. स. पु.} सैला गोदारणं (च) सीरो (ऽथ) सम्या (स्त्री) युगकीलकः ।

दात्र, लवित्र ये २ हँसिया या " दांती " के नाम हैं। आबन्ध, योत्र, योक्त्र ये ३ जुवा बांधने की रस्सी जड़ायल या जोत के नाम हैं। फल, निरीश " निरीष " कुटक " कूटक " फाल, कृषिक " कृषक " स्त्री " कृषका " ये ५ हल के नीचे स्थित काष्ठ में जिसका अग्रभाग लोह से बांधा जाता है उसके या फार के नाम हैं अथवा फल, निरीष, कूटक ये ३ जिस काष्ठ में फार बांधा जाता है उसके नाम हैं और फाल, कृषिक ये २ फार के नाम हैं यह स्वामी का मत है और लाङ्गल,

हल “ हाल ” गोदारगा, सीर “ शीर ” ये ४ हल के नाम हैं और शम्या, युगकीलक ये २ सैला या संबल के नाम हैं ॥ १३ । १ ॥

हरस

स.

पु.

स.

स.

कूंड

ईशा लाङ्गलदण्डः (स्यात्) सीता लाङ्गलपद्धतिः ॥ १४ ॥

मेढी

(पुंसि) मेधिः (खले दारु न्यस्तं यत्पशुबन्धने) ।

साठी

पु.

पु.

पु.

जव

आशुव्रीहिः पाटलः (स्यात्) सितशूकयवौ (समौ) ॥ १५ ॥

ईशा “ ईषा ” लाङ्गलदण्ड ये २ हलदण्ड या हरस के नाम हैं । सीता “ शीता ” लाङ्गलपद्धति ये २ हलरचित रेखा या कूंड के नाम हैं । खलिहान में खैल आदि बांधने के लिये जो काठ गाड़ा जाता है उसे ‘ मेधि ’ या ‘ मेथि ’ कहते हैं यह १ मेढी का नाम है यानी खलिहान में अनाज माड़ने के लिये जो लकड़ी गाड़ते हैं उसका नाम है । आशु, व्रीहि, पाटल “ पाटलि ” ये ३ सामान्य धान्य या साठी के नाम हैं अथवा (आशुनामा) व्रीहिः पाटल उच्यते इति नामद्वयम् ” इस सुभूति के मत में आशुव्रीहि, पाटल ये २ साठी के नाम हैं इनमें ‘ आशु ’ पुंनपुंसक है और व्रीहि व पाटल ये दोनों पुल्लिङ्ग हैं और सितशूक “ शितशूक ” यव ये २ जव के नाम हैं ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कश्ते हैं ॥ १४ । १५ ॥

हं जव

पु.

पु.

पु.

मटर या मयरा तोक्मस्तु (तत्र हरिते) कलायं (स्तु) सतीनकः ।

पु.

पु.

पु.

पु.

कोदव

हरेणुखण्डिकौ (चास्मिन्) कोरदूष (स्तु) कोद्रवः ॥ १६ ॥

इस हरे जवको ‘ तोक्म ’ कहते हैं यह १ हरे बिना टूंडवाले जव का नाम है । कलाय, सतीनक, “ सातीनक ” या “ सतील-सतीलक ” हरेणु, खण्डिक ये ४ मटर या क्यराव के नाम हैं और “ त्रिपुट, खण्डिक ” ये २ खेसारी या दुबिया के नाम हैं और “ कुलत्थिका कुलत्थश्च ” इस प्रमाण से “ कुलत्थिका, कुलत्थ, कुल्माष ” ये ३ कुल्थी के नाम हैं । कोरदूष, कोद्रव ये २ कोदव के नाम हैं ॥ १६ ॥

पु.

पु.

पु.

पु.

मसूर मोठ

मङ्गल्यको मसूरो (ऽथ) मकुष्ठकमयुष्ठकौ ।

या वनमूग

पु.

पु.

पु.

पु.

सरसों

वनमुद्गे सर्षपे (तु द्वौ) तन्तुभकदम्बकौ ॥ १७ ॥

मङ्गल्यक, मसूर या मसुर स्त्री “ मसूरा , मसुरा ” ये २ मसूर के नाम हैं ।
कुष्ठक, “ मकुष्ठ—मुकुष्ठ—मुकुष्ठक ” मयुष्ठक, ‘ मयुष्ठक ’ “मपष्ठक, मपष्ठक” वनमुद्ग
ये ३ वनमूंग, मोथी या मोठ के नाम हैं और सर्षप, ‘ सरिषप’ तन्तुभ “ तुन्तुभ ”
कदम्बक “ कटु, स्नेह ” ये ३ सरसों के नाम हैं ॥ १७ ॥

सफेद सरसों पु. सिद्धार्थ (स्त्वेष धवलो) गोधूमः सुमनः (समौ) ।
गेहूं पु. पु. पु.
कुल्थी पु. पु. पु.
चना (स्या) यावक (स्तु) कुल्मासश्चणकौ हरिमन्थकः १८ ॥

यदि यह सरसों सफेद हो तो ‘सिद्धार्थ’ कहा जाता है । यह १ सफेद सरसों का नाम है । गोधूम, सुमन, “ सुमनः ” (स्) ये २ गेहूं के नाम हैं ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं । यावक, कुल्मास “ कुल्माष ” ये २ अधपके तथा गदराये हुए जव आदि के नाम हैं और चणक, हरिमन्थक सकल-प्रिय ये २ चना के नाम हैं ॥ १८ ॥

बांझतिल, पु. (द्वौ तिले) तिलपेज (श्च) तिलपिञ्ज (निष्फले) ।
राई पु. पु. स. स. स.
क्षवः क्षुधाभिजननो राजिका कृष्णिकासुरी ॥ १९ ॥

तैलरहित तिल में तिलपेज, तिलपिञ्ज ये दो होते हैं यानी तिलपेज, तिलपिञ्ज और ‘ अतिल ’ भी ये २ तैलहीन बांझ तिल के नाम हैं । क्षव, क्षुधाभिजन या “ क्षुताभिजन ” राजिका, कृष्णिका, आसुरी या “ असुरी ” ये ५ राई के नाम हैं ॥ १९ ॥

ककुनी, स. स. स. स. स.
अलसी, (द्वियौ) कङ्गुप्रियङ्गु (द्वे) अतसी (स्या) दुमाक्षुमा ।
भांग या प- स. पु. पु.
टुवा सामा, मातुलानी (तु) भङ्गायां (व्रीहिभेद) स्त्वणुः (पुमान्) ॥ २० ॥
चीना, मेडुवा

कङ्गु, या “ कङ्गू ” प्रियङ्गु या “ प्रियङ्गू ” ये २ ककुनी के नाम हैं । ये दोनों स्त्रीलिङ्ग हैं । अतसी, उमा, क्षुमा ये ३ अलसी के नाम हैं । मातुलानी, भङ्गा ये २ शण धान्य भांग या पटुवा के नाम हैं अथवा जिसके सन से भंगरा नाम टाट बनता है उसके नाम हैं और व्रीहिविशेष, ‘ अणु ’ यह पुंलिङ्ग है यह १ चिनवां या जेठऊ सामा का नाम है । परन्तु वैद्यक ग्रन्थों में “ (चीनाकः कङ्गुभेदोऽस्ति स ज्ञेयः कङ्गुवद्गुणैः । श्यामाकः शोषणो रूक्षो वातलः कफपित्तहृत्) ” यह कहा है ॥ २० ॥

१ कुल्माषोऽर्धस्विन्नो यवादिरिति स्वामी—शकृशब्दयो यवादिसिति रक्षितादयः ॥

२ “ चणको हरिमन्थः स्यात्सकलप्रिय इत्यपि ” (इति भावप्रकाशः) ॥

सु. पु.न. पु.न. स.
सीकुर या दूंड किंशारुः शस्यशूकं (स्यात्) कणिशं शस्यमञ्जरी ।

वाली सामान्य न. पु. पु. पु. पु.
धान्य गुच्छा, धान्यं ब्रीहिः स्तम्बकरिः स्तम्बो गुच्छ (स्तृणादिनः) ॥ २१ ॥

किंशारु, शस्यशूक ये २ यवादिकों के अग्रभाग = “ दाढ़ी ” या “ सीकुर ” के नाम हैं । इनमें पहिला पुंलिङ्ग व दूसरा पुंनपुंसक है । कणिश, शस्यमञ्जरी ये २ धान्यों के नये निकले शीश या वाली के नाम हैं । धान्य, ब्रीहि, स्तम्बकरि ये ३ सामान्यधान्य यानी ब्रीहि, यव आदि के नाम हैं और तृण, यव आदि के गुच्छे को यानी नाल आदि समूह को स्तम्ब, गुच्छ या ‘गुत्स’ कहते हैं ये २ यव आदिकी मूल या (गुच्छे) के नाम हैं ॥ २१ ॥

स. न. पु. पु.न.
नरई, पयार नाडी नालं (च) काण्डो (ऽस्य) पलालो (ऽस्त्री सनिष्फलः) ।

पु. न. पु.
भूसा भूसी कडङ्गरो वुसं (क्लीबे) (धान्यत्वचि) तुषः (पुमान्) ॥ २२ ॥

इस गुच्छे का जो काण्ड है उसे नाडी “नाली” नाल “नाड” और काण्ड कहते हैं ये ३ नरई के नाम हैं । यदि वह काण्ड निष्फल हो तो ‘पलाल’ कहाता है यह १ पयार का नाम है यह पुंनपुंसक है । कडङ्गर, वुस या “ तुष ” ये २ भूसा के नाम हैं । इनमें ‘वुस’ नपुंसक है और धान्यत्वक् (च) तुष ये २ भूसी के नाम हैं इनमें “तुष” पुंलिङ्ग है अथवा धान्यों की फुकली बकली या छिकली आदि में “तुष” पुंलिङ्ग होता है यह १ भूसी का नाम है ॥ २२ ॥

पु.न. स. स.
सीकुर छीमी शूको (ऽस्त्री शलक्षणातीक्ष्णाग्रे) शमी सिम्बा (त्रिषूत्तरे) ।

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
ढेर बसाया ऋद्धमावसितं (धान्यं) पूतं (तु) बहुलीकृतम् ॥ २३ ॥

पतला, चिकना व तीखा जो यव आदिका अग्रभाग है उसे ‘शूक’ कहते हैं अथवा शूक, शलक्षणातीक्ष्णाग्र ये २ सीकुर या अनाजकी दाढ़ी के नाम हैं इनमें ‘शूक’ पुंनपुंसक है । शमी, सिम्बा, “ सिम्बा ” “ शिमि, शिम्बि ” ये २ छीमी, छियां, कौंसी या फलिया के नाम हैं इसके अनन्तर ऋद्ध आदि बहुलीकृत पर्यन्त शब्द त्रिलिङ्ग हैं यानी वाच्यलिङ्ग कहाते हैं । ऋद्ध, “ रिद्ध ” आवसित, “ अवसित ”

१ धान्यपदेन सप्तदश धान्यान्युच्यन्ते । “ ब्रीहि, यव, मसूर, गोधूम, सुद्र, माष, तिल, चणक, अणु, त्रियङ्ग, कोद्रव, मकुष्ठक, कलाय, कलत्थ, षष्टिक, सर्षप, अतसीति सप्तदश ” महाभाष्ये “ विभाषा तिलमाषोमभक्ताण्युच्यः ” इति सूत्रे व “ शण्यसप्तदशानि धान्यानीत्युक्तम् ” ॥

२ किंशारोन्यः शूको निर्दिष्टः, शूकधान्यशमीधान्यभेदार्थं वा पुनरुक्तः ॥

ये २ तृण दूरकिये हुए पके दार्ये धान्य ढेर के नाम हैं और पूत, बहुलीकृत ये २ वसाई हुई साफ धान्यराशि के नाम हैं ॥ २३ ॥

न.

न.

शमीधान्य (माषादयः) शमीधान्ये शूकधान्ये (यवादयः) ।

शूकधान्य पु.

शालिधान्य शालयः (कलमाद्याश्च षष्टिकाद्याश्च) पुंस्यमी ॥ २४ ॥

उड़द, भूंग, लोविया, कुल्फी, चना आदि 'शमीधान्य' कहाते हैं यह १ शमी-धान्य का नाम है । यव, गेहूं आदि 'शूकधान्य' कहलाते हैं यह १ शूकधान्य का नाम है और जड़हन तथा साठी आदि 'शालिधान्य' कहे जाते हैं यह १ शालि-धान्य का नाम है ये माष आदि धान्य पुलिङ्ग में वर्तमान रहते हैं ॥ २४ ॥

तिन्नी, पसाही न.

पु.

स.

स.

यामुनियों का तृणधान्यानि नीवाराः (स्त्री) गवेधुर्गवेधुका ।
अन्न, गोदुवां

तृणधान्य, नीवार ये २ जंगली धान या तिन्नी-पसाही के नाम हैं । बहुवचन से सामा या चैनवां आदिकों का प्रहरण किया जाता है इनका विशेष विस्तार भाव-प्रकाश में भी किया है जैसेकि, "शालिधान्य, ब्रीहिधान्य, शूकधान्य, शिम्बीधान्य और क्षुद्रधान्य (तृणधान्य) ये ५ धान्य कहाते हैं तहां लाल चावल आदि शालि धान्य है, साठी आदि ब्रीहिधान्य, यवआदि शूकधान्य, भूंग आदि शिम्बीधान्य और कङ्गुआदि क्षुद्रधान्य कहाते हैं और गवेधु, गवेधुका, "गवेधु" ये २ गरह-डुवा, गोदुवां या सेदुवां के नाम हैं अब यहां प्रसङ्गवश भावप्रकाश के प्रमाण से ज्वार के नाम कहते हैं जैसेकि, यावनाल, यवनाल, शिखरी, वृत्ततन्दुल, दीर्घनाल, दीर्घशिर, क्षेत्रेक्षु और इक्षुपात्रक ये ८ सामान्य ज्वार के नाम हैं । धावल, यवनाल, पाण्डुर, तारतन्दुल, नक्षत्राकृति विस्तार, वृत्त, मौक्तिक, तन्दुल, जूर्णाल, देवधान्य, जूर्णल, बीजपुष्पक, जूनल, पुष्पगन्धक, सुगन्ध और सगुरुन्दक ये १५ सफेदज्वार के नाम हैं ॥ २५ ॥

मृतर

पु.न.

पु.न.

न.

न.

उत्तली

अयोग्रो मुसलो (स्त्री) स्यादुदूखलमुलूखलम् ॥ २५ ॥

सूप

न.

पु.न.

स.न.

पु.न.

चलनी

प्रस्फोटनं शूर्प (मस्त्री) चालनी तितैतः (पुमान्) ।

१ "यावनालो यवनालः शिखरीवृत्ततन्दुलः । दीर्घनालो दीर्घशिरः क्षेत्रेक्षेत्रेक्षुपात्रकः" इति सामान्य-यवनालस्य । धावलो यावनालस्तु पाण्डुलस्तारतन्दुलः । नक्षत्राकृतिविस्तारो वृत्तो मौक्तिकतन्दुलः । जूर्णालो देवधान्यं जूर्णलो बीजपुष्पकः । जूर्णलः पुष्पगन्धश्च सुगन्धः सगुरुन्दकः (इति भावप्रकाशः) ॥

२ "तितैतः पुंसि स्त्रीषु च पृथग्व्यारणे द्वयोः सामर्थ्याद्द्वयो न" इति गुणभावः ॥

अथोग्र, मुसल या “ मुषल ” ये २ मूसल (मूसर) के नाम हैं । ये दोनों पुंनपुंसकलिङ्ग हैं । उदूखल, उलूखल ये २ ओखली के नाम हैं । प्रस्फोटन, शूर्प या “ सूर्प ” ये २ सूप के नाम हैं । इनमें ‘प्रस्फोटन’ नपुंसक है और ‘सूर्प’ पुंनपुंसक है और चालनी “ चालन ” तितउ ये २ चलनी के नाम हैं । इनमें ‘चालनी’ यह स्त्रीलिङ्ग व नपुंसकलिङ्ग है और “ तितउ ” पुंलिङ्ग है परन्तु रत्नकोषादिकों के प्रमाण से नपुंसक भी है ॥ २५ । १ ॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु.
थैली या बोरा स्यूतप्रसेवौ कण्डोलपिटौ कटंकिलिञ्जकौ ॥ २६ ॥

डेलवा या दौरा न. न.
चटाई, झांपी (समानौ) रसवत्यां (तु)पाकस्थानमनसे ।

रसोई का घर पु. पु. पु.
रसोई का स्वामी पौरोगव (स्तदध्यक्षः) सूपकारास्तु बल्लवाः ॥ २७ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
रसोईदार आरालिका आन्धसिकाः सूदा औदनिका गुणौः ।

स्यूत, “ स्यूत, स्योत, स्योन ” प्रसेव ये २ अनाज भरने के लिये थैला, थैली या बोरा के नाम हैं । कण्डोल “ काण्डोल ” पिट “ पिटक ” पेटक ये २ बांस आदि के बनेहुए डेलवा, छेटवा, ओढ़ा, म्वाढ़ा या दौरा के नाम हैं । कट, किलिञ्जक ये २ चटाई या झांपी के नाम हैं । ये स्यूत आदि दो २ समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं । रसवती, पाकस्थान, महानस ये ३ पाकशाला “ रसोईघर ” के नाम हैं । उस पाकशाला का स्वामी ‘ पौरोगव ’ कहा जाता है अथवा पौरोगव, ‘ तदध्यक्ष ’ ये २ रसोई के अध्यक्ष या अधिकारी के नाम हैं । सूपकार, बल्लव, आरालिक, आन्धसिक, सूद, औदनिक और गुण ये ७ पकानेवाले रसोईघरदार (रोटिकरा) के नाम हैं अथवा “ सूपकार, बल्लव ” ये २ व्यञ्जन बनानेवाले के नाम हैं और ‘ आरालिक ’ आदि ‘ गुण ’ पर्यन्त ५ रसोईदार के नाम हैं ॥ २६ । २७ । १ ॥

पु. पु. पु.
पुवा आदि आपूपिकः कान्दविको भक्षकार (इमे त्रिषु) ॥ २८ ॥
नानेवाले न. न. स. स. स.

रस्ही या चल्हा अश्मन्तमुद्धानमधिश्रयणी चुक्षिरन्तिका ।

आपूपिक, कान्दविक, भक्षकार “ भक्ष्यकार, भक्ष्यकार ” ये ३ पुवा आदि

१ यक्ष्यं कटे शेते कुमारसामिति सारस्वतीये ॥ २ “ श्यो मौर्न्यामप्रधाने रूपादौ सूद इन्द्रिये । श्यो शौर्पादिसंभवादिसत्त्वाद्यावृत्तिरञ्जयु । शुक्रादावपि बुद्ध्यां च ” (इति मेदिनी) ॥

बनानेवाले के नाम हैं और ये 'पुरोगव आदि' त्रिलिङ्ग हैं यानी वाच्यलिङ्ग कहते हैं और अश्मन्त, अस्वन्त उद्धान "उद्धमान" अधिश्रयणी, चुल्लि, "चुल्ली" अन्तिका ये ५ चूल्ही या चूल्हा के नाम हैं । इनमें पहले के दो नपुंसक हैं और आखिरी के तीन स्त्रीलिङ्ग हैं ॥ २८ । १ ॥

स. स. स.
अंगेठी, अंगार, अङ्गारधानिकाङ्गारशकट्य (पि) हसन्त्य (पि) ॥ २९ ॥

स. पु.न. न. न.
लुकाठ, खपरी, हस (न्यप्यथ न स्त्री स्या) दङ्गारोऽलातमुल्मुकम् ।

न. पु. पु.स. स.
भार या भट्टी (क्लीबे) अम्बरीषं भ्राष्ट्रो (ना) कन्दुर्वास्वेदनी (स्त्रियाम्) ३०

अङ्गारधानिका, अङ्गारशकटी, हसन्ती, हसनी ये ४ अंगेठी, बिरौसी या बगौसिया के नाम हैं । 'अङ्गार' यह १ अंगार का नाम है । यह स्त्रीलिङ्ग नहीं है वरन् पुंनपुंसकलिङ्ग है । अलात, उल्मुक ये २ अधपर्ची लकड़ी या लुकाठ के नाम हैं । ये दोनों नपुंसकलिङ्ग हैं अथवा मुकुट के मत में अङ्गार, अलात, उल्मुक ये ३ अंगार के नाम हैं । अम्बरीष " अम्बरिष " भ्राष्ट्र ये २ चना आदि भूजने की खपरी, खपरा या कड़ाह आदि के नाम हैं । इनमें 'अम्बरीष' नपुंसक है और 'भ्राष्ट्र' पुलिङ्ग है और कन्दू, " कन्दु " स्वेदनी " स्वेदन " ये २ भट्टी या भार के नाम हैं । इनमें " कन्दू " विकल्प से पुलिङ्ग है पक्ष में स्त्रीलिङ्ग होता है और ' स्वेदनी ' विकल्प से स्त्रीलिङ्ग है पक्ष में पुलिङ्ग है ॥ २९ । ३० ॥

पु. पु. स. स. स.
मेढका, करवा, अलिञ्जरः (स्या) न्मणिकः कर्कर्यालुर्गलन्तिका ।

पु. स. स. न. पु.
बटलोही, घड़ा पिठरः स्थाल्युखा कुण्डं कलश (स्तुत्रिषु द्वयोः) ॥ ३१ ॥

पु.स. पु.न. पु.न. पु.न. पु.न.
सेरवा घटः कुटनिपा (वस्त्री) शरावो वर्धमानकः ।

अलिञ्जर " अलञ्जर " मणिक ये २ मेढका या माट के नाम हैं । कर्करी, आलू, " आलु " " आरू " गलन्तिका ये ३ करवा या गेडुवा के नाम हैं । पिठर, स्थाली, उखा " उषा " कुण्ड ये ४ बटलोही, हांडी या हंडा आदि के नाम हैं ।

१ स च साग्निर्निरग्निश्च तत्र साग्नौ यथा—“अङ्गारधुम्बितमिव व्यथमानमास्ते ” इति । निरग्नौ यथा—“कलङ्कस्तत्रत्यो व्रजति मलिनाङ्गारतुलनाम् ” इत्यादि प्रयोगः संगच्छते ॥

२ " हसन्ती च हसन्ती च हसन्ती वामलोचनाम् । हेमन्ते ये न सेवन्ते ते नरा मन्दभागिनः ॥ १ ॥

कलश “ कलस ” घट, कुट, निप ये ४ कलशा, कलशी, गगरा या गगरी के नाम हैं । इनमें “ कलश ” त्रिलिङ्ग है, “घट” स्त्री-पुंलिङ्ग है और कुट, निप ये २ पुंनपुंसक हैं और शराव “ सराव ” वर्धमानक ये २ सेरवा, कसवा, ढकना या मलैया आदि के नाम हैं ये भी दोनों पुंनपुंसक हैं ॥ ३१ । ३ ॥

न.

न.

पु.

न.

तवा

ऋजीषं पिष्टपचनं कंसो (ऽस्त्री) पानभाजनम् ॥ ३२ ॥

आवखोरा

स.

कुप्पा

कुतूः (कृत्तेःस्नेहपात्रं) (सैवाल्पा) कुतुपः (पुमान्) ।

कुप्पी

न.

न.

न.

न.

न.

सबवर्तन

(सर्व)मावपनं भाण्डं पात्रामत्रं (च) भाजनम् ॥ ३३ ॥

ऋजीप या “ऋजीष” पिष्टपचन ये २ तवा के नाम हैं । कंस या “कंस-कांस्य” पानभाजन ये २ पानपात्र-आवखोरा-कटोरा या कटोरी आदि के नाम हैं । इनमें ‘ कंस ’ पुंनपुंसक है । चमेड़े का बना तेल व घी आदि के रखने का वर्तन ‘कुतू’ कहा जाता है । यह १ कुप्पा का नाम है और यदि वही कुप्पा छोटासा प्रतीत हो तो ‘कुतुप’ कहा जाता है यह एक कुप्पी या कुपिया का नाम है । यह पुंलिङ्ग है और स्यूत आदि व पिठर आदि सबही वासन आवपनादि संज्ञक होते हैं जैलेकि, आवपन, भाण्ड, पात्र, अमत्र और भाजन ये ५ जितने वर्तन कहचुके हैं उन सबोंके नाम हैं ॥ ३२ । ३३ ॥

स.

स.

स.

पु.स.

पु.

करछुली

दर्विः कम्बिः खजाका (च) (स्या)त्तर्दूर्दारुहस्तकः ।

चमचा या डोवा

पु.न.

न.

पु.

स.

साग

(अस्त्री) शाकहरितकं शिशु (रस्य तु) नालिका ॥ ३४ ॥

साग का डंठल

पु.

पु.

पु.

पु.

साग का मसाला कडम्ब (श्च) कलम्ब (श्च) वेसवार उपस्करः ।

दर्वि, “ दर्वी ” कम्बि, “ कम्बी ” खजाका, “ खज ” ये ३ करछी, कर

१ पत्रं पुष्पं फलं नालं कन्दं संस्वेदजं तथा । शाकं षड्विधमुद्दिष्टं गुरुविषाद्यथोत्तरम् १ प्रायः शाकानि सर्वाणि विष्टम्भीनि गुरुणि च । रूक्षाणि बहुवर्चांसि सृष्टविष्माणतानि च २ शाकं भिनन्ति वपुरस्थि निहन्ति नेत्रं वर्षे विनाशयति रक्तमथापि शुक्रम् । प्रज्ञाश्रयं च कुरुते पलितं च नूनं हन्ति स्मृतिं गतिमिति प्रवदन्ति तज्ज्ञाः ३ शाकेषु सर्वेषु वसन्ति रोगास्ते हेतवो देहविनाशनाय । तस्माद्बुधः शाक-विवर्जनन्तु कुर्यात्तथास्तेषु स एव दोषः” ॥ ४ ॥

२ “विंशतिः पलानि हरिद्रायाः, दश पलानि धान्याकस्य, पञ्च पलानि शुद्धनीरकस्य, पलं सार्द्धद्वयं मेथिकायाः, एतच्चतुष्टयं भजितमेव ब्राह्मम्, त्रीणि पलानि मरिचस्य, अर्धपलं रामठस्य ” एतत्सर्वमेकत्र संयोग्यं समर्द्धितं वेसवार इत्युच्यते ॥

छुली या चिमचे आदि के नाम हैं । तर्दू, दारुहस्तक ये २ काठ के बने हाथ या 'डौवा' आदि के नाम हैं अथवा हैमकोष के अनुरोध से दर्वी आदि ५ करछुली आदि के ही नाम हैं । शाक, हरितक, शिमु या "सिमु" ये ३ बथुवा आदि साग के नाम हैं । इनमें "शाक" पुनपुंसकलिङ्ग है इसकी नाडिका 'डंठल' को नालिका "नाडिका" कडम्ब, कलम्ब "कलम्बी" कहते हैं ये ३ शाक के डणके या डंठल के नाम हैं । इनमें "कलम्बी शाकभेदे स्यात्कडम्बशरयोः पुमान्" इस मेदिनीकोष के प्रमाण से "कलम्ब" पुंस्त्रीलिङ्ग है और वेसवार, "वेश-वार-वेषवार" उपस्कर ये २ छौंकेने या बघारने के लिये दिये हुए हींग, जीरा, हल्दी, धनियां, सोंठि आदि मसाला के नाम हैं । इसका विशेष विस्तार आत्रेय-संहिता तथा अन्याचार्यकृत वैद्यकग्रन्थों में भी किया है जैसेकि, "बीस पल हल्दी, दश पल धनियां, पांच पल शुद्धजीरा, ढाई पल मेथी इन चारों को भूँजा हुआ लेना चाहिये तीन पल मिरच, आधा पल हींग इनको इकट्ठा मिलाकर कूटा हुआ वेसवार कहा जाता है ॥ ३४ । ३ ॥

चूक न. न. न. न.
तिन्तिडीकं(च)चुक्रं(च)वृक्षाम्ल(मथ)वेल्लजम् ॥ ३५ ॥
मिरच न. न. न. न.
मरिचं कोलकं कृष्णमूषणं धर्मपत्तनम् ।

तिन्तिडीक "तिन्तिडिक" चुक्र, वृक्षाम्ल ये ३ अमरा, अमिली, चूक या साग विशेष चूका के नाम हैं और वेल्लज, मरिच "मरीच" कोलक, कृष्ण, ऊषण या "उषण" धर्मपत्तन ये ६ स्याह मिरच या कालीमिरच के नाम हैं ये सबही नपुंसकलिङ्ग हैं ॥ ३५ । ३ ॥

सफ़ेद जीरा पु. पु. स. स.
जीरको जरणोऽजाजी कणा (कृष्णे तु जीरके) ॥ ३६ ॥
स्याह जीरा स. स. स. पु. स. स.
सुषवी कारवी पृथ्वी पृथुः कालोपकुञ्चिका ।

जीरक, जरण, अज्जाजी, कणा ये ४ सफ़ेद जीरा के नाम हैं । इनमें पहिला दूसरा ये दो पुंलिङ्ग हैं और तीसरा तथा चौथा स्त्रीलिङ्ग है और कालेजीरा में सुषवी, "सुशवी, सुसवी" कारवी, पृथ्वी, पृथु, काला और उपकुञ्चिका ये होते हैं ये ६ स्याह जीरा के नाम हैं ॥ ३६ । ३ ॥

अदरक, न. न. स. न.
आर्द्रकं शृङ्गवेरं (स्यादथ) च्छत्रा वितुलकम् ॥ ३७ ॥

धनियां, ^{न.} कुस्तुम्बुरु (च) ^{न.} धान्याक (मथ) ^{स.} शुण्ठी ^{न.} महौषधम् ।

सोंठि ^{स.न.} (स्त्रीनपुंसकयो) ^{न.} विश्वं ^{न.} नागरं विश्वभेषजम् ॥ ३८ ॥

आर्द्रक, शृङ्गवेर ये २ अदरख या सोंठिकी पहिली हालत के नाम हैं । छप्पा, त्रितुन्नक, कुस्तुम्बुरु, “ कुस्तुम्बुरी, तुम्बुरु, तुम्बुरी ” धान्याक, “ धन्याक ” और “ धान्यक, धनिक, धनीयक, धनेयक, धान्य ” और धन्या ये ४ धनियां के नाम हैं । शुण्ठी, “ शुण्ठि ” महौषध, “ महौषधी ” विश्व, “ विश्वा ” नागर और विश्व-भेषज ये ५ सोंठि के नाम हैं ॥ ३७ । ३८ ॥

कांजी ^{न.} आरनालक ^{न.} सौवीर ^{न.} कुलमाषाभिषुतानि (च) ।

^{न.} अवन्तिसोम ^{न.} धान्याम्ल ^{न.} कुञ्जलानि ^{न.} (च) काञ्जिके ॥ ३९ ॥

आरनालक, सौवीर, कुलमाष, अभिषुत, “ कुलमाषाभिषुत ” अवन्तिसोम, धान्याम्ल, कुञ्जल और काञ्जिक या काञ्जिक स्त्री काञ्जिका ये ८ कांजी के नाम हैं “ सन्धितं धान्यमण्डादि काञ्जिकं कथ्यते जनैः । काञ्जिकं भेदि तीक्ष्णोष्णं रोचनं पाचनं लघु ” (इति भावप्रकाशः) धान्य आदि के माड़ को दो, तीन दिन रक्खा रहने दे जव खट्टा होजावे उसको पण्डितों ने काञ्जिक (कांजी) कहा है ॥ ३९ ॥

हींग, ^{न.} सहस्रवेधि ^{न.} जतुकं ^{न.} वाल्हीकं ^{न.} हिङ्गु ^{न.} रामठम् ।

^{स.} हींग की पत्ती ^{स.} तत्पत्री ^{स.} कारवी ^{स.} पृथ्वी ^{स.} बाष्पिका ^{स.} कवरी ^{स.} पृथुः ॥ ४० ॥

सहस्रवेधि, जतुक, वाल्हीक, “ वाल्हिक ” हिङ्गु, रामठ ये ५ हींग के नाम हैं और तत्पत्री, “ त्वक्पत्री ” कारवी, पृथ्वी, बाष्पिका, “ बाष्पिका ” कवरी “ कर्वरी ” और पृथु ये ६ हींग की पत्ती के नाम हैं । अथवा उस हींग की पत्ती

१ सधन्या शुण्ठिसैन्धवमिति वैचकम् ॥

२ यदा पचाद्याचि तदा गौरादित्वकल्पनं समीचीनं भाति, यदा तु सर्वधातुभ्य इति इन्प्रत्ययः स्यात्तदा “ कृदिकारादिति ” वैकल्पिकत्वादौरादित्वकल्पनं व्यर्थमेवेति ॥

३ “ आरनालं तु गोधूमैरामैः स्यान्निस्तुषाकृतैः । पक्वैर्वासंधितं तन्नु सौवीरसदृशं शुण्ठैः ” ४ “ सौवीरन्तु यवैरामैः पक्वैर्वा निस्तुषाकृतम् । गोधूमैरपि सौवीरमाचार्याः केचिद्विचरे ” ५ धान्याम्लं शालिचूर्णं च कोद्रवादिभूतं भवेत् ” (इति भावप्रकाशः) ॥

कारवी, पृथ्वी, बाष्पिका, कवरी और पृथु कहाती है इस अर्थ से ५ ही हींग के नाम होते हैं ॥ ४० ॥

हल्दी ^{स.} निशा ^{स.} ह्वा ^{स.} काञ्चनी ^{स.} पीता ^{स.} हरिद्रा ^{स.} वरवर्णिनी ।

समुद्रलोन ^{न.} (सामुद्रं यत्तु ^{न.} लवण) मक्षीवं वसिरं (च तत्) ॥४१॥

निशाह्वा, “ निशा ” काञ्चनी, पीता, हरिद्रा और वरवर्णिनी ये ५ हल्दी के नाम हैं । यहां निशा पद से रात्रिवाची जितने नाम हैं उन सबों का ग्रहण किया जाता है यानी जितने रात्रि के नाम हैं उतनेही हल्दी के भी जानना चाहिये और जो समुद्र में उपजा लवण (नमक) है उसे अक्षीव ‘अक्षिव’ वसिर या “वशिर” भी कहते हैं ये २ सामुद्रकीय लवण के नाम हैं ॥ ४१ ॥

सैन्धव ^{पु.} सैन्धवो (ञ्जी) ^{न.} शीतशिवं ^{न.} माणिमन्थं ^{न.} (च) ^{न.} सिन्धुजे ।

सांभर ^{न.} रौमकं ^{न.} वसुकं ^{न.} पाक्यं ^{न.} विडं ^{न.} (च) कृतके (द्रयम्) ॥ ४२ ॥

सैन्धव, शीतशिव, “ शितशिव ”, सितशिव, “शीतसिव” माणिमन्थ “मणिमन्थ, माणिबन्ध ” सिन्धुजे ये ४ सैन्धव या पहाड़ी नमक के नाम हैं । इनमें “सैन्धव ” पुंनपुंसकलिङ्ग है । रौमक, “ रौम ” वसु, “वसूक” ये २ सांभर लोन के नाम हैं और खारमिट्टी को पकाकर बनाये हुए लवण में पाक्य, विड ये २ होते हैं अथवा पाक्य, विड, कृतक ये ३ खारीनमक के नाम हैं ॥ ४२ ॥

सांचर, ^{न.} सौवर्चलेऽक्षरुचके ^{न.} तिलकं (तत्र मेचके) ।

कालानमक, ^{स.} राव या गुड़ ^{न.} सकेद चीनी ^{स.} या मिश्री ^{स.} मत्स्यगंडी ^{स.} फाणितं ^{स.} (खण्डविकारे) शर्करा ^{स.} सिता ॥४३॥

सौवर्चल, अक्ष, रुचक ये ३ सांचर लोन के नाम हैं और यदि वह सांचर कालेवर्णवाला हो तो ‘ तिलक ’ कहा जाता है । यह १ काले नमक का नाम है । मत्स्यगंडी, फाणित ये २ राव, गुड़ या कच्ची खांडके नाम हैं अथवा “इक्षोरसो यः संपक्वो घनः किञ्चिद्बृहद्वान्वितः । मन्दं यत्स्यन्दते यस्मान्मत्स्यगंडीति निगद्यते । इक्षोर रसो

१ “ श्लेष्माणमाशु विनिहन्ति सदाद्रकेण पित्तं निहन्ति च तदेव हरीतकीभिः । शुण्ठ्या समं हरति वातमशेषमित्यं दोषत्रयश्चयकराय नमो गुडाय ” (इति भावप्रकाशः) ॥ २ “ खण्डं तु सिकतारूपं सुश्वेतं शर्करा सिता । सिता सुमधुरा रुच्या वातपित्तामदाश्नुहत् ” (इति भावप्रकाशः) ॥

यः संपको जायते लोष्टवहृदः । सगुडो गौडदेशे तु मत्स्यगड्येव गुडो मतः ” कुल्लेक पतला, पका व गाढ़ा ईख का रस जोकि मन्द २ भरता है इसलिये वह “ मत्स्यगडी ” कहाता है अथवा जो ईख का रस पकाकर ढेले के समान गाढ़ा किया जावे तो वह ‘ गुड़ ’ कहाजाता है और गौडदेश में “ मत्स्यगडी ” को ही ‘ गुड़ ’ माना है और “ इक्षो रसस्तु यः पकः किंचिद्गाढो बहुदुःखः । स एवेक्षुविकारेणु ख्यातः फाणितसंज्ञया ” (इति भावप्रकाशः) कुल्ल २ गाढ़ा व अधिक भाग पतला ऐसे पके हुए रसको ‘ फाणित ’ यानी ‘ राब ’ कहते हैं और खड़के विकार में शर्करा, सिता ये २ सफेद चीनी या मिश्री के नाम हैं । अथवा खगडविकार, शर्करा और सिता ये ३ अथवा मत्स्यगडी आदि सिता पर्यन्त ५ शर्करा के ही नाम हैं ऐसा कितेक आचार्यों ने माना है ॥ ४३ ॥

स. स. स. स.
लोवा, कूर्चिका क्षीरविकृतिः (स्याद्र) साला (तु)मार्जिता ।
न. न.

शिखरन, कढ़ी (स्या)त्तेमनं तु निष्ठानं (त्रिलिङ्गा वासितावधेः) ॥४४॥

दही या मही से मिजा हुआ जो दूध का विकार है उसे ‘ कूर्चिका ’ व ‘ क्षीर-विकृति ’ कहते हैं अथवा “ उभे क्षीरस्य विकृती किलाटी कूर्चिका तथा ” (इति हैमनाममाला) इस कोष के प्रमाण से ये २ मावा या खोवा या मूरनि या फटे दूध के नाम हैं । अथवा दही के साथ पका हुआ दूध “ दधिकूर्चिका ” और माठा के साथ पका हुआ दूध “ तक्रकूर्चिका ” कहाता है यह किसी आचार्य का मत है । रसाला, मार्जिता ये २ दही में शहद, शर्करा, मिरच व अदरक तथा किशमिश आदि डालकर बनाये हुए चाटने योग्य पदार्थ या शिखरन के नाम हैं और तेमन, निष्ठान ये २ दही आदि के बने व्यञ्जन या कढ़ी के नाम हैं परन्तु वैद्यक ग्रन्थों में कढ़ी को “ कथिता ” कहते हैं । इसके अनन्तर कहे जानेवाले ‘ वासित ’ पर्यन्त शब्द त्रिलिङ्ग होते हैं यानी वाच्यलिङ्ग कहलाते हैं ॥ ४४ ॥

१ “ आदौ माहिषमन्त्रमभ्युरहितं दध्याढकं शर्करां शुभ्रां प्रस्थयुगोन्मितां शुचिपटे किंचिच्च किंचि-
क्षिपेत् । दुग्धेनार्धघटेन मृन्मयनवस्थाप्यां दृढं सावयेदेलाबीजलवक्त्रचन्द्रमरिचैर्योग्यैश्च तथोजयेत् ।
भीमेन प्रियभोजनेन रचिता नाम्ना रक्षाला स्वयं श्रीकृष्णेन पुरा पुनः पुनरियं प्रीत्या समास्वादिता । एषा
येन वसन्तवर्जितदिने संसेव्यते नित्यशस्तस्य स्यादतिवीर्यवृद्धिरनिशं सर्वेन्द्रियाणां बलम् ” (इति
भावप्रकाशः) पहले खटाई व जलरहित गाढ़े भैंस के दही को ४ सेर लेवे इसमें २ सेर सफेद शर्करा
मिलावे फिर साफ गाढ़े कपड़े में डाल हाथों से भले सब दही नीचे के पात्र में इकट्ठा हो जावे इसमें
५ सेर दूध डाले छाने नीचे मिट्टी का पात्र रखे जब सारा दही छन जावे तब इसमें इलायचीके बीज,
झोंग, भीमसेनी कपूर, कालीमिरच इनका चूर्ण व शहद डाले इस रसाला को भीमसेन कि जिनको
भोजन प्यारा है उन्होंने बनाया व श्रीकृष्णजी ने बारबार स्वाद लिया है इसको वसन्त ऋतु छोड़कर जो
प्राणी सेवन करताहै उसके वीर्य बढ़ताहै व सब इन्द्रियोंमें बल आजाता है इसे ‘ श्रीस्वगड ’ भी कहते हैं ॥

शूल पर भुना पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
 मांस, बटलोही शूलाकृतं भटित्रं (च) शूल्यमुख्यं तु पैठरम् ।
 में पका, रसि- पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
 याउरि घी से पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
 पका अन्न प्रणीतमुपसंपन्नं प्रयस्तं (स्यात्) सुसंस्कृतम् ॥ ४५ ॥

शूलाकृत, भटित्र, शूल्य ये ३ लोह की शलाका में छेदकर पकाये हुए मांस आदि के नाम हैं । उल्य, पैठर ये २ बटलोही में पके हुए अन्न आदि के नाम हैं । प्रणीत, उपसंपन्न ये २ रस आदि से संपन्न व्यञ्जन या रसियाउरि के नाम हैं और प्रयस्त, सुसंस्कृत ये २ घी से बनी हुई वस्तु या प्रयन्न से सिद्ध किये हुए घृतपक आदि के नाम हैं ॥ ४५ ॥

पनिहां व्यञ्जन पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
 बीना अन्न (स्या)त्पिच्छलं (तु) विजिलं संमृष्टं शोधितं (समे) ।
 चिकना पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
 धौका या बधारा चिक्कणं मसृणं स्निग्धं (तुल्ये) भावितवासिते ॥ ४६ ॥

पिच्छल, विजिल “ विजयिन, विज्जन, विजिन ” ये २ माड़युक्त व भात समेत जलयुक्त व्यञ्जन या साढ़ी समेत दही या मही के नाम हैं । संमृष्ट, शोधित ये २ बीने बनाये व शोधन किये हुए अन्न आदि के नाम हैं । ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं । चिक्कण, मसृण, स्निग्ध ये ३ चिकने के नाम हैं और भावित, वासित ये २ हींग व जीरा आदि से बधारे, छौंके या धुंगार दिये हुए व्यञ्जन आदि के नाम हैं और ये दोनों समानार्थक कहे जाते हैं ॥ ४६ ॥

धुरधुरा न. पु. पु. पु.वहु. पु.न. बहु.
 धान का लावा आपकं पौलिरभ्यूषो लाजाः (पुंभूम्नि) चार्क्षताः ।
 थिउरा पु. पु. स.बहु.
 बहुरी पृथुकः (स्या)च्चिपिटैकोधाना (भृष्टयवे स्त्रियः) ॥ ४७ ॥

आपक, पौलि, अभ्यूप “ अभ्युष-अभ्योष ” ये ३ भूँजे हुए अधपके यव, गेहूं आदि, ऊँची या मुरमुरा के नाम हैं । लाज यह १ भूँजे धान (लावा, लाई या खीलों) का नाम है । यह पुंलिङ्ग होकर नित्य बहुवचनान्त है ऐसेही ‘ अक्षत ’ यह १ अक्षतों या चाबलों का नाम है यह भी नित्य बहुवचनान्त होकर पुंलिङ्ग है अथवा “ केचित्त्वलयडतण्डुला अक्षता इति वदन्ति ” तेन “ अक्षताः परिपान्तु ”

१ मुकुटस्तु-अक्षतमिति पठित्वा ‘क्षण्ड हिंसायाम्’ इत्यतः कर्मणि क्तः । कतं स्वयिङतम्, न क्तमक्षत-मिति विवृण्वते ‘ लाजाः ’ नित्यपुंलिङ्गाः नित्यबहुवचनान्ताभेति व्याख्यातवान् ॥

२ स्वार्थिकाः प्रकृतितोऽपि लिङ्गवचनान्यतिवर्तन्तेऽपीति पुरस्चम् ॥

इति वचनं संगच्छते ” कितेक आचार्य अखण्डित चावलों को ‘अक्षत’ कहते हैं । उसीसे “ अक्षताः परिपान्तु ” यह वचन संगत होता है और मुकुट के मत में ‘अक्षत’ यह १ गीले चावलों का नाम है । पृथुक, चिपिटक ये २ गीले भूँजे हुए चावलों या चिउरा के नाम हैं और भूँजे हुए यवों में ‘धाना’ यह खीलिङ्ग है यह १ भूँजे हुए यवों की बहुरी का नाम है । यह नित्य खीलिङ्ग होकर बहुवचनान्त कहा जाता है अथवा धाना, भृष्टयव ये २ यवों की बहुरी के नाम हैं ॥ ४७ ॥

पु. पु. पु. पु. बहु.
पुवा या वरा पूपोऽपूपः पिष्टकः (स्यात्) करम्भो दधिसक्तवः ।

दहीसाना स. न. न. पु.न. पु.न.
सत्तू, भात भिस्सा (स्त्री) भक्तमन्धोन्नमोदनो (ऽस्त्री) सदीदिविः ४८

पूप, अपूप, पिष्टक ये ३ पीसे चावलों या पिट्टी आदिकों से बने हुए खाद्यपदार्थ, पुवा या वटक (वरा) के नाम हैं । दही से साने हुए सत्तू ‘करम्भ’ या ‘करम्ब’ कहाते हैं अथवा करम्भ, ‘करम्ब’ दधिसक्त ये २ दहीमिले सत्तुवों के नाम हैं और भिस्सा “ भिष्मा ” भक्त, अन्ध, अन्ध (स) अन्न, ओदन और दीदिवि ये ६ भात या अन्न के नाम हैं । इनमें ‘भिस्सा’ खीलिङ्ग है, ओदन और “ दीदिवि ” ये दोनों पुंनपुंसक हैं ॥ ४८ ॥

स. स. पु.न.
जलाभात भिस्साटा दग्धिका (सर्वरसाग्रे) मण्ड (मस्त्रियाम्) ।

पसावन या मैल पु. पु. पु.
भात का माड़ मासराचामनिस्त्रावा (मण्डे भक्तसमुद्भवे) ॥ ४९ ॥

भिस्साटा, “भिस्सिटा, भिष्मिटा, भिष्मिष्ठा, भिष्मिका” दग्धिका ये २ जले हुए भात या अन्न के नाम हैं । समस्त रसों के अभिमिश्रव में ‘मण्ड’ पुंनपुंसक होता है । यानी सारे रसों या द्रवद्रव्यों का जो पहल द्रव है उसे ‘मण्ड’ कहते हैं । यह १ पसावन या माड़ का नाम है और भात से उपजे हुए माड़ में मासर, आचाम, निस्त्राव, “ निश्त्राव, विस्त्राव, विश्राव ” ये होते हैं ये ३ केवल भात के ही माड़ के नाम हैं ॥ ४९ ॥

स. स. स. स. स.
लप्सी गौ यवागुरुष्णिका श्राणा त्रिलेपी तरला (च सा) ।

का दूध, पु.स.न. स.न. पु.न.
आदि, गोबर गव्यं (त्रिषु गवां सर्व) गोविद् गोमय (मस्त्रियाम्) ॥ ५० ॥

१ बभस्तीवि विग्रहे तु बाहुलकात्सः “ बहुलं छन्दसि ” इतीत्वम् “ ब्राह्मणभिस्सा ” इति सूत्रे भाष्य-प्रयोगाज्ज्ञोऽपि ॥

यवागू, उष्णिक्का, आण्णा, विलेपी और तरला ये ५ गुलाभीभात या लप्सी † के नाम हैं । “ म्रक्षणाभ्यञ्जने तैलं कृसरस्तु तिलौदनः ” इस क्षेपक के प्रमाण से म्रक्षणा, अभ्यञ्जन, तैल ये ३ तेल के नाम हैं और कृसर, तिलौदन ये २ तिल ऊमीसे बने भात या खिचड़ी के नाम हैं यानी “ तण्डुला दालिसंमिश्रा खवणा-द्रकहिङ्गभिः । संयुक्ता सलिले सिद्धा कृसरा कथिता बुधैः ” (इति भावप्रकाशः) दाल, चावलों को मिलाय व नमक, अदरक, हींग आदि डालकर जलमें सिद्ध किये हुए खाद्यपदार्थ को ‘ कृसरा ’ खिचड़ी कहते हैं और गौश्रों में होनेवाले दूध, दही, मही, घी आदि सारे पदार्थों को ‘ गव्य ’ कहते हैं । यह १ गोबर छोड़कर गौश्रों से उपजी सारी वस्तुओं का नाम है और गोविट्, गोमय ये २ गाय के गोबर के नाम हैं । इनमें पहला स्त्री, नपुंसकलिङ्ग है और दूसरा पुंनपुंसक है ॥ ५० ॥

पु.न.

न.

न.

न.

करसी दूध

(तत्तु शुष्कं) करीषो (ऽस्त्री) दुग्धं क्षीरं पयः (समम्) ।

घी, दही आदि

न.

न.

पतला दही

पयस्य (माज्यदध्यादि) द्रप्सं (दधि घनेतरत्) ॥ ५१ ॥

यदि वह गोबर सूखा हो तो ‘ करीष ’ कहाता है । यह १ सूखे गोबर, करसी, विनुवां कंडा, उपला या उपली का नाम है । यह पुंनपुंसकलिङ्ग है । दुग्ध, क्षीर, पयः (स्) ये ३ दूध के नाम हैं । ये तीनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं । दूध का विकार जो घी, दही आदि है । वह ‘ पयस्य ’ कहा जाता है । आदि पद से मठा या मक्खन का ग्रहण किया जाता है । यह १ घी, दही, मही आदि का नाम है और जो पतला दही है उसे ‘ द्रप्स, ’ “ त्रप्स, द्रप्स्य, त्रप्स्य ” या “ सर ” कहते हैं यह १ पतले दही या दगडे दही का नाम है ॥ ५१ ॥

न.

न.

न.

न.

न.

घी

घृतमाज्यं हविः सर्पिर्नवनीतं (नवोद्धृतम्) ।

नैनू

न.

ताजा नैनू

(तत्तु) हैयंगवीनं (यद् ह्योगोदोहोद्भवं घृतम्) ॥ ५२ ॥

घृत, आज्य, हविः (स्) सर्पिः (स्) ये ४ घी के नाम हैं । नया निकाला हुआ घी ‘ नवनीत ’ कहाता है अथवा नवनीत, नवोद्धृत ये २ नैनू या मक्खन आदि के नाम हैं और जो पूर्वदिन के जमाये हुए गोदुग्ध के दही से उपजा घी है उसको ‘ हैयङ्गवीन ’ कहते हैं यह १ ताजे नैनू का नाम है अथवा एकरात्रिके जमाये हुए दही से उपजे घी का नाम है ॥ ५२ ॥

† “समितां सर्पिषा शृष्टां शर्करां पयसि क्षिपेत् । तस्मिन् घनीकृते न्यस्येक्षवज्रं मरिचादिकम् । सिद्धैषा क्षेपिका ख्याता ” (इति भावप्रकाशः) ॥

मठा ^{न.} दण्डाहतं ^{न.} कालशेयमरिष्ट ^{न.} (मपि) ^{पु.} गोरसः ।

मठा के भेद ^{न.} तक्रं ^{न.} ह्युदश्विन्मथितं ^{न.} (पादाम्ब्वर्धाम्बुनिर्जलम्) ॥५३॥

दण्डाहत, कालशेय “ कालसेय ” अरिष्ट, गोरस ये ४ मथानी से मथे हुए गोरस या मठा के नाम हैं । अब इसके भेदों को कहते हैं कि जिस गोरस में चौथि-याई जल डाला जाता है उसे ‘ तक्र ’ कहते हैं । यह १ चतुर्थांश जलयुक्त मठा का नाम है । जिसमें आधा पानी गेरा जाता है उसे ‘ उदश्विन् ’ कहते हैं यह १ आधे जलवाले मठा का नाम है और जो जलरहित मठा है वह ‘ मथित ’ कहलाता है यह १ निर्जल मठा का नाम है ॥ ५३ ॥

दही का पानी ^{न.} पेयुस्त ^{पु.} (मण्डं दधिभवं) मस्तु ^{न.} पीयूषो ^{पु.} (ऽभिनवं पयः) ।

^{स.} भूख ^{स.} और ^{स.} अशनाया ^{पु.} बुभुक्षाक्षुद् ^{पु.} ग्रास(स्तु)कवलः(पुमान्) ॥५४॥

दही से उपजा हुआ पहला माड़ ‘ मस्तु ’ कहलाता है । यह १ वस्त्र से निकले हुए दही के जल का या दही के ऊपरले भाग या मैहर या तोर का नाम है । नया दूध ‘ पीयूष ’ या ‘ पेयूष ’ कहा जाता है यह १ सातदिन की नई व्याई गौ के दूध का नाम है । अशनाया, बुभुक्षा, क्षुत् (भू) “ क्षुधा ” ये ३ भूख के नाम हैं और ग्रास, कवल ये २ कौर के नाम हैं ये दोनों पुंलिङ्ग हैं ॥ ५४ ॥

^{स.} साथ पीना ^{न.} सपीतिः(स्त्री) ^{स.} तुल्यपानं ^{न.} सग्धिः(स्त्री) ^{स.} सहभोजनम् ।

^{स.} साथ खाना ^{स.} उदन्या(तु) ^{स.} पिपासातृट् ^{पु.} तर्षो ^{स.} जग्धि(स्तु) ^{न.} भोजनम् ॥५५॥

^{न.} भोजन ^{पु.} अघाना ^{पु.} जेमनं ^{पु.} लेह ^{पु.} आहारो ^{पु.} निघसो ^{पु.} न्याद (इत्यपि) ।

^{न.} खानिस्तवचा ^{न.} जंटा ^{स.} सौहित्यं ^{स.} तर्पणं ^{न.} तृप्तिः ^{स.} फेला ^{न.} भुक्तसमुज्झितम् ॥ ५६ ॥

सपीति, तुल्यपान ये २ साथ पीने के नाम हैं । इनमें ‘ सपीति ’ स्त्रीलिङ्ग है । सग्धि, सहभोजन ये २ साथ भोजन के नाम हैं । इनमें ‘ सग्धि ’ स्त्रीलिङ्ग है । उदन्या, पिपासा, तृट् “ तृषा ” तर्ष, “ तृष्णा ” ये ४ प्यास के नाम हैं । जग्धि, भोजन, जेमन ‘ जमन ’ लेह “ लेप ” आहार, निघस, “ विघस ” न्याद

ये ७ भोजन (खाने) के नाम हैं । सौहित्य, तर्पण, तृप्ति ये ३ अघाने या अफरे या आसूदा के नाम हैं और जो पहले खाया व पीछे से शेष को त्याग दिया है उसे ' फेला ' कहते हैं अथवा ' फेला ' " फेलि, फेलक " भुक्तसमुष्मित ये २ खाने से बचे हुए के नाम हैं ॥ ५५ । ५६ ॥

न. न. न. न. न. न.
चाह कामं प्रकामं पर्याप्तं निकामेष्टं यथेप्सितम् ।

पु. पु. पु. पु. पु. पु.
अहीर गोपे गोपालगोसंख्यगोधुगाभीरवल्लवाः ॥ ५७ ॥

काम, प्रकाम, पर्याप्त, निकाम, इष्ट और यथेप्सित ये ६ चाह या क्रियाविशेषण के नाम हैं । जैसेकि, " यथाकामं रामो भुङ्क्ते स्म " रामजी ने यथेष्ट भोजन किया है । गोप, गोपाल, गोसंख्य, गोधुक् (हू) " गोदुह " आभीर, "अभीर" और वल्लव ये ६ गोपाल या अहीर के नाम हैं ॥ ५७ ॥

न. पु.
पशु या चौ- (गोमहिष्यादिकं) पादबन्धनं (द्वौ) गवीश्वरे ।
पाये गोपाल, पु. पु. न. न. पु.
मैयांका गरोह गोमान् गोमी गोकुलं(तु)गोधनं(स्या)द्ववां व्रजे ॥५८॥

गौ, भैंस आदिकों को पादबन्धन या " यादबन्धन " कहते हैं यह १ गया, भैंस, गदही, बकरी या भेड़ आदि चौपायों का नाम है । गौश्रों के स्वामी में गोमान् और गोमी ये दो होते हैं यानी गवीश्वर, गोमान् और गोमी (न्) ये ३ गोस्वामी के नाम हैं और गौश्रों के समुदाय में गोकुल, गोधन ये दोनों होते हैं यानी गोकुल, गोधन और गवां व्रज ये ३ गौश्रों के गरोह के नाम हैं ॥ ५८ ॥

पु.स.न.
जहां पहले (त्रिष्व)शितंगवीनं (तद्वावो यत्राशिताःपुरा) ।

गौश्रों ने चरा पु. पु. पु. पु. पु. पु.
या खाया बैल उक्षा भद्रो बलीवर्द ऋषभो वृषभो वृषः ॥ ५९ ॥

बैलोंका गरोह, पु. पु. पु. न.
गैया, बबड़ों अनड्वान्सौरभेयो गौ(रुक्षणांसंहति) रौक्षकम् ।

और धेनुओंका स. स. न. न.
ऊण्ड गव्या गोत्रा (गवां वत्सधेन्वो) वर्त्सकधैनुके ॥ ६० ॥

जहां पहले गौश्रों को खिलाया या चराया है उस स्थल को ' आशितंगवीन ' कहते हैं । यह १ पुराने खरिफ या गोठ का नाम है । यह त्रिलिङ्ग है । उक्षा (न्) भद्र, बलीवर्द, ऋषभ, वृषभ, वृष, अनड्वान्, सौरभेय, स्त्री, 'सौरभेयी' और गो ये ६

बैल के नाम हैं । बैलों के समुदाय को ' औक्षक ' कहते हैं । यह १ बैलों के समूह का नाम है । गौओं के समूह को गव्या, और गोत्रा कहते हैं ये २ गैयों के गरोह के नाम हैं । बछड़ों का समूह ' वात्सक ' कहलाता है यह १ बछड़ों के सुगड का नाम है और धेनुओं का समूह ' धेनुक ' कहा जाता है यह १ धेनु-समुदाय का नाम है ॥ ५६ । ६० ॥

बड़ा बैल पु. (उक्षामहान्) महोक्षः (स्याद्) वृद्धोक्ष (स्तु) जरद्रवः ।
 बूढ़ा बैल पु.
 कलोर पु.
 नया बछड़ा पु. (उत्पन्न उक्षा) जातोक्षः सद्योजात (स्तु) तर्णकः ॥ ६१ ॥

यदि बड़ा भारी बैल हो तो 'महोक्ष' कहलाता है । यह १ भारी बैल का नाम है । वृद्धोक्ष, जरद्रव, स्त्री ' जरद्रवी ' ये २ बूढ़े बैल के नाम हैं । उपजा वृषभभाव को प्राप्त हुआ बैल ' जातोक्ष ' कहा जाता है । यह १ कलोर का नाम है और जो तत्काल उपजा बछड़ा है उसे ' तर्णक ' कहते हैं यह १ नये बछड़े का नाम है ॥ ६१ ॥

बछड़ामात्र पु. शकृत्करि (स्तु) वत्सः (स्याद्) दम्यवत्सतरौ (समौ) ।
 नाटा पु.
 बधिया पु. आर्षभ्यः (षण्डतायोग्यः) षण्डोगोपतिरिट्चरः ॥ ६२ ॥
 सांड पु.

शकृत्करि, वत्स ये २ बछड़ामात्र के नाम हैं । दम्य, वत्सतर ये २ जवान बछड़े या नाटा के नाम हैं । ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं । जो बधिया करने के योग्य होता है वह ' आर्षभ्य ' कहा जाता है । यह १ बधिया करने लायक का नाम है और षण्ड, " षण्ड " गोपति, इट्चर या " इत्वर " ये ३ सांड के नाम हैं ॥ ६२ ॥

कान्धा पु. (स्कन्धप्रदेशस्तु) वहः सास्ना (तु) गलकम्बलः ।
 गलकंबरी स.
 नाथे बैल पु.
 काढ़े बैल पु. (स्यान्न) स्तित (स्तु) नस्योतः प्रष्ठवाड्युगपार्श्वगः ॥ ६३ ॥

इस बैल के कांधों का जो प्रदेश है उसे " वह " कहते हैं यह १ बैलों के कांध का नाम है । सास्ना, गलकम्बल ये २ गलकंबरी या गौओं के गले में लटकते हुए चाम के नाम हैं । नस्तित, ' नस्योत ' या " नस्तोत " ये २ नाथ से नथे हुए बैल के नाम हैं और प्रष्ठवाट् या " पष्ठवाट् " युगपार्श्वग या " युगपार्श्वक " ये २ घसीटा में नथे हुए या सिखलाने के समय कण्ठ में लगाये हुये काठ के बहने वाले बैल के नाम हैं ॥ ६३ ॥

जोतनियां

पु.

पु.

पु.

लदनियां

(युगादीनां तु वोढारो) युग्यप्रासङ्ग्यशाकटाः ।

गाड़ी का बैल

पु.

पु.

हलवाही

(खनति तेन तद्वोढास्येदं) हालिकसैरिकौ ॥ ६४ ॥

जुवां आदि के लेजानेवाले युग्य, प्रासङ्ग्य और शाकट कहलाते हैं यानी जुवां का लेजानेवाला “ युग्य ” कहाता है यह १ जोतनियां बैल का नाम है । बछड़ों को दमन के समय जो काठ डालते हैं वह ‘ प्रासंग ’ है उसका लेजानेवाला ‘ प्रासंग्य ’ कहाजाता है यह १ लदनियां का नाम है और जो शकट (गाड़ा) का लेजानेवाला है उसे ‘ शाकट ’ कहते हैं यह १ गाड़ी के बैल का नाम है । “ उससे खोदता, उसका लेजानेवाला, उसका यह ” इन अर्थों में ‘हालिक’ और ‘सैरिक’ कहे जाते हैं । जैसेकि, हल से खनता, हलका लेजानेवाला, हलका यह ‘ हालिक ’ कहाता है और सीरसे खनता, सीरका लेजानेवाला, सीरका यह ‘ सैरिक ’ कहलाता है ये २ हलवाह या जोतू बैल के नाम हैं ॥ ६४ ॥

पु.

पु.

पु.

पु.

पु.

धुरिहा बैल, धूर्वहे धुर्यधौरेयधुरीणाः सधुरंधराः ।

पु.

पु.

पु.

एकधुरावाही (उभावे) कधुरीणैकधुरावेकधुरावहे ॥ ६५ ॥

धूर्वह, या “ धूर्वर ” धुर्य, धौरेय, धुरीण और धुरंधर ये ५ धुरन्धर, धुरिहा या बलवान् बैल के नाम हैं और एकधुरीण, एकधुर, एकधुरावह ये ३ एकही धुरा के धारनेहारे या लेजानेवाले के नाम हैं ॥ ६५ ॥

पु.

पु.

सर्वभारवाही

(सतु)सर्वधुरीणो (यो भवेत्)सर्वधुरावहः ।

स.

स.

स.

स.

स.

स.

गैया

माहेयी सौरभेयी गौरुत्ता माता (च) शृङ्गिणी ॥ ६६ ॥

स.

स.

स.

स.

उत्तम गैया

अर्जुन चन्द्रारोहिणी (स्यात्) (स्यादुत्तमागोषु) नैचिकी ।

जो बैल सारे भार का ढोनेवाला होता है वह ‘ सर्वधुरीण ’ कहाजाता है । यह १ सब भार के लेचलनेवाले का नाम है । माहेयी, सौरभेयी, गो, उत्ता, माता (तृ) शृङ्गिणी, अर्जुनी, अन्नया और रोहिणी ये ६ गौओं के नाम हैं । इनमें ओदन्त गोशब्द है एकत्व में ‘ गौः ’ द्वित्व में ‘ गावौ ’ और बहुत्व में ‘ गावः ’ ये होते हैं और जो गौओं में अच्छे गुणोंवाली या उत्तम जातिवाली है ; उसको

नैचिकी, नीचिकी, नीचिका या निचिकी कहते हैं । यह १ सीधी, सादी भली गौ का नाम है ॥ ६६ । ३ ॥

	स.	स.		
चितकवरी				
आदि				
दो वर्ष की	स.	स.	स.	स.
एक वर्ष की				
चारवर्ष की	स.	स.	स.	स.
तीनवर्ष की				

(वर्णादिभेदात्संज्ञाः स्युः) शवलीधवला (दयः) ॥ ६७ ॥

द्विहायनी द्विवर्षा (गौ) रेकाब्दा (त्वे) कहायनी ।

चतुरब्दा चतुर्हायणी (वं) त्र्यब्दा त्रिहायणी ॥ ६८ ॥

वर्ण, प्रमाण और अवयवों के भेद से शवली, धवला आदि संज्ञायें होती हैं शवली या “शवला” यह १ चितकवरी गौ का नाम है । धवला, या “धवली” यह १ उजली (सफेद) गौ का नाम है । आदि पद से “कृष्णा” यह १ काली या श्यामा गौ का नाम है । ‘कपिला’ यह १ भूरी गौ का नाम है । “पाटला” यह १ लालवर्णवाली गौ का नाम है इत्यादिकों का ग्रहण किया जाता है । प्रमाण भेद से ‘ह्रस्वा’ छोटी, ‘दीर्घा’ बड़ी और ‘वामनी’ बौनी आदि ली जाती हैं । अवयवभेद से पिङ्गाक्षी, लम्बकर्णी और वक्रशृङ्गी आदिकों का ग्रहण होता है यह एक २ शवला आदिकों का नाम है । अब वयोभेद से संज्ञाभेद कहते हैं कि, जो गौ दो वर्ष की उमरवाली हो तो वह ‘द्विहायनी’ और ‘द्विवर्षा’ कहलाती है । ये २ दो वर्ष की गौ के नाम हैं । जो एक साल की गौ हो तो उसे ‘एकाब्दा’ और ‘एकहायनी’ कहते हैं ये २ एकवर्ष की गौ के नाम हैं । जो चार साल की गौ हो तो वह ‘चतुरब्दा’ और ‘चतुर्हायणी’ कहाती है । ये २ चार वर्षवाली के नाम हैं और जो तीन साल की गौ हो तो उसे ‘त्र्यब्दा’ और ‘त्रिहायणी’ कहते हैं ये २ तीन वर्षवाली के नाम हैं ॥ ६७ । ६८ ॥

बहिः	स.	स.	स.	स.	स.
गिरेगर्भ					
वाली गर्भिणी					
विना समय					
बैल के पास		स.	स.		
जानेवाली					

वशा बन्ध्यावतोका (तु) स्रवद्गर्भा (थ) सन्धिनी ।

(आक्रान्ता वृषभेणा) (थ) वेहद्गर्भोपघातिनी ॥ ६९ ॥

वशा, बन्ध्या ये २ बहिः या बांझ गौ के नाम हैं । अवतोका “वतोका” स्रवद्गर्भा ये २ गिरे हुए गर्भवाली के नाम हैं । जो बैल से चढ़ी गई हो यानी बर्दी गई हो उसे ‘सन्धिनी’ कहते हैं यह १ थिरानी या बर्दती हुई का नाम है और वेहत्, गर्भोपघातिनी ये २ बैल के संयोग से गर्भ गिरानेवाली के नाम हैं ॥ ६९ ॥

गर्भधारनेयोग्य, स. स.

स.

स.

गाभिनकलोर काल्योपसर्या (प्रजने) प्रष्टौही बालगर्भिणी ।

या ओसर सीधी

स.

स.

स.

स.

बहुतबार व्यानी (स्याद) चण्डी (तु) सुकरा बहुसूतिः परेष्टुका ॥ ७० ॥

गर्भ ग्रहण करने में जिसका समय प्राप्त हुआ है वह ' उपसर्या ' कहलाती है । यह १ गर्भ धारने योग्य गौका नाम है । प्रष्टौही या "पष्टौही" बालगर्भिणी ये २ गाभिन कलोर या ओसर या पहलेपहिल गाभिन के नाम हैं । अचण्डी, सुकरा ये २ सुशीला या सीधी गौके नाम हैं और बहुसूति, परेष्टुका ये २ बहुत बार व्यानी या बहुत से बच्चे देनेवाली के नाम हैं ॥ ७० ॥

स.

स.

स.

स.

बकेनि, नईव्यानी, चिरसूता वष्कयिणी धेनुः (स्या) नवसूतिका ।

दुहनेमें सीधी,

स.

स.

स.

स.

मोटे थनवाली सुव्रता सुखसन्दोह्या पीनोद्गी पीवरस्तनी ॥ ७१ ॥

चिरसूता, वष्कयिणी, " वष्कयणी " " वस्कयनी " ये २ जिसका बछड़ा जवान या एक सालका है उसके या बकेना के नाम हैं । धेनु, नवसूतिका ये २ नई व्यानी हुई के नाम हैं । सुव्रता, सुखसन्दोह्या " सुखसन्दुह्या " ये २ दुहने में नहीं दिक्र करनेवाली या चुपचाप टिकनेवाली के नाम हैं और पीनोद्गी, पीवरस्तनी ये २ मोटे थनवाली या बड़े अयनवाली के नाम हैं ॥ ७१ ॥

स.

स.

स.

द्रोण भर दूध द्रोणक्षीरा द्रोणदुधा धेनुष्या (बन्धके स्थिता) ।

द देनेवाली, गिरबी

स.

धरीहुई, बरसायङ्ग समांसमीना (सा यैव प्रतिवर्ष प्रसूयते) ॥ ७२ ॥

द्रोणक्षीरा, द्रोणदुधा ये २ द्रोणभर दूध देनेवाली के नाम हैं । जो बन्धक में टिकी हो यानी गिरबी धरी गई हो तो वह ' धेनुष्या ' कहलाती है यह १ ऋणदाता के दुहने के लिये ऋण देने पर्यन्त जो गिरों रक्खी गई है उसका नाम है और जो साल २ भँर में बच्चा देती है उसे ' समांसमीना ' कहते हैं यह १ बरसायन या बरसोड़ी का नाम है ॥ ७२ ॥

अयन

न.

न.

पु.

खंटा

ऊध (स्तु क्लीब) मापीनं (समौ) शिवककीलकौ ।

नोहन

स.न.

न.

स.

स.

गेरांव

(न पुंसि) दाम संदानं पशुरज्जु (स्तु) दामनी ॥ ७३ ॥

ऊधः (स्) उधः (स्) या “ओघः” आपीन ये २ गायके अयन या धन के नाम हैं । ये दोनों नपुंसक हैं । शिवक, कीलक ये २ गैयों के बांधने के लिये गड़े हुए खंटा के नाम हैं । ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहते हैं । दाम (न्) दामा (न्) दामा (मा) सन्दान ये २ दुहने के समय पायँ सांदने की रस्सी या ‘नोइन’ के नाम हैं । इनमें दाम (न्) पुलिङ्ग नहीं है वरन स्त्री व नपुंसकलिङ्ग है और पशुरज्जु, दामनी या ‘सामनी’ और “बन्धनी” भी ये २ गेगांव, ज्वड़ायाल या न्वेड़ा के नाम हैं अथवा बहुतसी गांठोंवाली जिस रस्सी में बहुतसे चौपाये बांधे जाते हैं उसके नाम हैं ॥ ७३ ॥

पु. पु. पु. पु.
मथानी या रई वैशाखमन्थमन्थानमन्थानोमन्थदण्डके ।

खंभा पु. पु. स. स.
महेड़ा कुठरो दण्डविष्कम्भे मन्थनी गर्गरी (समे) ॥ ७४ ॥

वैशाख, मन्थ, मन्थान, मन्थाः (थिन्) मन्थदण्डक ये ५ मथानी, रई, खैलरि या छोड़ी के नाम हैं । इनमें चौथा इन्नन्त होकर पुलिङ्ग है । कुठर या “कुटर” दण्डविष्कम्भ ये २ जिस खंभे में मथने का दण्ड बांधते हैं उसके नाम हैं और मन्थनी, गर्गरी या “कलशी” भी ये २ मन्थनभात्र, महेड़ा या महेड़िया के नाम हैं । ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहते हैं ॥ ७४ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
ऊंट, बच्चे उष्ट्रे क्रमेलकमयमहाङ्गाः करभः (शिशुः) ।

काठ में बँधे पु.
छोटे बच्चे (करभाःस्युः) शृङ्खलका (दारवैः पादबन्धनैः) ॥ ७५ ॥

उष्ट्र, क्रमेलक, मय और महाङ्ग ये ४ ऊंट के नाम हैं और जो ऊंट का बच्चा है वह ‘करभ’ कहलाता है यह १ ऊंट के बच्चे का नाम है और जो काष्ठमय पादबन्धनों से बँधे हुए बच्चे हैं उनको ‘शृङ्खलक’ कहते हैं यह १ काठ की वेड़ी में बँधे हुए छोटे बच्चों का नाम है ॥ ७५ ॥

स. स. पु. पु. पु. पु.
बकरी अजा छागी स्तभच्छागवस्तछगलका अजे ।

प. पु. पु. पु. पु. पु.
भेड़ा मेदोरभोरणोर्णार्थुमेषवृणाय एडके ॥ ७६ ॥

अजा, छागी ये २ बकरी, छोरी या छगड़ी के नाम हैं । स्तभ या “तुभ”

१ “ऊर्णायाम् ५।२।१२३” सिन्वात्पदत्वम् अत्र छन्दसीति केचिदनुवर्तयन्ति । युक्तं चैतद् अन्यथा हि “अहंसुभोर्धुसि” इत्यत्रैवोर्णग्रहणं कुर्यादिति ॥

या “ शुभ ” छग, “ छग ” वस्त, “ वस्त या वस्तक ” छगजक “ छगल—
छगल ” और अज ये ५ बकरा या छगड़ा के नाम हैं और मेह, उरभ्र, उरण,
ऊर्णायुः (स्) मेष, वृष्ण और एड़क स्त्री “ एड़का ” ये ७ मेढ़ा या भेंड़ा के
नाम हैं ये सबही पुंलिङ्ग हैं ॥ ७६ ॥

ऊंट, भेंड़, (उष्ट्रोरभ्राजवृन्दे स्या) दौष्ट्रकौरभ्रकाजकम् ।

बकरों का पु. पु. पु. पु. पु.
समूह गदहा चक्रीवन्त(स्तु)बालेयारासभागर्दभाः खराः ॥ ७७ ॥

ऊंट, भेंड़ और बकरों के समूह (गरोह) में औष्ट्रक, औरभ्रक और आजक
ये क्रम से होते हैं । यानी ऊंटों के समुदाय को “ औष्ट्रक ” कहते हैं यह १ ऊंट समूह
का नाम है । उरभ्रों (मेढ़ों) के समूह को “ औरभ्रक ” कहते हैं यह १ भेंड़ों
के समुदाय का नाम है और अजों (बकरों) का समूह “ आजक ” कहाता है
यह १ बकरों के वृन्द (झुण्ड) का नाम है और चक्रीवान्, बालेय, रासभ,
गर्दभ और खर स्त्री “ खरी ” ये ५ गदहों के नाम हैं । ये नित्य बहुवचनान्त
नहीं हैं वरन बहुत्व से बहुवचनान्त कहाते हैं ॥ ७७ ॥

बनियां या पु. पु. पु. पु. पु.
वैदेहकः सार्थवाहो नैगमो वाणिजो वणिक् ।

पु. पु.
साहूकार पणयाजीवो(ह्य)पणिकः क्रयविक्रयिक(श्च सः) ॥ ७८ ॥

वैदेहक या “ विदेह ” सार्थवाह, नैगम या “ निगम ” वाणिज, या “ वाणिजिक ”
वणिक् (ज्) पणयाजीव, आपणिक और क्रयविक्रयिक ये ८ खरीदने व बेचने
से आजीविका करते हुए साहूकार या व्यापार करनेवाले बनियां के नाम हैं ॥ ७८ ॥

बेचनेवाले पु. पु. पु. पु.
खरीदनेवाले विक्रेता (स्या) द्विक्रयिकः क्रायकः क्रयिकः (समौ) ।

बनियांपन न. स. न. पु. पु.
मोल वाणिज्यं(तु)वणिज्या(स्यान्)मूल्यं वस्नोऽप्यवक्रयः ७९

विक्रेता, विक्रयिक ये २ बेचनेवाले या वस्त्र, पात्र आदि देकर मूल्य लेनेवाले के
नाम हैं । क्रायक, क्रयिक ये २ मोल लेनेवाले या मूल्य देकर वस्त्र आदि के खरी-
दनेवाले के नाम हैं । ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं । वाणिज्य,
“ वणिज्य ” वणिज्या ये २ बनियों के कर्म के नाम हैं इनमें “ वणिज्या ” यह

स्वभाव से खीलिङ्ग है यह माधव का मत है और मूल्य, दस्त और अवकय ये ३ विक्रे के वस्तुओं के मोल के नाम हैं ॥ ७६ ॥

पूँजी या मूर ^{स. पु. न. पु. न. न.} नीवी परिपणो मूलधनं लाभोधिकं फलम् ।

लाभ या नफा ^{न. पु. पु. पु.} अदला बदला परिदानं परीवर्तो नैमेयनिमया (वपि) ॥ ८० ॥

नीवी या “नीवि” परिपण, मूलधन ये ३ खरीदने या बेचने में मूलधन (मूर) या पूँजी के नाम हैं । लाभ, अधिक, फल ये ३ मूलधन से पैदा हुए लाभ या नफा के नाम हैं और परिदान या “प्रतिदान” परीवर्त, नैमेय या “वेमेय” निमय या “विनिमय” ये ४ एराफेरी या अदला बदला के नाम हैं । इनमें “परिदत्तं परिदानम्” यह नपुंसक है ॥ ८० ॥

धरोहरि धरना ^{पु. पु. न. न.} (पुमानु) पनिधिर्न्यासः प्रतिदानं (तदर्पणम्) ।

धरोहरि देना ^{पु.स.न. पु.स.न.} बेचनेकी वस्तु ^{पु.स.न. पु.स.न.} खरीदने की वस्तु (क्रये प्रसारितं) क्रयं क्रयं (क्रेतव्यमात्रके) ॥ ८१ ॥

उपनिधि, न्यास ये २ धरोहरि या थाती के नाम हैं । इनमें ‘उपनिधि’ पुलिङ्ग है और घञन्त होने से ‘न्यास’ भी पुलिङ्ग है । उस धरोहरि का जो फेर देना है उसे ‘प्रतिदान’ कहते हैं यह १ जिसकी थाती रखी गई हो उसे लौटा देने का नाम है अथवा प्रतिदान, तदर्पण ये २ मालिक को धरोहरि सौंप देने के नाम हैं । खरीदने व बेचने के स्थल में यानी बाज़ार में ग्राहकगण खरीदेंगे इस बुद्धि से जो फैलाई गई वस्तु (चीज़) है उसे ‘क्रय’ कहते हैं यह १ खरीदनेवाले लेंगे इस बुद्धिसे बाज़ार में फैलाई हुई वस्तु का नाम है और क्रेतव्यमात्र अर्थ में जो खरीदने के योग्य वस्तु है वह “क्रय” कहाती है यह १ हाट में फैलाने योग्य वस्तु का नाम है ॥ ८१ ॥

बिकाऊ वस्तु ^{पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.} विक्रेयं पणितव्यं (च) पण्यं (क्रय्यादयस्त्रिषु) ।

नयाना ^{न. पु. स.} (क्लीबे) सत्यापनं सत्यंकारः सत्याकृतिः (स्त्रियाम्) ॥ ८२ ॥

विक्रेय, पणितव्य, पण्य ये ३ विक्रे की वस्तु के नाम हैं । ये ‘क्रय’ आदि ‘पण्य’ पर्यन्त शब्द त्रिलिङ्ग हैं यानी वाच्यलिङ्ग कहाते हैं और सत्यापन, या “सत्यापना” सत्यंकार, सत्याकृति ये ३ बयानां या ‘साई’ के नाम हैं इनमें

१ ‘इवि प्रीणने’ (श्वा. प. से.) “अनित्यमागमशासनम्” इति न तुम्, “इगुपधात्कित्” इतीन् कृदिकारादिति वा ङीष् ॥

‘सत्यापन’ यह नपुंसकद्वै, ‘सत्यंकार’ पुलिङ्ग और ‘सत्याकृति’ स्त्री लिङ्ग है ॥ ८२ ॥

वेचना गिनती पु. पु.

१ से १ = तक

२० से परार्द्ध

पर्यन्त

विपणो विक्रयः (संख्याः संख्येये ह्यादश त्रिषु) ।

विंशत्याद्याः सदैकत्वे सर्वाः संख्येयसंख्ययोः ॥ ८३ ॥

विपण, विक्रय ये २ वेचने के नाम हैं । दश (न) शब्द पर्यन्त एक आदि अष्टादश पर्यन्त संख्याशब्द संख्येय में वर्तमान होते हुए तीनों लिङ्ग में होते हैं जैसेकि, “ एकः पटः, एका शाटी, एकं कुण्डम् । दश पटाः, दश स्त्रियः, दश कुण्डानि ” ये होते हैं यहां “ हि ” अवधारणार्थ में है उसीसे इन्होंकी समानाधिकरण सेही वृत्ति होती है जैसेकि, “एको विप्रः, दश विप्राः ” आदि होते हैं वैयधिकरण से वृत्ति नहीं कीजानी है यानी ‘एको विप्रस्य’ ब्राह्मण का एक है, “दश विप्राणाम्” ब्राह्मणों के दश हैं इत्यादि नहीं होते हैं ऐसेही अष्टादश पर्यन्त उदाहरण बनाना चाहिये इनमें चतुर्शब्द पर्यन्त वाच्यलिङ्ग हैं शेष त्रिलिङ्ग कहलाते हैं और बीस से लेकर परार्द्ध पर्यन्त सारी संख्यायें संख्येय और संख्या में वर्तमान होती हुई नित्य एकवचनान्त रहती हैं उसीसे भाष्यकार ने भी कहा है कि “आदशभ्यः संख्या संख्येये वर्तते, ऊर्ध्वं संख्याने संख्येये च ” एक से लेकर अठारह तक संख्या संख्येय में वर्तती हैं उपरान्त विंशति से लेकर परार्द्ध पर्यन्त संख्या संख्याने और संख्येय में रहती हैं तहां संख्येय में जैसेकि, “विंशतिः पटाः, विंशतिर्घटाः, विंशत्या पुरुषैः कृतम्, सन्ति शतं गावः” आदि होते हैं । संख्या में जैसेकि, “पटानां घटानां वा विंशतिः, गवां शतम् ” आदि होते हैं यह क्षीरस्वामी और मुकुट आदि आचार्यों का सिद्धान्त है ॥ ८३ ॥

संख्यार्थे द्विवहुत्वे स्तस्तासु चानवतेः स्त्रियः ।

पङ्क्तेः शतसहस्रादि क्रमादशगुणोत्तरम् ॥ ८४ ॥

विंशति आदिकों का जब संख्या अर्थ होता है तब उनसे द्विवचन और बहुवचन भी होते हैं यानी संख्यामात्र अर्थ में वर्तमान होते हुए विंशति आदि संख्यावाची शब्दों से द्विवचन व बहुवचन भी एकशेष से होते हैं जैसेकि, “द्वे विंशती, तिस्रो विंशतयः, गवां विंशती, गवां विंशतयः ” आदि होते हैं और जब भेद-विवक्षा होती है यानी संख्यान्तर अर्थ में विंशति आदि वर्तमान होते हैं तब समानाधिकरण से उपचार के द्वारा उनसे द्विवचन और बहुवचन भी होते हैं जैसेकि, “द्वे विंशती, तिस्रो विंशतयः ” आदि होते हैं और समानाधिकरण के

१ इकाई, दहाई, सैकड़ा, हजार, दशहजार, लाख, दशलाल, करोड़, दशकरोड़, अर्ब, दशअर्ब, खर्ब, दशखर्ब, नाक, दशनील, पद्म, दशपद्म, शंख और दशशंख आदि गिनतियां होती हैं ॥

अभाव में भी “ गवां विंशती, गवां विंशतयः ” आदि होते हैं वह क्षीरस्वामी तथा मुकुट का भी मत है उन विंशति आदिकों में ‘ नवति ’ पर्यन्त शब्द स्त्री-लिङ्ग होते हैं जैसेकि, “ विंशत्या पुरुषैः कृतम्, विंशतिः कुण्डानि ” ये होते हैं और पंक्ति, विंशति, त्रिंशत्, चत्वारिंशत्, पञ्चाशत्, पष्टि, सप्तति, अशीति, नवति और शत ये रूढ़ि शब्द निपात से सिद्ध होते हैं पंक्ति “ दशसंख्या ” से लेकर जिसमें दशगुण उत्तर है वह संख्या क्रमसे शत, सहस्र आदि जानना चाहिये, दश पंक्तियों का सौ होता है, दश सौ का ‘सहस्र’ और दश सहस्र का ‘अयुत’ होता है जैसे कहा है कि, “ एकदशशतसहस्रायुतलक्षप्रयुतकोटयः क्रमशः । अर्बुदमब्जं खर्बनिखर्बमहापद्मशङ्खवस्तस्मात् । जलधिश्चान्त्यं मध्यं परार्द्धमिति दशगुणोत्तराः संज्ञाः । संख्यायाः स्थानानां व्यवहारार्थं कृताः पूर्वैरिति ” इन संख्याओं को व्यवहार के लिये पूर्वाचार्यों ने किया है ॥ ८४ ॥

तौल या माप न. न. न. न.
तौल के भेद यौतवं द्रव्यं पाय्य (मिति) माना (र्थकं त्रयम्) ।

धुंनुची से स. स. पु. पु.
माशातक (मानं) तुलाङ्गुलिप्रस्थैः (गुञ्जाः पञ्चा) द्यमाषकः ॥ ८५ ॥

यौतव, द्रव्य और पाय्य ये तीनों मानार्थक या प्रमाणार्थक कहाते हैं ये ३ तौल या माप के नाम हैं “ अब मानभेदों को कहते हैं ” कि, वह प्रमाण तुला, अंगुली और प्रस्थ आदि से जुदे जुदे होते हैं तुलामान अङ्गुलिमान और प्रस्थमान ये ही ३ उन्मान, प्रमाण, परिमाण शब्दोंद्वारा क्रम से व्यवहार किये जाते हैं जैसे कहा है कि, “ ऊर्ध्वमानं किलोन्मानं परिमाणं तु सर्वतः । आयामस्तु प्रमाणं स्यान् संख्याभिन्ना तु सर्वतः ” ये ३ तौल के भेदों के नाम हैं और पांच गुञ्जाओं “ धुंनुचियों ” का आद्यमाषक, माप और मास भी होता है यह १ माष “ माशा ” का नाम है ॥ ८५ ॥

तोला, चार पु. पु. न. न.
तोला, अस्ती (ते षोडशा) क्षः कर्षो (ऽस्त्री) पलं (कर्पचतुष्टयम्) ।

धुंनुची भर, या पु. न. पु. न. पु.
मोहर भर, पल सुवर्णविस्तौ (हेमोऽक्षे) कुरुविस्त (स्तु तत्पले) ॥ ८६ ॥

उन सोलह माशों का ‘ अक्ष ’ और ‘ कर्प ’ होता है ये २ तोले या सोलह माशे के नाम हैं । इनमें ‘ अक्ष ’ पुंलिङ्ग और ‘ कर्प ’ पुंनपुंसक है । चार कर्प का ‘ पल ’ होता है यह १ चार कर्प या चार तोले का नाम है अथवा पल और कर्पचतुष्टय ये २ चार तोले के नाम हैं । सोने के अक्ष में सुवर्ण और विस्त ये दोनों होते हैं

१ यवो द्वादशभिर्गौरसर्षपैः प्रीच्यते बुधैः । यवद्वयेन गुञ्जा स्यात्त्रिगुञ्जो बल उच्यते । माषो गुञ्जाभिरष्टाभिः सप्तभिर्वा भवेत्कचित् । चतुर्भिर्मोषकैः शाणः स निष्कटङ्क एव च । गद्याणो मापकैः षड्भिः कर्षः स्यादशमापकः । चतुःकर्षैः पलं श्रोतं दशशाणमितं बुधैः । चतुःपलैश्च कुडवः प्रस्थायाः पूर्ववन्मताः ॥ शास्त्रीयप्रमाणसे पांच रत्ती का ‘ माशा ’ होता है और चरक या सुश्रुत आदि के मान से छः रत्ती, सात रत्ती या आठ रत्ती का माशा कहा है ॥

ये २ अस्सी धुंधुची भर या मोहर भर के नाम हैं और उस सुवर्ण के पल में 'कुरुविस्त' होता है यह १ स्वर्ण पलका नाम है यह पुंलिङ्ग है ॥ ८६ ॥
 स. पु.

सौपल, बीसतुला तुला (स्त्रियां पलशतं) भारः (स्याद्विंशतिस्तुला) ।

दश भार

पु.न.

पु.

गाड़ाभर भार आचितो (दश भाराः स्युः) (शाकटो भार) आचितः ८७

सौपलों की एक ' तुला ' होती है यह १ सौपलका नाम है । यह स्त्रीलिङ्ग है । बीस तुलाओं का एक ' भार ' या ' भर ' होता है यह १ बीस तुला का नाम है । दश भारों का ' आचित ' होता है यह १ दश भार का नाम है । यह पुंनपुंसक लिङ्ग है और जो गाड़ा से लेजाने योग्य भार है वह भी " आचित " कहलाता है यह १ गाड़ीभर भार का नाम है ॥ ८७ ॥

पु.

पु.

पु.

रुपया-पैसा कार्षापणः कार्षिकः (स्यात्) (कार्षिके ताम्रिके) पणः ।

कार्षापण या " कार्षापणक " कार्षिक ये २ राजतकर्षपरिमित रूप या रुपया का नाम है और तांबे के कर्षपरिमित को ' पण ' कहते हैं यह १ पैसे का नाम है इस प्रकार तुला (तराजू) मान कहा गया और जो अंगुलिमान हस्त आदि है वह तो मनुष्यवर्ग में कह चुके हैं ॥ ८८ ॥

प्रस्थमानं त्वाह—

आटक

आदि

मान विशेष

अस्त्रियामाढकद्रोणौ खारी वाहो निकुञ्चकः ॥ ८८ ॥

कुडवः प्रस्थ इत्याद्याः परिमाणार्थकाः पृथक् ।

१ " न मानेन विना युक्तिर्द्रव्याणां जायते क्वचित् । अतः प्रयोगकार्यार्थं मानमत्रोच्यते मया । चरकस्य मते वैद्यैराद्यैर्यस्मान्मतं ततः । विहाय सर्वमानानि मागधं मानमुच्यते । तसरेणुर्ध्वैः प्रोक्तस्त्रिशता परमाणुभिः । तसरेणुस्तु पर्यायनाम्ना वंशी निगद्यते । जालान्तरगतैः सूर्यकैर्वंशी विलोक्यते । षड्वंशी-भिर्मरीचिः स्यात्ताभिः षड्भिश्च राजिका । तिसृभी राजिकाभिश्च सर्षपः प्रोच्यते बुधैः । यवोष्टसर्षपैः प्रोक्तो शुक्रा स्यात्तच्चतुष्टयम् । षड्भिस्तु रत्तिकाभिः स्यान्माषको हेमधानको । माषैश्चतुर्भिः शाणः स्याद्दणः स निगद्यते । टङ्कः स एव कथितस्तद्वयं कोल उच्यते । क्षुद्रको वटकश्चैव द्रवणः स निगद्यते । कोलद्वयं तु कर्षः स्यात्स प्रोक्तः पाणिमानिका । अश्वः पितुः पाणितलं किंचित्पाणिश्च तिन्दुकम् । विडालपदकं चैव तथा षोडशिका मता । करमध्यो हसपदं सुवर्णं कवलग्रहः । उदुम्बरं च पर्यायैः कर्षमेव निगद्यते । स्यात्कर्षाभ्यामर्षपलं शुक्तिरष्टमिका तथा । शुक्तिभ्यां च पलं ज्ञेयं मुष्टिरात्रं चतुर्थिका । प्रकुञ्चः षोडशी विल्वं पलमेवात्र कीर्यते । पलाभ्यां प्रसृतिर्ज्ञेया प्रसृतं च निगद्यते । प्रसृतिभ्यामञ्जलिः स्यात्कुडवोऽर्धशरावकः । अष्टमानं च स ज्ञेयः कुडवाभ्यां च मानिका । शरावोष्टपलं तद्वज्ज्ञेयमत्र विचक्ष्ण्यैः । शरावाभ्यां भवेत्प्रस्थश्चतुःप्रस्थैस्तथादकः । भाजनं कांस्यपात्रं च चतुःषष्टिपलश्च सः । चतुर्भिराढकैर्द्रोणः कलशो नल्वणोऽर्मणः । उन्मानं च षट्ठो राशिद्रोणपर्यायसंज्ञितः । द्रोणाभ्यां सूर्पकुंभौ च चतुःषष्टिः शरावकः । सूर्पाभ्यां च भवेद्द्रोणी वाहो गोष्ठी च सा स्मृता । द्रोणीचतुष्टयं खारी कथिता सूक्ष्मबुद्धिभिः । चतुस्सहस्रपालिकः षण्णवप्यधिका च सा । पलानां द्विसहस्रं च भार एकः प्रकीर्तितः । तुला पलशतं ज्ञेयं सर्वत्रैवैष निश्चयः । बाषकं काश्चविल्वानि कुडवः प्रस्थमाढकम् । राशिगोष्ठी खारिकेति यथोत्तरचतुर्थ्यणम् " (इति भावप्रकाशः) ॥

चार प्रस्थ का 'आढक' होता है यह १ चार सेर का नाम है। यह पुनपुंसक लिङ्ग है। चार आढक को 'द्रोण' कहते हैं यह १ चार आढक का नाम है। यह भी पुनपुंसक है। चार द्रोणों की 'खारी' कहलाती है यह १ चार द्रोण का नाम है। दो सूपों का "वाह" होता है यह १ द्रोणी या गोणी का नाम है। मूठी भर मान को 'तिकुञ्चक' या 'प्रकुञ्चक' कहते हैं यह १ मूठीभरका नाम है। पावसेर का मान 'कुडव' कहलाता है यह १ बीस तोले का नाम है। और जो एक सेर का मान है वह 'प्रस्थ' कहा जाता है यह १ सेर या सोलह छटांक का नाम है इत्यादि परिमाण अर्थवाले शब्द अलग २ हैं आदि शब्द से मानी, भविका और प्रवर्तिका आदिकों का संग्रह किया जाता है ॥ ८८ । १ ॥

पु. पु. पु. पु.
चौथाई-वांट पाद(स्तुरीयो भागः) स्या (दंश भागौ तु) वण्टके ॥ ८९ ॥

रूपये आदि का जो चौथा भाग है वह 'पाद' कहलाता है। यह १ चौथाई या पावली का नाम है और अंश, भाग और वण्टक ये ३ भागमात्र या छटांक आदि वांटों के नाम हैं ये सबही घञन्त होकर पुलिङ्ग हैं ॥ ८९ ॥

न. न. न. न. न. न. न.
धन द्रव्यं वित्तं स्वापतेयं रिक्थमृक्थं धनं वसु ।

न. न. न. पु. पु. पु.
हिरण्यं द्रविणं द्युम्नमर्थरैविभवा (अपि) ॥ ९० ॥

द्रव्य, वित्त, स्वापतेय, रिक्थ, मृक्थ, धन, वसु, हिरण्य, द्रविण, द्युम्न, अर्थ, रै और विभव ये १३ धनके नाम हैं। इनमें द्रव्य से लेकर द्युम्नपर्यन्त नपुंसक हैं और अर्थ पुलिङ्ग है और ऐकारान्त रैशब्द पुंस्त्रीलिङ्ग है एकत्व में 'राः' द्वित्व में 'रायौ' बहुत्व में 'रायः' ये होते हैं और 'विभव' भी पुलिङ्ग है ॥ ९० ॥

सोना चांदी पु. न.
तांबा आदि (स्या) त्कोष (श्च) हिरण्यं (च) (हेमरूप्ये कृताकृते) ।
तांबा रूपा का न. न.
भेल (ताभ्यां यदन्यत्त) कुप्यं रूप्यं (तद्द्रव्यमाहतम्) ॥ ९१ ॥

जब सोना और चांदी ये दोनों बने या अनबनेसे प्रतीत हों तो कोष, या "कोश" और हिरण्य भी कहलाते हैं ये २ बने या नहीं बने हुए सोने, चांदी के नाम हैं इनमें 'कोष' पुनपुंसक है और 'हिरण्य' नपुंसक है। सोना व रूपा से जो तांबा आदि भिन्न है वह 'कुप्य' कहलाती है यह १ तांबा आदि द्रव्यों का

नाम है और 'कुप्य' व अकुप्य ये दोनों बनाये गये हों-यानी मुद्रा ढाखी गई हों तो 'रूप्य' कहे जाते हैं यह १ तांबे व रूपे के मेल का नाम है ॥ ६१ ॥

न. न. पु. पु.
मरकत मणि गारुत्मतं मरकतमश्मगर्भो हरिन्मणिः ।

पद्मराग न. पु. पु. न.
शोणरत्नं लोहितकः पद्मरागो (ऽथ) मौक्तिकम् ॥ ६२ ॥

स. पु. पु.न.
मोती मूंगा मुक्ता (थ) विद्रुमः (पुंसि) प्रवालं (पुंनपुंसकम्) ।

गारुत्मत, मरकत, अश्मगर्भ और हरिन्मणि ये ४ मरकतमणि या पन्ना के नाम हैं । शोणरत्न, लोहितक, पद्मराग ये ३ पद्मराग या माणिक्य के नाम हैं । मौक्तिक, मुक्ता ये २ मोती के नाम हैं और विद्रुम, प्रवाल ये २ मूंगा के नाम हैं इनमें 'विद्रुम' पुलिङ्ग है और 'प्रवाल' पुंनपुंसक है ॥ ६२ ॥ १ ॥

न. पु.स.
रत्नमात्र रत्नं मणि (द्वयो) (रश्मजातौ मुक्तादिकेऽपि च) ॥ ६३ ॥

रत्न, मणि या 'मणी' ये दोनों पत्थर की जाति, मरकत मणि की जाति, मोती आदि की जाति और आदि शब्द से मूंगा आदि में भी वर्तमान रहते हैं इनमें 'रत्न' शब्द नपुंसक है और 'मणि' स्त्रीपुलिङ्ग है (अब रत्नों को ग्रन्थान्तर से कहते हैं) कि, "कनकं कुलिशं नीलं पद्मरागं च मौक्तिकम् । एतानि पञ्च रत्नानि रत्नशास्त्रविदो विदुः" सोना, हीरा, नीलम, पद्मराग (मणि) और मोती इनको रत्नशास्त्र के वेत्ताओं ने पञ्चरत्न कहा है । और "मुक्ताफलं हीरकं च वैदूर्यं पद्मरागकम् । पुष्परगं च गोमेदं नीलं गारुत्मतं तथा । प्रवाल्युक्तान्येतानि महारत्नानि वै नवः" मोती, हीरा, वैदूर्य, पद्मराग, पुष्कराज, गोमेद, नीलम, पन्ना और मूंगा ये ६ महारत्न कहाते हैं ये २ रत्नमात्र के नाम हैं ॥ ६३ ॥

न. न. न. न. न. न.
सुवर्णं स्वर्णं सुवर्णं कनकं हिरण्यं हेम हाटकम् ।

न. न. न. न. न.
या सोना तपनीयं शातकुम्भं गाङ्गेयं भर्म कर्बुरेम ॥ ६४ ॥

न. न. न. न.
चामीकरं जातरूपं महारजतकाञ्चने ।

न. न. न. पु.न.
रुक्मं कार्तस्वरं जाम्बूनदमष्टापदो (ऽस्त्रियाम्) ॥ ६५ ॥

१ प्रवालशब्द ओष्ठमध्योऽपि स्यादिति केचिदिच्छन्ति ॥

२ कर्बुरशब्दो दन्योष्ठमध्यो वा ओष्ठमध्यः स्यादिति केचिदिच्छन्ति ॥

स्वर्ण, सुवर्ण, कनक, हिरण्य, हेम (न्) हाटक, तपनीय, शातकुम्भ या “ शातकौम्भ ” गाङ्गेय, भर्म (न्) या अदन्तभर्म, कर्बुर या “ कर्बूर ” चामी कर, जातरूप, महारजत, काञ्चन, रुक्म या “ रुक्म ” कार्तस्वर, जाम्बूनद और अष्टापद ये १६ सुवर्ण या सोना के नाम हैं । इनमें हेम और भर्म ये दो नान्त होकर नपुंसक हैं और अष्टापद पुत्रपुंसक हैं ॥ ६४ । ६५ ॥

सोने का गहना (अलंकारसुवर्णं य) चट्टङ्गीकनक (मित्यदः) ।

चांदी ^{न. न. न. न. न.} दुर्वर्णं रजतं रूप्यं खर्जूरं श्वेत (मित्यपि) ॥ ६६ ॥

जो भूषणसम्बन्धी सोना यानी सोने का बना हुआ कुण्डल आदि गहना है वह शृङ्गीकनक या शृङ्गी, शृङ्गी और कनक कहलाता है यह १ सोने के बनेहुए गहना (जेवर) का नाम है यह नपुंसक है और दुर्वर्ण, रजत, रूप्य, खर्जूर या “ खर्जुर ” और श्वेत ये ५ चांदी के नाम हैं ये सबही नपुंसक हैं ॥ ६६ ॥

पीतल ^{स. पु.न. न.} रीतिः (स्त्रिया) मारकूटो (न स्त्रिया) (मथ) ताम्रकम् ।

तांबा

शुल्बं म्लेच्छमुखं द्रव्यष्टवरिष्ठोन्दुम्बराणि (च) ॥ ६७ ॥

रीति, या “ रीती ” या “ रैत्य ”, आगकूट या “ आर ” ये २ पीतल के नाम हैं । इनमें “ रीति ” स्त्रीलिङ्ग है और “ आगकूट ” पुत्रपुंसक है और ताम्रक या ताम्र, शुल्ब या शुल्ब, म्लेच्छमुख, द्रव्यष्ट या “ द्विष्ट ” वरिष्ठ, उदुम्बर, या “ उदुंबर ”, औदुम्बर या “ औदुंबर ” “ उडुम्बर, उडुंबर, औडुम्बर या औडुंबर ” ये ६ तांबे के नाम हैं ये सबही नपुंसक हैं ॥ ६७ ॥

लोहा ^{पु.न. न. न. न. न.} लोहो (स्त्री) शस्त्रकं तीक्ष्णं पिण्डं कालायसायसी ।

लोहाका मैल ^{पु.न. पु.न.} अश्मसारो (ऽथ) मण्डूरं शिङ्गाण (मपि तन्मले) ॥ ६८ ॥

लोह या “ लौह ” शस्त्रक, तीक्ष्ण, पिण्ड, कालायस या “ कृष्णायस ” अयः (स्) “ आयस ” और अश्मसार ये ७ लोहे के नाम हैं । इनमें लोह और “ अश्मसार ” ये दोनों पुत्रपुंसक हैं और मण्डूर, शिङ्गाण, “ सिंहाण, सिंघाण ” और “ सिंहाण ” ये २ लोहमैल या कीट के नाम हैं ये दोनों पुत्रपुंसक हैं ॥ ६८ ॥

सर्वधातु, फार (सर्व स्यात्तैजसं) लोहं (विकारस्त्वयसः) कुशी ।

कांच, पारा क्षारः काचो (ऽथ) चपलो रसः सूत (श्च) पारदे ॥ ६६ ॥

सर्वतैजस को यानी सोना, चांदी, तांबा, जस्ता, पीतल, रांगा और सीसा आदि सारे धातुओं को ' लोह ' या " लौह " कहते हैं यह १ सर्वधातुओं का नाम है । जो लोह का विकार है या लोह की बनी हुई वस्तु है उसे " कुशी " या " फाल " कहते हैं यह १ फार का नाम है । क्षार, काच, ये २ कांच के नाम हैं और चपल, रस, सूत और पारद या " पारत " ये ४ पारा के नाम हैं इनमें ' पारद ' पुनर्पुंसक है ॥ ६६ ॥

भैस का सींग गवलं (माहिषं शृङ्ग) मभ्रकं गिरिजामले ।

अभ्रक, सुरमा स्त्रोतोऽञ्जनं (तु) सौवीरं कापोताञ्जनयामुने ॥ १०० ॥

भैस के सींग को ' गवल ' कहते हैं यह १ भैस के सींग का नाम है । अभ्रक, गिरिज, अमल ये ३ अभ्रक (अवरख) के नाम हैं अथवा मुकुट और स्वामी के मत में अभ्रक, गिरिजामल ये २ अभ्रक के नाम हैं और स्त्रोतोञ्जन, सौवीर, कापो-ताञ्जन और यामुन ये ४ स्त्रोतोञ्जन या सुरमा के नाम हैं ये सबही नपुंसक हैं ॥ १०० ॥

तृतीया तुत्थाञ्जनं शिखिग्रीवं वितुन्नकमयूरके ।

रसोत कर्परी दार्विका (काथोज्झवं) तुत्थं रसाञ्जनम् ॥ १०१ ॥

गन्धक रसगर्भं ताक्ष्यशैलं गन्धाश्मनि (तु) गन्धकः ।

काला सुरमा सौगन्धिक (श्च) चक्षुष्याकुलाल्यौ (तु) कुलत्थिका १०२ ॥

तुत्थाञ्जन, शिखिग्रीवं, वितुन्नक, मयूरक ये ४ तृतीया या उसके अञ्जन के नाम हैं । कर्परी या " खर्परी " दार्विका, तुत्थ ये ३ घिसकर बने हुए रसाञ्जनभेद के नाम हैं । रसाञ्जन, रसगर्भ, ताक्ष्यशैल ये ३ रसोत के नाम हैं अथवा स्वामी के मतमें

१ " रसेन्द्रः पारदः प्रोक्तः पारतोऽपि निगद्यते " (इति तारपालः) ॥

२ रसः प्रायेण माहिषशृङ्गे स्थाप्यतेऽतो रसानन्तरमस्य कथनं समुचितमेवेति मुकुटः ॥

तुत्थाञ्जन, शिखिग्रीव, वितुन्नक, मयूरक और ' कर्परी ' ये ५ तूतिया या मोचरस के नाम हैं और दारुदन्ती के काढ़े से उपजा समभाग वकरी के दूध से संस्कार किया हुआ तुत्थ, रसाञ्जन, रसगर्भ और ताक्ष्यशैल कहलाता है ये ३ रसों के नाम हैं । गन्धशमा (न्) गन्धक, " गन्धिक " सौगन्धिक, या " सुगन्धक " ये २ गन्धक के नाम हैं और चक्षुष्या, कुलाली, कुलत्थिका या " कुलत्था " ये ३ काले सुरमा के नाम हैं ॥ १०१ । १०२ ॥

न. न. न. न.
अञ्जनविशेष रीतिपुष्पं पुष्पकेतु पौष्पकं कुसुमाञ्जनम् ।

न. न. न. न.
हरिताल पिञ्जरं पीतनं तालमालं (च) हरितालके ॥ १०३ ॥

रीतिपुष्प, पुष्पकेतु, पौष्पक, या " पुष्पक " कुसुमाञ्जन या " पुष्पाञ्जन " ये ४ तचाये हुए पीतल को घिसकर बने अञ्जन या जस्ता के फूल के नाम हैं और पिञ्जर, पीतन, या " पीतक " ताल, आल, या " अल , नाल " और हरितालक या " हरिताल " ये ५ हरिताल के नाम हैं ॥ १०३ ॥

न. न. न. न. न.
शिलाजित् गैरेयमथ्यं गिरिजमश्मजं (च) शिलाजतु ।

पु. पु. पु. पु. पु.
गन्धरस बोलगन्धरसप्राणपिण्डगोपरसाः (समाः) ॥ १०४ ॥

गैरेय, अथ्य, गिरिज, अश्मज, शिलाजतु ये ५ गेरु या शिलाजीत के नाम हैं और बोल, गन्धरस या " रसगन्ध " प्राण, पिण्ड, गोस या " गोप " रस या " गोपरस " ये ६ गन्धरस के नाम हैं ये समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहते हैं ॥ १०४ ॥

पु. पु. पु. न. न.
समुद्रफेन द्विगडीरोऽब्धिकफः फेनः सिन्दूरं नागसंभवम् ।

न. न. न. न. न. न.
सेंदुर सीसा नागसीसकयोगेष्टवप्राणि त्रपु पिच्चटम् ॥ १०५ ॥

न. न. पु. पु. न.
रांगा रई रङ्गवङ्गे (प्यथ) पिचुस्तूलो (ऽथ) कमलोत्तरम् ।

न. न. न.
कुष्ठम् (स्यात्) कुसुम्भं वह्निशिखं महारजन(मित्यपि) ॥ १०६ ॥

द्विगडीर, या " द्विगिडर " अब्धिकफ, फेन या " समुद्रफेन " ये ३ समुद्रफेन के नाम हैं । सिन्दूर, नागसंभव ये २ सेंदुर के नाम हैं । नाग, सीसक, योगेष्ट,

वप, “वर्ध” और “त्रप” ये ४ सीसा के नाम हैं। त्रपु, पिष्ट, रङ्ग और वङ्ग ये ४ रांगा के नाम हैं। पिचु, तूल, पिचतूल या “तूलपिचु” ये २ कपास या रुई के नाम हैं और कमलोत्तर, कुसुम्भ, वह्निशिख, महारजन ये ४ कुसुम के नाम हैं ॥ १०५ । १०६ ॥

भेड़ा के ऊन से पु. न. न. न.
बगा कम्बल मेषकम्बल ऊर्णायुः शशोर्ण शशलोमनि ।
खरगोश के ऊन न. न. न. न. न.
से बगा कम्बल मधुक्षौद्रं माक्षिका (दि) मधूच्छिष्टं (तु) सिक्थकम् ॥ १०७ ॥
शहद-मोम

मेषकम्बल, ऊर्णायु, य २ भेड़ा के रोवों से बने हुए कम्बल के नाम हैं। ये दोनों पुंलिङ्ग हैं। शशोर्ण, शशलोम (न) ये २ खरगोश के रोवों से बने हुए कम्बल या उसके रोवों के नाम हैं। इनमें चन्द्रगोमिद्ध लिङ्गानुशासन के प्रमाण से ‘शशोर्ण’ यह नपुंसक है। मधु, क्षौद्र, माक्षिक ये ३ शहद के नाम हैं और आदि शब्द से भ्रामर, वटक और पौतिक आदिकों का ग्रहण किया जाता है और मधूच्छिष्ट, सिक्थक ये २ मोम के नाम हैं ॥ १०७ ॥

स. स. स. स.
मैनशिल मनःशिला मनोगुप्ता मनोह्रा नागजिह्विका ।
नैपालीमैनशिल स. स. पु. पु.
जवाखर नैपाली कुनटी गोला यवक्षारो यवाग्रजः ॥ १०८ ॥
सखी पु. पु. पु. पु.
सोंचर पाक्यो (ऽथ) स्वर्जिकाक्षारः कापोतः सुखवर्चकः ।
वंशलोचन न. न. स. स.
सौवर्चलं (स्या) द्रुचकं त्वक्क्षीरी वंशरोचना ॥ १०९ ॥

मनःशिला, मनोगुप्ता, मनोह्रा या “मनोज्ञा” नागजिह्विका, नैपाली, कुनटी, या “कुलटी” या “कनटी” और गोला ये ७ मैनशिल के नाम हैं अथवा मनःशिला, मनोगुप्ता, मनोह्रा और नागजिह्विका ये ४ मनशिल के नाम हैं और नैपाली, कुनटी, गोला ये ३ नैपालदेश में उपजी मैनशिल के नाम हैं। यवक्षार, यवाग्रज और पाक्य ये ३ जवाखर के नाम हैं। स्वर्जिकाक्षार या “सर्जिकाक्षार” या “सृजिकाक्षार” या “सर्जिका” और “क्षार” कापोत, सुखवर्चक ये ३ क्षारभेद या सजीखर के नाम हैं। सौवर्चल, रुचक ये २ क्षारभेद या सोंचरखर के नाम हैं अथवा स्वर्जिकाक्षार, कापोत, सुखवर्चक, सौवर्चल और रुचक ये ५

क्षारभेद या सजीखार के ही नाम हैं । यह सुभूति आदि आचार्यों का मत है और त्वक्क्षीरी, या “तुकाक्षीरी” वंशरोचना या “वंशलोचना” ये २ वंशलोचन के नाम हैं ये दोनों खीलिङ्ग हैं ॥ १०८ । ०६ ॥

शोभाञ्जन ^{न.} शिमुजं ^{न.} श्वेतमरिचं ^{न.} मोरटं (मूलमैक्षवम्) ।
ईख की जड़ ^{न.} ^{न.} ^{न.}

पिपरामूल ग्रन्थिकं पिप्पलीमूलं चटकाशिर (इत्यपि) ॥ ११० ॥

शिमुज, श्वेतमरिच ये २ शोभाञ्जन के बीज या सफेद मिरच के नाम हैं । ईख की मूल को “मोरट” कहते हैं यह १ ईख या गन्ना की जड़ का नाम है और ग्रन्थिक, पिप्पलीमूल, चटकाशिर या “चटिकाशिर” या चटका और शिरः (स्) या “शिर” ये ३ पिपरामूल के नाम हैं ॥ ११० ॥

जटामांसी, पतङ्ग ^{स.} गोलोमी ^{पु.} भूतकेशो (ना) पत्राङ्गं ^{न.} रक्तचन्दनम् ।
मिले सोंठि, ^{न.} ^{न.} ^{न.} ^{स.} ^{न.}
मिरच, पीपरि, ^{न.} ^{न.} ^{न.} ^{स.} ^{न.}
मिले अंबरी, ^{न.} ^{न.} ^{न.} ^{स.} ^{न.}
हड़, बहेरा

त्रिकटु त्र्यूषणं व्योषं त्रिफला (तु) फलत्रिकम् ॥ १११ ॥
इति वैश्यवर्गः ॥ ६ ॥

गोलोमी, भूतकेश ये २ सफेद दूब, बच या जटामांसी के नाम हैं । पत्राङ्ग, रक्तचन्दन ये २ लालचन्दन के समान रक्तसार या पतङ्ग के नाम हैं । त्रिकटु, त्र्यूषण या “त्र्युण” व्योष ये ३ मिलेहुए सोंठि, मिरच, पीपरि के नाम हैं और त्रिफला, या “तृफला” या “त्रिफली, तृफली” फलत्रिक ये २ मिले जुले आंवला, हड़, बहेड़ा के नाम हैं ॥ १११ ॥

इति वैश्यवर्गविवरणम् ॥ ६ ॥

अथ शूद्रवर्गो व्याख्यायते ॥

शूद्र ^{पु.} शूद्रा (श्वा) ^{पु.} वरवर्णा (श्च) ^{पु.} वृषला (श्च) ^{पु.} जघन्यजाः ।

वर्षसंकर ^{पु.} (आचाण्डालात्तु) संकीर्णा (अम्बष्ठकरणादयः) ॥ १ ॥

शूद्र, अवरवर्णा, वृषल और जघन्यज ये ४ शूद्र के नाम हैं । ये बहुत्व से बहु-बचनान्त हैं और चाण्डाल पर्यन्त कहेजानेवाले जो अम्बष्ठ, करणा आदि हैं वे ‘संकीर्णा’ कहलाते हैं आदिशब्द से ‘उभ’ आदिकों का ग्रहण किया जाता है और

प्रतिलोम व अनुलोम से उपजने के कारण 'मिश्र' भी कहाते हैं यह १ चाण्डाल पर्यन्त अम्बष्ठ आदिकों का नाम है ॥ १ ॥

शूद्रा में व-
नियांसे पैदा, (शूद्राविशोस्तु) करणोऽम्बष्ठो (वैश्याद्विजन्मनोः) ।
बनियानी में पु. पु.
ब्राह्मणसे उपजा, पु. पु.
शूद्रा में क्षत्रिय (शूद्राक्षत्रिययो) रुग्रो मागधः (क्षत्रियाविशोः) ॥ २ ॥
से जना,
क्षत्रिया में व-
नियांसे हुआ

शूद्रजाति की स्त्री और बनियां से उपजा लड़का लेखनवृत्तिवाला होताहुआ 'करण' कहाता है यह १ शूद्रा में बनियां से पैदाहुए का नाम है । बनियानी और ब्राह्मण से जनाहुआ बालक वैद्यकवृत्तिवाला होकर 'अम्बष्ठ' कहलाता है यह १ बनियानी में ब्राह्मण से उपजेहुए का नाम है । शूद्राणी और क्षत्रिय से जनाहुआ शस्त्रवृत्ति का रखनेवाला होकर 'उग्र' कहाजाता है यह १ शूद्रा में क्षत्रिय से जने हुए का नाम है और क्षत्रिया में बनियां से पैदाहुआ वंश की वड़ाई करनेवाला होकर 'मागध' कहलाता है यह १ क्षत्रिया "ठकुराइन" में बनियें से उपजेहुए का नाम है ॥ २ ॥

बनियानी में पु.
क्षत्रिय से उ-
पजा, क्षत्रिया पु.
में शूद्र से पु.
जना, ब्राह्मणी (माहिष्यो (र्याक्षत्रिययोः) क्षत्ता (र्याशूद्रयोःसुतः) ।
में क्षत्रिय से पु.
हुआ, ब्राह्मणी (ब्राह्मण्यां क्षत्रिया)त्सूत(स्तस्यां) वैदेहको(विशः) ३ ॥
में बनियां से
उपजा

वैश्यानी में क्षत्रिय से पैदाहुआ ज्योतिष, शकुनशास्त्र और स्वरशास्त्र आदि स जीविका करनेवाला होकर 'माहिष्य' कहाजाता है यह १ वैश्यानी में क्षत्रिय से उपजेहुए का नाम है । क्षत्रिया में शूद्र से उपजाहुआ पाप और धन का संचय करनेवाला होकर 'क्षत्ता' कहलाता है यह १ शूद्र से क्षत्रिया में जनेहुए का नाम है । ब्राह्मणी में क्षत्रिय से पैदाहुआ हाथियों को बांधना, घोड़ों को चलाना और गाड़ी, रथ आदि हांकने के कर्म करने से जीविकावाला होकर 'सूत' कहाता है यह १ क्षत्रियसे ब्राह्मणी में उपजेहुए का नाम है और उसी ब्राह्मणी में बनियां से उपजा

१ "अर्या स्वामिनी सा च क्षत्रिया योग्यत्वात् तेन "क्षत्रियायां च शूद्रजे" इत्यनेनाविरोधः ॥

२ "वैश्यान्मागधवैदेहौ राजविप्राह्मणास्तु च" (१० । ११) इति मनुवाक्यानुकूलमूलविरोधोऽ-
नेकार्थकोषो नादरणीयः ॥

हुआ चौंसठि कला कर्मों की शिक्षा आदि से वृत्तिवाला होकर 'वेदेहक' कहलाता है यह १ बनियां से ब्राह्मणी में पैदाहुए का नाम है ॥ ३ ॥

पु.
माहिष्य से रथकार (स्तु माहिष्यात् करणयां यस्य संभवः) ।
करणमें जना

पु.
ब्राह्मणी में
शूद्रसे उपजा (स्या) चण्डाल (स्तु जनितो ब्राह्मण्यां वृषलेन यः) ॥४॥

वैश्यानी में क्षत्रिय से उपजे लड़के से शूद्राणी में बनिये से उपजी लड़की में जिसका जन्म होता है वह लकड़ी के काम से आजीवन करता हुआ 'रथकार' कहलाता है यह १ माहिष्य से करणी में पैदाहुए का नाम है और जो ब्राह्मणी में शूद्र से जनागया है वह ककन का लेनेवाला होकर मांस को बेचता हुआ 'चण्डाल' या 'चाण्डाल' कहा जाता है यह १ ब्राह्मणी में शूद्र से उपजेहुए का नाम है ॥४॥

पु. पु. पु.स.
चितेरा, सबों कारुः शिल्पी (संहतैस्तैर्द्रयोः) श्रेणिः (सजातिभिः) ।
के सजातीय पु. पु. पु.
समूहकारीगर प्रधान, माली कुलकः (स्यात्) कुलश्रेष्ठी मालाकार (स्तु) मालिकः ॥५॥

कारु, स्त्री "कारु" शिल्पी (न) ये २ चितेरा आदिकों के नाम हैं " तक्षा च तन्तुवायश्च नापितो रजकस्तथा । पञ्चमश्चर्मकारश्च कारवः शिल्पिनो मताः " बड़ई, कोली, नाई, धोबी और पांचवां चमार ये भी शिल्पी " कारीगर " कहाते हैं उन कारीगरों के समान जातीयसमूह को श्रेणि स्त्री "श्रेणी" कहते हैं यह १ समानजातिवाले कारीगरों के गरोह का नाम है । कुलक या " कुलिक " कुल-श्रेष्ठी (न) ये २ शिल्पियों के कुल में प्रधान (मुखिया) के नाम हैं अब कारी-गरों और शिल्पियों के भेद कहते हैं मालाकार, मालिक ये २ माली के नाम हैं ॥ ५ ॥

पु. पु. पु. पु.
कुम्हार कुम्भकारः कुलालः (स्यात्) पलगण्ड (स्तु) लेपकः ।
थवई पु. पु. पु.
कोली
दर्जी तन्तुवायः कुबिन्दः (स्यात्) तुन्नवाय (स्तु) सौचिकः ॥६॥

कुम्भकार, कुलाल, ये २ कुम्हार के नाम हैं । पलगण्ड, लेपक ये २ राज या ईंटों के कारीगर के नाम हैं तन्तुवाय या " तन्त्रवाय " या "तन्त्रवाप" कुबिन्द या " कुबिन्द " ये २ कोली या जोलाहे के नाम हैं और तुन्नवाय, सौचिक ये २ दर्जी के नाम हैं ॥ ६ ॥

१ " वृके कुलालः कुकुमे कुम्भकारेऽन्नान्तरे " (इति विश्वः) ॥

रंगसाजं ^{पु.} रङ्गाजीवश्चित्रकरः ^{पु.} शस्त्रमार्जोऽसिधावकः ^{पु.} ।
सिकलीगर ^{पु.}

चमार ^{पु.} पादूकृच्चर्मकारः ^{पु.} (स्याद्) व्योकारो लोहकारकः ^{पु.} ॥ ७ ॥
लोहार

रङ्गाजीव, चित्रकर ये २ रंगसाज या चित्तेरा के नाम हैं । शस्त्रमार्ज, असिधा-
वक ये २ सिकलीगर के नाम हैं । पादूकृत्, चर्मकार या “ पादुकृत्, चर्मर ”
ये २ चमार के नाम हैं और व्योकार, लोहकारक ये २ लोहार के नाम हैं इनमें
‘ व्योकार ’ इस पद में “ व्यो ” यह लोहबीजवाची अव्यय है यह श्रीभोज का
मत है ॥ ७ ॥

सोनार ^{पु.} नाडिंधमः ^{पु.} स्वर्णकारः ^{पु.} कलादो रुक्मकारके ^{पु.} ।

चुरिहार ^{पु.} (स्या)च्छाद्विकः ^{पु.} काम्बविकः ^{पु.} शौल्विकस्ताम्रकुट्टकः ^{पु.} ॥ ८ ॥
ठठेर

नाडिंधम, स्वर्णकार, कलाद, या “ कणाद ” रुक्मकारक ये ४ सोनार के
नाम हैं । शाद्विक, काम्बविक ये २ शंख, सीपी आदि के भूषण बनानेवाले या
चुरिहार के नाम हैं और शौल्विक या “ शौल्विक ” ताम्रकुट्टक ये २ तांबे आदि
के भूषण बनानेवाले या ठठेर के नाम हैं ॥ ८ ॥

बढ़ई ^{पु.} तक्षा(तु) वर्धकिस्त्वष्टा रथकार (श्च) काष्ठतद् ^{पु.} ।

गांवका बढ़ई ^{पु.} ग्रामाधीनो ग्रामतक्षः ^{पु.} कौटतक्षोऽनधीनकः ^{पु.} ॥ ९ ॥
प्रधान बढ़ई

तक्षा (न) वर्धकि, त्वष्टा (ष्टृ) रथकार और काष्ठतद् ये ५ बढ़ई के नाम हैं ।
इनमें ‘ तक्षा ’ नान्त है द्वित्व में ‘ तक्षाणौ ’ बहुत्व में ‘ तक्षाणाः ’ और त्वष्टा, द्वित्व में
‘ त्वष्टारौ ’ बहुत्व में ‘ त्वष्टारः ’ और काष्ठतद्, द्वित्व में काष्ठतक्षौ बहुत्व में काष्ठतक्षः ये
होते हैं । जो गांव के अधीन तक्षा है वह ‘ ग्रामतक्ष ’ कहलाता है अथवा ग्रामाधीन,
ग्रामतक्ष ये २ गांव के बढ़ई के नाम हैं और जो स्वाधीन बढ़ई है उसे ‘ कौटतक्ष ’
कहते हैं यह १ प्रधान (मुखिया) बढ़ई का नाम है ॥ ९ ॥

नाऊ या नाई ^{पु.} क्षुरिमुण्डिदिवाकीर्तिनापितान्तावसायिनः ^{पु.} ।

धोबी या न- ^{पु.} निर्णेजकः ^{पु.} (स्या)द्रजकः ^{पु.} शौण्डिको मण्डहारकः ^{पु.} ॥ १० ॥
रेठा, कलवार

क्षुगी (न) मुण्डी (न) दिवाकीर्ति, नापित, अन्तावसायी (न) ये ५ नाऊ

या नाई के नाम हैं । निर्णोजक, रजक स्त्री रजकी ये २ धोबी या बरेठा के नाम हैं और शौण्डिक, मण्डहारक ये २ कलवार या कलाल के नाम हैं ॥ १० ॥

गङ्गरिया पु. पु. पु. पु.
पुजारी या जावालः (स्या) दजाजीवो देवाजीवी (तु) देवलः ।
पण्डा इन्द्र- स. स. पु. पु.
जाल आदि (स्या) न्मायाशाम्बरी मायाकार (स्तु) प्रातिहारिकः ११ ॥
इन्द्रजाली

जावाल, अजाजीव ये २ गङ्गरिया के नाम हैं । देवाजीवी (न्) या “ देवा-जीव ” देवल ये २ पण्डा या पुजारी के नाम हैं । माया, शाम्बरी या “साम्बरी” ये २ इन्द्रजाल आदि मायाओं के नाम हैं और मायाकार, या ‘मायावी’ (न्) ‘ मायी ’ (न्) प्रातिहारिक या “ प्रातिहार ” या “ प्रातिहारक ” ये २ इन्द्र-जालिक के नाम हैं ॥ ११ ॥

नट पु. पु. पु. पु.
कथिक या शैलालिन (स्तु) शैलूषा जायाजीवाः कृशाश्विनः ।
भांड पु. पु. पु. पु.
भरता (इत्यपि) नटाश्चारणा (स्तु) कुशीलवाः ॥ १२ ॥

शैलाली (न्) शैलूष, जायाजीव, कृशाश्वी (न्) भरत या “ भारत ” और नट ये ६ नट के नाम हैं । ये बहुत्व से बहुवचनान्त हैं और चारणा, कुशीलव ये २ कथिक या भांड के नाम हैं ॥ १२ ॥

मृदङ्गबजाने पु. पु. पु. पु.
वाला, ताली मारदङ्गिका मौरजिकाः पाणिवादा (स्तु) पाणिघाः ।
बजानेवाला, पु. पु. पु. पु.
बांसुरी बजाने वेणुध्माः (स्यु) वैणविका वीणावादा (स्तु) वैणिकाः १३ ॥
वाला, वीणा बजानेवाला

मारदङ्गिक, मौरजिक या “ मौरविक ” ये २ मृदङ्ग बजाने में प्रवीण या मृदङ्गी के नाम हैं । पाणिवाद, पाणिघ ये २ जो हाथों से मृदङ्ग आदि की ध्वनि का अनुकरण (नक़ल) करते हैं । उनके या हाथ से तालधारियों के नाम हैं । वेणुध्मा, वैणविक ये २ बंशी या बांसुरी बजाने वालों के नाम हैं और वीणावाद, वैणिक ये २ बीन या वीणा बजानेवालों के नाम हैं ॥ १३ ॥

चिरीमार पु. पु. पु. पु.
जालिक जीवान्तकः शाकुनिको (द्वौ) वागुरिकजालिकौ ।
कसाई पु. पु. पु. पु.
वैतंसिकः कौटिक (श्च) मांसिक (श्च समंत्रयम्) ॥ १४ ॥

जीवान्तक, या “ जीवान्तिक ” शाकुनिक ये २ पखेरुओं के मारनेहारे या

धिड़ीमार के नाम हैं । वागुरिक, जालिक ये २ जाल से मृगों के बांधनेवाले बहे-
लिया के नाम हैं और वैतंसिक, कौटिक और मांसिक ये ३ मांस के बेचनेवाले
चिकवा या कसाई के नाम हैं ये तीनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ॥ १४ ॥

मज्जदूर भृतको भृतिभुक्कर्म करो वैतनिको (ऽपि सः) ।

खवरिहा वार्तावहो वैवधिको भारवाह (स्तु) भारिकः ॥ १५ ॥

भृतक, भृतिभुक्, (ज्) कर्मकर, वैतनिक ये ४ नौकर, चाकर या मज्जदूर के
नाम हैं । वार्तावह, वैवधिक, या “ विवधिक, वीवधिक ” ये २ संदेस के ले जाने
वाले खवरिहा के नाम हैं और भारवाह, भारिक या भारी (न्) ये २ बोझा ले
जानेवाले (कुली) के नाम हैं ॥ १५ ॥

नीच विवर्णः पामरो नीचः प्राकृत (श्र) पृथग्जनः ।

निहीनोऽपसदो जाल्मः क्षुल्लकश्चेतर (श्र सः) ॥ १६ ॥

विवर्ण, पामर, नीच, प्राकृत, पृथग्जन, निहीन, अपसद् या “ अपशद् ” जाल्म,
क्षुल्लक या “ खुल्लक ” और इतर ये १० नीच या पामर के नाम हैं । ये सबही
पुंलिङ्ग हैं ॥ १६ ॥

सेवक, दास भृत्ये दासेयदासेरदासगोप्यकचेटकाः ।

खिदमतगार नियोज्यकिंकरप्रेष्यभुजिष्यपरिचारकाः ॥ १७ ॥

भृत्य, दासेय, दासेर, दास या “ दाश ” स्त्री दासी या “ दाशी ” गोप्यक,
या गोप्य, चेटक, या चेट, या चेड, “ चेडक ” स्त्री “ चेटिका, चेटी, चेडी ”
नियोज्य, किंकर, स्त्री “ किंकरा या किंकरी ” प्रेष्य, या “ प्रैष ” या प्रेष्य, भुजिष्य
स्त्री “ भुजिष्या ” और परिचारक स्त्री “ परिचारिका ” ये ११ दास, टहलुआ,
सेवक या खिदमतगार के नाम हैं ॥ १७ ॥

दूस्रे से पराचितपरिस्कन्दपरजातपरैधिताः ।

पालागया मन्द या सुस्त मन्दस्तुन्दपरिमृज आलस्यः शीतकोऽलसोऽनुष्णः ॥ १८ ॥

पराचित या “पराजित,” परिस्कन्द, या “परिष्कन्द,” “परिस्कन्न” या “परिष्कन्न,” परजात, या “परजित” और परैधित ये ४ दूसरे से पाले या पोषे हुए के नाम हैं और मन्द, तुन्द परिमृज या “तुन्दपरिमार्ज” आलस्य, शीतक, अलस और अनुष्ण ये ६ आलसी या सुस्त के नाम हैं ॥ १८ ॥

चतुर, ^{पु.} दक्षे (तु) ^{पु.} चतुरपेशलपटवः ^{पु.} सूत्थान ^{पु.} उष्ण (श्र) ।

चाण्डाल ^{पु.} चण्डालप्रवमातङ्गदिवाकीर्तिजनंगमाः ॥ १९ ॥

^{पु.} निषाद^{पु.} श्वपचा^{पु.} वन्तेवा^{पु.} सिचाण्डाल^{पु.} पुक्कसाः ।

दक्ष, चतुर, पेशल, या “पेसल, पेशल” पटु, सूत्थान और अनुष्ण ये ६ चतुर या चालाक के नाम हैं और चण्डाल, सव, मातङ्ग, दिवाकीर्ति, जनंगम, या “जलंगम” निषाद या “निशाद” श्वपच, या “श्वपच्-श्वपाक” अन्तर्वासी (न) चाण्डाल, पुक्कस, या “पुक्कश, पुक्कव” और पुक्कस या “वुक्कस” ये १० चण्डाल या निषाद के नाम हैं ॥ १९ । ३ ॥

^{पु.} म्लेच्छभेद (भेदाः) ^{पु.} किरातश्वर^{पु.} पुलिन्दा^{पु.} म्लेच्छ (जातयः) ॥ २० ॥

किरात आदि तीनों म्लेच्छ जातिवाले होकर चाण्डालों के भेद होते हैं, जैसे कि, किरात, श्वर, पुलिन्द और “पुलिन्द” ये ३ म्लेच्छजातिवाले चाण्डाल-भेदों के नाम हैं ये सब वनों में ही रहते हैं “इन्हीं में से जो कि गोमांसको खाता हुआ लोकबाह्य को भाषता है वह समस्त आचारों से विहीन होकर ‘म्लेच्छ’ कहलाता है” ऐसेही सूतसंहिता में भी कहा है कि, बनियों से ब्राह्मणी में पैदा हुआ नाम से ‘क्षत्ता’ कहाता है और इसीमें इस चौर्यकर्म के द्वारा ब्राह्मण से उपजा हुआ ‘म्लेच्छ’ कहा जाता है ॥ २० ॥

^{पु.} बहेलिया ^{पु.} व्याधो ^{पु.} मृगवधाजीवो ^{पु.} मृगयुर्लुब्धको (अपि सः) ।

^{पु.} कुत्ता ^{पु.} पागल ^{पु.} कुत्ता ^{पु.} कौलेयकः ^{पु.} सारमेयः ^{पु.} कुकुरो ^{पु.} मृगदंशकः ॥ २१ ॥

^{पु.} शिकारी ^{पु.} कुत्ता ^{पु.} शुनको ^{पु.} भषकः ^{पु.} श्वा (स्या) ^{पु.} दलर्क (स्तु स योगितः) ।

^{पु.} कुतिया ^{पु.} (श्वा) ^{पु.} विश्वकटु ^{पु.} मृगयाकुशलः ^{पु.} सरमा ^{पु.} शुनी ॥ २२ ॥

१ अस्य तु बहुत्वे ‘चाण्डालाः’ इत्येवं रूपम् । “चाण्डालाः” इति रूपे तु “तस्येदम्” इत्याद्यण् बोध्यः आन्दसा अपि कश्चिन्नोके ‘सन्धिः’ इत्यादय इव प्रयुज्यन्ते इति वा बोध्यम् ॥

व्याध, मृगवधाजीव, मृगयु और लुब्धक ये ४ व्याध या बहेलिया के नाम हैं।
 कौलेयक, सारमेय, कुरुर, या “ कुरुर ” या “ कुरुर ” मृगदंशक, शुनक, या
 “ शुन ” या “ शुनि ” भषक, श्वा, (न) और ‘श्वान’ ये ७ कुत्ते के नाम हैं।
 जो कुत्ता प्रयोग से मतवाला या पागल हुआ है वह ‘अलर्क’ या ‘अलक’
 कहलाता है यह १ पागल कुत्ते का नाम है और जो शिकार करने में चतुर है
 वह कुत्ता ‘विश्वकटु’ कहा जाता है यह १ शिकारी कुत्ते का नाम है और
 सरमा, शुनी ये २ कुतिया के नाम हैं ॥ २१ । २२ ॥

पु. पु.
 गांव का सुअर विट्चरः (शूकरो ग्राम्यो) वर्कर (स्तरुणः पशुः) ।
 न. न. पु. स.
 जवान पशु

शिकार आच्छोदनं मृगव्यं (स्या) दाखेटो मृगया (स्त्रियाम्) २३ ॥

जो शूकर गांव में उपजा है वह ‘विट्चर’ कहलाता है यह १ गांव के सुअर
 का नाम है। जो पशु जवान है उसे ‘वर्कर’ स्त्री ‘वर्करी’ कहते हैं यह १ बकरा
 या युवक पशुमात्र के नाम हैं और आच्छोदन, मृगव्य, आखेट और मृगया
 ये ४ अहेर या शिकार के नाम हैं। इनमें ‘आखेट’ पुंलिङ्ग और ‘मृगया’
 स्त्रीलिङ्ग है ॥ २३ ॥

पु.
 दाहिने अङ्ग में (दक्षिणार्लुब्धयोगा) दक्षिणोर्मा (कुरङ्गकः) ।

पु. पु. पु. पु. पु. पु.
 धाववाला चौर चौरैकागारिकस्तेनदस्युतस्करमोषकाः ॥ २४ ॥

पु. पु. पु. पु.
 चौर कर्म प्रतिरोधिपरास्कन्दिपाटच्चरमलिम्लुचाः ।

स. न. न. न. न.

चोरी का माल चौर्यिका स्तैन्यचौर्ये (च) स्तेयं लोप्त्रं (तु तद्धनः) ॥ २५ ॥

जो मृग बहेलिया के संयोग से दाहिनी पार्श्व में धाववाला है वह ‘दक्षिणोर्मा’
 (न) कहलाता है द्वित्वमें ‘दक्षिणोर्माणौ’ बहुत्वमें ‘दक्षिणोर्माणाः’ ये होते हैं।
 यह १ दाहिने अङ्ग में धाववाले मृग का नाम है। चौर या ‘चोर’ स्त्री ‘चौरी’
 ऐकागारिक, स्त्री ऐकागारिकी, स्तेन ‘या स्तैन्य’ दस्यु, तस्कर, मोषक, प्रतिरोधी
 (न) या “ प्रतिरोधक ” परास्कन्दी (न) पाटच्चर या “ पटच्चर ” और मलि-
 म्लुच ये १० चोर के नाम हैं। चौरिका या “ चोरिका ” स्तैन्य, चौर्य और
 स्तेय ये ४ चौरकर्म (चोरी) के नाम हैं और चोर के धन को ‘लोप्त्र’ या ‘लोत्र’
 कहते हैं यह १ चोरी के माल का नाम है ॥ २४ । २५ ॥

बहेलियों^{पु.} वीतंस (स्तूपकरणं बन्धने मृगपक्षिणाम्) ।

का सामान^{पु.} न.^{न.} स.^{स.} स.^{स.}
फन्दा जाल उन्माथः कूटयन्त्रं (स्या) द्वागुरा मृगबन्धनी ॥ २६ ॥

मृग और पक्षियों को बांधने के लिये जो जाल व पाश आदि सामान है वह 'वीतंस' या "वितंस" कहलाता है यह १ व्याधों की सामग्री का नाम है । उन्माथ, कूटयन्त्र ये २ मृग व पक्षियों को बांधने के लिये जिस यन्त्र को छलसे स्थापन करते हैं उसके या फन्दा के नाम हैं और वागुरा, मृगबन्धनी ये २ मृगों के फँसानेवाले जाल के नाम हैं ॥ २६ ॥

न.स.^{पु.} स.^{स.} पु.स.न.^{पु.}
रस्सी शुल्वं वराटकः (स्त्री तु) रज्जु (स्त्रिषु) वटी गुणः ।

न.^{न.}
रहट उद्घाटनं घटीयन्त्रं (सलिलोद्वाहनं प्रहेः) ॥ २७ ॥

शुल्ब या "शुल्ब" शुल्वा "सुम्य, वटाकर" वराटक या "वराट" रज्जु, वटी और गुण ये ५ रस्सी, जेवरी या उबहन के नाम हैं । इनमें 'शुल्ब' स्त्रीनपुंसक है, 'रज्जु' स्त्रीलिङ्ग और 'वटी' त्रिलिङ्ग है और कुत्रां से जिस यन्त्र के द्वारा जल को ऊपर निकालते हैं उसे 'उद्घाटन' और 'घटीयन्त्र' कहते हैं ये २ अरट या रहट के नाम हैं ये दोनों नपुंसक हैं ॥ २७ ॥

पु.न.^{पु.} न.^{पु.}
राख, सूत (पुंसि) वेमा वापदण्डः सूत्राणि (नरि) तन्तवः ।

बीनना ली-^{स.} स.^{स.} न.^{न.}
पना आदि वाणिर्व्युतिः (स्त्रियौ तुल्ये) पुस्तं (लेप्यादि कर्मणि) ॥ २८ ॥

वेमा (न्) या "वेम" वापदण्ड या "वायदण्ड" ये २ कपड़ा बीनने के दण्ड, राख या कोली की कूंची के नाम हैं इनमें 'वेमा' पुनपुंसक और 'वाप-दण्ड' पुलिङ्ग है । सूत्र, तन्तु ये २ सूत के नाम हैं । एकत्व में 'सूत्रम्' द्वित्व में 'सूत्रं' बहुत्व में 'सूत्राणि' एकत्व में 'तन्तुः' द्वित्व में 'तन्तू' और बहुत्व में 'तन्तवः' ये होते हैं इनमें 'सूत्र' नपुंसक और 'तन्तु' पुलिङ्ग है । वाणि, या "वेणि" व्युति या "व्युति" ये २ बीनने के नाम हैं ये दोनों स्त्रीलिङ्ग होकर समानार्थक कहाते हैं और लेप्य आदि कर्म में "पुस्त" होता है आदिपद से 'कठपुतली' आदिकों का ग्रहण किया जाता है कहा है कि, जैसे, मिट्टी, काठ, बख, चर्म, जोह और रत्नों से बनाया हुआ भी 'पुस्त' कहा जाता है यह १ लीपना आदि कर्म का नाम है यह नपुंसक है ॥ २८ ॥

गुडिया ^{स.} पञ्चालिका पुत्रिका (स्याद् वस्त्रदन्तादिभिः कृता) ।
 पेढारी ^{पु.} ^{पु.} ^{स.} ^{स.} ^{स.} ^{स.} ^{स.}
 बहूंगी या ^{स.} पिटकः पेटकः पेटा मञ्जूषा (थ) विहंगिका ॥ २६ ॥
 कांवरि ^{स.} ^{न.} ^{पु.} ^{स.}
 सिकहर भारयष्टि (स्तदालम्बि) शिख्यं काचो (ऽथ) पादुका ।
 जूता ^{स.} ^{स.} ^{स.}
 माजा पादूरुपान (स्त्री सैवा, नुपदीना (पदायता) ॥ ३० ॥

वस्त्र, दांत आदि से बनाई जो पुत्रिका है वह 'पञ्चालिका' या 'पाञ्चालिका' और 'पुत्रिका' कहलाती है आदि शब्द से मिट्टी व शिला आदि से भी बनाई हुई जो 'पुत्रिका' है वह भी 'पञ्चालिका' और 'पुत्रिका' कहाती है ये २ गुडिया या गुड़वा के नाम हैं । पिटक, पेटक, पेटा "पेडा" या "पीडा" और "मञ्जूषा" ये ४ पेटागी या संदूक के नाम हैं । विहंगिका या "विहंगमा" भारयष्टि ये २ बहूंगी या कांवरि के नाम हैं । जो बहूंगी आदिकों का आलम्बनकारी होता है यानी कांवरि, धत्री या खूंदी आदिकों में लटकता है उसे 'शिख्य' और 'काच' कहते हैं ये २ स्त्रीका, सीका या निकहर के नाम हैं । पादुका, पादू, उपानत् (ह) ये ३ जूता के नाम हैं और जो पांव में बंधी है वह "अनुपदीना" कहलाती है यह १ मोजा या बूट का नाम है ॥ २६ । ३० ॥

^{स.} ^{स.} ^{स.} ^{स.}
 चाम की नद्धी वर्धी वरत्रा (स्यादश्वादेस्ताडनी) कशा ।
 रस्ती जेरबन्द ^{स.} ^{स.} ^{स.}
 किंगरी चाण्डालिका (तु) कण्डोलवीणा चण्डालवल्लकी ॥ ३१ ॥

नद्धी, वर्धी या "वाद्धी" वरत्रा ये ३ चामकी बनी रस्ती, बाधी या चर्म-बन्धनी के नाम हैं । घोड़े आदि की ताड़न करनेवाली जो रस्ती है वह कशा, "कषा" या "कसा" कहाती है यह १ जेरबन्द, चाबुक या औगी का नाम है आदिपद से ऊंट, गदहा या चोर आदि का ग्रहण किया जाता है और चाण्डालिका या "चण्डालिका" कण्डोलवीणा या "कटोलवीणा" और चण्डालवल्लकी ये ३ चण्डालों की वीणा या किंगरी के नाम हैं ॥ ३१ ॥

^{स.} ^{स.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}
 सोनार का नाराची (स्या) देषणिका शण (स्तु) निकषः कषः ।
 कांटा कनौटा ^{पु.} ^{पु.} ^{स.} ^{स.}
 रेती ^{स.}
 सलाई व्रश्चनः पत्रपरशुरेषिका तूलिका (समे) ॥ ३२ ॥

नाराची, एषणिका ये २ सुवर्ण की तुला यानी कांटा या कटिया के नाम हैं ।

शाण, निकष, कष या “ शान, निकस, कस ” ये ३ कपौटी या सान के नाम हैं । प्रश्वन, पत्रपरशु ये २ सोने आदि की काटनेवाली गंती या टांकी आदि के नाम हैं । और एषिका, ईषिका, या “ इपीका, ईपीका ” तूलिका या “ तुली, तुलि ” ये २ शलाई, चित्रकारकी कुंची या लखनी के नाम हैं ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ॥ ३२ ॥

स. स. स. स.
घरिया तैजसावर्तनी मूषा भस्त्रा चर्मप्रसेविका ।

स. स. स. स.
धौकनी वर्मी आस्फोटनी वेधनिका कृपाणी कर्तरी (समे) ॥ ३३ ॥

तैजसावर्तनी, मूषा या “ मुषा, मूयी, मूषिका ” ये २ सोना आदि धातु गलाने की घरिया के नाम हैं । भस्त्रा, चर्मप्रसेविका या “ चर्मप्रसेवक ” ये २ खलायट, भाथी या धौकनी के नाम हैं । आस्फोटनी या “ लास्फोटनी ” वेधनिका ये २ मुक्ता आदि की वेधनेवाली बग्गी के नाम हैं और कृपाणी, कर्तरी ये २ स्वर्ण-पत्र आदि के काटनेवाले शस्त्रविशेष या ‘ कतरनी ’ के नाम हैं ये दोनों समा-नार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ॥ ३३ ॥

पु. पु. पु. पु.
बांकी टांकी वृक्षादनो वृक्षभेदी टङ्कः पाषाणदारणः ।

पु.न. न. स. स.
आरा रांपी क्रकचो (ऽस्त्री) करपत्रमाराचर्मप्रभेदिका ॥ ३४ ॥

वृक्षादन, वृक्षभेदी (न्) ये दो रुखानी, बसूला या बांकी के नाम हैं । टङ्क या “ तङ्क ” पाषाणदारण ये २ पत्थर की तोड़नेवाली टांकी या छेनी के नाम हैं । क्रकच, या “ क्रकर ” करपत्र ये २ आरा या आरी के नाम हैं । इनमें ‘ क्रकच ’ यह पुनपुंसक है और आरा, चर्मप्रभेदिका ये २ चमड़े की काटनेवाली चमार की रांपी के नाम हैं ये दोनों स्त्रीलिङ्ग हैं ॥ ३४ ॥

स १ स. स. न.
लोहे की प्रतिमा सूर्मी स्थूणायः प्रतिमा शिल्पं (कर्मकलादिकम्) ।

न. न. स. स. स.
कारीगरी, प्रतिमानं प्रतिविम्बं प्रतिमाप्रतियातना प्रतिच्छाया ३५

स. स. पु. स. न.
मिसाल प्रतिकृतिरर्चा (पुंसि) प्रतिनिधिरूपमोपमानं (स्यात्) ।

सूर्मी या “ सूर्मि, स्युमी, स्युर्मि ” स्थूणा, अयःप्रतिमा ये ३ लोह की प्रतिमा

१ “ग्रीष्मजालमशर्ष” इति मप्रत्यये शरादेशं च इति मुकुटस्वपाणिनीयः “शर्मी” तासव्यादिरित्य-प्युक्तम् । “सूर्यं शुचिरामिव” इति श्रुतिविरोधात् ॥

(तसवीर) के नाम हैं । नाचना, गाना आदि जो कर्म है वह ' शिल्प ' कह-
जाता है । आदिपद से स्वर्णकार तथा रथकार आदिकों के कर्मका ग्रहण किया
जाता है । यह १ गीत, नृत्य व थवई आदि के कर्म का नाम है । प्रतिमान, प्रति-
विम्ब, प्रतिमा, प्रतियातना, प्रतिच्छाया, प्रतिकृति, अर्चा और प्रतिनिधि ये ८ प्रतिमा,
मूर्ति या तसवीर के नाम हैं इनमें " प्रतिनिधि " यह पुंलिङ्ग है और उपमा, उप-
मान ये २ उपमा (मिसाल) देने के नाम हैं अथवा " येनोपमीयते या चोपमिति-
स्तयोरेते नाम्नी केचित्तु पूर्वान्विते इत्याहुः " जिस करके उपमा दीजाती है और
जो उपमिति है उन दोनों के ये २ नाम हैं और कितेक आचार्यों ने पूर्वोक्त प्रतिमा-
दिकों में ही अन्वय किया है ॥ ३५ । १ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

समानता या (वाच्यलिङ्गाः) समस्तुल्यः सदृक्षःसदृशःसदृक् ॥ ३६॥

बराबरी पु.स.न. पु.स.न.

साधारणः समान(श्च) (स्युरुत्तरपदे त्वमी) ।

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

निभसंकाशनीकाशप्रतीकाशोपमा(दयः) ॥ ३७ ॥

सम, तुल्य, सदृक्ष, सदृश, सदृक्, साधारण, स्त्री साधारणी या साधारणा
और समान ये सम आदि सातो समानान्तर के वाची होकर वाच्यलिङ्ग कहाते
हैं और ये निभ, संकाश, नीकाश या " निकास " प्रतीकाश या " प्रतिकाश " या
" प्रतीकास, प्रतिकास " उपमा आदि उत्तर पदमें स्थित होकर सदृश-
वाची होते हुए वाच्यलिङ्ग कहाते हैं जैसे कि, " पितृनिभः पुत्रः " यहां नित्य
समास है पिता के समान लड़का है " मातृनिभा कन्या " माता के समान लड़की
है " देवनिभमपत्यम् " देवता के समान सन्तान है आदि पद से भूत, रूप, कल्प
आदिकों का ग्रहण किया जाता है जैसे कि, पितृभूतः, पितृरूपः, और 'पितृकल्पः'
आदि होते हैं ये १२ समान (बराबरी) के नाम हैं अथवा सम आदि ७ और
निभ आदि उत्तर पदवाले भी ५ समान के नाम हैं ॥ ३६ । ३७ ॥

स. स. स. स. न. व.

मजदूरी कर्मण्या(तु)विधा भृत्या भृतयो भर्म वेतनम् ।

न. न. न. पु. पु.

कमाई भरणं भरणं मूल्यं निर्वेशः पण(इत्यपि) ॥ ३८ ॥

कर्मण्या, विधा, भृत्या, भृति, भर्म (न्), वेतन, भरण, भरण, मूल्य, निर्वेश
और पण ये ११ वेतन, दर्महा, कमाई या मजदूरी के नाम हैं । इनमें कर्मण्या
से लेकर ' भृति, पर्यन्त स्त्रीलिङ्ग, और 'भर्म' से लेकर ' मूल्य ' तक वपुंसक हैं
और " निवेश-पण " ये दोनों पुंलिङ्ग हैं ॥ ३८ ॥

स. स. स. स. स.
मदिरा या शरावसुरा हलिप्रिया हाला परिस्नुद्ररुणात्मजा ।

मद्यपीनेमें रुचि- स. स. स. स. स.
कारी भोजन गन्धोत्तमा प्रसन्नेराकादम्ब्वर्यः परिस्नुता ॥ ३६ ॥

स. न. न. पु.
मदिरा कश्यमद्ये(चाप्य) वदंश (स्तु भक्षणम्) ।

मद्यपानस्थान न. न. पु. पु.
मद्य पीने का समय शुण्डापानं मदस्थानं मधुवारा मधुक्रमाः ॥ ४० ॥

सुरा, हलिप्रिया, हाला, परिस्नुत्, वरुणात्मजा, गन्धोत्तमा, प्रसन्ना, इरा, या “ प्रसन्नेरा ” कादम्ब्वरी, परिस्नुता, मदिरा, कश्य और मद्य ये १३ मद्य या शराव के नाम हैं “ तत्र गौडी, पैट्री च माध्वी च विंज्या त्रिविधा सुरेति वचनात् ” वहां गौडी, पैट्री और माध्वी ये तीन भांति की ‘ सुरा ’ जानना चाहिये । मद्य पीने में रुचि बढ़ाने के लिये जो व्यञ्जन या चना आदि पदार्थ खाया जाता है वह “ अश्व-दंश ” कहलाता है यह १ मद्य पीने के समय रुचिकारी भोजन का नाम है । शुण्डा, पान, मदस्थान ये ३ मद्यपानस्थान, मद्यशाला या कलवारी के नाम हैं और मधुवार, मधुक्रमा ये २ मदिरा पीने के समय के नाम हैं ॥ ३६ । ४० ॥

पु. पु. न. न.
महुआ का मध्वासवो माधवको मधु मार्द्वीक(मद्वयोः) ।

गुड़ आदि का न. पु. पु.न. पु. पु.
मद्य का कादा मैरेयमासवःशीधुर्मेदको जगलः(समौ) ॥ ४१ ॥

मध्वासव, माधवक या “ माध्वक ” मधु, मार्द्वीक या “ माध्वीक ” या मधु “ माध्वीक ” ये ४ महुआ के फूल से उपजी मदिरा के नाम हैं इन में ‘ मार्द्वीक ’ या ‘ माध्वीक ’ नपुंसक है स्वामी के मत में मध्वासव, माधवक ये २ महुआ की मदिरा के नाम हैं । मधु, मार्द्वीक ये २ दाख के मद्य के नाम हैं । मैरेय, आसव, शीधु ये ३ गुड़, सीरा व शाकादि से उपजे मद्यविशेष के नाम हैं और मेदक, जगल ये २ मदिरा के कल्क (काढ़ा) के नाम हैं ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ॥ ४१ ॥

न. पु. न. पु.
मद्य बनाना सन्धानं(स्याद)भिषवःकिण्वं(पुंसितु) नग्नहूः ।

सुराबीज पु. पु. न. स.
सुरा का फूल पीने की सभा कारोत्तरः सुरामण्ड आपानं पानगोष्ठिका ॥ ४२ ॥

१ शुण्डापि जलहस्तिन्यां मदिराकरिहस्तयोः । नलिन्यां वारयोषायां शुण्डस्तु मदनिर्भरे ”
(इति विरवः) ॥

सन्धान, अभिषव ये २ मद्य बनाने या उत्तम मद्य निकालने के लिये जो फल, बांस और अङ्गुरों को बहुत समय तक रखते हैं उसके नाम हैं। कियव, या “कयव” नग्नहू, या नग्नहु ये २ चावल आदि द्रव्य के झोटाने से बड़े खमीर से बने हुए सुराबीज या नंगा होकर मतवाले के पुकारने या चिल्लाने आदि के नाम हैं। इनमें ‘नग्नहू’ पुन्नपुंसक है। कारोत्तर, या “कारोत्तम” सुरामुण्ड ये २ मदिराफूल के नाम हैं और आपान, पानगोष्ठिका ये २ शराब पीने की सभा के नाम हैं ॥ ४२ ॥

मद्यपान का ^{पु.न.} चषको (ऽस्त्री) ^{न.} पानपात्रं ^{पु.न.} सरको (ऽप्य) ^{न.} नुतर्षणम् ।
 पात्र मद्य ^{पु.} धूर्तो ^{पु.} अक्षदेवी ^{पु.} कितवो ^{पु.} ऽक्षधूर्तो ^{पु.} द्यूतकृ (त्समाः) ॥ ४३ ॥
 पीना ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}
 जूआरी

चषक, पानपात्र ये २ मद्यपानपात्र के नाम हैं। इनमें ‘चषक’ पुन्नपुंसक है। सरक, अनुतर्षण या “अनुतर्ष” ये २ मद्यपान के नाम हैं अथवा मुकुट के मतमें चषक, पानपात्र, सरक और अनुतर्षण ये चारो पानपात्र के नाम हैं अपिशब्द से ‘सरक’ भी पुन्नपुंसक है। धूर्त, अक्षदेवी (न) कितव, अक्षधूर्त और द्यूतकृत् ये ५ जूआरी या जूआ खेलनेवाले के नाम हैं ये पांचो समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहते हैं ॥ ४३ ॥

जामिन ^{पु.} (स्यु) ^{पु.} ल्ग्नकाः ^{पु.} प्रतिभुवः ^{पु.} सभिका ^{पु.} द्यूतकारकाः ।
 फड़वाज ^{पु.न.} द्यूतो (ऽस्त्रिया) ^{स.} मक्षवती ^{न.} कैतवं ^{पु.} पण (इत्यपि) ॥ ४४ ॥
 जूआ

लग्नक, प्रतिभू ये २ प्रतिनिधि होनेवाले या जामिन के नाम हैं। एकत्व में “लग्नकः, प्रतिभूः” द्वित्व में लग्नकौ, प्रतिभुवौ बहुत्व में लग्नकाः, प्रतिभुवः” ये होते हैं। सभिक, द्यूतकारक ये २ जूआ करानेवाले या फड़वाज के नाम हैं “एकत्व में सभिकः, द्यूतकारकः” द्वित्वमें सभिकौ, द्यूतकारकौ बहुत्वमें सभिकाः, द्यूतकारकाः” ये होते हैं और द्यूत, अक्षवती, कैतव और पण ये ४ जूआ के नाम हैं ॥ ४४ ॥

बाजी पाशा ^{पु.} पणो (ऽक्षेषु) ^{पु.} ग्लहो ^{पु.} ऽक्षा (स्तु) ^{पु.} देवनाः ^{पु.} पाशका (श्व ते) ।
 गोटियों का ^{पु.} परिणाय (स्तु शारीणां समन्तान्नयने) ^{पु.} ऽविणायः ॥ ४५ ॥
 चारों और ^{पु.न.} ^{पु.न.} ^{न.} ^{पु.}
 जाना, चौपड़ ^{पु.न.} ^{पु.न.} ^{न.} ^{पु.}
 जीवों की ^{पु.न.} ^{पु.न.} ^{न.} ^{पु.}
 बाजी

पण, ग्लह ये २ जूआ जीतनेपर भाषाबन्धसे जो जुने योग्य है उसके या बाजी

के नाम हैं । अक्ष, देवन और पाशक ये ३ पाशा के नाम हैं । चौपड़की नई गोटियों का जो इधर उधर लेजाना है वह 'परिणाय' या 'परीणाय' कहलाता है यह १ गोटों के इधर उधर धरने का नाम है । अष्टापद, शारिफल ये २ चौपड़ की गोटियों को विधिसे रखने के लिये बख के बने कोठों समेत बख आदि या चौपड़घरके नाम हैं अथवा बिसाति या जिस कपड़ेपर गोटे खेलते हैं उसके या काठ, हाथीदांत आदि के बने जूआखेलने के सामान के नाम हैं ये २ पुत्रपुंसक हैं और प्राणिद्युत, समा-हय ये २ मेढ़ा, मुर्गा, बुलबुलआदि जीवों के लड़नेकी बाजीके नाम हैं ॥ ४५।३ ॥

सर्वलिङ्गसंग्रहादसंपूर्णतां परिहरति ।

(उक्ता भूरिप्रयोगत्वादेकस्मिन्येऽत्र यौगिकाः ॥ ४६ ॥

ताद्धर्म्यादन्यतो वृत्तावृद्धा लिङ्गान्तरेऽपि ते) ॥ ४७ ॥

इति शूद्रवर्गः ॥

अब सब लिङ्गों का संग्रह न होनेसे असंपूर्णता दोष का परिहार करते हैं कि, इस शूद्रवर्ग में बहुत से प्रयोगों के दर्शन से केवल पुंलिङ्ग में जो मालाकार, लोहकार, मार्दङ्गिक और वैणविक आदि यौगिक शब्द कहे गये हैं वे अपने योग-वश से जाति अर्थ के वाच्य रहते हुए लिङ्गान्तर में भी जानने योग्य हैं और अपि शब्द से जो अयौगिक करण, मालिक, और कुम्भकार आदि शब्द हैं उनको जाति-वाची होनेसे स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग में भी जानना चाहिये, जिसका अव-यवार्थ जाना जा सका है वह यौगिक है और जिसका अवयवशक्ति के बिना समुदायशक्तिमात्र से अर्थबोध होता है वह रूढ़ कहाता है तिनमें यौगिकलिङ्गान्तर में जैसे कुम्भकारी स्त्री, कुम्भकारं कुञ्जम् ऐसेही मालाकारी स्त्री, मालाकारम् अयौगिक जैसे करणी, कुन्नाली आदि हैं इन्हीं में "जातेरस्त्रीविषयादयोषधान् ४ । १ । ६३ इस सूत्र से 'स्त्रीष' जानना चाहिये ॥ ४६ । ४७ ॥

इति शूद्रवर्गविवरणम् ॥

इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने ।

भूम्यादिकाण्डो द्वितयः साङ्गएव समर्थितः ॥ ४८ ॥

इस प्रकार अमरसिंह के बनाये हुए नाम और लिङ्गों के व्युत्पादन करनेवाले शास्त्र में अङ्ग, उपाङ्गों समेत दूसरा भूम्यादिकाण्ड कहा गया ॥ ४८ ॥

दो० । अमरसिंहकृत कोषमहं, काण्ड त्रय सुबखान ।

द्वितयकाण्ड पूरण कियो, द्विजवर शक्ति सुजान ॥ १ ॥

इति श्रीमदमरसिंहविरचितेऽमरकोषे श्रीमद्रायबहादुरप्रयागनारायणाक्षया द्विजवरशक्तिभरसंकलितायां रसालाख्यायां व्याख्यायां द्वितीयः

काण्डः संपूर्णतामगादिति शिवम् ॥

ॐ परमान्मन नमः ॥

श्रीमदमरसिंहविरचितः अमरकोषः ।

सभाषया रसालाख्यया व्याख्यया समेतः ।

तृतीयं काण्डम् ।

विशेष्यनिघ्नैः संकीर्णैर्नानार्थैरव्ययैरपि ।

लिङ्गादिसंग्रहैर्वर्गाः सामान्ये वर्गसंश्रयाः ॥ १ ॥

अब तृतीयकाण्ड की व्याख्या करते हैं कि इस सामान्य काण्ड में विशेष्यनिघ्न जिसमें उनका दर्शन है जोकि विशेषण हैं जैसे कि सुकृती आदि, संकीर्ण जिसमें विशेषण तो हैं परन्तु उनके विशेष्य कई अर्थों में रहते हैं जैसे कि कर्मपरायण कारीगरी, जूआ या अन्य किसी काम में चतुरको भी कहते हैं, नानार्थ जिसमें एकही के कई अर्थ पाये जाते हैं जैसे कि लोक भुवन और मनुष्यकोभी कह सकते हैं, अव्यय जिसमें अव्ययों के अर्थ हैं, जैसे कि आङ् थोड़ा, मयांदा और वाक्य का बोधक है और लिङ्गादिसंग्रह यानी लिङ्गसंग्रह और आदि शब्द से नामसंग्रह जैसे कि लङ्का, शकालिका आदि शब्दों से उपलक्षित स्वर्गादिवर्ग सम्बन्धी वर्ग कहे जाते हैं ॥ १ ॥

लिङ्गज्ञानोपायमाह—

स्त्रीदाराद्यैर्यद्विशेष्यं यादृशैः प्रस्तुतं पदैः ।

गुणद्रव्यक्रियाशब्दास्तथा स्युस्तस्य भेदकाः ॥ २ ॥

इस शास्त्रमें रूप आदि के भेदही से बहुधा लिङ्गों का निर्णय होता है परन्तु तीसरे काण्ड में जो शब्द आये हैं वे गुण, द्रव्य और क्रियावाचक होकर विशेष्यनिघ्न हैं इनक लिङ्ग और वचन विशेष्य के आधीन रहते हैं यानी स्त्री दारादिक जैसे पदों से जो विशेष्य आनकर प्रस्तुत होता है उस के गुण, द्रव्य और क्रियावाचक शब्द विशेषण होजाते हैं वहां गुण सुकृत आदि तद्विशिष्ट जैसे कि, पुं सुकृती, स्त्री, सुकृतिनी, कुलं सुकृति कहे जाते हैं, दारा शब्द क साहचर्य से सुकृतिनो दाराः कहाते हैं, द्रव्य दण्ड आदि है तद्विशिष्ट जैसे कि, “दण्डिनी स्त्री, दण्डिनो दाराः,

दण्डि कुलम् और क्रिया, पचनादिव्यापार तद्विशिष्ट जैसे कि पाचिका स्त्री, पाच-
का दाराः, पाचकं कुलम् ” आदि जानना चाहिये ॥ २ ॥

भाग्यवान् बड़ी चाहनावाला सीधा बड़ा उद्योगी पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
सुकृती पुण्यवान् धन्यो महेच्छ (स्तु) महाशयः ।
हृदयालुः सुहृदयो महोत्साहो महोद्यमः ॥ ३ ॥

सुकृती (इन्) पुण्यवान् (वत्) धन्य—स्त्री, सुकृतिनी, पुण्यवती, धन्या ये ३ भाग्य-
वान् के नाम हैं । महेच्छ, महाशय ये २ उदार चित्तवाले दयालु के नाम हैं । हृद-
यालु, सुहृदय या सहृदय “ हृदयवान्, हृदयिक, हृदयी ” ये २ अच्छे चित्तवाले के
नाम हैं और महोत्साह, महोद्यम ये २ दुस्साध्य कृत्य में अध्यवसित या स्थिरक्रिया
वाले के नाम हैं ॥ ३ ॥

ज्ञाता या चतुर प्रवीणे निपुणाभिज्ञविज्ञनिष्णातशिक्षिताः ।
पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

वैज्ञानिकः कृतमुखः कृती कुशल (इत्यपि) ॥ ४ ॥

प्रवीण, निपुण, अभिज्ञ, विज्ञ, निष्णात, शिक्षित, वैज्ञानिक, या ‘ विज्ञानिक ’
कृतमुख, कृती और कुशल या ‘ कुशल ’ ये १० प्रवीण, चतुर या विद्वान् के नाम हैं ॥ ४ ॥

मान्य या पूज्य पूज्यः प्रतीक्ष्यः सांशयिकः संशयापन्नमानसः ।
पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

संशयकारी दक्षिणीयो दक्षिणार्ह (स्तत्र) दक्षिण्य (इत्यपि) ॥ ५ ॥

पूज्य, प्रतीक्ष्य ये २ पूज्य के नाम हैं । इसका लक्ष्य रघुवंश में कहा है जैसे
कि “ भक्तिः प्रतीक्ष्येषु कुलोचिताते ” यह संगत होता है । सांशयिक, संशया-
पन्नमानस ये २ संदेहविषय, संदेहाश्रित या संशययुतमनवाले के नाम हैं । दक्षि-
णीय, दक्षिणार्ह, दक्षिण्य या “ दक्षिण्य ” ये ३ दक्षिणापाने योग्यके नाम हैं ॥ ५ ॥

अतिदानी (स्यु)र्वदान्यस्थूललक्ष्यदानशौण्डा बहुप्रदे ।
दीर्घायुवाला पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

शास्त्रज्ञाता जैवातृकः (स्या)दायुष्मानन्तर्वाणि (स्तु) शास्त्रवित् ॥ ६ ॥

वदान्य या “ वदन्य ” स्थूललक्ष्य या “ स्थूललक्ष ” दानशौण्ड, बहुप्रद ये ४ दानशूर

१ वीण्या प्रगायति, प्रगीयते वा “ सत्यापेति ” णिजन्तात् पचाद्यच् (३ । १ । १३४) कर्मणि
घञ् (३ । ३ । १६) वा ‘ एरजयन्तानामिति ’ नाच् । एरजयन्तानामिति तु वचनमनार्षमिति कैयटः ॥

या महादानी के नाम हैं। जैवातृक, आयुष्मान् स्त्री जैवातृका, आयुष्मती ये २ बड़ी उमर वाले के नाम हैं और अन्तर्वाणि, शास्त्रवित् ये २ शास्त्रज्ञाता पण्डित के नाम हैं ॥ ६ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

पारस्त्री

परीक्षकः कारणिको वरदस्तु समर्थकः ।

वरदाता

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

हर्षित मनवाला **हर्षमाणो विकुर्वाणः प्रमना हृष्टमानसः ॥ ७ ॥**

परीक्षक, कारणिक ये २ प्रमाणों से अर्थ निश्चय करनेवाले या परीक्षक के नाम हैं। वरद, समर्थक ये २ वर देने वाले या मनोरथ पूर्ण करनेवाले के नाम हैं और हर्षमाण, विकुर्वाण, प्रमनाः (स्) या प्रमणाः (स्) और हृष्टमानस ये ४ प्रसन्न मनवाले या हर्षितचित्तवाले के नाम हैं ॥ ७ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

उदास

श्रीतिष्ठत

सरलचित्त

दाता भोक्ता

दुर्मना विमना अन्तर्मनाः (स्या) दुत्क उन्मनाः ।

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

दक्षिणे सरलोदारौ सुकलो (दातृभोक्तरि) ॥ ८ ॥

दुर्मनाः (स्) विमनाः (स्) अन्तर्मनाः (स्) ये ३ दुःखितमनवाले या व्याकुल चित्तवाले के नाम हैं। उत्क, उन्मनाः (स्) ये २ बड़ी चाहनावाले या उत्कण्ठित मनवाले के नाम हैं। इनमें 'उत्क' यह उत शब्दसे स्वार्थ में कन् होनेसे सिद्ध होता है। दक्षिण, सरल, उदार ये ३ सीधेचित्तवाले या सरल स्वभाववाले के नाम हैं और जो दाता होकर भोक्ता है वह 'सुकल' कहलाता है यह १ दाता व भोक्ता का नाम है ॥ ८ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

आसक्तचित्त

सोद्योगी

विख्यात

(तत्परं) प्रसितासक्ताविष्टार्थोद्युक्त उत्सुकः ।

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

प्रतीते प्रथितख्यातवित्तविज्ञातविश्रुताः ॥ ९ ॥

तत्पर, प्रसित, आसक्त या "आविष्ट" ये ३ आसक्त चित्तवाले या किसी विषय में जगेहुए के नाम हैं। इष्टार्थोद्युक्त या 'उद्युक्त' उत्सुक ये २ अभिमत अर्थ में परायण या उद्योगी के नाम हैं और प्रतीत, प्रथित, ख्यात, वित्त, विज्ञात और विश्रुत ये ६ प्रसिद्ध या विख्यात के नाम हैं ॥ ९ ॥

पु.स.न. पु.स.न.

एषों से विख्यात **(गुरौः प्रतीते तु) कृतलक्षणाहतलक्षणौ ।**

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

धनी

इभ्य आढयो धनी स्वामी त्वीश्वरः पतिरीशिता ॥ १० ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

स्वामी

अधिभूर्नायकोनेता प्रभुः परिवृढोऽधिपः ।

जो शौर्यादि गुणों से विख्यात है उसे कृतलक्षणा, आहतलक्षणा या 'आहित-लक्षणा' कहते हैं ये २ गुणों से प्रसिद्ध या विख्यात के नाम हैं । इभ्य, आढ्य, धनी—झी इभ्या, आढ्या, धनिनी ये ३ महाधनी के नाम हैं और स्वामी (नृ) ईश्वर, पति, ईशिता (तृ) अधिभू, नायक, नेता, प्रभु, परिवृद्ध और अधिपये १० स्वामी, प्रभु, अध्यक्ष या मालिक के नाम हैं ॥ १० ३ ॥

समृद्धिवाला पु.स.न. पु.स.न. पु. अधिकर्द्धिःसमृद्धः(स्यात्) कुटुम्बव्यापृतस्तु यः॥११॥

कुटुम्बपालक पु.न. पु. (स्याद)भ्यागारिक(स्तस्मि)नुपाधि(श्च पुमानयम्) ।

वक्रा सुन्दर पु. (वराङ्गरूपोपेतो यः) सिंहसंहननो (हि सः) ॥ १२ ॥

अधिकर्द्धि, समृद्ध ये २ भरे पुगे या अच्छे संपन्न के नाम हैं । कुटुम्बव्यापृत, अभ्यागारिक और उपाधि ये ३ कुटुम्बपोषण आदि व्यापारवाले के नाम हैं । इन में पहला पुंलिङ्ग, दूसरा पुंनपुंसक और तीसरा नित्य पुंलिङ्ग है और जो सुन्दर अङ्ग व रूप (जावयय) से संयुक्त है वह ' सिंहसंहनन ' कहलाता है यह १ वक्र सुन्दर का नाम है ॥ ११ / १२ ॥

दुःख में भी पु.स.न.

खुशी से काम करनेवाला निर्वार्यः (कार्यकर्ता यः सपतन् सत्त्वसंपदा) ।

गंगा पिता पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

समान अवाचिर्मूको(ऽथ)मनोजवः(स)पितृसन्निभः ॥ १३ ॥

जो व्याकुल अवस्था में भी प्रसन्नता से मन लगा कर काम करता है उसे ' निर्वार्य ' या ' निर्धार्य ' कहते हैं यह १ दुःख में भी खुशी से काम करनेवाले का नाम है । अवाक्, मूक ये २ बिना वाणीवाले या गूंगा के नाम हैं और मनो-जव—मनोजवस या " मनोजवाः " (स्) पितृसन्निभ ये २ पितृतुल्य या पितृ समान के नाम हैं ॥ १३ ॥

पु.स.न.

अलंकृत कन्या-(सत्कृत्यालंकृतां कन्यां यो ददाति स)कूकुदः ।

दाता पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

लक्ष्मीवान् पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

रंजी

लक्ष्मीवाँलक्ष्मणःश्रीलःश्रीमान्स्निग्ध(स्तु)वत्सलः१४

सत्कार कर समस्त अलंकारों से अलंकृत कन्या को जो वर के लिये प्रदान

१ मृयते बन्धते बागस्येति 'मूक् बन्धने' (भ्वा. आ. से.) बाहुलकात् "अवतिमवतीभ्याम् कक्" इति मृकुटेनोक्तम् । तथाधातुप्रत्ययानां कारकेषु विहितत्वात्संबन्धे विधानाभावात् अवतेः प्रयोजनाभावात् "धातोः" इत्येकत्र विवक्षणेन धातुसम्प्रदायात् प्रत्ययाभावाच्च उक्तसूत्राभावाच्च " मूकौद्वैत्यावादीनेषु " (इति हैमः) ॥

करता है यानी व्याप्त करनेवाले को जो आद्यपूर्वक अलंकृत कन्या को देता है उसे कूकुद या “कुकुद” कहते हैं यह १ अलंकृत कन्यादायी का नाम है । लक्ष्मीवान् (वत्) लक्ष्मण, श्रील, या “श्रील” और श्रीमान् ये ४ लक्ष्मीवान् के नाम हैं और स्निग्ध, वत्सल ये २ स्नेहयुक्त या स्नेही के नाम हैं ॥ १४ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

दयावान् (स्या) दयालुः कारुणिकः कृपालुः सूरतः (समाः) ।

स्वेच्छाचारी पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

या स्वतन्त्र स्वतन्त्रोऽपावृतः स्वैरी स्वच्छन्दो निरवग्रहः ॥ १५ ॥

दयालु, कारुणिक, कृपालु और सूरत या “सूरत” ये ४ दयाशील या कारुणिक के नाम हैं । ये चारों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं और स्वतन्त्र, अपावृत, स्वैरी या “स्वैर” स्वच्छन्द, निरवग्रह “निर्यन्त्रण और निरंकुश” ये ५ स्वच्छन्द या स्वतन्त्र (मनमाने) के नाम हैं ॥ १५ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

पराधीन या पराये हुक्म परतन्त्रः पराधीनः परवान्नाथवा (नपि) ।

में रहनेवाला पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

आधीनमात्र अधीनो निघ्न आयत्तोऽस्वच्छन्दो गृह्यकोऽप्यसौ ॥ १६ ॥

परतन्त्र, पराधीन, परवान् (वत्) और नाथवान् (वत्) ये ४ पराधीन या परवशवर्ती के नाम हैं । इनमें परवान् व नाथवान् ये दोनों मतुग्रन्त हैं द्वित्व में परवन्तौ, नाथवन्तौ बहुत्व में “परवन्तः और नाथवन्तः” ये होते हैं और अधीन, निघ्न, आयत्त, अस्वच्छन्द और गृह्यक ये ५ आधीनमात्र के नाम हैं अथवा कितेक आचार्यों के मत में ‘परतन्त्र’ से लेकर ‘गृह्यक’ पर्यन्त ६ आधीनमात्र के ही नाम हैं ॥ १६ ॥

बुहारनेवाला पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

सुस्त खलपूः (स्या) द्बहुकरो दीर्घसूत्रश्चिरक्रियः ।

अविचारी पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

आलसी जाल्मोऽसमीक्ष्यकारी स्यात्कुण्ठो मन्दः क्रियासु यः १७

खलपू, बहुकर “स्त्री-बहुकरा या बहुकरी” ये २ बुहारी आदि से बुहारने वाले या पवित्र करनेवाले के नाम हैं । इनमें ‘खलपू’ सुलूके समान है । दीर्घसूत्र, चिरक्रिय ये २ जो स्वल्पकाल से साध्यकार्य को चिरकाल में करता है उसके या आलसीविशेष के नाम हैं । जाल्म, असमीक्ष्यकारी (न्) ये २ जो गुण व दोष को बिना विचार किये कार्य करता है उसके या अविचारी के नाम हैं और जो क्रियाओं में आलसी या मूढ़ है उसे ‘कुण्ठ’ कहते हैं यह १ मन्दक्रियावाले या आलसी का नाम है ॥ १७ ॥

काम करनेवाला. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
काम करने में लगा. हमेशा
काम में लगा. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
कामों का पूरा करनेवाला.

कर्मक्षमोऽलंकर्मीणः क्रियावान् (कर्मसूयतः) ।

(स) कर्मः कर्मशीलो (यः) कर्मशूर (स्तु) कर्मठः ॥ १८ ॥

कर्मक्षम, अलंकर्मीण ये २ कार्य करने में समर्थ होनेवाले के नाम हैं । जो कर्मों में परायण यानी लगा रहता है उसे ' क्रियावान् ' कहते हैं यह १ कामों में उद्यत हुए का नाम है । जो कर्मशील है वह ' कर्म ' और स्त्री ' कर्मी ' कहलाती है अथवा कर्म, स्त्री-कर्मी और कर्मशील ये २ फल की नहीं अपेक्षा कर जो कर्मों में हमेशा लगा रहता है उसके नाम हैं और कर्मशूर, कर्मठ ये २ जो बड़ी यत्न से आरम्भ किये कर्मों को पूरा करता है उसके नाम हैं ॥ १८ ॥

मज्जदूरी. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
विना मज्जदूरी काम करनेवाला.

भरणयभुक्कर्मकरः कर्मकार (स्तु तत्क्रियः) ।

मृतकस्नायी. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
मांस भक्षक. **अपस्नातो मृतस्नात आमिषाशी (तु) शौष्कलः ॥ १९ ॥**

भरणयभुक् (ज्) या " कर्मयभुक् " कर्मकर ये २ वेतन लेकर काम करनेवाले के नाम हैं । वेतनके विना जो क्रियावान् है वह ' कर्मकार ' कहलाता है । यह १ मज्जदूरी के विना काम करनेवाले का नाम है । अपस्नात, मृतस्नात ये २ मृतक-निमित्त स्नान करनेवाले के नाम हैं और आमिषाशी (न्) शौष्कल या " शाष्कल और शुष्कल " ये २ मांस मछली खानेवाले के नाम हैं ॥ १९ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

भूता. **बुभुक्षितः (स्या) त्क्षुधितः जिघत्सुरशनायितः ।**

पराजर्जीवी. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

खवैया. **परान्नः परपिण्डादो भक्षको घस्मरोऽन्नरः ॥ २० ॥**

बुभुक्षित, त्क्षुधित, जिघत्सु, अशनायित ये ४ भोजन की इच्छा करनेवाले या भूखे के नाम हैं । परान्न, परपिण्डाद ये २ परान्न से उपजीवन करनेवाले के नाम हैं और भक्षक, घस्मर, अन्नर ये ३ भक्षणशील या खानेवाले के नाम हैं ॥ २० ॥

पु.स.न. पु.स.न.

मरभुक्ता **आद्यूनः (स्या) दौदरिको (विजिगीषाविवर्जिते) ।**

पु.स.न. पु.स.न.

पेद्र **(उभौ) त्वात्मंभरिः कुक्षिंभरिः (स्वोदरपूरके) ॥ २१ ॥**

१ " भरणयभुक् " अयं शब्दवर्गेऽपि कथितस्तथापि पर्यायान्तरकथनार्थमनूदितः ॥

२ चान्द्रास्तु आत्मोदरकुक्षिष्विति पेद्रुः " ज्योत्स्नाकरम्भपुदरंभरणश्चकोराः " (इति घृणारिः) ॥

आद्यून, औदरिक ये २ बड़ी इच्छारहित या भूखसे अत्यन्तपीडित (मरभुखा) के नाम हैं और आत्मभरि, कुक्षिभरि ये २ अपने पेटभरनेवाले पेटभरु या पट्ट के नाम हैं ॥ २१ ॥

सर्वभक्षी. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
सर्वान्नीन(स्तु) सर्वान्नभोजी गृध्नु(स्तु) गर्धनः ।
लोभी. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
महालोभी. लुब्धोऽभिलाषुकस्तृष्णक्(समौ)लोलुपलोलुभौ ॥२२॥

सर्वान्नीन, सर्वान्नभोजी (इन्) ये २ सर्ववर्णों के अन्न खानवाले या सर्वभक्षी “ परमहंस ” आदि के नाम हैं । गृध्र, गर्धन, लुब्ध, अभिलाषुक, तृष्णक् या ‘तृष्णक्’ तृपित या “ तर्पित ” ये ५ लोभी के नाम हैं अथवा गृध्र, गर्धन ये २ आकाङ्क्षाशील के नाम हैं और लुब्ध, अभिलाषुक, तृष्णक् (ज्) या ‘तृष्णक्’ ये ३ अभिलाषाशील के नाम हैं और लोलुप, लोलुभ ये २ महालोभी के नाम हैं ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहते हैं ॥ २२ ॥

सिङ्गी या पागल. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
अन्यायी. उन्मद(स्तू)न्मदिष्णुः (स्याद) विनीतः समुद्धतः ।
पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
मतवाला. मत्ते शौण्डोत्कटक्षीवाः कामुके कमितानुकः ॥ २३ ॥
पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
कामुक या कामी. कम्प्रः कामयिता भीकः कमनः कामनोऽभिकः ।

उन्मद या “ उन्माद ” “ सोन्माद ” या “ सूनमाद, सून्मद ” उन्मदिष्णु ये २ उन्मादशील, पागल या सिङ्गी के नाम हैं । अविनीत, समुद्धत ये २ दुर्विनीत अन्यायशाली गँवार या गँवेला के नाम हैं । मत्त, शौण्ड, उत्कट, क्षीव या क्षीवी (न्) ये ४ मतवाले के नाम हैं और कामुक, कमिता, अनुक, कम्प्र, कामयिता (तृ) अभीक, कमन, कामन और अभिक ये ६ कामुक या पुंश्चल के नाम हैं ॥ २३ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
आज्ञाकारी. विधेयो विनयग्राही वचनेस्थित आश्रवः ॥ २४ ॥

वश्य. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
नम्र या सीला. वश्यः प्रणोयो निभृतविनीतप्रश्रिताः (समाः) ।

धृष्ट या दीट. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
प्रदिमान्. धृष्टे दृष्टगवियात (श्च) प्रगल्भः प्रतिभान्विते ॥२५॥

विधेय, विनयग्राही या “ वचनग्राही ” (न्) वचनेस्थित और आश्रव ये ४ वचन ग्रहण करनेवाले या आज्ञाकारी के नाम हैं । वश्य, प्रणोय ये २ वश में

आयेहुए या वशवर्ती के नाम हैं । अथवा 'विधेय' से लेकर 'प्रणोय' पर्यन्त छन्दो भी वशंगत ही के नाम हैं । निभृत, विनीत, प्रश्रित या "प्रसृत" ये ३ विनीत या सीखेहुए के नाम हैं । ये तीनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते ह । धृष्ट, धृष्णाक् (ज्) " धृष्णु " और वियात ये ३ ढीठ, निर्लेज्ज, अविनीत या अशिक्षित के नाम हैं और प्रगल्भ, प्रतिभान्वित ये २ बुद्धिमान्, बड़ेढीठ या निर्भय के नाम हैं ॥ २४ । २५ ॥

सलज्ज.

पु.स.न.

पु.स.न.

पु.स.न.

पु.स.न.

आश्वर्या.

(स्याद) धृष्टे (तु) शालीनो विलक्षो विस्मयान्विते ।

व्याकुल.

पु.स.न.

पु.स.न.

पु.स.न.

पु.स.न.

पु.स.न.

पु.स.न.

डरपोक.

अधीरे कातरस्त्रस्रनौ भीरुभीरुकभीलुकाः ॥ २६ ॥

अधृष्ट, शालीन ये २ जाजसमेत या शर्मिन्दा के नाम हैं । विलक्ष, विस्मयान्वित ये २ पराये धर्म, शीलआदिकों में आश्चर्यित या चकड़ायेहुए के नाम हैं । अधीर, कातर ये २ रोगादि लक्षणों से व्याकुल मनवाले या घबड़ायेहुए के नाम हैं और त्रस्तु, या " त्रस्त " भीरु या " भीत " भीरुक और भीलुक ये ४ डरे हुए या डरपोक के नाम हैं ॥ २६ ॥

कहनेवाला.

पु.स.न.

पु.स.न.

पु.स.न.

पु.स.न.

पकड़नेवाला.

आशंसुराशंसितरि गृहयालुर्ग्रहीतरि ।

श्रद्धावान्.

पु.स.न.

पु.स.न.

पु.स.न.

गिरनेवाला.

श्रद्धालुः(श्रद्धयायुक्ते) पतयालु (श्च) पातुके ॥ २७ ॥

आशंसु, आशंसिता ये २ वाञ्छाशील के नाम हैं । गृहयालु, गृहीता या ग्रहीता (तृ) ये २ ग्रहणशील या लेनेवाले के नाम हैं । श्रद्धा आस्तिक्य बुद्धि उससे जो संयुक्त रहता है उसे ' श्रद्धालु ' कहते हैं । यह १ श्रद्धावान् का नाम है और पतयालु, पातुक ये २ पतनशील या गिरनेवाले के नाम हैं ॥ २७ ॥

लज्जावान्.

पु.स.न.

पु.स.न.

पु.स.न.

पु.स.न.

बन्दना

लज्जाशीलोऽपत्रपिष्णुर्वन्दारुरभिवादके ।

करनेवाला.

पु.स.न.

पु.स.न.

पु.स.न.

पु.स.न.

पु.स.न.

हत्यारा.

शरारुर्घातुकोहिंसः(स्या)वर्धिष्णु(श्च)वर्धनः ॥ २८ ॥

बढ़नेवाला.

लज्जाशील, अपत्रपिष्णु ये २ लोकलज्जायुक्त या लाजवाले के नाम हैं । वन्दारु, अभिवादक ये २ बन्दनशील के नाम हैं । शरारु, घातुक और हिंस ये ३ हिंसाशील, घातक या मारडालनेवाले (हत्यारे) के नाम हैं और वर्धिष्णु, वर्धन ये २ वर्धनशील या बढ़नेवाले के नाम हैं ॥ २८ ॥

उद्धलनेवाला. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
 भूषणों की चाह वाला. होने की चाहवाला. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
 वर्तनेवाला. भूष्णुर्भविष्णुर्भविता वर्तिष्णुर्वर्तनः(समौ) ॥ २६ ॥

उत्पतिष्णु, उत्पतिता ये २ उत्पत्तशील या उद्धलनेवाले के नाम हैं । अलं-
 करिष्णु, मण्डन ये २ अलंकरणशील या भूषणों की चाहनावाले के नाम हैं ।
 भूष्णु, भविष्णु और भविता ये ३ भवन्शील या होनेकी अभिलाषावाले के नाम
 हैं और वर्तिष्णु, वर्तन ये २ वर्तनशील या वर्तनेवाले के नाम हैं ॥ २६ ॥

निकालनेवाला. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
 सघनसच्चिक्वण. निराकरिष्णुः क्षिप्नुः(स्यात्) “सान्द्रस्निग्धस्तु” मेदुरः ।
 जाननेवाला. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
 खिलनेवाला. ज्ञाता(तु) विदुरो विन्दुर्विकासी (तु) विकस्वरः ॥ ३० ॥

निराकरिष्णु, क्षिप्नु या “क्षिप्नु” ये २ निराकरणशील या निकालनेवाले
 के नाम हैं । घना होकर जो चिकना पदार्थ है उसे ‘मेदुर’ कहते हैं इसका लक्ष्य
 गीतगोविन्द काव्य के पहले श्लोक में कहा है कि “मेघमेदुरमम्बरम्” आकाश
 मेघों से व्याप्त है यानी महाअन्वकार से विरा है यह १ सघन सच्चिक्वण का नाम
 है । ज्ञाता, (तु) विदुर, विन्दु ये ३ ज्ञाता या जाननेवाले के नाम हैं और
 विकासी (न्) विकस्वर या “विकाशी, विकापी, विकश्वर, विकध्वर” ये २ खिलने
 या फूलनेवाले के नाम हैं ॥ ३० ॥

गमन करने वाला. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
 विस्तृत्वरो विस्तृमरः प्रसारी (च) विसारिणि ।
 पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
 सहनशील. सहिष्णुः सहनः क्षन्ता तितिक्षुः क्षमिता क्षमी ॥ ३१ ॥

विस्तृत्वर, विस्तृमर, प्रसारी (न्) और विसारी (न्) ये ४ विसरणीशील,
 पसरनेवाले या जानेवाले के नाम हैं और सहिष्णु, सहन, क्षन्ता (तु) तितिक्षु,
 क्षमिता (तु) और क्षमी (न्) ये ६ क्षमाशील, गमखोर या सहनेवाले
 के नाम हैं ॥ ३१ ॥

क्रोधी. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
 महाक्रोधी. क्रोधनोऽमर्षणः कोपी चण्ड(स्त्व)त्यन्तकोपनः ।
 जागनेवाला. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
 निद्रा से धूर्णित. जागरूको जागरिता धूर्णितः प्रचलायितः ॥ ३२ ॥

क्रोधन, अमर्षण, कोपी (न्) या “कोपन” ये ३ क्रोधी के नाम हैं । चण्ड, अत्यन्तकोपन ये २ अत्यन्त क्रोधनशील या महाकोपी के नाम हैं । जागरूक, जागरिता (तृ) ये २ जागरणशील या जागनेवाले के नाम हैं और घूर्णित, प्रचलायित ये २ निद्रा से घूर्णित नयनोंवाले के नाम हैं ॥ ३२ ॥

सोनेवाला. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

सोया हुआ. **स्वप्नक् शयालुर्निद्रालुर्निद्राणशयितौ (समौ) ।**

विमुख. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

अधोमुख. **पराङ्मुखः पराचीनः (स्या) द्वाङ्प्यधोमुखः ॥ ३३ ॥**

स्वप्नक् (ज्) शयालु, निद्रालु ये ३ निद्राशील या सोनेवाले के नाम हैं । इनमें स्वप्नक् जान्त है द्वित्व में “स्वप्नजौ” बहुत्व में ‘स्वप्नजः’ होते हैं । निद्राण या “निद्रित” शयित ये २ सुप्त या सोये हुए के नाम हैं । ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं । पराङ्मुख, पराचीन ये २ विमुख या विफड़ेहुए के नाम हैं और अवाङ्, स्त्री “अवाची” अधोमुख, स्त्री “अधोमुखी” ये २ अधोमुख या नीचे मुँह कियेहुए के नाम हैं ॥ ३३ ॥

देवपूजक. सब पु.स.न. पु.स.न.

औरजानेवाला. (देवानश्चति) देवद्रयङ् विश्वद्रयङ् (विश्वगश्चति) ।

साथ का जाने- पु.स.न. पु.स.न.

वाला. तिरीछा (यःसहाश्चति)सध्रयङ्(सः)सतिर्यङ्(यस्तिरोऽश्चति)३४

जो देवताओं को प्राप्त होता है या पूजता है वह ‘देवद्रयङ्’ कहा जाता है स्त्रीलिङ्ग में ‘देवद्रीची’ और नपुंसक में ‘देवद्रयक्’ होता है यह १ देवपूजक का नाम है । जो चारों ओर चलता है वह ‘विश्वद्रयङ्’ या ‘विश्वद्रयङ्’ कहा जाता है स्त्रीलिङ्ग में ‘विश्वद्रीची’ या ‘विश्वद्रीची’ नपुंसक में विश्वद्रयक् या ‘विश्वद्रयक्’ होता है यह १ चारों तरफ चलनेवाले या सब ओर जानेवाले का नाम है । जो साथ में चलता है वह ‘सध्रयङ्’ कहाता है स्त्रीलिङ्ग में ‘सध्रीची’ और नपुंसक में ‘सध्रयक्’ होता है यह १ साथ चलनेवाले का नाम है और जो तिरीछा या टेढ़ा चलता है वह ‘तिर्यङ्’ कहा जाता है और स्त्री ‘तिरश्ची’ कहाती है यह १ टेढ़ा चलनेवाले का नाम है ॥ ३४ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

वक्ता. **वदो वदावदो वक्ता वागीशो वाक्पतिः (समौ) ।**

महावक्ता. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

नैयायिक. **वाचोयुक्तिपटुर्वाग्मी वावदूको (ऽतिवक्त्रि) ॥ ३५ ॥**

बहुभाषी.

वद, वदावद और वक्ता (क्तृ) ये ३ वक्ता के नाम हैं । वागीश, वाक्पति ये २ महावक्ता या उत्तम व उग्र बोलनेवाले के नाम हैं । वाचोयुक्ति पटु, या “वाचो-

युक्ति, पटु " वाग्मी (न्) या वागुमी (न्) ये २ नैयायिक या प्रशस्त बोलने वाले के नाम हैं और वावदूक, अतिवक्ता (क्तृ) ये २ बहुभाषी या बहुत बोलने वाले के नाम हैं ॥ ३५ ॥

अवाच्यभाषी. ^{पु.स.न.} (स्या) ^{पु.स.न.} जल्पाक ^{पु.स.न.} (स्तु) ^{पु.स.न.} वाचालो ^{पु.स.न.} वाचाटो ^{पु.स.न.} बहुगर्हवाक् ।
अप्रियवादी. ^{पु.स.न.} (दुर्मुखे) ^{पु.स.न.} मुखराबद्धमुखौ ^{पु.स.न.} शक्लः ^{पु.स.न.} (प्रियंवदे) ॥ ३६ ॥
प्रियवादी.

जल्पाक, स्त्री " जल्पाकी " वाचाल, वाचाट, बहुगर्हवाक् ये ४ बहुत अवाच्य कहनेवाले के नाम हैं । दुर्मुख, मुखर, अबद्धमुख ये ३ अप्रियवादी या अनर्गलमुख वाले के नाम हैं और शक्ल, " शक्त, या शक्त " प्रियंवद ये २ प्रियवक्ता या प्रियवादी के नाम हैं ॥ ३६ ॥

^{पु.स.न.} अप्रकटवादी. ^{पु.स.न.} लोहलः ^{पु.स.न.} (स्याद) ^{पु.स.न.} स्फुटवाग् ^{पु.स.न.} गर्हवादी ^{पु.स.न.} (तु) ^{पु.स.न.} कद्वदः ।
कुवादी. ^{पु.स.न.} (समौ) ^{पु.स.न.} कुवादकुचरौ ^{पु.स.न.} (स्याद) ^{पु.स.न.} सौम्यस्वरोऽस्वरः ॥ ३७ ॥
दोषवादी. ^{पु.स.न.}
क्रूरवादी.

लोहल, अस्फुटवाक् ये २ साफ न बोलनेवाले या अस्फुट बोलनेवाले के नाम हैं । गर्हवादी (न्) कद्वद ये २ कुत्सितभाषी या कुवादीके नाम हैं । कुवाद, कुचर ये २ दोषवादी या कुकथनशील के नाम हैं । ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं और असौम्यस्वर, अश्वर ये २ काकादिकों के समान रूखे स्वरवाले के नाम हैं ॥ ३७ ॥

शब्द करनेवाला ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} रवणः ^{पु.स.न.} शब्दनो ^{पु.स.न.} नान्दीवादी ^{पु.स.न.} नान्दीकरः (समौ) ।
आशिषसे बड़ाई करनेवाला. ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} जडोऽज्ञे ^{पु.स.न.} एडमूक (स्तु वक्तुं श्रोतुमशिक्षिते) ॥ ३८ ॥
महामूढ़ गूंगा व बहिरा.

रवण, शब्दन ये २ शब्द करनेवाले या शब्दशील के नाम हैं । नान्दीवादी, (न्) नान्दीकर ये २ नाटक आदिकों में मङ्गलार्थ भेरी आदि बजानेवाले, आशीर्वाद से स्तुति करनेवाले या स्तुति विशेषवादीके नाम हैं कहा है कि, "जिस से देवता, ब्राह्मण और नृपाल आदिकों की स्तुति आशीर्वाद से संयुक्त होकर वर्तमान होती है इसीसे ' नान्दी ' कहलाती है " उसको जो कहता या करता है उसे ' नान्दीवादी ' और ' नान्दीकरः ' कहते हैं ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं । जड़, स्त्री ' जड़ा ' अज्ञ ये २ इष्ट व अनिष्ट के न जानने वाले महामूढ़ के नाम हैं कहा है कि, " जो पुरुष परवशगामी होकर मोह से इष्ट,

अनिष्ट, सुख और दुःख को नहीं जानता है वह यहां ' जड़संज्ञक ' कहलाता है " और जो कहने व सुनने के लिये अशिक्षित है यानी समर्थ नहीं है वह ' एडमूक ' या " अनेडमूक " कहलाता है यह १ बहिर्ग गूंगा का नाम है ॥ ३८ ॥

पु.स.न.

पु.स.न.

पु.स.न.

पु.स.न.

पु.स.न.

चुपरहनेवाला. तूष्णीशील (स्तु) तूष्णीको नग्नोऽवासा दिगम्बरः ।

नंगा धड़गा. पु.स.न.

पु.स.न.

पु.स.न.

पु.स.न.

निकाला धिकारी निष्कासितोऽवकृष्टः (स्याद्) पध्वस्त (स्तु) धिकृतः ॥ ३९ ॥

तूष्णीशील, तूष्णीक ये २ मौनशील या चुप रहनेवाले के नाम हैं । नग्न, अवासाः (स्) दिगम्बर ये ३ बिना वस्त्रवाले या "नंगाधड़गा" के नाम हैं । इन में ' अवासाः ' सान्त है द्वित्व में ' अवाससौ ' बहुत्व में ' अवाससः ' ये होते हैं । निष्कासित या "निःक्रामित " अवकृष्ट ये २ निकाले हुए के नाम हैं और अपध्वस्त, धिकृत ये २ घुड़के या धिकारे हुए के नाम हैं ॥ ३९ ॥

गयेधमण्डवाला पु.स.न.

पु.स.न.

पु.स.न.

पु.स.न.

धनादि का
दिलानेवाला
अनादर किया
हुआ

आत्तगर्वोऽभिभूतः (स्याद्) दापितः साधितः (समौ) ।

पु.स.न.

पु.स.न.

पु.स.न.

पु.स.न.

प्रत्यादिष्टो निरस्तः (स्यात्) प्रत्याख्यातो निराकृतः ॥ ४० ॥

आत्तगर्व, या " आत्तगन्ध " अभिभूत, या " अभिहत " ये २ टूटे अभिमानवाले के नाम हैं । अथवा अपध्वस्त, धिकृत, आत्तगर्व और अभिभूत ये ४ धिकारे या फटकारे हुए के ही नाम हैं । यह कितने आचार्यों का मत है । दापित या " दायित " साधित ये २ धन आदिकों के दिलानेवाले के नाम हैं । ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं और प्रत्यादिष्ट, निरस्त, प्रत्याख्यात और निराकृत ये ४ अनादर किये हुए के नाम हैं ॥ ४० ॥

पु.स.न.

पु.स.न.

पु.स.न.

पु.स.न.

निकाला हुआ निरुतः (स्यात्) द्विप्रकृतो विप्रलब्ध (स्तु) वञ्चितः ।

ठगा गया

पु.स.न.

पु.स.न.

पु.स.न.

पु.स.न.

टूटे दिलवाला मनोहतः प्रतिहतः प्रतिबद्धो हत (श्व सः) ॥ ४१ ॥

निरुत, विप्रकृत ये २ विवर्ण किये या निकाले हुए के नाम हैं । विप्रलब्ध वञ्चित ये २ छले या ठगे गये के नाम हैं और जिसका मन तोड़ा गया है उसे मनोहत, प्रतिहत, प्रतिबद्ध और हत कहते हैं ये ४ टूटे हुए मनवाले के नाम हैं ॥ ४१ ॥

निन्दित. पु.स.न. पु.स.न.पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

वैधुआ. अधिक्षितः प्रतिक्षितो बद्धे कीलितसंयतौ ।

विपत्ति में पड़ा. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

भय से भगा. आपन्न आपत्प्राप्तः (स्यात्) कान्दिशीको भयद्रुतः ॥४२॥

अधिक्षित, प्रतिक्षित ये २ आक्षेप किये या निन्दा पायेहुए के नाम हैं । बद्ध, कीलित, संयत ये ३ रस्सी आदि से बँधे या कैद कियेहुए के नाम हैं । आपन्न आपत्प्राप्त ये २ विपत्ति में पड़ेहुए के नाम हैं और कान्दिशीक, भयद्रुत ये २ भय से भगेहुए या कहां जाऊं क्या करूं ऐसा कहनेवाले भयभीत के नाम हैं ॥ ४२ ॥

अपवादी. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

चञ्चल. आक्षारितः क्षारितोऽभिश्चस्ते संकसुकोऽस्थिरे ।

कष्टित. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

शोकाकुल. व्यसनार्त्तोपरक्त्रौ (द्रौ) विहस्तव्याकुलौ (समौ) ॥४३॥

आक्षारित, क्षारित और अभिश्चस्ते ये ३ चोरी छिनारा आदि लोकापवाद से दूषित या कलंकित के नाम हैं । संकसुक या संकसूक, अस्थिर ये २ चलस्वभाववाले के नाम हैं । व्यसनार्त, उपरक्त ये २ व्यसनपीडित या देवी व मानुषी पीडावाले के नाम हैं और विहस्त, व्याकुल ये २ शोक आदिसे न कुछकर सकनेवाले के नाम हैं ॥४३॥

शोकादि से भङ्ग पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

गात्रवाला. मर- विक्लवो विह्वलः (स्यात्तु) विवशोऽरिष्टदुष्टधीः ।

यासन्नबुद्धिवाला पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

बैत मारने योग्य आततायी. कश्यः कशार्हे (संनद्धे) त्वाततायी (वधोद्यते) ॥४४॥

विक्लव, विह्वल ये २ शोक आदि से भङ्गगात्रवाले या अपने अङ्गों को ही भारने के लिये असमर्थ के नाम हैं । विवश, अरिष्टदुष्टधी ये २ आसन्न मरणवाले लक्षणों से दूषित मतिवाले के नाम हैं । कश्य, कशार्हे ये २ बैतमारने योग्य या ताड़न करने योग्य के नाम हैं और समीपमें आकर वांछके मारनेवाले को “ आततायी ” (इन्) कहते हैं । यहां वध उपलक्षणमात्र है स्मृतियोंमें कहा है कि “ अग्निदायी, विषदायी, शस्त्रपाती, धनहारी, क्षेत्रहारी और दारापहारी ” ये ६ आततायी कहाते हैं यह १ वध करने में परायण घरफूंकने या विषदेनेवाले आदि का नाम है ॥ ४४ ॥

१ “ कस्यचिच्छौर्यादिकं प्रतिस्पर्धमानस्य दुर्वचनमधिश्चेषः ” (इति राजमुकुटः) ॥

२ कांदिशं गच्छामीति चिन्तयन् पलायितः कान्दिशीकः स्यादिति ॥

३ वध उपलक्षणम् । यत्स्मृतिः—“ अग्निदो गरदश्चैव शस्त्रपाती धनापहः । क्षेत्रदारहरश्चैव वधेते आततायिनः ” (इति धीरस्वामी) ॥

शत्रुता करने पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
 योग्य. शीश काटने योग्य. **द्रेष्ये त्वक्षिगतो वध्यः शीर्षच्छेद्य (इमौ समौ) ।**
 विष देनेयोग्य. पु.स.न. पु.स.न.
 मूसल से मारने योग्य. **विष्यो (विषेण यो वध्यो) मुसल्यो(मुसलेन यः)॥४५॥**

द्रेष्य, अक्षिगत ये २ शत्रुता करने या वैर करने योग्य के नाम हैं । वध्य, शीर्ष-
 च्छेद्य ये २ शीश काटने योग्य के नाम हैं । ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग
 कहाते हैं । जो विषसे वध्य होता है वह 'विष्य' कहलाता है यह १ विष (जहर) देने
 योग्य का नाम है और जो मूसल से मारने योग्य है उसे 'मुसल्य, मुशल्य या मुपल्य'
 कहते हैं यह १ मूसलसे वध करने योग्य का नाम है ॥ ४५ ॥

पुण्यात्मा. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
 पापात्मा. विना विचारे वधादिक **शिशिवदानोऽकृष्णकर्मा चपलश्चिकुरः (समौ) ।**
 करनेवाला. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
 केवल दोष-दर्शी. कपटी. **दोषैकदृक् पुरोभागी निकृतस्त्वनृजुः शठः ॥ ४६ ॥**

शिशिवदान, अकृष्णकर्मा (न) ये २ पुण्यात्मा या पुण्यकर्मा के नाम हैं ।
 शिशिवदान, कृष्णकर्मा (न) ये २ पापात्मा या पापकर्मा के नाम हैं । चपल, चिकुर
 ये २ विना विचारे वधादि कार्यों के करनेवाले के नाम हैं । ये दोनों समानार्थक होकर
 समानलिङ्ग कहाते हैं । दोषैकदृक् (श्) पुरोभागी (न) ये २ दोषमात्र देखने
 वाले के नाम हैं और निकृत, अनृजु, शठ ये ३ टेढ़े या कपटी के नाम हैं ॥ ४६ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
 चुगलखोर. **कर्णोजपः सूचकः (स्यात्) पिशुनो दुर्जनः खलः ।**
 दुष्ट. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
 घातुक. **नृशंसो घातुकः क्रूरः पापो धूर्त (स्तु) वञ्चकः ॥४७॥**
 बली.

कर्णोजप, सूचक ये २ भूले पदार्थ के जतलानेवाले या कानमें दूसरे की निन्दा
 करनेवाले के नाम हैं । पिशुन, दुर्जन, खल ये ३ परस्पर भेद करानेवाले दुर्जन
 के नाम हैं अथवा ' पिशुन ' आदि तीनों चुगलखोरही के पर्याय (नामान्तर) हैं
 यह स्वामी का मत है । नृशंस, घातुक, क्रूर और पाप ये ४ परद्रोहकारी पापी
 या हिंसाशील के नाम हैं और धूर्त, वञ्चक ये २ परप्रतारणशील, छली या
 ठगी करनेवाले के नाम हैं ॥ ४७ ॥

१ खलः सर्पमात्राणि परम्भ्राणि पश्यति । आत्मनो नित्वमात्रेण पश्यन्नपि न पश्यति ॥ १ ॥

सर्पः क्रूरः खलः क्रूरः सर्पात्क्रूरतरः खलः । सर्प एकाकिनं हन्ति खलः सर्वविनाशकृत् ॥ २ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
मूर्ख **अज्ञे मूढयथाजातमूर्खवैधेयबालिशः ।**

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
कृपण **कदर्ये कृपणक्षुद्रकिंपचानमितंपचाः ॥ ४८ ॥**

अज्ञ, मूढ, या “मुग्ध” यथाजात, वैधेय स्त्री “वैधेयी” और बालिश ये ६ अज्ञाता या मूर्ख के नाम हैं और कदर्य, कृपण, क्षुद्र, किंपचान, मितंपच या “किंपच” और “अनमितंपच” ये ५ अधर्म से पुत्र द्वारा आदि को पीडा देते हुए लोभ से धनसंचय करनेहारि कृपण के नाम हैं ॥ ४८ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
दरिद्री या निर्विधनी **निःस्व(स्तु)दुर्विधो दीनो दरिद्रो दुर्गतोऽपि सः) ।**
मँगता या याचक **वनीयको याचनको मार्गणो याचकार्थिनौ ॥ ४९ ॥**

निःस्व, दुर्विध, दीन, दरिद्र और दुर्गत ये ५ धनहीन दीन दुःखी या दरिद्री के नाम हैं और वनीयक या “वनीपक” याचनक, मार्गण, याचक और अर्थी (थिन) ये ५ याचक, मँगता या मांगनेवाले के नाम हैं ॥ ४९ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
अहंकारी शुभयुक्त **अहंकारवानहंयुः शुभंयु(स्तु) शुभान्वितः ।**
देवता पु.स.न.

नर पशु आदि **दिव्योपपादुका (देवा) “नृगवाद्या” जरायुजाः ॥ ५० ॥**

अहंकारवान् (वत्) अहंयुः ये २ अहंकारी के नाम हैं । शुभंयु, शुभान्वित ये २ शुभयुक्त के नाम हैं । जो देवता हैं वे स्वर्ग में रहते हुए अकस्मात् उपजते हैं इस लिये उनको ‘दिव्योपपादुक’ कहते हैं “यहां नरक के बराने के लिये दिव्यपद दिया गया है” माता, पिता आदिकों के देखे हुए कारणों से निरपेक्षावाले अदृष्ट सहकृत गुणों से उपजे हुए जो देवता हैं वे “दिव्योपपादुक” कहलाते हैं यह १ देवताओंका नाम है । नर, गौ आदि प्राणियों को ‘जरायुज’ कहते हैं । आद्यशब्द से गधा, घोड़ा, हाथी आदि जानवरों का ग्रहण किया जाता है ॥ ५० ॥

स्वेदज अयडज (स्वेदजाः) कृमिदंशाद्याः पक्षिसर्पादयोऽण्डजाः) ।

इति प्राणिवर्गः ॥

कीड़े व डांस आदि जीवों को ‘स्वेदज’ कहते हैं । आद्यशब्द से मसा, खटमल, जुआं, चीलुआ आदिकों का ग्रहण किया जाता है । पसीना से उपजने के कारण ऊष्मा स्वेद है उससे पैदा हुए को ‘स्वेदज’ कहते हैं यह १ कीड़े आदिकों का नाम है । पक्षी, सांप आदि जीव ‘अयडज’ कहलाते हैं यानी जो अण्डों से पैदा होते हैं

उन को 'अण्डज' कहते हैं । आदि शब्द से मगर, मछली और चींटी आदिकों का ग्रहण किया जाता है यह १ पक्षी और सांप आदि जीवों का नाम है ॥

इति प्राणिवर्गः ॥

पु. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
वृक्ष, जलता आदि उन्निद (स्तरुगुल्माद्या) उन्निदुन्निज्जमुन्निदम् ॥ ५१ ॥

वृक्ष, गुल्म आदिकों को 'उन्निद्' कहते हैं । आद्यशब्दसे घास, ओषधी, जलता (बेल) आदिकों का ग्रहण किया जाता है । यह १ ज़मीन को फोड़कर निकलने वाले के नाम हैं । अब उन्निदपर्यायों को कहते हैं कि, उन्निद्, उन्निज्ज और उन्निद ये ३ भूमिको फोड़कर उपजनेवाले के नाम हैं ॥ ५१ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
सुन्दर या सुन्दरं रुचिरं चारु सुषमं साधु शोभनम् ।

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
मनोरम कान्तं मनोरमं रुच्यं मनोज्ञं मञ्जु मञ्जुलम् ॥ ५२ ॥

सुन्दर, " स्त्री सुन्दरी या सुन्दरा " रुचिर, चारु, सुषम या " सुषम " साधु, शोभन, कान्त, मनोरम, "मनोहर या मनोहारि (न्)" रुच्य, मनोज्ञ, मञ्जु, मञ्जुल "सौम्य, भद्रक, रम्य, रमणीय और रामणीयक" ये १२ सुन्दर के नाम हैं ॥ ५२ ॥

पु.स.न.
परमसुन्दर (तद्) सेचनकं (तृप्तेर्नास्त्यन्तो यस्य दर्शनात्) ।

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
प्यारा अभीष्टेऽभीप्सितं हृद्यं दयितं वल्लभं प्रियम् ॥ ५३ ॥

जिसके देखने से दृष्टि और मनकी तृप्ति का अन्त नहीं होता है और जो बहुत बार देखा गया भी अधिक प्रीति को उपजाता है वह 'असेचनक' या " असेचनक " कहलाता है यह १ अतिसुन्दर या महासुन्दर का नाम है । अभीष्ट, अभीप्सित, हृद्य, दयित, वल्लभ और प्रिय ये ६ प्यारे, चाहे हुए या अभीष्ट के नाम हैं ॥ ५३ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
अधम निकृष्टप्रतिकृष्टार्वा रेफयाप्यावमाधमाः ।

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

कुपूयकुतिसतावद्यखेटगर्हाणकाः (समाः) ॥ ५४ ॥

निकृष्ट, प्रतिकृष्ट, अर्वा (न्), रेफ, " रेफ या रेफस् " याप्य, अधम, या " अरम " अधम, कुपूय या " कपूय " कुत्सित, अवद्य, खेट, गर्हा, अण्णक, " आण्णक या अण्णक " ये १३ अधम के नाम हैं । ये समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ॥ ५४ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
 मैली या गन्दी वस्तु मलीमसं (तु) मलिनं कञ्चरं मलदूषितम् ।
 पवित्र या साफ़ पु.स.न.पु.स.न.पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
 स्वभावसे पवित्र पूतं पवित्रं मेध्यं (च) वीध (न्तु) विमलात्मकम् ॥५५॥

मलीमस, मलिन, कञ्चर और मलदूषित ये ४ गन्दी या मैली वस्तुके नाम हैं ।
 पूत, पवित्र, मेध्य ये ३ पवित्र या साफ़ के नाम हैं । ये अप्राणी के विषय में कहे गये
 हैं और जहां प्राणीका विषय है वहां ' पवित्रः प्रयतः पूतः ' यह कहा जाता है और
 वीध, विमल " विमलात्मक, या विमलार्थक " ये २ स्वभावसे निर्मल के नाम हैं ॥५५॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
 मलरहित. निर्गिक्तं शोधितं मृष्टं निःशोध्यमनवस्करम् ।
 निरर्थक. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
 खाली या रीता. असारं फल्गु शून्यं (तु) वशिकं तुच्छरिक्तके ॥५६॥

निर्गिक्त, शोधित, मृष्ट, निःशोध्य और अनवस्कर ये ५ दूर किये हुए मलवाले
 या मलरहित के नाम हैं । असार, फल्गु ये २ निरर्थक, निर्बल या साररहित के
 नाम हैं और शून्य या " शून्य " वशिक, तुच्छ और रिक्तक या ' रिक्त ' ये ४
 छूँछे, रीते या खाली के नाम हैं ॥ ५६ ॥

न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
 प्रधान या (स्त्रीवे) प्रधानं प्रमुखं प्रवेकानुत्तमोत्तमाः ।
 मुख्य पु.स.न.पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
 मुख्यवर्षवरेण्या (श्च) प्रवर्हान्वरार्ध्य (वत्) ॥५७॥
 पु.स.न.पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
 परार्ध्याग्रप्राग्रहरप्राग्रयाग्रयाग्रीयमग्रियम् ।

प्रधान, प्रमुख, प्रवेक, अनुत्तम, उत्तम, मुख्य, वर्ष, वरेण्या, प्रवर्ह, अनवरार्ध्य,
 परार्ध्य, अग्र, प्राग्रहर, प्राग्रय, अग्रय, अग्रीय और अग्रिय या " अग्रण, अग्रणी,
 अग्रणि " ये १७ प्रधान या मुख्य के नाम हैं । इनमें, प्रधान, नपुंसक है और ये
 सबही समानार्थक हैं यह ' वत् ' से जाना जाता है ॥ ५७ । १ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
 श्रेष्ठ. श्रेयाञ्छ्रेष्ठः पुष्कलः 'स्या'त्सत्तम(श्चा)तिशोभने ॥५८॥
 पु. पु. पु. पु.
 श्रेष्ठार्थवाचक. (स्युरुत्तरपदे) व्याघ्रपुङ्गवर्षभकुञ्जराः ।

पु. पु. पु.
 सिंहशार्दूलनागा (व्याः पुंसि श्रेष्ठार्थगोचराः) ॥५९॥

श्रेयान्, श्रेष्ठ, पुष्कल, सत्तम और अतिशोभन ये ५ सत्तम, श्रेष्ठ या अत्यन्त

शोभन के नाम हैं । इनमें 'श्रेयान्' सान्त है द्वित्व में श्रेयांसौ और बहुत्व में 'श्रेयांसः' ये होते हैं और यदि व्याघ्र, पुङ्गव, ऋषभ, कुञ्जर, सिंह, शार्दूल और नाग आदि ये उत्तर पदमें वर्तमान होवें तो श्रेयार्थ के वाचक होते हुए पुंलिङ्ग में रहते हैं जैसे कि 'पुरुषो व्याघ्र इव' इस विग्रह में "उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्या-प्रयोगे" इस सूत्रसे समास करनेपर 'पुरुषव्याघ्र' होता है । एवं मुनिपुङ्गव, पुरुषर्षभ, मनुष्यकुञ्जर, नृपसिंह, नृपशार्दूल और नृपनाग आदि शब्द पुंलिङ्ग हैं । आद्यशब्दसे सोम, चन्द्र और मुख आदिकों का ग्रहण किया जाता है उसीसे 'नृसोम' आदि सिद्ध होते हैं ये श्रेयार्थवाचकों के नाम हैं ॥ ५८ । ५९ ॥

पु.स.न.

न.

न.

अप्रधान.

अप्रामथं (द्वयहीने द्वे) अप्रधानोपसर्जने ।

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

विस्तीर्ण.

विशङ्कटं पृथु बृहद्विशालं पृथुलं महत् ॥ ६० ॥

पु.स.न.पु.स.न.पु.स.न.पु.स.न.पु.स.न.

पु.स.न. पु.स.न.

मोटा.

वडोरु विपुलं पीनपीवनी (तु) स्थूलपीवरे ।

अप्रामथ, अप्रधान, उपसर्जन ये ३ अप्रधान के नाम हैं । इनमें 'अप्रधान, उपसर्जन' ये २ स्त्रीपुंलिङ्गों से हीन हैं । यानी नपुंसक लिङ्ग हैं विशङ्कट, स्त्री विशङ्कटी या विशङ्कटा, पृथु, बृहत्, विशाल, पृथुल, महत्, वड्र, या बभ्र, उरु और विपुल ये ६ फैलाव या विस्तीर्ण के नाम हैं और पीन, पीव (नृ) स्त्री 'पीवरी' स्थूल और पीवर ये ४ स्थूल या मोटे के नाम हैं ॥ ६० । ६१ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.पु.स.न.पु.स.न.

थोड़ा

स्तोकाल्पक्षुल्लकाः श्लक्ष्णं सूक्ष्मं दभ्रं कृशं तनु ॥ ६१ ॥

स. स.

पु.

पु.

पु.

पु.

सूक्ष्म या महीन (स्त्रियां) मात्रा त्रुटी (पुंसि) लवलेशकणाणवः ।

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

बहुत थोड़ा

अत्यल्पेऽल्पिष्ठमल्पीयः कनीयोऽणीय (इत्यपि) ॥ ६२ ॥

स्तोक, अल्प, क्षुल्लक, सूक्ष्म, श्लक्ष्ण, दभ्र, कृश, तनु, मात्रा, त्रुटी या "त्रुटि" लव, लेश, कण स्त्री कणी या 'कणिका' और अणु ये १४ सूक्ष्म या महीन के नाम हैं । अथवा किसी आचार्य के मत में स्तोक, अल्प, क्षुल्लक ये ३ थोड़े या अल्प के नाम हैं । सूक्ष्म, श्लक्ष्ण, दभ्र, कृश, तनु, मात्रा, त्रुटी या "त्रुटि" लव, लेश, कण और अणु ये ११ सूक्ष्मके नाम हैं इनमें 'मात्रा, त्रुटी' ये २ स्त्रीलिङ्ग हैं और लव, लेश, कण, अणु ये ४ पुंलिङ्ग हैं और अत्यल्प, अल्पिष्ठ अल्पीयः (स्) कनीयः (स्) या "कणीयः" और अणीयः (स्) ये ५ अत्यल्प या बहुत थोड़े के नाम हैं ॥ ६१ । ६२ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

बहुत या प्रभूतं प्रचुरं प्राज्यमदभ्रं बहुलं बहु ।

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

अधिक पुरुहं पुरु भूयिष्ठं स्फिरं भूय (श्च) भूरि (च) ॥ ६३ ॥

प्रभूत, प्रचुर, प्राज्य, अदभ्र, बहुल, बहु, पुरुह, या “ पुरुह ” पुरु, भूयिष्ठ, स्फिर या “स्फार” भूयः (स्) या “ भूमन् ” और भूरि ये १२ बहुत या अधिक के नाम हैं । इनमें ‘ भूयः ’ सान्त है ॥ ६३ ॥

पु.स.न.

सौ से परे या परश्शता (व्यास्ते येषां परा संख्या शतादिकात्) ।

अधिक. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

गिनने योग्य. गणनीये(तु)गण्येयं संख्यातं गणित(मथ)समं सर्वम् ६४

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

गिने हुए. विश्वमशेषं कृत्स्नं समस्तनिखिलाखिलानि निःशेषम् ।

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

समग्र या संपूर्ण. समग्रं सकलं पूर्णमखण्डं (स्याद्) नूनके ॥ ६५ ॥

जिन संख्येयों की संख्या सौ और सहस्र से अधिक हो वे क्रमसे ‘ परश्शत ’ आदि कहलाते हैं । आद्यशब्द से परस्सहस्र, परोक्ष आदि होते हैं । यह १ सौ से अधिक का नाम है । इसका लक्ष्य कहा है कि, ‘ परःशतानां विदुषां समाज इति ’ यह किसी कवि का वचन संगत होता है । गणनीय, गण्येय या “गाण्येय” ये २ गिनने योग्य या शक्य के नाम हैं । संख्यात, गणित ये २ संख्या किये या गिने हुए के नाम हैं और सम, सर्व, विश्व, अशेष, कृत्स्न, समस्त, निखिल, अखिल, निःशेष, समग्र, सकल, पूर्ण, या “ पूर्व ” अखण्ड और अनूनक या ‘ अनून ’ ये १४ समग्र या संपूर्ण के नाम हैं ॥ ६४ । ६५ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

सघन या गम्भीर घनं निरन्तरं सान्द्रं पेलवं विरलं तनु ।

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

विरल या छिटा समीपे निकटासन्नसंनिवृष्टसनीड (वत्) ॥ ६६ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

समीप या पास संदेशाभ्याशसविधसमर्यादसवेश (वत्) ।

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

उपकण्ठान्ति काभ्येणाभ्यग्रा(अप्य)भितो (ज्ययम्) ॥

घन, निरन्तर, सान्द्र ये ३ निविड, सघन या गम्भिन के नाम हैं । पेलव, विरल और तनु ये ३ विरल या अलग के नाम हैं और समीप, निकट, आसन्न, सन्निकृष्ट, सनीड, सदेश, अभ्यास या ' अभ्यास ' सविध, समर्याद, सवेश या ' संवष ' उपकण्ठ, अन्तिक, अभ्यर्णा, अभ्यग्र और अभितः (स्) ये १५ समीप, निकट या पास के नाम हैं । यहां दो स्थानों में समानार्थवाला " वत् " अव्यय आया है उसीसे ये सबही समानार्थक कहलाते हैं और इनमें " अभितः " यह अव्यय है ॥ ६६ । ६७ ॥

संयुक्त या मिला पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
अत्यन्त समीप संसक्ते (त्व) व्यवहितमपटान्तर (मित्यपि) ।

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
दूर या फासिला नेदिष्ठमन्तिकतमं (स्या) दूरं विप्रकृष्टकम् ॥ ६८ ॥

संसक्त, अव्यवहित, अपटान्तर या " अपदान्तर " ये ३ संयुक्त या मिले हुए के नाम हैं । नेदिष्ठ, अन्तिकतम या " अन्तिक " ये २ अतिनिकट के नाम हैं और दूर, विप्रकृष्टक या विप्रकृष्ट " ये २ दूर के नाम हैं ॥ ६८ ॥

अतिदूर पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
लम्बा चौड़ा दवीय ' श्च ' दविष्ठ ' च ' सुदूरे दीर्घमायतम् ।

गोल ऊंचा पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

झुका हुआ वर्तुलं निस्तलं वृत्तं बन्धुरं ' तू ' न्नतानतम् ॥ ६९ ॥

दवीयः (स्) दविष्ठ, सुदूर ये ३ अत्यन्त दूर के नाम हैं । इनमें 'दवीयः' सान्त है । दीर्घ, आयत ये २ लम्बाई व चौड़ाई के नाम हैं । वर्तुल, निस्तल, वृत्त ये ३ वर्तुल या गोल के नाम हैं और जो स्वभाव से ऊंचा व किसी उपाधि के कारण कुछ झुकासा प्रतीत होवे तो उस बन्धुर या " बन्धूर " और 'उन्नतानत' कहते हैं ये २ ऊँचे होकर झुके हुए के नाम हैं ॥ ६९ ॥

पु.स.न.पु.स.न.पु.स.न.पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

ऊँचा उच्चप्रांशून्नतोदग्रोच्छ्रितास्तुङ्गे (ऽथ) वामने ।

बौना पु.स.न.पु.स.न.पु.स.न.पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.पु.स.न.

धींधे घल न्यगनीचखर्वह्रस्वाः (स्यु) रवाग्रेऽवनतानते ॥ ७० ॥

उच्च, प्रांशु, उन्नत, उदग्र, उच्छ्रित, तुङ्ग या " उत्तुङ्ग " ये ६ उन्नत या ऊँचे के नाम हैं । वामन, न्यक् या "न्यङ्" नी नीची या ' नीचा ' नपुंसक, न्यक् " खर्व या खर्व और ह्रस्व ये ५ छोटेडीलवाले या बौना के नाम हैं । और अवाम, अवन्नत, अन्नत आ "नत " ये ३ अधोमुख या नीचे मुखवाले के नाम हैं ॥ ७० ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

वक्र अरालं वृजिनं जिह्वमूर्मिमत्कुञ्चितं नतम् ।

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

या टेढ़ा आविद्धं कुटिलं भुग्नं वेल्लितं वक्र(मित्यपि) ॥ ७१ ॥

अराल, वृजिन, जिह्व, ऊर्मिमत् या “ उर्मिमत् ” कुञ्चित, नत, आविद्ध, कुटिल, भुग्न, वेल्लित और वक्र ये ११ टेढ़े, लचे या वक्र के नाम हैं ॥ ७१ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

सीधा ऋजावजिह्वप्रगुणौ व्यस्तेत्वप्रगुणाकुलौ ।

आकुल पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

नित्य शाश्वत (स्तु) ध्रुवो नित्यसदातनसनातनाः ॥ ७२ ॥

ऋजु, अजिह्व, प्रगुण ये ३ कुटिलतारहित सीधे के नाम हैं । व्यस्त, अप्रगुण, आकुल ये ३ आकुल या अकुलाने हुए के नाम हैं और शाश्वत, ध्रुव, नित्य, सदातन और सनातन ये ५ ध्रुव या नित्य के नाम हैं ॥ ७२ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

अतिस्थिर. स्थास्तुः स्थिरतरस्थेया (नेकरूपतया तु यः) ।

स्थिर. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

वृश्चादि. (कालव्यापी स) कूटस्थः स्थावरो जङ्गमेतरः ॥ ७३ ॥

स्थास्तु, स्थिरतर, स्थेयान् ये ३ अतिस्थिर के नाम हैं । इनमें ‘स्थेयान्’ सान्त है द्वित्व में ‘स्थेयांसौ’ बहुत्व में ‘स्थेयांसः’ ये होते हैं । जो एकरूपता से यानी एकही स्वभाव से काल का व्यापक आकाश आदि है वह ‘कूटस्थ’ कहलाता है अथवा “ कूटोऽस्त्री निश्चले राशौ ” इस मेदिनीकोष के प्रमाण से “ कूटः निश्चलः सन् तिष्ठतीति कूटस्थः ” जो निहाई के समान निश्चल होता हुआ टिका रहता है उसे ‘कूटस्थ’ कहते हैं यह १ निश्चल का नाम है और स्थावर जङ्गमेतर ये २ वृश्च आदि अचल पदार्थ के नाम हैं ॥ ७३ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

चलनेवाले. चरिणुजङ्गमचरं त्रसमिङ्गं चराचरम् ।

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

कांपनेवाले. चलनं कम्पनं कम्पं चलं लोलं चलाचलम् ॥ ७४ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

चञ्चल. चञ्चलं तरलं (चैव) पारिप्लवपरिप्लवे ।

चरिणु, जङ्गम, चर, त्रस, इङ्ग और चराचर ये ६ चर या चलनेवाले के

नाम हैं । चलन, कम्पन, कम्प या “ चपल, और चटल ” ये ३ कम्पनशील, हिलने या कांपनेवाले के नाम हैं और चल, लोल, चलाचल, चञ्चल, तरल, पारिस्रव और परिस्रव ये ७ चञ्चल के नाम हैं अथवा कितेक आचार्यों के मत में ‘चलन’ से लेकर ‘परिस्रव’ पर्यन्त १० चञ्चल ही के नाम हैं ॥ ७४ । ३ ॥

अधिक, ^{पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.} अतिरिक्तः समधिको दृढसंधिस्तु संहतः ॥ ७५ ॥

^{पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.} बड़ा मिलापी, कक्खटं कठिनं क्रूरं कठोरं निष्ठुरं दृढम् ।

कठिन, ^{पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.}

बहुत बड़ेहुए जरठं मूर्तिमन्मूर्तं प्रवृद्धं प्रौढमेधितम् ॥ ७६ ॥

अतिरिक्त, समधिक ये २ अधिक या बड़े हुए के नाम हैं । दृढसंधि, संहत ये २ बड़े मिलापी या पक्के मेल वाले के नाम हैं और कक्खट या “ खक्खट ” कठिन, क्रूर, कठोर या “ कठोल ” निष्ठुर, दृढ़, जगठ, स्त्री जरठा, मूर्तिमत्, मूर्त ये ६ कठिन या कठोर के नाम हैं और प्रवृद्ध, प्रौढ, एधित ये ३ बहुत बड़े हुए के नाम हैं ॥ ७५ । ७६ ॥

^{पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.} पुराणा, पुराणे प्रतनप्रत्नपुरातनचिरन्तनम् ।

^{पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.}

नया, प्रत्यग्रोऽभिनवो नव्यो नवीनो नूतनो नवः ॥ ७७ ॥

^{पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.}

कोमल, नूतल (श्च) सुकुमारं (तु) कोमलं मृदुलं मृदु ।

^{पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.}

पीछे अन्वगन्वक्षमनुगेऽनुपदं (क्लीबमव्ययम्) ॥ ७८ ॥

पुराण स्त्री “ पुराणी या पुराणा ” प्रतन, प्रत्न, पुरातन और चिरन्तन ये ५ प्राचीन या पुरातन के नाम हैं । प्रत्यग्र, अभिनव, नव्य, नवीन, नूतन, नव और नूतल ये ७ नवीन, नूतन या नये के नाम हैं । सुकुमार, कोमल, मृदुल और मृदु ये ४ कोमल या नरम के नाम हैं और अन्वक्, अन्वक्ष, अनुग और अनुपद ये ४ पीछे के नाम हैं और ये ‘पश्चात्’ इस अर्थ में अव्ययीभाव समास होने से नपुंसक और अव्यय हैं यानी अन्वक्, अन्वक्ष, अनुपद ये तीनों अव्यय और अन्वक्ष,

१ पुराणशब्देन पुरातनशब्दस्य बाधः प्राप्तोऽपि पृषोदरादित्वात्नेति बोध्यम् “ अबाधकान्यपि निपातनानि ” इति भाष्यविरुद्धमिति परिभाषेन्दुशेखरे नागेशः ।

२ युज्यते चान्वक्शब्दस्याव्ययत्वम् “ अन्वग्ययौ मध्यमलोकपालः ” इत्यत्र ‘अन्वक्’ इति रूपापत्तेः । तामित्यत्र “ कर्तृकर्मणोरिति ” षष्ठ्यापत्तेश्च । अव्ययत्वे तु न लोकाव्ययेति षष्ठीनिषेधेन अव्ययादिति ह्यपो लुकात्पुनस्त्वेन न काप्यनुपपत्तिः ॥

अनुपद ये दोनों नपुंसक हैं उसीसे “ अन्वययौ मध्यमलोकपालः ” इसमें ‘अन्वक्’ का अव्ययत्व है ॥ ७७ । ७८ ॥

प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष, प्रत्यक्षं (स्या) दैन्द्रियकमप्रत्यक्षमतीन्द्रियम् ।

एकाग्रमनवाला एकतानोऽनन्यवृत्तिरेकाग्रैकायना (वपि) ॥ ७९ ॥

(अप्ये) कसर्ग एकाग्रयो (ऽप्ये) कायनगतो (ऽपि च) ।

प्रत्यक्ष या “ समक्ष ” ऐन्द्रियक ये २ इन्द्रियों से जाने हुए के नाम हैं । अप्रत्यक्ष, या “ अनध्यक्ष और परोक्ष ” अतीन्द्रिय ये २ इन्द्रियों से नहीं जाने हुए या अप्राज्ञ धर्मादिकों के नाम हैं और एकतान, अनन्यवृत्ति, एकाग्र, एकायन, एकसर्ग, एकाग्र्य, या “ एकाग्र्य ” और कायनगत ये ७ एकाग्र मनवाले या समाहित चित्तवाले के नाम हैं ॥ ७९ । ८० ॥

आदि, पुंस्यादिः पूर्वपौरस्त्यप्रथमाद्या (अथास्त्रियाम्) ॥ ८० ॥

अन्तो, अन्तो जघन्यं चरममन्त्यपाश्चात्यपश्चिमम् ।

व्यर्थ, साफ मोघं निरर्थकं स्पष्टं स्फुटं प्रव्यक्तमुल्वणम् ॥ ८१ ॥

आदि, पूर्व, पौरस्त्य, प्रथम, आद्य या “ आदिम ” और “ अग्रिम ” ये ५ आदि या पहले के नाम हैं । इनमें ‘ आदि ’ पुल्लिङ्गही है । अन्त, जघन्य, चरम, अन्त्य, पाश्चात्य और पश्चिम या “ अन्तिम ” ये ६ अन्त्य के नाम हैं । इनमें ‘ अन्त, पुंनपुंसकही है जैसे कि “ स्वच्छन्दा स्त्री कुलस्यान्तः ” स्वेच्छाचारिणी स्त्री कुल का अन्त करदेती है । मोघ, निरर्थक ये २ निष्प्रयोजन, निष्फल या व्यर्थ के नाम हैं और स्पष्ट, स्फुट, प्रव्यक्त और उल्वण ये ४ स्पष्ट या साफके नाम हैं ॥ ८०।८१ ॥

साधारण, साधारणं (तु) सामान्यमेकांकी (त्वे)क एककः ।

असहाय, भिन्ना “र्थका” अन्यतर एकस्त्वोऽन्येतरा (वपि) ॥ ८२ ॥

साधारण, स्त्री साधारणी या ‘ साधारणा ’ सामान्य ये २ अनेकसम्बन्धी या साधारण के नाम हैं । एकाकी ‘ न् ’ एक और एकक या “ एकल ” ये ३ असमानजातीय असहाय के नाम हैं और भिन्न, अन्यतर या “ एकतर ” एक,

त्व या 'त्वत्' अन्य और इतर ये ६ भिन्नार्थवाचक के नाम हैं इनमें 'त्व' सर्वशब्द के समान है " त्व-त्व " इति द्वावप्यदन्तावन्यपर्यायौ । एक उदात्तोऽपरोऽनुदात्त इत्येके । " एकस्तान्तः " इत्यपरे त्व-त्व ये दोनों अदन्त होकर भिन्नार्थ के वाचक हैं इनमें पहला उदात्त और दूसरा अनुदात्त है और अन्य आचार्यों के मत में तान्त भी 'त्वत्' शब्द कहा जाता है ॥ ८२ ॥

अनेकप्रकारका, पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
जलदबाज़ी, उच्चावचं नैकभेदमुच्चण्डमविलम्बितम् ।

मर्मभेदक, पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
अबाधित अरुंतुदं (तु) मर्मस्पृगबाधं (तु) निर्गलम् ॥ ८३ ॥

उच्चावच, नैकभेद ये २ नानाविध या बहुविध के नाम हैं । उच्चण्ड, अविलम्बित या " अविलम्बन " ये २ उतावली या जलदबाज़ी के नाम हैं । अरुंतुद, मर्मस्पृक् (श्) ये २ मर्मभेदी के नाम हैं और अबाध, निर्गल ये २ अबाधित, बाधारहित या निर्बाधित के नाम हैं ॥ ८३ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
उलटा, प्रसव्यं प्रतिकूलं (स्याद) पसव्यमपधु (च) ।

बायाँ, पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
दाहिना वामं (शरीरे) सव्यं (स्या) दपसव्यं (तु) (दक्षिणे) ॥ ८४ ॥

प्रसव्य, प्रतिकूल, अपसव्य और अपधु ये ४ विपरीत या उलटे के नाम हैं । शरीर में जो बायाँ अङ्ग है उसे 'सव्य' कहते हैं । यह १ वाम या बायें का नाम है और जो शरीर में दाहिना अङ्ग है उसे अपसव्य, या 'अवसव्य' कहते हैं । यह १ दाहिने का नाम है अथवा जो वाम शरीर है वह वाम और सव्य कहा जाता है ये २ वामाङ्ग के नाम हैं और जो दक्षिण शरीर है वह 'अपसव्य' या 'दक्षिण' कहा जाता है ये २ दक्षिणाङ्ग के नाम हैं ॥ ८४ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
संकट, संकैटं (ना तु) सम्बाधः कलिलं गहनं (समे) ।

दुःप्रवेश, पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
संकुल, संकीर्णं संकुलाकीर्णं मुण्डितं परिवापितम् ॥ ८५ ॥

संकट, संबाध ये २ स्वल्प अवकाशवाले मार्ग आदि के नाम हैं । इनमें 'संबाध' पुंलिङ्ग है । कलिल, गहन ये २ दुस्साध्य प्रवेश या दुःख से साध्य मार्ग आदि के नाम हैं । जैसे कि " जगाम गहनं वनम् " गहन वनको चला गया "गहनं शास्त्रं दुश्चान्ति-

१ दक्षिणे यथा— " वामो बाहुर्मुडान्याः करकलितरणत्कङ्क्याली करालो यस्मिन्सव्यो भुजगवल्लववान् " (इत्येकार्थकैरवाकारकौमुदी)

२ भगे योनौ यथा करिहस्तेन संबाधे प्रविश्यान्तर्विलोडिते । उपसर्पन् ध्वजः पुंसः साधनान्तविराजिते (इत्येकार्थकैरवाकारकौमुदी) ॥

मिति ” शास्त्र गहन है यानी बड़े दुःखसे जाना जाता है ये दोनों समानार्थक हैं । संकीर्ण, संकुल, आकीर्ण ये ३ जन आदिकों से अत्यन्त मिश्रित के नाम हैं । जैसे कि (संकीर्णवर्गः) कितेक आचार्यों के मत में ‘ संकीर्णमृषिपत्नीनाम् ’ इस प्रयोग से ये ७ एकार्थवाले हैं और मुण्डित, परिवापित ये २ मूँड़न किये हुए के नाम हैं ॥ ८५ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
गुँथा हुआ, प्रथिते संदितं दृढं विस्मृतं विस्तृतं ततम् ।
फैलाया, पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
भूला हुआ, अन्तर्गतं विस्मृतं (स्या) त्प्राप्तप्रणिहिते (समे) ॥ ८६ ॥
स्थापित

प्रथित, “ ग्रन्थित ” गुम्फित, गुफित या “ गुथित ” मवित, मर्दित, संदित और दृढ ये ३ गुम्फित, गुथे या गठियाये हुए के नाम हैं । विस्मृत, विस्तृत, तत ये ३ विस्तृत या फैले हुए के नाम हैं । अन्तर्गत, विस्मृत ये २ भूले हुए या भूले विषय के नाम हैं और प्राप्त, या ‘ प्रोत ’ प्रणिहित ये २ मिले या थापे हुए के नाम हैं ये दोनों समान अर्थ वाले कहलाते हैं ॥ ८६ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
कँपा, वेल्लितप्रेङ्खिताधूतचलिताकम्पिता धुते ।
पु.स.न.पु.स.न.पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.पु.स.न.पु.स.न.

भेजा नुत्तनुन्नास्तनिष्ठयूताविद्धक्षिप्तेरिताः (समाः) ॥ ८७ ॥

वेल्लित, प्रेङ्खित, आधूत, चलित, आकम्पित और धुत ये ६ कम्पित या कँपाये हुए के नाम हैं और नुत्त, नुन्न, अस्त, निष्ठयूत, आविद्ध, क्षिप्त और ईरित ये ७ प्रेरित, पठाये या भेजे हुए के नाम हैं ये सबही समानार्थक कहलाते हैं ॥ ८७ ॥

चिरा हुआ, पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
चुराया गया, परिक्षिप्तं (तु) निवृतं मूषितं मुषिता (र्थकम्) ।
फैलाया गया, पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
फँका हुआ, पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

गुणा किया प्रवृद्धप्रसृतं न्यस्तनिसृष्टे गुणिताहते ॥ ८८ ॥

परिक्षिप्त, निवृत ये २ प्राकार आदि से चारों ओर वेष्टित या घेरे हुए के नाम हैं । मूषित, मुषित ये २ चोरित या चुराये हुए के नाम हैं । प्रवृद्ध, प्रसृत ये २ पसरे या फैले हुए के नाम हैं । न्यस्त, निसृष्ट ये २ फँके या धरे हुए के नाम हैं और गुणित, आहत ये २ गुणाकिये हुए के नाम हैं ॥ ८८ ॥

बड़ा हुआ, पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
झिपा, निदिग्धोपचिते गूढगुप्ते गुण्डितरूपिते ।
धूलिलिप्त, पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
रसीला, पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
उवाया, पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

झोका में रक्ता दुतावदीर्णे उद्गीर्णोद्यते काचितशिक्षियते ॥ ८९ ॥

निदिग्ध, उपचित ये २ समृद्ध या बढ़े हुए के नाम हैं । गूढ़, गुप्त ये २ गुप्त वस्तु या छिपे हुए के नाम हैं । जैसे कि “ मन्त्रो गुप्तो विधातव्यः ” मन्त्र को गुप्त ही विधान करना चाहिये । गुण्डित या “ गुण्ठित ” रूषित ये २ धूलि से लिये या भरे हुए के नाम हैं । द्रुत, अवदीर्ण ये २ द्रवीभूत या पिघले हुए पदार्थ के नाम हैं । उदगूर्ण, उद्यत ये २ उठाये हुए शस्त्र (हथियार) आदि के नाम हैं और काचित, शिक्वित ये २ छींके में रक्खे हुए पदार्थ के नाम हैं ॥ ८६ ॥

सूषाद्गुथा, पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. १
चन्दनादि लेप, **घ्राणघ्राते दिग्धलिसे समुदक्रोद्धृते (समे) ।**

कृपादि से पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
निकालना, नदी
आदि से घिरा **वेष्टितं (स्या) द्रलयितं संवीतं रुद्धमावृतम् ॥ ८७ ॥**

घ्राण, घ्रात ये २ नाक से सूंघे हुए फूल आदि सुगन्ध के नाम हैं । दिग्ध, लिप्त ये २ चन्दनादि लेप या तेल आदि मलने के नाम हैं । समुदक्त, उद्धृत ये २ कृपा आदि से निकाले हुए जल आदि के नाम हैं । ये दोनों समानार्थक हैं और वेष्टित, द्रलयित, संवीत, रुद्ध और आवृत ये ५ नदी आदिसे घिरे हुए के नाम हैं ॥ ८७ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
टेंडे या टूटे, **रुग्णं भुग्ने (५७) निशितक्ष्णुतशातानि तेजिते ।**

तीखे, पके, पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
लज्जित **(स्याद्रि) नाशोन्मुखं पकं हीणहीतौ (तु) लजिते ॥ ८८ ॥**

रुग्ण, भुग्न ये २ टेंडे, व्यथित, टूटे या भग्न के नाम हैं । निशित या ‘निशात’ क्षणुत, शात और तेजित ये ४ सान आदिकों से तीखे किये या पैनाये हुए के नाम हैं । विनाशोन्मुख, पक ये २ पके हुए या निकट विनाश होने वाले के नाम हैं और हीण, हीत और लज्जित ये ३ लजीले या लज्जावाले के नाम हैं ॥ ८८ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
वरण किये, **वृते (तु) वृत्तवावृत्तौ संयोजित उपाहितः ।**

मिलाये, पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
मिलने योग्य, **प्राप्यं गम्यं समासाद्यं स्यन्नं रीणं स्तुतं स्नुते ॥ ८९ ॥**
बढ़ते हुए

वृत्त, वृत्त, वावृत्त या “ व्यावृत्त ” और “ आवृत्त ” ये ३ स्वयंवर आदिकों में वरण किये हुए के नाम हैं । जैसे कि “ पौरोहित्याय भगवान् वृत्तः काव्यः किला-सुरैः ” असुरों ने पौरोहित्य के लिये भगवान् शुक्रजी का वरण किया । संयोजित या “ संयोगित ” उपाहित ये २ संयोग किये या मिलाये हुए के नाम हैं । प्राप्य,

१ समे इति ‘प्रवृद्धप्रसूते’ इत्यारभ्य ‘समुदक्रोद्धृते’ इत्यन्तमन्वेतीति भावः ॥

२ केचित्तु वाग्रहणं वृत्तधातोरान्वयवमिच्छन्ति । ततोवावृत्त्यमानासौ रामशालां न्यविधत् (इतिभट्टिः) ॥

गम्य, समासाद्य ये ३ प्राप्त होने शक्य या योग्य के नाम हैं और स्यन्न, रीणा, स्तुत और स्तुत या प्रस्तुत ये ४ बहते या टपकते हुए के नाम हैं ॥ ६२ ॥

जोड़े हुए, ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} **संगूढः(स्या)त्संकलितोऽवगीतः ख्यातगर्हणः ।**

निन्दित, ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.}

नानाभांति **विविधः (स्या)द्बहुविधो नानारूपः पृथग्विधः ॥ ६३ ॥**

संगूढ, संकलित ये २ जोड़े हुए अङ्कादि के नाम हैं । जैसे कि दो-तीन-और पाँच को संकलित किया तो दश हुए । अवगीत, ख्यातगर्हण ये २ निन्दित के नाम हैं और विविध, बहुविध, नानारूप, पृथग्विध ये ४ नानारूप या नानाभांति के नाम हैं ॥ ६३ ॥

धिकारे, ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} **अवरीणोधिकृत (श्चाप्य) वध्वस्तोऽवचूर्णितः ।**

सहज किये, ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.}

बाजते **अनायासकृतं फाण्टं स्वनितं ध्वनितं(समे) ॥ ६४ ॥**

अवरीण, धिकृत ये २ निन्दितमात्र के नाम हैं । अवध्वस्त या “अपध्वस्त” अवचूर्णित ये २ चूर्ण किये या पिसे हुए के नाम हैं । अनायासकृत, फाण्ट ये २ अनायास किये हुए काढ़ाविशेष के नाम हैं और स्वनित, ध्वनित ये २ शब्द किये या बाजते हुए के नाम हैं ये दोनों समानार्थक कहलाते हैं ॥ ६४ ॥

^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} **बद्धे संदानितं मृतमुदितं संदितं सितम् ।**

अच्छे पके, ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^१ ^{पु.स.न.}

पके घी आदि **निष्पक्वं कथितं(पाके क्षीराज्यपयसां) शृतम् ॥ ६५ ॥**

बद्ध, सन्दानित, मृत या “मूर्ण” उदित संदित और सित ये ६ बँधे हुए के नाम हैं । इनमें उदित, संदित इन दोनों में उत्पूर्वक व संपूर्वक ‘दो अवखण्डने’ धातु बन्धनार्थक है । निष्पक्वं, कथित ये २ भली भाँति पके हुए काढ़ा विशेष के नाम हैं और दूध, घी, जलों के पाक में ‘शृत’ होता है जैसे कि “दुग्धं शृतम्—शृतं घृतम्—शृतं जलम्” पका दूध, पका घी, और पका पानी है यह १ पके हुए दूध, घी आदि का नाम है ॥ ६५ ॥

^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} **निर्वाणो(मुनिवह्न्यादौ) निर्वात(स्तु गतानिले) ।**

पवनरहित, ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.}

पके, **पक्वं (परिणते) गूनं (हन्ने) मीढं(तु) मूत्रिते ॥ ६६ ॥**

हगे, मूत्रे

मुनि और अग्नि आदिकों में 'निर्वाण' होता है । जैसेकि 'निर्वाणो मुनिः'—
मुनि निर्वाण हुआ यानी निर्मुक्त होगया । “निर्वाणो वह्निः” अग्नि निर्वाण हुआ
यानी बुझ गया । आदि शब्दसे “निर्वाणो हस्ती” हाथी निर्वाण हुआ यानी
ढूबगया । यह १ निर्मुक्त आदिकों का नाम है । पवन क निकलजाने पर 'निर्वात'
होता है जैसेकि “निर्वातो वातः” पवन निकल गया । यह १ पवनरहित का नाम
है । पक्क, परिणत ये २ पके या पाक में प्राप्तहुए के नाम हैं । गून, हन्न ये २ गुदा
से निकाली विष्टा या दिशा फिरे व हगके नाम हैं और मीढ, मृत्रित ये २ उपस्थ
से निकालेहुए मूत्र या लघुशंका कियेके नाम हैं ॥ ६६ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

पाँदे किये क्षमा- पुष्टे (तु) पुषितं सोढे क्षान्तमुद्धान्तमुद्गते ।
वान् वान्त किये

इन्द्रियजित् पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

शान्त किये मांगे दान्त(स्तु) दमिते शान्तः शमिते प्रार्थितेऽर्दितः ॥ ६७ ॥

पुष्ट, पुषित ये २ पोषण कियेहुए या मोटे के नाम हैं । सोढ, क्षान्त ये २ क्षमा-
युक्त या क्षमा में प्राप्तहुए के नाम हैं । उद्धान्त “उद्धान या उद्धान” और उद्गत ये २
बमनसे त्यागेहुए अन्न आदिके नाम हैं । दान्त, दमित ये २ दमन किये बैल आदि
या इन्द्रियों को रोकेहुए के नाम हैं । जैसेकि “दमितमिन्द्रियम्” इन्द्रिय को दमन
किया । शान्त, शमित ये २ शमन में प्राप्त किये के नाम हैं जैसेकि “औषधैः शान्तो
रोगो निर्वर्तित इत्यर्थः” औषधियों से रोग को शान्त किया यानी मिटादिया और
अन्यन्त के अभाव में “शान्तो रोगो निवृत्त इत्यर्थः” रोग निवृत्त हुआ और प्रार्थित,
अर्दित ये २ याचित या माँगेहुए के नाम हैं ॥ ६७ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

जानेहुए ढँके ज्ञप्त(स्तु) ज्ञपिते छन्नश्छादिते पूजितेऽश्वितः ।
पूजित पूर्ण

केशित पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

समाप्त पूर्ण(स्तु) पूरिते क्लिष्टः क्लिशितेऽवसिते सितः ॥ ६८ ॥

ज्ञप्त, ज्ञपित ये २ बोधमें प्राप्त या जाने हुए के नाम हैं । छन्न, छादित ये २
ढँके या छाये हुए के नाम हैं । पूजित, अश्वित या “अर्चित” ये २ पूजित या
पूजा किये हुए क नाम हैं । जैसेकि, “जगाम भिक्षुभिः साकं नरदेवेन पूजितः”
(इति भागवते) पूर्ण, पूरित ये २ पूर्ण या पूरा कियेहुए के नाम हैं । क्लिष्ट, क्लिशित
ये २ क्लेश में प्राप्त हुए के नाम हैं और अवसित, सित ये २ समाप्त के नाम हैं ॥ ६८ ॥

जले हुए, पुष्टप्लुष्टोषिता (दग्धे) तष्टत्वष्टौ (तनूकृते) ।
 सूक्ष्मकिये, पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
 छेदे, पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
 विचारे वेधितच्छिद्रितौ (विद्धे) विन्नवित्तौ (विचारिते) ॥६६॥

पुष्ट, प्लुष्ट, उपित और दग्ध ये ४ भस्म किये या जले हुए के नाम हैं । तष्ट, त्वष्ट, तनूकृत ये ३ स्थूलको सूक्ष्म करने या पतला करने के नाम हैं । जैसेकि “ तष्टं काष्ठं शस्त्रेण ” हथियार से काठको छीला यानी पतला किया । वेधित, छिद्रित, विद्ध ये ३ बेधे हुए के नाम हैं जैसेकि (कर्णों विद्धौ) कानोंको वेधन किया आर विन्न, वित्त, विचारित ये ३ प्राप्त या विचारे हुए के नाम हैं ॥ ६६ ॥

निस्तेज पि- (निष्प्रभे) विगतारोकौ (विलीने) विद्रुतद्रुतौ ।
 घला सिद्ध पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
 हुआ फाड़गया (सिद्धे) निर्वृत्तनिष्पन्नौ (दारिते) भिन्नभेदितौ ॥१००॥

निष्प्रभ, विगत, अगोक ये ३ निस्तेज या दीप्तिरहित के नाम हैं । विलीन, विद्रुत, द्रुत ये ३ पिघले या टपिले हुए घी आदि के नाम हैं । सिद्ध, निर्वृत्त, निष्पन्न ये ३ सिद्ध या तैयार हुए के नाम हैं और दारित, भिन्न, भेदित ये ३ भेदन किये या फाड़े हुए के नाम हैं ॥ १०० ॥

बुने वस्त्रादि उतं स्यूतमुतं (चेति त्रितयं तन्तुसन्तते) ।
 पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
 नमस्कार किये स्यादहितेनमस्यितनमसितमपचायितार्चितापचितम्

उत, स्यूत, उत और तन्तुसन्तत ये ४ सूत के फैलाने या बुने वस्त्र आदि के नाम हैं । अथवा डोरों के विस्तार करने में उत, स्यूत और उत ये तीनों होते हैं ये ३ सूत के विस्तार करने के नाम हैं यह कितेक आचार्यों का मत है जैसे कि “ प्रोतः पटः तन्तुभिरनुस्यूत इत्यर्थः ” डोरों से कपड़ा बुनागया । अर्हित, नमस्यित, नमसित, अपचायित, अर्चित और अपचित ये ६ पूजित या पूजा किये हुए के नाम हैं ॥ १०१ ॥

पूजा किये वरिवसिते वरिवस्यितमुपासितं चोपचरितं (च) ।
 पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
 तपे या तपाये सन्तापितसन्तप्तौ धूपितधूपायितौ (च) दून (श्च) १०२ ॥

१ “ त्रौण्यस्त्रिप्लुष्टमिदं मदङ्गमिति भागवतम् ” ॥

२ “ द्रुतं शीघ्रविलीनयोः ” (इति हैमः) ॥

वरिवसित, वरिवस्यित, उपासित और उपचरित ये ४ सेवित या शुश्रूषित के नाम हैं और संतापित, संतप्त, धूपित, धूपायित और दून ये ५ संतापित या दुःखी के नाम हैं ॥ १०२ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
हर्षित, (हृष्टे) मत्तस्तृप्तः प्रह्वन्नः प्रमुदितः प्रीतः ।

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
कटे इष्ट छिन्नं छातं लूनं कृत्तं दातं दितं छितं वृक्कणम् ॥१०३॥

हृष्ट, मत्त, तृप्त, प्रह्वन्न, प्रमुदित और प्रीत ये ६ प्रसन्न, हर्षित या आनन्दित के नाम हैं और छिन्न, छात, लून, कृत्त, दात, दित, छित और वृक्कण ये ८ खण्डित या कटे हुए के नाम हैं ॥ १०३ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
चुये, स्वस्तं ध्वस्तं भ्रष्टं स्कन्नं पन्नं च्युतं गलितम् ।

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
मिले लब्धं प्राप्तं विन्नं भावितमासादितं (च) भूतं (च) ॥१०४॥

स्वस्त, ध्वस्त, भ्रष्ट, स्कन्न, पन्न, च्युत, गलित ये ७ चुये, टपके या गिरे हुए के नाम हैं और लब्ध, प्राप्त, विन्न, भावित, आसादित और भूत ये ६ मिले या पाये हुए के नाम हैं ॥ १०४ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
इंदे, अन्वेषितं गवेषितमन्विष्टं मार्गितं मृगितम् ।

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
गीले आर्द्रं सार्द्रं क्लिन्नं तिमितं स्तिमितं समुन्नमुत्तं (च) ॥१०५॥

अन्वेषित, गवेषित, अन्विष्ट, मार्गित और मृगित ये ५ खोजने या ढूँढ़ने के नाम हैं जैसेकि, “ इतस्ततो गवेषितोऽपि तस्करो मया नो दृष्टः ” इधर उधर ढूँढ़े हुए भी चोर को मैंने नहीं देखा । आर्द्र, सार्द्र, क्लिन्न, तिमित, स्तिमित, समुन्न और उत्त ये ७ ओदे या गीले के नाम हैं । जैसेकि, “ अश्रुभिस्तिमितलोचनो जनोऽयमिति ” यह प्राणी आंसुओं से गीले नयनोंवाला है ॥ १०५ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
रखाये, त्राणं त्रातं रक्षितमवितं गोपायितं गुप्तम् ।

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
अपमानित अवगणितमवमतावज्ञाते अवमानितं (च) परिभूते ॥१०६॥

१ छिन्नं कृत्ते त्रिलिङ्ग्यां स्यादशुद्ध्यामपि योषिति” (इति मेदिनी) ॥

२ तल्लक्ष्यम्—त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन त्रातं त्वया समरमूर्धनि तेपि हत्वा (इति मार्कण्डेयः) ॥

३ रक्षितं रामनामभिरिति ॥

त्राण, त्रात, रक्षित, अवित्र, गोपायित और गुप्त ये ६ रखाये या पाले हुए के नाम हैं और अवगणित, अवमत, अवज्ञात, अवमानित और परिभूत ये ५ अनादृत, तिरस्कृत या अपमान किये हुए के नाम हैं ॥ १०६ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
त्यागेहुए, त्यक्तं हीनं विधुतं समुज्झितं धूतमुत्सृष्टम् ।

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
कहेहुए उक्तं भाषितमुदितं जल्पितमाख्यातमभिहितं लपितम् ॥

त्यक्त, हीन, विधुत, समुज्झित, धूत और उत्सृष्ट ये ६ छोड़े या त्यागे हुए के नाम हैं और उक्त, भाषित, उदित, जल्पित, आख्यात, अभिहित और लपित ये ७ कहे या बखाने हुए के नाम हैं ॥ १०७ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
ज्ञात या विदित, बुद्धं बुधितं मनितं विदितं प्रतिपन्नमवसितावगते ।

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
अङ्गीकृत या उरीकृतमुररीकृतमङ्गीकृतमाश्रुतं प्रतिज्ञातम् ॥ १०८ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
स्वीकार किया संगीर्णविदितसंश्रुतसमाहितोपश्रुतोपगतम् ।

बुद्ध, बुधित, मनित, विदित, प्रतिपन्न, अवसित और अवगत ये ७ ज्ञात, विदित या जाने हुए के नाम हैं और उरीकृत या “ उरीकृत ” उररीकृत, अङ्गीकृत, आश्रुत, प्रतिज्ञात, विदित या “ संविदिन ” संश्रुत, या “ प्रतिश्रुत ” समाहित, उपश्रुत और उपगत ये ११ स्वीकार या अङ्गीकार किये के नाम हैं ॥ १०८ । ३ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
प्रशस्त या ईलितशस्तपणायितपनायितप्रणुतपणितपनितानि ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
सराहना किये अपिगीर्णवर्णिताभिष्टुतेडितानिस्तुतार्थानि ।

ईलित, शस्त, पणायित, पनायित, प्रणुत, पणित, पनित, अपिगीर्ण या ‘ गीर्ण ’ वर्णित, अभिष्टुत, ईडित और स्तुत ये स्तुति अर्थ वाले कहाते हैं ये १२ प्रशस्त या स्तुति किये के नाम हैं ॥ १०९ । ३ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
खाये, भक्षितचर्वितलिसप्रत्यवसितगलितखादितप्सातम् ।

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
चबाये अभ्यवहृतान्नजग्धग्रस्तग्लस्ताशितं भुक्ते ।

भक्षित, चर्वित, लिप्त या “ लीड ” प्रत्यवसित, गिलित या “ गिरित ” खादित, प्सात, अभ्यवहृत, अन्न, जग्ध, या “ जग्ध ” अस्त, ग्लम्त, अशित और भुक्त ये १४ भोजन किये या खाये हुए के नाम हैं ॥ ११० । ३ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.पु.स.न. पु.म.न. पु.स.न.

अतिशयार्थ-
वाची ये ६
शब्द हैं

क्षेपिष्ठक्षोदिष्ठप्रेष्ठवरिष्ठस्थविष्ठवंहिष्ठाः ॥ १११ ॥

पु.

(क्षिप्रक्षुद्राभीप्सितपृथुपीवरबहुप्रकर्षार्थाः) ।

क्षेपिष्ठ आदि क्षिप्र आदिकों के प्रकर्षार्थक हैं यानी जिन्होंके प्रकर्ष अर्थ हैं वे प्रकर्षार्थ कहलाते हैं वैसेही अतिशयविशिष्ट क्षिप्रादिकों में क्रम से वर्तते हैं जैसे कि, क्षेपिष्ठ, यह १ अतिशय फेंकने योग्य का नाम है । क्षोदिष्ठ, यह १ अतिशय क्षुद्रका नाम है । प्रेष्ठ, यह १ अतिशय अभीप्सितका नाम है । वरिष्ठ, यह १ अतिशय पृथुका नाम है । स्थविष्ठ, यह १ अतिशय स्थूल (मोटे) का नाम है और वंहिष्ठ, यह १ अतिशय बहुलका नाम है यहां अभीप्सित प्रियका पृथु उरुका पीवर स्थूल का और बहु बहुलका पर्याय है ॥ १११ । ३ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

अतिशयवाची
साधिष्ठ आदि

साधिष्ठद्राधिष्ठस्फेष्ठगरिष्ठहसिष्ठवृन्दिष्ठाः ॥ ११२ ॥

(वाढव्यायतबहुगुरुवामनवृन्दारकातिशये) ।

इति विशेष्यनिघ्नवर्गः ॥

वाढ आदिकों के अतिशय अर्थ में साधिष्ठ आदि क्रम से वर्तते हैं और यहा व्यायत-बहु-वामन ये दीर्घ-स्फिर-ह्रस्व इन्हींके पर्याय हैं । जैसेकि, साधिष्ठ, यह १ अतिशय वाढका नाम है । द्राधिष्ठ, यह १ अतिशय दीर्घ का नाम है । स्फेष्ठ, यह १ अतिशय स्फिर यानी अधिकता का नाम है । गरिष्ठ, यह १ अतिशय गुरु का नाम है । ह्रसिष्ठ, यह १ अतिशय बौने या छोटे का नाम है और वृन्दिष्ठ, यह १ अतिशय मुख्य का नाम है ॥ ११२ । ३ ॥

इति विशेष्यनिघ्नवर्गविवरणम् ॥

अथ संकीर्णवर्गं व्याख्यायते ॥

क्रिया, वारंवार प्रकृतिप्रत्ययाद्यर्थैः संकीर्णै लिङ्गमुन्नयेत् ।

चलना

कर्म क्रिया तत्सातत्ये गम्ये स्युरपरस्परः ॥ १ ॥

१ नैरन्तर्याभावे तु अपरपराः सकृन्वृत्तंतीति ॥

अब पूर्वाक्त शब्दों को परस्पर मिल जाने की भयसे जो पहले नहीं कहे थे उनके संग्रह के लिये संकीर्णवर्ग का आरम्भ करते हैं कि, संकीर्णार्थों से और संकीर्णलिङ्गों से आरम्भ होने के कारण संकीर्णवर्ग में प्रकृति व प्रत्यय आदि अर्थों से पुंस्त्रीनपुंसकलिङ्गों का विचार कर जैसेकि, 'अपरस्परः' यह लिङ्गविशेष-अभिधायि प्रत्यय के अविधान से प्रकृति है और इसके 'परवल्लिङ्गम्' इस अतिदेश से परशब्द का ही लिङ्ग होता है और सर्वनामसंज्ञा होने से परशब्द तीनों लिङ्गों में रहता है और 'द्वन्द्वे च' यह निषेध भी नहीं लगता है क्योंकि उसके समुदायविषयत्व से अवयवविषयत्व का अभाव है अर्थात् 'अपरस्परः' यहां विभक्ति को प्रकृति होने से प्रकृति है उसका निरन्तर क्रियासंबन्ध से क्रियायोग है अपरत्वादि गुणयोग भी है ऐसेही गुणद्रव्य और क्रियायोग की उपाधियों से परगामियों का अभिधेयलिङ्गत्व है, प्रत्ययार्थ से जैसेकि, 'शान्तिः' यहां 'क्तिन्' के विधान से स्त्रीलिङ्ग है, 'विधूननम्' यहां 'ल्युट्' के विधान से नपुंसक है आद्यशब्द से रूपभेदादिकों का ग्रहण किया जाता है, रूपभेद से कर्म आदिकों का स्त्रीवत्त्वादि है और साहचर्य से भी (डिम्बे डमरविप्लवो) यहां डिम्बादिकों का पुंस्त्वादि है अथवा भिन्नजातीय लिङ्ग से संसर्ग होने पर इस वर्ग में और वर्गान्तर में भी प्रकृत्यर्थादिकों से पुंस्त्वादि जानना चाहिये और लिङ्गसंग्रह में वक्ष्यमाणा लिङ्ग को भी जानना चाहिये यह उन्नेयत्व से कहा गया । कर्म (न्) क्रिया ये २ क्रिया के नाम हैं और क्रिया व क्रियावानों के नैरन्तर्य होने पर 'अपरस्परः' ये होते हैं । पण्डितों ने क्रिया के नैरन्तर्य में 'अपस्परम्' कहा है यह भागुरिका मत है और क्रियावानों के नैरन्तर्य में तीनों लिङ्ग होते हैं जैसेकि, "अपरस्परः सार्था गच्छन्ति" अपर व परसमूह निरन्तर जाते हैं । और "अपरस्परः स्त्रियो गच्छन्ति" अपर और पर स्त्रियां हमेशा जाती हैं और "अपरस्परानि कुलानि" अपर और पर कुल हैं यह १ क्रिया व क्रियावानों के नैरन्तर्य का नाम है ॥ १ ॥

न.

न.

साकल्यवचन, (साकल्यासङ्गवचने) पारायणतुरायणे ।

आसंगवचन,
स्वतन्त्रता, वे-

स.

स.

न.

कारण स्थिति यहच्छा स्वैरिता (हेतुशून्या त्वास्था) विलक्षणम् ॥ २ ॥

साकल्यवचन को 'पारायण' और आसङ्गवचन को परायण, तुरायण या त्वरायण कहते हैं यानी 'पारायण' यह १ साकल्यवचन का नाम है और 'परायण' यह १ आसंगवचन का नाम है और पीयूषव्याख्या में परायण के स्थान में तुरायण या त्वरायण को पढ़ते हैं । यहच्छा, स्वैरिता या "स्वैरता" ये २

स्वतन्त्रता या स्वच्छन्दता के नाम हैं और जो कारणरहित स्थिति है उसे 'विज्ज-
क्षण' कहते हैं यह १ विना कारण स्थिति का नाम है ॥ २ ॥

शान्ति, पु. शमथ(स्तु) शमःशान्तिर्दान्ति(स्तु) दमथो दमः ।
इन्द्रियनिग्रह, पु. स. स. पु. पु.
सुकर्म, न. न. न. न.
महादान अवदानं कर्मवृत्तं काम्यदानं प्रवारणम् ॥ ३ ॥

शमथ, शम, शान्ति ये ३ चित्तशान्ति के नाम हैं । दान्ति, दमथ, दम ये ३
बाह्येन्द्रियनिग्रह के नाम हैं । अवदान या 'अपदान' कर्मवृत्त ये २ प्रशस्त या सुकर्म
के नाम हैं और काम्यदान, प्रवारण, "प्रहारण" या 'प्रचारण' ये २ महा-
दान के नाम हैं ॥ ३ ॥

वशीकरण, स. न. न.
उच्चाटन, वशक्रिया संवननं मूलकर्म 'तु' कार्मणम् ।
काँपना, न. न. न. न. न.
अघाया विधूननं विधुवनं तर्पणं प्रीणनावनम् ॥ ४ ॥

वशक्रिया, संवनन, "संवपन, संवदन या संवदना" ये २ मणिमन्त्र आदि से
वशीकरणका नाम है । इनमें "स्यात्संवदनमालोचेवशीकारे नपुंसकम्" (इति मेदिनी)
इस प्रमाण से 'संवदन' नपुंसक है । मूलकर्म, कार्मण ये २ औषधियों की मूल
से किये हुए उच्चाटन आदि कर्म के नाम हैं । विधूनन, या "विधुनन" विधुवन ये
२ काँपने या हिलने के नाम हैं और तर्पण, प्रीणन और अवन ये ३ तृप्ति या अ-
घाने के नाम हैं ॥ ४ ॥

रक्षा, सीना, स. न. न.
पर्याप्तिः 'स्या'त्परित्राणं हस्तवारण (मित्यपि) ।
फूटना न. न. स. पु. न. स.
सेवनं सीवनं स्यूतिर्विदरः स्फुटनं भिदा ॥ ५ ॥

पर्याप्ति, परित्राण, हस्तवारण या "हस्तधारण" ये ३ बधोद्यत के वारण
यानी रोकने के नाम हैं । सेवन, सीवन, स्यूति अथवा सेव, सेवन, स्यूति ये ३ सूची-
क्रिया या सीने के नाम हैं और विदर, स्फुटन या 'स्फोटन' भिदा ये ३ विदारने
या फूटने के नाम हैं ॥ ५ ॥

न. पु. पु. स.
शापना, अनुभव आक्रोशनमभीषङ्गः संवेदो वेदना (न ना) ।

ज्ञान, न. स. स. स. स. स.
सर्वत्र व्याप्त, मिश्रा समूच्छन्नमभिव्यासिर्याच्याभिक्षार्थनार्दना ॥ ६ ॥

आक्रोशन, अभीषङ्ग, या अभिषङ्ग ये २ गाली देने, कोसने या धिक्कारने के नाम हैं । संवेद, वेदना ये २ अनुभवज्ञान के नाम हैं इनमें 'वेदना' पुलिङ्ग नहीं है इस लिये भाव में 'ल्युट्' करने पर 'वेदनम्' तपुंसक भी है । समूच्छन्न, अभिव्याप्ति ये २ सर्वत्र व्याप्ति या चारों ओर फैले हुए के नाम हैं और याच्या, भिक्षा, अर्थना और अर्दना ये ४ याचना करने या मांगने के नाम हैं ॥ ६ ॥

न. न. न. न.
काटना, कुश- वर्धनं छेदने (ऽथ द्वे) आनन्दनसभाजने ।

लानन्द, न. पु. पु. पु. स.
उत्तमोपदेश, हानि आप्रच्छन (मथा) आयाः संप्रदायः (क्षये) क्षिया ॥ ७ ॥

वर्धन, छेदन ये २ काटने या छाटने के नाम हैं । आनन्दन या "आमन्त्रण" सभाजन या "स्वभाजन" आप्रच्छन ये ३ आलिङ्गन, कुशलप्रश्न आदिकों से विहित आनन्द के नाम हैं । आम्नाय, संप्रदाय ये २ गुरुपरंपरा से प्राप्त उत्तम उपदेश के नाम हैं और क्षय, क्षिया ये २ अपचय या हानि के नाम हैं ॥ ७ ॥

पु. पु. पु. स. पु. न. पु. पु.
लेना, चाहना, (ग्रहे) ग्राहो वशः (कान्तौ) रक्षण (स्त्राणे) रणः (कणे) ।
रक्षा, शब्द, पु. पु. स. पु. पु. स. पु. स.
छेदना, पकाना, वृत्ताना, वरदान व्यधो (वेधे) पचा (पाके) हवो (हूतौ) वरो (वृत्तौ) ॥ ८ ॥

ग्रह, ग्राह ये २ ग्रहण के नाम हैं । वश, कान्ति ये २ इच्छा, चाहना या अभिलाषा के नाम हैं । रक्षण या "रक्षा" त्राण ये २ रक्षण के नाम हैं । रण या "वण" कण ये २ शब्द करने या बोलने के नाम हैं । व्यध, वेध ये २ वेधन के नाम हैं । पचा, पाक ये २ पकाने या पाक करने के नाम हैं । हव, हूति ये २ पुकारने या बुलाने के नाम हैं और वर, वृत्ति ये २ वेष्टन, वेर, वरदान या भक्ति के नाम हैं ॥ ८ ॥

पु. पु. पु. पु. स. स. पु. स.
जलाना, नीति, आपः (प्लोषे) नयो (नाये) ज्यानि (जीर्णौ) भ्रमो (भ्रमौ) ।
जीर्ण, भ्रम, स. स. स. स. स. स. पु. पु.
बढ़ती, प्रतिष्ठता, स्फाति (वृद्धौ) प्रथा (ख्यातौ) स्पृष्टिः (पृक्तौ) स्नवः (स्त्रवे) ६

ओष, प्लोष, या ' प्रोष ' ये २ दाह या जलाने के नाम हैं । नय, नाय ये २ नीति के नाम हैं । ज्यानि, जीर्णि ये २ जीर्णता के नाम हैं । भ्रम, भ्रमि ये २ भ्रान्ति या फिरने के नाम हैं । स्फाति, वृद्धि ये २ वृद्धि या बढ़ती के नाम हैं । प्रथा, ख्याति ये २ प्रख्याति या प्रसिद्धता के नाम हैं । स्पृष्टि, पृक्ति ये २ स्पर्श करने या छूने के नाम हैं और स्नव, स्त्रव या " स्नाव और स्त्राव " ये २ बहने, चूने या टपकने के नाम हैं ॥ ६ ॥

स. स. न. स. म. स.
बढ़ना, फुरना, विधा (समृद्धौ) (स्फुरणे) स्फुरणा (प्रमितौ) प्रमा ।
सत्यज्ञान, जनना, स. पु. पु. पु. पु. पु.
घी आदिकाभरना या टपकना, ग्लानि प्रसूतिः (प्रसवे) (श्च्योते) प्राधारः क्लमथः (क्लमे) ॥ १० ॥

विधा, या " एधा " समृद्धि ये २ धन दीलत या संपदा के नाम हैं । स्फुरण, " स्फुलन या स्फोरण " स्फुरण, या " स्फागण " स्फुरणा ये २ स्फुरण या स्मरण के नाम हैं । प्रमिति, प्रमा ये २ यथार्थज्ञान के नाम हैं । प्रसूति, प्रसव ये २ गर्भ-विमोचन उत्पत्ति या प्रेरणा के नाम हैं । श्च्योत या ' श्चोत ' प्राधार ये २ घी आदि के चूने या टपकने के नाम हैं और क्लमथ, क्लम ये २ घिन, नफरत, थकावट या मांदगी के नाम हैं ॥ १० ॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु.
बड़ाई, मिलाप, उत्कर्षो (ऽतिशये) संधिः (श्लेषे) विषय (आशये) ।
प्रयोजन, फेंकना या आज्ञा करना, लीलना, स. न. स. स. न. पु.
उद्यम करना (क्षिपायां) क्षेपणं गीर्णि (गिरौ) गुरणमुद्यमे ॥ ११ ॥

उत्कर्ष, अतिशय ये २ प्रकर्ष या बड़ाई के नाम हैं । संधि, श्लेष ये २ मेल या संधान के नाम हैं । विषय, आशय या " आश्रय " ये २ प्रयोजन या आश्रय के नाम हैं । क्षिपा, क्षेपण ये २ पेरने, फेंकने या आज्ञा करने के नाम हैं । गीर्णि, गिरि या गिलि और " गिरिण " या गिलन " ये २ निगलने या लीलने के नाम हैं और गुरण, " गूरण या गोरण " और उद्यम ये २ उद्योग करने के नाम हैं ॥ ११ ॥

पु. पु. पु. न. न. पु.
उठाना, आश्रय, उन्नाय उन्नये श्रायः श्रयणे जयने जयः ।
जीति, कहना, पु. पु. पु. पु. पु. पु.
खुशी, ऊबना निगादो निगदे मादो मदे उद्वेग उद्भूमे ॥ १२ ॥

उन्नाय, उन्नय ये २ उठाने या ऊपर लेजाने के नाम हैं । श्राय, श्रयण ये २ आश्रय या सेवा के नाम हैं । जयन, जय या " जपन और जप " ये २ जय, जीति या जप के नाम हैं । निगाद, निगद ये २ कथन या वचन के नाम हैं । माद, मद

ये २ हर्ष प्रसन्नता या खुशी के नाम हैं और उद्वेग, उद्भ्रम ये २ उद्वेजन, उद्भ्रम या ऊबने के नाम हैं ॥ १२ ॥

मीजना, अङ्गी-^{न.} विमर्दनं ^{पु.} परिमलेऽभ्युपपत्तिरनुग्रहः ।
कार, न मानना, ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}

रथमें पुकारना ^{पु.} निग्रहं 'स्तु' निरोधः (स्याद) भियोगस्त्वभिग्रहः ॥ १३ ॥

विमर्दन, परिमल ये २ कुंकुमआदि से मीजने या मीड़ने के नाम हैं । अभ्युपपत्ति, अनुग्रह ये २ कृपा, मिहरबानी, प्रसन्नता या अङ्गीकार के नाम हैं और जो अनुग्रह से भिन्न है उसे निग्रह, निरोध या “ विग्रह और विरोध ” कहते हैं ये २ नहीं मानने के नाम हैं । और अभियोग, अभिग्रह ये २ लड़ाई में पुकारने के नाम हैं ॥ १३ ॥

मूठी बाँधना, ^{पु.} मुष्टिवन्ध 'स्तु' संग्राहो ^{पु.} डिम्बे ^{पु.} डमरविप्लवौ ।
लूटना, ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.}

बाँधना, ^{न.} ^{स.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} बन्धनं प्रसितिश्चारः स्पर्शः स्प्रेष्टोपतसरि ॥ १४ ॥
संताप

मुष्टिवन्ध, संग्राह ये २ मूठी बाँधने या मूठी से मजबूत पकड़ने के नाम हैं । डिम्ब, डमर या “ डामर ” विप्लव ये ३ धावाकर लूटने या बेहथियार लड़ाई के नाम हैं । बन्धन, प्रसिति, चार या “ स्वार ” ये ३ बन्धन के नाम हैं और स्पर्श या “ स्पश ” स्प्रेष्टा (ष्टृ) या स्पष्टा और उपतप्ता (मृ) ये ३ उपतापनामक रोगविशेष या संताप के नाम हैं अथवा स्वामी के मतमें स्वार, स्पर्श, स्प्रेष्टा और उपतप्ता ये ४ संतप्तके नाम हैं ॥ १४ ॥

अपकार, अभि-^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{पु.} ^{न.} निकारो विप्रकारः (स्यादा) कारस्त्वङ्ग इङ्गितम् ।
प्रायानुरूपचेष्टा,

प्रकृति का बद-^{पु.} ^{पु.} ^{स.} ^{स.} परिणामो विकारो (द्वे समे) विकृतिविक्रिये ॥ १५ ॥
लना

निकार, विप्रकार ये २ अपकार के नाम हैं । आकार, इङ्ग और इङ्गित ये ३ अभिप्राय के अनुरूप चेष्टा के नाम हैं और परिणाम, विकार, विकृति और विक्रिया ये ४ प्रकृति के बदल जाने के नाम हैं जैसेकि ‘ कटक-कुण्डल ’ ये कनक के ही विकार हैं अथवा परिणाम, विकार ये २ प्रकृति के उलटने होने या विकार के नाम हैं जैसे कि मिट्टीका विकार घट है । और विकृति, विक्रिया ये २ विरुद्धक्रियाके नाम हैं ॥ १५ ॥

१ “ परिमलो विमर्देऽपीति ” (विश्वः) ॥

२ निग्रहस्तद्विरुद्धः स्यादिति पाठान्तरम् ॥

३ स्वामी तु चारस्थाने स्वारं पठित्वा स्वरादीनां चतुर्णां पर्यायतामाह ॥

४ स्वारस्पर्शयोर्भावे घञे, स्प्रेष्टोपतप्त्रोर्भावे “ कृत्यल्लुपटो बहुलमिति ” तृच् भावप्रकरणानुरोधादिति वा ॥

अनिलेना, पु. अपहारस्त्वपचयः समाहारः समुच्चयः ।
बटोरना, लेना, पु. न. पु. पु.

खेल के लिये पु. न. पु. पु. १
धूमना. प्रत्याहार उपादानं विहार (स्तु) परिक्रमः ॥ १६ ॥

अपहार, अपचय ये २ हरने या छीनने के नाम हैं । समाहार, समुच्चय ये २ राशीकरने या बटोरने के नाम हैं । प्रत्याहार, उपादान ये २ अपने अपने विषयों से इन्द्रियों के खींचने के नाम हैं और विहार, परिक्रम ये २ खेल के लिये पैरोंसे चलने के नाम हैं ॥ १६ ॥

चोरी करना, पु. न. पु. न.
युक्ति से बाधादि अभिहारोऽभिग्रहणं निर्हारोऽभ्यवकर्षणम् ।
का निकालना, पु. पु. पु.

नकल करना, पु. पु. पु.
खर्च. अनुहारोऽनुकारः (स्यादर्थस्यापगमे) व्ययः ॥ १७ ॥

अभिहार या “अभ्याहार” अभिग्रहण ये २ सामने होकर ले जाने या चोरी करने के नाम हैं । निर्हार, अभ्यवकर्षण ये २ युक्ति से बाधा आदिके निकालने के नाम हैं । अनुहार, अनुकार ये २ नकल करने के नाम हैं और जो धन आदिकों का अल्प होना या कमती पड़जाना है उसे ‘व्यय’ कहते हैं । यह १ खर्च का नाम है ॥ १७ ॥

बहना, पु. स. पु.
प्रवाह(स्तु)प्रवृत्तिः (स्या) त्प्रवहो (गमनं बहिः) ।

बाहर जाना, पु. पु. पु. पु. पु.
संयम. वियामो वियमो यामो यमः संयामसंयमौ ॥ १८ ॥

प्रवाह, प्रवृत्ति ये २ जल आदि की एकतार गति के नाम हैं । और जो बाहर जाना है वह ‘प्रवह’ कहलाता है । यह १ बाहिरी यात्रा का नाम है और वियाम, वियम, याम, यम, संयाम और संयम ये ६ योगाङ्ग या संयम के नाम हैं अथवा स्वामी के मत में वियाम, वियम ये २ नानाविध यमन के नाम हैं । याम, यम ये २ उपरतिमात्र के नाम हैं और संयाम, संयम ये २ संयम के नाम हैं ॥ १८ ॥

मारण कर्म, न. पु. स. पु.स.
जागना, हिंसाकर्माभिचारः (स्या) जागर्या जागरा (द्वयोः) ।

विम, पु. पु. पु. पु. पु.
पासका आश्रय. विमोऽन्तरायः प्रत्यूहः (स्यादु) पन्नोऽन्तिकाश्रये ॥ १९ ॥

हिंसाकर्म, अभिचार ये २ हिंसाकर्म के नाम हैं । जागर्या, या “जाग्रिया” और “जागर्ति” जागरा या जागर ये २ जागने के नाम हैं इनमें ‘जागरा’

स्त्री पुलिङ्ग है । विघ्न, अन्तराय, प्रत्यूह ये ३ विघ्न के नाम हैं और उपघ्न, अन्तिका-
श्रय ये २ निकट के आश्रय या पासही आसरा लेने के नाम हैं ॥ १६ ॥

उपभोग, पु. पु. पु. स.
परिवार, निर्वेश उपभोगः (स्या) त्परिसर्पः परिक्रिया ।
महावियोग, न. पु. पु. पु. पु.
अभिप्राय. विधुरं (तु) प्रविश्लेषोऽभिप्रायश्छन्द आशयः ॥ २० ॥

निर्वेश, उपभोग ये २ उपभोग के नाम हैं । परिसर्प, परिक्रिया ये २ परि-
जन आदि से घिरे हुए के नाम हैं । विधुर, प्रविश्लेष ये २ अत्यन्त वियोग के नाम
हैं और अभिप्राय, छन्द या छन्दः (स्) आशय ये ३ अभिप्राय, मतलब, प्रयोजन
या मनोरथ के नाम हैं ॥ २० ॥

संक्षेप, न. न. स. न.
विगाड, संक्षेपणं समसनं पर्यवस्था विरोधनम् ।
चारों ओर स. पु. स. स. स.
जाना, आसन. परिसर्या परीसारः (स्यादा) स्या(त्वा)सना स्थितिः ॥ २१ ॥

संक्षेपण, समसन ये २ अविस्तार या संक्षेप के नाम हैं । पर्यवस्था या “प्रत्य-
वस्था” विरोधन ये २ विरोध या विगाड़ के नाम हैं । परिसर्या, या परिसर्या, परी-
सार या परिसार ये २ चारों ओर चलने या जाने के नाम हैं और आस्या, आसना,
स्थिति ये ३ आसन के नाम हैं ॥ २१ ॥

विस्तार, पु. पु. पु. पु.
शब्दविस्तार, विस्तारो विग्रहो व्यासः (स च शब्दस्य) विस्तरः ।
अङ्गमर्जना, न. न. पु. न.
छोप या छिपना. (स्या) न्मर्दनं संवाहनं विनाशः (स्याद) दर्शनम् ॥ २२ ॥

विस्तार, विग्रह, व्यास ये ३ विस्तार के नाम हैं । और जो शब्दसम्बन्धी
विस्तार हो तो वह ‘विस्तर’ कहलाता है । यह १ शब्दविस्तार का नाम है । जैसे
कि ‘ग्रन्थविस्तरः’ ग्रन्थों का विस्तार है । अङ्गमर्दन, संवाहन या संवहन ये २
अङ्गमीड़ने या पैर चापने आदि के नाम हैं । जैसे कि “संभोगान्ते मम समुचितो हस्त-
संवाहनानाम्” यह ब्रम्हदूत काव्य का वचन संगत होता है और ऐसे ही ‘पाद-
संवाहनादिभिः’ यह पुराणान्तरों में भी मिलता है और विनाश, अदर्शन ये २
छोप, अन्तर्धान या तिरोधान के नाम हैं ॥ २२ ॥

परिचय, पु. पु. पु. न.
धावका फैलना, संस्तवः (स्या) त्परिचयः प्रसर(स्तु) विसर्पणम् ।
धान्यादि का पु. पु. पु. न.
संग्रह, नीवाक(स्तु) प्रयामः (स्या) त्संनिधिः संनिकर्षणम् ॥ २३ ॥
समीप या पक्षीप्त.

संस्तव, परिचय ये २ परिचित या पहिचान के नाम हैं । प्रसर, विसर्पण ये २ फोड़ा आदि के बहने के नाम हैं । नीवाक, प्रयाम ये २ धान्यसंचय या धन व धान्य आदिकों में जनों के आदरातिशय के नाम हैं और संनिधि या “संनिध” संनिकर्षण ये २ अत्यन्तनिकट, पास या पड़ोस के नाम हैं ॥ २३ ॥

अथ काटना, पु. पु. न. पु. न. पु.
अणदिकों को लवोऽभिलावो (लवने) निष्पावः (पवने) पवः ।
साफ करना, पु. पु. पु. न.

प्रसंग, प्रस्तावः(स्याद)वसरस्त्रसरः सूत्रवेष्टनम् ॥ २४ ॥
नरी.

लव, अभिलाव, लवन ये ३ धान्य आदिकों के काटने के नाम हैं । निष्पाव, पवन, पव ये ३ धान्य आदिकों के साफ करने, उसाने या पसाने के नाम हैं । प्रस्ताव, अवसर ये २ प्रसंग या अदसर के नाम हैं जैसे कि “अवसरपठिता वाणी सुशोभते” अवसर में पढ़ीहुई वाणी सुशोभित होती है और त्रसर या ‘तसर’ सूत्र-वेष्टन ये २ जुलाहे के बनाये हुए सूत लपेटने या नरी के नाम हैं ॥ २४ ॥

प्रथम गर्भ, पु. पु. पु. पु.
प्रीति प्रार्थित, प्रजनः(स्यादु)पसरः प्रश्रयप्रणयौ (समौ) ।
बुद्धिशक्ति, स. पु. पु. पु.

कोटका मार्ग. धीशक्तिर्निष्क्रमो(ऽस्त्री तु) संक्रमो दुर्गसंचः ॥ २५ ॥

प्रजन, उपसर ये २ पहले पहल गर्भग्रहण के नाम हैं । प्रश्रय, प्रणय या “प्रसर” ये २ प्रीति से प्रार्थना करने या प्रेम के नाम हैं । धीशक्ति, निष्क्रम ये २ बुद्धिसामर्थ्य के नाम हैं इनमें “निष्क्रमो बुद्धिसंपत्तौ” (इति विश्वः) इस प्रमाण से ‘निष्क्रम’ यह बुद्धिसंपदा में वर्तता है वह आठ प्रकार की है जैसे कि, शुश्रूषा, श्रवण, ग्रहण, धारण, ऊह, अपोह, विज्ञान और तत्त्वज्ञान ये ८ बुद्धि के गुण कहलाते हैं । संक्रम या “संक्राम” दुर्गसंचर या “संचार” ये २ कोट की मार्ग या कोट में प्रवेश करने के नाम हैं ॥ २५ ॥

पु. पु. पु. पु.
युद्धकी बदती प्रत्युत्क्रमः प्रयोगार्थः प्रक्रमः (स्या)दुपक्रमः ।
या कर्मारम्भ में न. पु. पु. पु. स.

पहला प्रयोग, (स्याद)भ्यादानमुद्धात आरम्भः संभ्रमस्त्वर ॥ २६ ॥
प्रथमारम्भ या आरम्भमात्र, वेग.

प्रत्युत्क्रम या “प्रत्युत्क्रान्ति” प्रयोगार्थ या “प्रयुद्धार्य” ये २ युद्ध के लिये अत्यन्त उद्योग या कर्मारम्भ में पहले प्रयोग के नाम हैं । प्रक्रम, उपक्रम, अभ्या-दान, उद्धात या “उपोद्धात” और आरम्भ ये ५ आरम्भ के नाम हैं अथवा प्रक्रम, उपक्रम ये २ प्रथमारम्भ के नाम हैं । अभ्यादान, उद्धात, आरम्भ ये ३

आरम्भमात्र के नाम हैं और संक्रम, त्वरा या “ त्वरि ” ये २ अच्छे वेग या उतावली के नाम हैं ॥ २६ ॥

कार्य का रचना, ^{पु.} प्रतिबन्धः ^{पु. १} प्रतिष्टम्भो ^{पु.} ऽवनाय ^{न.} (स्तु) निपातनम् ।
गिरना, ^{पु.} उपलम्भः ^{पु.} अनुभवः ^{पु.} समालम्भो ^{न.} विलपनः ॥ २७ ॥
साक्षात्कार, तिलक लगाना

प्रतिबन्ध, प्रतिष्टम्भ या “विष्टम्भ” ये २ कार्यों के प्रतिधात के नाम हैं। जैसे कि मणि व मन्त्रआदि के प्रतिबन्ध से अग्नि की अनुष्णता होती है। अवनाय या “अवनय” निपातन या “नियातन” ये २ नीचे लेजाने या गिरने के नाम हैं। उपलम्भ, अनुभव ये २ साक्षात्कार के नाम हैं और समालम्भ, विलेपन ये २ कुंकुम आदिकों से लेप करने या तिलक लगाने के नाम हैं ॥ २७ ॥

प्रीति तोड़ना, ^{पु.} विप्रलम्भो ^{पु.} विप्रयोगो ^{पु.} विलम्भस्त्वतिसर्जनः ^{न.} ।
अतिदान, ^{पु.} विश्रावः ^{स.} (स्तु)प्रविख्यातिरवेक्षा ^{स.} प्रतिजागरः ^{पु.} ॥ २८ ॥
अतिप्रसिद्धि, पदार्थों का देखना

विप्रलम्भ, विप्रयोग ये २ प्रेमियों को प्रीति तोड़ने या दो रागियों के वियोग के नाम हैं। विलम्भ, अतिसर्जन ये २ अतिदान के नाम हैं। विश्राव, प्रविख्याति या ‘प्रतिख्याति’ ये २ बड़ी प्रसिद्धता के नाम हैं और अवेक्षा, प्रतिजागर ये २ पदार्थों के अवलोकन करने के नाम हैं ॥ २८ ॥

पढ़ना, ^{पु.} निपाठनिपठौ ^{पु.} (पाठे) तेमस्तेमौ ^{पु.} (समुन्दने) ।
गोला करना, ^{पु.} आदीनवास्रवौ ^{पु.} (क्लेशे) मेलके सङ्गसङ्गमौ ^{पु.} ॥ २९ ॥
क्लेश, समागम

निपाठ, निपठ, पाठ ये ३ पढ़ने के नाम हैं। तेम, स्तेम, समुन्दन ये ३ ओढ़ा या गोला करने के नाम हैं। आदीनव, आस्रव, क्लेश ये ३ क्लेश के नाम हैं और मेलक या “मेल” सङ्ग, संगम या “सांगम” ये ३ समागम के नाम हैं ॥ २९ ॥

खोजना, ^{न.} संवीक्षणं ^{न.} विचनं ^{न.} मार्गणं ^{स.} मृगणा ^{पु.} मृगः ।

^{पु.} लिपटना. ^{पु.} परिरम्भः ^{पु.} परिष्वङ्गः ^{न.} संश्लेष उपगूहनम् ॥ ३० ॥

संवीक्षण, या “अन्वीक्षण, अन्वेक्षण और गवेषण” विचयन, मार्गण मृगणा या

१ ‘नाहुप्रतिष्टम्भविष्टम्भन्यु’ रिति रघुः ॥

२ आस्रवन्तीन्मियायनेनेति आस्रवः केषांश्चिन्मते तु आस्रवणमास्रवस्तालव्यमध्योऽपि ॥

“मृगया” और मृग ये ५ वस्तुओं के खोजने के नाम हैं । और परिरम्भ या “परीरम्भ” परिष्वङ्ग, संश्लेष और उपगूहन ये ४ आलिङ्गन करने या लिपटा लेने के नाम हैं ॥ ३० ॥

देखना, ^{न.} निर्वर्णन^{न.} (तु) ^{न.} निध्यानं ^{न.} दर्शन^{न.} आलोकनेक्षणम् ।

निकाशना. ^{न.} प्रत्याख्यानं ^{न.} निरसनं ^{पु.} प्रत्यादेशो ^{स.} निराकृतिः ॥ ३१ ॥

निर्वर्णन, निध्यान, दर्शन, आलोकन या “आलोक” ईक्षण या “लक्षण” ये ५ निरखने या देखने के नाम हैं और प्रत्याख्यान, निरसन, प्रत्यादेश या “प्रत्यादेशन” निराकृति या “निराकरण” ये ४ निरादर करने या निकाश देने के नाम हैं ॥ ३१ ॥

प्रहर के सोने ^{पु.} उपशायो ^{पु.} विशायश्च (पर्यायशयनार्थकौ) ।
वाले,
घिनाना, ^{न.} अर्तनं^{स.} (च) ^{स.} ऋतीया^{स.} (च) ^{स.} दृणीया^{स.} (च) घृणा^{स.} (र्थके) ॥ ३२ ॥
निन्दा या
करुणा.

उपशाय, विशाय ये २ क्रम से प्रहर आदि के शयनार्थी या पारी २ सोनेवाले के नाम हैं और अर्तन, ऋतीया, दृणीया या ‘दृष्टिया’ और घृणा ये ४ निन्दा या करुणा के नाम हैं ॥ ३२ ॥

उलटा पलटा, ^{पु.} स्याद्व्यत्यासो ^{पु.} विपर्यासो ^{पु.} व्यत्ययश्च ^{पु.} विपर्यये ।
अतिक्रम. ^{पु.} पर्ययोऽतिक्रमस्तस्मिन्नतिपात ^{पु.} उपात्ययः ॥ ३३ ॥

व्यत्यास, विपर्यास, व्यत्यय, विपर्यय या “विपर्याय” ये ४ व्यतिक्रम यानी उलटा पलटा करने के नाम हैं और पर्यय या “पर्याय” अतिक्रम, अतिपात और उपात्यय ये ४ अतिक्रम के नाम हैं ॥ ३३ ॥

भृत्योंकी भोजना, ^{न.} प्रेषणं ^{पु.} यत्समाहूय तत्र स्या) त्प्रतिशासनम् ।
यज्ञमें ब्राह्मणों
की स्तुति का
स्थान. (स)संस्तावः (ऋतुषु या स्तुतिभूमिर्द्विजन्मनाम्) ॥ ३४ ॥

बुलाकर जो सेवकों को कुछ आज्ञा करना है यानी हुक्म देना है वहां ‘प्रतिशासन’ होता है । यह १ भृत्यादिकों के भेजने का नाम है और यज्ञों में वेदगायक ब्राह्मणों के स्तुति करने के स्थानको ‘संस्ताव’ कहते हैं । यह १ यज्ञ में स्तुति करने वाले ब्राह्मणों की अवस्थानभूमि का नाम है ॥ ३४ ॥

वहटन या ठीहा, (निधाय तक्ष्यते यत्र काष्ठे काष्ठं स) उद्धनः ।
खन्ता या गदेला. पु. पु.

स्तम्बघ्न (स्तु)स्तम्बघनः (स्तम्बो येन निहन्यते) ॥ ३५ ॥

जिस काष्ठपर काष्ठ को रख व गढ़ कर पतला करते हैं उस काष्ठरूप आधार को 'उद्धन' कहते हैं यह १ अवटन या ठीहा का नाम है और तिनकों के गुच्छे को जिस हथियार से काटते हैं वह स्तम्बघ्न, स्तम्बघन और "स्तम्बहनन" कहलाता है ये २ गदेला या खन्ता आदि के नाम हैं अथवा तृण धान्यों को रखने के लिये बनाये हुए वंशपात्र के नाम हैं ॥ ३५ ॥

बर्मा, बराबर पु. पु.
जमे वृक्ष, च-
नाज को ऊ- पु. पु.
पर निकासना. आविधो (विध्यते येन तत्र) "विष्वक्समे" निघः ।
उत्कार 'श्च' निकार 'श्च' (द्वौ धान्योत्क्षेपणार्थकौ) ॥ ३६ ॥

जिस शस्त्रविशेष से पदार्थों को बेधते हैं उसे 'आविध' कहते हैं यह १ भोंरों के डंक आदि या बर्मा का नाम है । चारों ओर बराबर जमे हुए ऊँचे वृक्षादिकों में 'निघ' कहा जाता है यह १ चारों तरफ से समान वृक्षादिकों का नाम है और उत्कार, निकार ये २ धान्यों के साफ़ करने के लिये ऊपर निकासने के नाम हैं ॥ ३६ ॥

खाना, बांकना, पु. पु. पु. पु.
झांकना, डका- स. स. स. पु.
रना, उपरति स. पु.
या निवृत्ति, आरत्यवरतिविरतय उपरामे (ऽथास्त्रियां तु) निष्ठेवः ३७
थूकना या स. न. न.
ख खारना. निष्ठयूतिर्निष्ठेवनं निष्ठीवन (मित्यभिन्नानि) ।

निगार आदि चारों शब्द क्रम से निगरण आदि अर्थों में रहते हैं जैसे कि भोजन अर्थ में 'निगार' होता है यह १ लीलने या निगलने का नाम है । वमन में 'उद्गार' होता है यह १ वान्त या छर्दि का नाम है । शब्द में 'विक्षाव' कहाता है यह १ छीक का नाम है और डकार लेने में 'उद्ग्राह' कहलाता है यह १ डकारने का नाम है । आरति, अवरति, विरति, उपराम या "उपरम" ये ४ उपरति या उपराम के नाम हैं और निष्ठेव, निष्ठयूति, निष्ठेवन और निष्ठीवन ये ४ मुख से कफ गिराने या थूकने के नाम हैं इनमें 'निष्ठेव' यह पुनपुंसक है और ये सबही एक अर्थवाले कहलाते हैं ॥ ३७ । ३ ॥

वेग, अन्त, न. स. स. न. पु. स.
 बुलार, पशुओं जवने जूतिः सातिस्त्ववसाने (स्यादथ) ज्वरे जूतिः ॥३८॥
 को खरेदना, पु. न. स.
 शाप, औपग- उदज (स्तु) पशुप्रेरणमकरणि (रित्यादयः शापे) ।
 वसमूह- न.
 (गोत्रान्तेभ्यस्तस्य वृन्दमित्यौ) पगवका (दिकम्) ॥३९॥

जवन, जूति ये २ वेग के नाम हैं । साति, अवसान ये २ अन्त या विराम के नाम हैं । ज्वर, जूति ये २ ज्वर या बुलार के नाम हैं । उदज, पशुप्रेरण ये २ गैया, भैंसी आदि पशुओं के खरेदने या ललकारने के नाम हैं । शाप यानी कोसने अर्थ में 'अकरणि' आदि होते हैं आदि शब्द से 'अजननि' अजीवनि, अवग्राह और निग्राह आदि सिद्ध होते हैं यह १ शाप का नाम है । जैसे कि "अजीव-निस्ते शठ भूयात्" रे शठ ! तेरा जीना न हो और अपत्यार्थप्रत्ययान्तों से 'तस्य समूहः' इस अर्थ में 'औपगवक' आदि होते हैं जैसे कि उपगु के अपत्यों को औपगव और उनके वृन्द यानी समूह को 'औपगवक' कहते हैं और आदि शब्द से गर्गगोत्रापत्यसमूह गार्गक और दक्षगोत्रापत्यसमूह दाक्षक आदि कह-लाते हैं यहां से लेकर वर्गसमाप्ति पर्यन्त "तस्य वृन्दम्" इसका अधिकार किया जाता है ॥ ३८ । ३९ ॥

पुवा व पूरीका न न
 समूह, बाल- आपूपिकं शाष्कुलिक (मेवमाद्यमचेत् साम्) ।
 समूह यामनुष्य-
 समूह, मित्र-
 समूह- "माणवानान्तु" माणव्यं "सहायानां" सहायता ॥४०॥

अचेतन जड़ अपूप आदि के समूहों में आपूपिक, शाष्कुलिक और साक्तुक आदि प्रयोग होते हैं जैसे कि पुत्रों के समूह को 'आपूपिक' कहते हैं यह १ पुत्र-समूहों का नाम है । पूरियों के समूह को 'शाष्कुलिक' कहते हैं यह १ मैदा की पूरियों के ढेर का नाम है आदिशब्द से सक्तुओं के समूह को 'साक्तुक' कहते हैं इत्यादिकों का ग्रहण किया जाता है । माणव्यों के समुदाय को 'माणव्य' कहते हैं यह १ बाल-समूहों का नाम है मानवों के समुदाय को 'मानव्य' कहते हैं यह १ मनुष्यों के समूह का नाम है । और सहायों के समूह को 'सहायता' कहते हैं यह १ सत्तासमूहों का नाम है ॥ ४० ॥

हत्थों का समूह, स. न. न.
 ब्राह्मणों का हत्था हत्थानां ब्राह्मण्यवाढव्ये (तु द्विजन्मनाः) ।
 समूह, पशुरियों न. न.
 का समूह, पीठों (द्वे पशुकानां पृष्ठानां) पार्श्वपृष्ठय (मिति क्रमात्) ॥४१॥
 का समूह-

हलों के समुदाय को 'हल्या' कहते हैं । यह १ हलसमूह का नाम है । ब्राह्मणों के वृन्द को 'ब्राह्मण्य' और 'बाडव्य' कहते हैं ये २ ब्राह्मणों के समूह के नाम हैं । पसुलियों के समुदाय को 'पारव' कहते हैं । यह १ पसुलीसमूह का नाम है और पृष्ठसमुदाय को 'पृष्ठ्य' कहते हैं यह १ पीठसमूह का नाम है "यज्ञ के विषय में इनको स्मरण करते हैं" यह विशेषता से जानना चाहिये ॥ ४१ ॥

खलिहानों का समूह, मनुष्यों का समूह, ग्राम, जन, धुआँ, पाश और काशों का समूह। स. स. न. (खलानां) खलिनी खल्या (प्यथ) मानुष्यकं (नृणाम्) । स. स. स. स. स. ग्रामता जनता धूम्या पाश्या गल्या (पृथक् पृथक्) ४१॥

खलिहानों के समुदाय में 'खलिनी' और 'खल्या' कहते हैं ये २ खलिहान-समूह के नाम हैं । मनुष्यों के वृन्द में 'मानुष्यक' कहलाता है । यह १ मानुषसमूह का नाम है । ग्रामों के समूह को ग्रामता, जनों के समूह को जनता, धूमों के समूह को धूमता, पाशों के समूह को पाश्या और गलों या बड़े काशों के समूह को गल्या कहते हैं ये अलग २ एक एक के नाम हैं ॥ ४२ ॥

सहस्र, करीष, चर्म और अथर्वानि। न. न. न. न. 'अपि' साहस्रकारीषचार्मणाथर्वणा (दिकम्) ॥ ४३ ॥ का समूह.

इति संकीर्णवर्गः ॥

सहस्र आदिकों के समूह में साहस्र, कारीष, चार्मण और आथर्वण आदि होते हैं । जैसे कि, सहस्रों के समूह को 'साहस्र' कहते हैं यह १ हजारहों समुदाय का नाम है । करीषों यानी सूखे गोबरों के समूह को 'कारीष' कहते हैं यह १ बिनुबों कण्डों के ढेर का नाम है । चर्मों या चर्मियों के समूह को 'चार्मण' या 'चार्मिण' कहते हैं । यह १ ढाल या ढालधारियों के समूह का नाम है ऐसे ही अथर्वणों के समुदाय को 'आथर्वण' कहते हैं । यह १ अथर्वसमूहों का नाम है आदि शब्द से चार्मण, आङ्गार और क्षेत्र आदिकों का ग्रहण किया जाता है । संकीर्णार्थता यह है कि 'चञ्' आदि प्रत्ययों का कर्तृभिन्न कारक और भाव में एवं उणादिकों को भाव और कारक में विधान किया गया है इसलिये विग्रह प्रायः भाव में ही दिखलाया है कारक में तो यथासंभव विद्वानों को विचारना चाहिये ॥ ४३ ॥

इति रसालायां व्याख्यायां संकीर्णवर्गविवरणम् ॥ २ ॥

अथ नानार्थवर्गो व्याख्यायते ॥

नानार्थाः केऽपि कान्तादिवर्गेष्वेवात्र कीर्तिताः ।

भूरिप्रमोद्या ये येषु प्रमार्गेष्वपि तेषु ते ॥ १ ॥

अब नानार्थवर्ग का आरम्भ करते हैं—कि, यदि कहा जावे कि, अनेकार्थ का आरम्भ किसलिये करते हैं ? क्योंकि उनका पूर्वोक्त वर्गों में ही अभिधान हो चुका है, यदि यहां कहेंगे तो प्रागुक्त कैसे होसके हैं ? इस आशङ्का पर कहते हैं कि यहां वक्ष्यमाण कान्त, खान्त, गान्तादि वर्गों में ही कितेक नानार्थ कहे हैं. और पूर्वोक्त पर्यायों में नहीं कहे गये हैं, जैसे कि—“ मारुते वेधसि ब्रध्ने पुंसि कः कं शिरोऽम्बुनोः ” ऐसा कहा है. और जहां कहीं काव्यादिकों में बाहुल्य से भूरिप्रयोग कवियों के कियेहुए जो नाक—लोक आदि शब्द हैं वे पहले कहेहुए जिनके पर्यायों में देख पड़ते हैं उनके पर्यायों में और अपिशब्द से यहां भी कान्त, खान्तादि वर्गों में भी कहे हैं—जैसे कि ‘ नाक ’ शब्द प्रचुरप्रयोगता से पहले स्वर्ग और आकाश अर्थ में कहा हुआ भी फिर यहां कहा गया है—इस लिये पुनरुक्ति का विचार नहीं करना चाहिये ॥ १ ॥

आकाश, स्वर्ग,
स्वर्गादि, जन,
छन्द, कीर्ति,
तीर, तलवार. (^{पु.} आकाशे ^{पु.} त्रिदिवे) नाको ^{पु.} लोक (^{पु.} स्तु भुवने जने) ।
(^{पु.} पद्ये यशसि च) श्लोकः (^{पु.} शरे खड्गे च) सायकः ॥ २ ॥

आकाश और स्वर्ग को ‘ नाक ’ कहते हैं—यह १ स्वर्ग और आकाश का नाम है । स्वर्ग आदि भुवन और जनको ‘ लोक ’ कहते हैं—यह १ जन और स्वर्गादि लोकों का नाम है । अनुष्टुप् आदि छन्द और यश * को ‘ श्लोक ’ कहते हैं—यह १ पद्य और कीर्ति का नाम है—तथा तलवार और तीर को सायक—शायक और शारक भी कहते हैं । यह १ बाण और खड्ग का नाम है ॥ २ ॥

सियार, वरुण,
चिउड़ा, बा-
लक, दर्शन,
प्रकाश, तुरही, पटह. (^{पु.} जम्बुकौ (^{पु.} क्रोष्टुवरुणौ) ‘ ^{पु.} पृथुकौ ’ (^{पु.} चिपिटार्भकौ) ।
(^{पु.} आलोकौ (^{पु.} दर्शनोदयोतौ) (^{पु.} भेरीपटह) मानकौ ॥ ३ ॥

सियार और वरुण ये दोनों ‘ जम्बुक ’ पदवाच्य कहलाते हैं—यह १ सियार, नीच और जलेश का नाम है । चिउड़ा—और बालक को ‘ पृथुक ’ कहते हैं । यह १ बालक और भूंजेहुए धान के बने चिउड़े का नाम है । दर्शन और प्रकाश को ‘ आलोक ’ कहते हैं । यह १ वन्दिभाषण, दर्शन और प्रकाश का नाम है । ‘ भेरी ’ और ‘ पटह ’ ये दोनों ‘ आनक ’ पदवाच्य कहलाते हैं । यह १ तुरही, नफीरी, सहनार्ह, नगाड़ा, मृदङ्ग और गर्जते हुए मेघ का नाम है ॥ ३ ॥

* यश में जैसे कि “ क उत्तमश्लोकशृणुवादात् ” ।

गोदी, चिह्न, (उत्सङ्गचिह्नयो) रङ्गः कलङ्को (ऽङ्गापवादयोः) ।
 चिह्न, अपवाद, पु.
 सर्प, बड़ई, रफ- पु.

टिक, सूर्य. तक्षको (नागवर्धनयो) रर्कः (स्फटिकसूर्ययोः) ॥ ४ ॥

गोदी और चिह्न को 'अङ्क' कहते हैं—यह १ निशान और गोद का नाम है ।
 चिह्न और दोषारोप को 'कलङ्क' कहते हैं—जैसे कि, “ कलङ्कोऽपवादे च
 कालायसमलेऽपि च ” (इति मेदिनी) यह १ अपवाद और चिह्न का नाम है ।
 साँप और बड़ई को 'तक्षक' कहते हैं—यह १ नाग और बड़ई का नाम है—और
 स्फटिकमणि तथा सूर्य को 'अर्क' कहते हैं—यह १ मङ्गार, स्फटिकमणि, सूर्य
 और ताँबे का नाम है ॥ ४ ॥

वायु, ब्रह्मा, (मारुते वेधसि ब्रध्ने पुंसि) कः कं (शिरोऽम्बुनोः) ।
 सूर्य, शीश, पु.
 जल, तिघी, पु.
 संक्षेप, भात (स्या)त्पुलाक (स्तुच्छधान्ये संक्षेपे भक्तसिक्थके) ॥ ५ ॥
 का सीथ.

वायु, ब्रह्मा, और सूर्य का वाचक 'क' शब्द पुलिङ्ग है, और शीश तथा
 जल का वाचक 'क' नपुंसक है—जैसे कि “ को ब्रह्मणि समीरात्मयमदक्षेपु भास्करे ।
 मयूरेऽनौ च पुंसि स्यात्सुखशीर्षजलेषु कम् ” यह (मेदिनीकोप) में कहा है—यह १
 वायु और ब्रह्मादिकों का नाम है । तुच्छ धान्य=नीवार आदि, अविस्तार और
 भातका सीथ इनको 'पुलाक' कहते हैं । यह १ तिन्नी—पसही धान्य और संक्षेप
 आदिकों का नाम है ॥ ५ ॥

उल्लू, हाथी (उल्लूके करिणः पुच्छमूलोपान्ते च) पेचकः । पु.
 की पूँछ के पास का मांस, पु.
 करवा, ओला, पु.न. (कमण्डलौ च) करकः (सुगते च) विनायकः ॥ ६ ॥
 अनार, बुद्ध, गणेश, गरुड.

उल्लू और हाथी की पूँछ के समीपवर्ती गुदाच्छादक मांसपिण्ड को 'पेचक'
 कहते हैं । यह १ उल्लू और गजपुच्छ मूलोपान्त का नाम है । कमण्डलु और
 च शब्द से पक्षिविशेष, अनार, वर्षा का पत्थर और करङ्क को 'करक' कहते
 हैं—जैसे कि “ करकस्तु पुमान्पक्षिविशेषे दाडिमेऽपि च । द्वयोर्मधोपले न स्त्री करङ्के
 च कमण्डलौ ” (इति मेदिनी) यह १ कमण्डलु आदिकों का नाम है—तथा
 बुद्ध, विघ्नराज और गरुड को 'विनायक' कहते हैं—जैसे कि “ विनायकस्तु हेरम्बे
 ताक्ष्ये विघ्ने जिने गुरौ ” (इति मेदिनी) यह १ गणेश, गरुड, विघ्न, बुद्ध
 और गुरु का नाम है ॥ ६ ॥

हाथ, बीता, ^{पु.} किष्कु (हस्ते वितस्तौ च) (शूककीटे च) वृश्चिकः ।
 विच्छू या ^{पु.स.न.} (प्रतिकूले) प्रतीक (स्त्रिष्वेकदेशे तु पुंस्ययम्) ॥ ७ ॥
 आठवीं राशि,
 उलटा, अज्ञा-
 वयव.

हाथ और बीता (बाग्रह अंगुल) को ' किष्कु ' कहते हैं—जैसे कि “ किष्कु-
 र्वयोर्वितस्तौ च सप्रकोष्ठकरेऽपि च ” (इति मेदिनी) यह १ बीता और पहुँचा
 समेत हाथ का नाम है । शूकसमान रोम से व्याप्त कीटविशेष, भौंरा, वृक्ष-
 विशेष और आठवीं राशिको भी ' वृश्चिक ' कहते हैं—जैसे कि “ वृश्चिकस्तु
 द्रुणौ राशौ शूककीटौषधीभिदोः ” (इति मेदिनी) यह १ विच्छू, आठवीं राशि
 और शूककीट आदिकों का नाम है । प्रतिकूल=उलटा—विरुद्ध और विमुख को
 ' प्रतीक ' कहते हैं—जैसे कि “ प्रतीकोऽयमेऽपि स्यात्प्रतिकूलविलोमयोः ” (इति
 मेदिनी) यह १ अवयव, प्रतिकूल और विलोम का नाम है । यह प्रतिकूल अर्थ में
 त्रिलिङ्ग और अवयव में पुंलिङ्ग है ॥ ७ ॥

^{न.} चिरायता, (स्या) द्रूतिक (न्तु भूनिम्बे कत्तृणे भूस्तृणेऽपि च) ।
 गन्धवृण, कुकुर-
 सुता, तोरई, चँ-
 चेड़ा या चिर. (ज्योत्स्निकायां च घोषे च) कोशातक्य (थकट्फले) ॥ ८ ॥
 चिरा, कायफल,
 दूधिया खैर, लो-
 बान, तिलों की ^{पु.} (सिते च खदिरे) सोमवल्कः (स्यादथ सिल्हके) ।
 खली या पीना, ^{पु.} (तिलकल्के च) पिरयाको वाह्लीकं (रामठेऽपि च) ॥ ९ ॥
 हिंग, काबुलदेश
 या काबुली ^{न.} घोड़ा.

चिरायता, सुगन्धवृण, गन्धविशेष या वृक्षविशेष को ' भूतिक ' कहते हैं—जैसे
 कि “ स्याद्रूतिकन्तु भूनिम्बे दीप्यभूस्तृणकत्तृणे ” (इति मेदिनी) यह १ चिरा-
 यता आदिकों का नाम है । तोरई, चँचेड़ा या चिरचिरा को ' कोशातकी ' ' कोषा-
 तकी ' और ' कोपातक ' कहते हैं जैसे कि “ कोषातकः कचे पुंसि पटोल्यां घोषके
 स्त्रियाम् ” (इति मेदिनी) यह बालों में पुंलिङ्ग और तोरई, तथा चिरचिरा में
 स्त्रीलिङ्ग है यह १ पटोलिका या अपामार्ग का नाम है । कायफल और दूधिया
 कत्था को ' सोमवल्क ' कहते हैं । यह १ कायफल और सफेद कत्था का नाम
 है । लोबान और तिलों की खली को ' पिरयाको ' कहते हैं—जैसे कि “ पिरयाकोऽ
 स्त्री तिलकल्के हिंगुवाह्लीकसिल्हके ” (इति मेदिनी) यह १ लोबान और पीना

१ “ ज्योत्स्नाचन्द्रमसोभासि स्फुरज्ज्योतिर्निशि स्मृता ” (इत्यजयः) “ ज्योत्स्नी पटोली ज्योत्स्ना-
 वनिशोः ” (इति हैमः) ।

आदिकों का नाम है । हींग, काबुली घोड़ा और काबुल देश को 'वाह्नीक' और 'वाह्निक' कहते हैं—जैसे कि “वाह्नीकं वाह्निकं धीरहिं गुनोर्नाश्वदेशयोः” (इति रभसः) यह १ धीर—हींग—और काबुली घोड़ा आदिकों का नाम है ॥ ८ । ६ ॥

इन्द्र, गूगल,
उल्लू, मदारी,
विश्वामित्र,
नेवला, रोग,
ताप, शङ्का,
थोड़ा, नीच,
छोटा.

(महेन्द्रगुग्गुलूलूकव्यालग्राहिषु) कौशिकः ।
(रुक्तापशङ्कास्वा) तङ्कः (स्वल्पेऽपि) क्षुल्लक (स्त्रिषु) ॥ १० ॥

इन्द्र, गूगल, उल्लू और मदारी को 'कौशिक' कहते हैं—जैसे कि “कौशिको नकुले व्यालग्राहिगुग्गुलशक्रयोः । विश्वामित्रे च कोशज्ञोलूकयोरपि कौशिकः । कौशिकी चण्डिकायां च नदीभेदे च कौशिकी ” (इति विश्वः) यह १ नेवला, मदारी, गूगल, इन्द्र, विश्वामित्र, कोषज्ञाता और उल्लू का नाम है । यह नकुलादि अर्थों में पुंलिङ्ग और चण्डिका देवी तथा नदीभेद में स्त्रीलिङ्ग है । रोग, सन्ताप और शङ्का यानी भीति या डरको 'आतङ्क' कहते हैं—जैसे कि “आतङ्को रोगसन्तापशङ्कासु मुरजध्वनौ ” (इति मेदिनी) यह १ रोग, सन्ताप, संदेह आदिकों का नाम है । स्वल्प और अपिशब्द से नीच को भी 'क्षुल्लक' कहते हैं । यह त्रिलिङ्ग है—जैसे कि “क्षुल्लकस्त्रिषु नीचेऽल्पे ” (इति मेदिनी) यह १ नीच और अल्प का नाम है ॥ १० ॥

चन्द्रमा, दी-
र्घायु, कुश,
घोड़े की टाप,
बत्तख, बाघ,
आगी, दि-
ग्गज, सफेद
कमल, अज-
वायन, मोर की
चोटी आदि.

जैवातृकः (शशाङ्केऽपि) (खुरेऽप्यश्वस्य) वर्तकः ।
(व्याघ्रेऽपि) पुण्डरीको (ना) (यवान्यामपि) दीपकः ॥ ११ ॥

चन्द्रमा और अपिशब्द से दीर्घायु, कुश या कृशको भी 'जैवातृक' कहते हैं—जैसे कि “जैवातृकः पुमान्सोमे दीर्घायुः कुशयोस्त्रिषु ” (इति मेदिनी) यह चन्द्रमा में पुंलिङ्ग, और दीर्घायु तथा कुश में त्रिलिङ्ग है । यह १ चन्द्र आदिकों का नाम है । घोड़े की टाप और अपिशब्द से बत्तख को भी 'वर्तक' कहते हैं—जैसे कि “वर्तकस्तु खुरेऽश्वस्य विहगे वर्तिका द्वयोः ” (इति मेदिनी) यह घोड़े की टाप में पुंलिङ्ग और बत्तख में पुं० स्त्रीलिङ्ग है । यह १ घोड़े की टाप आदिका नाम है । बाघ और अपिशब्द से दिग्गज आदिकों को 'पुण्डरीक' कहते हैं । यह पुंलिङ्ग

है, जैसे कि “ पुण्डरीकः सिताम्भोजे सितच्छत्रे च भेषजे । पुंसि व्याघ्रेऽग्निदि-
 ङ्नागे कोशकारान्तरेऽपि च ” (इति मेदिनी) यह १ सफेद कमल, सफेद छाता,
 ओषध, बाघ और आग्नेय कोण के हाथी आदिका नाम है. और अजवायन तथा
 अपिशब्द से अजमोदा आदिकों को ‘ दीपक ’ कहते हैं । जैसे कि “ दीपकं वाग-
 लङ्कारे वाच्यवहीतिकारके । दीपकश्चाजमोदायां यवानीवर्हिचूडयोः ” (इति मेदिनी)
 यह वाचालंकार में नपुंसक, दीप्तिकारक पदार्थ में वाच्यलिङ्ग और अजवायन,
 अजमोदा तथा मयूरशिखामें पुंलिङ्ग है । यह १ अजवायन आदिकों का नाम है ॥ ११ ॥

वानर, सियार, पु.

कुत्ता आदि, शालावृकाः “ कपिक्रोष्टृश्वानः ” (स्वर्णेऽपि) गैरिकम् । न.

सोना, गेरू,

पीड़ा, अप्रिय-

अकार्य, अप्रिय, (पीडार्थेऽपि) व्यलीकं (स्याद) लीकं (त्वप्रियेऽनृते) ॥ १२ ॥ न. न.

भूठ.

वानर, सियार और कुत्ता को ‘ शालावृक ’ कहते हैं—यह १ वानर आदिकों का
 नाम है । सोना और अपिशब्द से धातुको भी “ गैरिक ” कहते हैं—जैसे कि
 “ गैरिकं धातुस्त्वमयोः ” (इति मेदिनी) यह १ धातु और स्वर्ण का नाम है ।
 पीड़ा अर्थ और अपिशब्द से अप्रिय—तथा कार्याभाव का वाचक ‘ व्यलीक ’
 कहाजाता है; यह १ अप्रिय, अकार्य, व्यथा और वैलक्ष्य आदि का नाम है ।
 तथा अप्रिय और असत्य को “ अलीक ” कहते हैं—जैसे कि “ अलीकमप्रिये
 ऽपि स्यादिव्यसत्ये नपुंसकम् ” (इति मेदिनी) यह अप्रिय, आकाश और
 असत्य में नपुंसकलिङ्ग है—यह १ अप्रिय आदिका नाम है ॥ १२ ॥

स्वभाव, वंश-

खण्ड, बकला,

१०८ कर्ष

सोना, सोना-

मात्र, छाती का

भूषण, सोने का

पल, अशर्का.

विद्या, पाप,

विश्रुता, शिव-

धनुष.

(शीलान्वया) वनूके (द्वे) शल्के (शकलवल्कले) । न.

(साष्टे शते सुवर्णानां हेमन्युरोभूषणे पले ॥ १३ ॥ पु.न. पु.न.

दीनारेऽपि च) निष्को (ऽस्त्री) कल्को (ऽस्त्री शमलैनसोः) । पु.न.

(दम्भेऽप्यथ) पिनाको (ऽस्त्री शूलशंकरधन्वनोः) १४ ॥

स्वभाव और वंश ये दोनों ‘ अनूक ’ पदवाच्य कहलाते हैं—जैसे कि “ अनूकं
 तु कुले शीले पुंसि स्याद्व्रतजन्मनि ” (इति मेदिनी) यह कुल, शील,
 और पूर्वजन्म का वाचक पुंलिङ्ग है । यह १ स्वभाव आदिकों का नाम
 है । खण्ड, (टुकड़ा) बकला या खालको ‘ शल्क ’ कहते हैं—यह १ खण्ड
 और त्वचाका नाम है । सोने के एकसौ आठ कर्षोंका ‘ निष्क ’ कहलाता है. तथा

सोने का बना छाती का आभूषण और जोकि स्वर्ण के * पलों का बना हो और अच्छे व्यावहारिक द्रव्य (अशर्फी) को भी 'निष्क' कहते हैं । यह पुंलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग है—जस कि “ निष्कमन्त्री साष्टहेमशते दानार्कर्षयोः । वक्षोऽलंकरणं हेममात्रे हेमपलेऽपि च ” (इति मेदिनी) यह १ एकसौ आठ कण सोना, सोनामात्र, छातीका भूषण, सोने का पल और अशर्फी का नाम है । विष्ठा, पाप और दम्भ को 'कल्क' कहते हैं—जैसे कि “ कल्कः पापाशये पापे दम्भे-विट्कट्टियारपि ” (इति विश्वः) यह पापाशय, पाप, दम्भ, विष्ठा और धी-तेल की कीट में पुं० नपुंसकलिङ्ग है । यह १ शमल आदिकों का नाम है । त्रिशूल, शिवधनुष और धूलिवर्षा को भी 'पिनाक' कहते हैं—जैसे कि, “ पिनाकाऽस्त्री रुद्रचापे पांशुवर्षात्रिशूलयोः ” (इति मेदिनी) यह रुद्रचाप, धूलिवर्षा और त्रिशूल में पुं० नपुंसकलिङ्ग है । यह १ त्रिशूल आदिकों का नाम है ॥ १३ । १४ ॥

हथिनी, नई स.

व्याई गइया,

मेघसमूह,

देवी, नरक- स.

यातना, वृत्ति,

तर्की, हाथी

की सूँड़ का

अगिला भाग,

कमलबीज,

देवता, मनोऽज्ञ,

श्रेष्ठ, मुख्य,

अन्य, केवल.

धेनुका (तु करेगवां च) (मेघजाले च) कालिका ।

कारिका (यातनावृत्त्योः) कर्णिका (कर्णभूषणे) ॥ १५ ॥

(करिहस्ताङ्गुलौ पद्मबीजकोश्यां) (त्रिपूतरे) ।

वृन्दारकौ (रूपिमुख्या) वेके (मुख्यान्यकेवलाः) ॥ १६ ॥

हथिनी और 'च' शब्दसे नवीन व्याई गायको भी 'धेनुका' कहते हैं—जैसे कि, “ स्याद्धेनुका करिण्यां च धेनावपि ना तु दानप्रविशेपे ” (इति मेदिनी) यह हथिनी, नवप्रसूता गौ में स्त्रीलिङ्ग और धेनुकासुर में पुंलिङ्ग है । यह १ हथिनी आदिका का नाम है । मेघसमूह और 'च' शब्द से योगिनी भेदादिकों को भी 'कालिका' कहते हैं—जैसे कि “ कालिका चण्डिकाभेदे काष्ण्ये वृश्चिकपद्मयोः । ऋग्देयवस्तुमूल्य धूसरीनयमघयोः । पटोलशाखारोमालीमांसी काकीशिवासु च । मेघावली च ” (इति मेदिनी) यह १ मेघसमूह और काली-माई आदिका का नाम है । यातना=पीड़ा या नरक, विवरण श्लोक, कविता, नटभाया और शिल्प आदिकों को भी 'कारिका' कहते हैं । जैसे कि, “ कारिका नटयोषिति । कृतौ विवरणश्लोके शिल्पयातनयोरपि । नपुंसकं तु कर्मादौ कारकं कतरि त्रिषु ” (इति मेदिनी) यह १ यातना आदिकों का नाम है । कर्णभूषण,

गजशुण्ड का अग्रभाग और कमल के मध्यकोश (बीज) कोभी 'कर्णिका' कहते हैं—जैसे कि “ कर्णिका करिहस्ताग्रे करमध्याङ्गुलावपि । क्रमुकादिच्छटांशे-
ऽञ्जवराटे कर्णभूषणे ” (इति मेदिनी) यह १ कर्णभूषण आदिका नाम है ।
इसके अनन्तर खान्त के पहले जितने शब्द कहेगये हैं वे तीनों जिङ्गों में रहते हैं ।
रूपवान्, सुन्दर, प्रधान, और देवता को 'वृन्दारक' कहते हैं । जैसे कि
“ वृन्दारकः सुरे पुंसि मनेऽज्ञश्रेष्ठयोरपि ” (इति मेदिनी) यह देवतावाची पुलिङ्ग
है, सुन्दर और मुख्यवाची त्रिलिङ्ग है; यह १ देवता आदिकों का नाम है ।
मुख्य, अन्य और केवल ये एक शब्दवाच्य कहलाते हैं—जैसे कि “ एकं संख्या-
न्तरे श्रेष्ठे केवलेतरयोस्त्रिषु ” (इति मेदिनी) यह संख्यान्तर और श्रेष्ठ में
नपुंसक तथा केवल और इतर में त्रिलिङ्ग है । यह १ मुख्य आदिकों का
नाम है ॥ १५ । १६ ॥

मायावी, दूरसे

पु.

पु.

देखनेवाला,

मुखदेखा,

स्वामी का काम

न करनेवाला.

(स्या)दाम्भिकः कौकुटिको(यश्चादूररितेक्षणः) ।

लालाटिकः (प्रभोर्भालदर्शीकार्याक्षमश्च यः) ॥ १७ ॥

मायावी और छलकारी को 'दाम्भिक' कहते हैं । यह १ मायाकारी या
कपटकारी या छलछन्दी का नाम है । जो दूरदर्शी होता है उसे “ कौकुटिक ”
कहते हैं । यह १ दूरदर्शनशाली का नाम है । जो नौकर चाकर स्वामी के मुख
का देखनेवाला होता है और जो काम करने में असमर्थ होता है उनको ' लालाटिक '
कहते हैं—जैसे कि “ लालाटिकः सदात्तस्यप्रभुभालनिर्दर्शिनि ” (इत्यजयः)
जो सेवक क्रोध या प्रसन्नता के लिये स्वामी के भालका अवलोकन करनेवाला
होता है और जो प्रभु के कार्य करने में असमर्थ होता है इन दोनों को भी
' लालाटिक ' कहते हैं यह १ मुखदेखा या मालिक के काम न करनेवाले का
नाम है ॥ १७ ॥

पु. न.

पर्वत, चूतर, (भूभृन्नितम्बवलयचक्रेषु) कटको (ऽस्त्रियाम्) ।

कङ्कण, चक्र,

सूई की नोक,

छोटा बैरी,

रोमाञ्च.

पु.

(सूच्यग्रे क्षुद्रशत्रौ च लोमहर्षे च) कण्टकः ॥ १८ ॥

पर्वत, राजा, कमर का निचलाभाग, कङ्कण और रथाङ्गआदि इनको ' कटक '
कहते हैं—जैसे कि “ कटकोऽस्त्रीनितम्बोर्द्वेर्दन्तिनां दन्तमण्डले । सामुद्रलवणे
राजधानीवलययोरपि ” (इति मेदिनी) यह पर्वत का मध्यभाग, हाथी का दाँत,
सामुद्रीयलवण, राजधानी (जिमींदारी) और कङ्कण इन अर्थोंका वाचक

पुष्पपुंसक है । यह १ पर्वत आदिकों का नाम है । सुई की नोक, छोटासा बैरी, और लोमहर्ष तथा च शब्द से कृपण, नीच, बांस और काटे को “कण्टक” कहते हैं—जैसे कि “कण्टकः क्षुद्रशत्रौ च कर्मस्थानकदोषयोः । रोमाश्च च द्रुमाङ्गे च कण्टको मस्करेऽपि च ” (इति विश्वः) यह १ सूची-मुख आदिकों का नाम है ॥ १८ ॥

पकाना, बालक, पु.

हार के बीचकी मणि, अधिपति पलंगया परि- पु. १

वार, अधिक, पर्यङ्कः (स्यात्परिकरे) (स्याद्ब्याधेऽपि च) लुब्धकः १९ ॥
लोभी.

पकाना—और बालक ये दोनों ‘पाक’ शब्दवाच्य कहलाते हैं—जैसे कि “पाकः परिणतौ शिशौ । केशस्य जरसा शौक्ल्ये स्थाल्यादौ पचनेऽपि च ” (इति मेदिनी) यह परिणाम, बालक, बुढ़ापे से बालोंका पकना—और बटलोही आदिकों में पकाने का वाचक होकर पुंलिङ्ग है । यह पकाने आदि का नाम है । हार के बीचकी मणि, अधिपति और प्रधान को ‘नायक’ कहते हैं—जैसे कि, “नायको नेतरि श्रेष्ठे हारमध्यमणावपि ” (इति विश्वः) यह नेता=लेजाने वाला, मुख्य और हारमध्यगत मणि में भी पुंलिङ्ग है, यह १ मध्यरत्न आदिकों का नाम है । नौकर, चाकर, सेवक, परिवार, समूह, साज और पलंग को ‘पर्यङ्क’ कहते हैं—“पत्यङ्को मञ्चपर्यङ्कवृषीपर्यस्तिकासु च ” (इति मेदिनी) यह १ परिजन आदि का नाम है । शिकारी, अहेरी, बहेलिया, जानवरों का मारनेवाला और लोभी को भी ‘लुब्धक’ कहते हैं—यह १ व्याध आदिकों का नाम है ॥ १९ ॥

समूह, पेटारी,

शुक्र, देश में उपजा, गांव, पु.

ढाल, महाराया पु.

कहार. खेटकौ (ग्रामफलकौ) (धीवरेऽपि च) जालिकः ॥ २० ॥

समूह, गिरोह और अपि शब्द से पेटाग—पेटरी कोभी ‘पेटक’ कहते हैं—जैसे कि, “पेटकः पुस्तकादीनां मञ्जूषायां कदम्बके ” (इति विश्वः) यह पुस्तक आदिकों के समुदाय और पेटारा पिटारी सन्दूक आदिकों में पुंलिङ्ग है; यह १ समूह आदि का नाम है । उपदेशकर्ता गुरु और देश में उपजे हुए पुरुष को ‘दैशिक’ या ‘देशिक’ कहते हैं; यह १ गुरु आदिकों का नाम है । गांव और ढालको ‘खेटक’ कहते हैं, यह १ ग्राम आदिकों का नाम है ।

कहार—महरा और मछली पकड़नेवाले को 'जालिक' कहते हैं; यह १ धीवर आदि का नाम है ॥ २० ॥

पराग, पञ्च-^{पु.} (पुष्परेणौ च) किञ्जल्कः शुल्कोस्त्री (स्त्रीधनेऽपि च) ।
केसर, स्त्रीधन,^{पु.स.}
महसूल, हि-^{स.} (स्यात्कल्लोलेषु) त्कलिका वार्धकं (भाववृन्दयोः) ॥ २१ ॥
लकोरा, भाव,^{न.}
समूह.

पुष्पोंकी सुगन्धित धूलि या पराग और केसर को 'किञ्जल्क' कहते हैं । यह १ पुष्परज आदिका नाम है । स्त्रीधन, घाट आदिकी उतराई, चुंगी या महसूल आदि को 'शुल्क' कहते हैं । यह १ घट्टादिदेय धन आदिका नाम है । कल्लोल (हिलकोरा) और अपिशब्द से उत्कण्ठा आदि को 'उत्कलिका' कहते हैं—“ उत्कलिका तु हेलायां तरङ्गोत्कण्ठयोरपि ” (इति कोषान्तरम्) यह १ कल्लोल आदिका नाम है । भाव और समूह का वाचक 'वार्धक' कहा जाता है । यह वृद्धसमुदाय, वृद्धत्व और वृद्धकर्म का वाची होकर नपुंसकलिङ्ग है । यह १ भाव, समूह आदि का नाम है ॥ २१ ॥

हथिनी, वेश्या,^{स.} (करिण्यां) चापि गणिका दारकौ (बालभेदकौ) ।
बालक, विदा-^{पु.}
रक, अन्ध,^{पु.} (अन्धेऽप्य) नेडमूकः स्यादटङ्गौ (दर्पाश्मदारणौ) ॥ २२ ॥
घमण्ड, पत्थर
काटने का
औजार.

इति कान्तवर्गः ॥

हथिनी, अपिशब्द से जूही और वेश्यादिकों को 'गणिका' कहते हैं—“ गणिकायूथीवेश्येभीतर्कारीषु ना तु देवह्ने ” (इति मेदिनी) यह १ हथिनी आदिका नाम है । बालक, और भेदक इन दोनों को 'दारक' कहते हैं; यह १ बालक और विदारक का नाम है । अन्धा, अपिशब्द से शठ और गुगा-बहिराको 'अनेडमूक' कहते हैं—यह त्रिलिङ्ग है, जस कि “ त्रिलिङ्गोऽनेडमूकः स्याच्छठे वाक्श्रुतिवर्जिते ” (इति रभसः) यह १ अन्ध आदिकों का नाम है । घमण्ड या अभिमान और पत्थर काटने का औजार इनको 'टङ्ग' कहते हैं—“ टङ्गो नीलकपिथे च खनित्र टङ्गने स्त्रियाम् । जङ्गायां स्त्री पुमान्कोपे कोषा-सिमावदारणे ” (इति मेदिनी) यह काला कैथा, खुरपा, खन्ता, और टाकन में पुनःसक है, जाघों में स्त्रीलिङ्ग और कोप, तलवारका कोष तथा पत्थर काटने के औजार में पुलिङ्ग है; यह १ चार माशे की तौल, टांकी, छनी, सुहागा, क्रोध, घमण्ड, खुरपा, खन्ता या बेलचा आदिका नाम है ॥ २२ ॥

इति कान्तवर्गविवरणम् ॥

अथ खान्ताः ।

शोभा, किरण, ^{पु.} ज्वाला, भौरा, ^{पु.} मयूख (स्त्वट्करज्वाला व) (लिबाणौ) शिलीमुखौ ।
 बाण, निधिभेद, ^{पु.} भाल की हड्डी, ^{न.} शङ्ख, इन्द्रियादि. शङ्खो (निधौ ललाटास्थि न कम्बौ न स्त्री) (न्द्रियेऽपि) खम् २३
 अब खान्तवर्ग कहते हैं ।

शोभा, किरण और ज्वाला को 'मयूख' कहते हैं यह १ शोभा आदिका नाम है ।
 भौरा और बाण का वाचक 'शिलीमुख' है यह १ भौरा आदिका नाम है ।
 निधिभेद, ललाट की हड्डी, कङ्कण, और शङ्खको "शङ्ख" कहते हैं यह स्त्रीलिङ्ग नहीं है यह १ निधि आदिका नाम है और इन्द्रिय व अपिशब्दसे पुर, क्षेत्र, शून्य, बिन्दु, आकाश, संवेदन, देवलोक और कल्याण का भी वाचक 'ख' है यह १ इन्द्रिय आदिकोंका नाम है यह नपुंसक है ॥ २३ ॥

किरण, ज्वाला, ^{स.} घृणिज्वाले अपि ^{पु.} शिखे ^{पु.} (शैलवृक्षौ) नगावगौ ।
 चोटी आदि, ^{पु.} पर्वत, वृक्ष, ^{पु.} वायु, बाण, ^{पु.} आशुगौ (वायुविशिखौ) (शरार्कविहगाः) खगाः ॥ २४ ॥
 शर, सूर्य, पक्षी.

किरण, ज्वाला और अपिशब्द से, शाखा, मोगशिखा, कलिहारी, जूड़ा, जटा, व एँडी आदिको 'शिखा' कहते हैं यह १ किरण आदिका नाम है (इति खान्त-वर्गः) अब गान्त कहते हैं कि, पर्वत और वृक्ष ये दोनों 'नग' और 'अग' कहलाते हैं ये २ शैल आदिके नाम हैं । वायु और बाणको 'आशुग' कहते हैं यह १ पवन आदिका नाम है और बाण, सूर्य, पक्षी ये 'खग' कहलाते हैं यह १ तीर, सूर्य व चिड़ियों का नाम है ॥ २४ ॥

पक्षी, सूर्य, ^{पु.} पांखी, सुपारी, ^{पु.} पतङ्गौ (पक्षिसूर्यौ च) पूगः (क्रमुकवृन्दयोः) ।
 समूह, हरिण, ^{पु.} मृगशिर, हूँदना, ^{पु.} प्रवाह, जोरसे चलना. (पशवोऽपि) मृगा वेगः (प्रवाहजवयोरपि) ॥ २५ ॥

पक्षी, सूर्य और च्शब्द से शलभ व धानभेद को 'पतङ्ग' कहते हैं यह १ पतंगा आदिका नाम है । सुपारी और समूह को 'पूग' कहते हैं यह १ पूगीफल या डली आदिका नाम है । गार्द, भैंसी, घोड़ा आदि पशुओं को व अपिशब्दसे हरिण, मृगशीर्ष और हूँदने को भी 'मृग' कहते हैं यह १ पशु आदिकोंका नाम है और प्रवाह, शीघ्रता अपिशब्द से वीज और कृपण को भी 'वेग' कहते हैं यह १ बहने व जोरसे चलने आदिका नाम है ॥ २५ ॥

पु.
फूलकी धूलि,
गन्धचूर्ण धूलि,
हाथी आदि,
तिलक, नेत्र-
प्रात आदि.

परागः (कौसुमे रेणौ स्नानीयादौ रजस्यपि) ।

पु. पु. पु.
(गजेऽपि) नागमातङ्गवपाङ्ग (स्तिलकेऽपि च) ॥ २६ ॥

फूलकी धूलि, स्नानके लिये गन्धद्रव्य का चूर्णविशेष, आदिशब्द से सुरत आदि के परिश्रम की शान्ति के लिये कामशान्त्रादि में कहे कर्पूरादि का चूर्ण, मिट्टी की धूलि, अपिशब्द से पर्वतभेद, प्रसिद्धता, उपराग और चन्दन को भी ' पराग ' कहते हैं यह १ पुष्पधूलि आदि का नाम है । हाथी अपिशब्द से नाग, नागकेसर, नागवल्ली, हास्तिनपुर, मेघ, और मोथा आदि को ' नाग ' और ' मातङ्ग ' कहते हैं यह पुंलिङ्ग है । सीसा और लवंग का वाची ' नाग ' नपुंसक है अपिशब्द से चाण्डाल को ' मातङ्ग ' कहते हैं । तिलक अपिशब्द से नेत्रप्रान्त, चितेरा, प्रधान और अङ्गहीन को भी ' अपाङ्ग ' कहते हैं यह १ तिलक आदि का नाम है ॥ २६ ॥

स्वभाव, त्याग, पु.
निश्चय, अ-
ध्याय, सृष्टि,
कवच, उपाय, पु.
ध्यान, संगति,
युक्ति.

सर्गः (स्वभावनिमोक्षनिश्चयाध्यायसृष्टिषु) ।

युगः (संनहनोपायध्यानसंगतियुक्तिषु) ॥ २७ ॥

स्वभाव, त्याग या मोक्षका अभाव, निश्चय, अध्याय यानी काव्य आदि में विश्रामस्थान और सृष्टि को ' सर्ग ' कहते हैं यह १ प्रकृति आदि का नाम है निश्चय में जैसे कि " गृहाणा शस्त्रं यदि सर्ग एष ते " " यदि तुम्हारा यही निश्चय है तो हथियार को लीजिये " यह रघुवंश में कहा है और कवच या हथियारों का बाँधना, सामादि उपाय, ध्यान यानी चित्तवृत्ति का निरोध, समागम और युक्ति को ' योग ' कहते हैं यह १ कवच आदि का नाम है ॥ २७ ॥

पु.
सुख, स्त्री आदि
का पालन,
साँप का फन,
देह, पपीहा,
हरिण, विचित्र
रंग.

भोगः (सुखे स्त्र्यादिभृतावहेश्च फणकाययोः) ।

पु.
(चातके हरिणे पुंसि) सारङ्गः (श्वले त्रिषु) ॥ २८ ॥

सुख, स्त्री, आदिशब्द से वेश्या, हाथी, घोड़ा आदि के काम करनेवालों का पालन, सर्पका फण और शरीर इनको ' भोग ' कहते हैं यह १ सुखआदि का नाम है । पपीहा, हरिण और चित्रविचित्र या चितकबरा को ' सारङ्ग ' या ' शारङ्ग ' कहते हैं यह १ पपीहा आदिकों का नाम है यह पपीहा और हरिण में पुंलिङ्ग है और चितकबरे में त्रिलिङ्ग है ॥ २८ ॥

पु.

पु.

वानर, मेढक, (कपौ च) प्लवगः (शापे) त्वभिषङ्गः (पराभवे) ।

सारथी, शाप,
अनादर, जुवा
आदि, जोड़ा,
सत्ययुगादि.

पु.

न.

(यानाद्यङ्गे) युगः (पुंसि) युगं (युग्मे कृतादिषु) ॥ २६ ॥

वानर और चशब्द से मेढक, सारथी आदि को 'प्लवग' कहते हैं यह १ वन्दर आदिका नाम है । दुराशिष, बुरी दुआ, कोसना और अनादर या धिक्कारने को 'अभिषङ्ग' कहते हैं यह १ शापआदि का नाम है । सवारी और आदि शब्द से रथ, गाड़ा आदि के जुवा को 'युग' कहते हैं यह पुलिङ्ग है और जोड़ा, चारोयुग, चारहाथ और वृद्धिनामक औषधविशेष को भी 'युग' कहते हैं यह नपुंसक है यह १ जुवा, जोड़ा और सत्ययुग आदि का नाम है ॥ २६ ॥

स्वर्ग, बाण, (स्वर्गेषु पशुवाग्वज्रदिङ्नेत्रघृणिभूजले ।

गौ, बैल आदि,
चिह्न, मूत्रेन्द्रिय
आदि.

पु. म.

न.

लक्ष्यदृष्ट्या स्त्रियां पुंसि) गौर्लिङ्गं (चिह्नशेफसोः) ॥ ३० ॥

स्वर्ग, बाण, गाय, बैल आदि पशु, वाणी, वज्र (हीराआदि) दिशा, नेत्र, किरण, पृथ्वी, और पानी इन अर्थों में वर्तता हुआ गोशब्द प्रयोगानुसार स्त्रीलिङ्ग व पुलिङ्ग में रहता है जैसे कि "गौः स्वर्गे च बलीवर्दे रश्मौ च कुलिशे पुमान् । स्त्रीसौरभेयीदृग्वाणदिग्वाग्भूष्वप्सु भून्नि च" (इति मेदिनी) स्वर्ग, बैल, किरण और वज्र इन अर्थों में 'गौ' यह पुलिङ्ग है और गाय, दृष्टि, बाण, दिशा, वाणी, पृथ्वी और जलों में स्त्रीलिङ्ग है यह १ स्वर्ग आदि का नाम है और चिह्न व मूत्रेन्द्रिय को 'लिङ्ग' कहते हैं यह १ चिह्न, अनुमान, सांख्योक्तप्रकृति शिवमूर्तिविशेष और शिश्न का नाम है यह नपुंसक है ॥ ३० ॥

न.

न.

स्वामी, शिखर आदि, मस्तक, शृङ्गं (प्राधान्यसान्वोश्च) वराङ्गं (मूर्धगुह्ययोः) ।

योनि आदि,
संपदा, अभि-
लाषा आदि.

न.

भगं (श्रीकाममाहात्म्यवीर्ययत्नार्ककीर्तिषु) ॥ ३१ ॥

इति गान्तवर्गः ॥

प्राधान्य, शिखर और चशब्द से चिह्न, खेलने का जलयन्त्र, सींग, उत्कर्ष, भौहों का बीच और मस्तक को 'शृङ्ग' कहते हैं यह १ प्राधान्य आदिका नाम है । मस्तक, योनि, मातङ्ग और दालचीनी को भी 'वराङ्ग' कहते हैं यह १ शीश आदिका नाम है और संपदा या शोभा, इच्छा, माहात्म्य, वीर्य, यत्न, सूर्य, कीर्ति और योनि को भी 'भग' कहते हैं यह १ सम्पत्ति आदिका नाम है ॥ ३१ ॥

इति गान्तवर्गः ॥

अथ घान्ताः ।

मारना, अस्त्र- पु.

समूह, जल का
वेग, मोल, पूजा

का जल, पाप,

दुःख, शिकार

आदि.

परिघः (परिघातेऽस्त्रेऽप्योघो (वृन्देऽम्भसां रये) ।

पु.

पु.

न.

(मूल्ये पूजाविधा) वर्धोऽ(होदुःखव्यसनेष्व) घम् ॥ ३२ ॥

चारों ओर से मारना, लोहमय हथियार या लाठी, अपिशब्द से योगभेद और बेलहन को भी 'परिघ' कहते हैं यह १ परिघात आदि का नाम है और 'परेश्चवाङ्मयोः' इस सूत्र से लत्व करनेपर 'पलिघ' भी होता है यह १ काच, कलश, घट, घेर और नगर के फाटक का नाम है । समूह, जलका प्रवाह, परम्परा, शीघ्रता और नाचके उपदेश को भी 'ओघ' कहते हैं यह १ समुदाय आदि का नाम है । मोल, पूजा के उपहार या जलको 'अर्घ' कहते हैं यह १ मूल्य आदिका नाम है और पाप, दुःख, शिकार, जूआ खेलना, विपदा और राग, द्वेष आदि को भी 'अघ' कहते हैं यह १ पापआदिकों का नाम है ॥ ३२ ॥

इष्ट, अल्प, सि-

कहर या बीका,

काच, नेत्ररोग,

विपरीत, बड़ाई,

ठगना, अग्नि,

आषाढ़, मन्त्री

आदि.

(त्रिष्विष्टेऽल्पे) लघुः काचाः (शिव्यमृद्भेददृगुजः) ।

पु.

पु.

पु.

पु.

(विपर्यासे विस्तरे च) प्रपञ्चः (पावके) शुचिः ॥ ३३ ॥

(मास्यमात्ये चात्युपधे पुंसि मेध्ये सिते त्रिषु) ।

सुन्दर, सुडौल या रमणीय, अल्प और निस्सार को भी 'लघु' कहते हैं यह त्रिलिङ्ग है यह १ मनोज्ञ आदिका नाम है (इति घान्ताः) अब चान्त कहते हैं कि, सिकहर, काच और नेत्ररोग ये तीनों 'काच' कहलाते हैं यह १ सिकहर आदि का नाम है । विपरीतता, बड़ाई या शब्दविस्तार और च शब्दसे प्रतारण (ठगने को) भी 'प्रपञ्च' कहते हैं यह १ विपर्यय आदिका नाम है और अग्नि, आषाढ़ मास, धर्मादिके परीक्षण से शुद्धचित्तवाला मन्त्री, पवित्रता और उज्ज्वलता को 'शुचि' कहते हैं यह अग्नि, आषाढ़मास और शुद्धमन्त्री में पुलिङ्ग है और पवित्र व सफेद में त्रिलिङ्ग है यह १ पावक आदिका नाम है ॥ ३३ । ३ ॥

स.

क्रोधेच्छा, अभि-

लाषा, किरण

आदि.

(अभिष्वङ्गे स्पृहायां च गभस्तौ च) रुचिः (स्त्रियाम्) ॥ ३४ ॥

इति चान्ताः ॥

क्रोधकी इच्छा, अत्यासक्ति, किरण और चशब्द से प्रकाश और शोभा को 'रुचि' कहते हैं यह स्त्रीलिङ्ग है यह १ क्रोधकी इच्छा आदिका नाम है ॥ ३४ ॥

इति चान्ताः ॥

अथ छान्ताः ।

हर्षित, रीछ,
स्फटिक, पल्लव,
हार, पहिरनेके
कपड़े का छोर,
नाव, जल का
किनारा.

(प्रसन्ने भल्लुके) ^{पु. पु.स.न.}प्यच्छो गुच्छः (स्तवकहारयोः) ।

(परिधानाञ्चले) ^{पु.}कच्छो (जलप्रान्ते त्रिलिङ्गकः) ॥ ३५ ॥

इति छान्ताः ।

हर्षित या आनन्दित, रीछ, स्फटिकमणि और निर्मल को भी ' अच्छ ' कहते हैं यह १ प्रसन्न आदिका नाम है । फूलों या पत्तोंका ससुदाय, मोती की माला के भेद, शाखाशून्य टूट और समूह को ' गुच्छ ' कहते हैं यह १ पल्लव और हार आदिका नाम है । पुन्नागवृक्ष या तुनिवृक्ष, पहिरने के वस्त्रका किनारा, नाव का अङ्गविशेष इनको कच्छ कहते हैं यह पुंलिङ्ग है और जो जलप्रायदेश के तटका वाची है वह त्रिलिङ्ग कहलाता है यह १ परिधानाञ्चल आदिका नाम है ॥ ३५ ॥

इति छान्ताः ॥

अथ जान्ताः ।

मयूर, गरुड,
नेवला, दाँत,
ब्राह्मण, पक्षी,
विष्णु, शिव,
बकरा आदि,
गौका स्थान,
मार्ग, समूह.

(केकिताक्षर्या) ^{पु.}वहिभुजौ (दन्तविप्राण्डजा) ^{पु.}द्विजाः ।

^{पु.}अजा (विष्णुहरच्छागा) (गोष्ठाध्वनिवहा) ^{पु.}व्रजाः ॥ ३६ ॥

अत्र जान्त कहते हैं कि, मोर, गरुड, और नेवला को अहिभुक् (ज्) कहते हैं यह १ मोर आदिका नाम है । दाँत, ब्राह्मण और पक्षी ये ' द्विज ' कहलाते हैं जैसे कि " विप्रक्षत्रियविट्शूद्रा वर्णास्त्वाद्या द्विजाः स्मृताः " ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चार वर्ण कहलाते हैं इनमें आदिके तीन " ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य " ये ' द्विज ' कहेजाते हैं क्योंकि " मातुरग्रेऽधिजननं द्वितीयं मौञ्जिवन्धनम् " पहले माके उदरसे जन्म लेने व दूसरे जनेऊ के होने से महर्षियोंने ' द्विज ' कहा है यह १ दन्त आदिका नाम है । विष्णु, शिव, बकरा, भेंड़ा आदि और काम, ब्रह्मा व रघुराजा के पुत्र को ' अज ' कहते हैं यह १ हरि, हर आदिका नाम है और गौओं का घर, रास्ता और समूह (गरोह) ये ' व्रज ' कहलाते हैं यह १ गोष्ठ गायों के बाड़ा आदिका नाम है ॥ ३६ ॥

१-“जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद्द्विज उच्यते । वेदाभ्यासाद्भवेद्द्विप्रो ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः” (इति स्मृत्यन्तरम्) ॥

बुद्ध, यमराज, पु.

युधिष्ठिर, हाथी-धर्मराजौ (जिनयमौ) कुञ्जो (दन्तेऽपि न स्त्रियाम्) ।

दाँत, सघनवन, न.

खेत, नगर का स.

द्वार, उत्तम स्त्री. बलजे (क्षेत्रपूर्वारे) बलजा (वल्गुदर्शना) ॥ ३७ ॥

बुद्ध, यमराज और युधिष्ठिर ये ' धर्मराज ' कहलाते हैं यह १ जिन आदि का नाम है । हाथीका दाँत अपिशब्द से निकुञ्ज और सघनवन को ' कुञ्ज ' कहते हैं यह स्त्रीलिङ्ग नहीं है यह १ हाथीदाँत आदिका नाम है । खेत, नगरका दरवाजा, धान्य और संग्राम को ' बलज ' कहते हैं यह १ खेत आदिका नाम है और जो प्यारी, सुकुमारी, दर्शनीया नारी है वह ' बलजा ' कहलाती है यह १ उत्तम रमणी आदिका नाम है ॥ ३७ ॥

समभूभाग, सं-

स.

स.

ग्राम, पुत्र, कन्या, (समक्षमांशे रणे) प्रजा (स्यात्संततौ जने) ।

रैयत, शङ्ख,

चन्द्रमा, धन्व- पु.

न्तरि, कमलआदि

अपने, नित्य.

अब्जौ (शङ्ख शशाङ्गौ च) (स्वके नित्ये) निजं (त्रिषु) ३८

इति जान्ताः ॥

समभूभाग, और संग्राम को ' आजि ' कहते हैं यह १ समानभूभाग आदि का नाम है । वंश और रैयतको ' प्रजा ' कहते हैं यह १ सन्तान आदि का नाम है । शङ्ख, चन्द्रमा, वेतसवृक्ष, समुद्रफल, धन्वन्तरि वैद्य और कमल आदि ये ' अब्ज ' कहलाते हैं यह १ शङ्खादि का नाम है और आत्मीय व नित्य को ' निज ' कहते हैं यह त्रिलिङ्ग है यह १ आत्मीय आदि का नाम है ॥ ३८ ॥

इति जान्ताः ॥

अथ जान्ताः ।

पु.

आत्मा, प्रवीण,

बुद्धि, नाम, हाथ

आदि से अर्थ स.

बतलाना, गा-

यत्री, सूर्यपत्नी.

(पुंस्यात्मनि प्रवीणे च) क्षेत्रज्ञो (वाच्यलिङ्गकः) ।

संज्ञा (स्याच्चेतनानामहस्ताद्यैश्चार्थसूचना) ॥ ३९ ॥

आत्मा और प्रवीण को ' क्षेत्रज्ञ ' कहते हैं यह आत्मा में पुलिङ्ग है और प्रवीण अर्थ में वाच्यलिङ्ग यानी त्रिलिङ्ग कहलाता है यह १ आत्मा आदिकों का नाम है और चेतना, नाम तथा हाथ, भौंह व लोचन आदिसे अर्थ की सूचना यानी चेष्टा करना ये संज्ञापदवाच्य कहलाते हैं यानी बुद्धि, अभिधान, हस्त आदिकों से अर्थ की सूचना, गायत्री और सूर्य की धर्मपत्नी को भी ' संज्ञा ' कहते हैं यह १ चेतना आदिका नाम है ॥ ३९ ॥

वैद्य, पण्डित या प्राज्ञ, विद्वान्, बुध. ^{पु.} **दोषज्ञौ (वैद्यविद्वांसौ) ज्ञौ (विद्वान्सोमजोऽपि च) ॥ ४० ॥**

इति ज्ञान्ताः ॥

वैद्य, और विद्वान् को ' दोषज्ञ ' कहते हैं यह १ हकीम, डाक्टर, वैद्य और विद्वान् का नाम है और अध्यात्मवेत्ता, पण्डित तथा चन्द्रपुत्र ये ' ज्ञ ' कहलाते हैं यानी विद्वान्-बुध-और ब्रह्माको भी ' ज्ञ ' कहते हैं यह १ विद्वान् आदिका नाम है ॥ ४० ॥

इति ज्ञान्ताः ॥

अथ टान्ताः ।

कौआ, हाथी का गाल आदि, ^{पु.} **(काकेभगण्डौ) करटौ (गजगण्डकटी) कटौ ।**
हाथी का कपोल, कमर आदि, ^{पु.} **शिपिविष्ट (स्तु खलतौ दुश्चर्मणि महेश्वरे) ॥ ४१ ॥**
चँदुला, दुष्टचर्म, महेश आदि.

कौआ, हाथी का गाल ये दोनों ' करट ' कहलाते हैं यह १ कौआ आदि का नाम है । हाथीका कपोल, कमर और चटाई आदि को ' कट ' कहते हैं जैसे कि " कटः ओष्णौ द्वयोः पुंसि किलिञ्जंऽतिशये शवे " (इति मेदिनी) कमर, मांपी या चटाई अतिशय और मुर्दे को ' कट ' कहते हैं यह कमर में पुंस्त्रीलिङ्ग है और अन्य अर्थों में पुंलिङ्ग है यह १ गजगण्ड आदि का नाम है और चँदुला, दुष्टचामवाला, महेश और श्रीकृष्ण को शिपिविष्ट या ' शिपिविष्ट ' कहते हैं यह १ खलवाट आदि का नाम है ॥ ४१ ॥

विश्वकर्मा, ब- ^{पु.} **(देवशिल्पिन्यपि) त्वष्टा दिष्टं (दैवेऽपि न द्वयोः) ।**
दई, सूर्य, भाग्य, ^{न.} **(रसे) कटुः कटु (कार्ये) त्रिषु (मत्सरतीक्ष्णयोः) ॥ ४२ ॥**
काल, रस, ^{पु.} **(रसे) कटुः कटु (कार्ये) त्रिषु (मत्सरतीक्ष्णयोः) ॥ ४२ ॥**
अकार्य, डार, ^{न.} तीखा.

देवताओं के कारीगर विश्वकर्मा अपिशब्द से बड़ई और सूर्य को त्वष्टा (ष्ट) कहते हैं यह १ देवशिल्पी आदिका नाम है । भाग्य और अपिशब्द से काल को भी ' दिष्ट ' कहते हैं यह भाग्य में स्त्रीपुंलिङ्ग नहीं है बरन नपुंसक है और अन्य अर्थों में पुंलिङ्ग है और रसमात्र, अकार्य, अभिमान और तंज को ' कटु ' कहते हैं यह रसमात्र में पुंलिङ्ग, अकार्य में नपुंसक और अभिमान तथा तीक्ष्णता में त्रिलिङ्ग है यह कटुवे रस आदि का नाम है ॥ ४२ ॥

१-किल्यतंऽनेन ' किलश्वेत्यक्रीडनयोः ' अस्माद् ' इयुपधात्क्त् ' इतीनि किलिक्त्वेनवीरणादिस्ततो जातः जनेः " पञ्चम्यामजातो " इति डे पृषोदरादित्वानुमागमे च किलिञ्जस्तस्मिन्निति ॥

२-" कटधूमस्य सौरम्यमवघ्रायव्रजौकसः " (इति भागवतम्) ॥

क्षेम, अशुभ, न. श्रुं (क्षेमाशुभाभावे) प्वरिष्टे (तु शुभाशुभे) ।
 शुभ, शुभ, अ-शुभ, सौरि का
 घर, मदिरा, (मायानिश्चलयन्त्रेषु कैतवानृतराशिषु) ॥ ४३ ॥

मरणका चिह्न, पु.न. अयोधने शैलशृङ्गे (सीराङ्गे) कूट (मस्त्रियाम्) ।
 यन्त्रादि, छोटी

इलायची, काल स. (सूक्ष्मैलायां) त्रुटिः (स्त्रीस्यात्कालेऽल्पेसंशयेऽपि सा) ४४

कुशल, अमङ्गल, अशुभ का अभाव यानी शुभ और तलवार, बेर, मैनफल व रीठा ये ' रिष्ट ' कहलाते हैं यह १ क्षेम आदि का नाम है । शुभ और अशुभ को ' अरिष्ट ' कहते हैं । यानी लहसुन, नीबूवृक्ष, रीठा, कौआ, उजलीचील्ह, अशुभ, मठा, सोवरिका घर, मदिरा, शुभ, मरने का चिह्न, विघ्न और वृषभासुर ये ' अरिष्ट ' कहलाते हैं । यह १ शुभाशुभ आदि का नाम है । माया, निश्चल, मृगबन्धन-यन्त्र, कपट, असत्य, समूह, लोह गढ़ने का आयुधविशेष निहाई घन या हथौड़ा, पर्वतका शिखर और हलका अग्रभाग यानी फारका आधार इनको ' कूट ' कहते हैं । यह स्त्रीलिङ्ग नहीं है वरन पुत्रपुंसक है । यह १ माया आदिका नाम है और छोटी इलायची को ' त्रुटि या त्रुटी ' कहते हैं । वही "त्रुटिशब्द" कालमान, अतिअल्प और सन्देह में भी कहाजाता है । यह स्त्रीलिङ्ग है । यह १ गुजराती इलायची आदि का नाम है ॥ ४३ । ४४ ॥

धन्वा की नोक, स. जटा (अर्त्युत्कर्षाश्रयः) कोटयो (मूले लग्नकचे) जटा ।
 बड़ाई, कोन, स. कोटि, जड़, स. लिपटे बाल, स. फल, संपदा, व्युष्टिः (फले समृद्धौ च) दृष्टि (ज्ञानेऽक्षिण दर्शने) ॥ ४५ ॥
 ज्ञान, नेत्र, देखना.

धनुष का अग्रभाग, प्रशंसा या बड़ाई, तलवार आदिका कोना या धार और करोड़ को ' कोटि ' कहते हैं । यह १ धन्वा के अग्रभाग आदिका नाम है । जड़ और मिले जुले बालों को ' जटा ' या " जटी " भी कहते हैं । यह १ जड़ आदि का नाम है । फल और फलसाध्य समृद्धि को ' व्युष्टि ' कहते हैं । यह १ फल आदिका नाम है और ज्ञान, नेत्र व दर्शन को ' दृष्टि ' कहते हैं यह १ ज्ञान आदि का नाम है ॥ ४५ ॥

यज्ञ, इच्छा, स. दृष्टि (र्यागेच्छयोः) सृष्टि (निर्दिष्टे बहुनि त्रिषु) ।
 निश्चित, बहुत, पु.स.न. दुःख, महावन, कष्टे (तु कृच्छ्रगहने) (दक्षानन्दानन्देषु तु) ॥ ४६ ॥
 दक्ष, तीक्ष्ण, नी-रोग, हर, काला

पु.स.न. पु.
 कौआ, पेट का कोठा, कोठिला, घरका मध्य, खत्ता कोठरी आदि. (पुंसि) **कोष्ठे** (ऽन्तर्जठरं कुसूलोऽन्तर्ग्रहं तथा) ॥ ४७ ॥

यज्ञ, अभिलाषा या चेष्टा और श्लोकसंग्रह को 'इष्टि' कहते हैं। यह १ याग आदिकों का नाम है। निश्चय कियाहुआ, अधिक, मुक्त, और निर्मित को सृष्टि या 'सृष्ट' कहते हैं। यह त्रिलिङ्ग है यह १ निश्चित आदिका नाम है। दुःख, महावन या नहीं जाने योग्य देश को 'कष्ट' कहते हैं। यह १ दुःख आदि का नाम है। चतुर, तेज या चालाक और नीरोग ये 'पटु' कहलाते हैं यह १ दक्ष आदि का नाम है। कष्ट और पटु ये दोनों वाच्यलिङ्ग यानी त्रिलिङ्ग कहेजाते हैं (इति ढान्ताः) अब ढान्त कहते हैं। कि, महादेव, अपिशब्दसे काला कौआ, गौरैया, खँडरैचा आदि को 'नीलकण्ठ' कहते हैं। यह १ शिव आदिका नाम है, और पेट का कोठा, कोठिला, घरका कोठा या कोठरी आदि को 'कोष्ठ' कहते हैं। यह पुंलिङ्ग है। यह १ कोठा आदिका नाम है ॥ ४६।४७॥

सिद्धि, नाश, स. स.
 अन्त, बढ़ाई, मर्यादा, दिशा, अत्युत्तम, अति बृद्ध, बड़ा भाई, महीना, नालक, छोटा भाई.
निष्ठा (निष्पत्तिनाशान्ताः) काष्ठो (त्कर्षे स्थितौ दिशि) ।
 पु.स.न. पु.
(त्रिषु) ज्येष्ठो (ऽतिशस्तेऽपि) कनिष्ठो (ऽतिराल्पयोः) ४८
 इति ढान्ताः ॥

सिद्धि, नाश, अन्त, धर्म में तत्परता, अद्धा, विश्वास, व्रत, श्लेश, उत्कर्ष, मांगना, और नाट्यकी सन्धि को 'निष्ठा' कहते हैं। यह १ निष्पत्ति आदिका नाम है। बढ़ाई, मर्यादा, दिशा, दारुहल्दी, और कालविशेष को 'काष्ठा' कहते हैं। यह १ प्रशंसा आदिका नाम है। अतिप्रशस्त सुयोग्य अपिशब्दसे बूढ़ा, बड़ा भाई और वैशाखके बाद महीना को 'ज्येष्ठ' कहते हैं। यह १ बड़ा प्रधान, श्रेष्ठ, उत्तम, जेठा या पहलौठा आदिका नाम है। यह त्रिलिङ्ग है। और अतियुवा, बहुत थोड़ा, या छोटा लहुरा, और छोटा भाई इनको 'कनिष्ठ' कहते हैं। और छोटी अँगुली कनिष्ठा कहलाती है। यह १ अतियुवा आदिका नाम है ॥ ४८ ॥

इति ढान्ताः ॥

अथ ढान्ताः ।

साठी, दण्डकरना पु. न. पु.
 आदि, मिट्टी दण्डो (ऽस्त्री लगुडेऽपि स्याद्) गुडो (गोलेक्षुपाकयोः) ।
 आदिका गोला पु. स. स.
 या गेंद, मीठा, सांप, नाच, गौ, धरती, बाखी, (सर्पमांसतपशू) व्याडौ (गोभूवाच) स्तिवडा इत्या ॥४६॥
 बुधमार्या.

जाठी—अपिशब्द स दण्डदेना, प्रमाणविशेष, यम, सेना, क्रियाविशेष, वृक्ष की शाखा, कोना, मथानी, अभिमान, ग्रहण और सूर्य के पास रहनेवाले ग्रहविशेष को भी 'दण्ड' कहते हैं यह १ जाठी आदिका नाम है । मिट्टी आदिका गोला या गेंद और इसके विकार को 'गुड' कहते हैं । यह १ गोला आदि का नाम है । सांप और बाघ तथा खल को भी 'व्याड' या 'व्याल' कहते हैं । यह १ सर्प आदिका नाम है और गौ, पृथ्वी, वाणी और बुधकी भार्या को भी इडा और इला कहते हैं । यहां ड-ल, की एकता होनेसे दो पद होगये हैं, ये २ गौ आदिके नाम हैं ॥ ४६ ॥

स. स.
बांसकी शलाका, क्ष्वेडा (वंशशलाकाऽपि) नाडी (कालेऽपि षट्क्षणे) ।
सिंहनाद, विषादि, पु.न.
षड़ी, नाड़ी,
दण्ड, नाण,
निन्दित आदि. काण्डो(ऽस्त्री दण्डबाणार्धवर्गावसरवारिषु) ॥ ५० ॥

बांसकी शलाका अपिशब्दसे सिंहनाद को 'क्ष्वेडा' कहते हैं । यह स्त्रीलिङ्ग है वैसेही विष, ध्वनि और कर्णरोगको 'क्ष्वेड' कहते हैं यह पुंलिङ्ग है । और लालपत्ते व फूल वाले मदार, पीले फूलकी तोरई को भी 'क्ष्वेड' कहते हैं । यह नपुंसक है यह १ वंश-शलाका आदिका नाम है । छः क्षणपरिमित समय, अपिशब्दसे शिरा (धमनी) गांड़र दूब और वंशपत्री को नाड़ी कहते हैं । यह १ षट्क्षणावाले काल आदिका नाम है और दण्डा, बाण, निन्दित, वर्ग, अवसर, तृणादिकों का गुच्छा, वृक्षों का कन्धा और जलको 'काण्ड' कहते हैं यह १ दण्ड आदि का नाम है ॥ ५० ॥

घोड़ेका गहना न.
आदि, अत्यर्थ, (स्या) झण्ड (मशवाभरणेऽमत्रेमूलवणिग्धने) ।
प्रतिज्ञा, दद,
अतिशय, न. न.
दुःख, कष्ट. (भृशप्रतिज्ञयो) बाढं प्रगाढं (भृशकृच्छ्रयोः) ॥ ५१ ॥

घोड़ों का गहना, बर्तन, बनियों का मूलधन इनको 'भाण्ड' कहते हैं अथवा सेने, चांदी के बने घोड़ों की सजावट के लिये गहने, भूषणमात्र पात्र और बनिये का मूलधन (पूंजी) ये 'भाण्ड' कहलाते हैं । यह १ घोड़ों के गहना आदि का नाम है । अतिशय, अत्यन्त, अधिक, अङ्गीकार और दृढ़ता को 'बाढ' कहते हैं । यह १ अतिशय आदिका नाम है और अतिशय, कष्ट, पाप, दुःख या कष्टदायक प्राजापत्य आदि व्रत और मूत्रकृच्छ्ररोग तथा दृढ़ ये 'प्रगाढ' कहलाते हैं । यह १ अतिशय कष्ट आदि का नाम है ॥ ५१ ॥

समर्थ, मोटा, पु.स.न. पु.स.न.
जोड़े, मिले. (शक्रस्थूलौ त्रिषु) दृढौ व्यूढौ (विन्यस्तसंहतौ) ।
सेना विशेष, पु.
बन्धा, स्त्रीकागर्भ, पु.
नाणासुर, तीर. भूणो(ऽर्भके स्त्रैणगर्भे) बाणो(बलिसुते शरे) ॥ ५२ ॥

समर्थ, मज्जबूत या मोटा इनको 'दृढ' कहते हैं। यह १ बलवान् आदि का नाम है। यह त्रिलिङ्ग है। छोड़ा या रक्खा परस्पर मेल और सेना का विशेष संस्थापन ये 'व्यूढ' कहलाते हैं यह १ त्यागेहुए आदि का नाम है। यह भी त्रिलिङ्ग है। एक छोटासा बालक (बच्चा) और स्त्रीका गर्भ ये 'भ्रूण' कहलाते हैं यह १ बच्चे आदिका नाम है और महाराज बलि का पुत्र और तीर को 'बाण' कहते हैं यह १ बाणासुर आदि का नाम है ॥ ५२ ॥

अतिसूक्ष्म, पु.

पु.

चावलों की क-**कणो** (अतिसूक्ष्मे धान्यांशे संघाते प्रमथे) गणः ।

नकी, समूह,

रुद्रानुचर,जूआ पु.१

की बाजी आदि-**पणो** (घृतनिष्कृष्टे भृतौ मूल्ये धनेऽपि च) ॥ ५३ ॥

अत्यन्त छोटासा कना, कनिका, परमाणु, या लवविशेष और अनाज का दाना या चावलों की कनकी इनको 'कण' कहते हैं। यह १ अतिसूक्ष्म आदि का नाम है। समूह और रुद्रका अनुचर ये 'गण' कहलाते हैं। यह १ समूह आदि का नाम है। पाशाआदिकों से जूआ खेलना आदिशब्द से मुर्गा, तीतर, बटेर आदिकों की लड़ाई कराकर बाजी लगाना, छोड़ना, नौकरी, वस्तुओं का मोल, और द्रव्य यानी बीसगण्डे कौड़ी अथवा ८० कौड़ियों का परिमाण (चार काकिणी) अपि शब्द से लेनदेनका व्यवहार, बड़ाई, पैसा, प्रतिज्ञा, वचन, होड़, शर्त, करार और सागको 'पण' कहते हैं। यह १ घृत आदि का नाम है ॥ ५३ ॥

पु.

धनुषकी रस्सी, रसगन्धादि,
मौन रहना
आदि-**(मौर्याद्रव्याश्रिते सत्त्वशुक्लसंध्यादिके) गुणः ।**

पु.

(निर्व्यापारस्थितौ कालविशेषोत्सवयोः) क्षणः ॥ ५४ ॥

धनुषकी रस्सी, रोदा, पनच, या चिल्ला, रसगन्ध आदि, सत्त्व, रज, तम, स्वभाव, हुनर, चतुराई, प्रवीणता, विद्या, विशेषण आदि, सफ़ेद, लाल, पीला, काला आदि, सन्धि, विग्रह आदि या संध्याआदि, रूप, इन्द्रिय, बुद्धि, रस्सी, रोटिकरा और ऋ के स्थान में अर्, इ के ए, उ के ओ होने को भी गुण कहते हैं। यह १ रोदा आदिका नाम है। बिना व्यापार चुपचाप रहना, तीस कलाका समय, पुत्रजन्म और पर्वआदि का उत्सव इनको 'क्षण' कहते हैं यह १ निर्व्यापारस्थिति यानी निरुद्यम होकर टिकने आदिका नाम है ॥ ५४ ॥

ब्राह्मण, क्षत्रि- पु.

न.

यादि, सफ़ेद, **वर्णो** (द्विजादौ शुक्लादौ स्तुतौ) **वर्ण** (तु वाक्षरे) ।

लाल आदि,

बड़ाई, हरूप, पु.

सूर्य, सूर्यका

सारथी, वर्णभेद

आदि.

अरुणो (भास्करोऽपि स्याद्वर्णभेदेऽपि च त्रिषु) ॥ ५५ ॥

१ " वराटकानां दशकद्वयं यत्ता काकिणी ताश्च पण्यश्चतस्रः । ते षोडशद्रुम इहावगम्यो द्रुमैस्तथा षोडशभिश्च निष्कः " (इति लीलावत्याम्) ॥

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—सफ़द, लाल, पीला, काला आदि रङ्ग—यश, गुण, कथा और स्तुति को भी 'वर्ण' कहते हैं । यह पुंलिङ्ग है और अक्षरों 'हरूपों' के लिखने को भी 'वर्ण' कहते हैं । यह वर्णभेद में विकल्प से नपुंसकलिङ्ग है । यह १ द्विजादिकों का नाम है और सूर्य, वर्णभेद, अपिशब्दसे सन्ध्याराग, सूर्य का सारथि, कपिल और कुष्ठ का भेद इनको 'अरुण' कहते हैं यह पुंलिङ्ग है और गुणवान् में त्रिलिङ्ग है । यह १ सूर्य आदिकों का नाम है ॥ ५५ ॥

पु. शिव, खंभा या
टूँठ, वृक्षादि,
काला कौआ, पु. *
द्रोणाचार्य,
परिमाण विशेष,
शब्द, संग्राम,
नाई, मुख्य
आदि.

पु. **स्थाणुः (शर्वेऽपि च) द्रोणः (काकेऽपि च) (रवे) रणः ।**

पु. * **ग्रामणी (नापिते पुंसि श्रेष्ठे ग्रामाधिपे त्रिषु) ॥ ५६ ॥**

शिव, अपिशब्दसे स्तम्भ 'शाखापत्रशून्य टूँठ' और ठहरी वस्तु, वृक्ष, पर्वत आदि इनको 'स्थाणु' कहते हैं । यह १ महादेव आदिका नाम है । काला कौआ, अपि शब्दसे द्रोणाचार्य, चार आठक परिमाणविशेष और देशान्तर इनको 'द्रोण' कहते हैं । यह पुंलिङ्ग है । यानी द्रोणाचार्य और डोम कौआ में पुंलिङ्ग है । परिमाणविशेष और देशभेद में पुंनपुंसक है । और डोंगी तथा इन्द्रवारुणी में स्त्रीलिङ्ग है । यह १ काले कौआ आदिकों का नाम है । शब्द, कोण और संग्राम इनको 'रण' कहते हैं । यह शब्द और कोण में पुंलिङ्ग है । और संग्राम में पुंनपुंसक है । यह १ शब्द आदिकों का नाम है । और नाई, मुख्य और ग्रामाधिप ये 'ग्रामणी' कहलाते हैं । यह नाई में पुंलिङ्ग है । और श्रेष्ठ व ग्रामाधिप में त्रिलिङ्ग है । यह १ नाई आदिका नाम है ॥ ५६ ॥

भेंडा, खरहा, स. +
ऊँट आदि लोमों
का बना ऊन
आदि, मृगी, स.
स्वर्णप्रतिमा
आदि.

ऊर्णा (मेषादिलोम्नि स्यादावर्ते चान्तराश्रुवोः) ।

हरिणी (स्यान् गी हेमप्रतिमा हरिता च या) ॥ ५७ ॥

भेंडा, खरगोश, ऊँट और हरिण आदि इनके लोम और भौंहोंका घेर इनको 'ऊर्णा' कहते हैं । " वह 'ऊर्णा' चक्रवर्ती आदि महाराजाओं तथा महारोगियों के अंग में महापुरुषलक्षणावाली, मृणालतन्तु के समान सूक्ष्मरूप, सफ़ेद व चौड़ी होकर

* "ग्रामीणा नीलिकायां स्त्री ग्रामोद्भूतेऽभिधेयवत्" (इति मेदिनी) । ग्रामोऽस्त्यस्या इति विग्रहे तु ग्रामिणीत्यपि ।

†—स्वामिमते तु "आवर्ते चान्तराश्रुवौ" इति पाठस्तत्र भुवावित्यत्र 'अन्तरान्तरेण युक्ते' इति द्वितीया ज्ञातव्या ॥

प्रायः सुन्दर घेरवाली होती है ” यह १ भेंड़ा, खरहा, ऊंट आदिकों के लोम आदि का नाम है । हरिणी, सोने की प्रतिमा, हरी वस्तु और वृत्तभेद इनको ‘ हरिणी ’ कहते हैं । यह १ मृगी आदिका नाम है ॥ ५७ ॥

पाण्डुरवर्ण, मृग, पु. स.
खम्भा, लोहेकी (त्रिषु पाण्डौ च) हरिणः स्थूणा (स्तम्भेऽपि वेश्मनः) ।
प्रतिमा, वाञ्छा, स.
पिपासा, निन्दा, स.
दया. तृष्णे (स्पृहापिपासे द्वे) (जुगुप्साकरुणे) घृणे ॥ ५८ ॥

पाण्डुरवर्ण चशब्द से मृगभेद इनको ‘ हरिण ’ कहते हैं यह १ पाण्डुवर्ण आदि का नाम है यह त्रिलिङ्ग है । यानी हरिण में पुंलिङ्ग और पाण्डुर में त्रिलिङ्ग कहलाता है । घर का खम्भा, अपिशब्द से लोहेकी बनीहुई प्रतिमा (तसवीर) इनको स्थूणा कहते हैं । यह १ गेहस्तम्भआदि का नाम है । वाञ्छा, पिपासा (पीने की इच्छा) ये दोनों ‘ तृष्णा ’ पद वाच्य कहलाते हैं यह १ स्पृहा आदि का नाम है और निन्दा व करुणा को घृणा कहते हैं यह १ जुगुप्सा आदि का नाम है ॥ ५८ ॥

बाज़ार की गली, स.
दुकान आदि, स.
मदिरा, पश्चिम न.
दिशा, हथिनी, स.
हाथी, बल, धन. करेणु (रिभ्यां स्त्री नेभे) द्रविणं (तु बलं धनम्) ॥ ५९ ॥

बाज़ारकी रास्ता, बाज़ार, व्यवहार के योग्य वस्तु इनको ‘ विपणि ’ कहते हैं । यह स्त्रीलिङ्ग है यह १ हाटकी बाट आदिका नाम है । मदिरा, पश्चिम की दिशा इनको ‘ वारुणी ’ कहते हैं । यह १ सुराभेद, दूब या गांडर दूब आदिका नाम है । हथिनी और हाथी को ‘ करेणु ’ कहते हैं यह हथिनी में स्त्रीलिङ्ग और हाथी में पुंलिङ्ग है यह १ हस्तिनी आदिका नाम है और बल व धन ये दोनों ‘ द्रविण ’ कहलाते हैं यानी पराक्रम और धनको ‘ द्रविण ’ कहते हैं यह १ सामर्थ्य आदि का नाम है ॥ ५९ ॥

घर, रक्षा करने- न.
वाला, कमल, शरणां (गृहरक्षिभ्योः) श्रीपर्णा (कमलेऽपि च) ।
अग्निमन्थ, न.
विष, युद्ध, (विषाभिमरलोऽेषु) तीक्ष्णां (क्लीबे खरे त्रिषु) ॥ ६० ॥
लोहा, तेज.

घर, रक्षा करनेवाला, वध और रक्षण को भी ‘ शरणा ’ कहते हैं जैसे कि ‘ स्त्यात्मकं त्वां शरणां प्रपद्ये ’ यह १ घर आदिका नाम है । कमल, अग्निमन्थ (अंगेथुवावृक्ष) को ‘ श्रीपर्णा ’ तथा वारिपर्णी और कम्भारी को ‘ श्रीपर्णी ’

कहते हैं यह १ पद्म आदिका नाम है और विष, मरने की निरपेक्षा से युद्ध का उत्साह, लोह और तेज को ' तीक्ष्ण ' कहते हैं यह विष, युद्ध, लोह में नपुंसक है और तेज स्पर्श में त्रिलिङ्ग है यह १ गरल (माहुर=जहर) आदिका नाम है ॥ ६० ॥

न.

हेतु मर्यादा
आदि जिससे
क्रिया कीजाय, न.
स्वत आदि.

प्रमाणं (हेतुमर्यादाशास्त्रेयत्ताप्रमातृषु) ।

करणं (साधकतमं श्रेष्ठग्राहेन्द्रियेष्वपि) ॥ ६१ ॥

कारण, मर्यादा, शास्त्र ६ दर्शन, * इयत्ता, (इतनी) ज्ञाता और सत्यवक्ता इनको ' प्रमाण ' कहते हैं । यह १ कारण आदिका नाम है और क्रियासिद्धि में अत्यन्त उपकारक, स्वत, देह, कान, आँख, नाक आदि इन्द्रियां अपिशब्दसे कर्म, कायस्थ, व्रतबन्ध, नाचना, गाना, बनियां से शूद्रा में उपजा बालक और वानर आदि इनको ' करण ' कहते हैं । यह १ साधन व क्षेत्र आदिकों का नाम है ॥ ६१ ॥

जीवोंके जन्मादि,
उगिला अन्नादि.

(प्राण-उत्पादे) संसरण (मसंबाधचमूगतौ) ।

(घण्टापत्रे) (ऽथ वान्तात्रे) समुद्धरण (मुद्गये) ॥६२॥

जीवोंकी उत्पत्ति, बिना रोकटोक सेना का चलना, राजपथ, या घण्टाबोधित हाथियों का मार्ग और नगरमार्ग इनको ' संसरण ' कहते हैं । यह १ जीवोंके जन्म आदिका नाम है और उगिला या कै कियाहुआ अन्न, जलपात्र आदिका ऊपरले जाना, उखाड़ डालना इनको समुद्धरण और उद्धरण भी कहते हैं यह १ उगिले अन्न आदिका नाम है ॥ ६२ ॥

पु.स.न.

पशुओंका सींग,
हाथीदाँत, क्रम
से उतार पृथि- पु.स.न.
न्यादि.

(अतस्त्रिषु) विषाणं (स्यात्पशुशृङ्गेभदन्तयोः) ।

प्रवणः (क्रमनिम्नोर्व्यां प्रहे नातु चतुष्पथे) ॥ ६३ ॥

इसके अनन्तर गान्तर्पर्यन्त कहे जानेवाले शब्द त्रिलिङ्ग हैं । गाय, बैल, भैंस आदि पशुओं का सींग और हाथी का दाँत इनको ' विषाण ' कहते हैं यह त्रिलिङ्ग है जैसे कि मेदिनीकोष में कहा है कि, क्षीरविदारी, मेढासिंगी इन औषधियों को ' विषाणी ' कहते हैं यह त्रिलिङ्ग है कूट नाम औषधि में नपुंसक है और सींग व हाथीदाँत में त्रिलिङ्ग है यह १ पशुशृङ्ग आदि का नाम है और क्रम से उतार भूभाग यानी गहरी पृथ्वी, लचा या मुँकाहुआ पदार्थ, चौराहा, स्वाधीनमात्र,

क्षीण और सीधा इनको प्रवण कहते हैं यह चौराहे में पुलिङ्ग और अन्य अर्थों में त्रिलिङ्ग है यह १ निम्न भूभाग आदि का नाम है ॥ ६३ ॥

व्याप्त, अशु- पु.स.न. संकीर्णो (निचिताशुद्धा) वीरिणं (न्यमूषरम्) ।
 डादि, शून्य, पु.स.न. (देवसूर्यो) विवस्वन्तौ स स्वन्तौ (नदार्णवौ) ॥ ६४ ॥
 ऊसर, देव, सू- योदिनद, समुद्र.

व्याप्त, अशुद्ध, अमित्र, वर्णसंकर और नीच को 'संकीर्ण' कहते हैं यह १ व्याप्त आदि का नाम है । शून्य निराश्रयदेश या " बंजरधरती " और ऊसर ' खारी धरती ' को ' ईरिण ' या इरिण कहते हैं जैसे कि मनुजी ने कहा है कि " यथेरिणो बीजमुत्त्वा न वप्ता लभते फलम् । तथानृचे हविर्दत्त्वा न दाता लभते फलम् " यह १ वीरानदेश आदि का नाम है अमर, परमेश्वर, मेघ, राजा, दिवाकर, मन्दारवृक्ष और दानव को ' विवस्वान् ' कहते हैं यह १ देवआदि का नाम है । और शोणभद्र आदि नद व समुद्र को ' सरस्वान् ' कहते हैं यह १ नद आदि का नाम है ॥ ६४ ॥

पक्षी, गरुड़, पु. पक्षिताक्षर्यो (गरुत्मान्तौ शकुन्तौ) (भासपक्षिणौ) ।
 गीध, पक्षीमात्र, पु. (अग्न्युत्पातौ) धूमकेतू जीमूतौ (मेघपर्वतौ) ॥ ६५ ॥
 अग्नि, धूममयी, पु. तारा, मेघ, पहाड़.

सहायक या पक्षी और गरुड़ को ' गरुत्मान् ' कहते हैं यह १ पखेरू आदि का नाम है । पक्षिभेद, प्रकाश, गोष्ठ, कुक्कुट, गीध और पक्षीमात्र को ' शकुन्त ' कहते हैं यह १ मुर्या या गीधआदि का नाम है । अग्नि, उत्पात, धूममयी तारा या ग्रहभेद इन को ' धूमकेतु ' कहते हैं यह १ आगी आदि का नाम है और मेघ व पर्वत को ' जीमूत ' कहते हैं यह १ मेघ आदि का नाम है ॥ ६५ ॥

हाथ, नक्षत्र- पु. हस्तौ (तु पाणिनक्षत्रे) मरुतौ (पवनामरौ) ।
 विशेष, पवन, पु. यन्ता (हस्तिपके सूते) भर्ता (धातरि पोष्टरि) ॥ ६६ ॥
 देवता, हाथी- वान्, गाड़ीवान्, पु. धारण या पालन करनेवाला आदि.

हाथ, तेरहवां नक्षत्र हाथी की सूंड और कोहनी से लेकर बिचली अंगुली के शिरापर्यन्त को ' हस्त ' कहते हैं यह १ कर आदि का नाम है । वायु और देवता को ' मरुत् ' या ' मरुत ' कहते हैं यह देवता और पवन में पुलिङ्ग है और गठिवन व धनहर नामक सुगन्धद्रव्य में नपुंसक है यह १ वायु (बतास) आदिका

१-“देवः सुरे घने राशि देवमाख्यातमिन्द्रिये । देवी कृताभिषेकायां तेजनीस्पृकयोरपि ”
 (इति कोषान्तरम्) ॥

नाम है । हाथीवान् और सारथी को 'यन्ता' (न्तृ) कहते हैं यह १ फीलवान् आदि का नाम है । धारणकर्ता, पालनकर्ता और स्वामी को 'भर्ता' कहते हैं यह स्वामी (मालिक) में पुंलिङ्ग और धाता व पोषणकर्ता में त्रिलिङ्ग है यह १ धारणे व पालनेवाले आदिका नाम है ॥ ६६ ॥

पीने का पात्र, ^{पु.} (पानपात्रे शिशौ) ^{पु.} पोतः ^{पु.} प्रेतः (प्राण्यन्तरे मृते) ।
 बच्चा आदि,
 भूतान्तर, मृतक,
 ग्रह भेद, प-
 ताका, राजा,
 पुत्र आदि. (ग्रहभेदे ध्वजे) ^{पु.} केतुः (पार्थिवे तनये) ^{पु.} सुतः ॥ ६७ ॥

मद्यआदि पीने का पात्र, जहाजा, बालक, नाव, रहने का स्थान और वस्त्रको भी 'पोत' कहते हैं यह १ पानपात्र आदिका नाम है । जीवभेद और मृतक को 'प्रेत' कहते हैं यह प्राण्यन्तर में पुंलिङ्ग और मरे में त्रिलिङ्ग कहाता है यह १ भूतान्तर आदि का नाम है । ग्रहभेद, ध्वजा या पताका और निशान को भी 'केतु' कहते हैं यह १ उपग्रह आदि का नाम है और राजा व पुत्र को 'सुत' कहते हैं और जो पुत्री हो तो वह 'सुता' कहलाती है यह १ भूपति आदि का नाम है ॥ ६७ ॥

कारागर, कं- ^{पु.} स्थपतिः (कारुभेदेऽपि) ^{पु.} भूभृद् (भूमिधरे नृपे) ।
 चुकी आदि,
 पर्वत, राजा
 भूपाल, क्षत्रिय ^{पु.} मूर्धाभिषिक्तो (भूपेऽपि) ^{पु.} पृतुः (स्त्रीकुसुमेऽपि च) ॥ ६८ ॥

शिल्पी या कारीगर का भेद अपिशब्दसे रानियों का द्वारपाल और बृहस्पति की यज्ञ का करनेवाला ये 'स्थपति' कहलाते हैं यह पूर्वांत अर्थों में पुंलिङ्ग और सज्जन या विद्वान् में त्रिलिङ्ग है यह १ शिल्पकार आदिका नाम है । पर्वत और राजा को भूभृत् (दृ) कहते हैं यह १ पहाड़ आदिका नाम है । राजा अपिशब्दसे राजप्रधान और क्षत्रियमात्र को 'मूर्धाभिषिक्त' कहते हैं यह १ नरपाल आदिका नाम है और स्त्रियों का रज (मासिकधर्म) अपिशब्दसे वसन्त आदि छहों ऋतु और धीर को भी 'ऋतु' कहते हैं यह १ स्त्रियों के रजोधर्म आदिका नाम है ॥ ६८ ॥

^{पु.} विष्णु, शिवादि, ^{पु.} (विष्णा) ^{पु.} वप्यजिताव्यक्तौ ^१ सूत (स्त्वष्टरि सारथौ) ।
 सूर्य, नदई,
 सारथी, पण्डित, ^{पु.}
 प्रकाशितादि
 तर्कादिशास्त्र,
 उदाहरण. व्यक्तः (प्राज्ञेऽपि) दृष्टान्ता (बुभे शास्त्रनिदर्शने) ॥ ६९ ॥

विष्णु अपिशब्दसे शिव, महदादिक, आत्मा और अप्रकाशित ये 'अजित' और

१-“ निपाताश्चोपसर्गाश्च धातवश्चेति ते त्रयः । अनेकार्थीः स्मृताः सर्वे पाठस्तेषां निदर्शनम्” ॥१॥

‘ अव्यक्त ’ कहलाते हैं यह १ हरि व हर में पुलिङ्ग, महत्तत्त्वादिक व आत्मा में नपुंसक और अप्रकाशित में त्रिलिङ्ग है ये २ विष्णुभगवान् आदिके नाम हैं । सूर्य, बड़ई, क्षत्रियसे ब्राह्मणी में उपजा बालक, वन्दीजन, पारा और पैदा या भेजाहुआ इनको ‘ सूत ’ कहते हैं यह १ सूर्यादिकों का नाम है । पण्डित या शास्त्रवेत्ता अपिशब्दसे प्रकाशित दृश्य और स्थूल आदिको ‘ व्यक्त ’ कहते हैं यह १ विद्वान् आदिका नाम है । और न्यायशास्त्र आदि, उदाहरण और मरण को ‘ दृष्टान्त ’ कहते हैं यह १ षट्शास्त्र, नज़ीर मिसाल, उपमा और बराबरी आदिका नाम है ॥ ६६ ॥

सारथी, व्योढी-^{पु.} **क्षत्ता (स्यात्सारथौ द्वाःस्थे क्षत्रियायां च शूद्रजे) ।**
दार आदि,
प्रकरण आदि. ^{पु.}

वृत्तान्तः (स्यात्प्रकरणे प्रकारे कात्स्न्यवार्तयोः) ॥ ७० ॥

सारथी, द्वारपाल (व्योढीदार) क्षत्रिया में शूद्रसे उपजा बालक चशब्दसे दासी-पुत्र वैश्यापुत्र, नियुक्त और प्रजाओं के रचनेवाले ब्रह्मा को भी ‘ क्षत्ता ’ कहते हैं यह १ रथवान् आदिका नाम है और प्रस्ताव, भाव या अभिप्राय, अवसर, संपूर्णता और वार्ताविशेष (गौगा) ये ‘ वृत्तान्त ’ कहलाते हैं यह १ प्रकरण आदिका नाम है ॥ ७० ॥

^{पु.} **आनर्तः (समरे नृत्यस्थाननीवृद्धिशेषयोः) ।**
समर आदि
यमराजादि. ^{पु.}

कृतान्तो (यमसिद्धान्तदैवाकुशलकर्मसु) ॥ ७१ ॥

संग्राम (लड़ाई) नाचने का मण्डप, जनपद या देशविशेष इनको ‘ आनर्त ’ कहते हैं और जो पश्चिमसागर के तटस्थ ‘ द्वारावती ’ या द्वारकापुरी है वहभी ‘ आनर्त ’ कहलाती है यह १ समरआदिका नाम है और यमराज, वादीप्रतिवादियों से निर्णय कियाहुआ अर्थरूप सिद्धान्त, पूर्वजन्म का शुभाशुभ कर्म और पापकर्म इनको ‘ कृतान्त ’ कहते हैं यह १ यमराजआदि का नाम है ॥ ७१ ॥

श्लेष्मा, पित्तादि-**लेष्मादे रसरक्तादि महाभूतानि तद्गुणाः ।**
रसादि, पृथि-
व्यादि, गन्धादि, **इन्द्रियाण्यश्मविकृतिः शब्दयोनिश्च धातवः ॥ ७२ ॥**
नेत्रादि, मन-
शिरालादि,
स्वादि.

कफ, पित्तआदि, आहार का पहिला विच्छेदरस, रक्त और आदिपद से बसा, मज्जा, शुक्र आदि, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश और इनके गन्ध आदि गुण,

आँखें, कान आदि इन्द्रियाँ, पत्थरों का विकार मनःशिला आदि और शब्दों का उत्पत्तिस्थान “ भू सत्तायाम्, गन्तु गतौ ” आदि ये धातुपदवाच्य कहलाते हैं यानी मनुष्य के शरीर का सारअंश जैसे कि (वात, पित्त, कफ) रस, रक्त, खाल, मांस, स्नायु, मज्जा, बीज, हड्डी, भूमि, जल, आगी, वायु, आकाश, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, आँख, नाक, कान, जीभ, शरीर का चमड़ा ये ५ ज्ञानेन्द्रियाँ कहलाती हैं हाथ, पाँव, वाणी, लिङ्ग, गुदा ये ५ कर्मेन्द्रियाँ कहाती हैं, सोना, रूपा, तांबा आदि खानि से निकली चीज़ और गेरू, मनश्शिला आदि तथा व्याकरण में शब्दों का मूल यानी ऐसा शब्द कि जिससे क्रिया आदि शब्द बनते हैं इनको ‘ धातु ’ कहते हैं यह १ श्लेष्मा आदिकों का नाम है ॥ ७२ ॥

राजधानी, रनि-
वास आदि, (कक्षान्तरेऽपि) शुद्धान्तो (नृपस्यासर्वगोचरे) ।
बर्छी, सांग, स. म.
बल या ताकत, (कासूसामर्थ्ययोः) शक्तिर्मूर्तिः (काठिन्यकाययोः) ७३ ॥
कठिनता, शरीर.

सर्वसाधारण जनों के न जानेयोग्य, राजा का कक्षाभेद या राजधानी का विशेष स्थान अपिशब्दसे रनिवासा और अशौच का अन्त इनको शुद्धान्त कहते हैं यह १ राजकक्षाविशेष, कटिबन्ध, ज्योतिषचक्र या दफ़्त्र आदिका नाम है । लोहे का भाला, बर्छी, साँग, सेल, पार्वती, उत्साह और बलको ‘ शक्ति ’ या शक्ती कहते हैं यह १ सांग आदिका नाम है और कठोरता या दृढ़ता, शरीर और तसवीर को ‘ मूर्ति ’ कहते हैं यह १ कठिनतापुतली या प्रतिमा आदिका नाम है ॥ ७३ ॥

विस्तार, बेलि, (विस्तारवल्लयो) व्रततिर्वसती (रात्रिवेश्मनोः) ।
रात्रि, घर, क्षय, स. स.
पूजा, दान, स. स.
अन्त आदि. (क्षयार्चयो) रपचितिः साति (दानावसानयोः) ॥ ७४ ॥

विस्तार और बेलि को ‘ व्रतति ’ ‘ प्रतति ’ या ‘ व्रतती ’ कहते हैं यह १ विस्तार या फैलाव आदि का नाम है । रात्रि, घर और वासको बसति या ‘ बसती ’ कहते हैं यह १ रात्रि आदि का नाम है । हानि, पूजा, प्रयोजन, मांगना, खर्च और पलटादेना, इनको ‘ अपचिति ’ कहते हैं यह १ क्षय आदि का नाम है और दान देना, हाथी के मदका पानी, पालन, अन्त या विराम को ‘ साति ’ कहते हैं यह १ दान आदि का नाम है ॥ ७४ ॥

दुःख, धन्वाका स. स.
किनारा, सा- अर्तिः (पीडाधनुष्कोटयो) र्जातिः (सामान्यजन्मनोः) ।
मान्य, जाति, स. स.
जन्म, लोकाचार, स. स.
टपकना, गदर, (प्रचारस्यन्दयो) रीतिरीति (डिम्बप्रवासयोः) ॥ ७५ ॥
विदेश.

दुःख और धनुष का अग्रभाग इनको 'अर्ति' या 'आर्ति' कहते हैं यह १ पीड़ा आदिका नाम है । सामान्यगोत्व आदि, मालती पुष्पविशेष या चमेली और जन्म को 'जाति' कहते हैं यह १ सामान्य जाति आदिका नाम है । लोकाचार और टपकने या भिरने को 'रीति' कहते हैं यह १ लोकाचार आदिका नाम है और बच्चे, अण्डे, स्त्रीहारोग, देशोपद्रव और विदेश को 'ईति' कहते हैं वे सात भांतिकी हैं जैसे कि, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, टींड़ी, मूसा, शुक्र, स्वचक्र और परचक्र ये सात ईतियाँ कहलाती हैं यह १ उपद्रव आदिका नाम है ॥ ७५ ॥

उदय, लाभ, स. स.
तीनों अग्नियाँ, (उदयेऽधिगमे) प्रातिस्त्रेता (त्वग्नित्रये युगे) ।
दूसरा युग,
नारदकी वीणा, स. १ स.
महत्त्व गुणयुक्त (वीणाभेदेऽपि) महती भूति (ःस्मनि संपदि) ॥ ७६ ॥
भार्या, भस्म,
संपदा.

उत्पत्ति या "बृहती" और लाभको 'प्राप्ति' कहते हैं यह १ उत्पत्ति आदिका नाम है । तीनों अग्नियाँ यानी दक्षिणाग्नि, गार्हपत्याग्नि, आहवनीयाग्नि और दूसरे युगको 'त्रेता' कहते हैं यह १ अग्नित्रय आदिका नाम है और नारदकी वीणा अपि शब्दसे महत्त्वगुणसंपन्न भार्या को भी 'महती' कहते हैं यह १ वीणाभेद आदिका नाम है और राख, संपदा या अग्निमादिक ऐश्वर्यों को 'भूति' कहते हैं यह १ भस्म (खाक) आदिका नाम है ॥ ७६ ॥

नागों की नदी, स. (नदीनगर्योर्नागानां) भोगव (त्यथ संगरे) ।
और नगरी,
संग्राम, सङ्घ, स. स.
सभा, क्षय, (सङ्गे सभायां) समितिः (क्षयवासावपि) क्षिती ॥ ७७ ॥
निवास, पृथ्वी.

नागों की नदी और नगरी तथा पातालगंगा, सर्पशरीर, ग्रामाध्यक्ष और नाई को भी 'भोगवती' कहते हैं यह १ नागनदी आदिका नाम है । संग्राम (लड़ाई) संगम और जनसमूह को 'समिति' कहते हैं यह १ समर आदिका नाम है और नाश या हास और निवास तथा कालभेद व पृथ्वी को भी क्षिति कहते हैं यह १ क्षय आदिका नाम है ॥ ७७ ॥

सूर्यका प्रकाश, स.
हथियार, अग्नि- (खेरचिश्च शस्त्रं च वह्निज्वाला च) हेतयः ।
शिखा, दुनिया,
नारह अक्षर स. *
पादवाली छन्द, जगती (जगतिच्छन्दोविशेषेऽपि क्षितावपि) ॥ ७८ ॥
पृथ्वी, जन.

१ "विश्वावसोस्तु बृहती तुम्बरोस्तु कलावती । महती नारदस्य स्यात्सरस्वत्यास्तु कच्छपी" (इति वैजयन्ती) ॥

* "द्युतिगमिद्वहोतीनां द्वे च" (वा. ३-२ । १७८) इति किपि, "गमः कौ" इति मलोपे, तुकि, गौरादिवाङ्मयीणि च वा जगती स्यात् ॥

सूर्य का प्रकाश या प्रभा, हथियार, आगिका जलना इनको 'हेति' और बहुत्व में 'हेतयः' कहते हैं यह १ सूर्यतेज आदिका नाम है और लोक (दुनिया) द्वादशाक्षरपादवृत्त छन्दविशेष, पृथ्वी और अपिशब्दसे जनको भी 'जगती' कहते हैं यह १ जगत् आदिका नाम है ॥ ७८ ॥

दशवां छन्द, पाँति प्रभाव, उत्तरकाल जाना, सेनाभेद, पक्ष या पखरूके पंखकी मूल. **पङ्क्ति (श्छन्दोऽपि दशमं) (स्यात्प्रभावेऽपि) चायतिः ।**
 स. **पत्ति (गंतौ च) (मूले तु) पक्षतिः (पक्षभेदयोः) ॥ ७९ ॥**

दश अक्षर के चरण का छन्द और अपिशब्द से दश संख्यावाली पाँति को भी 'पङ्क्ति' कहते हैं । यह १ दशमछन्द आदि का नाम है । प्रताप और अपिशब्द से संयम, दीर्घता और आनेवाले उत्तरकाल को भी 'आयति' कहते हैं यह १ प्रभाव आदि का नाम है । गमन करना, वीरका भेद और सैन्यका भेद इनको 'पत्ति' कहते हैं अर्थात् चाल, प्यादा और सैन्य कि जिस में एकरथ, एकहाथी, तीन घोड़ा और पाँच प्यादे हों उसको 'पत्ति' कहते हैं यह १ गति आदि का नाम है और मासार्ध की मूल (परिवा) और पक्षी के पंख की मूल यानी पखने की जड़ ये दोनों 'पक्षति' या 'पक्षती' कहलाते हैं क्योंकि यहां 'पक्षभेदयोः' यह षष्ठी है पक्षभेद दो भाँति का है पहला मासार्धवाची और दूसरा खगावयववाची है इसलिये द्विवचनान्त प्रयोग दिखलाया गया है यह १ पक्षमूल आदि का नाम है ॥ ७९ ॥

भग, लिङ्ग, मन्त्री स. **प्रकृति (योनिलिङ्गे च) (कौशिक्याद्याश्च) वृत्तयः ।**
 आदि, कौशिकी, जीविका आदि, बालू, बालूयुक्त देशादि, वेद, कान, सुनना आदि. **सिकताः (स्युर्बालुकाऽपि) (वेदे श्रवसि च) श्रुतिः ॥ ८० ॥**

योनि, लिङ्ग और चशब्दसे प्रधानतत्त्व, राजमन्त्री, स्वभाव और पौरवर्ग को भी 'प्रकृति' कहते हैं यह १ योनिआदिका नाम है । नदीविशेष कौशिकी कि जिसको विश्वामित्र की बहिनने बनाया है या कैशिकी अपिशब्दसे आरभटी—सात्वती—भारती—चशब्दसे जीविका और सूत्रार्थविवरण को भी 'वृत्ति' कहते हैं यह १ कौशिकी या कैशिकी आदिका नाम है । बालू और बालूयुक्त देश तथा ठिकरायुक्त को भी 'सिकता' कहते हैं यह बालू में खीलिङ्ग होकर बुवचनान्त है और बालू-युक्त देशमें खीलिङ्ग है यह १ बालुका आदिका नाम है और चारो वेद कान, सुनना और चशब्दसे प्रसिद्धता को भी 'श्रुति' कहते हैं यह १ वेद आदिका नाम है ॥ ८० ॥

स.
बड़ी प्यारी स्त्री, स्त्रीमात्र, भूवि-
वर, गुफा, स.
धारण, धैर्य. **वनिता** (जनितात्यर्थानुरागायां च योषिति) ।

स.
गुप्तिः (क्षितिर्व्युदासेऽपि) धृति (धारणधैर्ययोः) ॥ ८१ ॥

जिसमें अत्यन्त अनुराग उपजा हो उसे और स्त्रीमात्र को ' वनिता ' कहते हैं यह १ उपजेहुए प्रेमवाली या बड़ी प्यारी स्त्री आदिका नाम है । पृथ्वीके भीतर का बिल या गुफा-बन्दीखाना, रक्षण, अधम और कूड़ाघरको भी ' गुप्ति ' कहते हैं यह १ भूगर्त आदिका नाम है जैसे कि " गुप्तिः कारा च रक्षा च दीर्णा च विवरं भुवः " (इति शाश्वतः) कारागार, रक्षा, फाड़ा हुआ, और भूमिका गड़हा इनको ' गुप्ति ' कहते हैं और बिल बनाने के लिये धरती खोदने को भी ' गुप्ति ' कहते हैं यह सुभूति का मत है और धारणा, धीरता, संतोष, योगभेद और यज्ञको ' धृति ' कहते हैं यह १ धारण आदिका नाम है ॥ ८१ ॥

स.
भटकटैया, वन-
भटा आदि, स्त्री
हथिनी, जीविका स.
वार्ताआदि, लघु, **बृहती** (क्षुद्रवार्ताकी छन्दोभेदे महत्यपि) ।

स.
वार्ताआदि, लघु, **वासिता** (स्त्रीकरिण्योश्च) वार्ता (वृत्तौ जनश्रुतौ) ॥ ८२ ॥

न.
असार, रोगरहित
पानी, धी, सुधा, न.
यज्ञशेष, चाँदी, **वार्त** (फल्गुन्यरोगे च) (त्रिष्वप्सु च) घृतामृते ।

सोना, कारण,
चिह्न या निशान. न.
कलधौतं (रूप्यहेम्नो) निर्मित्तं (हेतुलक्ष्मणोः) ॥ ८३ ॥

ओषधिविशेष, भटकटैया या वनभटा, छन्दोभेद यानी नव अक्षर के चरण का छन्द, महती (बड़ी) वारिधानी, वाणी और वस्त्रभेद को ' बृहती ' कहते हैं । यह १ क्षुद्रवार्ताकी आदि का नाम है । रमणी, और हथिनी को वासिता या वाशिता कहते हैं और सुरभी का रभाना, धान्यमात्र तथा पक्षियों का चहचहाना इनको ' वासित ' कहते हैं यह नपुंसक है यह १ रमणी आदि का नाम है । जीविका, वृत्तान्त या गौगा और खेती इनको ' वार्ता ' कहते हैं यह १ जीविका आदि का नाम है । लघु असार या तत्त्वहीन को ' वार्त ' कहते हैं यह नपुंसक है और जो रोगरहित का वाचक ' वार्त ' है वह त्रिलिङ्ग कहलाता है यह १ फल्गु आदि का नाम है । जलको घृत और अमृत कहते हैं चशब्द से घृत और जल का वाची स्त्रीव है और यज्ञशेष, पीयूष, जल, घृत, अयाचित, और मोक्षको ' अमृत ' कहते हैं यह नपुंसक है और धन्वन्तरि व देवका वाचक पुंलिङ्ग है यह १ जल आदि का नाम है । चाँदी और सोने को " कलधौत " कहते हैं यह १ रजत आदि का

नाम है और हेतु यानी कारण और चिह्न को 'निमित्त' कहते हैं यह १ हेतु आदि का नाम है ॥ ८२ । ८३ ॥

शास्त्र, सुनाहुआ-श्रुतं (शास्त्रावधृतयो) युगपर्याप्तयोः कृतम् ।
सत्ययुग, अल-
मर्थ, महाभय, अत्याहितं महाभीतिः कर्म जीवानपेक्षि च ॥ ८४ ॥
बड़ा साहस.

छः शास्त्र, और सुना या निश्चय कियाहुआ इनको 'श्रुत' कहते हैं यह १ शास्त्रादि का नाम है । युग यानी सत्ययुग और अलमर्थ को 'कृत' कहते हैं यह नपुंसक है और विहित तथा हिंसित में त्रिलिङ्ग है यह १ सत्ययुग आदि का नाम है और बड़ीभय तथा बड़े साहस का कर्म इनको 'अत्याहित' कहते हैं यह १ महाभीति आदि का नाम है ॥ ८४ ॥

न्याय, पृथि-
व्यादि पञ्चभूत, न.
सत्यादि, श्लोक,
यश, भूतका-
लादि. वृत्तं (पद्ये चरित्रे त्रिष्वतीते दृढनिस्तले) ॥ ८५ ॥

न्याय्य, पृथिव्यादि पञ्चभूत, सत्य, प्राणी, व्यतीतकाल और समान को 'भूत' कहते हैं यह त्रिलिङ्ग है यानी पञ्चभूत, पिशाच आदि और जन्तुका वाचक 'भूत' नपुंसक है, उचित, प्राप्त, वृत्त, सम और सत्यका वाचक त्रिलिङ्ग है और देवयोनि तथा कुमारका वाचक भी पुंलिङ्ग है यह १ न्याय आदि का नाम है और श्लोक, यश, गयाकाल, मजबूत और गोल को 'वृत्त' कहते हैं यह त्रिलिङ्ग है यानी अधीत, अतीत, गोल, मृत वृत्त और वृत्त इन्हीं का वाचक 'वृत्त' विकल्प से वाच्यलिङ्ग है और छन्द, चरित्र तथा वृत्ति (वर्तने) का वाचक स्त्रीब है यह १ पद्यआदि का नाम है ॥ ८५ ॥

राज्य, बड़ाआदि, न.
अपवाद, नि-
न्दित, रूपा, न.
उजला, द्वीप- न.
भेद, रत्नों की
माला, सोना,
चांदी आदि. मह (द्राज्यं चा) वर्गीतं (जन्ये स्याद्गर्हिते त्रिषु) ।
श्वेतं (रूप्येऽपि) रजतं (हेम्नि रूप्ये सिते त्रिषु) ॥ ८६ ॥

राज्य और चकार से वीणाभेद, तत्त्वभेद, श्रेष्ठ और विशाल को महत् कहते हैं यह राज्य में नपुंसक, वीणाभेद में स्त्रीलिङ्ग, तत्त्वभेद में पुंलिङ्ग और श्रेष्ठ में वाच्य कहलाता है यह १ राज्य आदि का नाम है । जनों के अपवाद और निन्दित

१ " शक्तौ निवारणे तुसौ पर्याप्तं स्याद्यथेप्सिते " (इति रुद्रः) ॥

२ " हरे रूप्ये सिते त्रिषु " इति पाठान्तरम् ॥

को 'अवगीत' कहते हैं यह त्रिलिङ्ग है यह १ अपवाद आदि का नाम है ।
रूपा या चाँदी अपिशब्द से श्वेतद्वीप और सफेद को 'श्वेत' कहते हैं, यह १
रूपा आदिकों का नाम है । हार या रत्नों की माला विशेष, रूपा, सफेद और
सोने को 'रजत' कहते हैं । यह त्रिलिङ्ग है अथवा सोना, रूपा और सफेद को
रजत कहते हैं । यह सोने व रूपे में नपुंसक और श्वेत में त्रिलिङ्ग कहलाता है ।
यह १ सोना व चाँदी आदिकों का नाम है ॥ ८६ ॥

पु.स.न.

पु.स.न.

जंगम, भुवन, (त्रिष्वितो) जग (दिङ्गेषु) रक्तं (नील्यादिरागि च) ।

वायु, नील्यादि
रंग, रुधिर,
सफेद, पीला,
निर्मल बंधा या
कैदी, सफेद.

पु.स.न.

पु.स.न.

अवदातः(सिते पीते शुद्धे) (बद्धार्जुनौ) सितौ ॥ ८७ ॥

इसके उपरान्त तान्तपर्यन्त जितने शब्द हैं वे त्रिलिङ्ग कहलाते हैं । जंगम भुवन
और वायुको 'जगत्' कहते हैं यह पिष्टप (भुवन) में नपुंसक, वायु में पुलिङ्ग
और जंगम में त्रिलिङ्ग कहलाता है यह १ जंगम आदिकों का नाम है । नीली आदि
रंगसे युक्त और चशब्दसे अनुरक्त, लोहित, कुङ्कुम, ताम्र, पुराना आँवला और रुधिर
को भी 'रक्त' कहते हैं यह अनुरक्त आदिकों में त्रिलिङ्ग व कुङ्कुम आदिकों में
नपुंसक कहलाता है यह १ नील्यादि रंगवाले आदिका नाम है । सफेद, पीला और
निर्मल को 'अवदात' कहते हैं यह १ सफेद या उजले आदिका नाम है । बंधुआ
या कैदी और सफेद को 'सित' कहते हैं यह निश्चित में नपुंसक, कैदी व उजले में
त्रिलिङ्ग, और खाँड़ में स्त्रीलिङ्ग कहलाता है यह १ बंधुआ आदिका नाम है ॥ ८७ ॥

उचित या न्याय्य,

पु.स.न.

पु.स.न.

संस्कारी, क्षमी, (युक्तेऽतिसंस्कृतेमर्षिण्य)भिनीतो (ऽथ) संस्कृतम् ।

रचेहुए पदार्थ,
शास्त्र लक्षण

पु.स.न.

संपन्न, विना

सीमा, शेष,

विष्णु.

(कृत्रिमेलक्षणोपेतोऽप्य)नन्तो(ऽनवधावपि) ॥ ८८ ॥

न्याय्य, उचित, संस्कारप्राप्त या भूषित, सहनशील और अतिशृङ्गारयुक्त को भी
'अभिनीत' कहते हैं यह त्रिलिङ्ग है यह १ न्याय्य आदिकों का नाम है । बनावेहुए
घाट आदि पदार्थ, शास्त्रके लक्षण से संपन्न, अपिशब्द से प्रशस्त और अलंकृत को
भी 'संस्कृत' कहते हैं यह १ कृत्रिम आदिका नाम है और अवधिरहित या विना
मर्यादा अपिशब्द से शेष और विष्णु आदिकों को भी 'अनन्त' कहते हैं यह शेष
व केशव में पुलिङ्ग, अवधिरहित में त्रिलिङ्ग, विशल्या आदिकों में स्त्रीलिङ्ग और
आकाश में नपुंसकलिङ्ग कहलाता है यह १ विना अवधि आदिका नाम है ॥ ८८ ॥

विख्यात, हर्षित

पु.स.न.

पु.स.न.

आदि, कुलीन,

परिडत आदि,

पवित्र, एकान्त

पु.स.न.

पु.स.न.

आदि, मोहित,

बड़ाहुआ आदि.

(ख्याते हृष्टे) प्रतीतोऽभिजात (स्तु कुलजे बुधे) ।

विविक्तौ (पूतविजनौ) मूर्च्छितौ (मूढसोच्छ्रयौ) ॥ ८६ ॥

प्रसिद्ध या प्रख्यात, और हर्षित, को 'प्रतीत' कहते हैं यह प्रख्यात, प्रज्ञात, अज्ञात, हर्षित और सादर में त्रिलिङ्ग है यह १ प्रसिद्ध आदिका नाम है । कुलीन, परिडत " और श्रेष्ठको " 'अभिजात' कहते हैं यह कुलीन न्याय्य और परिडत में त्रिलिङ्ग है यह १ कुलीन आदिका नाम है । शुद्ध या पवित्र, एकान्त और छोड़ेगये को " विविक्त " कहते हैं यह असंपृक्त (अलग कियागया) एकान्त, पवित्र और विवेकी में त्रिलिङ्ग है यह १ पवित्र आदिका नाम है और मोहको प्राप्ति (मूर्ख) वृद्धिसंपन्न और अचेतन या अज्ञान को " मूर्च्छित " कहते हैं यह १ मूढ़ आदिका नाम है ॥ ८६ ॥

पु.स.न. पु.स.न.

खट्टा, निष्ठुर,

सफेद, स्याह,

सच्चा, साधु,

वियमान आदि.

(द्वौ चाम्लपरुषौ) शुक्लौ शिती (धवलमेचकौ) ।

पु.स.न.

(सत्ये साधौ विद्यमाने प्रशस्तेऽभ्यर्हिते च) सन् ॥ ८७ ॥

खट्टा या चूक जो तीनरात का रक्खाहो या खट्टा मठा आदि और कठोर ये दोनों " शुक्त " कहलाते हैं जैसे कि "मृन्मयादिशुचौ भागडे सगुडं क्षौद्रकाञ्जिकम् । धान्य-राशौ त्रिरात्रस्थं शुक्तं चुक्रं तदुच्यते " (इति वैद्यकम्) यह १ खट्टे व कठोर का नाम है । उजला और काला इनको ' शिति ' या ' सिति ' कहते हैं यह भोजपत्र में पुंलिङ्ग और सफेद व स्याह में त्रिलिङ्ग है यह १ सफेद और स्याहका नाम है और सत्य, साधु, वर्तमानकाल, प्रशंसायुक्त और पूजित को ' सन् ' कहते हैं यह साधु, धीर, शस्तमान्य, सत्य और विद्यमान में त्रिलिङ्ग और पतिव्रता व उमामें स्त्रीलिङ्ग है यह १ सत्य आदिका नाम है ॥ ८७ ॥

पूजित, वैरि-

विजित, आगे

आया, निवास,

अवात, अभेद्य

कवच.

पुरस्कृतः (पूजितेऽरात्यभियुक्तेऽग्रतः कृते) ।

निवातावा (श्रयावातौ) (शस्त्राभेद्यं च वर्म यत्) ॥ ८८ ॥

पूजित या संमानित, वैरियों से जीता और अगाड़ी कियाहुआ इनको " पुरस्कृत " कहते हैं यह १ पूजित आदि का नाम है । निवास (बासस्थान) और वातरहित को ' निवात ' कहते हैं और जो हथियारों से अभेद्य कवच या बस्तर आदि है वह भी निवात कहलाता है जैसे कि, " निवातकवचो वीरः " अभेद्य या मजबूत बस्तरवाला वीर है यह १ निवास आदि का नाम है ॥ ८८ ॥

उपजा, गर्वीला, बहुत हा बड़ा, वृद्धिमान्, लगा और उपजा हुआ, सत्कार संपन्न और पू-जित.
जातोन्नद्धप्रवृद्धाः रुच्छिता उत्थितास्त्वमी ।
वृद्धिमत्प्रोद्यतोत्पन्ना आहतौ सादरार्चितौ ॥ ६२ ॥
 इति तान्ताः ॥

उपजा, गर्वीला, और बहुतही बढ़ाहुआ इनको 'रुच्छित' कहते हैं यह उत्पन्न समुन्नद्ध और प्रवृद्ध में त्रिलिङ्ग है यह १ उपजे हुए आदि का नाम है । कहे जाने वाले वृद्धिमान्, प्रवृत्त या परायण और उत्पन्न इनको 'उत्थित' कहते हैं यह उत्पन्न, प्रोद्यत और वृद्धिमान् में त्रिलिङ्ग है यह १ बढ़ती वाले आदि का नाम है और सत्कारयुक्त व पूजित को 'आहत' कहते हैं यह १ सादर व अर्चित का नाम है ॥ ६२ ॥

इति तान्ताः ।

अथ तान्ता व्याख्यायन्ते ॥

वाच्य, धन, पु.
 वस्तु, हेतु, उप-
 रति, प्याऊ,
 आगम आदि.

अर्थों (अभिधेयैरेवस्तु प्रयोजननिवृत्तिषु) ।

(निपानागमयो) स्तीर्थ (मृषजुष्टादि गुरौ) ॥ ६३ ॥

वाच्य या कहने के योग्य, धन, वस्तु, प्रयोजन हेतु या उद्देश्य, निवर्तन, उपराग या विराग इनको 'अर्थ' कहते हैं यह १ वाच्य आदि का नाम है और जलाव-तार या कुआं के निकटका जलाशय, बौद्धशास्त्र से भिन्न शास्त्र या महादेव का कहाहुआ तन्त्रशास्त्र, ऋषियों से सेवित जल, उपाध्याय और काशी, अयोध्या आदि को 'तीर्थ' कहते हैं यह पुंलिङ्ग व नपुंसक है यह १ प्याऊ आदि का नाम है ॥ ६३ ॥

शक्तिमान्, स-
 म्बद्धार्थ, प्रति-
 कूल, क्षीणराग,
 नडा बूढ़ा, मार्ग,
 पांति.
समर्थ (स्त्रिषु शक्तिस्थे संबद्धार्थे हितेऽपि च) ।

दशमीस्थौ (क्षीणराग द्वौ) वीथी (सदृच्छादे) ॥ ६४ ॥

शक्तिमान्, सम्बद्धार्थ, और अनुकूल को 'समर्थ' कहते हैं सम्बद्धार्थ में जैसे कि, "समर्थः पदविधिः" यह १ शक्तिमान् आदिका नाम है । क्षीणराग और अति वृद्धको 'दशमीस्थ' कहते हैं जैसे कि "दशमीस्थो नष्टबीजे स्थविरे च" (इति विश्वः) यह नष्टबीजवाले में पुंलिङ्ग और बड़े बूढ़े में वाच्यलिङ्ग कहलाता है यह १ क्षीण आदिका नाम है और मार्ग या राह अपिशब्दसे पांति को भी वीथी या 'बीथि' कहते हैं यह १ मार्ग आदिका नाम है ॥ ६४ ॥

सभा, उपाय,
पर्वत का अग्र-
भाग, परिमाण,
भेद, पुस्तक,
धन, आधार,
स्थिति, मरण.

स. पु.न.

(आस्थानीयत्वयो) रास्था प्रस्थो (ऽस्त्री सानुमानयोः) ।

पु. स.

“(शास्त्रद्रविणयो)र्ग्रन्थः संस्था (धारो स्थितौ मृतौ) ६५”

इति धान्ताः ॥

सभा या समाज, मण्डली, राजदरबार, पञ्चायत, मजलिस और जलसह तथा उपाय को ‘आस्था’ कहते हैं यह १ सभा आदिका नाम है । पर्वत का अग्रभाग या किनारा या (कंगूरा) और परिमाणभेद यानी (“ शरावाभ्यां भवेत्प्रस्थः ” इस वैद्यक के प्रमाण से दो सेर) को ‘प्रस्थ’ कहते हैं यह परिमाणविशेष, सानु और उन्मितवस्तु में पुन्रपुंसक है यह १ शृङ्ग आदिका नाम है । शास्त्र और धनको ‘ग्रन्थ’ कहते हैं यह १ पुस्तक या शास्त्र आदिका नाम है और आधार, स्थिति और मरण को ‘संस्था’ कहते हैं यह १ चर और अवस्थित में पुलिङ्ग और स्थिति, सादृश्य व नाश होने में स्त्रीलिङ्ग है. यह १ आधार आदिका नाम है ॥ ६५ ॥

इति धान्ताः ।

अथ दान्ता व्याख्यायन्ते ।

पु. पु.

आशय, वश, (अभिप्रायवशौ) छन्दावद्दौ (जीमूतवत्सरौ) ।

मेघ, संवत्सर,
निन्दा, हुक्म, पु.

पुत्र, बान्धव, अपवादौ (तु निन्दाज्ञे) दायादौ (सुतबान्धवौ) ॥

किरण, चरण, पु.

चौथाई, चन्द्र,
अग्नि, सूर्य, पु.

पादा (रश्म्यङ्घ्रितुर्याशा) (श्चन्द्राग्न्यर्का) स्तमोनुदः ॥ ६६ ॥

आशय, अभीन या वशीभूतको ‘छन्द’ कहते हैं यह वश, अभिप्राय, पत्थल या पाषाणमात्र और पीसने की शिलामें भी पुलिङ्ग है यह १ आशय आदि का नाम है । मेघ और संवत्सर को ‘अन्द्’ कहते हैं यह संवत्सर, मेघ, पर्वतभेद और मोथा में पुलिङ्ग है यह १ मेघ आदि का नाम है । निन्दा (बुराई करना) आज्ञा (हुक्मदेना) इनको ‘अपवाद’ या ‘अववाद’ कहते हैं यह निन्दा, आज्ञा और विश्वास में पुलिङ्ग है यह १ निन्दा आदि का नाम है । पुत्र, ज्ञाति या भाई आदि को ‘दायाद’ कहते हैं यह १ सुत आदि का नाम है । किरण, चरण या वृक्षमूल और चौथाई को ‘पाद’ कहते हैं यह तरुमूल, चतुर्थांश, शैल, पर्वत-समीपी छोट्य पर्वत, चरण और किरण में पुलिङ्ग है यह १ किरण आदि का नाम है और चन्द्रमा, आगी और सूर्य को ‘स्तमोनुद’ कहते हैं यह १ चन्द्र आदि का नाम है ॥ ६६ ॥

जनवाद, सि-पु.

ज्ञान्त, कीचड़, ^{पु.}निर्वादो(जनवादेऽपि) शादो (जम्बालशष्पयोः) ।

बालतृण, कष्ट

युतरोदन, रक्षक,

भयानक युद्ध,

^{पु.}(सारावे रुदिते त्रात)र्याक्रन्दे(दारुणे रणे) ॥ ६७ ॥

लोकवाद, अपिशब्दसे निर्णीतवाद या सिद्धान्त को 'निर्वाद' कहते हैं यह १ जनवाद आदि का नाम है । कीचड़ (चहला) बालतृण (हरीघास) इनको 'शाद' कहते हैं यह १ कर्दम आदि का नाम है । आर्त शब्दसमेत रोदन, रक्षक और भयानक युद्ध यानी बड़ी लड़ाई को 'आक्रन्द' कहते हैं यह चिल्लाने यानी हाय २ करने, बुलाने, पालनेवाले व भारी लड़ाई में पुलिङ्ग है यह १ आर्त नाद समेत रोने आदि का नाम है ॥ ६७ ॥

अनुग्रह, प्रसन्नता,

काव्यगुण, व्य-

ञ्जन, रसोई क-

रनेवाला, गवा-

ध्यक्ष, प्रमोद,

अभिमान आदि,

^{पु.}(स्या)त्प्रसादो(ऽनुरोधेऽपि)सूदः(स्याद्व्यञ्जनेऽपि च) ।^{पु.}(गोष्ठाध्यक्षेऽपि)गोविन्दो(हर्षेऽपि)प्यामोदवन्मदः ॥ ६८ ॥

अनुराग या अनुवर्तन और अपिशब्द से अनुग्रह, प्राणों की स्वस्थता और प्रसन्नता को 'प्रसाद' कहते हैं यह १ अनुराग(प्रीति) आदिका नाम है । दाल, भात, तर्कारी आदि छत्तीस व्यञ्जत और अपिशब्द से शक्तिभेद व रसोईबरदार को 'सूद' कहते हैं यह १ व्यञ्जन आदि का नाम है । गायों के स्थानका मालिक अपिशब्द से कृष्ण और वृहस्पति को भी 'गोविन्द' कहते हैं यह १ गोष्ठाधीश या गवाधीश आदि का नाम है और हर्ष (आनन्द) अपिशब्द से अभिमान, हाथी का मद कस्तूरी और वीर्य को भी कहते हैं व अपिशब्द से मुखवासित सुगन्ध को भी 'प्यामोद' कहते हैं यह १ हर्ष आदि के नाम हैं ॥ ६८ ॥

श्रेष्ठ, राजचिह्न,

बैल की लाट,

ज्ञान, संभाषण,

क्रियाकार, सं-

ग्राम और नाम,

^{पु.न.}(प्राधान्ये राजलिङ्गे च वृषाङ्गे)ककुदो(ऽस्त्रियाम्) ।^{स.}(स्त्री)संवित्(ज्ञानसंभाषाक्रियाकाराजिनामसु) ॥ ६९ ॥

राजप्रधान या मुख्य राजचिह्न " छत्र चक्र आदि " और बैल का अङ्गविशेष (लाट) को 'ककुद' या 'ककुत्' ककुद्, कहते हैं यह पुनपुंसक है यह १ प्राधान्य आदि का नाम है । विद्या, संभाषण, कर्मका नियम, संग्राम और नाम को 'संवित्' कहते हैं यह प्रतिज्ञा, आचार, ज्ञान, संग्राम, संभाषण, क्रियाका नियम या पराबन्ध, संकेत, नाम, और संतोषण में स्त्रीलिङ्ग है यह १ ज्ञान आदि का नाम है ॥ ६९ ॥

धर्म, एकान्त,
वसन्त आदि (धर्मे रहस्यु) पनिषत् (स्यादृतौ वत्सरे) शरत् ।
छः ऋतु, साल,
व्यवसाय, रक्षण, न.

स्थान, चिह्न, पदं (व्यवसितित्राणस्थानलक्षमाङ्घ्रिवस्तुषु) ॥ १०० ॥
चरण, वस्तु.

श्रुति स्मृतियों से विहितकर्म या शास्त्रोक्त कर्म करने से उपजा होनहार फलका साधनभूत शुभपुण्य या दान आदि, एकान्त या गोप्य और वेदान्त को भी ' उप-निषद् ' कहते हैं यह धर्म, वेदान्त और एकान्त में खीलिङ्ग है यह १ धर्म आदिका नाम है । वसन्त आदि छः ऋतु और वर्ष को ' शरत् ' कहते हैं यह १ ऋतु व सालका नाम है । व्यवसाय या उद्यम, रक्षण, स्थान, चिह्न या निशान, चरण, पदार्थ, सुबन्त और तिङन्त को ' पद ' कहते हैं यह शब्द, वाक्य, रोजगार, छल, पांव या पांवका निशान, स्थिति, पालन, गोद और वस्तु में नपुंसक है परन्तु मेदिनी कोषमें विशेषता है कि श्लोकपाद में नपुंसक और किरण में पुलिङ्ग है यह १ व्यव-साय आदिका नाम है ॥ १०० ॥

न. न.
गोसेवित देश, गोष्पदं (सेविते माने) (त्रिष्विष्टमधुरौ) मास्पदम् ।
मान, स्थान,
कार्य, इष्ट, पु.स.न. पु.स.न.
मिष्ट, अकठिन, (त्रिष्विष्टमधुरौ) स्वादू मृदू (चातीक्ष्णकोमलौ) ॥ १०१ ॥
कोमल.

गौश्रों से सेवित देश और गोखुर के प्रमाण लम्बे व चौड़े गड़हे को ' गोष्पद ' कहते हैं यह १ गोसेवितदेश व प्रमाण का नाम है । स्थान या मर्यादा और कार्य ये दोनों ' आस्पद ' कहलाते हैं यह १ स्थान व कार्य का नाम है इसके अनन्तर बर्ग-समाप्तिपर्यन्त दान्तशब्द त्रिलिङ्ग हैं । मनोहर व मधुर यानी मीठा रस गुड़ आदि को ' स्वादु ' कहते हैं यह १ इष्ट व मिष्ट का नाम है और अतीक्ष्ण व कोमल ये दोनों ' मृदु ' कहलाते हैं यह १ तीक्ष्णतारहित व नरम का नाम है ॥ १०१ ॥

मूर्ख, अल्पादि, (मूढाल्पापटुनिर्भाग्या) मन्दाः स्यु (द्वौ तु) शारदौ ।
नया, अधीर, पु.स.न. पु.स.न.
परिडत व दीठ. पु.स.न.

(प्रत्यग्राप्रतिभौ) (विद्वत्सुप्रगल्भौ) विशारदौ ॥ १०२ ॥

इति दान्ताः ॥

मूर्ख, अल्प, असमर्थ और भाग्यहीन ये ' मन्द ' कहलाते हैं यह अतीक्ष्ण, मूर्ख, स्वतन्त्र, अभागी, रोगी, अल्प इनमें त्रिलिङ्ग है हस्तिजाति भेद व शनैश्चर में पुलिङ्ग है यह १ मूर्ख आदिका नाम है । अतिनवीन, अप्रगल्भ या अधीर को ' शारद ' कहते हैं यह संवत्सर व मोथा में पुलिङ्ग, जलपीपल व सप्तपर्णा वृक्ष में खीलिङ्ग,

धान्य में नपुंसक और नवीन व अधीर में त्रिलिङ्ग है यह १ अत्यन्त नवीन व अधीर का नाम है और पण्डित व महाधीर या बड़े ढीठ को 'विशारद' कहते हैं यह १ विद्वान् व महाधृष्ट का नाम है ॥ १०२ ॥

इति दान्ताः ॥

अथ धान्ता व्याख्यायन्ते ॥

नापविशेष, वर-^{पु.} (व्यामो वटश्च) न्यग्रोधानुत्सेधः (कायउन्नतिः) ।
गद, देह, उँचाई, ^{पु.} (पर्याहारश्च मार्गश्च) विवधौ वीवधौ (च तौ) ॥ १०३ ॥
ध्यानादि, रास्ता.

कैलाये हुए हाथों समेत दोनों भुजाओं के गोलका परिमाण व्याम या व्यास और वरगद के वृक्षको न्यग्रोध कहते हैं यह १ नापविशेष व वरगद का नाम है । देह और उँचाई ये दोनों 'उत्सेध' कहलाते हैं यह १ काया व उँचाई का नाम है और चारोंओर से इकट्ठा कियाहुआ ध्यान आदि या दोनों तरफ बँधे शिकहरवाले काँधों से लेजाने योग्य काष्ठ बहिंगा या काँवरी और मार्ग (रास्ता) ये दोनों विवध व वीवध कहलाते हैं ये २ पर्याहार आदि के नाम हैं ॥ १०३ ॥

यज्ञिय वृक्षादि, ^{पु.} परिधि (यज्ञियतरोः शाखायामुपसूर्यके) ।
गिरवी या थाती
आदि.

(बन्धकं व्यसनं चेतः पीडाधिष्ठान) माधयः ॥ १०४ ॥

यज्ञसम्बन्धी वृक्ष यानी पलाश व शमी आदिकों की शाखा और सूर्य के समीपस्थ मेष-वृष आदिकों के सन्निकर्ष से उपजे हुए वेष्टन के आकारवाले मण्डल को 'परिधि' कहते हैं यह १ यज्ञिय वृक्षादि का नाम है और धनी या महाजन के घरमें ऋण (कर्ज) देनेपर्यन्त विश्वास के लिये गिरवी रखी वस्तु या थाती (धरोहर) दुःख या विपत्ति, मानसी पीड़ा अभ्यासन या आश्रय ये 'आधि' कहलाते हैं । एकत्व में आधिः, द्वित्व में आधी और बहुत्व में आधयः ये होने हैं यह १ गिरों धरी वस्तु आदि का नाम है ॥ १०४ ॥

समाधान आदि, ^{पु.} (स्युः समर्थननीवाकनियमाच्च) समाधयः ।
थाती या धरो-
हर आदि.

(दोषोत्पादे)ऽनुबन्धः (स्यात्प्रकृत्यादि विनश्वरे) ॥ १०५ ॥
(मुख्यानायिनि शिशौ प्रकृतस्यानुवर्तने) ।

शङ्काका परिहार या समाधान, वचन का अभाव या मूलधन के बढ़ाने के लिये

अनाज का संग्रह करना और अङ्गीकार ये 'समाधिः' कहलाते हैं यह १ समाधान आदि का नाम है । और दोषों का उपजाना, एवं प्रकृति, प्रत्यय, आगम और आदेशों में जो नश्वर यानी इत्संज्ञा लोपों से अदर्शनीय बर्ण, माता पिता तथा गुरुदेवों का आज्ञाकारी बालक और प्रारम्भ हुए का अनुवर्तन या प्राप्त विषय का अनुवर्तन यानी बड़े लोगों से इष्ट की प्राप्ति करना इनको 'अनुबन्ध' कहते हैं यह १ दोषोत्पादन आदि का नाम है ॥ १०५ । ३ ॥

विष्णु, चन्द्रमा, ^{पु.} विधु (विष्णौ चन्द्रमसि) (परिच्छेदे विले) ^{पु.} ऽवधिः ॥ १०६ ॥
परिच्छेद, गड़हा, विधान, भाग्य, ^{पु.} याचना, जासूस, विधि (विधाने दैवेऽपि) ^{पु.} प्रणिधिः (प्रार्थने चरे) ।
परिष्ठत, समूह, ^{पु.} हादि. ^{पु.}

^{पु.} बुधवृद्धौ (परिष्ठतेऽपि) ^{पु.} स्कन्धः (समुदयेऽपि च) ॥ १०७ ॥

भगवान् विष्णु और चन्द्रमा को 'विधु' कहते हैं । यह चन्द्रमा, कपूर, हृषीकेश और राक्षस में पुंलिङ्ग है यह १ विष्णु आदि का नाम है । भाग, विभाग, अध्याय, पर्व, सर्ग, या सीमा (हृद) और गड़हा को 'अवधि' कहते हैं यह अवधान, मर्यादा, काल और विल में पुंलिङ्ग है यह १ परिच्छेद आदि का नाम है । कर्तव्य कार्य और पूर्वजन्मका किया हुआ शुभ या अशुभ कर्म अपिशब्द से ब्रह्मा और कालको भी 'विधि' कहते हैं यह भाग्य, काल, विधान और ब्रह्मा में पुंलिङ्ग है यह १ विधान आदि का नाम है । मांगना या विनती करना, अपने और पराये राजा की बात जाननेवाला, हरकारा, दूत या जासूस को 'प्रणिधि' कहते हैं यह १ प्रार्थन आदि का नाम है । सत्, असत् का जाननेवाला विद्वान्, अपिशब्द से सौम्य, सुन्दर, और बूढ़े को 'बुध' व 'वृद्ध' कहते हैं ये २ परिष्ठत आदिकों के नाम हैं इनमें 'बुध' यह विद्वान् कवि और चन्द्रपुत्र में पुंलिङ्ग है और 'वृद्ध' यह पुराने, बड़े बूढ़े और बुध में त्रिलिङ्ग है और शैलेयनामक गन्धद्रव्य (छरीला) में नपुंसक है और समुदाय या समूह अपिशब्द से राजा, कांथा, लड़ाई, उत्तरकाल या प्राप्त काल आदि को 'स्कन्ध' कहते हैं यह राजा, कांथा, लड़ाई, समूह, शरीर, वृक्ष की पीढ़, भद्राआदि और छन्दोभेद में पुंलिङ्ग है यह १ समुदाय आदि का नाम है ॥ १०६ । १०७ ॥

नदविशेष, ^{पु.स.} देशे (नदविशेषेऽर्थौ) ^{पु.स.न.} सिन्धु (नार् सरिति स्त्रियाम्) ।
समुद्र, नदी, विधान, प्रकार, ^{स.} सुन्दर आदि. विधा (विधौ प्रकारे च) साधु (रम्येऽपि च त्रिषु) ॥ १०८ ॥

* "समाधिर्ना समर्थने, ध्याने वैरस्य नियमे कान्यस्य च गुणान्तरे" (इति मेदिनी) ॥

देशभेद, नदविशेष यानी “ भैरव—शोणभद्र—ब्रह्मपुत्र आदि और सागर, तथा नदी ये ‘ सिन्धु ’ कहलाते हैं यह समुद्र, नद, देश और हाथी के मदस्त्राव में पुलिङ्ग और गङ्गा, यमुना आदि नदियों में स्त्रीलिङ्ग है यह १ देशभेद आदि का नाम है । विधान, आज्ञा या हुक्म और “ इस प्रकार, किसप्रकार, जिसप्रकार ” आदि को ‘ विधा ’ कहते हैं यह गजान्न, ऋद्धि, प्रकार, वेतन और विधान में स्त्रीलिङ्ग है । यह १ विधान आदि का नाम है । और रमणीय या सुन्दर अपिशब्द से व्याज लेनेवाला और सज्जन ये ‘ साधु ’ कहलाते हैं यह त्रिलिङ्ग है । यह १ रम्य आदि का नाम है ॥ १०८ ॥

भार्या, पुत्रस्त्री, स.

स्त्रीमात्र, चूना, वधू “जाया स्नुहा स्त्री च” सुधा “लेपोऽमृतं स्नुही” ।

अमृत, सेहुँड़ा, स.

संकल्प, मर्यादा, स.

आदर, आकांक्षा. सन्धा “प्रतिज्ञामर्यादा” अर्द्धा “संप्रत्ययः स्पृहा” ॥ १०९ ॥

विवाहिता पत्नी, पुत्रपत्नी और स्त्रीमात्र को ‘ वधू ’ कहते हैं यह पुत्रपत्नी नवीन स्त्री, स्वकीयापत्नी, असपरग (शाकविशेष) अच्छे अङ्गवाली स्त्री, कचूर और शारिवा में भी स्त्रीलिङ्ग है । यह १ भार्या आदि का नाम है । आहार, चूना, खड़ियामिट्टी आदि “ कि जिससे देवमन्दिर व राजमन्दिर आदि पोते जाते हैं ” मोक्ष, जल, घी और सेहुँड़ा नामकवृक्ष को ‘ सुधा ’ कहते हैं । यह चूना, विजली, मोक्ष, पानीय, घी, भोजन, आँवला और सेहुँड़ा में स्त्रीलिङ्ग है यह १ लेप (सफेदी चूना) आदि का नाम है । संकल्प या स्वीकार, हृद या बड़ाई को ‘ सन्धा ’ कहते हैं जैसे कि “ सत्यसन्धो दृढव्रतो रामः ” सत्यसंकल्पवाले दृढव्रतधारी रामजी हैं यह १ प्रतिज्ञा आदि का नाम है और आदर, सत्कार या विश्वास और वाञ्छा को ‘ अर्द्धा ’ कहते हैं यह १ आदर आदि का नाम है ॥ १०९ ॥

मदिरा, फूलका रस, शहद, अन्धा, अधेरा, मूर्ख, अहंकारी.

मधु (“ मद्ये पुष्परसे ” क्षौद्रे) ऽप्यन्धं (तमस्यपि) ।

पु.स.न. (अतस्त्रिषु) समुन्नद्धौ (पण्डितं मन्यगर्वितौ) ॥ ११० ॥

मदिरा या मादुकद्रव्य, फूलका रस, शहद अपिशब्द से जल, दूध, विष्णुजी के कान से उपजा दैत्य या कुम्भीनसी का स्वामी, चैत्रमास, वसन्तऋतु, जीवन्तीवृक्ष, अशोकवृक्ष और महुआ को ‘ मधु ’ कहते हैं यह १ मद्य (शराब) आदि का नाम है । अधेरा, अन्धा और जल को ‘ अन्ध ’ कहते हैं यह अन्धकारमें नपुंसक

१ “ गुरुवेदान्तवाक्यादिषु विश्वासः श्रद्धा ” (इति तत्त्वबोधः) ॥

२ “ मधुपराग मधु चैत है, मधु मदिरा मकरन्द । मधु नभ मधु खग मधु सुधा, मधुसूदन गोविन्द ” ॥ (इति भाषाकोषः) ॥

और लोचनविहीन में वाच्यलिङ्ग यानी त्रिलिङ्ग है यह १ अंधेरा आदि का नाम है इसके बाद वर्गपर्यन्त कहे जानेवाले शब्द त्रिलिङ्ग हैं और जो अपनेतई पण्डित मानता है (मूर्ख) या अहंकारी पण्डित, गर्बीला या घमण्डी ये दोनों “समुन्नद्ध” कहलाते हैं यह १ मानी पण्डित आदि का नाम है ॥ ११० ॥

पु.स.न.

निन्दित, आज्ञा, ब्रह्मबन्धु(रधिक्षेपे निर्देशे) (ऽथावलम्बितः) ।

आदि, आश्रित,
संनिहित, ख्यात,
भूषित.

पु.स.न.

पु.स.न.

(अविदूरो) ऽप्यवष्टब्धः प्रसिद्धौ (ख्यातभूषितौ) ॥ १११ ॥

इति धान्ताः ॥

निन्दा का प्रयोग करना ब्राह्मण के आचार से हीन या निन्दित कर्म करनेवाला और आज्ञा, उपदेश, वेतन या किसी की भूल दिखलाना इनको ‘ब्रह्मबन्धु’ कहते हैं निन्दा के प्रयोग में जैसे कि “हे ब्रह्मबन्धो दुष्टोऽसीति” अथ ब्राह्मण-जाति बन्धुवाले ! तू दुष्ट है यह १ अधिक्षेप आदि का नाम है । अथवा अश्रित या आश्रित, निकट, संनिहित जीता या रुकाहुआ और अपिशब्द से बंधाहुआ या कैदी ये ‘अवष्टब्ध’ कहलाते हैं यह १ आश्रित आदि का नाम है और विख्यात तथा वस्त्र व अलंकारों से अलंकृत को ‘प्रसिद्ध’ कहते हैं यह १ ख्यात व भूषित का नाम है ॥ १११ ॥

इति धान्ताः ॥

अथ नान्ता व्याख्यायन्ते ॥

सूर्य, आगी,
किरण या ल-
गाम, सूर्य, ब्रह्मा,
वपु, मूढ़, नीच
जाति.

* पु.

पु.

(सूर्यवह्नी) चित्रभानू भानू (रश्मिदिवाकरौ) ।

पु.

पु.

भूतात्मानौ (धातुदेहौ) (मूर्खनीचौ) पृथग्जनौ ॥ ११२ ॥

सूर्य और आगी को ‘चित्रभानु’ कहते हैं यह १ चित्रविचित्र किरणोंवाले सूर्य आदि का नाम है । किरण या घोड़े की रस्सी या लगाम और सूर्य को ‘भानु’ कहते हैं यह १ किरण आदि का नाम है । ब्रह्मा या विष्णु और देह ये ‘भूतात्मा’ कहलाते हैं यह १ विधाता आदि का नाम है और मूर्ख व नीच जाति को ‘पृथग्जन’ कहते हैं यह १ मूढ़ आदि का नाम है ॥ ११२ ॥

पु.

पु.

पर्वत, पत्थर, प्रावाणौ (शैलपाषाणौ) पत्रिणौ (शरपक्षिणौ) ।

बाण, पक्षी,
वृक्ष, पहाड़,
आगी, मोर.

पु.

पु.

(तरुशैलौ) िखरिणौ शिखिनौ (वृक्षिर्हिणौ) ॥ ११३ ॥

• “चित्रभानुः पुमान् वैश्वानरे चाहस्कोऽपि च” (इति कोषान्तरम्) ॥

पर्वत और पत्थर को 'प्रावा' द्वित्व में 'प्रावाणौ' कहते हैं यह पत्थर, मेघ और पहाड़ में पुंलिङ्ग है यह १ शैल आदि का नाम है। बाण, वारि और पखेरू को 'पक्षी' द्वित्व में 'पक्षिणौ' कहते हैं। यह बाज, रथ, काण्ड, पक्षी, वृक्ष, सारथी और पर्वत में पुंलिङ्ग है यह १ बाण आदि का नाम है। वृक्ष और पर्वत को 'शिखरी' द्वित्वमें 'शिखरिणौ' कहते हैं यह अपामार्ग (चिरचिरा) पर्वत और वृक्ष में पुंलिङ्ग है यह १ वृक्ष आदि का नाम है और आगी व मोरको शिखी और द्वित्व में 'शिखिनौ' कहते हैं यह आगी, बैल, बाण, केतुग्रह, वृक्ष, मोर और मुर्गा में पुंलिङ्ग है। और शिखावान् में वाच्यलिङ्ग है यह १ अग्नि आदि का नाम है ॥ ११३ ॥

पु.

वाञ्छा, अनुकूल, सारथी, सवार, घोड़ा, बाण, पखेरू, **प्रतियत्ना (वुभौ लिप्सोपग्रहावथ) सादिनौ ।**
(द्वौ सारथिहयारोहौ) वाजिनो (ऽश्वेषु पक्षिणः) ॥ ११४ ॥

वाञ्छा, अनुकूल या वन्दी ग्रहणआदि ये दोनों 'प्रतियत्न' कहलाते हैं यह संस्कार, मनोरथ और अनुकूल में पुंलिङ्ग है यह १ चाहना आदिका नाम है। रथका हांकनेवाला, गाड़ीवान या कोचवान और घोड़चढ़ा या सवार को 'सादी' द्वित्व में 'सादिनौ' कहते हैं यह तुरङ्गारोही मतङ्गारोही और रथारोही में पुंलिङ्ग है यह १ सारथी आदि का नाम है और घोड़ा, बाण, पक्षी (पखेरू) इनको वाजी, द्वित्व में वाजिनौ और बहुत्व में 'वाजिनः' कहते हैं यह बाण, घोड़ा और पखेरू में पुंलिङ्ग है यह १ घोड़ा आदि का नाम है ॥ ११४ ॥

पु.

पु.

कुल, जन्मभूमि, बरस, किरण, तिन्नी पसाई या साठी, चन्द्रमा, आगी, सूर्य, **(कुलेऽप्य) भिजनो (जन्मभूम्याऽप्यथ) हायनाः ।**
(वर्षार्चिर्त्रीहिभेदाश्च) (चन्द्राग्न्यर्का) विरोचनाः ॥ ११५ ॥

पु.

कुल (सजातीयवंश) जन्मभूमि (जन्मस्थान) अपिशब्द से प्रसिद्ध और कुलध्वज को 'अभिजन' कहते हैं यह १ कुल आदि का नाम है। बरस, ज्वाला या किरण, तृणाधान्य (तिन्नी पसाई) या साठी ये 'हायन' कहलाते हैं यह १ वर्ष आदि का नाम है और चन्द्रमा, आगी, सूर्य और प्रह्लाद के पुत्रको भी 'विरोचन' कहते हैं यह १ चन्द्र आदि का नाम है ॥ ११५ ॥

पु.

पु.

बाल, वरुण, वासुदेव, सूर्य, देवताओं का कारीगर, उपाय, धृति, बुद्धि, स्वभाव, ब्रह्म, शरीर, **(केशेऽपि) जिना विश्वकर्मा (कंसुरशिल्पिनोः) ।**
आत्मा (यत्नो धृतिर्बुद्धिः स्वभावो ब्रह्म वर्ष्म च) ॥ ११६ ॥

बाल, वरुण या वासुदेव अपिशब्द से पाप और कुटिल को 'वृजिन' कहते हैं यह पाप में नपुंसक वालों में पुंलिङ्ग और कुटिल में त्रिलिङ्ग है यह १ केश आदि का नाम है । सूर्य और देवताओं के कारीगरको 'विश्वकर्मा' कहते हैं यह सूर्य, मुनिभेद और देवशिल्पी में पुंलिङ्ग है यह १ सूर्य आदि का नाम है । परिश्रम या उद्योग, तुष्टि, धारणा या सुख, ज्ञान या सांख्यशास्त्र में कहे हुए सुख व दुःखादि आठप्रकार के धर्मवाले प्रकृति के परिणामका भेद, अपना धर्म या अपना गुण, परमात्मा और देहको "आत्मा" कहते हैं यह शरीर, यत्न, स्वभाव, परमात्मा, चित्त, धृति, बुद्धि और परों या वैरियों के बरादेने में भी पुंलिङ्ग है यह १ यत्न आदि का नाम है ॥ ११६ ॥

पु.

इन्द्र, हिंसक (शक्रो घातुकमत्तेभो वर्षुकाब्दो) घनाघनः ।
मतवाला हाथी,

वर्षा करनेवाला पु.

मेघ, धनादिका

गर्व, स्नेह,

मारडालना.

अभिमानो (ऽर्थादिदर्पे ज्ञाने प्रणयहिंसयोः) ॥ ११७ ॥

इन्द्र, घातुक मतवाला हाथी, बरसानेवाला मेघ अथवा देवताओं का स्वामी, हिंसा करनेवाला या क्रूर, मतवाला हाथी, वर्षा करनेवाला मेघ या बरसानेवाला साल इनको 'घनाघन' कहते हैं यह १ इन्द्र आदिका नाम है और धन या वस्तु आदिशब्द से कुल, पशु, गुण का घमण्ड, विवेकरहित या अविद्या या विवेक विद्या, स्नेह और हिंसा (मार डालना) ये 'अभिमान' कहलाते हैं यह १ घनादिकों के घमण्ड आदिका नाम है ॥ ११७ ॥

पु.स.न.

बादल, कठि-
नता, कठोर,
सघन, सूर्य, पु.
स्वामी, चन्द्रमा,
रजपूत, राजा.

घनो (मेघे मूर्त्तिगुणे त्रिषु मूर्त्ते निरन्तरे) ।

पु.

इनः (सूर्ये प्रभौ) राजा (मृगाङ्गे क्षत्रिये नृपे) ॥ ११८ ॥

बादल, कठिनता, कठिन या कठोर, सान्द्र या सघन को 'घन' कहते हैं यह त्रिलिङ्ग है परन्तु धरणीकोप में विशेषता है कि सघन और घण्टा-मालरि आदिके बाजा में नपुंसक मोथा, मेघ, कठिनता का समूह, विस्तार, हथौड़ा या निहाई में पुंलिङ्ग और सघनता व दृढ़ता में त्रिलिङ्ग है और "समत्रिघातश्च घनः प्रदिष्टः" इस लीलावती के प्रमाण से समान तीन अङ्कों के गुणनफल को भी 'घन' कहते हैं जैसे कि ३ का २७ घन होता है यह १ मेघ आदिका नाम है । सूर्य, स्वामी और नरपाल को 'इन' कहते हैं यह सूर्य, राजा और स्वामी में पुंलिङ्ग है और चन्द्रमा, क्षत्रियजाति या राजपूत, नरपति या राजमात्र को 'राजा' कहते हैं यह स्वामी,

नरपाल, क्षत्रिय, चन्द्रमा, यक्ष और इन्द्र में पुंलिङ्ग है यह १ चन्द्रमा आदिका नाम है ॥ ११८ ॥

नाचनेवाली, स. *
 दूती, नदी, **वाणिन्यौ (नर्तकीदूत्यौ) (स्वन्त्यामपि) वाहिनी ।**
 सेनाभेद, वज्र, स.
 बिजली, बांस स.
 आदि. **ह्लादिन्यौ (वज्रतडितौ) (वन्दायामपि) कामिनी॥११६॥**

नाचनेवाली वेश्या और दूती या मतवाली को ' बाणिनी ' या ' वाणिनी ' कहते हैं यह नर्तकी, मत्ता, विदग्धा और वनिता में स्त्रीलिङ्ग है यह १ नाच करने वाली वेश्या या नटिनी आदिका नाम है । नदी या औषधी भेद अपिशब्दसे सेना और सैन्यभेद को ' वाहिनी ' कहते हैं यह १ नदी आदिका नाम है । वज्र और बिजली को ' ह्लादिनी ' कहते हैं यह १ वज्र आदिका नाम है और बांदा अपिशब्द से डरनेवाली विलासिनी या स्त्रीमात्र को भी कामिनी कहते हैं यह १ बांदा आदिका नाम है ॥ ११६ ॥

खाल, देह, गलशुण्डी, याग, विस्तार, कमीना, मृद, कार्य, ध्वजा, निमन्त्रण.

(त्वग्देहयोरपि) तनुः सूना (धोजिह्विकापि च) ।

(क्रतुविस्तारयोरस्त्री) वितानं (त्रिषु तुच्छके) ॥ १२० ॥

(मन्देऽथ) केतनं (कृत्ये केतावुपनिमन्त्रणे) ।

वक्त्रा या छिन्का, चाम या खाल, काया या देह, अपिशब्द से थोड़ा, विरला और दुबले को 'तनु' कहते हैं यह देह और खाल में खिलिङ्ग और थोड़े, विरले व दुबले में त्रिलिङ्ग है यह १ त्वचा आदि का नाम है । गलकण्ठिका, गलघण्टिका या गलगुण्डिका (रोगविशेष) अपिशब्द से पुत्री और वधस्थान ये 'सूना' कहलाते हैं यह १ गलगुण्डी आदि का नाम है । यज्ञ, विस्तार, बड़ाई, शून्य या खाली, मूर्ख, आलसी या अभागा और असमर्थ को 'वितान' कहते हैं यह यज्ञ और विस्तार में पुन्रपुंसक और तुच्छ व मूर्ख में त्रिलिङ्ग है एवं भेदिनीकोष में भी कहा है कि याग, चंदोवा, विस्तार में पुन्रपुंसक, वृत्तभेद में नपुंसक और आलसी तथा तुच्छ (कमीना) में त्रिलिङ्ग है यह १ यज्ञकर्म आदि का नाम है और कार्य, ध्वजा या पनाका या झण्डी, मित्रोंका न्यौता या ज्ञाफत और निवास को 'केतन' कहते हैं यह ध्वजा, कार्य, निमन्त्रण और निवास में नपुंसक है यह १ कार्य आदि का नाम है ॥ १२० ॥

* “ बाणिनीराब्दो मेदिन्यां पवर्ग्यादौ पठितः । हेमे तु अन्तस्थादौ पठितः । एवं बाहिनीराब्दोऽपि बोद्धव्यः ” ॥

न. पु.

वेद, तत्त्व, (वेदस्तत्त्वं तपो) ब्रह्म ब्रह्मा (विप्रः प्रजापतिः) ॥ १२१ ॥
तपस्या, ब्राह्मण्य,
प्रजापति.

वेद * या वेदत्रयी (‘ ऋक्—यजुः—साम ’) ज्ञान, ज्ञानशास्त्र या ज्ञानका साधन, विलम्बित नाचका भेद या उस परमेश्वरका सार, मूल, यथार्थ, सत्यादि कारण, चैतन्य, परमात्मा, या सांख्यशास्त्र में कहेहुए प्रकृति आदि पचीस पदार्थ—यानी प्रकृति, पुरुष, महत्, अहंकार, पञ्चतन्मात्रा, पञ्चभूत, पञ्चज्ञानेन्द्रिय, पञ्चकर्मेन्द्रिय और मन ये २५ तत्त्व और ग्रीष्मऋतु या कृच्छ्रादि कर्म इनको ब्रह्म (न) कहते हैं यह १ वेदादि का नाम है और ब्राह्मण या याग करानेवाला ऋत्विक् या योगयुक्त और विधाता, दक्षआदि, दामाद, आगी, सूर्य और त्वष्टा प्रजापति को ब्रह्मा कहते हैं यह वेद, तत्त्व व तपस्या में नपुंसक और विधाता, ऋत्विक्, योगभेद, ब्राह्मण और अध्यात्मज्ञान में पुल्लिङ्ग है यह १ विप्र आदि का नाम है ॥ १२१ ॥

न.

उत्साह, हिंसा, (उत्साहने च हिंसायां सूचने चापि) गन्धनम् ।
सूचन, प्रकाशन,
जीवन, वेग, न.

तर्पण. आतश्चनं (प्रतीवापजवनाप्यायनार्थकम्) ॥ १२२ ॥

उत्साह या ऊपर को उठाना, हिंसा मारडालना या क्रूरकर्म करना, पराये दोषों को प्रकट करना और अपिशब्द से सत्य या असत्यका प्रकाश करना इनको ‘गन्धन’ कहते हैं यह १ उत्साह आदि का नाम है और दूध में जावन देना, वेग और तर्पण अर्थवाला ‘ आतश्चन ’ कहलाता है यानी दूध आदि में दही आदि हाने के लिये मठा आदि का छोड़ना, वेग करना और तृप्त करना इन अर्थोंका वाचक ‘ आतश्चन ’ है यह १ जावन आदि का नाम है ॥ १२२ ॥

चिह्न, दाढ़ी, मूछ, न.

गीलाकरना, अङ्ग-व्यञ्जनं (लाञ्छने श्मश्रुनिष्ठानावगृहेष्वपि) ।
भेद, लोकापवाद,
पशवादिकों का न.

युद्ध. (स्या)त्कौलीनं (लोकवादे युद्धे पश्वहिपक्षिणाम्) ॥ १२३ ॥

चिह्न या निशान तिल, भँवरी आदि, दाढ़ी मूछ, गीलाकरना या भातआदि अनाज का सेवन और स्त्री पुरुषों के अङ्गोंका भेद इनको ‘ व्यञ्जन ’ कहते हैं यह १ लाञ्छन आदि का नाम है और लोकापवाद, हरिण मेढाआदि, साँप या वृत्रासुर और पखेरू इनकी लड़ाई और कुलीनत्व को भी ‘ कौलीन ’ कहते हैं यह १ लाञ्छन आदि का नाम है ॥ १२३ ॥

न.
निकलना, वन-
भेद, प्रयोजन, (स्या) दुद्यानं (निःसरणे वनभेदे प्रयोजने) ।

सावकाश, टि-
कना, खेलना (अवकाशे स्थितौ) स्थानं (क्रीडादावपि) देवनम् ॥ १२४ ॥
आदि. न. न.

घर आदि से निकलना, राजाका साधारण वन या उपवन, प्रयोजन यानी कार्य या कारण इनको 'उद्यान' कहते हैं यह १ निकलने आदि का नाम है । अवसर या सावकाश या सुभीता, ठहरना, ठिकाना या घर ये 'स्थान' कहलाते हैं यह सादृश्य, अवकाश, स्थिति, नित्य और सन्निवेश (अच्छे स्थान) में नपुंसक है यह १ अवकाश आदि का नाम है और खेलना आदि पद से व्यवहार, दीप्ति, जीतने की चाहना, बढ़ाई करना और अपिशब्द से पाशा को भी 'देवन' कहते हैं यह व्यवहार, जीतने की अभिलाषा और खेलने में नपुंसक व पाशों में पुलिङ्ग है यह १ खेलने आदि का नाम है ॥ १२४ ॥

न.
पौरुष, तन्त्र, उत्थानं (पौरुषे तन्त्रे सन्निविष्टोद्गमेऽपि च) ।
बैठे हुए का उ-

ठना, तिरस्कार, न.
विरोधाचरण. व्युत्थानं (प्रतिरोधे च विरोधाचरणेऽपि च) ॥ १२५ ॥

उद्योग करना, बढ़ाई देना या पराक्रम आदि दिखलाना, कुटुम्ब का कार्य, सिद्धान्त, उत्तम औषध, प्रधान, डोरोंका फेलाना, शास्त्रभेद, विद्वौना आदि सामान, वेदशास्त्रा का भेद, कारण, दो अर्थोंका प्रयोजक और बैठे हुए का उठना अपिशब्द से पुस्तक, संग्राम, हर्ष और चशब्द से मलका वेग इनको 'उत्थान' कहते हैं यह उद्यम, तन्त्र, पौरुष, पुस्तक, युद्ध, आंगन, उद्गम, आनन्द और मलके वेगमें नपुंसक है यह १ पौरुष आदि का नाम है और तिरस्कार, वाधक, प्रतिबन्ध या निरोध, चोरी व्यभिचार आदि विरुद्धाचरण करना अपिशब्द से स्वतन्त्राचरण इनको 'व्युत्थान' कहते हैं यह १ प्रतिरोध आदि का नाम है ॥ १२५ ॥

प्रेतक्रिया, गमन, (मारणे मृतसंस्कारे गतौ द्रव्योपपादने ।
धनका उपजाना, न.

निर्वर्तन, उप-
करण, अतुगमन. निवर्तनोपकरणानुव्रज्यासु च) साधनम् ॥ १२६ ॥

मारना या वधकरना, मृतकपुरुष का दाहादि संस्कार करना, चलना या जाना, धनका उपजाना या पैदाकरना, धातुमात्र पीतलआदि या पृथ्वीआदि पञ्चभूत, धनआदि का दिलाना, अर्थका सिद्धहोना, साधन सामग्री या परिकर, उपाय, व्यञ्जन, पलंग आदि, पीछे जाना और चशब्द से सेना या फौज, सिद्धौषध और लिङ्गको भी 'साधन' कहते हैं यह मृतसंस्कार, सैन्य, सिद्धौषध, गमन,

निर्वर्तन, उपाय, लिङ्ग, अर्थदापन, अनुगमन और धन में नपुंसक है यह १ मारण आदि का नाम है ॥ १२६ ॥

वैरका मिटाना, न.

दान देना, धरो-**निर्यातनं (वैरशुद्धौ दाने न्यासार्पणेऽपि च) ।**

हरका फेरना,

विपदा, नीचे न.

गिरना, कामज-**व्यसनं (विपदिभ्रंशे दोषे कामजकोपजे) ॥ १२७ ॥**

और कोपज

दोष.

वैरका बदलालेना, मिटाना या दूरकरना, गौ, धन आदि का दानदेना और धरोहर का फेरना या लौटादेना इनको 'निर्यातन' कहते हैं यह १ वैरके प्रतीकार आदि का नाम है और विपदाका भोगना, नाशहोना या नीचे गिरना, काम से उपजे दोष यानी शिकार करना, जूआ खेलना, मद्यपीना और रमणियों से रमण करना आदि और कोपसे पैदाहुए दोष यानी कठोर बोलना, कठोरही दण्ड देना आदि इनको 'व्यसन' कहते हैं । एवं विश्वकोष में भी कहा है कि अशुभता, मद्यपान-वेश्यागमन-और शिकार आदि में आसक्त होना, दैवकृत अनिष्ट फल, पाप, विपत्ति और उद्यम का निष्फल होजाना ये 'व्यसन' कहलाते हैं यह १ आपदा आदि का नाम है ॥ १२७ ॥

न.

बरौनी, केसर,**पक्ष्मा(क्षिलोम्नि किञ्जल्के तन्त्वाद्यंशेऽप्यणीयसि) ।**

सूत आदि का

बड़ा सूक्ष्मभाग,

तिथिभेद, उत्सव,

पलकमार्ग.

↓

न. न.

(तिथिभेदे क्षणे)पर्व वर्त्म(नेत्रच्छदेऽध्वनि) ॥ १२८ ॥

नेत्रों के लोम यानी बरौनी, बरुनी या बिन्नी, केसर या कमल या फूलमात्र की गन्ध और बड़ा महीन या पतला सूत आदि का भाग इनको पक्ष्म (न) कहते हैं यह डोरा आदि का पतला अंश, केसर और नेत्रों के लोमों में नपुंसक है यह १ बरौनी आदि का नाम है । तिथियों का भेद यानी शुक्लपक्ष की अष्टमी, कृष्णपक्ष की चतुर्दशी, अमावास्या और पौर्णमासी तथा सूर्य की संक्रान्ति, उत्सव या अवसर, मध्य और दशलव प्रमाणवाला काल ये 'पर्व' (न) कहलाते हैं, एवं हैमकोष में भी कहा है जैसे कि, "पर्वप्रस्तावोत्सवयोर्ग्रन्थ्यादौ विषुवदादिषु । दर्शप्रतिपत्सन्धौ च तिथिग्रन्थविशेषयोः" प्रस्ताव, उत्सव, गांठि या पोर आदि, समरात्रि दिनवाला काल, अमावास्या व परेवा की सन्धि, तिथियां और ग्रन्थ-विशेष इनको 'पर्व' (न) कहते हैं यह १ तिथिभेद आदि का नाम है और

* "गीतशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम् । व्यसनेन तु मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा" ॥ १ ॥

† "चतुर्दश्यष्टमी कृष्णा अमावास्या च पूर्णिमा । पर्वीष्येतानि राजेन्द्र ! रविसंक्रमणं तथा" ॥ १ ॥

नेत्र ढकनेहारे पोटा या पलक और मार्ग को 'वर्त्म' (न्) कहते हैं यह १ पलक आदि का नाम है ॥ १२८ ॥

अकार्य, लिङ्गा-
च्छादक वस्त्र,
संगति, सुरत, न.
परमात्मा, प्रज्ञा, प्रधानं (परमात्मा धीः) प्रज्ञानं (बुद्धिचिन्मयोः) ॥ १२९ ॥
बुद्धि, निशान. न.

कार्यका अभाव या अयोग्यकर्म और गुह्येन्द्रियका ढकनेवाला वस्त्रविशेष (लंगोटी) ये दोनों ' कौपीन ' कहलाते हैं यह अकार्य, चीर और गुह्यप्रदेश में नपुंसक है यह १ अकार्य आदिका नाम है । भार्या आदि का संगम या सम्बन्ध और सुरत को ' मैथुन ' कहते हैं यह सम्बन्ध, स्त्री पुरुषका मिलाप, रति, संगम, स्त्रीसंग या हमागोशी में नपुंसक है यह १ संगति आदि का नाम है । परमात्मा और प्रज्ञा को ' प्रधान ' कहते हैं यह महामात्र, प्रकृति, परब्रह्म और प्रज्ञामें नपुंसक है और एकत्व व उत्तम में सदैवही नपुंसक रहता है यह १ परमात्मा आदि का नाम है । तथा बुद्धि और चिह्न तिल आदि का निशान ये दोनों ' प्रज्ञान ' कहलाते हैं यह १ बुद्धि आदि का नाम है ॥ १२९ ॥

फूल, फल, कुल-
विनाश, रोना, न.
बुलाना, देह, न.
प्रमाण. क्रन्दने (रादना दाने) वर्ष्म (देहप्रमाणयोः) ॥ १३० ॥

फूल और फल जोकि तुरन्त उपजे हों उनको ' प्रसून ' कहते हैं जैसे कि, " प्रसूनो वाच्यवज्जाते स्त्रीबन्तु फलपुष्पयोरिति मेदिनी " यह जात यानी उपजे हुए में त्रिलिङ्ग और फल व फूलों में नपुंसक है यह १ पुष्प आदि का नाम है । वंश या गोत्र और विनाश ये दोनों ' निधन ' कहलाते हैं यह कुल, नाश या मरण और ज्योतिःशास्त्र में कहेहुए लग्न से अष्टम घर में भी नपुंसक है यह १ कुल आदि का नाम है । रोना, बुलाना या चिझाना इनको ' क्रन्दन ' कहते हैं यह आँसू छोड़ने, चिल्लाने और बुलाने में नपुंसक है यह १ रोदन आदि का नाम है और देह या काया या स्थूल, सूक्ष्म, कारणाशरीर, इयत्ता (इतना) या यथार्थ ज्ञान ये ' वर्ष्म ' (न्) कहलाते हैं यह १ देह, प्रमाण और अतिसुन्दर स्वरूप में भी नपुंसक है यह १ देह आदिकों का नाम है ॥ १३० ॥

घर, देह, दीप्ति, (गृहस्थित्वाभावा) धामा (न्यथ चक्ष्यथे ।
प्रभाव, चौराहा, न.
अच्छावासस्थान, न.
निशान, प्रधान. संनिवेशे च) संस्थानं लक्ष्म (चिह्नप्रधानयोः) ॥ १३१ ॥

घर, देह या स्थूल-सूक्ष्म-कारणशरीर, दीप्ति या छवि और प्रताप या धनसमूह और दण्ड से उपजा हुआ तेज ये 'धाम' (न) कहलाते हैं यह शक्ति प्रभाव, तेज, मन्दिर और जन्म में नपुंसक है यह १ घर आदि का नाम है । चौराहा, अच्छा बास स्थान या अवयवों का विभाग और चशब्द से मरना इनको ' संस्थान ' कहते हैं यह आकृति, मौत, साफ़ या सुथरा स्थान व चौराहे में नपुंसक है यह १ चौराहा आदि का नाम है और चिह्न या निशान, परमात्मा या प्रकृति, प्रज्ञा आदि को 'लक्ष्म' कहते हैं यह प्रधान और चिह्न में नपुंसक है यह १ चिह्न आदि का नाम है ॥ १३१ ॥

न.

छिपाना, ढाँपना, **आच्छादने (संपिधानमपवारणमित्युभे) ।**

साधन, लाभ, न.
सन्तोष.

आराधनं (साधने स्यादवाप्तौ तोषणेपि च) ॥ १३२ ॥

तिरोधान या छिपाना, वस्त्र आदिकों से ढाँपना या वस्त्रमात्र को भी 'आच्छादन' कहते हैं यह संपिधान, वस्त्र और घेरनेमात्र में भी नपुंसक है यह १ अपवारण आदि का नाम है और साधन यानी निर्वर्तन, उपकरण या अनुगमन, लाभ या मिलना और संतोष करना ये "आराधन" कहलाते हैं यह १ साधन आदि का नाम है ॥ १३२ ॥

न.

पहिया, नगर, **अधिष्ठानं (चक्रपुरप्रभावाध्यासनेध्वपि) ।**

प्रताप, चढ़ाई
या परमासन, न.

न.

प्रधान, मणि, **रत्नं (स्वजातिश्रेष्ठेऽपि) वने (सलिलकानने) ॥ १३३ ॥**

जल, जंगल.

पहिया, नगर या गांव, प्रताप, आक्रमण यानी चढ़ाई करना अपिशब्द से वरासन या उत्तमासन को भी 'अधिष्ठान' कहते हैं यह रथाङ्ग, प्रभाव, अध्यासन और पुर में पुनंसक है यह १ पहिया आदि का नाम है । अपनी जाति में प्रधान या मुखिया अपिशब्द से मणिको भी 'रत्न' कहते हैं जैसे कि, " नीचादप्युत्तमां विद्यां " स्त्री-रत्नं " दुष्कुलादपि " नीच व्यक्ति से भी उत्तम विद्या और बुरे कुलसे भी ' स्त्री-रत्न ' लेना चाहिये यह १ अपनी जाति में प्रधान आदि का नाम है । जल और जंगल ये दोनों ' वन ' कहलाते हैं यह कानन, नीर, निवास और निलय में नपुंसक है यह १ पानी आदि का नाम है ॥ १३३ ॥

विरला, थोड़ा, न.

पण्डित, बरा- **तलिनं (विरले स्तोके) (वाच्यलिङ्गास्तथोत्तरे) ।**

बर, मुखिया, पु.स.न.

पु.स.न.

कूर, सूचक या **समानाः (सत्समैकेस्युः) पिशुनौ (खलसूचकौ) ॥ १३४ ॥**

डगल.

↓ " धनार्थिनो जनाः सर्वे रमन्तेऽस्मिन्नीव यत् । ततो रत्नामति श्रेष्ठं शब्दशास्त्रविशारदः " (इति भावप्रकाशः) ॥

विरला या अन्तरसमेत, अल्प या थोड़ा, शय्या, विरस, तुच्छ और स्वच्छ को 'तलिन' कहते हैं यह विरल और अल्प में नपुंसक तथा स्वच्छ में वाच्यलिङ्ग है वैसेही आनेवाले नान्तवर्ग समाप्तिपर्यन्त वाच्यलिङ्ग हैं यह १ विरल आदि का नाम है । पण्डित, बराबरीवाला, और प्रधान या मुखिया ये 'समान' कहलाते हैं यह सुन्नी, सदृश और मुख्य में त्रिलिङ्ग और नाभी के पद्म में पुलिङ्ग है यह १ बुद्धिमान् आदि का नाम है । दुर्जन, अधम या क्रूर और निन्दक, शिक्षक, बोधक या चवाई को 'पिशुन' कहते हैं यह कुंकुम में नपुंसक, वानर के मुख और कौआ में पुलिङ्ग तथा चुगलखोर और खला में त्रिलिङ्ग है यह १ क्रूर आदि का नाम है ॥ १३४ ॥

कमती वान्यून्, पु.म.न. पु.स.न.

पु.स.न.

निन्द्य, वेगवान्, हीनन्यूना (वूनगह्यौ) (वेगिशूरो) तरस्विनौ ।

वलवान्, अप-
राधी, वैरिग्रस्त,

पु.स.न.

विपदा में प्राप्त अभिपन्नो (ऽपराद्धोऽभिग्रस्तऽयापन्नता अपि) ॥ १३५ ॥

ऊन और गह्य को 'हीन' और 'न्यून' कहते हैं ये २ अल्प या निन्द्य के नाम हैं इनमें निन्दा और अप्रपत्ता में 'हीन' त्रिलिङ्ग है और निन्दा व ऊनता में 'न्यून' भी त्रिलिङ्ग है । वेगवान् और वीर (शूरमा) को तरस्वी (न्) कहते हैं यह वलवान् और वेगवान् में त्रिलिङ्ग है यह १ वेगवान् व जल्दबाज़ आदि का नाम है । अपराधवान्, वैरियों से पराजित या चारों तरफ दुश्मनों से घिरा, विपदा में फँसा और सामने से भगाहुआ ये 'अभिपन्न' कहलाते हैं एवं विश्वकोष में भी कहा है कि, अपराध किये हुए, सामने से भगे हुए, शत्रुओं से घिरे हुए और आपदा में पहुँचे हुए को भी 'अभिपन्न' कहते हैं यह १ पाप, दोष, अधर्म, अन्याय, जुर्म या गुनाह कियेहुए आदि का नाम है ॥ १३५ ॥

इति नान्ताः ॥

अथ पान्ता व्याख्यायन्ते ।

पु.†

भूषण, मोरपंख, तरकस, समूह, परिच्छद, चारोंतरफ, बीज-बोना, जला-धार, कलापो (भूषणे वहेँ तूणीरे संहतेऽपि च) ।

पु.

(परिच्छदे) परीचापः (पर्युप्तौ सलिलस्थितौ) ॥ १३६ ॥

भूषण—गहना—या अलंकारमात्र, मोरपंख, तरकस, समुदाय अविशद से करधनी और चशब्द से चन्द्रमा, चतुर और व्याकरण का भेद इनको कलाप कहते हैं

† " सर्पः क्रूरः खलः क्रूरः सर्पात्क्रूरतरः खलः । सर्प एकाकिनं हन्ति खलः सर्वविनाशकृत् ॥ १ ॥ "

" द्राम्यां युग्ममिति प्रोक्ते त्रिभिः श्लोकैर्विशेषकम् । कलापकं चतुर्भिः स्यात्तदूर्ध्वं कुलकं स्मृतम् " ॥ १ ॥

एवं अजय व मेदिनीकोष में भी कहा है कि, समुदाय, मोगपंख, करधनी, भूषण या अलंकार, निपंग या भाथा, चन्द्रमा, विदग्ध (चतुर) और व्याकरण का भेद इनमें 'कलाप' पुलिङ्ग है यह १ भूषण आदि का नाम है और पणिच्छद (विद्यौना आदि सामान) चारों तरफ वीजोंका बोना और जलाधार या बांध आदि को 'परीक्षाप' कहते हैं यह १ पुरस्कर उपयोगी वस्तु, साज विद्यौना आदि का नाम है ॥ १३६ ॥

ग्वाला, गोशाला-^{पु.} (गोधुग्गोष्ठपती) गोपौ (हरविष्णू) ^{पु.} वृषाकपी ।
धिप, शिव,
विष्णु, ऊष्मा, न. ^{पु.न.}
आंसू, अनाज, बाष्प (मूष्णसु) कशिपु (त्वन्नमाच्छादनं द्वयम्) ॥ १३७ ॥
कपड़ा.

गौका दुहनेवाला या गोपाल और गोशाला का स्वामी ये दोनों 'गोप' कहलाते हैं यह ग्रामसमूह, गोष्ठाधिकारी और अहीर में पुलिङ्ग है यह १ गोदोग्धा (ग्वाला) आदि का नाम है । महेदिव और नारायण को 'वृषाकपि' कहते हैं यह कृष्ण, शंकर और अग्निदेवता में पुलिङ्ग है यह १ महेश आदि का नाम है । गरम और आंसू को 'बाष्प' या 'वाष्प' कहते हैं यह आंसू और वाक में पुलिङ्ग व नपुंसक है और हैम या मेदिनीकोष के प्रमाण से स्पर्शादि व अन्तस्थादि भी है यह १ ऊष्मा आदि का नाम है और अनाज या भात और वस्त्र को 'कशिपु' कहते हैं यह अनाज व कपड़ा में नपुंसक है, और "कशिपुर्भक्ताच्छादनयोरेकोक्त्या पृथक्तयोः पुंसि" इस मेदिनीकोष के प्रमाण से पुलिङ्ग भी है । यहां कहेजानेवाला (अस्त्रियाम्) यह पद भी संयन्ध रखता है इसलिये पुनपुंसक दोनोंही जानना चाहिये यह १ भात आदि का नाम है ॥ १३७ ॥

शयन या पलंग, अटारी, स्त्री, ^{न.} तल्पं (शय्यादृदारेषु) (स्तम्बेऽपि) विटपो (ऽस्त्रियाम्) ।
गुल्म या गुच्छा, ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} ^{पु.स.न.} प्रातरूपस्वरूपाभिरूपा (बुधमनोज्ञयोः) ॥ १३८ ॥
पाण्डित, मनो-
हर, कछुई, वीणा ^{स.}
विशेष, मृग-
रोम से उपजा (भेद्यलिङ्गा अमी) (कूर्मी वीणाभेदश्च) कच्छपी ।
कम्बल, दिनका ^{पु.}
आठवां भाग. "कुतपो (मृगरोमोत्थपटे चाहोऽष्टमंशके)" ॥ १३९ ॥

इति पान्ताः ॥

खाट या पलंग, अटारी या कोठेपर की कोठरी और स्त्री (रमणी) को 'तल्प' कहते हैं यहां भी 'अस्त्रियाम्' इसका संयन्ध कियाजाता है इसलिये यह पुनपुंसक है यह १ शय्या आदि का नाम है । शाखाशून्य या टूट या तृण आदि का गुच्छा अपिशब्द से नया पत्ता, चंचल या भ्रमर, विस्तार या फैलाव और शाखा (डाल)

इनको 'विटप' कहते हैं यह पुन्नपुंसक है यह १ गुच्छा आदि का नाम है। बुध या पण्डित और मनोज्ञ या सुन्दर को प्रातरूप, स्वरूप व 'अभिरूप' कहते हैं ये वाच्यलिङ्ग कहलाते हैं ये ३ बुध आदि के नाम हैं। कछुई और वीणा का भेद यानी "सरस्वत्यास्तु कच्छपी" इस वैजयन्तीकोष के प्रमाण से सरस्वती की वीणा इनको 'कच्छपी' कहते हैं यह कछुई, वल्लकी विशेष और कछुई नामक रोग में भी खीलिङ्ग है यह १ कमठी आदि का नाम है और मृगों के लोमों से उपजा कम्बल आदि और दिनका आठवां भाग ये दोनों 'कुर्तप' कहलाते हैं यह दौहित्र (नाती) बाजा, ह्यागलोम से बनाहुआ वस्त्र और दिनका आठवां भाग इनमें पुन्नपुंसक और सूर्य में पुंलिङ्ग है यह १ मृग रोमज कम्बल आदि का नाम है ॥ १३८। १३९ ॥
इति पान्ताः ॥

अथ फान्ता व्याख्यायन्ते ।

पु.

रकार, निन्दित, (रवर्णे पुंसि) रेफः (स्यात्कुत्सिते वाच्यलिङ्गकः) ।

शिखा या जटा,
नदी, जयमांसी, स.
माता.

शिफा (शिखायां सरिति मांसिकायां च मातरि) ॥ १४० ॥

रकार और निन्दित को 'रेफ' कहते हैं यह 'र' इस अक्षर में पुंलिङ्ग है जैसे कि "रेफेपरे लोपः" और निन्दित अर्थ में वाच्यलिङ्ग यानी त्रिलिङ्ग है "एवं विश्वकोष में भी कहा है कि 'रेफ' यह रवर्ण में पुंलिङ्ग और कुत्सित में वाच्यलिङ्ग है" यह १ रकार या निन्दित का नाम है और शिखा या जटा, नदी, जटा, मांसी, माता या धाई, गौ, और मूसाकर्णी (लताविशेष) इनको 'शिफा' कहते हैं यह १ शिखा या जटा आदि का नाम है ॥ १४० ॥

रुखों की जड़, न.

गौ आदि पशुओं का खुर, पु.
गुंथना, बाहुओं का गहना.

शफं (मूले तरुणां स्याद्गवादीनां खुरेऽपि च) ।

गुम्फः (स्याद्गुम्फने बाहोरलंकारे च कीर्तितः) ॥ १४१ ॥

इति फान्ताः ॥

वृक्षों की जड़ और धेनु आदि पशुओं के खुरों को भी 'शफ' कहते हैं यह नपुंसक है यह १ तरुमूल आदि का नाम है और गुंथा या गठाहुआ और भुजाओं का अलंकार यानी बजुल्ला आदि गहना इनको गुम्फ कहते हैं यह पुंलिङ्ग है यह १ गुथे या रचनाविशेष आदि का नाम है ॥ १४१ ॥

इति फान्ताः ॥

अथ बान्ता व्याख्यायन्ते ।

जन्म मरण में

टिकाहुआ प्राणी,

घोड़ा, देवगायक

या गवेया, कं-

कण, शंख, सर्प

निन्दक.

पु.

(अन्तराभवसत्त्वेऽश्वे) गन्धर्वो (दिव्यगायने) ।

पु.

कम्बु (नां वलये शङ्खे) द्विजिह्वौ (सर्पसूचकौ) ॥ १४२ ॥

जन्म और मरण के बीच में टिकनेहारा प्राणी, घोड़ा और देवगायक यानी विश्वावसु—तुम्बुरु—और चित्ररथ आदि देवताओं के गानेवाले और गायकमात्र को भी ' गन्धर्व ' कहते हैं एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि मृगभेद, पुरुरूप कोकिला, घोड़ा, अन्तराभव देहवाला प्राणी और गानेवाला ये ' गन्धर्व ' कहलाते हैं यह १ जन्म मरण मध्यस्थ प्राणी आदि का नाम है । कङ्कण और शङ्ख को ' कम्बु ' कहते हैं यह पुलिङ्ग है एवं हेमकोष में भी कहा है कि हाथ पांव के कड़े, समुद्र से उपजा शंख या निधिभेद, हाथीदांतका मध्यभाग, घोंघा, सियार या सीपी, कचूर, गला, ललाट की हड्डी, और नखनामक गन्धद्रव्यको भी ' कम्बु ' कहते हैं और मेदिनीकोष के प्रमाण से भी यह शंख में पुन्नपुंसक और अन्य अर्थों में पुलिङ्ग है यह १ कङ्कण आदि का नाम है और सांप व निन्दक या चुगलखोर को भी ' द्विजिह्व ' कहते हैं यह १ सर्प आदि का नाम है ॥ १४२ ॥

पु.स.न.

पूर्व या पूर्वज पूर्वो (अन्यलिङ्गः प्रागाह) (पुम्बहुत्वेपि पूर्वजान्) ।

लोग.

इति बान्ताः ॥

पूर्वदिशा का वाची जो पूर्वशब्द वह वाच्यलिङ्ग यानी त्रिलिङ्ग कहलाता है जैसे कि, ' पूर्वो ग्रामः ' पूर्वा काशी, पूर्व वनम्, आदि होते हैं और जो पूर्वजों का वाची पूर्व है वह पुलिङ्ग होकर बहुवचनान्त है जैसे कि पूर्वं स्युः पूर्वजाः, ' पूर्वं ज्ञातयः ' आदि कहलाते हैं यह " पूर्वशब्द " विश्वकोष व मेदिनीकोष में बान्त पायाजाता है और हेमकोष में बान्त भी है यह १ पूर्वआदिका नाम है ॥

इति बान्ताः ॥

अथ भान्ता व्याख्यायन्ते ।

पु.

घड़ा, हाथी का

शिरोभाग,

बालक, मूर्ख.

पु.

कुम्भौ (घटेभमूर्धाशौ) डिम्भौ (तु शिशुवालिशौ) १४३ ॥

कलश या घड़ा और हाथी का शिरोभाग ये दोनों ' कुम्भ ' कहलाते हैं एवं विश्वकोष में भी कहा है कि, रावण के भाई कुम्भकर्ण का बेटा, वेश्यापति, कलश, ज्योतिष में मेषादि से ग्यारहवीं राशि, हाथी के शीश का मांसपिण्ड, निशोथ और

‡ " कम्बुः शंखेऽस्त्रियां पुंसि शम्बूके वलये गजे " (इति मेदिनी) ॥

गूगल को 'कुम्भ' कहते हैं यह निशोथ और गूगल में नपुंसक है और पूर्वोक्त अर्थों में पुंलिङ्ग है यह १ घड़ा आदिका नाम है और बालक व मूर्ख या अज्ञानी को 'डिम्भ' कहते हैं एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, बालक और बालिश यानी मूढ़ ये दोनों 'डिम्भ' कहलाते हैं इन पूर्वोक्त अर्थों में यह पुंलिङ्ग है यह १ बच्चा आदि का नाम है ॥ १४३ ॥

सूर्मा, थूनी या ^{पु.} स्तम्भौ (स्थूणाजडीभावौ) शम्भू (ब्रह्मत्रिलोचनौ) ।
 खंभा, जड़ता, ^{पु.} ^{पु.} (कुक्षिभ्रूणार्भका) गर्भा विस्त्रम्भः (प्रणयेऽपि च) १४४ ॥
 ब्रह्मा, शिव, उदर, स्त्रीका गर्भ, बालक, प्रणय आदि.

लोहप्रतिमा, थूनी या घरका खंभा और जड़ता को 'स्तम्भ' कहते हैं यह पुंलिङ्ग होकर द्वित्व की विवक्षा में द्विवचनान्त है यह १ स्थूणा आदिका नाम है । ब्रह्मा और महादेव को 'शम्भू' कहते हैं यह शिव, ब्रह्मा, विष्णु और नास्तिकों का देवता इनमें पुंलिङ्ग है यह १ ब्रह्मा आदिका नाम है । उदर या पेट, स्त्रीका गर्भ या गर्भस्थप्राणी और बालक ये 'गर्भ' कहलाते हैं यह गर्भ, बालक, कोख, सन्धि और कटहल का कांटा इनमें पुंलिङ्ग है यह १ उदर आदिका नाम है और पहिंचान या शृङ्गार रसकी प्रार्थना अपिशब्दसे केलि कलह, विश्वास और वध को 'विस्त्रम्भ' कहते हैं एवं विश्व-कोष में भी कहा है कि, खेलने में लड़ाई करना, विश्वास, प्रणय और वध ये 'विस्त्रम्भ' कहलाते हैं यह १ प्रणय आदिका नाम है ॥ १४४ ॥

भेरी, पाशा, ^{पु.} (स्यान्नेय्या) दुन्दुभिः (पुंसि स्यादक्षे) दुन्दुभिः (स्त्रियाम्) ।
 कुसुम का फूल, ^{स.} ^{न.} (स्यान्महारजनेक्लीवं) कुसुम्भं (करके पुमान्) ॥ १४५ ॥
 कमण्डलु या करवा आदि.

नगाड़ा, तुरही, नफीरी, सहनाई, कण्डाल या बड़ा ढोल ये 'दुन्दुभि' कहलाते हैं यह पूर्वोक्त अर्थों में पुंलिङ्ग है और पाशा जूआ या बालकों के खेल के पदार्थ का वाचक जो 'दुन्दुभि' है वह स्त्रीलिङ्ग है एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, वरुणादित्य-विशेष कि जिसको बालिने मारा है और तुरही इनका वाचक 'दुन्दुभि' पुंलिङ्ग है और पाशों का वाचक स्त्रीलिङ्ग है यह १ धौंसा, नगाड़ा, डंका या नफीरी आदिका नाम है और महारजन=फूल का भेद यानी कुसुम का फूल और सोना ये दोनों 'कुसुम्भ' कहलाते हैं यह नपुंसक है और जो कमण्डलु या करवा का वाचक है वह पुंलिङ्ग है ऐसेही मेदिनीकोष में भी कहा है कि "कुसुम्भं हेमनि महारजने ना कमण्डलौ" सोना और कुसुम के फूल में 'कुसुम्भ' नपुंसक है और कमण्डलु में पुंलिङ्ग है यह १ कुसुम के फूल आदिका नाम है ॥ १४५ ॥

क्षत्रिय, गौ,
गोष्ठी, सामा-
जिकयासज्जन,
अध्यक्ष.

(क्षत्रियेऽपि च) नाभि (र्ना) सुरभि (र्गवि च स्त्रियाम्) ।

सभा (संसदिसभ्ये च) (त्रिष्वध्यक्षेऽपि) वल्लभः १४६॥

इति भान्ताः ॥

क्षत्रिय जाति, अपिशब्द से प्रधान राजा और पहिया की नाह ये 'नाभि' कहलाते हैं यह पुंलिङ्ग है और चशब्द से तोंदी या तुण्डी में पुंस्त्रीलिङ्ग और कस्तूरी में स्त्रीलिङ्ग है यह १ क्षत्रिय जाति आदिका नाम है । कामधेनु, चशब्द से शालवृक्ष और धरती को 'सुरभि' कहते हैं यह पूर्वोक्त अर्थों में स्त्रीलिङ्ग, चम्पक, वसन्तऋतु और जायफल में पुंलिङ्ग, सोना, गन्धक, कमल में नपुंसक, सुगन्धित व सुन्दर में त्रिलिङ्ग, विख्यात, मन्त्री, धीर और चैतमास में भी पुंलिङ्ग है यह १ कामधेनु आदिका नाम है । समाज, मण्डली या राजदरबार, सामाजिक या सज्जन, और चशब्द से जूआ खलने का घर और जिस मन्दिर में अभीष्ट सिद्धिके लिये सब लोग इकट्ठा होते हैं उसको भी 'सभा' कहते हैं यह गोष्ठी, सामाजिक, दूत और मन्दिर में स्त्रीलिङ्ग है यह १ समाज आदिका नाम है और मुख्य अधिकारी अपिशब्द से प्यारा और अच्छे लक्षणोंवाला घोड़ा ये 'वल्लभ' कहलाते हैं यह त्रिलिङ्ग है एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि दयित, अध्यक्ष और कुलीन घोड़े को वल्लभ कहते हैं यह १ अध्यक्ष आदिका नाम है ॥ १४६ ॥

इति भान्ताः ॥

अथ भान्ता व्याख्यायन्ते ।

किरण, पगहा,
वानर, मेंडक,
चाहना, काम-
देव, शूरता,
उद्योग.

(किरणप्रग्रहौ) रश्मी (कपिभेकौ) भ्रुवंगमौ ।

(इच्छामनोभवौ) कामौ (शौर्योद्योगौ) पराक्रमौ ॥ १४७॥

किरण और घोड़े आदिकों के बांधने की रस्सी (पगही या पगहा) इन दोनों को 'रश्मि' कहते हैं यह किरण, बरुनी व पगहा में पुंलिङ्ग है । यह १ प्रकाश आदिका नाम है । वानर, लालचन्दन, सूअर या कपिलवर्ण और मेह या मेंडक ये दोनों 'भ्रुवंगम' कहलाते हैं यह मेंडक व शाखामृग में पुंलिङ्ग है यह १ वानर आदि का नाम है । आकाङ्क्षा या चाहना और कामदेव को 'काम' कहते हैं यह मदन व वाञ्छा में पुंलिङ्ग और वीर्य, इष्ट व काम्य में नपुंसक है यह अभिलाषा आदिका नाम है और शूरता या सामर्थ्य या सांग व बख्ती और उपाय या रोजगार को 'पराक्रम' कहते हैं यह सामर्थ्य, विक्रम और उद्यम में पुंलिङ्ग है यह १ शौर्य आदिका नाम है ॥ १४७ ॥

पुण्य, संयम, पु.न.

न्याय, स्वभाव, धर्माः (पुण्ययमन्यायस्वभावाचारसोमपाः) ।

आचार, सोम-पायी, उपाय

पूर्वक आरम्भ, धूस या धर्मा-

दिकों से मन्त्रियों की परीक्षा.

(उपायपूर्व आरम्भ उपधा चाप्यु) पक्रमः ॥ १४८ ॥

पुण्य यानी सुकृत, संयम या यमराज, विचार या इन्साफ़, स्वभाव, आचरण या व्यवहार और यज्ञवल्ली ' लताविशेष ' का पीनेवाला याज्ञिक या यजमान ये ई ' धर्म ' कहलाते हैं एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, पुण्य, आचार (वैदिकमार्गसे चलना) स्वभाव, उपमा, यज्ञ, अहिंसा, उपनिषन् (वेदों का शिरोभाग) न्याय (यथोचित इन्साफ़ करना) इनमें ' धर्म ' पुत्रपुंसक है और धनुष्, यमराज या संयम और सोमपायी में पुलिङ्ग है यह १ सुकृत आदिका नाम है । उपायपूर्वक आरम्भ करना, घूस लेना या धर्मादिकों से राजमन्त्री आदिकों के शील की परीक्षा करना अपिशब्द से दवाई करना और पराक्रम को देखलाना या चढ़ाई करना इनको ' उपक्रम ' कहते हैं एवं विश्वकोष में भी कहा है कि, उपधा, चिकित्सा, आरम्भ और विक्रम ये ' उपक्रम ' कहलाते हैं यह १ आरम्भ आदिका नाम है ॥ १४८ ॥

वाणिज्य, नगर, वेद, नागर, वनियां, बल- पु. (वणिक्पथः पुर्न वेदो) निगमा (नागरो वणिक्) ।

देव, काला, सुन्दर, सफ़ेद. पु. नैगमौ (द्वौ) (बले) रामो (नीलचारुसिते त्रिषु) ॥ १४९ ॥

वाणिज्य, नगर और वेद ये तीनों ' निगम ' कहलाते हैं एवं विश्वकोष में भी कहा है कि, साहूकार, पुरी, चढ़ाई, वेद और वनियां का व्यापार इनको ' निगम ' कहने हैं यह बहुत्वकी विवक्षा में बहुवचनान्त होकर पुलिङ्ग है यह १ वाणिज्य आदिका नाम है । नगरका वासी, चतुर, प्रवीण या गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति और वनियां ये दोनों ' नैगम ' कहलाते हैं यह उपनिषद्, वनिया और नगरवासी में पुलिङ्ग है यह १ नागर आदि का नाम है । बलदाऊ में ' राम ' पुलिङ्ग है और काले, सुन्दर व सफ़ेद में त्रिलिङ्ग है ऐसेही विश्वकोष में भी कहा है कि, मृगविशेष, परशुराम, बलराम, और रामचन्द्र में ' राम पुलिङ्ग ' है और स्याह, सफ़ेद व सुन्दर में वाच्यलिङ्ग है यह १ बलदेव आदिका नाम है ॥ १४९ ॥

समूह, चढ़ाई, स्तोत्र, यज्ञ, समुदाय, टेढ़ा, पु. (शब्दादिपूर्वो वृन्देऽपि) ग्रामः (क्रान्तौ च) विक्रमः ।

आलसी. पु. स्तोमः (स्तोत्रेऽध्वरे वृन्दे) जिह्मस्तु(कुटिलेऽलसे) १५० ॥

शब्दादिपूर्वक 'ग्राम' शब्द समुदाय का वाचक है जैसे कि 'शब्दग्रामः' आदि होते हैं अपिशब्द से स्वर और वसति यानी बस्ती को भी कहते हैं यह स्वर, बस्ती और समूह में पुंलिङ्ग है यह १ समुदाय आदि का नाम है । क्रान्ति-मात्र यानी चढ़ाई करना अपिशब्द से पराक्रम को भी 'विक्रम' कहते हैं यह १ आक्रमण आदि का नाम है । स्तोत्र, यज्ञ और समूह ये 'स्तोम' कहलाते हैं यह स्तव, याग, समुदाय, मत्था और लोहदण्ड में पुंलिङ्ग है यह १ स्तोत्र आदि का नाम है और टेढ़ा, आलसी व अभागी को 'जिह्म' कहते हैं यह कुटिल व मन्द में पुंलिङ्ग और तगर के वृक्ष में नपुंसक है यह १ वक्र आदिका नाम है ॥ १५० ॥

ग्रीष्म, घाम पु. पु.
आदि, हाव, " (उष्णोऽपि) घर्म (श्चेष्टालंकारे भ्रान्तौ च) विभ्रमः । "
भ्रान्ति, सीहा, पु. स.
गुच्छा, फौज, पु. स.
बहिन, भौजाई, गुल्मा (रुक्स्तम्बसेनाश्च) जामिः (स्वसृकुलस्त्रियोः) ।
देवरानी, जेठानी, पु. न.
आदि, पृथ्वी, स. न.
सहनशीलता, (क्षितिक्षान्त्योः) क्षमा (युक्ते) क्षमं (शक्ते हिते त्रिषु) १५१
योग्य, समर्थ,
हितैषी.

ग्रीष्मऋतु, अपिशब्द से पसीना, घाम और गरम को भी 'घर्म' कहते हैं । यह घाम, ग्रीष्म, गरम और पसीना के जलमें पुंलिङ्ग है यह १ गरम आदि का नाम है । शरीर के व्यापार से अलंकार देखलाना यानी युवतीगणों का नखरा, चोंचला, रावचाव, हावभाव आदि, और भ्रान्ति को 'विभ्रम' कहते हैं यह शोभा, संशय और हाव में पुंलिङ्ग है यह १ तावभाव आदि का नाम है । उदररोग या पिलही, वृक्षों की पीड़ या कुशआदिकों का गुच्छा, फौज विशेष चशब्द से घटवारी और सैन्यरक्षण ये 'गुल्म' कहलाते हैं यह पीड़, पिलही, घाटकी उतराई, सेना और सैन्यरक्षण में पुंलिङ्ग है यह १ सीहा आदि का नाम है । बहिन और कुल की बहुओं को जामि या यामि कहते हैं जैसे मनुजीने कहा है कि " यामयो यत्र शोचन्ति त्रिनश्यत्याशु तत्कुलम् " जिस कुल में कुलाङ्गनायें शोच करती हैं वह कुल शीघ्रही नष्ट होजाता है यह १ भगिनी आदिका नाम है । पृथ्वी और सहनशीलता को 'क्षमा' कहते हैं, योग्य में 'क्षमम्' यह नपुंसक या अव्यय है और पराक्रम व हितैषी में 'क्षम' कहाजाता है यह त्रिलिङ्ग है परन्तु धरणीकोष में भी कुत्सेक भेद पायाजाता है जैसे कि तितिक्षा और पृथ्वी में क्षमा त्रिलिङ्ग और योग्य, समर्थ

॥ मदरागहर्षजनितो विपर्ययो विभ्रमः यथा अनिमित्तमासनादुत्थायान्यत्र गमनम्, त्रियारब्धकथामाक्षिप्य सस्यासहासापनम्, मुधैव वषितक्रोधौ, पुण्यादीनां यात्रा सहसैव तत्परित्यागः, वस्त्राभरणमाल्यानाम-कारणतः स्वरुचम्, ममनं केति । योषितां यौवनजोविकारो विभ्रम इत्येके ॥

तथा हित या हितैषी में 'क्षम' नपुंसक है यह १ पृथ्वी आदिका नाम है ॥ १५१ ॥

हरा, काला, पु.स.न. स.
श्यामलता, (त्रिषु)श्यामौ (हरितकृष्णौ)श्यामा (स्याच्छारिवा निशा)।
हल्दी या रात, पुं, भाल का न.
चित्र, घोड़े का ललामं (पुच्छपुराङ्गाश्वभूषाप्राधान्यकेतुषु) ॥ १५२ ॥
गहना, प्रधान और निशान.

हरारंग और कालारंग इन दोनोंको 'श्याम' कहते हैं यह प्रयागका वटवृक्ष, मेघ, वृद्धदारु, पपीहा, काला और हरा इनमें पुलिङ्ग तद्वान् में त्रिलिङ्ग और मिरच व सेंधानोन में नपुंसक है यह १ हरारंग आदि का नाम है । श्यामलता, हल्दी या रात्रि को 'श्यामा' कहते हैं यह कालीसर या गौरीसर, सोलह वर्ष की स्त्री, काकुनि, यमुना, रात्रि, कालानिशोथ और नीलिका में स्त्रीलिङ्ग है यह १ शारिवा आदि का नाम है और पूंछ, घोड़े आदिकों के भाल का चित्र, घोड़े का गहना प्रधान और पताका इनको 'ललाम' कहते हैं यह नान्त भी है जैसे रुद्र-कोष में कहा है कि, प्रधान, ध्वजा, सींग, घोड़े के माथेका चित्र, पूंछ, निशान, गहना और प्रधान घोड़ा ये 'ललाम' या 'ललामन्' कहलाते हैं इसीसे "कन्या-ललामकमनीयमजस्य लिप्सोः" यह रघुवंश काव्य का वचन भी संगत होता है यह १ पूंछ आदि का नाम है ॥ १५२ ॥

न.

लिङ्गशरीर, सूक्ष्म(मध्यात्मम)(प्यादौ प्रधाने)प्रथम(त्रिषु)।

आदि, प्रधान, पु.स.न.

पु.स.न.

सुन्दर, प्रतिकूल, न्यून, निन्दित. वामौ (वल्गुप्रतीपौ द्वा) वधमौ (न्यूनकुत्सितौ) ॥ १५३ ॥

अध्यात्म यानी लिङ्गशरीर अपिशब्द से कपट आदि को 'सूक्ष्म' कहते हैं एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, छल व अध्यात्म में 'सूक्ष्म' नपुंसक, अग्नि में पुलिङ्ग और अल्प में त्रिलिङ्ग है यह १ अध्यात्म आदि का नाम है । आद्य और प्रधान को 'प्रथम' कहते हैं यह त्रिलिङ्ग है ऐसेही मेदिनीकोष में भी कहा है कि आदि और मुख्य में 'प्रथम' वाच्यलिङ्ग है यह १ आदि व प्रधान का नाम है इसक बाद वगसमाप्तिपश्चान्त "त्रिषु" इसका अधिकार किया जाता है । मनोरम और प्रतिकूल ये दोनों 'वाम' † कहलाते हैं ऐसेही विश्वकोष में भी कहा है कि बायां अङ्ग, प्रतीप, धन, बड़ासुन्दर, स्तन, शिव और कामदेव में 'वाम' नपुंसक और कामिनी में 'वामा' स्त्रीलिङ्ग है तथा सियारिन, घोड़ी, गद्दी व हथिनी में 'वामी' होता है यह १ मनोहर आदि का नाम है और न्यून व निन्दित ये दोनों 'अधम' कहलाते हैं यह १ उन आदि का नाम है ॥ १५३ ॥

† "वामः कामे सन्धे पयोधरे । उमानाये प्रतीकूले वारौ वामा तु योषिति" (इति हैमः) ॥

पु.स.न.

जीर्ण, खाकर (जीर्णं च परिभुक्तं च) यातयाम (मिदं द्वयम्) ।
त्याग किया.

इति मान्ताः ॥

पुराना या परिणाम को प्राप्त और खाकर त्याग कियाहुआ ये दोनों ' यात-याम ' कहलाते हैं यह त्रिलिङ्ग है ऐसेही भेदिनीकोष में कहा है कि जो पचगयाहो और जो भोजन करके छोड़ा गयाहो इन दोनों में ' यातयाम ' वाच्यलिङ्ग है यह १ जीर्ण आदि का नाम है ॥

इति मान्ताः ॥

अथ यान्ता व्याख्यायन्ते ।

पोद्दा, गरुड, पु. पु.
 घर, कमतीहोना (तुरंगगरुडौ) ताक्षर्यौ (निलयापचयौ) क्षर्यौ ॥ १५४ ॥
 या अपहार.

घोड़ा और गरुड़ ये दोनों ' ताक्ष्य ' कहलाते हैं एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, घोड़ा, सांप, सूर्यका सारथी, और गरुड़ में ' ताक्ष्य ' पुंलिङ्ग और रसौत में नपुंसक है यह १ घोड़े आदि का नाम है और घर व अपहार (कमतीहोना) को ' क्षय ' कहते हैं यह क्षयरोग, घर, कल्पान्त और अपचय में पुंलिङ्ग है यह १ घर आदि का नाम है ॥ १५४ ॥

देवर, साला, पु. पु.
 भतीजा, बैरा, श्वशुर्यौ (देवरश्यालौ) भ्रातृव्यौ (भ्रातृजद्विषौ) ।
 गर्जताहुआमेव, पु. पु.
 इन्द्र, प्रसु, पर्जन्यौ (रसदब्देन्द्रौ) स्यादर्यः (स्वामिवैश्ययोः) ॥१५५॥

पतिका छोटाभाई, (देवर) और पत्नीका भाई (साला) ये दोनों ' श्वशुर्य ' कहलाते हैं यह १ देवर आदि का नाम है । भाई का बेटा (भतीजा) और वैरी इनको ' भ्रातृव्य ' कहते हैं । यह १ भतीजा आदि का नाम है । गर्जता हुआ मेघ या मेघोंकी गर्जना और इन्द्र को ' पर्जन्य ' कहते हैं यह १ गर्जते हुए मेघ आदि का नाम है । स्वामी (मालिक) और बनियां ये दोनों ' अर्थ ' कहलाते हैं यह १ स्वामी आदि का नाम है ॥ १५५ ॥

पुण्यनक्षत्र, क- पु.
लियुग, अवसर, तिथ्यः (पुष्ये कलियुगे) पर्यायो (ऽवसरे क्रमे) ।
क्रम, आर्षानि,

सौगन्द, ज्ञान, पु.
विश्वास, हेतु, प्रत्ययो (ऽधीनशपथज्ञानविश्वासहेतुषु ॥ १५६ ॥
छेद, शब्द, बहुत काल की
शत्रुता, पीछे से पु.
पक्षिताना, रन्ध्रे शब्दे) ऽधानुशयो (दीर्घद्वेषानुतापयोः) ।

५.

पुष्यनक्षत्र और कलियुग को ' तिष्य ' कहते हैं यह कलियुग व पुष्यनामक नक्षत्र में पुंलिङ्ग और धात्री में स्त्रीलिङ्ग है यह १ पुष्य आदि का नाम है । अवसर या अवकाश और क्रम यानी कल्पविधान या पद्धति, ये दोनों ' पर्याय ' कहलाते हैं यह प्रकार, निर्माण, अवसर, और क्रम यानी रीति, परिपाटी या सिल-सिला और नामान्तर (उर्फ) इनमें पुंलिङ्ग है यह १ अवसर आदि का नाम है । अधीन, सौगन्द ज्ञान, विश्वास, कारण, छेद और शब्द इनको ' प्रत्यय ' कहते हैं अधीन में जैसे कि " राजप्रत्ययाः प्रजाः " राजा के अधीन प्रजा हैं । विश्वास में जैसे कि, " न शत्रोः प्रत्ययं गच्छेत् " वैरी का विश्वास न करे । हेतु में जैसे कि " गार्हस्थ्यं भार्याप्रत्ययम् " भार्या के लिये गार्हस्थ्य है और शब्द में जैसे कि " चिकीर्षति " यहां ' सन् ' प्रत्यय होता है एवं विश्वकोष में भी कहा है कि सौगन्द, छेद, विश्वास, आचार, हेतु, प्रसिद्धता, सन्-यङ्-णिच् आदि और अधीन व ज्ञान ये ' प्रत्यय ' कहलाते हैं यह १ अधीन आदि का नाम है और महाद्वेष या बहुत कालकी शत्रुता व पश्चात्ताप को ' अनुशय ' कहते हैं यह द्वेष, पीछे से पछिताना और अनुबन्ध यानी मेल, मिलाप, धातुका गणसूचक पूर्व पर नश्वर अक्षर इनमें पुंलिङ्ग है यह १ दीर्घद्वेष आदि का नाम है ॥ १५६ ॥

असंपूर्णता, पु.
हाथियों की म-
ध्यमगति, सां-
गन्द, आचार, पु.
काल, सिद्धान्त, पु.
संभाषा, व्यसन,
अशुभ, दैव,
विपत्ति.
स्थूलोच्चय (स्त्वसाकल्ये गजानां मध्यमे गते) ॥ १५७ ॥
समयाः (शपथाचारकालसिद्धान्तसंविदः) ।
व्यसनान्यशुभं दैवं विपदि) त्यनया (स्त्रयः) ॥ १५८ ॥

असंपूर्णता और हाथियों की मध्यमचाल यानी " जो न शीघ्रहो न मन्दहो " इनको ' स्थूलोच्चय ' कहते हैं यह असाकल्य, गाल, हाथी का गाल, पत्थर, पिटारा, पिटारी और डब्बा में भी पुंलिङ्ग है यह १ असमग्र आदि का नाम है । सौगन्द, धर्मशास्त्रोक्त व्यवहार, यमराज, काल, सिद्धान्त और संभाषा यानी अच्छी रीति से बातचीत करना ये ' समय ' कहलाते हैं यह सौगन्द, आचार, सिद्धान्त, बुद्धि, काम करनेवाला, निर्देश (आज्ञा या हुक्म) संकेत, काल और भाषा में पुंलिङ्ग है यह १ शपथ आदि का नाम है । वेश्या आदिकों में रमण करना, जूआ खेलना, मद्य पीना, दिनको बहुत सोना, झूठ बोलना आदि व्यसन हैं, अशुभ † दैव और विपदा ये तीनों ' अनय ' कहलाते हैं यह १ व्यसन आदिका नाम है ॥ १५७ । १५८ ॥

उल्लंघन, कष्ट, पु.

दोष, दण्डदेना, अत्यय। (अतिक्रमः कृच्छ्रे दोषे दण्डेऽप्यथापदि) ।

आपदा, लड़ाई,

आनेवालाकाल,

श्वशुर आदि.

पु.

पु.

(अजायत्याः) संपरायः पूज्य (स्तु श्वशुरेऽपि च) ॥ १५६ ॥

उल्लङ्घन या वीरकारणमें जाना, कष्ट, या आचारविशेष, अवगुण, अपराध या वातपित्तकफात्मक दोष, दण्ड देना या लाठी अपिशब्द से महोत्पात और नाश या विध्वंस इनको ' अत्यय ' कहते हैं यह अतिक्रम, कष्ट, अत्युत्पात, विनाश और दण्ड में पुंलिङ्ग है यह १ अतिक्रम आदि का नाम है । आपदा, युद्ध और उत्तर काल (आनेवाला काल) ये ' संपराय ' कहलाते हैं यह लड़ाई, विपत्ति और आगामी काल में पुंलिङ्ग है यह १ आपदा आदि का नाम है और श्वशुर यानी पतिका पिता व पत्नी का पिता अपिशब्द से पूजायोग्य इनको ' पूज्य ' कहते हैं यह १ पूजनीय आदि का नाम है ॥ १५६ ॥

सेना पृष्ठभागस्थ (पश्चादवस्थायिबलं समवायश्च) संनयौ ।

सेना, समूह,

समुदाय, अच्छा

वासस्थान, वि-

श्वास, मांगना,

प्रेम, बैर, उंचाई,

जिसका जो जा-

नागया, शब्द,

स्पर्श आदि.

पु.

पु.

(संघाते सन्निवेशे च) संस्त्यायः प्रणया (स्त्वमी) ॥ १६० ॥

पु.

(विस्त्रम्भयाच्चाप्रेमाणो) (विरोधेऽपि) समुच्छ्रयः ।

पु.

विषयो (यस्य यो ज्ञातस्तत्र शब्दादिकेष्वपि) ॥ १६१ ॥

सेना के पीछे रहनेवाली सेना और समूह को ' सन्नय ' कहते हैं यह १ सेना पृष्ठवर्तिनी सेना आदि का नाम है । समुदाय, नरकभेद, या अच्छी रीति से मारना, और पुरआदि के बाहर का देश या अच्छा वासस्थान चशब्द से विस्तार या बढ़ाई ये ' संस्त्याय ' कहलाते हैं यह संनिवेश, संघात और विस्तार में पुंलिङ्ग है यह १ समुदाय आदि का नाम है । विश्वास, प्रत्यय या केलि कलह, मांगना, प्रेम, प्रीति या स्नेह ये तीनों ' प्रणय ' कहलाते हैं यह पसार, प्रेम, याचना, विश्वास और निर्वाण में पुंलिङ्ग है यह १ विस्त्रम्भ आदि का नाम है । बैर और अपिशब्द से उंचाई को भी ' समुच्छ्रय ' कहते हैं यह १ विरोध आदि का नाम है और प्रबन्ध से जिस प्राणी का जो पदार्थ जानागया हो या नित्य सेवित हुआ हो एवं शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध तथा अपिशब्द से देश, ग्राम, लोक, जाति, क्रौम और जन-स्थान ये ' विषय ' कहलाते हैं यानी " जिसका मन जिसमें लगगया हो, चीज़, वस्तु, पदार्थ जो चीज़ इन्द्रियों से जानीजावे (जैसे कि रङ्ग, रूप, रस, सुगन्ध, शब्द, स्पर्श) काम, बात, भोगविलास, वावत, वास्ते और लिये आदि ये सबही

‘ विषय ’ कहलाते हैं ” एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, गोचर, देश, जनपद, प्रबन्ध से जिसका जो पदार्थ जानागया हो वहां और रूपआदिकों में भी पुंलिङ्ग है यह १ गोचर आदि का नाम है ॥ १६० । १६१ ॥

कपैला, कादा^{पु.} (निर्यासेऽपि) कषायो^{पु.} (ऽस्त्री) (सभायां च) प्रतिश्रयः ।

या गौंद, समाज, बाहुल्य, अन्त-^{पु.} गति, दीनता, प्रायो^{पु.} (भूमन्यन्तगमने) मन्यु (देन्ये क्रतौ क्रुधि) १६२ ॥
यज्ञ, कोप.

कादा या गौंद और अपिशब्द से कपैलारस, अङ्गराग, विलेपन, सुगन्ध और स्नालवर्ण ये ‘ कषाय ’ कहलाते हैं एवं विश्वकोष में भी कहा है कि रसभेद, अङ्गराग, विलेपन और गौंदमें ‘ कषाय ’ पुंलिङ्ग है और सुरभि व लोहित में वाच्य-लिङ्ग है यह १ गौंद आदि का नाम है । समाज, चशब्द से अङ्गीकार और ‘ आश्रय ’ इनको ‘ प्रतिश्रय ’ कहते हैं । यह सभा, आश्रय और स्वीकार में पुंलिङ्ग है यह १ समाज आदि का नाम है । बाहुलता, अन्तगति (मौत) अनशन (विना भोजन रहना) और समानता ये ‘ प्राय ’ कहलाते हैं यह अनशन, मृत्यु, बाहुल्य और तुल्य में पुंलिङ्ग है यह १ बहुतायत आदि का नाम है और दीनता, यज्ञ, कोप और शोक को ‘ मन्यु ’ कहते हैं यह क्रोध, दीनता, शोक और याग में पुंलिङ्ग है यह १ देन्य आदि का नाम है ॥ १६२ ॥

गोप्य, लिङ्ग, न. न.
भग, सौगन्द, (रहस्योपस्थयो) गुह्यं सत्यं (शपथतत्थयोः) ।
सही या ठीक, न.
बल, प्रभाव, न.
शुभ, पृथ्वी^{न.} वीर्य (बले प्रभावे च) द्रव्यं (भव्ये गुणाश्रये) ॥ १६३ ॥
आदि.

गोपनीय या एकान्त की सलाह, भग और लिङ्ग को ‘ गुह्य ’ कहते हैं यह रहस्य व उपस्थ में नपुंसक और कलुआ व कपट में पुंलिङ्ग है यह १ गोप्य आदि का नाम है । सौगन्द, सही—सचाई, ठीक, यथार्थ, निश्चय और पहले युगको भी ‘ सत्य ’ कहते हैं यह पहला युग, सौगन्द सत्यलोक और सचाई में नपुंसक होकर सत्यवान् में त्रिलिङ्ग है यह १ शपथ आदि का नाम है । शूरता या सामर्थ्य और प्रताप या तजोविशेष चशब्द से शुक्र (बीज) को भी ‘ वीर्य ’ कहते हैं यह प्रभाव, शुक्र, तेज और सामर्थ्य में भी नपुंसक है यह १ बल आदि का नाम है और शुभ, सत्य या जीव और पृथिवी आदि तथा धनको भी ‘ द्रव्य ’ कहते हैं यह धन, सत्य, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, काल, दिशा, आत्मा, मन, पीतल, औषध, विलेप, स्नाख और द्रुमविशेष (कमरख) में नपुंसक है यह १ अव्य आदि का नाम है ॥ १६३ ॥

१ बाहुल्ये यथा “ प्रायेण ब्राह्मणा भोज्याः ” अन्तगती यथा “ प्रायोपवेशः कृतः ” (इत्यभिवेशः) ॥

ठिकाना, घर, न.

न.

नक्षत्र, आगी, धिष्ययं(स्थाने गृहे भेङ्गनौ) भाग्यं(कर्म शुभाशुभम्) ।

शुभाशुभ कर्म,

कशेरु वा सोना,

न.

स.

वज्रदन्ती या(कशेरुहेम्नो)गङ्गेयं विशल्या (दन्तिकाऽपि च) ॥१६४॥

दन्तीवृक्ष आदि.

ठांव-ठौर-ठिकाना या ठिकाश्रय, घर, नक्षत्र और आगी को ' धिष्यय ' कहते हैं—यह स्थान, आगी, घर, शक्ति और नक्षत्र में नपुंसक है यह १ स्थान आदि का नाम है । पूर्वजन्मका कियाहुआ शुभाशुभ कर्म और ऐश्वर्य को भी ' भाग्य ' कहते हैं यह भलेदैव और शुभाशुभ कर्म में नपुंसक है यह १ भले बुरे कर्म आदि का नाम है । ' कशेरु ' अपने नाम से विख्यात तृणकन्दविशेष और सोना ये दोनों ' गङ्गेय ' कहलाते हैं यह भीष्मपितामह में पुंलिङ्ग और सोना तथा कशेरुवा में नपुंसक है यह १ कशेरु आदि का नाम है और दन्तीवृक्ष अपिशब्द से अग्निशिखा " कलिहारी या चौराई का शाक " चशब्द से गिलोय और त्रिपुटा यानी बेलाका पेड़, छोटी इलायची, निसोथ, कनफोड़ा बेज, बड़ी इलायची और लाल निसोथ को ' विशल्या ' कहते हैं एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, अग्निशिखा, दन्तिकावृक्ष, गुडूची और त्रिपुटा ये ' विशल्या ' कहलाते हैं यह १ दन्तियावृक्ष आदि का नाम है ॥ १६४ ॥

स.

स.

लक्ष्मी, पार्वती, वृषाकपायी(श्रीगौर्यौ) रभिल्या (नामशोभयोः) ।

नाम, शोभा,

आरम्भ आदि.(आरम्भोनिष्कृतिः शिक्षा पूजनं संप्रधारणम् ॥१६५॥

उपायः कर्म चेष्टा च चिकित्सा ‡ च नव) क्रियाः ।

लक्ष्मी और पार्वती को ' वृषाकपायी ' कहते हैं । यह रमा, उमा, शतावरी, बांदा या गिलोय में खीलिङ्ग है यह १ लक्ष्मी आदि का नाम है । नाम और शोभा को ' रभिल्या ' कहते हैं यह अभिधान, शोभा और कीर्ति में भी खीलिङ्ग है यह १ अभिधान आदि का नाम है और प्रारम्भ, प्रायश्चित्त, अभ्यास या वराहचरणकी विधि, पूजन, विचार, सामआदि उपाय, काम=धन्वा, धर्मसम्बन्धी काम, पहले जन्म में कियाहुआ या कर्मकारक, उद्यम, उद्योग या शरीरका व्यापार और औषध करना या इलाज से रोगों को दूरकर चंगा करदेना ये ६ क्रियापद-वाच्य कहलाते हैं । आरम्भ में जैसे कि " राजा जोगों की सारी क्रियायें ' मन्त्र-मूल ' होती हैं " प्रायश्चित्त में जैसे कि, " महापापी पुरुषों की क्रिया ' प्राणा-

‡ " या क्रिया व्याधिहरणी सा चिकित्सा निगद्यते । दोषधातुमलानां या साम्यकृत्सैव रोगहृत् ॥" (इति भावप्रकाशः) ॥

निका ' कहलाती है शिक्षा में जैसे कि, " सत्पात्र में रक्खीहुई क्रिया फलतीही है" पूजा में जैसे कि, यह तपस्वी देव क्रिया में परायण रहता है " विचार में जैसे कि, " विना क्रियाके कृत्य को कौन जानसक्ता है " उपाय में जैसे कि, " साम आदि सात क्रियायें हैं " कर्म में जैसे कि " विना क्रिया के सुख कहां है " चेष्टा में जैसे कि, " विना कामका था इसलिये मरगया " चिकित्सा (मालजा) में जैसे कि " पहले ज्वरके उत्पन्न होनेपर ज्वरके अनुकूल ही क्रिया करनी चाहिये " यह कर्म, चेष्टा, करण, विचार, आरम्भ, उपाय, शिक्षा, चिकित्सा और प्रायश्चित्त में भी खीलिङ्ग है" यह १ आरम्भ आदि का नाम है ॥ १६५ ॥

सूर्यपत्नी, शोभा, स.

प्रतिबिम्ब, धाम **छाया(सूर्यप्रिया कान्तिः प्रतिबिम्बमनातपः) ॥ १६६ ॥**

का अभाव,

धनियों के व स.

राजाओं के म- **कक्ष्या(प्रकोष्ठे हर्म्यादेः ऋज्यां मध्येभवन्धने) ।**

न्दिरोंकीड्योदी,

करधनी, हाथी स-

का कमरबन्ध,

क्रिया, तामसी

देवता आदि.

कृत्या(क्रियादेवतयोस्त्रिषु भेद्येधनादिभिः) ॥ १६७ ॥

सूर्यपत्नी, शोभा, प्रतिबिम्ब और प्रकाश या धामका अभाव ये चारो छाया पदवाच्य कहलाते हैं सूर्यपत्नी में जैसे कि " छायापुत्रः शनैश्चरः " शनैश्चर छाया का पुत्र है । कान्ति में जैसे " विच्छायः " प्रतिबिम्ब में जैसे " संछायः आदर्शः " शीशा संछायावाला है यानी जिसमें प्राणियों का अपना रूपान्तर भासता है अनातप में जैसे " नष्टच्छायो मध्याह्नः " नष्ट छायावाली दुपहर है एवं मेदिनीकोष में कहा है कि धामका अभाव, प्रतिच्छाय और सूर्य की पत्नी में छाया खीलिङ्ग है यह १ सूर्यप्रिया आदि का नाम है । धनी लोगों के घर या राजमन्दिर के प्रकोष्ठ (ड्योदी) स्त्रियों की करधनी और हाथी के कमर का बन्धन इनको ' कक्ष्या ' कहते हैं यह कांछा, करधनी, करिकटबन्धन और हर्म्यादिकों के प्रकोष्ठ में खीलिङ्ग है यह १ हर्म्यादिकों के प्रकोष्ठ आदि का नाम है । कर्म और देवताविशेष को ' कृत्या ' कहते हैं जैसे कि भागवत में कहा है कि, " तथा स निर्ममे तस्मै कृत्यां कालानलोपमाम् " और क्रिया में जैसे " कां कां कृत्यामकार्षीः " तुमने किस २ क्रिया को किया । धन, स्त्री, भूमि आदिकों से जो भेदन करने योग्य हैं या पराये राज्य में पुरुष आदि भेदन किये जाते हैं वहां ' कृत्या ' खिलिङ्ग है यानी वाच्यलिङ्ग कहाजाता है एवं रभसकोष में भी कहा है कि विद्वेषी व कार्य में कृत्या पुलिङ्ग है और क्रिया व तामसी देवता आदिकों में खीलिङ्ग है यह १ क्रिया आदि का नाम है ॥ १६६ । १६७ ॥

पु.स.न. पु.स.न.
 भगवा, युद्धादि, जन्यः (स्याज्जनवादेऽपि) जघन्यो (ऽन्तेऽधमेऽपि च) ।
 चरम, अधम, पु.स.न. पु.स.न.
 निन्दित, अधीन, (गर्ह्याधीनौ च) वक्तव्यौ कल्यौ (सज्जनिरामयौ) ॥ १६८ ॥
 संनद्ध, नीरोग.

जनोका वाद या निन्दितवाद और अपिशब्द से युद्ध आदिको 'जन्य' कहते हैं यह माताकी सखी, बहूवरकी प्यारी (सहबाली आदि) व मातामें स्त्रीलिङ्ग, पिता में पुंलिङ्ग निर्वाद व युद्ध में नपुंसक है एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, "जन्यं हृष्टे परीवादे संग्रामे च नपुंसकम्" हटिया, हाट या बाज़ार, परीवाद और लड़ाईमें नपुंसक है यह १ जनवाद आदि का नाम है । अन्त (चरम) या अन्त्य (चाण्डाल) और अधम अपिशब्दसे शूद्र, पुरुषका लिङ्ग व गर्वित को भी जघन्य कहते हैं यह चरम व लिङ्ग में नपुंसक व निन्दित में वाच्यलिङ्ग है यह १ अन्त आदि का नाम है । अधम या पामर और अधीन चशब्द से वचनके योग्य को भी 'वक्तव्य' कहते हैं यह निन्दित व हीन में नपुंसक और वचनार्ह में वाच्यलिङ्ग है यह १ निन्द्य आदि का नाम है । बहुर आदि को बांधे हुए और नीरोगी ये दोनों 'कल्य' कहलाते हैं यह प्रभातकाल में नपुंसक, गूंगा, बहिरा, सन्नद्ध, नीरोग, दक्ष, कल्याणवचन व उपाय वचन में त्रिलिङ्ग और मद्य (शराव या वरांडी) में स्त्रीलिङ्ग है यह १ सज्ज आदि का नाम है ॥ १६८ ॥

पु.स.न. पु.स.न.
 ज्ञानी, धनी, (आत्मवाननपेतोऽर्थो) दर्थ्यो पुण्य (न्तु चार्वपि) ।
 सुन्दर, अच्छा पु.स.न. पु.स.न.
 रूप, प्रियवादी. रूप्यं (प्रशस्ते रूपेऽपि) वदान्यो (वल्गुवागपि) ॥ १६९ ॥

आत्मज्ञानी और धनी को 'अर्थ्य' कहते हैं यह विज्ञ, अर्थशाली, बुध और न्याय में वाच्यलिङ्ग तथा शिलाजीत में नपुंसक है यह १ धीमान् आदि का नाम है । सुन्दर अपिशब्द से सुकृत और धर्म ये 'पुण्य' कहलाते हैं यह मनोज्ञ में वाच्यलिङ्ग व सुकृत और धर्म में नपुंसक है यह १ मनोहर आदि का नाम है । अच्छारूप, अपिशब्द से गढ़ाहुआ सोना व चांदी और चांदीमात्र को भी 'रूप्य' कहते हैं यह सुन्दर में त्रिलिङ्ग और गढ़ेहुए सोने व चांदी में नपुंसक है यह १ भले रूप आदि का नाम है । मनोहरवादी या वाग्मी (उत्तम बोलनेवाला) और अपिशब्द से दाता ये दोनों 'वदान्य' कहलाते हैं यह पूर्वोक्त अर्थों में वाच्यलिङ्ग है यह १ वल्गुभाषी या प्रियवादी आदि का नाम है ॥ १६९ ॥

पु.स.न. पु.स.न.
 योग्य, सुन्दर, (अग्रज्यऽपि) मध्यं सौम्यं (तु सुन्दरे सोमदैवते) ।
 सोम, देवता
 वाला. इति यान्ताः ॥

उचित या युक्त अपिशब्द से अवलग्न, अन्तर और अधम ये 'मध्य' कहलाते हैं यह पूर्वोक्त अर्थों में वाच्यलिङ्ग है । ऐसेही रभसकोष में भी कहा है कि उचित व अवलग्न में नपुंसक, अन्तर और अधम में त्रिलिङ्ग है यह १ न्याय्य आदि का नाम है । सुन्दर मनोहर या प्रियदर्शन और जिसका चन्द्रमा देवता है उस हविष्य को भी 'सौम्य' कहते हैं यह बुध, मनोज्ञ, अनुगामी और चन्द्रदेवता में वाच्यलिङ्ग है यह १ सुन्दर आदि का नाम है ॥

इति यान्ताः ॥

अथ रान्ता व्याख्यायन्ते ।

समूह, प्रसंग, ^{पु.} (निवहावसरौ) बारौ ^{पु.} संस्तरौ (प्रस्तराध्वरौ) ॥ १७० ॥
पत्थर, यज्ञ, ^{पु.} बृहस्पति, पिता ^{पु.} आदि, युग, गुरु (गीष्पतिपित्राद्यौ) द्वापरौ (युगसंशयौ) ।
संशय, भेद, ^{पु.} सादृश्य, आ- ^{पु.} कार, चेष्टित. प्रकारौ (भेदसादृश्ये) आकारा (विङ्किताकृती) ॥ १७१ ॥

समुदाय और अवसर यानी प्रसंग ये दोनों 'वार' कहलाते हैं यह इतवार आदि दिवस, अवसर, समूह, पुष्पवृक्ष विशेष, और दरद्वार में पुंलिङ्ग होकर मदिरा के पात्र में नपुंसक है यह १ समूह आदि का नाम है । पत्थर या शय्या और याग को 'संस्तर' कहते हैं यह कुशशय्या, यज्ञ, सावधान और आठ वसुओं में से दूसरा वसु इनमें पुंलिङ्ग है यह १ प्रस्तर आदि का नाम है । बृहस्पति, बाप और आदि शब्द से मन्त्रोपदेशक, शिक्षक, अध्यापक, माननीय, पूज्य और बड़े बड़े लोग तथा दुर्जर व दीर्घ आदि को भी 'गुरु' कहते हैं यह महान्-दुर्जर और अलघु में त्रिलिङ्ग तथा निषेक (गर्भाधान) आदि के करनेवाले पिता आदि व देवाचार्य में पुंलिङ्ग है यह १ देवमन्त्री आदि का नाम है । युग और संशय को 'द्वापर' कहते हैं यह पूर्वोक्त अर्थों में पुंलिङ्ग है ऐसेही कोषान्तर में भी कहा है कि संदेह और युग में 'द्वापर' नपुंसक है यह १ युग आदि का नाम है । भेद और सादृश्य को 'प्रकार' कहते हैं जैसे कि प्याज का भेद गाजर है, सादृश्य में जैसे देवदत्त नामक पुरुष यज्ञदत्त के समान है यह तुल्य व भेद में पुंलिङ्ग है । इङ्कित (चेष्टित) संकेत, इशारा और आकृति को 'आकार' कहते हैं यह १ अभिप्राय के अनुरूप चेष्टित आदि का नाम है ॥ १७० । १७१ ॥

अनाज का अ- ^{पु.} किंशारू (धान्यशूकेषू) मरू ^{पु.} (धन्वधराधरौ) ।
अभाग, नाण, ^{पु.} धन्वा, पर्वत, ^{पु.} वृक्ष, शैल, सूर्य, ^{पु.} कुच, मेघ. अद्रयो (द्रुन्धिलार्द्राः) (वीर्यताब्दाः) पयोधरौ ॥ १७२ ॥

अनाज की दाढ़ी या यव आदि का तीखा अग्रभाग और बाण ये दोनों ' किशारु ' कहलाते हैं यह । धान्यशूक, बाण और कङ्कपत्री में पुंलिङ्ग है यह १ धान्यशूक आदि का नाम है । निर्जलदेश या धनुष और पर्वत को भी ' मरु ' कहते हैं यह पर्वत और धन्वा में पुंलिङ्ग है यह १ चाप आदि का नाम है । वृक्ष, पर्वत और सूर्य ये ' अद्रि ' कहलाते हैं यह पहाड़, सूर्य और रूखों में पुंलिङ्ग है यह १ वृक्ष आदि का नाम है । नारियों के स्तन (कुच—या दूध) और मेघ ये दोनों ' पयोधर ' कहलाते हैं यह ईश्वर, नारियल, स्तन, कतेरू और मेघमें पुंलिङ्ग है यह १ कुच आदि का नाम है ॥ १७२ ॥

अंधेरा, बैरी, पु. † पु.
दानव, भेट, (ध्वान्तरिदानवा) वृत्रा (बलिहस्तांशवः) कराः ।
हाथ, किरण,
पराजय या पु.

तरङ्ग, बाण, प्रदरा(भङ्गनारीरुग्बाणा) अस्त्राः (कचा अपि) ॥ १७३ ॥
वार, कोना
आदि.

अंधेरा, बैरी और दानव को ' वृत्र ' या ' वृत्र ' कहते हैं यह बैरी, मेघ, अंधेरा, पर्वतभेद, और दानव में पुंलिङ्ग है । एवं हैमकोष में भी कहा है कि, " वृत्रो मेघे रिपौ ध्वान्ते दानवे वासवे गिरौ " मेघ, बैरी, अंधेरा, दानव विशेष, देवराज और पर्वत में ' वृत्र ' पुंलिङ्ग है यह १ अन्धकार आदि का नाम है । राजाका कर या पूजा भेट, हाथ, हाथी की सूँड़ और किरण को ' कर ' कहते हैं यह ओला, किरण, हाथ, महसूल आदि की आमदनी और हाथी की सूँड़ में पुंलिङ्ग है यह १ बलि=नैवेद्य भोग, भेट या कुर्बानी आदि का नाम है । पराजय, या लहर, स्त्रियों का रोग और बाण को ' प्रदर ' कहते हैं यह रोगभेद, विदारण करना या गड़हा बनाना बाण और तरङ्ग या भङ्ग में पुंलिङ्ग है यह १ पराजय आदि का नाम है । बाल या वार और अपि शब्द से कोना ये दोनों ' अस्त्र ' कहलाते हैं यह कोनों व कर्चों में पुंलिङ्ग होकर आँसू व लोहू में नपुंसक है यह १ बाल आदि का नाम है ॥ १७३ ॥

विना सींग का (अजातशत्रु) गौः कालेऽप्यश्मश्रुर्ना च) तूवरौ । पु.

बैल, विनादाढ़ी पु. पु.
मूख का पुरुष, (स्वर्गेऽपि) राः परिकरः (पर्यङ्कपरिवारयोः) ॥ १७४ ॥
सोना, धन,
पलंग, परिवार.

यौवन समय के आजाने पर जिस बैलके सींग न जमेहों और जिस पुरुष के दाढ़ी मूख न आई हो यानी मकुना हो ये दोनों ' तूवर ' या ' तूपर ' कहलाते हैं

यह विना दाढ़ी मूँछका पुरुष, विना सींग का बैल, व्यञ्जन को छोड़ेंहुए पुरुष और कसैलारस इनमें पुंलिङ्ग है यह १ शृङ्गरहित बैल आदि का नाम है । सोना या काश्चन अपिशब्द से धनमात्र को भी 'राः' कहते हैं यह सुवर्ण और धनमें पुंलिङ्ग है यह १ स्वर्ण आदि का नाम है । पलंग और परिवार को 'परिकर' कहते हैं यह समूह, पलंग, परिवार, कमरवन्द, त्रिवेक=विचार, और आरम्भ में पुंलिङ्ग है यह १ शय्या आदि का नाम है ॥ १७४ ॥

शुद्धमोती, वायु, चितकवरा, प्रतिज्ञा, युद्ध, सुभाषा, आ-
 पु. पु. पु.
 (मुक्ताशुद्धौ च) तारः स्याच्छारो (वायौ सतु त्रिषु ।
 कर्बुरे) (ऽथ प्रतिज्ञाजिसंविदापत्सु) संगरः ॥ १७५ ॥
 पदा.

* मोती की संशुद्धता, चशब्द से नाविक, स्वच्छ मोती और चांदी आदि को 'तार' कहते हैं यह मोती आदि की संशुद्धि, नाविक और शुद्ध मोती में पुंलिङ्ग, चांदी में नपुंसक अति ऊंचे स्वर या ऊँकार ३ में वाच्यलिङ्ग, तारा, सितारा, आँखों की पुतली, सुग्रीव और बृहस्पति की भार्या तथा बुद्धदेवी में स्त्रीलिङ्ग है यह १ शुद्ध मोती आदि का नाम है । वायु और चित्रविचित्र वर्ण को 'शार' कहते हैं यह वायु में पुंलिङ्ग और चितकवरे में त्रिलिङ्ग है यह १ वायु आदि का नाम है । कर्तव्यका उपदेश—आज्ञा या अङ्गीकार, संग्राम, क्रियाकार या अच्छी रीति से कहना और आपदा ये 'संगर' कहलाते हैं यह लड़ाई, आपदा, क्रियाकार और विष में पुंलिङ्ग होकर छिड़ँकरा के फल में नपुंसक है यह १ प्रतिज्ञा आदि का नाम है ॥ १७५ ॥

मन्त्रभाग, गुप्त-
 पु. पु.
 (वेदभेदे गुह्यवादे) मन्त्रो मित्रो (रवावपि) ।
 वाद, सूर्य, यज्ञ, वाण, यज्ञस्तम्भ
 पु. पु.
 (मखेषु यूपखण्डेऽपि) स्वरु (गुह्ये) ऽप्यवस्करः ॥ १७६ ॥
 का टुकड़ा, गु-
 छेन्द्रिय, विद्यादि.

वेदों का भेद (संहिता) और गुप्तवाद या एकान्त में कर्तव्य का निश्चय करना (सलाह) इनको 'मन्त्र' कहते हैं यह वेदविशेष, देवआदिकों का साधन और गुह्यवाद में पुंलिङ्ग है यह १ वेदांश आदि का नाम है । सूर्य अपिशब्द से स्नेही को 'मित्र' कहते हैं यह सूर्य में पुंलिङ्ग और सुहृद् (दोस्त) में नपुंसक-लिङ्ग है यह १ सूर्य आदि का नाम है । यज्ञ, वाण और यूपके गढ़ने में पहले गिराहुआ यूपका खण्ड (टुकड़ा) अपिशब्द से वज्र ये 'स्वरु' कहलाते हैं यह

१ "ध्रुवस्तारस्त्रिषु ह्येता वेदादिस्तारकोऽव्ययः । प्रणवश्च त्रिमात्रोऽथ ऊँकारो ज्योतिरादिमः ॥ १॥"
 (इति मानृकानिषण्डः) तेन "ताराश्चक्रः सज्जनिरिति" श्रीधरप्रयोगोऽपि संगच्छते ॥

यूपखण्ड, वज्र, यज्ञ और बाण में पुंलिङ्ग है यह १ मख आदि का नाम है । उपस्थ (लिङ्ग-भग) अपिशब्द से विष्टा को भी ' अवस्कर ' कहते हैं यह १ गुह्येन्द्रिय आदि का नाम है ॥ १७६ ॥

गु.
मृदङ्गादिकों की ध्वनि, गजेन्द्रों की गर्जना, अ-
भियोग, चौर्य, अभिहारो (ऽभियोगे च चौर्ये संनहनेऽपि च) ॥१७७॥
कवचादिधारण.

मृदङ्ग-मुरचंग आदि बाजाओं का शब्द, मतवाले हाथियों की गर्जना और चशब्द से समारम्भ को भी ' आडम्बर ' कहते हैं यह समारम्भ, गजगर्जित और वाद्यध्वनि में पुंलिङ्ग है यह १ तूर्यरव आदि का नाम है । सामने आकर ग्रहण करना या चढ़ाई करना, चोरी करना और कवच आदिको पहिनना इनको ' अभि-हार ' कहते हैं यह पूर्वोक्त अर्थों में पुंलिङ्ग है यह १ अभिग्रहण आदिका नाम है ॥१७७॥

परिजन, तल-
वारका म्यान, (स्याज्जङ्गमे) परीवारः (खड्गकोशे परिच्छदे) ।
उपकरण, वृक्ष, पु.
मूठी परिमाण कुश, पीठाआदि आसन. विष्टरो(विटपी दूर्भमुष्टिः पीठाद्यमासनम्) ॥ १७८ ॥

जङ्गम विशेष या परिजन, तलवार का ढकना या म्यान, उपकरण और सहायक कोभी ' परीवार ' कहते हैं यह परिजन, खड्गकोश और पुरस्कर यानी उपयोगी वस्तु, साज, बिछौना आदिकों में भी पुंलिङ्ग है यह १ जङ्गम आदिकों का नाम है । वृक्ष, मूठीभर कुश और पीड़ा आदि आसन तथा आद्यशब्द से कालामृगचर्म ये ' विष्टर ' कहलाते हैं जैसे कहा है कि " पञ्चाशता भवेद् ब्रह्मा तदर्धेन तु विष्टरः " पचास कुशों का ब्रह्मा और पचीस कुशों का विष्टर कहाजाता है यह १ वृक्ष आदि का नाम है ॥ १७८ ॥

पु. स.
दरवाजा, द्वार-
पाल, ड्यौदी-
दारिन, विशाल,
नेवला, विष्णु, पीलारंग. (द्वारि द्वाःस्थे) प्रतीहारः (प्रतीहार्यप्यनन्तरे) ।
(विपुले नकुले विष्णौ) बभ्रुः(स्यात्पिङ्गले त्रिषु) ॥१७९॥

दरवाजा और द्वारपाल को ' प्रतीहार ' कहते हैं और अपिशब्द से निकट व्यवधानरहित द्वारपालिका (ड्यौदीदारिन) भी ' प्रतीहारी ' कहलाती है यह द्वार व द्वारपाल में पुंलिङ्ग और घरके भीतरी ड्यौदीदारिन में स्त्रीलिङ्ग है यह १ द्वारपाल आदि का नाम है । विशाल, नेवला, या बड़ा नेवला, विष्णु और पिङ्गल को ' बभ्रु ' कहते हैं यह नेवला विष्णु और विपुल में पुंलिङ्ग है और पीतवर्ण

का वाची त्रिलिङ्ग है एवं विश्वकोष में भी कहा है कि, “बभ्रुर्विशाले नकुले कृशा-
नावजे मुनौ शूलिनि पिङ्गले च” विशाल, नेवला, आगी, ब्रह्मा, मुनिविशेष,
महादेव और पिङ्गल ये ‘बभ्रु’ कहलाते हैं यह १ विपुल आदि का नाम है ॥ १७६ ॥

सामर्थ्य, स्थि-
रांश, न्याय्य,
श्रेष्ठ, जूआरी,
बाजी, जूआ. पु.
सारो (बले स्थिरांशे च न्याय्ये क्लीबं वरे त्रिषु) ।
पु.
दुरोदरो (द्यूतकारे पणो) (द्यूते) दुरोदरम् ॥ १८० ॥

मोटार्ड-सामर्थ्य या फ्रोज, वृक्षादिकों का स्थिरांश या हीर, न्याययुक्त और श्रेष्ठ
ये ‘सार’ कहलाते हैं यह बल और स्थिरांश में पुंलिङ्ग, न्याय्य में नपुंसक और
वर में त्रिलिङ्ग है एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, बल, स्थिरांश, मज्जा, जल,
धन, न्याय्य और वरको ‘सार’ कहते हैं यह बल, हीर और मज्जा में पुंलिङ्ग,
जल, धन और न्याय्य में नपुंसक तथा श्रेष्ठ में त्रिलिङ्ग है यह १ बल आदि का
नाम है । जूआ करानेवाला, मूल्य या धन और जूआ को दुरोदर या दरोदर कहते
हैं यह द्यूतकार और बाजी में पुंलिङ्ग और जूआ में नपुंसक है यह १ द्यूतकार
आदि का नाम है ॥ १८० ॥

महावन, दुर्गम-
मार्ग, परसम्पत्ति
का नहीं सहने
वाला आदि. पु.
(महारण्ये दुर्गपथे) कान्तारः (पुन्नपुंसकम्) ।
पु.
मत्सरो (ऽन्यशुभद्वेषे तद्वत्कृपणयोस्त्रिषु) ॥ १८१ ॥

बड़ावन और कठिनमार्ग को ‘कान्तार’ कहते हैं यह पुन्नपुंसक है एवं मेदिनी-
कोष में भी कहा है कि, महावन, बिल, और दुर्गममार्ग का वाची ‘कान्तार’ पुन्नपुंसक
है और कालेगन्ना में पुंलिङ्ग है यह १ महावन आदि का नाम है । परसंपदा के
असहन का वाची ‘मत्सर’ पुंलिङ्ग है, मत्सर से युक्त और कृपण का वाची
त्रिलिङ्ग है एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, मक्खी का वाची मत्सर स्त्रीलिङ्ग,
मात्सर्य और क्रोधका वाची पुंलिङ्ग, पराई संपदाका नहीं चाहनेवाला और कृपण में
वाच्यलिङ्ग है यह १ पराया अनभल चाहना आदिका नाम है ॥ १८१ ॥

देवता से
चाहा, श्रेष्ठ,
थोड़ा प्यारा,
बांसका अँखुआ,
करील, कलश.
(देवादृते) वरः (श्रेष्ठे त्रिषु क्लीबं मनाक्प्रिये) ।
(वंशाङ्कुरे) करीरो (ऽस्त्री तरुभेदे घटे च ना) ॥ १८२ ॥

देवता से चाहाहुआ, श्रेष्ठ और थोड़ा प्रिय इनको ‘वर’ कहते हैं यह देवता से
चाहे हुए में पुंलिङ्ग श्रेष्ठ में त्रिलिङ्ग और अल्पप्रिय में नपुंसक है एवं मेदिनीकोष में
भी कहा है कि, दामाद, वरण करना, देवताआदिकों से चाहा हुआ पदार्थ और

चञ्चल में 'वर' पुंलिङ्ग, श्रेष्ठ में त्रिलिङ्ग, कुङ्कुम में नपुंसक शतावरी और त्रिकला में स्त्रीलिङ्ग है और थोड़े प्रिय में नपुंसक है परन्तु कितेक आचार्यों ने अव्यय भी कहा है यह १ देवता से अभिलषित आदि का नाम है । बांसाका अँखुआ, वृक्षभेद और घट (कलश) इनको ' करीर ' कहते हैं यह वंशाङ्कुर में पुन्रपुंसक, तरुभेद और घटमें पुंलिङ्ग है एवं मेदिनीकोषमें भी कहा है कि, बांस के अँखुआ से ' करीर ' पुन्रपुंसक. वृक्षभेद=(करील) और घट में पुंलिङ्ग तथा मींगुर व हाथी के दांतों की जड़में स्त्रीलिङ्ग है यह १ वंशाङ्कुर आदि का नाम है ॥ १८२ ॥

सेनाका पृष्ठभाग (ना चमूजघने हस्तसूत्रे) प्रतिसरो (ऽस्त्रियाम्) ।
या पुरोभाग,
श्लासूत्र, यम, (यमानिलेन्द्रचन्द्रार्कविष्णुसिंहांशुवाजिषु ॥ १८३ ॥
पवन आदि.

शुकाहिकपिभेकेषु) हरि (ना कपिले त्रिषु) ।

सेनाका पुरोभाग या पिछिलाभाग और मङ्गलार्थ मन्त्रों से अभिमन्त्रित जो सूत हाथ में बाँधाजाता है उसको ' प्रतिसर ' कहते हैं यह सेनापृष्ठ में पुंलिङ्ग और करसूत्र में पुन्रपुंसक है एवं मेदिनीकोषमें भी कहा है कि, मन्त्रभेद, माल्य, कङ्कण, घावशुद्धि और सेनापृष्ठ में ' प्रतिसर ' पुंलिङ्ग, मण्डल व करसूत्र में पुन्रपुंसक और नियोज्य में त्रिलिङ्ग है १ यह सेनापृष्ठ आदि का नाम है । यमराज, पवन, इन्द्र, चन्द्र, सूर्य, विष्णु, सिंह, किरण, घोड़ा, तोता, सांप, वानर और मेंडक इनका वाची ' हरि ' पुंलिङ्ग है और कपिल में त्रिलिङ्ग है एवं विश्वकोष में भी कहा है कि, वायु, सूर्य, चन्द्र, इन्द्र, यम, उपेन्द्र (वामन), किरण, सिंह, घोड़ा, मेंडक, सर्प, शुक और लोकान्तर को ' हरि ' कहते हैं यह पूर्वोक्त अर्थों में पुंलिङ्ग है और हरे व पीले वर्ण में वाच्यलिङ्ग है यह १ यम आदि का नाम है ॥ १८३ । ३ ॥

सिटकी, खाँड़, स. शर्करा (कर्परांशेऽपि) यात्रा (स्याद्यापने गतौ) ॥ १८४ ॥

पत्थर, चलाना, या बिताना, चलना, देवपू- स. इरा (भूवाक्सुराप्सु) (स्या) चन्द्री (निद्राप्रमीलयोः) ।

जनविषयक उत्साह, पृथ्वी, वाणी, मंदिरा, स. धात्री (स्यादुत्साहादि क्षितिरप्यामलक्यपि) ॥ १८५ ॥
जल, नौद, आलस्य, धाई, धरती, आबला.

‡ " कोकिल तावद्विरसान्यापय दिवसान् वनान्तरे निवसन् । यावदलिकुलमालः कोपि रसालः समु-
ल्लसति " (इति भाषिनीविलासः) ॥

१- " पीताय यदि बालस्य विदध्यादुपमातरम् । सुविचार्य गुणान्दोषान्कुर्याद्भार्या तदेदशीम् । सवर्णां
मन्थवयसां सन्ध्वीलां घृदितां सदा । शुद्धदुग्धां बहुशीरां सवत्साभविषत्सलां । स्वाधीनामल्प-
संतुष्टां कुलीनां सज्जनात्मजाम् । कैतवेन परित्यक्तां निजपुत्रदशं शिसौ " (इति भावप्रकाशः) ॥

सिटकी, सिकता या बालू अपिशब्द से पत्थर, खाड़का विकार बूरा या चीनी और सिटकिहा देश आदि को ' शर्करा ' कहते हैं । एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, खाड़का विकार, पत्थर, सिटकी, सिटकीसमेत देश, रोगविशेष (प्रमेह) और टुकड़ा ये ' शर्करा ' कहलाते हैं यह १ सिटकी आदि का नाम है । चलाना या निकालना, और गमन को यात्रा कहते हैं यह यापन, उपाय, गमन और देवपूजन के उत्सव में खीलिङ्ग है यह १ यापन आदि का नाम है । पृथ्वी, वाणी, मदिरा और जल को " इरा " कहते हैं यह १ पृथ्वी आदि का नाम है शयन, आलस्य या अत्यन्त परिश्रम आदिकों से बेहोश होजाना इनको तन्द्रि, तन्द्री या तन्द्रा कहते हैं यह १ निद्रा आदि का नाम है । बच्चों को दूध पिलानेवाली, पृथ्वी, आंवला अपिशब्द से उपजानेवाली माता को भी ' धात्री ' कहते हैं यह जननी-आमलकी, धरती और उपमाता में खीलिङ्ग है यह १ धाई आदि का नाम है ॥ १८४ । १८५ ॥

स.

अङ्गहीन, नटी, **क्षुद्रा (व्यङ्गा नटी वेश्या सरघा कण्टकारिका) ।**

वेश्या, मधु-
मक्खी, भटक-
टैया, निर्दय,
नीच, थोड़ा,
उपकरण, स्वल्प,
माप, समग्र,
निश्चित.

पु. स.

(त्रिषुकूरे ऽधमेऽल्पेऽपि) **क्षुद्रो मात्रा (परिच्छदे १८६ ॥**

न.

अल्पे च परिमाणे स्या) न्मात्रं (कात्स्न्येवधारणे) ।

हीनाङ्गी, नाचनेवाली, वेश्या या वारखी, मधुमक्खी, भटकटाई या कटेरी इन को ' क्षुद्रा ' कहते हैं और निर्दय, अधम तथा अल्प और कृपणको भी ' क्षुद्र ' कहते हैं यह त्रिलिङ्ग है एवं विश्वकोष में भी कहा है कि अधम, क्रूर, कृपण, और अल्प में ' क्षुद्र ' त्रिलिङ्ग है और अङ्गहीन नारी, नटी, कण्टकारी, शहद की मक्खी, अम्ललोणिका (अमलोनियां) वेश्या, मारडालनेवाली और मक्खीमात्र को भी ' क्षुद्रा ' कहते हैं यह पूर्वोक्त अर्थों में खीलिङ्ग है यह १ हीनाङ्गी आदि का नाम है । पुरस्कर उपयोगी वस्तु साज बिछौना आदि, अल्प, माप ये ' मात्रा ' कहलाते हैं यह पूर्वोक्त अर्थों में खीलिङ्ग है और समग्रता तथा निश्चयार्थ का वाची ' मात्र ' नपुंसक है एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि कानों का गहना, धन, माप, उपकरण, अक्षरोंका अवयव और स्वल्प में खीलिङ्ग है और संपूर्णता व अवधारण में नपुंसक है परिच्छद में जैसे " महामात्रः " अल्प में जैसे " शाक-मात्रा ' परिमाण में जैसे ' किं हस्तिमात्रोऽङ्कुशः ' कात्स्न्य में जैसे ' जीवमात्रं न हिंस्यात् ' अवधारण में जैसे ' पयोमात्रं मुक्ते ' यह १ परिच्छद आदि का नाम है ॥ १८६ । ३ ॥

चित्रसारी, आ-^{न.} (आलेख्याश्चर्ययोः) चित्रं कलत्रं (श्रोणिभार्ययोः) ॥ १८७ ॥
 र्चर्य, कमर,^{न.}
 स्त्री, उचित,^{न.}
 भाजन, वाहन,^{न.} (योग्यभाजनयोः) पात्रं पत्रं (वाहनपक्षयोः) ।
 पक्ष, हुक्म,^{न.}
 ग्रन्थ, हथियार,^{न.} (निदेशग्रन्थयोः) शास्त्रं शस्त्रं (मायुधलोहयोः) ॥ १८८ ॥
 लोहा.

भीति आदि में नानावर्ण लिखना, अद्भुत या विरमय को 'चित्र' कहते हैं । यह मूसापर्णी, गोमाककड़ी, श्यामलता, दन्तीवृक्ष, माया, सांप, नक्षत्र और नदी विशेष में स्त्रीलिङ्ग, निलक, चित्रसारी, कत्ररा, और आश्चर्य में नपुंसक, तद्दान में वाच्यलिङ्ग, मिल्ली में स्त्रीलिङ्ग, दाख, वखभेद, रेखा और लिखना में नपुंसक है यह १ आलेख्य आदि का नाम है । कमर और भार्या को 'कलत्र' कहते हैं । यह नरपाल आदिकों का दुर्गस्थान (किलाघर) कमर और जाया में नपुंसक है । यह १ कटि आदि का नाम है । उचित या निपुण और भाजन (दर्शन) को 'पात्र' कहते हैं । यह भाजन, योग्य, दोनों किनारों का विचित्रा भाग, सुवाआदि, पत्ता और राजमन्त्री में नपुंसक है । यह १ योग्य आदि का नाम है । हाथी-घोड़ा-रथ आदि वाहन, शुक्लपक्ष, कृष्णपक्ष या सशायक आदि, पखेहज्रों का पंख और वाण के पुंख का पांख, चिट्ठी तथा पत्तेको भी 'पत्र' कहते हैं । यह १ वाहन आदि का नाम है । आज्ञा (हुक्म) और व्याकरण आदि ग्रन्थों को 'शास्त्र' कहते हैं । यह १ निदेश आदि का नाम है । हथियार और लोह को 'शस्त्र' कहते हैं । यह लोहा और अस्त्र में नपुंसक तथा छूरी (चाकू) में स्त्रीलिङ्ग है । यह १ आयुध आदि का नाम है ॥ १८७ । १८८ ॥

जटा, वखभेद,^{न.} (स्या) (ज्जटांशुकयोः) नेत्रं क्षेत्रं (पत्नीशरीरयोः) ।
 भार्या, शरीर,^{न.}
 सूअर व हलका^{न.}
 मुखाम्र, नाम,^{न.} (मुखाग्रे क्रोडहलयोः) पोत्रं गोत्रं (च नाम्नि च) ॥ १८९ ॥
 वंश आदि.

आपस में मिले जुले केश और वखविशेष को 'नेत्र' कहते हैं । यह मथानी की रस्सी, वखभेद, वृक्षोंकी जड़, रथ, और नयनों में नपुंसक और नदी व नाड़ी में स्त्रीलिङ्ग तथा नेता में वाच्यलिङ्ग है । यह १ जटा आदि का नाम है । धर्मपत्नी और शरीर को 'क्षेत्र' कहते हैं । यह शरीर, क्षेत्र (खेत) सिद्धस्थान और कलत्र (भार्या) में नपुंसक है । यह १ पत्नी आदि का नाम है । सूअर और हलके मुखाम्र को 'पोत्र' कहते हैं । यह वख और सूकर तथा हलके मुखाम्र में नपुंसक है । यह १

१ "शासनादिनिशं देवि ! वर्णाश्रमनिवासिनाम् । तारणात्सर्वपापेभ्यः शास्त्रमित्यभिधीयते" (इति कृतार्थवतन्त्रम्) ॥

सूकर मुखाग्र आदि का नाम है। नामधेय और चशब्द से कुल, संभावनीयबोध वन, खेत और मार्ग आदि को 'गोत्र' कहते हैं। यह पृथ्वी व गोसमुदाय में स्त्रीलिङ्ग, पर्वत में पुंलिङ्ग, वंश, नाम, संभावनीय बोध, जंगल, खेत और रास्ते में नपुंसक है। यह १ अभिधान आदि का नाम है ॥ १८६ ॥

टांपना, यज्ञ, न.

नित्यदान, जं-सत्र (माच्छादने यज्ञे सदादाने वनेऽपि च)।

गल, छल, श-

ब्दादिविषय,

काया, आकाश,

वस्त्र,

अजिरं(विषये काये)ऽप्यम्बरं(व्योम्नि वाससि)॥१६०॥

टांपना या कपड़ा, देवयज्ञ, नित्यदान, वन और अपिशब्द से छल को भी 'सत्र' कहते हैं। यह पूर्वोक्त अर्थों में नपुंसक है। यह १ आच्छादन आदि का नाम है। शब्द, स्पर्श, रूप, रस आदि विषय, देह, अपिशब्द से आंगन या चौराहा, वात और मेढक ये 'अजिर' कहलाते हैं। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, आंगन, वायु, विषय, मेढक और शरीर में 'अजिर' नपुंसक और चगडी में स्त्रीलिङ्ग है। यह १ विषय आदि का नाम है। आकाश और वस्त्रको 'अम्बर' कहते हैं। एवं विश्वकोष में भी कहा है कि वस्त्र, आकाश, कपास से बुना कपड़ा, लाल तुलसी, गन्धक, नारङ्गी या एक प्रकार का ककोड़ा ये 'अम्बर' कहलाते हैं। यह १ आकाश आदि का नाम है ॥ १६० ॥

न.

न.

न.

राज्यादि, मो-चक्रं (राष्ट्रे)ऽप्यक्षरं (तु मोक्षेऽपि) क्षीर (मप्सु च)।

क्षादि, जल,

दूध, सोनाआदि,

द्वारमात्र या

नगरद्वारआदि.

पु.

पु.

न.

(स्वर्णेऽपि) भूरिचन्द्रौ(द्वौ)(द्वारमात्रे तु)गोपुरम्॥१६१॥

राज्य या देश अपिशब्द से समूह या गोस्थान, सेना, रथकापहिया, छल, कुम्हार का चाक और जलभँवर तथा अस्त्रविशेष को 'चक्र' कहते हैं। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, 'चक्र' यह चक्रवा चकई में पुंलिङ्ग, और समूह, सेना, रथका पहिया, राज्य या देश, कपट, कुम्हार का चाक, अस्त्रभेद और जलों का भँवर इन में नपुंसक है। यह १ राष्ट्र आदि का नाम है। मोक्ष, अपिशब्द से अकार आदि वर्ण, नाशरहित, ब्रह्म, अच्युत, आकाश, धर्म, तपस्या और मूलकारण को 'अक्षर' कहते हैं। एवं अनेकार्थकोष में भी कहा है, कि अपवर्ग, अंकार, ब्रह्म और अच्युत ये 'अक्षर' कहलाते हैं। यह पुंलिङ्ग व नपुंसक है। यह १ मोक्ष आदि का नाम है। जल और दूधको 'क्षीर' कहते हैं। यह पूर्वोक्त अर्थों में नपुंसक है। यह १ जल आदि का नाम है। सोना अपिशब्द से वासुदेव, महादेव, ब्रह्मा, कपूर, कबीला, कलानिधि और यज्ञकी स्त्रीरको भी, भूरि, व 'चन्द्र' कहते हैं। एवं मेदिनीकोष में भी

कहा है कि 'भूरि' यह वासुदेव, शिव, ब्रह्मा में पुंलिङ्ग, सुवर्ण में नपुंसक और अधिकता में वाच्यलिङ्ग है और 'चन्द्र' यह कपूर, कशीला, कलाधर, काञ्चन और यज्ञकी जाउरि में पुंलिङ्ग है। ये २ स्वर्ण आदि के नाम हैं। द्वारमात्र (दरवाजा) या नगर के द्वारको भी 'गोपुर' कहते हैं। यह द्वार, पुरद्वार और केवटी मोथा में भी नपुंसक है। यह १ दरवाजा आदि का नाम है ॥ १६१ ॥

गुफा, कपट, (गुहादम्भौ) गहरे (द्वे) (रहोऽन्तिक) मुपहरे ।
 एकान्त, समीप, न. न.
 अगाड़ी, अधिक, न.
 ऊपर, घर नगर (पुरोऽधिकमुप) र्यग्राण्य (गारे नगरे) पुरम् ॥ १६२ ॥
 विषय, उपद्रव. न. पु.न.

मन्दिरं (चाथ) राष्ट्रो (ऽस्त्री विषये स्यादुपद्रवे) ।

पर्वत की गुफा, कपट या शठता को 'गह्वर' † कहते हैं। यह गुफा, दम्भ (छल) कुञ्ज और गहनवन में पुन्नपुंसक है। यह १ गुफा आदिका नाम है। निर्जन या एकान्त और समीप ये दोनों 'उपह्वर' कहलाते हैं। यह समीप और एकान्त में नपुंसक है। यह १ विजन आदिका नाम है। पुरम्, अधिक और उपरि ये तीनों 'अग्र' कहलाते हैं। इनमें पुरः पुरस्तात् जैसे 'अग्रगामी' अधिक में जैसे "साग्रंशतम्" ऊपर में जैसे "वृक्षाग्रम्" यह अगाड़ी, ऊपर, पलका परिमाण, आलम्बन, समूह और प्रान्त अन्तभाग, किनारा, छोर या (प्रदेश-खण्ड-सूबा) में नपुंसक और अधिक, प्रधान व प्रथम में वाच्यलिङ्ग है। यह १ अग्रुआ आदिका नाम है। घर और नगर को 'पुर' व 'मन्दिर' कहते हैं। एवं धरणीकोष में भी कहा है कि, 'पुर' यह शरीर और घरके ऊपरले घरमें नपुंसक, गूगल में पुंलिङ्ग और नगर में नपुंसक व स्त्रीलिङ्ग है और 'मन्दिर' यह नगर व घरमें नपुंसक और मकरालय में पुंलिङ्ग है। यह १ घर आदिका नाम है। राज्य या देश और मरण आदि उपद्रव को 'राष्ट्र' कहते हैं। यह पुन्नपुंसक है। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, 'राष्ट्र' यह देश में नपुंसक और उपद्रव में पुन्नपुंसक है। यह १ विषय आदिका नाम है ॥ १६२ ॥

दर, गड़हा, पु.न. पु.न.
 हीरा, वज्र आदि. दरो (ऽस्त्रियां भये श्वभ्रे) वज्रो (ऽस्त्री हीरके पवौ) १६३ ॥

भय या डर और गड़हा को 'दर' कहते हैं। यह पुन्नपुंसक है। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, 'दर' यह साध्वस व गर्त में पुन्नपुंसक, कन्दरा में स्त्रीलिङ्ग और अल्पार्थ में अव्यय है। यह १ भीति आदिका नाम है। हीरा और कुलिश को 'वज्र' कहते हैं। यह पुन्नपुंसक है। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि 'वज्र' यह बालक व

† "अन्येषुरात्मातुचरस्य भावं जिज्ञासमाना मुनिर्होमधेतुः । गङ्गाप्रपातान्तविरुद्धशप्पं गौरीशुरोर्गङ्गा-माविवेश" (इति रघुः) ॥

आँवला में नपुंसक, योग में पुलिङ्ग, सेहुँड़ा व गिलोय में टावन्त थूहरभेद में झीपन्त, अशनि व हीरा या मणिभेद में पुन्नपुंसक, रांगा और बाधी में नपुंसक है। यह १ हीरा आदिका नाम है ॥ १६३ ॥

प्रधान, सि- न.

ज्ञान्त, कोली, विज्ञौना आदि तन्त्रं (प्रधाने सिद्धान्ते सूत्रवाये परिच्छदे) ।

सामान, चवैर न.

की डाँड़ी, लस की टट्टी, शयन, औशीरं (चामरे दण्डेऽप्यौशीरं शयनासने) ॥ १६४ ॥

स्वतन्त्र, महामात्र या परमात्मा, सिद्धान्त, तन्तुवाय (कोली या जुलाहा) विज्ञौना आदि सामान, वस्त्र, शास्त्र और कुटुम्बकृत्य को 'तन्त्र' कहते हैं। एवं मेदिनीकोप में भी कहा है कि कुटुम्बकृत्य, सिद्धान्त, उत्तम औपध, मुख्य या महामात्य, कोली, शास्त्रभेद, उपकरण, वेदशास्त्राविशेष और दो अर्थ का बोधक कारण ये तन्त्रपदवाच्य कहलाते हैं। यह १ प्रधान आदिका नाम है। चवैर का दण्ड और खस की टट्टी को 'औशीर' तथा शयन और पीढ़ा आदि आसन को भी 'औशीर' कहते हैं। एवं अजयकोप में भी कहा है कि, चवैर की डाँड़ी, सोना और पीढ़ा आदि को 'औशीर' कहते हैं। यह १ चवैरदण्ड आदिका नाम है ॥ १६४ ॥

हाथीसूँड़ का न.

अग्रभाग, बाजा का मुख, पानी, पुष्करं (करिहस्ताग्रे वाद्यभाण्डमुखे जले ।

आकाश, तल-

वार की नोक, व्योम्नि खड्गफले पद्मे तीर्थौषधिविशेषयोः) ॥ १६५ ॥

हाथी की सूँड़ का अग्रभाग, बाजा के पात्र का मुख, पानी, आकाश, तलवार की नोक, कमल, तीर्थविशेष और कूटनामक औपध को 'पुष्कर' कहते हैं। एवं हैमकोप में भी कहा है कि, द्वीप, तीर्थ, सर्प, गरुड़, औपधभेद, बाजा का मुख, तलवार की नोक, बाण या वृक्ष का कन्धा, हाथी की सूँड़ का अग्रभाग, आकाश, जल और कमल ये पुष्कर पदवाच्य कहलाते हैं। यह १ गजशुण्डाग्र आदिका नाम है ॥ १६५ ॥

न.

अवकाश आदि-अन्तर (मवकाशावधिपरिधानान्तर्धिभेदतादर्थ्ये ।

छिद्रात्मीयविनावहिरवसरमध्येऽन्तरात्मनि च) ॥ १६६ ॥

अवकाश, अवधि, परिधान, अन्तर्धान, भेद, तादर्थ्य, छेद, आत्मीय विना, बाह्य, अन्तर, मध्य, अन्तरात्मा और चशब्दसे सादृश्य तथा 'घटाना' फ्रांसिला या दूर को भी 'अन्तर' कहते हैं। अवकाश में जैसे ठंड या पाला के समय में अवधि में

जैसे महीना भरे में देना चाहिये, परिधान में जैसे साड़ियाँ पहिनना चाहिये, अन्तर्धान में जैसे 'सूर्य पहाड़ में छिपगया' भेद में जैसे 'सरसों और शैलराज का जो भेद (प्ररक) है' तादर्थ्य में जैसे 'तुम्हारे लिये यह ऋण (कर्जा) है' छिद्र में जैसे 'वैरी को दांव या घात पाजाने पर प्रहार करना चाहिये' आत्मीय में जैसे 'यह मेरा आत्मीय है' विनार्थ में जैसे 'पुरुषकार के विना' बाह्य में जैसे 'चाण्डालों के घर बाहर हैं' अवसर में जैसे सेवक समय पर पहुँचनेवाला है, मध्य में जैसे हम दोनों के बीच पहाड़ पैदा हुआ, अन्तरात्मा में जैसे अन्तर में ज्योतीरूप परमात्मा देखा गया, और चशब्द से सादृश्य में जैसे 'घकार हकार का सादृश्यतम है' यह १ अवकाश आदिका नाम है ॥ १६६ ॥

मोथा, कन्दवि-
शेष, बड़ा अ-
धेरा, घातुक,
हिंसक, कठोर
आदि.

न.

न.

(मुस्तेऽपि) पिठरं (राजकशेरुण्यपि) नागरम् ।

शर्वरं (त्वन्धतमसे घातुके भेद्यलिङ्गकम्) ॥ १६७ ॥

मोथा, अपिशब्द से मथानी का दण्ड, स्थावर विषका भेद और सुगन्ध द्रव्य आदिको भी 'पिठर' कहते हैं। यह बटलोही में पुंलिङ्ग, मोथा और मथानदण्ड में नपुंसक है। यह १ मोथा आदिका नाम है। जलनृण मूल या कन्दविशेष अपिशब्द से नागरमोथा, सोंठि, चतुर, नगर में पैदाहुआ मनुष्य या गुजराती ब्राह्मणों की एकजाति ये 'नागर' कहलाते हैं। यह १ राजकशेरु आदिका नाम है। बड़ा अन्धकार, घातुक, हिंसक या क्रूर इनको 'शर्वर' कहते हैं। यह वाच्यलिङ्ग है और स्वामी के मत में 'शर्वर' यह महान्धकार में नपुंसक मतवाले मारडालनेवाले हाथी में पुंलिङ्ग है। यह १ गाढ़े अन्धकार आदि का नाम है ॥ १६७ ॥

पु.स.न.

पु.स.न.

लाल, सफ़ेद, गौरो (ऽरुणे सिते पीते) (व्रणकार्य) (प्यरुष्करः) ।

पीला, घावकरने

वाला, कठिन पु.स.न.

पु.स.न.

नीच आदि. जठरः (कठिनेऽपि स्या) (दधस्तादपि) चाधरः ॥ १६८ ॥

सूर्य, सूर्य का सारथी, सन्धारण, लाल, सफ़ेद और पीलेवर्ण को 'गौर' कहते हैं। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि 'गौर' यह पीला, लाल, सफ़ेद और साफ़ में वाच्यलिङ्ग, सफ़ेद सरसों और चन्द्रमा में पुंलिङ्ग और कमल की धूलि में नपुंसक है। यह १ रक्तवर्ण आदि का नाम है। घाव करनेवाला और अपिशब्द से भिलावां ये दोनों 'अरुष्कर' कहलाते हैं। यह घाव करनेवाले में त्रिलिङ्ग और भिलावां में पुंलिङ्ग है। यह १ व्रणकारी आदिका नाम है। कठोर, अपिशब्दसे उदर और बँ, धुआको 'जठर' कहते हैं। यह उदर में खीलिङ्ग नहीं है, वैधुआ और कठिन, निष्ठुर-

या कठोर में त्रिलिङ्ग है । यह १ कठिन आदिका नाम है । नीच अपिशब्द से निचला ओठ और हीन को 'अधर' कहते हैं । यह ओठ में पुंलिङ्ग, हीन और नीच में वाच्यलिङ्ग है । यह १ नीच आदिका नाम है ॥ १६८ ॥

पु.स.न. पु.स.न.

स्वस्थ या साव-
धान, अनेक
कामों में लगा,
व्याकुल, ऊपर,
उत्तरदिशा, उ-
त्तम, इनका
विपर्यय, श्रेष्ठ,
दूर, देहादि
उत्तम, स्वादु,
मनोज्ञ.

(अनाकुलेऽपि) चैकाग्रो व्यग्रो (व्यासक्त आकुले) ।

पु.स.न.

पु.स.न.

(उपर्युदीच्यश्रेष्ठेष्व) प्युत्तरः (स्या) दनुत्तरः ॥ १६९ ॥

पु.स.न.

(एषां विपर्यये श्रेष्ठे) (दूरानात्मोत्तमाः) पराः ।

पु.स.न. पु.स.न.

(स्वादुप्रियो च) मधुरौ क्रूरौ (कठिननिर्दयौ) ॥ २०० ॥

स्वस्थ, अपिशब्द से सावधान या एक विषय में आसक्त चित्तवाला इनको 'एकाग्र' कहते हैं । यह एकतान और अनाकुल में वाच्यलिङ्ग है । यह १ अव्यग्र आदि का नाम है । कामों में लगा या जिसका मन अनेक कामों में फैला है और व्याकुल चित्तवाला इन दोनों को 'व्यग्र' कहते हैं । यह १ व्यासक्त आदि का नाम है । ऊपर, उदीच्य और उत्तम को 'उत्तर' कहते हैं । यह वाच्यलिङ्ग है । अपिशब्दसे विराट राजा के राजकुमार में पुंलिङ्ग, उत्तरदिशा में स्त्रीलिङ्ग और राजसभा में वादी के किये प्रश्नके उत्तर में नपुंसक है । एवं विश्वकोष में भी कहा है कि 'उत्तर' यह प्रतिवाक्य में नपुंसक, ऊर्ध्व, उदीच्य, उत्तम में त्रिलिङ्ग, विराटराजा के राजपुत्र में पुंलिङ्ग और उत्तरदिशा में स्त्रीलिङ्ग है । यह १ ऊपर आदि का नाम है । इन्हीं उपर्यादि के विपर्यय और श्रेष्ठ को 'अनुत्तर' कहते हैं । यह १ उपर्यादि व्यत्यय का नाम है । दूर यानी इन्द्रियों से अगोचर, आत्मा से भिन्न या देह आदि, और उत्तम ये 'पर' कहलाते हैं । एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि श्रेष्ठ, शत्रु, दूर, अन्य और उत्तर में 'पर' यह पुंलिङ्ग और केवल में नपुंसक है । यह १ दूर आदि का नाम है । स्वादु और प्रिय को 'मधुर' कहते हैं । एवं विश्वकोष में भी कहा है कि 'मधुर' यह रस में पुंलिङ्ग, विषमें नपुंसक, रसवान्, स्वादु और प्रिय में वाच्यलिङ्ग है । कठोर और निर्दय को 'क्रूर' कहते हैं । यह १ कठिन, घोर और मनुष्यों के मारनेवाले (हत्यारे) में वाच्यलिङ्ग है । यह १ कठिन आदि का नाम है ॥ १६९ । २०० ॥

पु.स.न.

पु.स.न.

दाता, पूज्य, अन्य, नीच, मूर्ख, स्वाधीन, उज्ज्वलित, सकेद.

(दातृमहतो) रितर (स्त्वन्यनीचयोः) ।

पु.स.न. पु.स.न.

(मन्दस्वच्छन्दयोः) स्वैरः शुभ्र (मुदीतशुक्लयोः) ॥ २०१ ॥

दाता या दानी, बड़ा या पूज्य और सरलचित्त को भी 'उदार' कहते हैं। यह पूर्वोक्त अर्थों में वाच्यलिङ्ग है। यह १ दानी सखी, फ़ैयाज आदिका नाम है। अन्य या भिन्न, और नीच, पामर, अधम या वामन (बौना) को 'इतर' कहते हैं। यह पामर और अन्य में वाच्यलिङ्ग है। मूर्ख और स्वाधीन ये 'स्वैर' कहलाते हैं। यह पूर्वोक्त अर्थों में त्रिलिङ्ग है। यह १ मूढ़ आदिका नाम है। उदीप्त या उज्ज्वलित और सफ़ेद या साफ़ को 'शुभ्र' कहते हैं। यह बादल में नपुंसक और प्रदीप्त तथा शुक्ल में त्रिलिङ्ग है। यह १ उदीप्त आदिका नाम है ॥ २०१ ॥

इति रान्ताः ॥

अथ लान्ता व्याख्यायन्ते ॥

चोटी, मुकुट, जूड़ा, वृक्षभेद, हाथी, बाण, फूल. ^{पु.म.न} (चूडा किरीटं केशाश्च संयता) मौलय (स्त्रयः) । ^{पु.} (द्रुमप्रभेदमातङ्गकाण्डपुष्पाणि) पीलवः ॥ २०२ ॥

शिखा या चोटी किरीट या मुकुट और बँधेकेश (जूड़ा) ये तीनों 'मौलि' कहलाते हैं। यहां 'त्रयः' यह मौलिके पुंस्त्व सूचनार्थ कहा गया है। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि "मौलिः किरीटे धम्मिल्ले चूडायामनपुंसकम्। नाशोकाद्रौलियांभूमाविति" मौलि यह मुकुट, जूड़ा और चूड़ा में नपुंसक नहीं बरन पुलिङ्ग है। एवं रभस-कोष में भी कहा है कि, किरीट, चूड़ा और बँधेवालों में 'मौलि' पुलिङ्ग है। यह १ चोटी आदिका नाम है। वृक्षभेद, हाथी, बाण और फूलको 'पीलु' और बहुत्व में 'पीलवः' कहते हैं। यह फूल, परमाणु, हाथी, तालका अस्थिखण्ड यानी ताड़वृक्ष की हड्डी का टुकड़ा बाण और पीलुवृक्ष में पुलिङ्ग है। यह १ वृक्षभेद आदि का नाम है ॥ २०२ ॥

यमराज, समय आदि, चौथा युग, कलह आदि, मृग, जल, कमल-आदि, दुपट्टा, नागराजादि. ^{पु.} (कृतान्तानेहसोः) काल (श्चतुर्थेऽपि युगे) कलिः । ^{पु.} (स्यात्कुरङ्गेऽपि) कमलः (प्रावारेऽपि च) कम्बलः ॥ २०३ ॥

यमराज, समय और "पाप, दैव, सिद्धान्तज्ञाता, मौत, महाकाल व श्यामवर्ण" को 'काल' कहते हैं। यह पूर्वोक्त अर्थों में पुलिङ्ग और काली व महाकाली में स्त्रीलिङ्ग है। एवं मेदिनीकोष में कहा है कि, मौत, महाकाल, समय, यम, और कृष्ण में 'काल'

‡ "पतङ्गमातङ्गकुरङ्गवृक्षमीनाहताः पञ्चभिरेव पञ्च । एकः प्रमादी स कथं न हन्यते यः सेवते पञ्च भिरिन्द्रियैर्वा" ॥ १ ॥

पुंलिङ्ग, वर्ण में ' काली ' व अन्यार्थ में ' काला ' स्त्रीलिङ्ग है। यह १ यमराज आदि का नाम है। चौथायुग, अपिशब्दसे शूरमा, संप्राम और लड़ाई को ' कलि ' कहते हैं। यह पुंलिङ्ग है और कलिका या कली में स्त्रीलिङ्ग है। यह १ कलियुगआदि का नाम है। लालसृग या सृगमात्र अपिशब्दसे जल, तांबा, पङ्कज और बाहुओं का मध्यस्थान तथा औषधको भी ' कमल ' कहते हैं। यह पुंनपुंसक है। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि पानी, तांबा, सरोज, और फेफड़ा में ' कमल ' यह नपुंसक और सृगभेद में पुंलिङ्ग है। यह १ हरिण आदिका नाम है। उत्तरीयवस्त्र, उपर्ना, या रोम-समूहों से बना कपड़ा अपिशब्द से नागराज और कुमि ये ' कम्बल ' कहलाते हैं। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, नागराज, गऊके गले का लटकताहुआ चाम, अंगौछा या डुपट्टा, किरवा और उपर्ना में कम्बल पुंलिङ्ग और जलमें नपुंसक है। यह १ प्रावार आदिका नाम है ॥ २०३ ॥

पोत, पूजासा-

पु.

मग्री, ढीली

खाल, मोटापन,

सामर्थ्य, फ़ौज,

कौआ, बलदाऊ.

(करोपहारयोः पुंसि) बलिः (प्राणयङ्गजे स्त्रियाम्) ।

न.

(स्थौल्यसामर्थ्यसैन्येषु) बलं (ना काकसीरिणोः) २०४

पोत, महसूल या मालगुजारी, पूजाकी सामग्री या देवताकी भेट को ' बलि ' कहते हैं। यह पुंलिङ्ग है और प्राणियों की खाल का सिकुड़ना या त्रिबली में स्त्रीलिङ्ग है। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है, कि दानवराज, राजदेयभाग, चवैरकादण्ड, और पूजाका सामान इनमें ' बलि ' यह पुंलिङ्ग है और बुढ़ापे से ढीली खाल, गृहदार-विशेष, (बँडेर) और पेटकी त्रिबली में स्त्रीलिङ्ग है। यह १ राजप्राह्य भागआदि-का नाम है। मोटापन, सामर्थ्य और फ़ौज को ' बल ' कहते हैं। यह नपुंसक है। कौआ और बलदाऊ में पुंलिङ्ग है। एवं विश्वकोष में भी कहा है कि, गन्धरस (वणिग्द्रव्य विशेष) रूप, पराक्रमी, स्थूलता और सेना में ' बल ' नपुंसक और बलदेव, बला-सुर, बलवान् और वायस में पुंलिङ्ग है। यह १ स्थूलता आदिका नाम है ॥ २०४ ॥

वातसमूह, वात

पु.

व्याधि का न

सहनेवाला,

शठ, जंगली

हिंसकजीव,

सांप.

वातूलः (पुंसि वात्यायाः पि वातासहे त्रिषु) ।

पु.स न.

(भेद्यलिङ्गः शठे) व्यालः (पुंसि श्वापदसर्पयोः) २०५ ॥

वातसमूह और वातविकार के न सहनेवाले प्राणी को भी ' वातूल ' या ' वातुल ' कहते हैं। यह वातसमूह में पुंलिङ्ग और वातासह में त्रिलिङ्ग है और द्विरूपकोष के प्रमाण से ' वातुल ' ह्रस्वमध्य भी है। यह १ वातसमुदाय आदिका नाम है। शठ अर्थ का वाची व्याल वाच्यलिङ्ग यानी त्रिलिङ्ग है और जंगली हिंसक पशु

वाघ आदि, सांप, दुष्टहाथी और सिंहको भी 'व्याल' स्त्रीलिङ्ग में 'व्याली' कहते हैं। यह १ शठ आदिका नाम है ॥ २०५ ॥

पाप, बीट, कीट, पु.न.

न.

रोग, हथियार, मलो (ऽस्त्री पापविद्विद्वान्यस्त्री) शूलं (रुगायुधम्) ।

स्थाणु, शल्य,

ज्वाला, कोन,

पु.म. स.

धार, मोद,

पांति.

(शङ्कावपिद्रयोः) कीलःपालिःस्र्यश्न्यङ्कपङ्क्तिपु २०६॥

पाप या नरकहेतुकर्म, विष्टा, कीट, नागकी गूजी, कानका खंट और पसीना आदिको 'मल' कहते हैं, यह पुनपुंसक है। एवं मेदिनीकोप में भी कहा है कि, पाप, विष्टा और कीट में 'मल' पुनपुंसक है और कृपण में वाच्यलिङ्ग है "चर्ची, बीज, ग्लून की चिकनई, मूत, विष्टा, कान, खाल, नागून, खखार, आँसू, कीचड़ और पसीना" ये मनुष्यों के १२ मल हैं। यह १ पाप आदिका नाम है। रोग, और हथियार को 'शूल' कहते हैं। यह पुनपुंसक है। एवं मेदिनीकोप में भी कहा है कि पीड़ा, हथियार, मौत, कोड़ा या लोहे का तीखा कांटा और योग ये 'शूल' कहलाते हैं। यह पूर्वोक्त अर्थों में पुनपुंसक है और वेश्या में स्त्रीलिङ्ग है। यह १ रोगआदिका नाम है। डुंढावृक्ष, फर, खंटा या कांटा अपिशब्द से अग्नि की ज्वाला इनको 'कील' कहते हैं। यह स्त्री पुलिङ्ग है। एवं धरणीकोप में भी कहा है कि, कोहनी का आघात, खंभा और अग्नि की ज्वाला ये 'कील' कहलाते हैं। यह १ शंकुआदिका नाम है ॥ धार या कोन, गोदी या निशान और पांति को 'पालि' कहते हैं। यह स्त्रीलिङ्ग है एवं अजयकोप में भी कहा है कि, कानकी लौर, परदेश, पांति और निशान को 'पालि' कहते हैं। यह १ कोन आदिका नाम है ॥ २०६ ॥

स.

स.

कारीगरी, काल

भेद, सखी,

पांति, ज्वार-

भाटा, समय,

सीमा.

कला (शिल्पे कालभेदे) ऽप्याली (सख्यावली अपि) ।

स.

(अब्ध्यम्बुविकृतौ) वेला (कालमर्यादयोरपि) ॥ २०७ ॥

गाने बजाने आदिकी निपुणता, कारीगरी, हुनर, गुण या कलविद्या, तीसकाष्टा का समय या साठ सेकण्ड, अपिशब्दसे चित्रकला आदिकर्म, चित्राआदि का कर्ता मूलधन का सूद, चन्द्रमण्डल का सोलहवां भाग इनको 'कला' कहते हैं। एवं मेदिनी कोप में भी कहा है कि, मूलधनकी बढ़ती (व्याज) कारीगरीआदि, अंशमात्र, चन्द्रमा का सोलहवां भाग, गणना और कालका मान इनमें 'कला' खोलिङ्ग है, भागवतआदि पुराणों में ६४ कला हैं। यह १ शिल्पआदि का नाम है। सहेली और पांतिको 'आलि' या 'आली' कहते हैं। अपिशब्दसे विशद आशय में त्रिलिङ्ग और सेतु में स्त्रीलिङ्ग है एवं मेदिनीकोप में भी कहा है कि "आलि" यह साफ अभिप्राय

में त्रिलिङ्ग, सहेली, सेतु और पांति में खीलिङ्ग है। यह १ सखी आदिका नाम है। चन्द्रोदय से समुद्र के जल का बढ़ना या ज्वारभाटा, समय, सीमा या न्यायपथ की स्थिति और अपिशब्द से बड़े लोगों के भोजन का समय इनको 'बेला' या 'वेला' कहते हैं। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि काल, मर्यादा, समुद्र का किनारा या उसके जलका बढ़ना, विना लेश मरना, रोग और बड़ों के भोजन का समय ये वेलापद वाच्य कहलाते हैं। यह १ समुद्र की लहर आदि का नाम है ॥ २०७ ॥

कृत्तिका, गैया स.

पु.स.न.

आदि, आगी, बहुलाः (कृत्तिका गावो) बहुलो (ऽग्नौ शितौ त्रिषु) ।
श्यामता, वि-
लास, क्रिया, स.
सिटकी या लीला (विलासक्रिययो) रुपला (शर्करापि च) ॥ २०८ ॥
चीनी, स.

कृत्तिका और गौआँको 'बहुला' कहते हैं। तथा अग्निवाची 'बहुल' पुंलिङ्ग है, और कृष्णवर्णाची त्रिलिङ्ग है। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, नीलिका इलायची और धेनुओं में 'बहुला' खीलिङ्ग, कृत्तिकानामक तारा में बहुवचनान्त खीलिङ्ग, आकाश में नपुंसक, आगी और कृष्णपक्ष में पुंलिङ्ग, अधिकता और श्यामता में त्रिलिङ्ग है। यह १ कृत्तिकाआदिका नाम है। स्त्रियों का शृङ्गारचेष्टाभेद और क्रियाको 'लीला' कहने हैं। एवं विश्वप्रकाशमें कहा है कि, केलि, विलास, खेल, शृङ्गार, भाव, प्रभव और क्रिया ये लीलापदवाच्य कहलाते हैं। यह १ विलासआदि का नाम है। सिटकी, वालू और चीनी को 'उपला' कहते हैं। यह पत्थर व रत्न में पुंलिङ्ग और वालू व बूरा में खीलिङ्ग है। यह १ शकर आदिका नाम है ॥ २०८ ॥

न.

न.

रुधिर, जल, (शोणितेऽम्भसि) कीलालं मूल(माद्ये शिफाभयोः) ।
प्रथम, जटा,
नक्षत्र, समूह न.

आदि. जालं (समूहआनायोगवाक्षक्षारकावपि) ॥ २०९ ॥

रुधिर और पानी को 'कीलाल' कहते हैं। यह पूर्वोक्त अर्थों में नपुंसक है। यह १ खून आदिका नाम है। पहिला, जटा या जड़ और नक्षत्रको 'मूल' कहते हैं। यह जटा, आद्य, मूलधनु, निकट, पैर, पिपलामूल, टीका आदिसे व्याख्यान करने योग्य ग्रन्थ में नपुंसक और नक्षत्रविशेष में पुंलिङ्ग है। यह १ प्रथमआदि का नाम है। समूह (गरोह), सनई या सूत से बनाहुआ रस्सी का समुदाय, झरोखा, कुछेक फूलती कली इनको 'जाल' और खीलिङ्ग में 'जाली' कहते हैं। यह झरोखा, जाल, फूलती कली, कपट और समूह में नपुंसक और कदम्बवृक्ष में पुंलिङ्ग है जैसे कि "तृण जालम्" तिनकों का समूह व जैसे मछली पकड़ने का जाल आदि, यह गरोह आदिका नाम है ॥ २०९ ॥

स्वभाव, सुयश, ^{* न.} शीलं (स्वभावे सद्वृत्ते) (सस्ये हेतुकृते) फलम् ।
 वृक्षादिफल, हेतु-
 सिद्धफल, ^{न.} छानि, नेत्ररोग, (छादिर्नेत्ररुजोः क्लीबं) (समूहे) पटलं (न ना) ॥ २१० ॥
 समूह.

स्वभाव और अच्छा यश ये दोनों 'शील' कहलाते हैं। यह पूर्वोक्त अर्थों में नपुंसकलिङ्ग है। यह १ प्रकृतिआदि का नाम है। वृक्षआदिकों का फल, और हेतु से सिद्धहुआ फल इन दोनों को 'फल' कहते हैं। यह हेतु से उपजा फल, वृक्षादिकों का फल, संपदा, लाभ, जायफल, शीतलचीनी, अनाज और वाण का अग्रभाग इनमें नपुंसक है। हेतुकृतमें जैसे कि "यागात्स्वर्गोभवति" यज्ञ करने से स्वर्ग होता है। यानी यागका फल स्वर्ग है। यह १ सस्य आदिका नाम है। घरका छावना, नेत्ररोग और समूह को 'पटल' कहते हैं। यह छानी और नेत्ररोग में नपुंसक है तथा समुदाय में पुलिङ्ग नहीं बरन स्त्रीनपुंसक है। एवं मेदिनीकोप में भी कहा है कि, फोड़ा, बिछौना आदि सामान, घरका छावना, नेत्ररोग और तिलक में 'पटल' नपुंसक और समूहमें पुलिङ्ग नहीं है। यह १ छानी आदिका नाम है ॥ २१० ॥

नीचे, स्वरूप, (अधःस्वरूपयोरस्त्री) तलं (स्याच्चाभिषे) पलम् ।
 मांस, उन्मान, ^{पु.न.} ^{न.} आर्गी, नाग-
 लोक, कपड़ा, (और्वानलेऽपि) पातालं चेलं (वस्त्रेऽधमे त्रिषु) ॥ २११ ॥
 अधम.

नीचे और स्वरूप को 'तल' कहते हैं। यह पुन्नपुंसक है। एवं मेदिनीकोपमें भी कहा है कि, स्वरूप और नीचे में 'तल' पुन्नपुंसक है, ज्यादात का वारण, जंगल, और कार्य का बीज इनमें नपुंसक, ताड़वृक्ष, चपेटा, तलवारकी मूठि और बायें हाथ से बीणा का बजाना इनमें पुलिङ्ग है। यह १ अधस्थल आदिका नाम है। बड़वानल, अपिशब्द से बिल और नागलोकको 'पाताल' कहते हैं। यह नागलोक, बिल और बड़वानल में नपुंसक है। यह १ बड़वानल आदिका नाम है। कपड़ा और अधमको 'चेल' कहते हैं। यह त्रिलिङ्ग है। एवं मेदिनीकोपमें भी कहा है कि नीचे और अधम में 'चेल' या 'चैल' त्रिलिङ्ग और वस्त्र में नपुंसक है। यह १ वस्त्रआदि का नाम है ॥ २११ ॥

नी. कीलों से भरा ^{न.} कुकूलं (शङ्कुभिः कीर्णे श्वभ्रे ना तु तुषानले) ।
 गड़हा, भूरीकी ^{न.} आग, निश्चित,
 अकेला, पूरा, (निर्णीते) केवलमिति (त्रिलिङ्गं त्वेककृत्स्नयोः) ॥ २१२ ॥
 या समग्र.

“शीलं स्वभावे सद्वृत्ते” (इति विश्वः) चरित्रमात्रेऽपि शीलं स्यादिति ॥

मनोरम आदिका नाम है । मूढ़ या क्रियाहीन, बच्चा या लड़का, अपिशब्दसे केश, नेत्रवाला, घोड़ा व हाथी की पूंछ इनको ' बाल ' कहते हैं । एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, ' बाल ' यह वालों में पुंलिङ्ग, घोड़े व हाथी आदिकी पूंछ में वाच्यलिङ्ग, बच्चे व मूर्ख में पुंलिङ्ग, नेत्रवाला में पुन्रपुंसक, कानों का भूषण व मेढ़ी में स्त्रीषन्त, छोटी इलायची और सोलहवरस से कम उमरवाली स्त्री में टावन्त है । यह १ मूढ़ आदिका नाम है । चञ्चल और तृष्णा सहित ये दोनों ' लोल ' कहलाते हैं । एवं हैमकोष में भी कहा है कि चञ्चल व तृष्णासहित में ' लोल ' यह पुंलिङ्ग और जीभ व लक्ष्मी में स्त्रीलिङ्ग है । यह १ चञ्चल आदिका नाम है ॥ २१४ ॥

इति लान्ताः ॥

अथ वान्ता व्याख्यायन्ते ॥

वन, वनाग्नि, पु. पु. **दवदावौ (वनारण्यवह्नी) (जन्महरौ) भवौ ।**
 जन्म, शिव, पु. पु.
 प्रधान, सत्ता, पु. पु.
 स्वामी, खैर, **(मन्त्रीसहायः) सचिवौ (पतिशाखिनरा) धवाः ॥ २१५ ॥**
 मनुष्य.

वन और वनकी आग ये दोनों ' दव ' या ' दाव ' कहलाते हैं । ये २ वन व वनाग्नि के नाम हैं । उत्पत्ति और शिव को ' भव ' कहते हैं । यह क्षेम, महादेव, संसार, सत्ता, प्राप्ति और जन्म (पैदाइश) में पुंलिङ्ग है । यह १ जन्म आदिका नाम है । मन्त्री (सलाहकार) और सत्ता ये दोनों ' सचिव ' कहलाते हैं । यह १ प्रधान आदिका नाम है । स्वामी या भर्ता, वृक्षभेद या खैर (कथा) और मनुष्य ये (धव) कहलाते हैं । यह धूर्त मनुष्य, स्वामी और वृक्षान्तर में भी पुंलिङ्ग है । एवं हैमकोष में भी कहा है " धवो धूर्ते नरे पत्रौ । द्रुमभेदे " धव यह धूर्त, वज्र, द्रुमभेद और धात्वर्थ से कम्पन में भी पुंलिङ्ग है । यह १ स्वामी आदिका नाम है ॥ २१५ ॥

पहाड़, भेंड़ा, पु. पु.
 सूर्य, हुक्म, **अवयः (शैलमेषार्का) (आज्ञाह्वानाध्वरा) हवाः ।**
 बुलाना, यज्ञ, पु.

सत्ता, स्वभाव, पु.
 आशय, चेष्टा, **भावः (सत्तास्वभावाभिप्रायचेष्टात्मजन्मसु) ॥ २१६ ॥**
 आत्मा, जन्म.

पर्वत, भेंड़ा और सूर्य तथा " छाग, मूपिककम्बल और प्रभु " ये ' अवि ' कहलाते हैं । यह पृथ्वी और रजोवती नारी में स्त्रीलिङ्ग, वायु, प्राकार और दीप्ति में पुंलिङ्ग है । यह १ पहाड़ आदिका नाम है । आज्ञा (हुक्म) पुकारना या बुलाना और याग को ' हव ' कहते हैं । यह १ निदेश आदिका नाम है । विद्यमानता, प्रकृति, आशय, चेष्टा, अपनपो, यज्ञ, धृति, बुद्धि, परमात्मा, स्वभाव, ब्रह्म या देह और पैदा-

इश इनको ' भाव ' कहते हैं । यह सत्ता, स्वभाव, अभिप्राय, चेष्टा, आत्मा, जन्म, क्रिया, लीला, पदार्थ, विभूति, बन्धु, प्राणी और रति आदिभों में भी पुंलिङ्ग है ।
 " सत्तायां यथा घटभावः, पटभावो वा " आत्मनि यथा " स्वभावं भावयेद्योगी " सत्ता में जैसे घटका होना, कपड़े का होना आत्मा में जैसे कि योगीलोग अपने भावकी भावना करें आदि जानना चाहिये । यह १ सत्ता (होना) आदि का नाम है ॥ २१६ ॥

उत्पत्ति, फल, ^{पु.} (स्यादुत्पादे फले पुष्पे) प्रसवो (गर्भमोचने) ।
 फूल, गर्भप्रसव,
 अविश्वास,
 अपहव, शठता. ^{पु.} (अविश्वासेऽपहवेऽपि निवृत्तावपि) निहवः ॥ २१७ ॥

उत्पत्ति, फल, फूल, गर्भमोचन (पैदाइश) और अपत्य को भी ' प्रसव ' कहते हैं । यह गर्भमोचन, उत्पत्ति, अपत्य, फल और फूल में भी पुंलिङ्ग है । यह १ उत्पत्ति आदि का नाम है । विश्वासहीन, अपलाप या बकवाद और शठता ये ' निहव ' कहलाते हैं । यह शठता, अविश्वासता, और बकवाद में पुंलिङ्ग है । यह १ विश्वासरहित आदिका नाम है ॥ २१७ ॥

ऊपर उठाना,
 चाहनाकी उ- ^{पु.} (उत्सेकामर्षयोरिच्छाप्रसवे मह) उत्सवः ।
 पज, उछाह,
 प्रभाव, ज्ञान- ^{पु.}
 का निश्चय, अनुभावः (प्रभावे च सतां च मतिनिश्चये) ॥ २१८ ॥
 भावका बोधक.

ऊपर उठाना या सींचना, कोप, अभिलाषा या वाञ्छा की उत्पत्ति या इच्छा के फैलाव का वेग, क्षण या आनन्द का वेग इनको ' उत्सव ' कहते हैं । यह उछाह, सींचना, मनोरथ की पैदाइश और कोप में पुंलिङ्ग है । यह १ उद्रेक आदिका नाम है । प्रताप, सज्जनों की मति का निर्णय यानी ज्ञान का निश्चय च शब्दसे भावसूचक को भी ' अनुभाव ' कहते हैं । यह प्रभाव, निश्चय और भावबोधक में पुंलिङ्ग है यह १ प्रभाव आदिका नाम है ॥ २१८ ॥

जन्म का कारण, ^{पु.} (स्याज्जन्महेतुः) प्रभवः (स्थानं चाद्योपलब्धये) ।
 ज्ञान का पहला
 स्थान, शूद्रा में ^{पु.}
 ब्राह्मणसे उपजा (शूद्रायां विगतनये शस्त्रे) पारश्वो (मतः) ॥ २१९ ॥
 बालक, फरसा.

जन्म का हेतु यानी पैदाइश का आधिकारण और पहले ज्ञान का स्थान इन दोनों को ' प्रभव ' कहते हैं । यह जलमूल, जन्महेतु, पराक्रम और ज्ञान का पहला स्थान इनमें पुंलिङ्ग है । जन्मका हेतु जैसे कि पिता आदि और ज्ञानके पहले स्थानमें

जैसे कि ' गङ्गा प्रभवो हिमवान् ' गङ्गाके ज्ञान का पहला स्थान हिममानामक पहाड़ है । यह १ जन्महेतुआदि का नाम है । शूद्रा में ब्राह्मण से उपजा हुआ बालक और फरसानामक हथियार ये दोनों ' पारशव ' कहलाते हैं । यह पूर्वोक्त अर्थों में पुंलिङ्ग है । एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि परस्त्री का पुत्र, फरसा और द्विजसे शूद्रा में जना हुआ बालक इन तीनों में ' पारशव ' पुंलिङ्ग है । यह १ शूद्रा में ब्राह्मण से उत्पन्न हुए पुत्र आदिका नाम है ॥ २१६ ॥

पु. *
ताराभेद, नि-
श्चित, हमेशा,
ज्ञाति, आत्मा, पु.
आत्मीय और धन.
ध्रुवो (भभेदे क्लीबे तु निश्चिते शाश्वते त्रिषु) ।
पु.स.न. पु.न.
स्वो (ज्ञातावात्मनि) स्वं (त्रिष्वात्मीये) स्वो (स्त्रियांधने) २२०

ताराभेद, निश्चित और नित्य को ' ध्रुव ' कहते हैं । यह नक्षत्रविशेष में पुंलिङ्ग, निश्चित में नपुंसक और शाश्वत (हमेशा) में त्रिलिङ्ग है । एवं विश्वकोष में कहा है कि, कीला, शंकर, टूट, वसुभेद, योगभेद, वरगद और मुनि में ' ध्रुव ' पुंलिङ्ग, मूर्वा स्वनामख्यातलताविशेष या चिनार, शालिपर्णी, गीतिभेद और सुवाभेद में स्त्रीलिङ्ग, निश्चित व तर्क में नपुंसक और निश्चल तथा शाश्वत में त्रिलिङ्ग है । एवं मेदिनीकोष में भी कहा है " ध्रुवः शङ्खौ हरे विष्णौ वटे चोत्तानपादजे । वसुयोगभिदोः पुंसि क्लीवं निश्चिततर्कयोः " खूंटा या टूठवृक्ष, महादेव, विष्णु, वरगद, उत्तानपाद राजा का पुत्र, वसुभेद और योगभेद में ' ध्रुव ' पुंलिङ्ग है । निश्चित और तर्क (दलील) में नपुंसक है । यह १ ताराभेद या उत्तरकेन्द्र आदिका नाम है । सगोत्र, आत्मा (क्षेत्रज्ञ) आत्मीय और धन को ' स्वः ' कहते हैं । यह ज्ञाति व आत्मा में पुंलिङ्ग, आत्मीय में त्रिलिङ्ग और धन में पुंनपुंसक है । एवं हेमचन्द्र व मेदिनीकोष में भी कहा है कि स्व शब्द आत्मा व ज्ञाति में पुंलिङ्ग, आत्मीय में त्रिलिङ्ग और धन में पुंनपुंसक है । यह १ ज्ञाति आदिका नाम है ॥ २२० ॥

स.
नारा, राज-
पुत्रादि के पास
गिरवी धरना, स. †
मूलधन, पार्वती, न.
सियार, कलह,
जोड़ा.
(स्त्रीकटीवस्त्रबन्धेऽपि) नीवी (परिपणोऽपि च) ।
शिवा (गौरीफेरवयो) द्वन्द्वं (कलहयुग्मयोः) ॥ २२१ ॥

स्त्री की कमर में वस्त्र का बन्धन यानी कमरबन्द, इज्जारबन्द या नारा, राजपुत्र आदि के पास गिरवी रखना या उसके धन का अदल बदल करना और आपिशब्द से

* " जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च " (इति भागवतम्) ॥

† " गौरी त्वसंजातरजःकन्याशंकरभार्ययोः । रोचनीरजनीपिङ्गाश्रियङ्गुवसुधासु च । आपगाया विशेषेऽपि यादसां पतियोषिति " (इति कोषान्तरम्) ॥

बनियों का मूलवन (पूंजी) इनको 'नीवी' या 'नीवि' कहते हैं। यह नाग, मूलधन और परिपण में स्त्रीलिङ्ग है । यह १ इज्जारवन्द आदिका नाम है । पार्वती, आठ वर्ष की लड़की, वरुणभार्या, नदीविशेष, पृथ्वी, हल्दी, दारुहल्दी, गोरोचना, राई, पीपल, ककुनी, कुटकी, मंजीठ, सफ़ेद दूब, मोगरा या बेला, तुलसी, पीला केला या सूक्ष्म जटामांसी और सियार या राक्षस इनको ' शिवा ' कहते हैं । यह भुई आंवला या जूही, हड़, आंवला, पार्वती, सियारी और छिउकरा वृक्ष में स्त्रीलिङ्ग है । यह १ गौरी आदिका नाम है । विवाद या लड़ाई भगड़ा, जोड़ा या दो से मिला जुला ये ' द्वन्द्व ' कहलाते हैं । यह पूर्वोक्त अर्थों में नपुंसक है और " चार्थेद्वन्द्वः " इस सूत्र के निर्देश से पुलिङ्ग भी है । एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि रहस्य, कलह, स्त्री पुरुष का जोड़ा और युगल या मिथुनराशि को ' द्वन्द्व ' कहते हैं । यह १ लड़ाई आदिका नाम है ॥ २२१ ॥

न.

धन, प्राण,
निश्चय,
हिजड़ा, बधिया
बैल, डरपोक
या कायर.

(द्रव्यासुव्यवसायेषु) सत्त्व (मस्त्री तु जन्तुषु) ।

क्लीवं (बं) (नपुंसके षण्ठे वाच्यलिङ्गमविक्रमे) ॥ २२२ ॥

इति वान्ताः ।

धन—दौलत—सारपदार्थ या औषध, प्राण, निश्चय और प्राणीमात्र को ' सत्त्व ' कहते हैं । यह द्रव्य, प्राण व व्यवसाय में नपुंसक और प्राणीमात्र में पुन्नपुंसक है । एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि गुण, पिशाच आदि, बल, द्रव्य, स्वभाव, आत्मा, व्यवसाय, प्राण और वित्त में ' सत्त्व ' नपुंसक और जीवमात्र में पुन्नपुंसक है । यह १ द्रव्य आदिका नाम है । नपुंसक=नामर्द, खोजा, हिजड़ा और बधिया बैल, तथा अलस, (सुस्त) अपौरुष, सामर्थ्यहीन, कायर या डरपोक को ' क्लीव ' या ' क्लीव ' कहते हैं । यह नपुंसक, षण्ठ या शण्ठ में पुन्नपुंसक और सामर्थ्यहीन में वाच्यलिङ्ग यानी त्रिलिङ्ग है । एवं रुद्रकोष में भी कहा है कि नामर्द में क्लीवशब्द पुन्नपुंसक और डरपोक या कायर में वाच्यलिङ्ग है । यह विश्व—हैम—व मेदिनीकोष में भी यणान्तों में ही पढ़ागया है और " क्लीव आधाप्रथे " धातुभी वान्त और ब—व की सवर्णता भी है इस लिये विद्वानों को वान्त व वान्तभी जानना चाहिये । यह १ नपुंसक आदिका नाम है ॥ २२२ ॥

इति वान्ताः ॥

अथ शान्ता व्याख्यायन्ते ॥

ननियां, मनुष्य, (द्रौ) विशौ (वैश्यमनुजौ) (द्रौ) चराभिमरौ) स्पशौ ।

दूत, लड़ाई,
समूह, भेषादि,
वंश या बांस.

(द्रौ)राशी(पुञ्जमेषाद्यौ)(द्रौ)वंशौ(कुलमस्करो)॥ २२३ ॥

बनियां और मनुष्य ये दोनों 'विश्व' कहलाते हैं। एक वचन में विट् व द्विवचन में 'विश्वौ' होते हैं। एवं विश्वकोष में भी कहा है कि, वैश्य वर्णभेद, मनुज और प्रवेश को विट् कहते हैं। यह शान्त होकर पुलिङ्ग है। यह १ बनियां आदिका नाम है। गूढ़ पुरुष या अपने व दूसरे राज्य का भेद जानने के लिये राजा के हुक्म से इधर उधर घूमनेवाला, दूत या चलनेवाला या हलकारा आदि, युद्ध या मरने की अपेक्षा छोड़ कर किये युद्ध का उत्साह इनको 'स्पश' कहते हैं। यह १ दूत आदिका नाम है। समूह और मेष, वृषभ आदिको 'राशि' कहते हैं। यह मेष आदि बारह राशियों तथा समुदाय में पुलिङ्ग है। यह १ पुत्र आदिका नाम है। सजातिसमूह या गण, बांस या छेदसमेत बांस ये दोनों 'वंश' कहलाते हैं। यह बांस, कुल, वर्ग और पीठ आदिके अवयव में भी पुलिङ्ग है "वंशःसंघेऽन्वये वेणौ पृष्ठाद्यवयवेऽपि च" (इति हैमः) समुदाय, वंश, बांस और पृष्ठवंश ये 'वंश' कहलाते हैं। यह १ कुल आदिका नाम है ॥ २२३ ॥

एकान्त, प्रकाश, (रहःप्रकाशौ) वीकाशौ निर्वेशो (भृतिभोगयोः) ।
 तनूस्वाह, भोग,
 यमराज, क्षुद्र,
 अधम, किसान. (कृतान्ते पुंसि) कीनाशः (क्षुद्रकर्षकयोस्त्रि) ॥ २२४ ॥

विजन, गोप्य, रमण या याथार्थ्य और प्रकाश या घाम इनको वीकाश या विकाश कहते हैं। यह विजन व प्रकट में पुलिङ्ग है। यह १ एकान्त आदिका नाम है। वेतन या (तनूस्वाह) भरण-पोषण आदि, उपभोग या भोजन आदिकों से उपजे हुए सुख का अनुभव करना इनको 'निर्वेश' कहते हैं। यह भोग, वेतन, मूर्च्छन और स्थान में पुलिङ्ग है। यह १ वेतन मजदूरी या मासिक आदिका नाम है। यमराज, क्रूर, अधम, अल्प और किसान या खेती करनेवाला ये 'कीनाश' कहलाते हैं। यह यमराज में पुलिङ्ग, क्षुद्र और कर्षक में त्रिलिङ्ग है। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है। कि, किसान, क्षुद्र और एकान्तघाती में वाच्यलिङ्ग और यमराज में पुलिङ्ग है। यह १ यम आदिका नाम है ॥ २२४ ॥

स्थान, निशाना,
 कारण, जल (पदे लक्ष्ये निमित्ते) उपदेशः (स्या) त्कुश (मप्सु च) ।
 आदि, अनेक-
 वस्था, दीपव- स.
 तिका, वस्त्र स.†
 छीर, चाहना, दशा(वस्थानेकविधाऽ) प्याशा (तृष्णापि चायता) २२५
 पूर्वादि दिशा.

उद्योग, विचार या अभिप्राय, रक्षा करना, स्थान, चिह्न, पाँव, सर्ववस्तु, सुप्रसिद्ध-

† " तृष्णायां यथा-आशा हि परमं दुःखं नैराश्यं परमं सुखम् " (इति भागवतम्) ॥

रूप, प्रदेश, छल या निशाना और हेतु या कारण ये 'अपदेश' कहलाते हैं। यह लक्ष्य (उद्देश्य) निमित्त और व्याज (कपट) में पुंलिङ्ग है। यह १ पद आदिका नाम है। जल और चशब्दसे द्वीप, जुवां में बैल जोड़ने की रस्सी (जोत) कुश और रामजीका पुत्र इनको 'कुश' कहते हैं। यह जल में नपुंसक और अन्य अर्थों में पुंलिङ्ग है। एवं विश्वकोष में भी कहा है। कि, रामसुत, डाम, योक्त् और द्वीप में 'कुश' पुंलिङ्ग और पानीय में नपुंसक है। यह १ जल आदिका नाम है। बाल्यादिरूप अवस्था, अपिशब्द से दिया की बत्ती और वस्त्र का किनारा या छीरा इनको 'दशा' कहते हैं। यह अवस्था व बत्ती में स्त्रीलिङ्ग है। और वस्त्रके छीरा में स्त्री लिङ्ग होकर बहुवचनान्त है। यह १ बाल्यादि अवस्था का नाम है। बड़ी चाहना अपिशब्द से दिशा को भी 'आशा' कहते हैं। यह १ तृष्णा आदिका नाम है २२५॥

स.

स.

नारी, हथिनी,
ज्ञान, ज्ञाता,
आँखआदि,
साहसिक,
कठिन, दुःपरी
आदि.

वशा (स्त्री करिणी च स्या) दृ दृग् (ज्ञाने ज्ञातरि त्रिषु) ।

पु.स.न.

(स्या) तर्कशः (साहसिकः कठोरामसृणावपि) ॥२२६॥

लुगाई या औरत, हथिनी चशब्दसे बहिला गौ और लड़की इनको 'वशा' कहते हैं। यह पूर्वोक्त अर्थों में स्त्रीलिङ्ग है। एवं हैमकोष में भी कहा है कि, नारी, बहिलागाय, हथिनी और लड़की में 'वशा' स्त्रीलिङ्ग है। यह १ स्त्री आदिका नाम है। ज्ञान या बुद्धि, ज्ञाता (जाननेवाला) या देखनेवाला, आँखें और दर्शन ये 'दृक्' कहलाते हैं। यह ज्ञान व ज्ञाता में त्रिलिङ्ग और चशब्द के अनुवर्तन से नयनों व दर्शनों में स्त्रीलिङ्ग है। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, दर्शन और नेत्रों में 'दृक्' स्त्रीलिङ्ग, बुद्धि व देखनेवाले (द्रष्टा) में त्रिलिङ्ग है। यह १ ज्ञान आदिका नाम है। इसके अनन्तर वर्गसमाप्ति पर्यन्त 'त्रिषु' इसका अधिकार किया जाता है—विवेक रहित—मिथ्यावादी—मनुष्यों के मारडालने आदि में तत्पर या चोर आदि, कठोर या कठिन और जो चिकना न हो या बड़ी मुश्किल से छुवा जावे इनको 'कर्कश' कहते हैं। यह त्रिलिङ्ग है। एवं विश्वकोष में भी कहा है कि, परुष, क्रूर, कृपण (कंजूस) निर्दय, दृढ़ (ठोस) ईर्ष्य या गन्ना साहसिक, कसौंधी और कबीला ये 'कर्कश' कहलाते हैं। यह १ एकाएकी बिना विचारे काम करनेवाले आदिका नाम है ॥ २२६ ॥

बड़ा प्रसिद्ध, पु.स.न.

पु.स.न.

प्रहास, घाम,
खिलना, बन्ना
या लड़का व
मूढ़ आदि.

प्रकाशो (प्रतिप्रसिद्धेऽपि) (शिशवन्ने च) वालिशः ॥

इति शान्ताः ।

बड़ा प्रसिद्ध या महाविख्यात अपिशब्द से बड़ा हास, घाम, और खिलना ये 'प्रकाश' कहलाते हैं । यह त्रिलिङ्ग है । एवं विश्वकोष में भी कहा है कि, महाप्रसिद्ध, प्रहास (ठाकर बहुतही हँसना) घाम, फूला या साफ़ इनको प्रकाश कहते हैं । यह १ बड़े विख्यात आदिका नाम है । बच्चा, लड़का या ऊंट का बच्चा, जड़ (अज्ञानी) या मूर्ख ये 'वालिश' कहलाते हैं । यह त्रिलिङ्ग है । एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि बच्चा और मूर्ख को 'वालिश' कहते हैं । यह १ छोटे से बच्चे आदिका नाम है ॥

इति शान्ताः ।

अथ षान्ता व्याख्यायन्ते ।

देवता, मछली, (सुरमत्स्याव) निमिषौ पुरुषा (वात्ममानवौ) ॥ २२७ ॥
 परमात्मा, मनुष्य, कौआ, (काकमत्स्यात्वगौ) ध्वाङ्क्षौ कक्षौ (तु तृणवीरुधौ) ।
 बगला, तृण या घाम, लता.

देवता और मछली को 'अनिमिष' कहते हैं । यह १ देवता आदिका नाम है । परमात्मा और मनुष्य को 'पुरुष' कहते हैं । यह पुरुष, सांख्यशास्त्र का ज्ञाता और पुत्रागवृक्ष इनमें पुलिङ्ग है । यह १ पुरुष आदिका नाम है । कौआ और बगला या बगला ये दोनों 'ध्वाङ्क्ष' कहलाते हैं । यह पूर्वोक्त अर्थों में पुलिङ्ग है । एवं मेदिनी कोष में भी कहा है कि बगला, कौआ, भिखारी या मंगता और सर्प को 'ध्वाङ्क्ष' कहते हैं । यह १ कौआ आदिका नाम है । घास फूस, तिनका या खर और लता या बेल इन दोनों को 'कक्ष' कहते हैं । यह पूर्वोक्त अर्थों में पुलिङ्ग है । एवं धरणी-कोष में भी कहा है कि बगल या (कांख) जङ्गल, बेल, सूखा तिन और कछारा को 'कक्ष' कहते हैं । यह पुलिङ्ग है । एवं डाह का घर, स्त्रियों के कमरकी कंभनी, गथ का बैठका, राजमहलों की ड्योढ़ी, हाथी के कमरबन्धन की रस्सी और धोतीकी कांच तथा दफ़ा आदिको भी 'कक्षा' कहते हैं । यह १ तिनका या घास आदिका नाम है ॥ २२७ । ३ ॥

घोड़े की पगही, (अभीषुः (प्रग्रहे रश्मौ) प्रैषः (प्रेषणमर्दने) ॥ २२८ ॥
 किरण, भेजना या हुक्म देना, मर्दन करना.

घोड़े आदिकों की रस्सी या पगही और किरण इन दोनों को 'अभीषु' या 'अभीषु' कहते हैं । यह पूर्वोक्त अर्थों में पुलिङ्ग है । यह १ पगही या पगहा आदिका नाम है । भेजना या हुक्म देना, मारना या पीटना ये दोनों 'प्रेष' या 'प्रेष' कहलाते हैं । यह भेजना, लेश देना, मर्दन करना और पागलपना इनमें पुलिङ्ग है । यह १ प्रेषण यानी प्रेरणा करना या पठावना आदिका नाम है ॥ २२८ ॥

सहाय, आधा पु.
मास आदि,
पगड़ी, मुकुट,
महावीर्यवान्,
मूसा, श्रेष्ठ,
धर्म, बैल.

पक्षः (सहायेऽप्यु) णीषं (शिरोवेष्टकिरीटयोः) ।

(शुक्रले मूषिके श्रेष्ठे सुकृते वृषभे) वृषः ॥ २२६ ॥

सहाय, सहचर या अनुकूल अपिशब्द से आधा महीना, चिड़ियों का पंख, बाण के पुंख का पत्र, केशसमूह, समुदाय, बल, सखा, चूल्हे का मुख, पांजर, तरफदार और घोड़े व हाथी का पार्श्वभाग इनको ' पक्ष ' कहते हैं । एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, मास का आधा यानी आधेरा उजैला पाख, पांजर, ग्रह, साध्य, विरोध, जुल्फ या जूरा, जत्था-दल, टोली या तड़, बल, मित्र, सहाय, चूल्हे का छेद, पखे-रुओं का पंख, वाजी और कुञ्जर का पार्श्वभाग ये ' पक्ष ' कहलाते हैं । यह १ सहाय आदिका नाम है । शीश बाँधने का वस्त्रविशेष (पगड़ी) और मुकुट को ' उष्णीष ' कहते हैं । यह पगड़ी, किरीट और लक्ष्णान्तर में नपुंसक है । यह १ शिरवन्द आदिका नाम है । बड़े वीर्यवाला या अण्डकोष, मूसा या चूहा, पूज्य या राजा, धर्म और बैल इनको ' वृष ' कहते हैं । यह पूर्वोक्त अर्थों में पुंलिङ्ग है । एवं मेदिनीकोष में भी कहा है । कि, धर्म, बैल, काकड़ासिंगी, पुरुषविशेष, राशिभेद, श्रेष्ठ, उत्तर में टिका, अडूसा, मूसा और महावीर्यवाले ये वृष कहलाते हैं । यह १ महावीर्यवान् आदिका नाम है ॥ २२६ ॥

फूलती कली, पु.न.
तलवार का घर,
खजाना, सौ-
गन्द, जूआ,
पाशा, चौपड़,
इन्द्रियां, जूआ,
सोलहमाशे, रथ
का पहिया, लेन
देन, बहेड़ा.

कोषो (स्त्री कुङ्मले खड्गपिधानेऽर्थौघदिव्ययोः) ।

(व्यूतेऽक्षेशारिफलकेऽप्याकर्षोऽथाक्ष(मिन्द्रिये) ॥ २३० ॥

(ना व्यूताङ्गे कर्षे चक्रे व्यवहारे कलिद्रुमे) ।

कुछेक फूलती हुई कली, तलवार का म्यान, धनसमूह- (खजाना) सौगन्द या स्वर्गीयपदार्थ इनको ' कोष ' कहते हैं । यह पुन्रपुंसक है । एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, मुकुल यानी फूलनेवाली कली, इसपार उसपार का बीच या बरतन शपथ, खड्ग का घर, जायफल, धनसमूह, अण्डा, अनेकार्थाभिधान (डिक्शनरी) ये कोष या कोश कहलाते हैं । यह पुन्रपुंसक है और पूर्वोक्त अर्थों में तालव्यान्त भी है । यह १ कुछेक खिलीहुई कली आदिका नाम है । जूआ, पाशा, चौपड़ खेलने का सामान अपिशब्द से धनुर्धारियों के धनुष का अभ्यास और खलिहान में धान्य बटोरने का पांचा ये ' आकर्ष ' कहलाते हैं । यह पूर्वोक्त अर्थों में पुंलिङ्ग है । एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, जूआ, इन्द्रियां, पाशा, चौपड़, धनुष का अभ्यास

और आकर्षण को भी 'आकर्ष' कहते हैं । यह पुलिङ्ग है । यह १ जूआ आदिका नाम है । इन्द्रियवाची 'अक्ष' नपुंसक और जूआ, मानभेद (बारह या सोलह माशे) रथका पहिया, लेनदेन का व्यवहार और बहेड़ा इनमें पुलिङ्ग है । एवं विश्व-कोप में भी कहा है कि एक तोला या सोलहमाशे, बहेड़ा, रथका चाक, गाड़ा, लाभ-स्वर्च की चिन्ता, आत्मज्ञाता, पाशा इन अर्थों का वाची 'अक्ष' पुलिङ्ग और तूतिया, सोंचरनमक व इन्द्रियों का वाची नपुंसक है । यह १ इन्द्रिय आदिका नाम है ॥ २३० ॥

जीविका, विदु- पु.

वांकण्डा, नदी

मात्र या

तलैया.

स.

‡

कर्षू (वार्ता करीषाग्निः) कर्षूः (कुल्याभिधायिनी) २३१ ॥

जीविका या रोजी, बिनुवां कण्डों की आग और नदीमात्र या तलैया ये 'कर्षू' कहलाते हैं । जीविका व नदीमात्र में 'कर्षू' खीलिङ्ग और उपलों की आग में पुलिङ्ग है । एवं रभसकोष में भी कहा है कि, सूखे कण्डों की आग का वाची 'कर्षू' पुलिङ्ग और नदीमात्र का वाची खीलिङ्ग है । यह १ जीविका आदि का नाम है ॥ २३१ ॥

पुरुषपना, पु-

रुषकर्म, जल

जहर, घूस

लेना आदि,

धर्म, गुनाह,

पाप, रोग.

न.

न.

(पुंभावे तत्क्रियायां च) पौरुषं विष (मत्सु च) ।

न.

न.

(उपादानेऽप्या)मिषं(स्या)दपराधेऽपि) किल्बिषम् २३२

पुरुष का भाव (पुरुषपना) और पुरुष का कर्म च शब्द से तेज या प्रताप इनको 'पौरुष' कहते हैं । यह पूर्वोक्त अर्थों में नपुंसक है । एवं विश्वकोष में भी कहा है कि, पुरुषत्व, पराक्रम, बल, पुरुषार्थ, तेज, प्रभाव या चमक तथा ऐश्वर्य में 'पौरुष' नपुंसक और पुरसा में वाच्यलिङ्ग है । यह १ पुरुषभाव आदि का नाम है । जल और च शब्द से जहर को भी 'विष' कहते हैं । यह माहुर व पानी में नपुंसक है । यह १ जल आदि का नाम है । ग्रहण करना या घूस लेना अपि शब्द से भोग्य वस्तु, संभोग और मांस ये 'आमिष' कहलाते हैं । एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि भोग्यवस्तु, संभोग, उत्कोच = (रिशवत) और मांस में भी आमिष, पुन्नपुंसक है । यह १ उपादान आदि का नाम है । अपराध, पाप, दोष, अधर्म या अन्याय अपिशब्द से रोग ये 'किल्बिष' कहलाते हैं । एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, पाप और रोग में 'किल्बिष' नपुंसक है । यह १ अपराध आदि का नाम है ॥ २३२ ॥

‡ कुल्या नदीमात्रं च । " कुल्या धुनी द्वीपवती तटिनी ह्यदिनी सरित् । रोधोवकापगा कर्षूः सवन्ती निम्नगा नदी " (इति रत्नकोषः) ॥

वर्षा, मेह, जम्बू-
द्वीप का भारत-
खण्ड, साल या
संस्कृत, नाच का
देखना, बुद्धि, स.
आराधना, माँ-
गना, तनःशाह.

पु.न.

(स्यादृष्टौ लोकधात्वंशे वत्सरे) वर्ष (मस्त्रियाम्) ।

स.

प्रेक्षा (नृत्येक्षणं प्रज्ञा) भिक्षा (सेवार्थनाभृतिः) २३३

मेघ की वर्षा, लोक के धारनेवाले जम्बूद्वीप आदि का भारतवर्ष आदि खण्ड और वरस या साल इनको ' वर्ष ' कहते हैं । यह पुन्रपुंसक है । एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि भारत आदि खण्ड, जम्बूद्वीप, वरस और वृष्टि का वाची ' वर्ष ' पुन्रपुंसक है । और वर्षाकाल का वाची स्त्रीलिङ्ग हो कर नित्य बहुवचनान्त है । यह १ वृष्टि आदि का नाम है । नाच का देखना और बुद्धि को ' प्रेक्षा ' कहते हैं अथवा " प्रेक्षा धीरीक्षणं नृत्तमिति " इस हैमकोष के प्रमाण से नाचना, देखना और बुद्धि ये तीनों ' प्रेक्षा ' कहलाते हैं । यह १ नाच आदि का नाम है । सेवा करना, माँगना और धेनन (तनःशाह) या भरण पोषण आदि इनको ' भिक्षा ' कहते हैं । एवं विश्वकोष में भी कहा है कि, भरण, पोषण, माँगना, सेवना या भजन करना और माँगी हुई वस्तु इनमें भिक्षा स्त्रीलिङ्ग है । यह १ आराधना आदि का नाम है ॥ २३३ ॥

शोभा, संपूर्ण, स.

पु.स.न.

अयम, प्रत्यक्ष, त्विट् (शोभापि) (त्रिषु परे) न्यक्षं (कात्स्न्यनिकृष्टयोः) ।

अधिकृत, अ-
प्रेम, अचि-
कण.

पु.स.न. पु.स.न.

(प्रत्यक्षेऽधिकृते) अध्यक्षोरुक्ष (स्त्वप्रेमण्यऽचिक्रणे) २३४

इति षान्ताः ॥

शोभा=छवि कान्ति या वृत्ति अपिशब्द से वाणी और रुचि को त्विट् (प्) कहते हैं । एवं रभसकोष में भी कहा है कि, कान्ति, वाणी और रुचि में पान्त (त्विट्) स्त्रीलिङ्ग है । यह १ शोभा, दमक—चमक या चाहना आदिका नाम है । इसके अनन्तर कहेजानेवाले न्यक्ष आदि तीनों शब्द त्रिलिङ्ग हैं । साकल्य या संपूर्ण और अथम या नीच अपिशब्द से परशुराम ये ' न्यक्ष ' कहलाते हैं । एवं विश्वकोष में भी कहा है कि परशुराम, संपूर्णता और निकृष्टता में ' न्यक्ष ' वाच्यलिङ्ग है । यह १ समग्र आदिका नाम है । प्रत्यक्ष यानी साक्षात्प्रमाणीकृत या सम्मुख, सामने, आगे, प्रकट, प्रसिद्ध और अधिकृत यानी नियुक्त या अधिकार किया हुआ या अधिकार पाया हुआ (मक्कूज्जा) इनको ' अध्यक्ष ' कहते हैं । एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि अधिकार पायेहुए में ' अध्यक्ष ' पुल्लिङ्ग और प्रत्यक्ष में वाच्यलिङ्ग है । यह १ प्रत्यक्ष आदिका नाम है । प्रेम का अभाव और चिक्कणतारहित ये दोनों ' रुक्ष ' कहलाते हैं । यह १ प्रेमाभाव (निठुराई) आदिका नाम है ॥ २३४ ॥

इति षान्ताः ॥

अथ सान्ता व्याख्यायन्ते ॥

दिवाकर, सफेद पंखवाला पक्षी, सूर्य, आगी, वज्रड़ा, बरस, चातक, देवता.
 (रविश्वेतच्छदौ) हंसौ (सूर्यवह्नी) विभावसू ।
 वत्सौ (तर्णकवर्षौ द्वौ) (सारङ्गाश्च) दिवोकसः ॥२३५॥

सूर्य, सफेद पंखवाला पक्षीविशेष जोकि मानसरोवर में रहता है या ब्रह्माजी का वाहन इनको 'हंस' कहते हैं । एवं विश्वकोष में भी कहा है । पक्षीविशेष, सूर्य, विष्णु, सफेद घोड़ा, योगी या मन्त्रआदि, आत्मा, परमात्मा, डारहरित, निर्लोभ राजा और जीव या प्राणवायु ये 'हंस' कहलाते हैं । यह १ दिवाकर आदिका नाम है । सूर्य, मदार, दानवविशेष और आगी को 'विभावसु' कहते हैं । यह सूर्य, हारभेद और आगी में पुंलिङ्ग है । यह १ सूर्य आदिका नाम है । गौका वज्रड़ा या पुत्रआदि और बरस ये 'वत्स' कहलाते हैं । एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि पुत्रआदि, वरस, गौका वज्रड़ा और वक्षस्थल इनको 'वत्स' कहते हैं । यह पूर्वोक्त अर्थों में पुंलिङ्ग होकर वक्षस्थल में नपुंसक है । यह १ वज्रड़ा आदिका नाम है । मृग, चातक (पपीहा) हरिण और देवता ये 'दिवोकस्' या 'दिवौकम्' कहलाते हैं । यह देवता और चातक में पुंलिङ्ग है । यह १ मृगआदि का नाम है ॥ २३५ ॥

शृङ्गार, वीर आदि, कर्ण भूषण आदि.
 (शृङ्गारादौ विषे वीर्ये गुणे सगे द्रवे) रसः ।

(पुंस्यु) तंसावतंसौ (द्वौ कर्णपूरे च शेखरे) ॥ २३६ ॥

शृङ्गार—वीर—करुणा आदि, जहर, बल या प्रभाव, खट्वा—कडुवा, तीखा आदि स्वाद, प्रीति या अनुराग, द्रवतायुक्त पदार्थ और वेग ये 'रस' कहलाते हैं । एवं विश्वकोष में भी कहा है कि, गन्धरस (बोर) तीखा आदि स्वाद, विष, राग-शृङ्गारआदि, द्रवतासमेत पदार्थ, देहकी धातु, पानी और पारा में 'रस' पुंलिङ्ग और शालईष्ट, पादरि, जीभ, पृथ्वी और काकुनि में स्त्रीलिङ्ग है । यह १ शृङ्गारआदि का नाम है । कानोंका आभरण (कर्णफूल-भ्रुमकाआदि) और शिरोभूषण (मुकुट-पगड़ी आदि) इनको उत्तंस, अवतंस या 'वतंस' कहते हैं । ये दोनों पुंलिङ्ग हैं, ये २ कर्णभूषण या शिरोभूषण के नाम हैं ॥ २३६ ॥

आठो वसुदेवता, आगी, किरण, रत्न, धन, विष्णु, बुद्धि-मान्, ब्रह्मा, हितकी चाहना, सांपकी दाढ़.
 (देवभेदेऽनले रश्मौ) वसू (रत्ने धने) वसु ।

(विष्णौ च) वेधाः (स्त्री) त्वाशी (हितांसाहदंष्ट्रयोः) २३७

देवभेद यानी देवताविशेष या एक भौतिके देवता जोकि आठ हैं (धर, ध्रुव, सोम, सावित्र, अनिल, अनल, प्रत्यूष, प्रभास) आगी या कृत्तिकानक्षत्र, किरण, घोड़े की रस्सी का वाची 'वसु' पुंलिङ्ग है । रत्न=माणिक्य, जवाहिर आदि और द्रव्यमात्र का वाची नपुंसक है । एवं उणादिकोष में कहा है कि, कुण्ड, आगी, जोते की जेवरी और किरण में 'वसु' पुंलिङ्ग तथा जल, धन और मणि में नपुंसक है । एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, आठो वसुदेवता, आगी या कृत्तिका या दीप्ति, सूखा या बगुला और राजा में 'वसु' पुंलिङ्ग है । वृद्धिनामक औषध, साला, धन तथा रत्न में नपुंसक और मीठे में त्रिलिङ्ग है । यह १ अष्टवसुदेवता आदिका नाम है । विष्णुदेव, चशब्द से बुध और ब्रह्मा को 'वेधाः †' कहते हैं । यह सान्त होकर पूर्वोक्त अर्थों में पुंलिङ्ग है । यह १ हृषीकेश आदिका नाम है । हितकी चाहना और सांप की दाढ़ इन दोनों को 'आशीः' कहते हैं । यह सान्त होकर स्त्रीलिङ्ग है । एवं कोषान्तर में भी कहा है कि आशीर्वाद, अशीस या दुआ और सांपकी दाढ़ कि 'जिससे विधाहुआ जीव जीता नहीं है' वह 'आशीः' कहलाती है । यह १ हित चाहना आदिका नाम है ॥ २३७ ॥

प्रार्थना, बड़ी स.

स.

चाहना आदि, लालसे (प्रार्थनौत्सुक्ये) हिंसा (चौर्यादि कर्म च) ।

चोरी, बध

आदि, घोड़ी, स.

स.

न.अ.

माता आदि, प्रसू(रश्वाऽपि) (भूद्यावौ) रोदस्यौ रोदसी(चते) २३८

भूमि, स्वर्ग.

माँगना और बड़ी चाहना इन दोनों को 'लालसा' कहते हैं । एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, औत्सुक्य, अधिकतृष्णा और याचना में 'लालसा' स्त्री-पुंलिङ्ग है । यह १ प्रार्थना आदि का नाम है । चोर का कर्म (चोरी करना) आदिशब्द से बाँधना, त्रासदेना, मारना, पीटना और चशब्द से बध करना ये 'हिंसा' कहलाते हैं । एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि चौर्य आदि कर्म और मार डालना इनको 'हिंसा' कहते हैं । यह १ चौर्य आदि का नाम है । घोड़ी, अपिशब्द से माता, केला और लता (बेल) इनको 'प्रसू' कहते हैं । यह पूर्वोक्त अर्थों में स्त्रीलिङ्ग है । यह १ घोड़ी आदि का नाम है । जो भूलोक और स्वर्लोक हैं उन दोनों को रोदसी व रोदसी कहते हैं इनमें पहला स्त्रीलिङ्ग हो कर द्विवचनान्त है । और दूसरा सान्त व द्विवचनान्त होकर नपुंसक है । अथवा अव्यय है जैसे कहा है कि " भूलोक और भूलोक को रोदसी, रोदसी, व रोदसी कहते हैं । इनमें पहला जीवन्त, दूसरा नपुंसक और तीसरा अव्यय है । एवं विश्वकोष में भी कहा है कि स्वर्ग-लोक और भूलोक को रोदस् और रोदसी अलग २ कहते हैं यानी भूलोक रोदम्

और भूलोक रोदसी कहलाते हैं । और इन दोनों के एक साथ कहने में भी 'रोदस्' और 'रोदसी' ये प्रयोग किये जाते हैं । यह १ द्यावाभूमी का नाम है ॥ २३८ ॥

ज्वाला, दीप्ति, नक्षत्र, प्रकाशः (ज्वालाभासोर्नपुंस्य) ^{न.} चिज्योति ^{न.} (भ्योतदृष्टिषु) ।

दृष्टि, पाप, गुनाह, पक्षी, बाल्यावस्था ^{न.+} (पापापराधयो) रागः ^{न.} (खगबाल्यादिनो) वयः ॥ २३९ ॥

आग की शिखा या आग का जलना और दीप्ति या प्रकाश को अर्चिः (स्) कहते हैं । यह इसन्त होकर पुंलिङ्ग नहीं है । एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि किरण, ज्वाला, शोभा और प्रकाश ये 'अर्चिः' (स्) कहलाते हैं । यह १ ज्वाला आदि का नाम है । नक्षत्र, प्रकाश और आँख यानी कनीनिका का मध्यभाग ये 'ज्योतिः' (इस्) कहलाते हैं । यह आगी और दिवाकर में पुंलिङ्ग, दृष्टि, नक्षत्र और प्रकाश में नपुंसक है । यह १ नक्षत्र आदि का नाम है । पाप और अपराध को 'आगः' (स्) कहते हैं । यह अपराध और पाप में नपुंसक है । यह १ पाप आदि का नाम है । पक्षी-पखेरू या चिड़िया और बाल्यावस्था आदि शब्द से यौवन को भी 'वयः' (स्) कहते हैं । एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, पक्षी, बाल्य आदि अवस्था और यौवन ये 'वयः' (स्) कहलाते हैं । यह पूर्वोक्त अर्थों में नपुंसक है । यह १ खग आदि का नाम है ॥ २३९ ॥

प्रताप, विष्टा, उत्सव, तेज, गुण, स्त्रीपुष्प, ^{न.} (तेजःपुरीषयो) वर्चो ^{न.} मह (स्तूत्सवतेजसोः) ।

राहु, अंधेरा, तीसरा गुण, ^{न.} रजो (गुणे च स्त्रीपुष्पे) (राहौ ध्वान्ते गुणे) तमः ॥ २४० ॥

प्रताप, प्रभाव या सूर्य आदिका प्रकाश और विष्टा को वर्चः (स्) कहते हैं । यह नपुंसक है । एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि रूप, विष्टा और तेज में 'वर्चः' नपुंसक तथा बुध में पुंलिङ्ग है । यह १ प्रताप आदिका नाम है । उत्सव (विवाह आदिका उल्लाह) और तेज ये दोनों महः (स्) कहलाते हैं । यह मुकुट के मत में अदन्त भी है । इसीसे मेदिनीकोष में भी कहा है कि नदीविशेष व पृथ्वी में स्त्रीलिङ्ग तथा उत्सव और तेज में नपुंसक है । यह १ उल्लाह आदिका नाम है । दूसरा गुण और स्त्रीका फूल (आर्तव या मासिकधर्म) चशब्दसे सुगन्धित फूलों की धूलि और रेगुमात्र को भी रजः (स्) कहते हैं । एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि गुणान्तर, आर्तव, पराग और रेगुमात्र ये रजः (स्) कहलाते हैं । यह नपुंसक है और अदन्त भी है । यह १ गुण आदिका नाम है । राहु, अन्धकार और गुण तथा पाप और

शोक को भी तमः (स्) कहते हैं । यह अन्धकार गुण और शोक में नपुंसक और राहु में पुंलिङ्ग है । यह १ राहु आदिका नाम है ॥ २४० ॥

अनुष्टुप्, न. छन्दः (पद्येऽभिलाषे च) तपः (कृच्छ्रादि कर्म च) ।
 मनोरथ, सान्त- पु. न. पु.
 पनादि कर्म, वल, मार्ग, सहो(बलं)सहा(मार्गो)नभः(खं)(श्रावणो)नभाः २४१ ॥
 आकाश, श्रावण मास.

अनुष्टुप्—गायत्रीआदि वृत्त, मनोरथ चशब्दसे वेद और स्वैराचार इनको छन्दः (स्) कहते हैं । यह पद्य, वेद, स्वैराचार और अभिलाष में नपुंसक है । यह १ पद्य आदिका नाम है । कृच्छ्र आदिकर्म यानी सान्तपन आदि व्रत, आदिशब्द से प्राजापत्य, चान्द्रायण आदि व्रतरूप कर्म चशब्दसे लोकभेद, धर्म, शिशिर और माघ-मास ये तपः † (स्) कहलाते हैं । यह लोकान्तर, चान्द्रायण आदिव्रत और धर्म में नपुंसक तथा शिशिर व माघ महीना में पुंलिङ्ग है । यह १ सान्तपन आदिका नाम है । मोटापन, सामर्थ्य, सैन्य और ज्योति को सहः (स्) कहते हैं । और अग्रहन मास तथा राहु या डगर ये सहाः (स्) कहलाते हैं । यहां दो प्रकार का पाठ लिङ्ग भेद के लिये जानना चाहिये. ऐसेही आगे भी जानो। यह १ बल आदिका नाम है । आकाश, श्रावणमास चशब्द की अनुवृत्ति से मेघ, पीकदान, नाक और भसीड़ा क सूत्र तथा वर्षा इनको नभः (स्) या नभाः (स्) कहते हैं । एवं विश्वकोप में भी कहा है कि आकाशवाची नभ नपुंसक तथा मेघ, श्रावण, पीकदान, नासिका और मृणालसूत्र का वाची पुंलिङ्ग और वर्षा का वाची स्त्रीलिङ्ग है । यह १ आकाश आदिका नाम है ॥ २४१ ॥

घर, आश्रय- न. पु. न. न.
 मात्र, दूध, ओकः(सन्नाश्रयश्चौ) काः पयः (क्षीरं) पयो (ऽम्बु च) ।
 पानी, प्रकाश, न. न.
 बल, बीज, ओजो (दीप्तौ बले) स्रोत (इन्द्रिये निम्नगारये) ॥२४२॥
 नदीका वेग.

घर या मन्दिर को ओकः (स्) या ओक और आश्रयमात्र या सहारामात्र को ओकाः (स्) कहते हैं । यह आश्रयमात्र में पुंलिङ्ग और मन्दिर में नपुंसक है । यह १ घर आदिका नाम है । दूध को पयः (स्) और जल को भी पयः (स्) कहते हैं । यह पूर्वोक्त अर्थों में नपुंसक है । एवं हैमकोप में भी कहा है कि क्षीर और नीर ये दोनों पयः (स्) कहलाने हैं । यह १ दूध आदिका नाम है । दीप्ति और बल को ओजः (स्) या ओज कहते हैं । यह दीप्ति, अवष्टम्भ (रुकना) प्रकाश और बल

† अदन्तोऽपि श्रीवार्धः । यथा “ तपेन वर्षाः शरदा हिमागमः ” (इति स्वामी) ॥

में नपुंसक है । और स्वामी आदिकों के मत में विषमसंख्यावाची 'ओज' अदन्त * भी है । यह १ प्रकाश आदिका नाम है । बीज, नदी का वेग या जल का वेग ये स्रोतः (स्) कहलाते हैं । यह जलवेग और शुक में नपुंसक है । यह १ वीर्य आदि का नाम है ॥ २४२ ॥

† न.

प्रभाव, प्रकाश,
असहन, बल,
शुक, पण्डित,
कूर आदि.

तेजः (प्रभावे दीप्तौ च बले शुक्रेऽप्य) तस्मिन् ।

पु.

पु.

विद्वान् (विदंश्च) बीभत्सो (हिंस्रोऽप्यतिशयेत्वमी) २४३

प्रभाव, प्रकाश, असहन, सामर्थ्य, बीज और अपिशब्द से भाम इनको तेजः (स्) कहते हैं । यह पूर्वोक्त अर्थों में नपुंसक है । एवं विश्वकोष में भी कहा है कि धाम, पराक्रम, प्रभाव और वीर्य को 'तेजः' कहते हैं । तथा मेदिनीकोष में भी कहा है कि, दीप्ति, प्रभाव, पराक्रम और रेतस् ये तेजः (स्) कहलाते हैं । यह १ प्रभाव आदि का नाम है । इसके अनन्तर वर्गसमाप्ति पर्यन्त कहेजानेवाले सान्तशब्द त्रिलिङ्ग यानी वाच्यलिङ्ग होते हैं । पण्डित, चशब्द से आत्मवेत्ता और प्राज्ञ को भी 'विद्वान्' कहते हैं । एवं विश्वकोष में भी कहा है कि आत्मवेत्ता, प्राज्ञ और पण्डित में 'विद्वान्' वाच्यलिङ्ग है । यह १ पण्डित आदिका नाम है । कूर, वातुक या हत्याग अपिशब्द से रसभेद, विकृत, अर्जुन, पापी और घृणात्मा ये 'बीभत्स' कहलाते हैं । एवं अजयकोष में भी कहा है कि विकारयुक्त, पार्थ, कूर, पापात्मा और घृणात्मा को 'बीभत्स' कहते हैं । यह १ हिंसा करनेवाले आदिका नाम है । अब आगे कहेजाने वाले ये " ज्यायान् " आदि चारों शब्द अतिशय अर्थ में वर्तमान होते हैं ॥ २४३ ॥

बूढ़ा, प्रशंस-
नीय, ज्वान,
थोड़ा, महान्,
श्रेष्ठ, साधु,
स्वीकार या
मजबूत.

पु.म.न.

पु.स.न.

(वृद्धप्रशस्यो) ज्यायान् कनीयांस्तु (युवाल्पयोः) ।

पु.स.न.

पु.स.न.

वरीयां (स्तूरुवरयोः) साधीया (न्साधुबाढयोः) ॥ २४४ ॥

इति सान्ताः ॥

अतिशय वृद्ध और प्रशंसनीय को 'ज्यायान्' स्त्री 'ज्यायसी' कहते हैं । एवं हैमकोष में भी कहा है कि अतिबूढ़ा और बड़ाईयोग्य पुरुष ये दोनों 'ज्यायान्' कहलाते हैं । यह १ अतिवृद्ध आदिका नाम है । अतिशय से युवा और अल्प को 'कनीयान्' स्त्री 'कनीयसी' कहते हैं । यह अत्यन्त जवान, अति थोड़ा और छोटे भाई में त्रिलिङ्ग है । यह १ युवाआदिका नाम है । अतिशय से महान् और

* " ओजे रवीन्द्रोः सम इन्दुरव्योः " (इति नीलकण्ठः) ॥

† " अधिक्षपावमानादिः प्रत्युक्तस्य परेण यत् । प्राणान्त्ययेऽसहनं तत्तेजः समुदाहृतम् " (इति भरतः) ॥

श्रेष्ठ को 'वरीयान्' स्त्री 'वरीयसी' कहते हैं । यह योगभेद, श्रेष्ठ, वरिष्ठ और महायुक्क में त्रिलिङ्ग है । यह १ महान् आदिका नाम है । अतिशयित सज्जन या महज्जन और अतिशयित बाढ़ यानी स्वीकार तथा मज्जबूत को भी 'साधीयान्' स्त्री 'साधीयसी' और स्त्री-ब-साधीयः' कहते हैं । यह १ साधुआदिका नाम है ॥२४४॥

इति सान्ताः ॥

अथ हान्ता व्याख्यायन्ते ॥

पत्ता, मोर का पंख, निर्बन्ध, ग्रहण, सूर्यादि, द्वार, शिरोभूषण आदि। (दलेऽपि) बर्ह (निर्बन्धोपरागाकारादयो) ग्रहाः ।

पत्ता, मोर का पंख इन दोनों को 'बर्ह' कहते हैं । यह मोरपंख और पत्तों में पुन्नपुंसक है । एवं हैमकोष में भी कहा है कि " बर्ह पणों परीवारे कलापे इति " पत्ता, परीवार और कलाप (मोरपंख) में नपुंसक है । यह १ दलआदिका नाम है । आम्रहविशेष या जिद, सूर्य चन्द्र का ग्रहण और सूर्य आदि ये 'ग्रह' कहलाते हैं । एवं विश्वकोष में भी कहा है कि, अनुग्रह, निर्बन्ध, ग्रहण, रणोद्यम, सूर्यआदि, पूतनाआदि, राहु और उपराग इनमें 'ग्रह' पुलिङ्ग है । यह १ आम्रह-विशेष आदिका नाम है । दरवाजा, शीश का आभूषण, काढ़ा का रस और घर आदिकी भीत में गड़ी हुई कील या खूँटी को 'निर्यूह' कहते हैं । यह १ द्वारआदि का नाम है ॥ २४५ ॥

तुलासूत्र, बोड़े आदिकी रस्सी, पत्नी, परिवार, ग्रहण, मूलधन, सौगन्द आदि। (तुलासूत्रेऽश्वादिश्मौ) प्रग्राहः प्रग्रहो (ऽपि च) ।

तुलासूत्र, बोड़े आदिकी रस्सी, पत्नी, परिवार, ग्रहण, मूलधन, सौगन्द आदि। (पत्नीपरिजनादानमूलशापाः) परिग्रहाः ॥ २४६ ॥

हाथसे जिसको पकड़ के तराजू से तोलते हैं वह " तुलासूत्र " या " मंझा " कहलाता है । घोड़ा आदिशब्द से बैल आदिकों की रस्सी अपिशब्द से किरण, भुजा, सोना, अर्जुनवृक्ष, बन्धन और बन्दीखाना इनको 'प्रग्राह' और 'प्रग्रह' कहते हैं । एवं हैमकोष तथा विश्वकोष में भी कहा है कि, तुलासूत्र और बैलआदिकों का बन्धन ये दोनों 'प्रग्राह' और तुलासूत्र, बन्दीखाना, नियमन=(रोकना) भुजा, बोड़े आदिकों की पगही, किरण, सोना और हरिपादप ये 'प्रग्रह' कहलाते हैं । यह १ तुलासूत्र आदिका नाम है । स्त्री, परिवार, ग्रहण या स्वीकार, मूलधन और सौगन्द इनको 'परिग्रह' कहते हैं । एवं अजयकोष में भी कहा है कि भार्या,

मूलधन, अङ्गीकार, सौगन्द, परिवार और राहु के मुख में समायाहुआ सूर्य ये 'परिग्रह' कहलाते हैं । यह १ पत्नी आदिका नाम है ॥ २४६ ॥

स्त्री, वरस्त्री की कमर, समूह, वृत्रासुर, आगी, पु. (दारेषु च) गृहाः (श्रोण्यामप्या)ऽऽरोहो (वरस्त्रियाः) ।
चन्द्रमा, सूर्य पु. व्यूहो (वृन्देऽप्य)हि (वृत्रेऽप्य) (ग्रीन्द्कर्का)स्तमोपहाः २४७
आदि.

स्त्री, अपि शब्दसे घर इन दोनों को 'गृह' कहते हैं । यह पुंलिङ्ग होकर बहुवचनान्त है । और नपुंसकभी है । एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि भार्या और मन्दिर में 'गृह' नपुंसक व पुंलिङ्ग है जहां पुंलिङ्ग है वहां नित्य बहुवचनान्त रहता है । यह १ गृहिणी आदि का नाम है । उत्तम स्त्री की कमर अपिशब्द से वरगद की जटा, चढना, गजारोह, दीर्घता और उच्चता ये 'आरोह' कहलाते हैं । एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि वरगद की जटा, वराङ्गना की कमर, आरोहण, गजारोह, लम्बाई और उँचाई में 'आरोह' पुंलिङ्ग, है । यह १ वरस्त्री की कमर आदि का नाम है । समूह, अपिशब्द से तर्क, निर्माण और सेना का रीतिविशेष से ठहराना इनको 'व्यूह' कहते हैं । एवं विश्वकोष में भी कहा है कि, सेना को रीतिविशेष से टिकाना, निर्माण, (बनावट) रचनासमूह और तर्क (शास्त्रार्थ या दलील) इनमें 'व्यूह' पुंलिङ्ग है । यह १ समूह आदिका नाम है । वृत्रासुर और अपि शब्द से सर्प इन दोनों को 'अहि' कहते हैं । एवं विश्वकोष में भी कहा है कि, वृत्रासुर और सांप का वाची 'अहि' पुंलिङ्ग है । यह १ वृत्र आदि का नाम है । आगी, चन्द्रमा और सूर्य ये 'तमोपह' कहलाते हैं । एवं विश्वकोष में भी कहा है कि, सूर्य, चन्द्र, जिन और आगी को 'तमोपह' कहते हैं । यह १ आगी आदि का नाम है ॥ २४७ ॥

उपकरण या वि औना आदि सा (परिच्छदे नृपाहेंऽर्थे) परिवर्हो (ऽव्ययाः परे) ।
मान, राजा के योग्य वस्तु.

इति हान्ताः ॥

उपकरण या पुरस्कर, साज, बिछौना, ढपना, सभा, रक्षक आस्तरण या हाथियों की भूल आदि सामान और राजा के योग्य वस्तु को भी 'परिवर्ह' कहते हैं । अथवा वस्त्र, आभूषण, परिवार, हाथी, घोड़ा, रथ आदि या पैदल और राजा के योग्य द्रव्य, सफ़ेद छाता व चमर आदि ये 'परिवर्ह' कहलाते हैं । इसके अनन्तर कहे जाने वाले जो आर्क् आदि शब्द हैं वे 'अव्यय' कहलाते हैं—जैसे कहा है कि " सट्शं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु । वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम् " जोकि तीनों लिङ्ग, सातों विभक्तियाँ, एकवचन, द्विवचन और बहुवचन में समान बना रहता है और उसमें कुछ विकार नहीं पायाजाता वह अव्यय कहाजाता है । यहां हान्तवर्गों में कहना पूर्व के समान नानार्थत्वबोधनार्थक है ॥ इति हान्ताः ॥

अथ अव्यया व्याख्यायन्ते ॥

अल्पार्थ, अभि-
व्याप्ति, मर्या-
दार्थ, क्रिया
योगज.

आडीषदर्थेऽभिव्याप्तौ सीमार्थं धातुयोगजे ॥ २४८ ॥

अल्पार्थ, अभिव्याप्ति, मर्यादार्थ और क्रियायोगज इन अर्थों का वाची 'आड्' है। एवं सिद्धान्त में भी कहा है कि ईषत् अर्थ, क्रियायोग, मर्याद और अभिविधि में वर्तते हुए इस 'आ' को द्विसंज्ञक जानो और वाक्यारम्भ व स्मरण में अङ्गिन् जानना चाहिये। अल्पार्थ में जैसे कि 'आपिङ्गलः' कुछेक पीला है। अभिव्याप्ति में जैसे "आसत्यलोकात् सत्यलोकमभिव्याप्य आपातालात्पातालमभिव्याप्य देवो विहरति" सत्यलोक और पाताललोक में व्याप्त होकर देवता विहार करता है। मर्यादा में जैसे कि "आसमुद्रं राजदण्डः" समुद्रपर्यन्त राजदण्ड है। क्रियायोग में जैसे कि, "आक्रामति धूमो हर्म्यतलात्" धनियों के घरसे धुआं निकलता है। आदि जानना चाहिये ॥ २४८ ॥

स्मरण, वाक्या-
रम्भ, कोप, पीड़ा,
पाप, निन्दा, थोड़ा,
घुड़कना या ला-
नत.

आ (प्रगृह्यः स्मृतौ वाक्येऽप्यास्तु(स्यात्कोपपीडयोः)।

(पापकुत्सेषदर्थे)कु धिग्नि(र्भर्त्सननिन्दयोः) ॥ २४९ ॥

स्मरण, वाक्यारम्भ, अपि शब्दसे अनुकम्पा और समुच्चय में विद्यमान 'आ' यह प्रगृह्यसंज्ञक होता है। प्रगृह्यसंज्ञा होनेसे "प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्" इस सूत्र से प्रगृह्यसंज्ञक अच् के परे नित्यही प्रकृतिभाव से रहता है यानी सन्धि को नहीं प्राप्त होता है। स्मरण में जैसे 'आ एवं किल तत्' हां सत्य वह ऐसाही है, वाक्यारम्भ में जैसे 'आ एवंतु मन्य से' क्या अब तुम ऐसाही मानते हो? 'आः' यह जो सविसर्ग निपात है वह कोप और पीड़ा में विद्यमान रहता है। कोप में जैसे 'आः पाप किं विकत्थसे' आः पापिन् ! क्या तू बड़बड़ाता है। और पीड़ा में जैसे 'आः शीतं वर्तते' आः ठंडा है। 'कु' यह पाप, निन्दा और अल्पार्थ तथा निवारण में भी वर्तता है। पाप में जैसे 'कुर्मपरोऽयं जनः' यह प्राणी पापपरायण है। निन्दा में जैसे 'कापथोऽयं देशो वर्तते' यह देश बुरी रास्ता वाला है, अल्पार्थ में जैसे 'क-वोष्णं जलं शीते रोचते' जाड़े में कुछेक गरम जल अच्छा लगता है। अपकार शब्दों से भयका उपजाना, निर्भर्त्सन है और दोषों का कीर्तन करना निन्दा कहलाती है इन दोनों अर्थों का वाची 'धिक्' है। निर्भर्त्सन में जैसे 'धिक् त्वां ताडनार्ह-

१ तेन सहेत्यभिविधिः । तेन विना मर्यादा ॥

२ "आः किमेतदितिक्रोधादामाव्य महिषासुरः" (इति मार्कण्डेयपुराणम्) ॥

मनध्ययनशीलम् ' मारने योग्य, नहीं पढ़नेवाले तुझको धिक्कार है । निन्दा में जैसे 'धिक् परस्त्रीगामिनं पुरुषम्' परस्त्रीगामी पुरुष को धिक्कार यानी (ल अन्नन) है ॥२४६॥

अन्वाचय,

समाहार, इतरे-

तर, समुच्चय,

आशीर्वाद,

क्षेम, पुण्य

आदि, प्रकर्ष,

लाघना और

प्रशंसा.

चा (न्वाचयसमाहारेतरेतरसमुच्चये) ।

स्वस्त्या (शीः क्षेमपुण्यादौ)(प्रकर्षे लङ्घनेऽप्य)ति २५०

अन्वाचय, समाहार, इतरेतरयोग और समुच्चय इन अर्थों का वाची 'च' है । दोमें से एक के अनुपङ्ग से जो अन्वय होता है वह 'अन्वाचय' कहलाता है । जैसे कि 'वटो ! भिक्षामट गां चानय ' हे वटो ! भीख को जाओ और गऊ को लाओ । अनेकपदों के समूह को समाहार कहते हैं । जैसे कि 'संज्ञा च परिभाषाचानयोः समाहारः संज्ञापरिभाषम्' । मिलेहुओं का अन्वय ' इतरेतरयोग ' है । जैसे कि 'धवखदिगौ द्विन्वि' धव और खैर के वृक्ष को साथही काटो । अनेक पदार्थ जोकि परस्पर निरपेक्ष हों उनका एकपदार्थ में अन्वय होना 'समुच्चय' कहाजाता है । जैसे कि 'रमेशं गुरुं च भजस्व' रमानाथ और गुरु को भजो । एवं त्रिकाण्डशेष में भी कहा है । कि पादपूरण, पक्षान्तर, हेतु और विनश्चय में चशब्द विद्यमान रहता है । आशीर्वाद, क्षेम और पुण्य आदिका वाची 'स्वस्ति' है । आशीर्वाद में जैसे, 'स्वस्ति ते भूयान्' तुम्हारा कल्याण हो । क्षेम में जैसे कि, 'स्वस्ति गच्छ' कुशलता के साथ चलाजा । पुण्य में जैसे कि, 'स्वस्तिमान्स्वर्गमश्नुते' पुण्यवान् जन स्वर्गलोक को पाता है । एवं भागुरि तथा मेदिनीकोष में भी कहा है कि, मङ्गल, आशीर्वाद, पापों की शुद्धता करना और पुण्य इनका वाचक 'स्वस्ति' है । प्रकर्ष यानी उत्कर्ष, लाघना या उल्लङ्घना या पागहोना और अपिशब्द से बढ़ाई या तारीफ़ करना इन अर्थों का वाची 'अति' है । एवं विश्वकोष में भी कहा है कि, प्रशंसा, प्रकर्ष और लाघना इन अर्थों का वाची अतिशब्द है । प्रकर्ष में जैसे कि, 'देवानामत्युत्तमोविष्णुः' सब देवताओं के बीच श्रीविष्णुजी अत्युत्तम हैं । लाघने में जैसे कि, 'अतिवेलं जलधितलम्' समुद्र का तल मर्यादा का उल्लङ्घनेवाला है ॥ २५० ॥

पूछना, विचार,

भेद, निश्चय,

साथ, एकवार,

दूर, समीप.

स्वि(त्प्रश्ने च वितर्के च) तु (स्याज्जेदेऽवधारणे) ।

सकृत्(सहैकवारं स्या) दारा (दूरसमीपयोः) ॥ २५१ ॥

पूछना या सवाल करना और नानापक्ष का विचार इन दोनों का वाची 'स्विन्' है । प्रश्न में जैसे कि, 'किंस्वित्ते कुशलमस्ति' क्या तुम्हारा कुशल है ? वितर्क में जैसे कि, 'सर्वेश्वरत्वं विष्णोर्गदो स्विन् शिवस्य' विष्णुजी का सर्वेश्वरत्व है या

शिवजी का । भेद (फ़रक) और निश्चय का वाची ' तु ' है । भेद में जैसे कि, ' क्षीरान्मांसं तु पुष्टिकृत् ' दूध से मांस पुष्टिकारी है, निश्चय में जैसे कि, ' शिष्टैर्मतं तु तद्युक्तम् ' महात्माओं ने जिसको माना है वह निश्चय कर योग्य ही है । सहार्थ और एक बार का वाची ' सकृत् ' है । सहार्थ में जैसे कि, ' सकृद्यान्ति सुरस्त्रियः, साथ ही देवङ्गनायें जाती हैं । एकबार में जैसे कि ' सकृदपि कुर्याद्भया आद्रम् ' एकबार भी गया का आद्र करे । दूर और समीप का वाची ' आरात् ' है, दूर में जैसे कि, ' आराच्छत्रोः सदा वसेत् ' हमेशा वैरी से दूर बसना चाहिये । समीप में जैसे कि, ' सखायं स्थापयेदागात् ' मित्र को पास ही बैठाजना चाहिये यानी सनेही को समीप ही रखना चाहिये आदि उदाहरणों को जानना चाहिये ॥२५१॥

पछाँह, अन्त, (प्रतीच्यां चरमे) पश्चादुता (प्यर्थविकल्पयोः) ।
समुच्चय, विकल्प, (पुनःसहार्थयोः) शश्वत्साक्षा (प्रत्यक्षतुल्ययोः) २५२॥
बारम्बार, सहार्थ, प्रत्यक्ष, तुल्य.

पश्चिम दिशा और अन्त्य (आखिरी) इन दोनों का वाची ' पश्चात् ' है । पश्चिम में जैसे कि, ' पश्चादस्तंगतोरविः ' पछाँह में सूर्य अस्त होगया, अन्त्य में जैसे कि, ' पश्चिमे वयसि नैमिषे वसेत् ' अन्त्य अवस्था के आजाने पर नैमिष क्षेत्र में बसना चाहिये । समुच्चय और विकल्पका वाचक ' उत ' है । समुच्चय में जैसे कि ' अर्जुन उत भीमो रणे गमिष्यतः ' अर्जुन और भीमसेन संग्राम में जावेंगे । विकल्प में जैसे कि ' विष्णुरुत शिवः सेव्यः ' भगवान् विष्णु या शिवजी को सेवन करना चाहिये । पुनः पुनः और सहार्थ का वाचक शश्वत् या " सस्वत " है । पुनरर्थ में जैसे कि ' शश्वद्विष्णुं स्मरेत् ' बारम्बार विष्णुजी का स्मरण करना चाहिये । सहार्थ में जैसे कि, ' शिष्यैः शश्वद्रतो गुरुः ' शिष्यों के साथ गुरुजी गये । प्रत्यक्ष और तुल्य का वाची ' साक्षात् ' है । प्रत्यक्ष यानी समक्ष में जैसे कि ' साक्षाद् दृष्टो मया हरिः ' मैंने सामने हरिजी को देखा । तुल्य में जैसे कि, ' साक्षात्सक्ष्मी रियं बधूः ' यह बहू लक्ष्मी के समान है ॥ २५२ ॥

खेद, अनुकम्पा, (खेदानुकम्पासन्तोषाविस्मयान्त्रणे) वत ।
संतोष, विस्मय, हन्त (हर्षेऽनुकम्पायां वाक्यारम्भविषादयोः) ॥२५३॥
आमन्त्रण, हर्ष, दया, वाक्या-
रम्भ, विषाद.

खेद, अनुकम्पा, सन्तोष, विस्मय और सम्बोधन का वाची ' वत ' है । खेदमें जैसे कि ' अहो वत महत्कष्टम् ' अहो खेद है कि, बड़ा कष्ट हुआ । अनुकम्पा में जैसे कि, ' वत निःस्वो भरणीयः ' दयासे निर्द्रव्यको भरना चाहिये । सन्तोषमें जैसे कि ' वत रमयथा पतिरालिङ्गितः ' सन्तुष्टता से रमणी ने पति का आलिङ्गन किया ।

विस्मय में जैसे कि, 'अहो वतायं ध्रुव आप देवम्' आश्चर्य है कि इस ध्रुव ने देवता को पाया । सम्बोधन में जैसे कि, 'अत्र एहि वत सखे' अय प्यारे ! यहां आओ । हर्ष, अनुकम्पा, वाक्यारम्भ और विपाद का वाचक 'हन्त' है । हर्ष में जैसे कि, 'हन्त ते लाभः शतगुणः' खुशी हुई कि तुम को सौगुणा लाभ हुआ । अनुकम्पा में जैसे कि, 'हन्त दीनो रक्षितव्यः' दया के साथ दीन की रक्षा करनी चाहिये । वाक्यारम्भ में जैसे कि, 'हन्त ते कथयिष्यामि' अब मैं तुमसे कहूंगा । विपाद में जैसे कि, 'हन्तजातमजातारेः प्रथमेन त्वयारिणा' दुःख की बात है कि, युधिष्ठिर के पहले तुमही शत्रु उपजे हो ॥ २५३ ॥

मुख्य सदृश,
वीप्सा, लक्षणा
आदि, कारण,
प्रकरण, प्रकाश
आदि, समाप्ति।

प्रति (प्रतिनिधौ वीप्सालक्षणादौ प्रयोगतः) ।

इति (हेतुप्रकरणप्रकर्षादिसमाप्तिषु) ॥ २५४ ॥

मुख्य के बराबर यानी एककी जगह दूसरा, व्याप्त होनेकी इच्छा या फैलना, लक्षणा यानी अन्वय के न होने पर अध्याहार जो ऊपर से लिया जाता है । अथवा चिह्न, आदि शब्द से इत्थंभूताख्यान, भाग, प्रतिदान और अल्पआदि इन अर्थों में महात्मा या शिष्टों के प्रयोगानुसार प्रतिशब्द का प्रयोग करना चाहिये । प्रतिनिधि (एवञ्च) में जैसे कि, 'अभिमन्युं प्रति परीक्षित्' राजा परीक्षित अभिमन्यु के बराबर है । वीप्सा में जैसे कि, 'तीर्थं तीर्थं प्रति गच्छति बलः' बलदाऊजी प्रत्येक तीर्थों में जाते हैं । लक्षणा में जैसे कि 'वृक्षं प्रति विद्योतते विद्युत्' वृक्षकी ओट में बिजली चमकती है । इत्थंभूताख्यान में जैसे कि, 'भक्तो विष्णुं प्रति यज्ञदत्तः' यज्ञदत्त विष्णु का भक्त यानी विष्णु का स्वरूपही है । भाग में जैसे कि 'लक्ष्मीर्हरिप्रति' लक्ष्मीजी हरि का भाग हैं । प्रतिदान में जैसे कि, 'तिलेभ्यः प्रतियच्छति माषान्' तिलों के बदले उड़दों को देता है । यहां (प्रयोगतः) इस कथन से "केतई, की ओर, पास, सामने, विरुद्ध, उलटा, विपरीत, इसकी अपेक्षा, इसके देखते, बनिस्वत, ऊपर, पर, लगभग, लिये, वास्ते, विषय, अनुसार, नक़ल, पुस्तक और जिल्द" इन अर्थों में भी प्रति शब्द का प्रयोग करना चाहिये । कारण या सबब, प्रकार, प्रकाशआदि और समाप्ति इन अर्थों का वाची 'इति' है । हेतु में जैसे कि 'रामो हन्तीति रावणः पलायते' रामजी मारते हैं इस कारण रावण भागता है । प्रकरण में जैसे कि, 'ब्राह्मण-क्षत्रिय-विट्-शूद्रा इति' ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चार वर्ण हैं । प्रकर्ष या प्रकाश में जैसे कि 'इति पाणिनिः' पाणिनि शब्द लोक में प्रकाशित है । आदिशब्द से 'क्रमादमुं नारद इत्यबोधि सः' क्रम से यह नारद हैं । ऐसा उन हरिने जाना । समाप्ति में जैसे कि, 'धर्ममाचरेदिति' अन्त्या-वस्था में धर्म का आचरण करना चाहिये ॥ २५४ ॥

१ "हन्तदानेऽनुकम्पायां वाक्यारम्भविपादयोः । निश्चये च प्रमोदे च" (इति हेमः) ॥

पूर्वदिशा,
पहला, व्यतीत,
संपूर्ण, अवधि,
परिमाण,
निश्चय.

(प्राच्यां) पुरस्तात् (प्रथमे पुरार्थे) अतइत्यपि) ।

यावत्तावच्च (साकल्येऽवधौ मानेऽवधारणे) ॥ २५५ ॥

पूर्वदिशा, पहला और व्यतीत विषय इन अर्थों का वाचक 'पुरस्तात्' या 'पुरः' और 'अग्रतः' यह भी है । पूर्व दिशा में जैसे कि, 'पुरस्ताद्गतो ब्रह्मदत्तः' ब्रह्मदत्त पूर्वदिशा में गया । प्रथम में जैसे कि, 'पुरस्ताद्भुङ्क्ते' पहले भोजन करता है । व्यतीत में जैसे कि, 'पुरस्ताद्वासोऽभूत्' पुरातन समय वास हुआ था । ऐसेही 'अग्रतः संस्थाप्य देवेशं पूजयेत्' पहले या आगे देवेश को भलीभाँति स्थापन कर पूजना चाहिये । साकल्य, अवधि, मान और अवधारण (निश्चय) इन अर्थों का वाची 'यावत्' और 'तावत्' है । संपूर्णता में जैसे कि, 'यावद्वत् तवद्भुक्तम्' जितना दिया गया उतना सबही खा गया । अवधि में जैसे कि, 'मूलाच्छाखां यावत्प्रकाण्डः' जड़से लेकर जहांतक शाखा है वहांतक प्रकाण्ड यानी पीड़ है । परिमाण में जैसे कि, 'यावत्स्वर्णां तावद्रजतम्' जितना सोना उतनीही चाँदी है । अवधारण में जैसे कि, 'ओत्रियं तावदामन्त्रयस्व' निश्चय कर वैदिकब्राह्मण का न्योता करो ॥ २५५ ॥

मङ्गल, अनन्तर,
आरम्भ, प्रश्न,
कात्स्न्य, निरर्थक,
विधिहीन, अने-
कार्थ, उभयार्थ.

(मङ्गलानन्तरारम्भप्रश्नकात्स्न्ये) ऋथो अथ ।

वृथा (निरर्थकाविध्योः) नाना (अनेकोभयार्थयोः) ॥ २५६ ॥

मङ्गल, अनन्तर, आरम्भ, प्रश्न (पूछना) और संपूर्णता इन अर्थों का वाचक अथो और अथ है । मङ्गल में जैसे कि, 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' मङ्गल है इस लिये ब्रह्म के जानने की अभिलाषा हुई । अनन्तर में जैसे कि, 'स्नानं कृत्वाथ भुञ्जीत' स्नान के बाद भोजन करना चाहिये । आरम्भ में जैसे कि, 'अथ शब्दानुशासनं लिख्यते' अब शब्दों का अनुशासन आरम्भ किया जाता है । प्रश्न में जैसे कि, 'अथ वक्तुं समर्थोऽसि' क्या कहने को समर्थ हो ? संपूर्णता में जैसे कि, 'अथ धातून् श्रूयः' समस्त धातुओं को, कहते हैं । निरर्थक या निष्कारण और विधिहीन या विधिवर्जित का वाची 'वृथा' है । निरर्थक में जैसे कि, 'वृथा दुग्धोऽनङ्गान्' बैल को वृथा दुहा यानी बैलका दुहना बेकार है । अविधि में जैसे कि, 'वृथा दानं धनाल्लोपु' धनीलोगों में दान देना वृथा यानी विधिरहित है । अनेकार्थ और उभयार्थ का वाचक 'नाना' है । अनेकार्थ में जैसे कि, 'इह निवसन्ति नानाविधा जनाः'

१ " अथो अथ समुच्चये । मङ्गले संशयारम्भाधिकारानन्तरपु च । अन्वादेशे प्रतिज्ञायां प्रश्नसा-
कल्ययोरपि " (इति हैमः) ॥ शास्त्रं सुचिन्तितमथो परिचिन्तनीयं स्वाराधितोऽपि नृपतिः परिशङ्कनीयः ।
अङ्गे स्थितापि युवतिः परिशङ्कनीया शास्त्रे नृपे च युवतौ च कुतो वशित्वम् ॥ १ ॥

यहां अनेकप्रकार के जन निवास करते हैं । उभयार्थ में जैसे कि, 'नानाविधं न सज्जेत ' दुविधा को न लावे यानी दुविधा में नहीं पड़ना चाहिये ॥ २५६ ॥

पूछना, विकल्प, * (पृच्छायां विकल्पे च) (पश्चात्सादृश्ययो) ननु ।

पीछे, बराबरी, सवाल, निश्चय, आज्ञा, तसल्ली (प्रश्नावधारणानुज्ञानुनयामन्त्रणे) ननु ॥ २५७ ॥

जानने की इच्छा और विकल्प इन दोनों का वाचक ' नु ' है । पृच्छा में जैसे कि ' कोनु धावति ' भला कौन दौड़ता है ? विकल्प में जैसे कि, ' अयं भीमो नु धर्मो नु ' यह भीमसेन है अथवा युधिष्ठिर है । पश्चादर्थ और सादृश्य का वाची 'अनु' है । पश्चादर्थ में जैसे कि ' रथमनुगच्छति ' रथ के पीछे जाता है । सादृश्य अर्थ में जैसे कि, ' ज्येष्ठमनुकरोति ' जेठ की बराबरी करता है । हीन में भी जैसे कि 'अनु हरिं सर्वे सुराः, दग्देहीना इत्यर्थः ' हरिजीसे सब देवता छोटे हैं । प्रश्न, अवधारण, (निश्चय) अनुज्ञा (आज्ञा) अनुनयः=(विनय, शिक्षा, या तसल्ली देना) और सम्बोधन इन अर्थों का वाची ' ननु ' है । प्रश्न में जैसे कि, ' ननु किमेतत् ' भला यह क्या है ? अवधारण में जैसे कि ' नन्वयं योगी ' निश्चय कर यह योगी है । अनुज्ञा में जैसे कि ' ननु गच्छ ' अच्छा चले जाओ । अनुनय में जैसे कि, ' ननु कोपं मुञ्च दयां कुरु ' बस कोप को छोड़ो दया करो । सम्बोधन में जैसे कि, 'ननु राजन् ! मया सह वाराणसीं व्रज ' हे राजन् ! मेरे साथ बनारस को चलो ॥ २५७ ॥

निन्दा, समुच्चय, (गर्हासमुच्चयप्रश्नशङ्कासंभावनास्व) पि ।

प्रश्न, शङ्का, संभावना, मि-
साल, भेद, आधा, (उपमायां विकल्पे) वा सामि(त्वर्थे जुगुप्सिते) ॥ २५८

निन्दा, समुच्चय, प्रश्न, शङ्का और संभावना इन अर्थों का वाचक 'अपि' है । गर्हा में जैसे कि, ' तं धिक् योऽपि सिञ्चेत्पलायडुम् ' उसको लानत है जो कि प्याज को सींचे । समुच्चय में जैसे कि ' स्त्रियं पालय पुत्रमपि ' स्त्री और पुत्रकी पालना करो अथवा ' अपि सिंच, अपि स्तुहि ' सींचो और स्तुति करो । प्रश्ने यथा 'अपि जानासि किञ्चिच्चम्' क्या तुमभी कुछ जानते हो ? शङ्का में जैसे कि 'अपि चोरो भवेत्' हो न हो चोरही होगा । संभावना में जैसे कि ' अपि स्थाणुं जयेद्रामः ' रामजी शिवको भी जीतेंगे अथवा ' अपि स्तुयाद्विष्णुम् ' वाणी व मनसे परे विष्णु की भी स्तुति करेगा तो " अन्य देवताओं की स्तुति करने में क्या कहना चाहिये " उपमा (मिसाल) और विकल्प का वाचक 'वा' है । उपमा में जैसे कि, 'आशीविपी

* " नु प्रश्नेऽनुनयेऽतीतार्थे विकल्पवितर्कयोः " (इति हैमः) ॥

१ " स्थाणुः काले हरे पुमान् । अस्त्री ध्रुवे " (इति कोषान्तरम्) ॥

वा संक्रुद्धः ' विपथर सांपके नाई बहुतही क्रोधित हुआ । विकल्प में जैसे कि । 'शिवं यदि वा विष्णुं पूजयेत् ' शिव या विष्णु की पूजा करना चाहिये । आधा और निन्दा का वाची ' सामि ' है । आधे में जैसे कि ' सामि संमीलिताक्षी ' अधखुली आँखोंवाली । निन्दा में जैसे कि ' सामिकृतमकल्याणकारि ' निन्दा से किया हुआ काम मङ्गलकारी नहीं होता है ॥ २५८ ॥

साथ, समीप, **अमा (सह समीपे च) कं (वारिणि च मूर्धनि) ।**
जल, मस्तक,
उपमा, प्रकारः (इवेत्थमर्थयो) रेवं नूनं (तर्केऽर्थनिश्चये) ॥ २५९ ॥
तर्क, निश्चय.

साथ और समीप का वाची ' अमा ' है । सहार्थ में जैसे कि ' पुत्रेणामा-भुङ्क्ते ' पुत्रके साथ खाता है । समीपमें जैसे कि, ' अमात्यः ' वजीर पासही रहता है । जल और मस्तक का वाचक ' कम् ' है । जल में जैसे कि, ' वेत्रवत्याः कम-मलं पश्य सखे ! अय सखे ! देखिये वेत्रवती का जल कैसा निर्मल है । मस्तक में जैसे कि, ' मम कं पातु माधवः ' माधवजी मेरे शीश की रक्षा करें । उपमा और प्रकार का वाची ' एवम् ' है । उपमा (मिसाल) में जैसे कि, ' अग्निरेवं द्विजः ' ब्राह्मण अग्नि के समान है । प्रकार अर्थ में जैसे कि, ' एवं वादिनि देवर्षी ' इस प्रकार नारदजी के कहने पर । तर्क और निश्चय अर्थ का वाचक ' नूनम् ' है । तर्क में जैसे कि ' नूनमयमपि पञ्चानां प्रियः ' क्या यह पञ्चों का अति प्यारा है ? निश्चयार्थ में जैसे कि ' क्षुद्रेऽपि नूनं शरणां प्रपन्ने ' निश्चयकर क्षुद्र के भी शरणागत होने पर रक्षा करना चाहिये ॥ २५९ ॥

मौन, आनन्द, (तूष्णीमर्थे सुखे) जोषं किं (पृच्छायां जुगुप्सने) ।
पूछना, निन्दा,
प्रसिद्ध, संभा-
वना, कोप, नाम (प्रकाश्यसंभाव्यक्रोधोपगमकुत्सने) ॥ २६० ॥
प्राप्ति, निन्दा.

मौन और सुख का वाची ' जोषम् ' है । मौन में जैसे कि ' जोषं तिष्ठ ' चुपचाप खड़े रहो । सुख में जैसे कि ' जोषमासीत् वर्षासु ' वर्षा में सुख से बैठा रहे । पूछना और निन्दा का वाचक ' किम् ' है । पृच्छा में जैसे कि ' किमाद्वयेरन् रसिकाः कृतिं में ' क्या रसिकलोग मेरी कविता का आदर करेंगे ? निन्दामें जैसे कि ' सकिं राजा यः प्रजां न रक्षति ' जो प्रजाकी रक्षा नहीं करता है वह क्या राजा है यानी निन्दित है । अथवा " सकिं सखा साधु न शास्ति योऽधिपं, हितान्नयः संशृणुते सकिं प्रभुः " जो स्वामी को भली सीख नहीं देता है वह क्या सखा है ? यानी बुरा मिलापी है और जो हित से नहीं सुनता है वह क्या स्वामी है । प्रकाश्य सम्भावना, क्रोध, उपगम (प्राप्ति, स्वीकार या उदय) और निन्दा इन अर्थों का

वाची ' नाम ' है । प्रकाश्य † में जैसे कि ' हिमालयो नाम नगाधिराजः ' प्रसिद्ध है कि उत्तरदिशा में हिमाचल पर्वतों का अधिनायक है । संभावना में जैसे कि ' राम-रावणयोर्भविष्यति युद्धं नाम ' राम-रावण के युद्ध होने की संभावना है । क्रोध में जैसे कि ' मम वैरी रावणो नाम पापः ' पापी रावण मेरा वैरी है । उपगम में जैसे कि ' शत्रोः सकाशाद्गृह्णाति राज्यं नाम ' वैरी के द्वारा राज्यको स्वीकार ही करता है । निन्दा में जैसे कि, ' को नामायं प्रलपति मे विशतः सभायाम् ' यह कौन है जो कि सभा में प्रवेश करते हुए मेरी बुराई करता है ॥ २६० ॥

भूषण, परिपूर्ण-अलं (भूषणपर्याप्तिशक्तिवारणवाचकम्) ।

ता, सामर्थ्य, निषेध, संदेह, प्रश्न, पास, हुं (वितर्के परिप्रश्ने) समया (न्तिकमध्ययोः) ॥ २६१ ॥ मध्य.

अलंकार (गहना) परिपूर्णता, सामर्थ्य और निषेध इन अर्थों का वाचक ' अलम् ' है । भूषण में जैसे कि ' सर्वालंकरणैरलंकृतोऽयं बालः ' समस्त अलंकारों से अलंकृत यानी सजाहुआ यह बालक है । पर्याप्ति में जैसे कि ' अलं भुक्तवान् यज्ञ-दत्तः ' यज्ञदत्तने परिपूर्णता से भोजन किया । सामर्थ्य में जैसे कि ' अलं मल्लो मल्लाय ' पहलवान पहलवान के लिये समर्थ है " यानी कुश्ती लड़नेवाला कुश्ती लड़नेवाले के साथ लड़सक्ता है " निषेध में जैसे कि ' अलं महीपाल तव श्रमेण ' हे महीपाल ! तुम्हारे श्रमसे क्या है ? यानी तुम्हारा श्रम करनाही बेफायदा है । सन्देह या ऊहा और प्रश्न (पूछना) इन दोनों का वाचक ' हुम् ' है । वितर्क में जैसे कि ' हुं जलं मृगतृष्णां हुम् ' क्या जल है या मृगतृष्णा ? परिप्रश्न में जैसे कि ' हुं यज्ञदत्तोऽयमायाति ' क्या यह यज्ञदत्त आता है ? । समीप और मध्य (बीच) का वाचक ' समया ' है । समीप में जैसे कि ' समया पत्तनं नदी बहति ' शहर के समीपही नदी बहती है । मध्यमें जैसे कि ' समया शैलयोर्ग्रामो वसति ' दो पर्वतों के बीच गांव बसता है ॥ २६१ ॥

अप्रथम, भेद,

निश्चय, नि- पुन (रप्रथमे भेदे) नि (निश्चयनिषेधयोः) ।

षेध, प्रबन्ध, चिरातन, व्य- (स्यात्प्रबन्धे चिरातीते निकटागामिके) पुरा ॥ २६२ ॥ तीत, समीप, मावी.

प्रथम का अभाव और भेद (अन्तर या फरक) इन दोनों का वाचक ' पुनर् ' है । प्रथम के अभाव में जैसे कि, ' पुनरुक्तं पुण्यदत्तेन ' पुण्यदत्तने फिर कहा । भेद में जैसे कि, ' किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्याः ' पुण्यवान् ब्राह्मणों को फिर क्या कहना

† प्रकाश्ये यथा " नदीज ! लङ्केशवनारिकेतुर्नगाह्वयोनाम नगरिसूनुः । एषोऽङ्गनावेषधरःकिरीटी जित्वावयं नेष्यति चाद्यगावः " (इति महाभारतम्) ॥

१ वसन्तीह पुरा छात्राः-अवात्सुः-अवसन्-ऊर्ध्वा । पुराभुङ्क्ते निश्चितं भोक्ष्यत इति । " इति शुद्धतमं शास्त्रं प्राप्तं ब्रह्मादिकैः पुरा " (इत्यथर्वणरहस्यम्) ॥

चाहिये ? निश्चय और निषेध का वाची ' निर् ' है । निश्चय में जैसे कि, ' निरुक्त-
मिदं नित्यानन्देन ' निश्चय कर इसको नित्यानन्द ने कहा है । निषेध में जैसे कि,
' निर्धनोऽयं राजा बहुदानात् ' बहुतसा दान देनेके कारण यह राजा निर्धन होगया ।
प्रबन्ध, चिरन्तन, अतीत, समीप और आगामिक (भावी) इन अर्थों का वाचक
' पुरा ' है । प्रबन्ध में जैसे कि, ' पुराऽधीते धीरोऽयम् ' यह धीर निरन्तर पढ़ता
था यानी " क्षणमात्र भी पढ़ने से नहीं रुकता था बरन लगातार पढ़तेही चला जाता
था " । चिरन्तन में जैसे कि, ' पुरातना ऋषयो यमैड्यंस्तमाहुरग्र्यं पुरुषं पुराणमिति '
पुराने ऋषियों ने जिसकी प्रशंसा की है उसको अग्र्य, पुरुष और पुराण कहते हैं ।
अतीत में जैसे कि, ' पुरा रामो राजा बभूव ' पुरातन समय श्रीरामचन्द्रजी राजा हुए ।
समीप में जैसे कि, ' पुरा रामं तस्थौ रामानुजः ' रामके समीपही रामानुज ठहर
गये । आगामिक में जैसे कि, ' चतुर्विंशतितः पुरा मे भाग्यमुदेक्ष्यति ' चौबीस वर्ष के
आजाने पर मेरे भाग्य का उदय होगा ॥ २६२ ॥

विस्तार, अङ्गी-
कार, स्वर्ग,
परलोक, वात,
संभावना या
बड़ाई.

ऊर्यूरी चोररी च (विस्तारेऽङ्गीकृतौ त्रयम्) ।

(स्वर्गे परे च लोके) स्व (वार्तासंभाव्ययोः) किल ॥ २६३ ॥

ऊररी, ऊरी, " उरी " और ' उररी ' ये तीनों विस्तार (फैलाव) और अङ्गी-
कार के वाचक हैं । विस्तार में जैसे कि ' ऊररी करोति ग्रन्थं गुरुः ' गुरुजी ग्रन्थ का
विस्तार करते हैं । अङ्गीकार में जैसे कि ' ऊरीकृत्य पितुर्वाक्यं रामोऽरयं जगाम ह '
पिता का वचन अङ्गीकार कर श्रीरामजी वनको चलेगये । एवम् ' उररी करोति प्रभो
गङ्गां रामदत्तः ' रामदत्त स्वामी की आज्ञा को स्वीकार करता है । स्वर्गलोक और
परलोक का वाची ' स्वर् ' है । स्वर्ग में जैसे कि, ' स्वर्गाद्यां स्नाति नारदः ' स्वर्ग
की नदी में नारदजी नहाते हैं । परलोक में जैसे कि " स्वर्गतस्य क्रिया कार्या पुत्रैः परम-
भक्तिनः " परलोक गयेहुए पुरुष की क्रिया पुत्रों को परमभक्ति से करना चाहिये ।
वार्ता और संभावना या संभाव्य बड़ाई के योग्य इन अर्थों का वाचक ' किल ' है ।
वात में जैसे कि, ' जघान कंसं किल वासुदेवः ' प्रसिद्ध है कि वासुदेवजी ने कंस
को मारा । संभाव्य में जैसे कि ' गुरुन् किल अतिशेते शिष्यः ' धन्य है शिष्य को
जोकि गुरुजी को सुँलाकर सोता है ॥ २६३ ॥

निषेध, वाक्य

भूषण, जिज्ञासा, (निषेधवाक्यालङ्कारजिज्ञासा नये) खलु ।

अनुनय, समीप,

उभयार्थ, शीघ्र, (समीपोभयतः शीघ्रं साकल्याभिमुखे) अभितः ॥ २६४ ॥

संपूर्णता, सामने.

† अलीके यथा - ' प्रसन्न सिंहः किल तां चक्रे ' (इति रघुः) । अज्ञानसूचके यथा ' सुप्तोऽहं
किल विललाप ' ॥

निषेध, वाक्यालंकार, जाननेकी अभिलाषा और अनुनय (सान्त्वन करना) इन अर्थों का वाचक 'खलु' है । निषेध में जैसे कि, 'पीत्वा खलु † गतो गङ्गदत्तः' विनापिये गङ्गदत्त चलागया । वाक्यालङ्कार में जैसे कि, 'एतत्खल्वहर्लोकः' ऐसा लोग कहते हैं यहां 'खलु' वाक्यालंकार में जानना चाहिये । जिज्ञासा में जैसे कि 'खलु जानाति यज्ञदत्तः' यज्ञदत्त जानने की अभिलाषा करता है । अनुनय में जैसे कि 'देहि खलु वाचकम्' अब वाँचने वाले को देदीजिये । समीप, उभयार्थ, शीघ्रता, संपूर्णता और सम्मुखता इन अर्थों का वाची 'अभितः' है । समीप में जैसे कि, 'वाराणसीमभितो भागीरथी' वनारस के पासही भागीरथी गङ्गाजी हैं । उभयार्थ में जैसे कि 'अभितः कृष्णं गोपाः' श्रीकृष्णजी के दोनों तरफ़ ग्वालबाल हैं । अथवा 'अभितः कुरु चामरौ' दोनों ओर चवैरों को कीजिये । शीघ्रार्थ में जैसे कि, 'अभितोऽधीष्ण्व' जल्द पढ़ो । संपूर्णता में जैसे कि 'अभितो ग्रामं वनानि सन्ति' गांव के चारों तरफ़ जंगलही जंगल हैं । सम्मुख में जैसे कि 'अभितोहिंसको हन्ति मामेव परिधावति' मारनेवाला सामने मुझकोही मारता और घेर कर दौड़ता है ॥ २६४ ॥

शब्द, प्रकाश, (नामप्राकाश्ययोः) प्रादुर्मिथो (ज्योन्यं रहस्यपि) ।
परस्पर, छिपना,
टेढ़ा, दुःख, शो-
क, पीड़ा. तिरो(जन्तुर्धौ तिर्यगर्थे) हा (विषादशुगर्तिषु) ॥ २६५ ॥

नाम या शब्द और प्रकाश इन दोनों का वाचक 'प्रादुः' है । नाम में जैसे कि 'प्रादुरासीच्चक्रपाणिः' चक्रपाणिनामक पुरुष प्रकट हुआ । प्रकाश में जैसे कि 'प्रादुर्बुद्धिर्भविष्यति' तेरी बुद्धि का प्रकाश होगा । परस्पर और एकान्त का वाची 'मिथः' या 'मिथो' है । परस्पर में जैसे कि 'वासिष्ठ-कौशिकन्य-मैत्रावरुणानां मिथो न विवाहः' वासिष्ठ, कौशिकन्य और मैत्रावरुण गोत्रों का परस्पर विवाह-सम्बन्ध नहीं होता है । एकान्त में जैसे कि 'मिथः सीतामश्लिक्षद्रामः' रामजी ने एकान्त में सीता का आलिङ्गन किया । अन्तर्धान (छिपजाना) और टेढ़ा इन अर्थों का वाचक तिरोः (स्) है । अन्तर्धान में जैसे कि, 'तिरो बभूव वामनः' वामनजी अन्तर्धान हुए । अथवा 'तिरोभूय आस्ते आत्मारामः' आत्माराम छिपकर बैठता है । टेढ़े अर्थ में जैसे कि 'तिरो वर्तते निशानाथः' चन्द्रमा टेढ़ा होकर रहता है अथवा 'द्वितीयायामिन्दुस्तिरोदृश्यते' द्वितीया में चन्द्रमा टेढ़ा देख पड़ता है । दुःख, शोक और पीड़ा का वाचक 'हा' है । विषाद में जैसे कि, 'हा ! मे रमणीयो गतः कालः' हाय ! बड़ा दुःख है कि मेरा समय जोकि रम-

† " अलंखल्वोः प्रतिषेधयोः प्राचां क्त्वा " ३ । ४ । १८ प्रतिषेधार्थयोरलंखल्वोरुपपदयोः क्त्वा स्यात् । प्राचां ग्रहणं पूजार्थमिति ॥ " संप्रत्यसांप्रतंवक्ष्युमुक्ते मुसलपाणिना । निर्धारितेऽर्थे लेखेन खलूक्त्वा खलुवाचिकम् " अत्रखलुराद्यः प्रतिषेधे । द्वितीयोवाक्यालंकारे ज्ञेयः ॥

गणीय था वह चलागया । शोक में जैसे कि 'हा राम ! वनं गतोसि "कथं जीवामि" हा रामजी ! तुमतो बनको चलेगये " मैं कैसे जीऊंगा " ? पीड़ा में जैसे कि ' हा हतोऽस्मि ' हाय ! मैं मारा गया ॥ २६५ ॥

आश्चर्य, खेद, कारण और निश्चय, **अहहे (त्यद्भुते खेदे) हि (हेताववधारणे) ॥ २६६ ॥**

इति नानार्थवर्गः ॥

आश्चर्य और खेद का वाचक ' अहह ' या ' अहहा ' है । आश्चर्य में जैसे कि ' अहह ! बुद्धिप्रकर्षों राज्ञः ' आश्चर्य है कि राजा की बुद्धि का प्रकाश हुआ । खेद में जैसे कि ' अहह नीतो मया द्यूतेन कालः ' हाय ! मैंने जूआ खेलने से समय को बिताया । परिल्लेश (पीड़ा) में जैसे कि, ' अहहा परिपीडितोऽहं व्याधिनातोगङ्गाम्भसि पतिष्यामि ' हाय ! मैं व्याधिसे बहुतही पीड़ित हो रहा हूं इस लिये गङ्गा के जल में कूद पड़ूंगा । प्रहर्ष में जैसे कि ' अहहा में रात्रौ पौत्रो जातः ' अहा हा आनन्द हुआ कि रात्रि में मेरे पौत्र पैदा हुआ । सम्बोधन में जैसे कि ' अहह सखे भोक्तव्यं मया साकम् ' अय्य प्यारे ! मेरे साथ भोजन करना चाहिये । कारण और निश्चय का वाची ' हि ' या ' ही ' अव्यय है । हेतु में जैसे कि, ' अग्निरत्रास्ति धूमोहि दृश्यते ' यहां आगी है क्योंकि धुआं देख पड़ता है । अवधारण में जैसे कि ' चन्द्रोहि शीतो वर्तते ' निश्चयकर चन्द्रमा ठण्डा है ॥ २६६ ॥

इति नानार्थवर्गविवरणम् ।

अथ अव्ययवर्गो व्याख्यायते ।

दीर्घकाल, (चिरायचिररात्रायचि स्याद्या) शिचरार्थकाः ।

बारम्बार, **मुहुः पुनः पुनः शश्वदभीक्षणमसकृ (त्समाः) ॥ १ ॥**

चिराय, चिररात्राय, चिरस्य आद्यपदसे चिरम्, चिरेण, चिरात्, और चिरे ये चिरकालके वाचक हैं—(अब क्रमसे उदाहरण कहते हैं) जैसे कि ' चिराय संतप्य समिद्धिरग्निम् ' बहुत समय तक समिधाओं से आगी को भलीभाँति तृप्त कर । ' चिररात्राय संचितं मधु मक्षिकाभिः ' मक्खियों ने चिरकाल से शहद को इकट्ठा किया । ' चिरस्य दृष्टैव मृतोत्थितेव ' मरे से उठी के नाई रमणी को देर तक देखा । ' चिरंजीवतु बालोऽयम् ' । यह बालक बहुत दिनतक जीवे । चिरेण नाभिं प्रथमोदबिन्दवः ' चिरकालसे नाभी के सामने पहलेही के जलबिन्दु देख पड़ते हैं । ' चिरात्सुतस्पर्शरसज्ञतां ययौ ' " राजा दिलीप बहुत समय तक राजकुमार के छूने की रसज्ञता को प्राप्तहुए । ' सचिरे तपसि स्थितः ' वह चिरकाल पर्यन्त

तपस्या में टिकारहा । ये ७ दीर्घकाल के नाम हैं । सुहुः, पुनःपुनः, शशवत्, अभीक्ष्णम् और असकृत् ये तुल्यार्थक हैं । जैसे कि 'सुहुः पश्यसि कौन्तेय' हे अर्जुन ! तुम बारम्बार देखते हो । 'आगच्छति पुनः पुनः' फिर फिर आता है । 'शशवच्छान्ति निगच्छति' निरन्तर शान्ति को प्राप्त होता है । 'अभीक्ष्णं स्थाल्यामोदनं पचति' बारम्बार बटलोही में भात को पकाता है । 'असकृज्जलपानाच्च' बारम्बार जल पीने से व्रत भङ्ग होजाता है । ये ५ बारम्बार के नाम हैं ॥ १ ॥

शीघ्रतावाचक, स्नाग्भटित्यञ्जसान्हायसपदिद्राड्मङ्क्षु (द्रुते) ।

अतिशयार्थक, बलवत्सुष्ठुकिमुतस्वत्यतीव च (निर्भरे) ॥ २ ॥

स्नाक्, भटिति अञ्जसा, अन्हाय, सपदि, द्राक् और मङ्क्षु ये ७ शीघ्रता के वाचक हैं । जैसे कि 'स्नाग्वयो याति देहिनाम्' देहधारियों की वयस्=(उमर) शीघ्रता से बीत जाती है । 'वृक्षं भटित्यारोह वानरः' वानर वृक्षपर भटसे चढ़ गया । 'अञ्जसा याति तुरगः' घोड़ा वेग से जाता है । 'अन्हाय सूर्येण तमो-निरस्तम्' सूर्य ने अन्धकार को शीघ्रता से दूर करदिया । 'सपदि तां तरुणीं सरणिं मणिं किरतु नाम नवं नवनीविजम्' अहो घनश्यामजी ! उस तरुणी रमणी को तुरन्त त्यागो, राधिकाजी के निकुञ्ज वनमार्ग को पवारो और निश्चयकर नये नारा में टकेहुए नवीनमणि को अलग करदो । 'द्राक् भविष्यति सुखं प्रिये' अयि प्यारी ! तुझे जल्द सुख होगा । 'मङ्क्षुद्रपाति परितः पटलैरलीनाम्' भ्रमरसमूह चारोंतरफ से जल्द उड़े । ये ७ शीघ्रता के नाम हैं । बलवत्, सुष्ठु, किमुत, सु, अति और अतीव ये छः अतिशय अर्थ के वाचक हैं । जैसे कि, 'पुनर्वशित्वाद्बलवन्निगृह्य गतः' फिर वश में आजाने के कारण खूबही जकड़ के बांधकर चलागया । 'सुष्ठु पीतं मया घृतम्' मैंने घीको अघाकर पीलिया । 'किमुता वर्धितं क्षेत्रम्' खेतको खूबही बढ़ाया । 'सुपकं कदलीफलम्' केला का फल खूबही पका है । 'अति वर्षति तोयदः' मेह बहुतही बरसता है । 'अतीव शोभते राजा' राजा अत्यन्त सोहता है । ये ६ अतिशय के नाम हैं ॥ २ ॥

वर्जनार्थक, पृथग्विनान्तरेणर्ते हिरुङ् नाना च (वर्जने) ।

कारणार्थक, यत्तद्यतस्ततो (हेता) वसाकल्ये तु (चिञ्चन) ॥ ३ ॥

पृथक्, विना, अन्तरेण, ऋते, हिरुक् और नाना ये छः वर्जन अर्थ के वाचक हैं । जैसे कि 'किञ्चिदत्त्वा पृथक् क्रिया' कुछके देकर क्रिया=कर्म को अलग करना चाहिये । 'विना वातं विना वर्षं विद्युतः पतनं विना । विना हस्तिकृतं दोषं केनेमौ पातितौ द्रुमौ' वायु विना, वर्षा विना, बिजली के गिरने विना और हाथी

के किये दोष विना इन दोनों वृक्षों को किसने गिराया ? 'अन्तरेण सुतं नारित सुखं संसारिणां भुवि ' पृथ्वीमण्डल में पुत्र के विना संसारी जनों को सुख नहीं होता है । ' ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः ' ज्ञान के विना मुक्ति नहीं होती है । ' हिरक् कर्म न मोक्षः ' कर्म के विना मोक्ष नहीं होता है । ' विष्णुं नाना नास्ति मोक्षदो देवः ' विष्णुजी के विना मोक्षदाता देवता नहीं है । ये ६ वर्जन के नाम हैं । यत्, तत्, यतः, ततः और यहां च शब्द की अनुवृत्ति से येन, और तेन, आदि भी जानना चाहिये । जैसे, कि ' यन्न रम्यं तरस्विभ्यः ' अयि शोभने ? जिससे कि वेगवालों से रमण करने योग्य नहीं है ' तदिदं रक्ष शोभने ' इस लिये तुम इसकी रक्षा करो । ' यतो गङ्गा-म्भसि स्नातः ' जिसस कि गङ्गाजल में नहाया है ' ततो निष्कल्मषो भवेत् ' इस लिये पापरहित होजावेगा । ' वितर गिरमुदारां येन मूकाः पिकाः स्युः ' प्यारी वाणी को बोलो कि जिससे पपिहागण मूक होजावें । ' तेन तुष्टा जनाः सर्वे महामोदं प्रलेभिरे ' उसीसे सारे जनों ने सन्तुष्ट होकर परमानन्द को पाया । ये ४ कारण के नाम हैं । चित्, चन ये दोनों असंपूर्णार्थ के वाचक हैं । जैसे कि "कश्चित्कान्ता विरहगुरुणा स्वाधिकारप्रमत्तः" कोई यक्ष कान्ता के विरह की गुरुता से अपने अधिकार में असावधान हुआ । ' ततः कञ्चन नाश्रयेत् ' तदनन्तर किसी का आश्रय न करे । ये २ असाकल्य के नाम हैं ॥ ३ ॥

किसी काल, स-
हार्थक, अनुकू-
लता, निरर्थक. **कदाचिज्जातु सार्धं (तु) साकं सत्रा समं सह ।**
(आनुकूल्यार्थकं) प्राध्वं (व्यर्थके तु) वृथा मुधा ॥ ४ ॥

कदाचित्, जातु ये दोनों किसीकाल के वाचक हैं । जैसे कि ' कण्डूयमानेन कटं कदाचित् ' कभी गालको खजुआते हुए । ' ज्ञानं ते जातु सूतमम् ' कभी तुम्हें बड़ाही उत्तम ज्ञान होवेगा । ये २ किसीकाल के नाम हैं । सार्धम्—साकम्—सत्रा—समम्—सह और यहां त्रिकण्डशेष कोष के प्रमाण से ' सजूः ' शब्द भी जानना चाहिये । ये पांच सहार्थ के वाची हैं । जैसे कि ' सार्धं दानववैरिणा ' विष्णुजी के साथ । ' पत्न्या साकं पतिर्भुङ्क्ते ' पत्नी (प्यारी) के साथ पति भोजन करता है । ' सत्रा कलत्रेण सुखं समश्नुते ' भार्या के साथ सुखको पाता है । ' समं बधूभिस्तृणा रमन्ते ' युवकलोग बहुओं के साथ रमते हैं । ' पुत्रेण सहागतः पिता ' पुत्र के साथ पिता आया । ' सजूः सख्या गन्तव्यम् ' सखी या सखा के साथ चले जाना चाहिये । ये ५ सहार्थ के नाम हैं । ' प्राध्वम् ' यह एक आनुकूल्य अर्थ का वाचक है । जैसे कि ' प्राध्वं प्रणमति गुरुं गौरीनाथः ' गौरीनाथ गुरु को अनुकूलता से प्रणाम करता है । वृथा—मुधा ये दोनों व्यर्थ या निरर्थक के वाचक हैं । जैसे कि ' पञ्चयज्ञा वृथा तस्य नीलवस्त्रस्य धारणात् ' जो नीलाम्बर को धारण

करता है, उसके स्नान, दान, तप, होम और वेदपाठ ये ५ यज्ञ व्यर्थ होजाते हैं ।
'मुधा बुधा भ्रमन्त्यत्र' यहां बुधलोग व्यर्थ भ्रमते हैं । ये २ व्यर्थ के नाम हैं ॥ ४ ॥

विकल्पार्थक, आहो उताहो किमुत (विकल्पे) किं किमूत (च) ।

पादपूरणार्थक. तु हि च स्म ह वै (पादपूरणे) (पूजने) स्वती ॥ ५ ॥

आहो, उताहो, किमुत, किम्, किमु और उत ये छः विकल्पार्थक हैं । जैसे कि,
“ देवः आहो गन्धर्वः ” देव है या गन्धर्व । “ विकल्पे विस्मयेऽप्यहो ” इस रुद्र-
कोष के प्रमाण से ‘ आहो ’ यह ह्रस्वादि भी है । जैसे कि, ‘ रामः अहो शिवः ’
राम है या शिव । विस्मय में जैसे कि ‘ अहो अलं श्लाघ्यतमं यदोः कुजम् ’ आश्चर्य
है कि यदुकुल बड़ाही प्रशंसनीय है । ‘ उताहो ब्रह्म चोच्यते ’ अथवा ब्रह्म कहा
जाता है । ‘ किमुत त्वं शिवो ब्रह्मा ’ तुम् शिवहो या ब्रह्मा । ‘ स्थाणुरयं किं पुरुषः ’
यह ठूठ है याकि पुरुष । ‘ किमु गृहं वनं गतः ’ वह घर या वनको गया । ‘ विष्णु-
रुत शिवः सेव्यः ’ विष्णु या शिवजी सेवनीय हैं । यह ६ वितर्कण के नाम हैं । तु,
हि, च, स्म, ह, वै ये छः पादपूरणार्थक हैं । जैसे कि, ‘ रामस्तु लक्ष्मणं प्राह ’
रामजी ने लक्ष्मण से कहा । ‘ अहं हि यास्ये नगरं मनोज्ञम् ’ मैं सुन्दर नगर को
जाऊंगा । ‘ स च प्राह च राजानम् ’ उसने राजा से कहा । ‘ कुर्वेस्मा हम् ’ मैं करता हूं ।
‘ स ह तं प्राह लक्ष्मणः ’ उन लक्ष्मण ने उससे कहा । ‘ हतो वै रामचन्द्रेण रावणो
लोकरावणः ’ रामचन्द्रजीने लोकरावण रावण को मारडाला । ये ६ पादपूरण के
नाम हैं । सु—अति ये दोनों पूजा, प्रशंसा या बढ़ाई करनेके वाचक हैं । जैसे कि,
‘ सुस्तुतो देवदेवेशः शिवया सहितो हरः ’ शिवासमेत देवाभिदेव हरजी की भलीभांति
प्रशंसा की । ‘ अत्युत्तमो हि देवानां विष्णुः सर्वगुहाशयः ’ सर्वगुहाओं में शयन करने
हारा विष्णु देवताओं में बड़ाही उत्तम है । ये २ पूजाके नाम हैं ॥ ५ ॥

दिनार्थक, रात्र्य-
र्थक, कुटिला-
र्थक, सम्बोध-
नार्थक. (दिवाहीत्यथ) दोषा (च) नक्तं (च रजनाविति) ।
†
(तिर्यगर्थे) साचि तिरो (ऽप्यथ सम्बोधनार्थकाः) ॥ ६ ॥

दिवस इस अर्थ में ‘ दिवा ’ बर्तता है यानी दिनार्थ का बाची दिवा है । जैसे कि
“ दिवानिशं तप्यति मर्मताडितः ” मर्मों में ताडित होता हुआ प्राणी दिन रात तपता
है । यह १ दिनका नाम है । दोषा—नक्तम् और चकार से उषा ये तीनों रात्रिके
वाचक हैं । जैसे कि ‘ चौराश्च दोषा ययुः ’ चौराण रात में गयेथे । ‘ नक्तं
गृहस्थो भुञ्जीत ’ गृहस्थजन रात्रि में भोजन करे । “ उषागतो रात्र्यां माधवः ”

† साचिः ब्रालिङ्गापि प्रकृत्यन्तरमस्ति । ‘ भित्ति साची परिणतमुखी ’ (इति सप्तकुमारिका) “ तिर्यक्
साचिरभिस्त्रियाम् ॥ (इति रत्नकोषः) ॥ •

माधवजी रात या प्रभातसमय राधाजी को जाप्राप्त हुए । साचि और तिरस् ये दोनों कुटिल (टेढ़ा) अर्थ के वाचक हैं । जैसे कि, ' कृतं साचि धनुस्तेन ' उसने धनुष को तिरछा किया । " तिरो गत्वा समीक्षेत " तिरछा जाकर भलीभांति दर्शन करे । इसके अनन्तर सम्बोधनार्थक हैं ॥ ६ ॥

सम्बोधनार्थक, सामीप्यार्थक, अविचारित, अग्रार्थक. **स्युः (पाट् प्याडङ्गेहेहैभोः) (समया निकषा हिरूक्) ।**
(अतर्किते तु) सहसा (स्या)त्पुरः पुरतोऽग्रतः ॥ ७ ॥

पाट्-प्याट्-अङ्ग-हे-है-भोः-ये छः सम्बोधनार्थक हैं । जैसे कि, ' पाट् भीम ! यज्ञं रक्षस्व ' अयभीम ! यज्ञकी रक्षा करो । ' प्याट् पार्थ जयद्रथं पश्य ' अय अर्जुन ! जयद्रथ को देखो । ' अङ्ग देव ! दयांकुरु ' अयदेव ! दया करो । ' हे राम ! तव दासोऽस्मि ' हे रामजी ! मैं तुम्हारा दास हूँ । ' है अम्ब ! मां सन्निधेहि ' अयि माताजी ! तुम मेरे समीप आओ ! ' क्षमस्व भोदुराराध्य ' भोदुराराध्य ! क्षमाकरो, ये ६ सम्बोधनके नाम हैं । समया, निकषा, हिरूक् ये ३ समीप के वाचक हैं । जैसे कि 'समया ग्रामं नदी वहति' गांव के पास ही नदी बहती है । ' विलङ्घ्य लङ्कां निकषा हनिष्यति ' समुद्र को नांघकर रामने लङ्का के पास ही रावण को मार गिराया । ' हिरूप्रामं गतो भरतः ' श्रीरामके पास भरत ने गमन किया । ये ३ समीप के नाम हैं । अविचारित, अकस्मात् या एकाएकी अर्थ का वाचक 'सहसा' है । जैसे कि ' दिवः प्रसूनं सहसा पपात' अचानक ही आकाश से फूलों की बर्षा हुई । अथवा ' सहसा विदधीत न क्रियाम् ' एकाएकी विना विचारे काम को न करे । यह १ आकस्मिक या अचानक का नाम है । पुरः, पुरतः, अग्रतः-ये तीनों सम्मुख या सामने अर्थके वाचक हैं । जैसे कि, 'पुरः पश्यसि किं बाले' अयि बाले ! तू सामने क्या देखती है ? ' पुरतः स्थाप्य सर्वेशं पूजयेदिति ' सर्वेश्वर को आगे स्थापन कर पूजे । " ददर्श राजा जननीमिव स्वां गामग्रतः प्रस्रविणीं न सिंहम् " राजाने अपनी माता के नाई दूधको मरती हुई गऊ को आगे देखा सिंह को नहीं ॥७॥

देवतार्थक, पि-त्रार्थक, अल्पा-र्थक, जन्मान्त-रार्थक. **स्वाहा (देवहविदाने) औषड्वौषड्वषट् स्वधा ।**
किञ्चिदीषन्मना (गल्पे) प्रेत्यामुत्र (भवान्तरे) ॥ ८ ॥

स्वाहा, औषट्, वौषट्, वषट् और स्वधा ये पांचो देवतार्थ हविष्यदानविशेष में प्रयोग कियेजाते हैं । जैसे कि, ' इन्द्राय स्वाहा ' इन्द्रदेवता के लिये यह होतव्य वस्तु है । एवं ' शम्भवे औषट् ' शम्भुदेवता के लिये यह दातव्य वस्तु है । ' वासु-देवाय वौषट् ' वासुदेव के लिये यह देय पदार्थ है । ' बलाय वषट् ' बलदेवता के

लिये यह देनेयोग्य वस्तु है । ‘ पितृभ्यः स्वधा ’ पितरों के लिये यह कव्य (दातव्य) पदार्थ है । ये ५ देवतार्थ हविष्यदान के नाम हैं । किञ्चित्, ईषत्, मनाक् ये तीनों अल्पार्थ के वाचक हैं । जैसे कि ‘ किञ्चित्किंसितं पुष्पमिति ’ फूल कुछेक खिला है । ‘ ईषदुष्णां पयः पिव ’ कुछेक गरम दूध को पियो । ‘ मनाक् विहस्य सन्तुष्टो बभूव ’ कुछेक हँसकर सन्तुष्ट होगया । ये ३ अल्पार्थक के नाम हैं । प्रेत्य—अमुत्र ये दोनों जन्मान्तर के वाचक हैं । जैसे कि, ‘ प्रेत्य स्वर्गे महीयते ’ मरकर स्वर्गलोक में पूजित होता है । ‘ अमुत्र गत्वा फलमश्नुतेऽसौ ’ यह प्राणी परलोक में जाकर फलको पाता है । ये २ जन्मान्तर के नाम हैं ॥ ८ ॥

तुल्यार्थक,
विस्मयार्थक,
मौनार्थक,
तत्कालार्थक.

व वा यथा तथैवैवं (साम्ये) ऽहो ही च (विस्मये) ।

(मौने तु) तूष्णीं तूष्णीकां सद्यः सपदि (तत्क्षणे) ॥ ९ ॥

व, वा, यथा, तथा, एव या ‘ इव ’ एवम् ये छः तुल्यार्थ या उपमार्थ के वाचक हैं । जैसे कि ‘ शरच्चन्द्रोव ते यशः ’ तुम्हारा यश शरच्चन्द्रमा के नाई प्रकाशता है । ‘ मणीषोष्ट्यं लम्बेते प्रियौ वत्सतरो मम । म्रियमाणौ च तौ दृष्ट्वा मङ्किस्तत्रेदमब्रवीत् ” । मेरे प्यारे बछड़े उंट के गले में युगलमणियों की नाई लटकते हैं । वहां उनको मरा हुआ देखकर मङ्की ब्राह्मण ने ऐसा कहा । ‘ विषन्धरो वा चुक्रोव मेघनादो महाबलः ’ महाबली मेघनाद ने विषधर सांप के नाई कोप किया । ‘ यथा बुभुक्षितस्यान्नम् ’ जैसे भूखे हुए को अन्न अच्छा लगता है । ‘ तथैवार्तस्य चोषधम् ’ वैसेही आर्त (रोगी) को औषध भली भाती है । ‘ शार्दूल एव भूपालो भाति लोके भयंकरः ’ भयकारी सिंह के समान राजा सोहता है । यहां पर स्वामी और मुकुटने ‘ इव ’ शब्द का ग्रहण किया है । जैसे कि, ‘ ह्यायेव तां भूपतिरन्वगच्छत् ’ राजा ह्याया के नाई उस गऊके पीछे चलागया । ‘ अग्निरेवं द्विजोभाति रामान्तिकमुपागतः ’ रामजीके निकट आया हुआ ब्राह्मण आगीके समान चमकता है । ये ६ तुल्यार्थ के नाम हैं । अहो, ही—ये दोनों विस्मय अर्थ के वाचक हैं । जैसे कि, ‘ अहो अलं पुण्यतमं मधोर्वनम्, विस्मय है कि मधुवन अतीव पुण्यदायक है । ‘ ही विचित्रो विपाकः ’ विस्मयदायक विचित्र विपाक है । ये २ आश्चर्य के नाम हैं । तूष्णीम्, तूष्णीकाम्—ये दोनों मौन के वाचक हैं । जैसे कि, “ तूष्णीं स्थित्वा क्षणं रामो जगाम गुरुसन्निधिम् ” श्रीरामजी क्षणभर चुपचाप खड़े होकर गुरुजी के पास चलेगये । “ तूष्णीकामासने रामः स्थित्वा दध्यौ महेश्वरम् ” श्रीरामजी आसन पर चुपचाप बैठकर महादेवजी का ध्यान किया । ये २ चुपचाप के नाम हैं । सद्यः, सपदि—ये दोनों तत्काल के वाचक हैं । जैसे कि, ‘ सद्योहतः समुत्तस्थौ ’ माराहुआ प्राणी तुरन्त उठबैठा । ‘ ध्यात्वा सपदि तं रामं बाणं जग्राह लक्ष्मणः ’ उन रामजी को ध्यानकर

तक्ष्मण ने जल्द बाण को लिया । ये २ तत्क्षणा (उसीक्षणा,) के नाम हैं ॥ ९ ॥

कल्याणार्थक, दिष्ट्याः समुपजोषं (ऐत्यानन्द) स्थान्तरेऽन्तरा ।

मध्यार्थक,

हठार्थक. अन्तरेण च (मध्ये) स्युः प्रसह्य तु (हठार्थकम्) ॥ १० ॥

दिष्ट्या, समुपजोषम् या समुपयोषम् ये दोनों आनन्दार्थ के वाचक हैं और मुकुटने ' दिष्ट्या शमुपजोषं च ' ऐसा पढ़कर दिष्ट्या, शम्, उपजोषम्, या उपयोषम् इन तीन नामों को कहा है । जैसे कि, ' दिष्ट्याते दर्शनं कान्ते ' अयं कान्ते ! बड़ा आनन्द है कि तेरा दर्शन हुआ । ' समुपजोषं समीपं ते दर्शनं यातमुत्तमम् ' आनन्द की बात है कि मैंने समीपही तेरा उत्तम दर्शन पाया । ' शंकरः शंकरो तु मे ' शंकरजी मेरा कल्याण करें । ' उपजोषमुमानाथदर्शनं प्राप्तं मयमे ' बड़े मङ्गल की बात है आज मुझको उमानाथ का दर्शन प्राप्त हुआ । ये ३ कल्याण के नाम हैं । अन्तरे, अन्तरा, अन्तरेण ये तीनों मध्यार्थ के वाची हैं । जैसे कि, ' अनयोरन्तरेतिष्ठ ' इन दोनों के बीच खड़े हो । ' त्वां मामन्तरा हरिः ' तेरे-मेरे बीच हरिजी विराजते हैं । ' नारद पर्वतयोरन्तरेण कमण्डलुः ' नारद व पर्वत के बीच कमण्डलु रक्खा है । ये ३ मध्य के नाम हैं । ' प्रसह्य ' यह एक बलात्कार का वाचक है । जैसे कि, ' प्रसह्य सिंहः किल तां चकर्ष ' सिंहने बलात्कारता ' ज़बरदस्ती ' से उस गऊको किलकिलाकर खींचा । यह १ हठ का नाम है ॥ १० ॥

उचितार्थक, (युक्ते द्वे) सांप्रतं स्थानेऽभीक्षणं शश्व (दनारते) ।

निरन्तरार्थक,

अभावार्थक, (अभावे) नह्यनो नपि मास्म मालं च (वारणे) ॥ ११ ॥

सांप्रतम्, स्थाने—ये दोनों उचितार्थ के वाचक हैं । जैसे कि ' क्रमशो वच्मि सांप्रतम् ' उचित है कि मैं क्रमसे कहता हूँ । विष्वक्षोऽपि संवर्ध्य स्वयं क्षेत्तुमसाम्प्रतम् ' विष्वेले वृक्षको भी भलीभाँति बढ़ाकर आपही काटने छाटने योग्य नहीं होता है । ' स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च ' अहो हृषीकेश ! यह उचितही है कि तुम्हारे कीर्तन से जगत् हर्षित होता और अनुराग को करता है । ये २ युक्तार्थ के नाम हैं । अभीक्षणम्, शश्वत्—ये दोनों निरन्तर के वाची हैं । जैसे कि, ' अभीक्षणमुष्णोरपि तस्य सोष्मणः ' कामज्वर समेत उस रावण का शरीर अत्यन्त गरम, सुरेन्द्र की बन्दीकृत रमणियों के निःश्वास पवनों से जैसा शान्त हुआ है । वैसा चन्दनोदक बिन्दु समेत कोमल जलोक्षित पंखों की पवनों से न शान्त हुआ । ' शश्वच्छान्तिं प्रदेहि मे ' मुझको हमेशा शान्ति को दीजिये । ये २ लगातार या हमेशा के नाम हैं । नहि—अ—नो—न ये चारो अभाव अर्थ के वाचक हैं । जैसे कि ' नहि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति ' अपने आत्माराम को विषय मृगतृष्णा

नहीं घुमाती है । “ अ स्यादभावे स्वल्पार्थे ” (इति विश्वः) अ—यह अभाव और स्वल्पार्थ का वाचक है । अभाव में जैसे कि ‘ अ विप्रवद्भाष से ’ ब्राह्मण के नाई तू नहीं बोलता है । ‘ नो चक्री किं कुलालः ’ जो तुम चक्रधारी नहीं तो क्या कुम्हार हो ? ‘ नायं जनो मे सुख—दुःख—हेतुः ’ यह जन मेरे सुख—दुःख का कारण नहीं है । ये ४ अभाव के नाम हैं । मास्म, मा, अलम् ये तीनों वारणार्थ के वाची हैं । जैसे कि, ‘ मास्मकार्षीरिदं प्रिये ’ । अयं प्यारी जी ! ऐसा मत करो । ‘ मा निषाद ! प्रतिष्ठां त्वमगमश्शाश्वतीः समाः ’ अयं निषाद ! तू बहुत वर्षोंतक प्रतिष्ठा (बड़ाई) को न पावेगा । ‘ अलं महीपाल तव अमेण ’ अयं महीपाल ! तुम्हारे अम से क्या है यानी तुम्हारा अम करनाही बेकार है ? ये ३ वारण (मने करने) का नाम हैं ॥ ११ ॥

पश्चान्तरार्थक,
यथार्थक, प्रक-
टार्थक, अङ्गी-
कारार्थक.

(पक्षान्तरे) चेद्यदि च (तत्त्वे) त्वद्भाञ्जसा (द्वयम्) ।
(प्राकाश्ये) प्रादुराविः (स्या) दोमेवं परमं (मते) ॥ १२ ॥

चेत्—यदि ये दोनों पक्षान्तर (विकल्पार्थ) के वाचक हैं । जैसे कि, ‘ सत्यं चेत्तपसा च किम् ’ यदि सत्य है तो तपस्या से क्या ? ‘ शुचिमनो यद्यस्ति तीर्थेन किम् ’ यदि मन शुद्ध है तो तीर्थ से क्या ? ये २ पक्षान्तर के नाम हैं । अद्धा—अञ्जसा ये दोनों यथार्थ के वाचक हैं । जैसे कि, ‘ भ्रातरं चावधीत्कंसं मातुरद्धाऽत दर्हणम् ’ माताके भाई (मामा) कंस को श्रीकृष्णजीने मार डाला वास्तव में यह काम उनके अयोग्य हुआ । ‘ अञ्जसा मथुरां हृत्वा जरासन्धो जगर्जह ’ वास्तव में मथुरा को घेर कर जरासन्ध बहुतही गर्जा । ये २ तत्त्वार्थ के नाम हैं । प्रादुः—आविः ये दोनों प्रकटार्थ के वाची हैं । जैसे कि “ प्रादुर्भूत्वा तयोर्मध्ये जहार स्वां प्रियां हरिः ” उन दोनों मुनियों के बीच प्रकट होकर श्रीहरिजी ने अपनी प्यारी लक्ष्मी का हरण किया । ‘ देवक्यां देवरूपिण्यां विष्णुः सर्वगुहाशयः । आविरासीद्यथा प्राच्यां दिशी-न्दुरिव पुष्कलः ’ । देवरूपिणी देवकी में सर्वगुहानिवासी श्रीविष्णुजी प्रकट हुए जैसे कि पूर्वदिशा में पूर्णरूप होकर चन्द्रमा प्रकट होता है । ये २ प्रकटार्थ के नाम हैं । ओम्, एवम्, परमम्—ये तीनों अनुमति या अङ्गीकार के वाची हैं । जैसे कि, ‘ ओमित्युक्तवतोऽथ शार्ङ्गिणा इति ’ वैसाही हो ऐसा स्वीकार करते व शिशुपाल से क्रोधित होतेहुए शार्ङ्गधारी श्रीकृष्ण के बदन में आकाश के नाई सदा शत्रुविनाशक उत्पात विशेष ने भौहों के छल से प्रतिष्ठा को किया । ‘ एवं यदाह भगवान् ’ ऐसाही हो ऐसा अङ्गीकार कर जिसको भगवान् ने कहा । “ इत्युक्त्वा परमं रामो हनुमन्त-मुवाचह ” अङ्गीकार है ऐसा कह कर श्रीरामने हनुमान् से कहा, ये ३ अनुमत के नाम हैं ॥ १२ ॥

सब तरफ़,
यथेष्ट, अत्यर्थ,
या विनाकामना
स्वीकार, निन्दा-
समेत स्वीकार.

समन्ततस्तु परितः सर्वतो विष्वगि (त्यपि) ।

(अकामानुमतौ) कामम(त्यापगमे) ऽस्तु (च) ॥ १३ ॥

समन्ततः, परितः, सर्वतः, विष्वक् ये चारो सर्वतः (सब कहीं) इस अर्थ में प्रयोग किये जाते हैं । अपि शब्द से ' अभितः, विश्वतः, समन्तात् '—आदिकों का संग्रह किया जाता है । जैसे कि ' समन्ततो वर्षति वारिवाहः ' मेह चारों तरफ़ वर्षता है । ' आयान्ति परितःश्रियः ' संपत्तियाँ चारों ओरसे आती हैं । ' सर्वतो वाति पवनः ' हवा सब तरफ़ से चलती है । ' विष्वक् पतन्ति किरणाः ' किरणें चारों तरफ़ पड़ती हैं । ' अभितो ग्रामं वनानि सन्ति ' गांव के चारों तरफ़ जंगलही जङ्गल हैं । ' विश्वतो वाति वातोऽयम् ' यह वायु चारोंतरफ़ बहती है । ' समन्तात्सरति स्मरः ' कामदेव सबही ओर सरकता है । ये ७ सब कहीं इस अर्थ के नाम हैं । विना कामना अङ्गीकार, यथेष्ट या अत्यर्थ का वाचक ' कामम् ' यह । एक अव्यय है । जैसे कि ' त्वं हनिष्यसि चेत्कामम् ' † यदि तू यथेष्ट उसको मारेगा । यह १ विना कामना स्वीकार का नाम है । निन्दापूर्वक स्वीकार अर्थ का वाची ' अस्तु '—यह एक है । च शब्दसे ' नाम ' का भी संग्रह किया जाता है । जैसे कि, ' माजीवन् यः परावज्ञादुःखदग्धोऽपि जीवति । तस्या जननिरेवास्तु जननीक्षेपकारिणः ' (इति माघः) जो प्राणी पराये अनादर के दुःख से जला व निन्दितजीवी होता हुआ प्राणों को धारता है उस मातृकष्टकारी का न पैदा होनाही भला है । यह १ निन्दापूर्वक अङ्गीकार का नाम है ॥ १३ ॥

विरोधोक्ति, इष्ट
प्रश्न, निन्दा
योग्य, यथा
योग्य.

ननुच (स्याद्विरोधोक्तौ) कश्चित् (कामप्रवेदने) ।

निःषमं दुःषमं (गह्रै) यथास्वं (तु) यथायथम् ॥ १४ ॥

' ननुच ' या ' ननु ' यह एक अव्यय विरोधवचन में वर्तता है यानी विरोधोक्ति का वाचक है । जैसे कि, " ननु (च) एवं मन्यसे तर्हि किमपि न स्यात् " जो तू ऐसाही मानेगा तो कुछ भी न होगा ? यह १ विरोधोक्ति का नाम है । ' कश्चित् ' यह एक अव्यय इष्ट परिप्रश्न या इच्छार्थ प्रकाश करने का वाची है । जैसे कि, ' कश्चिजीवति मे माता ' क्या मेरी माता जीती है ? यह १ कामप्रवेदन का नाम है । निःषमम्—दुःषमम् ये दोनों निन्दनीय अर्थ के वाचक हैं । जैसे कि, " निःषमं वक्ति मे मूर्खो वेदविद्याविनिन्दकः " । वेदविद्याविदूषक होकर मूढ़ प्राणी मुझसे निन्दनीय वचन कहता है । " दुःषमं वर्तते कान्ता कान्तिहीना कलिप्रिया, " मगड़नेहारी

† " आरभन्तेऽल्पमेवाज्ञाः कामं व्यपा भवन्ति च । महारम्भाः कृतप्रियसिद्धन्ति च निराकुलाः " (इति भाषः) ।

नारी शोभा रहित होकर दुःखसे वर्तती है । ये २ निन्दनीय के नाम हैं । यथा स्वम्, यथायथम्—ये दोनों यथायोग्य के वाची हैं । जैसे कि ‘यथास्वमाश्रमं चक्रे चित्रकूटे नगोत्तमे’ पर्वतों में उत्तम चित्रकूट पर श्रीरामजीने यथायोग्य आश्रम का निर्माण कराया । ‘यथायथं फलायन्ते रसालाद्या रसाकराः’ रसखानि आश्रम आदि फल यथायोग्य फलते हैं । ये २ यथोचित के नाम हैं ॥ १४ ॥

असत्यार्थक, नि-
सत्यार्थक, नि-
श्चयार्थक. **मृषा मिथ्या च (वितथे) यथार्थ (तु) यथातथम् ।**
(स्यु) रेवं तु पुनर्वैवे (त्यवधारणवाचकाः) ॥ १५ ॥

मृषा, मिथ्या—ये दोनों असत्यार्थ के वाचक हैं । जैसे कि “उच्छ्रायसौन्दर्यगुणा मृषोद्याः” उंचाई व सौन्दर्यता के गुण कवियों को भूँठ कहने योग्य नहीं होते हैं । “सत्यमुक्तं त्वया नात्र मिथ्या किञ्चिद्वयोदितम्” तूने सत्य कहा इसमें तैने कुछ भूँठ नहीं कहा है । ये २ असत्य के नाम हैं । यथार्थम्, यथातथम्—ये दोनों यथायोग्य के वाची हैं जैसे । कि, “यथार्थमुक्तं भवता न चान्यत्” आपने यथार्थ कहा असत्य नहीं । “गुरुर्यथातथं ब्रूते गोविन्दगुणगायकः” गोविन्दगुणगायक गुरुजी सत्यही कहते हैं । ये २ यथार्थ के नाम हैं । एवम्—तू—पुनः—वै, वा या वा—एव ये पांचो निश्चयार्थ के वाचक हैं. और सुभूति के मतमें एवम्, तु, पुनः, वा, च ये ५ निश्चयार्थक हैं । जैसे कि “एवमेव यथा प्राह” जैसा आप कहते हैं ऐसाही है । “रावणं तुदुरात्मानमवधीद्राघवः प्रभुः” स्वामी रामजीने दुरात्मा रावणको निश्चय कर मारडाला । “पुनर्वभाषे वसुदेवसूनुः” वासुदेवजीने निश्चित वचन कहा । “धर्मज्ञो व्याससूनुर्वै सज्जनानन्ददायकः” व्यासपुत्र शुकदेवजी निश्चय कर धर्म-ज्ञाता होकर सज्जनों के आनन्ददायक हैं । “स्वामिना तु वंचो वोक्तं तन्मे भद्रकरं भवेत्” स्वामीजीने जो निश्चित वचन कहा था वह मेरे को मङ्गलकारी होगा । “तदेव सत्यं वद मे मुरारे” अहो मुरारे ! मुझ से उस सत्य वचन कोही कहिये । ये ५ अवधारण के नाम हैं ॥ १५ ॥

अतीतार्थक, नि-
श्चयार्थक, संव-
त्सरार्थक. प-
श्चादर्थक, आ-
त्मार्थक.

प्राग (तीतार्थकं) नूनमवश्यं (निश्चये द्वयम्) ।

संव(द्वर्षे)(ऽवरे)त्वर्वागामेवं स्वय (मात्मना) ॥ १६ ॥

“प्राक्” यह एक अतीतार्थ का वाचक है । जैसे कि “प्राक्कर्मकृतं भुङ्क्ते जनो-जातो धरातले” पृथ्वीतल में उपजा हुआ प्राणी पूर्वकृत कर्म को भोगता है । यह १ भूतार्थ का नाम है । नूनम्—अवश्यम् ये दोनों निश्चयार्थ के वाची हैं । जैसे कि “धर्मज्ञो धर्मराजोऽयं नूनं राज्यं प्रपत्स्यते” यह धर्मराज (युधिष्ठिर) जी धर्म के ज्ञाता हैं. इस लिये निश्चय कर राज्य को पावेंगे । “अवश्यं यातारश्चिरतरमुपि-

त्वापि विषयाः ” कामादि विषयगण चिरकालपर्यन्त बस करके भी अवश्यही जाने-वाले होते हैं । ये २ निश्चयार्थ के नाम हैं । ‘ संवत् ’ यह एक वर्ष या सालका वाचक है । जैसे कि ‘ साम्प्रतं क्षयनामकं संवत् प्रवर्तते ’ इस समय क्षयनामक संवत्सर प्रवर्तमान है । यह १ संवत्सर का नाम है । पूर्वकाल से पीछे इस अर्थ का वाचक ‘ अर्वाक् ’ है । जैसे कि “ कुले ऋतुत्रयादर्वाक् मण्डनान्नतु मुण्डनम् ” वंशरथ तीन पुरुषों के मध्य में यज्ञोपवीत के अनन्तर छः महीना तक मुण्डन नहीं करना चाहिये । यह १ पश्चादर्थ का नाम है । आम्र-एवम् ये दोनों निश्चयार्थ या अङ्गीकारार्थ के वाचक हैं । जैसे कि “ आं कुर्मो वचनं गुरोः ” हमलोग गुरुके वचनों को स्वीकार करते हैं । “ एवं कृत्वा पितुर्वाक्यं रामो मात्रान्तिकं गतः ” पिता (दशरथ) का वचन मानकर रामजी माता (कौसल्या) के पास चले गये । ये २ अङ्गीकार के नाम हैं । ‘ स्वयम् ’ यह एक आत्मा इस अर्थ का वाचक है । जैसे कि “ जायते श्रीपतिः स्वयम् ” श्रीपतिजी आपही प्रकट होते हैं । यह १ आत्मार्थ का नाम है ॥१६॥

अल्पार्थक, मह-
त्त्वार्थक, बाहु-
ल्यार्थक, अशी-
घ्रायार्थक, नित्या-
र्थक, बाह्यार्थक,
अतीतार्थक, अ-
दर्शनार्थक.

(अल्पे) नीचै (मह) त्युच्चैः प्रायो (भूम्यद्भुते) शनैः ।

सना(नित्ये)बहि(बाह्ये)स्मा(तीते)स्त(मदर्शने) ॥१७॥

‘ नीचैः ’ यह एक अल्पार्थ का वाचक है । जैसे कि “ तथापि नीचैर्विनयाददृश्यत ” तौ भी विनय से नीचेही देखे गये । यह १ अल्पार्थ का नाम है । ‘ उच्चैः ’ यह एक महत्त्व अर्थ का वाची है । जैसे कि “ उच्चैरधः पातिपयोमुचोऽपि समूह-मूहुः पयसां प्रणाल्यः ” ऊंचे व जिनके नीचे मेघ गिरे हैं उन पनारों ने जलसमूहों को बहाया । यह १ महदर्थ का नाम है । “ प्रायः ” यह एक बाहुल्यार्थ का नाम है । जैसे कि “ प्रायः साहसिकाः स्त्रियः ” स्त्रीगण बहुधा साहसकर्म की करनेहारी होती हैं । ‘ शनैः ’ यह एक अशीघ्र (विलम्ब) अर्थ का वाचक है । जैसे कि, “ शनैरनीयन्त रयात्पतन्तो रथाः क्षितिं हस्तिनखादस्वदैः ” ओटेसे खेदरहित घोड़ोंने वेगसे गिरते हुए रथों को पृथ्वी पे धीरे से पहुँचाया । यह १ अशीघ्रार्थ का नाम है । ‘ सना ’ यह एक अथवा सना-सनात्-सनत् ये तीनों नित्य (हमेशा) अर्थ के वाचक हैं । जैसे कि “ सनातनोऽयं पुरुषः पुराणः ” यह पुराण पुरुष सनातन यानी तीनों कालों में एकरस बना रहता है । “ सनाभ्रमस्ये चरणौ मुरारेः ” मुरारिजीके चरणों को मैं सदैव नमस्कार करता हूँ । “ सनत्कुमारो वचनं बभाषे ” ब्रह्मा का बेटा “ एक मुनि ” जो कि सदा कुमाररूपसे ही रहता है, उसने वचन को कहा । यह १ नित्यार्थ का नाम है । ‘ बहिः ’ यह एक बाह्य अर्थ का वाचक है । जैसे कि, “ बहिर्विकारं प्रकृतेः पृथग्विदुः पुरातनं त्वां पुरुषं पुराविदः ” विकारों से

बाहर, प्रकृति से परे हुए तुमको कपिलादिकों ने पुरातन पुरुष कहा है । 'स्म' यह एक अतीतार्थ का वाचक है । जैसे कि, "शीतालुः सलिलगतेन सिच्यते स्म" शीतसे कांपती या डरती हुई नायिका को जलगत नायक ने सींचा यानी जल के छिट्ठाओं से तर बतर करदिया । यह १ अतीतार्थ का नाम है । "अस्तम्" यह एक दर्शनाभाव अर्थ का वाचक है । जैसे कि "उदयति त्रिततोर्ध्वरश्मिरज्जावहिमरुचौ हिमधास्नि याति चास्तम्" फैली व ऊपर को गई किरणरूप रस्सीवाले सूर्य के उदय होते व चन्द्रमा के अस्तमयमान होते हुए इस पर्वत ने मानों लटकते हुए दो घण्टाओं से परिवारित गजेन्द्रलीला को किया है । यह १ अदर्शनार्थ का नाम है ॥ १७ ॥

सत्ता, कोपोक्ति, प्रश्न, सान्त्वन, तर्क, रात्रि वि-
राम, नमस्कार. **अस्ति (सत्त्वे) (रूपोक्तावू) मुं (प्रश्ने) (ऽनुनये) त्वयि ।**
हुं (तर्के) स्यादुषा (रात्रेरवसाने) नमो (नतौ) ॥ १८ ॥

अस्ति, यह एक सत्ता या विद्यमानता अर्थ का वाचक है । जैसे कि "मित्रमस्ति-धनं कृष्णं पश्येत्याह प्रिया पतिम्" विद्यमान धनवाले मित्ररूप श्रीकृष्णजी का दर्शन कीजिये । ऐसा प्यारी ने प्यारे से कहा । यह १ सत्ता का नाम है । क्रोधसे कहने अर्थ का वाची 'उम्' यह एक अव्यय है । जैसे कि "उमागतोहं शत्रुस्ते पौरुषं दर्शयाशु मे" ओ बे मैं तेरा बैरी आ पहुंचा हूं मुझे जल्द पौरुष को देखला । यह १ को पोक्ति का नाम है । पूछने या क्रोधसे पूछने अर्थ का वाचक 'उम्' यह एक अव्यय है । जैसे कि 'उं गच्छसि बहिर्ध्व' अय प्यारे ! क्या बाहर जाते हो ? यह १ प्रश्न का नाम है । 'अयि' या 'अये' यह एक अनुनय=सान्त्वन (तसल्ली देना) प्रीति या प्रार्थना का वाचक है । जैसे कि, "अयि विजहीहि दृढोपगूहन्म्" अय प्यारे ! दृढ़ आलिङ्गन को त्यागिये ! "माकुरु मानिनि मानमये" अये मानिनि ! मानको मतकरो । यह १ अनुनय का नाम है । 'हुम्' यह एक तर्क का वाची है । जैसे कि "हुं रामो भरतो हुं च" क्या रामजी हैं या भरत । यह १ तर्क का नाम है । उषा या उषः (स्) यह एक रात्रि के अवसान का वाचक है । जैसे कि "उषातनो वाति वायुः" उषाकालीन वायु बहता है । यह १ रजनीशेष का नाम है । नमः (स्) यह एक नमस्कार अर्थ का वाची है । जैसे कि "नमो ब्रह्मण्यदेवाय" ब्रह्मण्यदेव के लिये नमस्कार है । यह १ प्रणाम का नाम है ॥ १८ ॥

पुनरर्थक, नि-
न्दार्थक, प्रशं-
सार्थक, सायं-
कालार्थक, प्र-
भातार्थक, स-
मीपार्थक. **(पुनरर्थे) ऽङ्ग (निन्दार्थां) दुष्टु सुष्टु (प्रशंसने) ।**
सायं (साये) प्रगे प्रातः (प्रभाते) निकषा (न्तिके) ॥ १९ ॥

‘अङ्ग’ यह एक पुनरर्थ का वाचक है । जैसे कि, “मूर्खाऽपि नावमन्येत किमङ्ग ! विद्वान्” मूर्ख का भी अनादर न करे फिर विद्वान् को क्या कहना चाहिये ? यह १ पुनरर्थका नाम है । ‘दुष्टु’—यह निन्दा का वाचक है । जैसे कि, “दुष्टु खलु त्वम्” निश्चयकर तू दुष्टु, यानी बुरा है । यह १ निन्दा का नाम है । ‘सुष्टु’—यह प्रशंसा, बड़ाई या तारीफ़ का नाम है । जैसे कि, “सुष्टु काव्यं त्वया कृतम्” तुमने काव्य को अच्छा बनाया है । यह १ प्रशंसा का नाम है । सायम्—यह एक सन्ध्याकाल (शाम) का वाचक है । जैसे कि, “सायं सन्ध्यामुपासिष्ये” मैं सायंकालीन सन्ध्या की उपासना करूंगा । यह १ सायंकाल का नाम है । प्रगे, और प्रातः ये दोनों प्रभातकाल के वाचक हैं । जैसे कि “इत्थं रथाश्वेभनिषादिनां प्रगे गणो नृपाणा-मथतोऽस्माद्बहिः” इस प्रकार सूर्योदय के अनन्तर रथ, घोड़े और हाथियों पै सवार राजाओं के गणों ने बाहिरी दरवाजे के बाहर अच्युत भगवान् को देखा । “रेवती रमणो रामः प्रातरत्र समागतः” प्रभातसमय रेवतीरमण बलरामजी यहां आये थे । ये २ प्रातःकाल के नाम हैं । और निकषा । यह एक समीप अर्थ का वाचक है । जैसे कि, “निकषा पत्तनं नदी वहति” शहर के पासही नदी बहती है । यह १ समीप या निकट का नाम है ॥ १६ ॥

पूर्वगत, पूर्वपूर्व परुत्परार्येषमो (ऽब्दे पूर्वे पूर्वतरे यति) ।

गत, वर्तमानवर्ष, आजदिन, पूर्व-अद्या (त्राह्य) थ पूर्वेऽह्नीत्यादौ पूर्वोत्तरापरात् ॥२०॥
गत दिनादि. तथाधरान्यान्यतरेतरात्पूर्वेद्युरादयः ।

पूर्ववर्ष, पूर्वतरवर्ष और वर्तमान वर्ष इन्होंके वाचक परुत्-परारि-और ऐषमः ये तीनों क्रमसे होते हैं । यानी बीते पूर्ववर्ष को ‘परुत्’ कहते हैं, जैसे कि, “परु-आगतः कामिनीं कान्तकोऽसौ” बीते हुए पूर्ववर्ष में यह कान्त कामिनी के पास नहीं आया था । एवं पूर्व से पूर्वगत वर्ष को ‘परारि’ कहते हैं जैसे कि “परारि नागतः कृष्णो राधां बाधाहरीं प्रियाम्” पूर्वसे पूर्वगत वर्ष में बाधा हरने हारी प्यारी राधाजीके पास श्रीकृष्णजी नहीं आये थे । वर्तमान वर्ष को ‘ऐषमः’ (स) कहते हैं । जैसे कि, “ऐषमो भगवानिन्द्रो भूरि वृष्टिं करिष्यति” इस साल भगवान् इन्द्रजी बड़ीभारी वर्षा करेंगे । आज के दिन का वाचक ‘अद्य’ यह एक अव्यय है । जैसे कि, “अद्यापि सेनातुरगाः सविस्मयैरलूनपक्षा इव मेनिरे जनैः” विस्मय-समेत जनोंने आज के दिन सेनोके घोड़ोंको बिना कटे हुये पंखोंके नाई माना । यह १ आज के दिन का नाम है । इसके अनन्तर पूर्व, उत्तर, अपर तथा अधर, अन्य, अन्यतर और इतर इन शब्दों से पूर्व दिवस आदि अर्थों में (एद्युस्) प्रत्यय करने पर ‘पूर्वेद्युः’ आदि सात शब्द क्रमसे सिद्ध होते हैं यानी “पूर्वस्मिन्नहनि” इस अर्थ का वाचक ‘पूर्वेद्युः’ कहा जाता है । जैसे कि, “पूर्वेद्युः प्राह पितरं-पूर्णानन्दः परेश्वरः”

प्रातःकाल या पूर्वदिन में परों के स्वामी पूर्णानन्द पिताजी से बोले । एवं “उत्तरेऽहनि” उत्तर दिन का वाचक ‘उत्तरेद्युः’ कहाता है । जैसे कि “नान्दीमुखादुत्तरेद्युर्विवाहः परिकीर्तितः” नान्दीमुख आद्ध से उत्तर दिन में विवाह कहा गया है । “अपरेऽहनि” अपर दिन का वाचक ‘अपरेद्युः’ कहलाता है । जैसे कि, “अपरेद्युर्गमिष्यामि मथुरां माधवप्रियाम्” अपर दिन में माधव की प्यारी मथुरा को मैं जाऊंगा । “अधरेऽहनि” अधर दिन का वाची ‘अधरेद्युः’ कहाता है । जैसे कि “अधरेद्युरधोगत्वा नागनाथं ददर्शह” अधर दिन में नीचे जाकर उसने नागनाथ को देखा । “अन्यस्मिन्नहनि” अन्य दिनका वाचक ‘अन्येद्युः’ कहा जाता है । जैसे कि, “अन्येद्युरात्मानुचरस्य भावम्” अन्य दिन में अपने सेवक का भाव जानना चाहती । “अन्यतरस्मिन्नहनि” अन्यतर दिन को ‘अन्यतरेद्युः’ कहते हैं । जैसे कि, “दृष्ट्वात्वन्यतरेद्युर्मामानन्दुर्मुनयोऽमलाः” अन्यतर दिवस में मुझे देखकर मजरहित मुनियों ने आनन्द मनाया । “इतरस्मिन्नहनि” इतर दिन का वाचक ‘इतरेद्युः’ कहाता है । जैसे कि, “इतरेद्युर्निरीक्षेहमीशानं पार्वतीप्रियम्” इतर दिन में पार्वती के प्यारे महादेवजी को मैं देखता हूं । यह एक २ क्रम से पूर्वादि दिवसों का नाम है ॥ २० ॥

दोनों दिन, पर **उभयद्युश्चोभयेद्युः (परेत्वाहि) परेद्यवि ॥ २१ ॥**
दिन.

उभयद्युः, उभयेद्युः—ये दोनों उभय दिवस के वाचक हैं । जैसे कि “उभयद्युरुमानाथपादकञ्चं भजाम्यहम्” उमानाथजीके चरण कमलों को मैं दोनों दिवसों में भजता हूं । “उभयेद्युर्भजेरामं ससीतं लक्ष्मणानुगम्” दोनों दिनमें अनुगामी लक्ष्मण व सीता समेत रामजीको मैं भजता हूं । ये २ उभय दिन के नाम हैं । पर दिन का वाची ‘परेद्यवि’ कहाता है । जैसे कि, “मित्रं दृष्टं परेद्यवि” परदिन में उसने मित्र को देखा । यह १ पर दिन का नाम है ॥ २१ ॥

गयादिन, आने
वाला दिन, पर-
सों, उसीसमय,
एकसमय, सर्व
समय.
ह्यो (ज्तीते) (ज्नागतेऽहि) श्वः परश्वश्च (परेऽहनि)
तदा तदानीं युगपदेकदा सर्वदा सदा ॥ २२ ॥

‘ह्यस्’ यह गये दिन का वाचक है । जैसे कि “ह्योऽभवत्त्वत्पुत्रः” गये दिन में तुम्हारे लड़का हुआ । यह १ बीते दिन का नाम है । ‘श्वस्’ यह आगामी दिन का वाची है । जैसे कि, “श्वोभविता राज्यभारो रामस्य” आनेवाले दिन में श्रीरामजी को राज्य का भार प्राप्त होगा । यह १ आगामी दिन का नाम है । परश्वः यह परदिन (परसों) का वाचक है । जैसे कि, “रामः परश्वः समुपैष्यते माम्” परसों के दिवस श्रीरामजी मुझको प्राप्त होंगे । यह १ परसों का नाम है । तदा—

तदानीम् ये दोनों तत्काल के वाचक हैं। जैसे कि, “ तदा चक्षुष्मतां प्रीतिः ” उस समय नेत्रवानों की प्रीति होती है। एवं “ यदा स्याद्राधया संगस्तदानीमेव मे सुखम् ” अथि सखि ! जब राधा के साथ समागम होगा तबहीं मुझको सुख होवेगा। ये २ तत्काल के नाम हैं। युगपद्—एकदा ये दोनों एकसमय के वाची हैं। जैसे कि, “ उदयाद्रिमूर्ध्नियुगपश्चकासतोः ” उदयाचल के शिखरपै एकही समय चन्द्रमा व सूर्य ये दोनों प्रकाशमान होते हुए। “ एकदा भगवान्व्यासो वासुदेवं ददर्शह ” एक समय भगवान् व्यासजीने वासुदेवजी को देखा। ये २ एककाल के नाम हैं। सर्वदा—सदा ये दोनों सर्वकाल ‘ हमेशा ’ के वाचक हैं। जैसे कि, “ तैरस्मान्क्ष सर्वदा ” अहोमातः ! उन पूर्वोक्त हथियारों से हमेशा हम लोगों की रक्षा कीजिये। एवं “ याचन्ते याचकाः सदा ” मंगतालोग हमेशा मांगा करते हैं। ये २ सब काल के नाम हैं ॥ २२ ॥

अब या इस
समय, पूर्व,
उत्तर, पश्चिम.

एतर्हि संप्रतीदानीमधुनासांप्रतं तथा ।

(दिग्देशकालेपूर्वादौ) प्रागुदक्प्रत्यगादयः ॥ २३ ॥

इत्यव्ययवर्गः ॥

एतर्हि—संप्रति—इदानीम्—अधुना और सांप्रतम् ये ५ इस समय या अबके वाचक (नाम) हैं। जैसे कि “ एतर्हि क्रियते कार्यम् ” अभी कार्य किया जाता है। “ हरत्ययं संप्रति हेतुरेष्यतः ” इस समय आनेवाले शुभका कारण आपका दर्शन पापको हरता है। “ इदानीं नास्ति ते भयम् ” अब तुमको भय नहीं है। “ नीर क्षीरविवेके हंसास्त्वमेव तनुषे चेत् । विश्वस्मिन्नधुनान्यः कुलव्रतं पालयिष्यति कः ” अहो हंस ! पानी व दूध के विवेक में यदि तुम्हीं आलस करोगे तो अब विश्व में दूसरा कौनसा है जो कि कुलव्रत को पालेगा। “ मानिनीमानविध्वंसदक्षो जयति सांप्रतम् ” इस समय मानिनियों के मानहरने में चतुर कृष्णजी जय करें। जब पूर्व आदि शब्द दिशा—देश व कालके वाच्य रहते हैं तो प्राक्—उदक्—और प्रत्यक् आदि शब्द साधु होते हैं। जैसे कि “ प्रागेव विद्यमानत्वात् तेषामिह संभवः ” पहलेही विद्यमान होने के कारण उन विकारों का संभव नहीं है। “ उमानाथो ह्युदगतः ” उमानाथ उत्तरदिशा में गये। “ प्रत्यगतो महेशानो रामं दृष्ट्वा जहर्षह ” पश्चिम में पहुँचे हुए महेशजी रामजीको देखकर हर्षित हुए। “ पूर्वादौ ” इस आदि शब्द से उत्तर—दक्षिण—अग्र और ऊर्ध्व आदि का ग्रहण किया जाता है। और “ प्रत्यगादयः ” इस आदि शब्द से उत्तरात्—अधरात्—दक्षिणात्—उत्तरेण—अधरेण—दक्षिणेन—दक्षिणा—दक्षिणाहि—दक्षिणतः और उत्तरतः आदि का भी ग्रहण होता है जैसे कि “ उत्तरास्तु गतो योगी जटाधारी दिगम्बरः ” दिगम्बर जटाधारी योगी उत्तर दिशा में चला गया “ अधरात्तु गमिष्यामि ” मैं अधोदिशा में जाऊंगा “ दक्षिणात्तु ययौ देवः ” देव

दक्षिणदिशा में चला गया “ उत्तरेण गतो रामः ” रामजी उत्तरदिशा में पासही चले गये “ अधरेण नदी वहति ” नदी अधोदिशा में पासही बहती है । “ दक्षिणेन शिवानाथो रमानाथं ददर्शह ” शिवानाथ ने दक्षिणदिशा में पासही रमानाथ को देखा । “ दक्षिणा दुर्जना यन्ति ” दक्षिणदिशा में दूर पै दुर्जनलोग जाते हैं । “ दक्षिणाहि वसन्त्यत्र श्वपाकाः पापकारिणः ” पापकारी भङ्गीलोग या चाण्डाल लोग यहां दक्षिणदिशा में दूर पै बसते हैं । “ गतो दक्षिणातः खलः ” खल रावण दक्षिणदिशा में चला गया । “ शिवोऽष्टोत्तरतो नित्यं विजह्ने शिवया सह ” उत्तरदिशा में शिवजीने शिवा के साथ नित्य विहार किया “ ग्रामस्योपरि पक्षिणः पतन्ति ” पखेरू गांव के ऊपर गिरते हैं । “ उपरिष्ठान्नारदोभ्यागात् ” ऊपर से नागद आगये । “ ततोऽथस्ताद्वसतीह भौमः ” उसकी अधो दिशा में मङ्गल बसता है । इत्यादि जानना चाहिये ॥ २३ ॥

इत्यव्ययवर्गः ॥

अथ लिङ्गसंग्रहवर्गो व्याख्यायते ॥

सलिङ्गशास्त्रैः सन्नादिकृत्तद्धितप्रत्ययैः ।

अनुक्तैः संग्रहे लिङ्गं संकीर्णवदिहोन्नयेत् ॥ १ ॥

“ सलिङ्गशास्त्रैः ” पाणिनिआदिकोंसे कहेहुए लिङ्गानुशासनसमेत ‘ सन् ’ आदि-प्रत्ययों से उत्पन्न चिकीर्षा, लोलूया कण्डूया, पुत्रकाम्या, आदि शब्दों से, कृत्प्रत्ययों से उत्पन्न भूतिः—इष्टिः—कृतिः—स्मृति आदिकों से, तद्धित प्रत्ययों से उपजे अणायन्त औपगवः—औपगवी, गार्ग्यः, गार्गी आदिकों से, समासप्रयुक्त लिङ्गभागी संज्ञापरिभाषम्, बदरामल आदिकों से और पहले अनुक्तशब्दों से संग्रह किया जाता है । यहां इस संग्रहवर्ग में लिङ्गका ज्ञान किसभाँति करना चाहिये ? इस आशङ्कामें कहतेहैं कि ‘ संकीर्णवत् ’ जैसे संकीर्णवर्ग में प्रकृति-प्रत्ययाद्यर्थों से लिङ्ग जानेजाते हैं वैसेही यहां भी जानना चाहिये । तहां प्रकृति से जैसे कि “ अर्धर्चाः पुंसि च ” से अर्धर्चः, अर्धर्चम् । प्रत्ययार्थ से जैसे “ स्त्रियां क्तिन् ” “ पुंसि संज्ञायां घः ” । “ नपुंसके भावे क्तः ” आदि । “ प्रकृतिप्रत्ययाद्यर्थैः ” इस आदि शब्द से क्रियाविधेयों को नपुंसकत्व और एकवचनान्तत्व भी होता है । उसीसे “ सुखं सुष्वाप पिङ्गला ” आदि सिद्ध होते हैं । यदि कहाजावे कि ‘ कृत्प्रत्ययजैः ’ इस वचन से चिकीर्षा व पुत्रकाम्या आदिकों का संग्रह सिद्धही है अलग सन्नादिकोंका ग्रहण किस लिये किया गया है ? तहां कहते हैं कि, गोबलीवर्दन्याय या ब्राह्मणवसिष्ठन्याय से प्राधान्यसूचनार्थ जानना चाहिये ॥ १ ॥

लिङ्गशेषविधि, लिङ्गशेषविधिव्यापी विशेषैर्यद्यबाधितः ।

ईदन्त-ऊदन्त-

एकस्वर, भगस-
मेत प्राणिनाम्, स्त्रियामीदृदिरामैः प्राणिनाम् च ॥ २ ॥

सन् आदि-कृत-तद्धित और समास से उत्पन्न विषय पूर्वोक्त शब्दों का अन्य-लिङ्ग “ शेषलिङ्ग ” कहलाता है उसकी विधि उत्सर्ग होनेसे काण्डत्रय की व्यापक है । जो पूर्वोक्त और यहां की कही हुई विशेष विधियों से बाधित न होवे तभी व्यापक होती है । क्योंकि “ अपवाद विषय को छोड़ कर उत्सर्ग सर्वत्र प्रवृत्त होता है ” । इस कथन से लिङ्गविशेषविधि को जोकि उत्सर्गभूत का स्वर्ग आदि वर्ग अपवाद हैं उनमें प्रथम कहे हुए विशेषों को पुनरुक्त दोष व विस्तारकी भय से फिर यहां विधान नहीं किया जाता है । और यहां स्वर्गपर्याय पुंलिङ्ग कहेंगे उसका “ द्योदिवौ द्वे स्त्रियां क्लीबे त्रिविष्टपम् ” यह पूर्वोक्त अपवाद है । और नी प्रभृतियों को तो “ कृतः कर्तरि ” आदिकों से कहेंगे-यद्यपि पहले ‘ लिङ्ग ’ कहा है तो भी अप्राप्त की प्रापणार्थकता के कारण यहां भी लिङ्गानुशासनही प्रधान है । “ स्त्रियाम् ” इसका अधिकार ‘मसी’ शब्द पर्यन्त जानना चाहिये । जिनके ईकार व ऊकार अवसानस्थ हैं वे और एकाच् ये दोनों स्त्रीलिङ्ग होते हैं । यानी-ईदन्त और ऊदन्त एकस्वर शब्दरूप स्त्रीलिङ्ग होते हैं । जैसे कि श्रीः=लक्ष्मी । धीः=बुद्धि । ह्रीः=लज्जा । भ्रूः=भौंह । स्रूः=यज्ञपात्र । द्रूः=सोना या राक्षस । जूः=आकाशवाणी या पिशाची । लूः=काटना, भूः=होना । और “ नयतीति नीः ” लुनातीति लूः ” आदिकों में “ कृतः कर्तर्यसंज्ञायाम् ” इसके बाध होनेसे वाच्य-लिङ्गता होती है । और भगसमेत प्राणियों के नामभी स्त्रीलिङ्ग में होते हैं । जैसे कि माता=मइया या जननी । दुहिता=पुत्री । याता=देवरानी या जेठानी । पोता=पोती । ननान्दा=नन्द या ननैद । स्वसा=बहिन । स्त्री=औरत आदि जानना चाहिये । और दारशब्द में तो “ दाराः पुंभूम्नि, ” यह बाधक पहले ही कह चुके हैं और ‘कलत्रम्’ शब्द में “ कलत्रं ओणिभार्ययोः ” यहां का क्लीब पाठही बाधक है । ऐसे ही अन्यत्र भी जानलेना चाहिये ॥ २ ॥

विजली आदि, नम्म विद्युन्निशावल्लीवीणादिग्भूनदीद्वियाम् ।

अदन्त शब्दों के

साथ द्विगुसमास,

पात्राद्यदन्त का

निषेध,

अदन्तैर्द्विगुरेकार्थो न स पात्राद्यादिभिः ॥ ३ ॥

विद्युत् आदि ही शब्दपर्यन्त आठ शब्दों के जो नाम (संज्ञा) हैं वे स्त्रीलिङ्ग में होते हैं । जैसे कि विद्युत्=विजली । तडित्=विजली । रात्रिः=राति । रजनिः=राति । वल्ली=लता । वीरुत्=कैलीलता । वीणा=वीन । विपञ्ची=बीज । इत्यादिकों में ‘ उयाद्यदन्तम् ’ इससे सिद्ध ही था वीणा का ग्रहण करना चिन्तनीय है ।

कितेक आचार्य ' वीणा ' के स्थान में ' वाणी ' पढ़ते हैं । वाक्=वाणी । गौः=वाणी । गीः=वाणी । दिक्=दिशा । हरित्=दिशा । भूः=पृथ्वी । भूमिः=पृथ्वी । कुः=पृथ्वी । सरित्=नदी । त्रिस्रोता=तीन सोतोंवाली नदी । विषाट्=विषाशा नदी । द्वी का ग्रहण चिन्तनीय है । “ ईदूद्विरामैकाच् ” इससे और 'त्रपा' आदिकों में ' डयाबूडन्तम् ' से सिद्ध होजाने के कारण कितेक आचार्य “ भियाम् ” ऐसा पढ़ते हैं । संवित्, चित्, प्रतिपद्=बुद्धि । अदन्त उत्तर पदोंके साथ जो द्विगुसमांस कि जिसका “ द्विगुरेकवचनम् ” से एकार्थ रहता है वह स्त्रीलिङ्ग होताहै । जैसे कि दशानां मूलानां समाहारो 'दशमूली' दशमूलों का समाहार दशमूली, तीनलोकों का समाहार त्रिलोकी, पांच अक्षरों का समाहार ' पञ्चाक्षरी ' कहलाता है । अदन्तः किम् । अदन्त क्यों कहा गया ? यदि न कहते तो ' पञ्चकुमारि ' व ' दशधेनु ' में होजाता । यदि एकार्थ न किया जाता तो ' पञ्चकपालः ' आदि में होजाता । और पात्रयुग आदि अदन्त शब्दों के साथ जो द्विगुसमांस वह स्त्रीलिङ्ग नहीं होता है । जैसे कि पांचपात्रों के समाहार को पञ्चपात्रम्, चार युगों के समाहार को चतुर्युगम्, तीन भुवनों के समाहार को त्रिभुवनम् और तीनपुरों के समाहार को ' त्रिपुरम् ' कहते हैं । परन्तु भाष्य में ' त्रिपुरी ' ऐसाही देखा जाता है ॥ ३ ॥

भावाद्यर्थक, समूहार्थक, वैर मैथुनिकाद्यर्थक, स्त्रीभावाद्यर्थक, तल् (वृन्दे) येनिकटयत्रा वैरमैथुनिकादिवुन् ।
(स्त्रीभावादाव) निक्लिण्वुल्लण्चण्वुक्क्यव्युजिजङ्निशाः ४

भाव आदि अर्थ में विहित ' तल् ' प्रत्ययान्त स्त्रीलिङ्ग होते हैं । जैसे कि शुकता=सफेदी का होना । ग्रामता=गांवों का समूह । गोता=गौओं का समुदाय । ब्राह्मणता=ब्राह्मणपना । समूह अर्थ में “ य-इनि-कटय-त्र ” प्रत्ययान्त स्त्रीलिङ्ग होते हैं । जैसे कि पाश्या=पाशों का समूह । खलिनी=खलों का समुदाय । शाकिनी=शाकों का समूह । रथकटया=रथों का समुदाय । गोत्रा=गौओं का कुण्ड या लेहड़ । ' वृन्दे किम् ' समूह अर्थ क्यों कहा ? यदि न कहते तो मुख्यः=प्रथम कल्प या प्रधान । दण्डी=दण्डवाला इनमें होजायगा । “ द्वन्द्वाहुन्वैरमैथुनिकयोः ” से ' वुन् ' व अकादेश करने पर अश्वमहिषिका=घोड़ा भैंसी का वैर । काकोलूकिका=कौआ-उल्लू का वैर । अत्रिभरद्वाजिका=अत्रि-भरद्वाज की मैथुनि का (विवाह संबन्ध) । एवं कुत्स व कुशिक का विवाहसंबन्ध । आदि शब्द से “ पादशतस्य संख्यादेर्बीप्सायां बुन्लोपश्च ” और “ दण्डव्यवसर्गयोश्च ” से ' वुन् ' का ग्रहण होता है । बीप्सा में जैसे कि ' द्विपदिकां ददाति ' दो २ पाद को देता है । द्विशतिकां ददाति दो २ सौ देता है । दो पाद दण्डित को ' द्विपदिका ' कहते हैं । द्विशतिकां ददाति=दोसौ देता है । ' वैरत्यादिकिम् ' वैर आदि न करते तो “ वासुदेवार्जुनाभ्यां वुन् ” से ' वुन् ' करने पर वासुदेवकः=वासुदेवकी भक्ति रखनेवाला । यहां

होजाता । 'बुन्' का ग्रहण 'बुञ्' का 'उपलक्षण' जतलानेवाला है । कहीं 'बु' ऐसा भी पाठ है । "गोत्रचरणाच्छाधात्याकारतद्वेतेषु" से 'बुञ्' करने पर गार्गिकया श्लाघते, गर्गगोत्रत्व से बढ़ाई करता है । काठिकया विकथते=कठशाखाभ्येतृत्व से प्रशंसा करता है । "द्वन्द्वमनोज्ञादिभ्यश्च" से 'बुञ्' करने पर शैष्योपाध्यायिका=शिष्य-उपाध्याय का होना । स्त्रीलिङ्ग के अधिकार होने पर कर्तृवर्जित कारक में जो 'अनि' आदिप्रत्यय तदन्त स्त्रीलिङ्ग होते हैं । जैसे कि "आक्रोशे नञ्यनिः" से 'अनि' करने पर 'अकरणिः' नहीं करना । अजीव-निस्ते शठ भूयान्=रे शठ ! तेरा जीना न हो । "स्त्रियां क्तिन्" से 'क्तिन्' करने पर कृतिः=करना । भूतिः=होना । 'गु' इस करके 'गुल्' व 'गुच्' का सामान्य ग्रहण किया जाता है । "रोगाख्यायां गुल् बहुलम्" से "गुल्" करने पर प्रच्छर्दिका=बड़ा भारी वमनरोग, उलटी, कै या रह । प्रवादिका=संग्रहणी रोग या दस्तों की बीमारी । "धात्वर्थनिर्देशे गुल्वक्तव्यः" से 'गुल्' करने पर आसिका=आसन । शायिका=शयन । "पर्यायार्हणोत्पत्तिषु गुच्" से 'गुच्' करने पर 'भवतः शायिका' आपके शयन की पारी । "भवानिष्ठुभक्षिकामर्हति" आप ईख खाने को योग्य हैं । "कर्मव्यतिहारे 'गाच्' स्त्रियाम्" से गाच्, गाजन्त से "गाचः स्त्रियाम्" से 'अञ्' तदन्तसे ङीप् करने पर व्यावक्रोशी=परस्पर बुराई करना । व्यावहासी=परस्पर हँसी करना । व्यात्युक्षी=परस्पर पानी फेकना या छिड़कना । "व्रजयजोर्भावे" से 'क्यप्' करने पर व्रज्या=चलना या जाना । इज्या=पूजना । "संज्ञायां समजनपद-" से 'क्यप्' करने पर समज्या=सभा । निषद्या=बाज़ार । विद्या=शास्त्र का ज्ञान, इल्म, चौदह विद्या प्रसिद्ध हैं (चार वेद और छः वेदों के अङ्ग, पुराणा, मीमांसा, न्याय, धर्मशास्त्र) देवी का मन्त्र और दुर्गा । 'स्त्री भावादौ किम्' स्त्रीभावादि क्यों कहा ? यदि न कहोगे तो "वदःसुपि क्यप् च" से 'क्यप्' करने पर ब्रह्मोद्यम्=ब्रह्म का कहना । "भुवो भावे" से 'क्यप्' करने पर ब्रह्मभूयम्=ब्रह्म का होना । यहां होजायगा । "गयासञ्चो युच्" से 'युच्' करने पर कारणा=तीव्रवेदना । कामना=चाहना । "विभाषाख्यानपरिग्र-शनयोरिञ् च" से 'इञ्' करने पर "कां त्वं कारिं गणि वा ऽकार्षीः" तुमने किस क्रिया या गणना को किया ? 'सर्वी कारिं गणि वा ऽकार्षम्' मैंने सारी क्रिया वा गणना को किया । 'इञ्' यह "इण्-इक्" का उपलक्षण है । "इणजादिभ्यः" से 'इण्' करने पर अजनमार्जिः=संग्राम या लड़ाई । "इक्-क्यादिभ्यः" से 'इक्' करने पर कर्षणां, कृषिः=खेती । "विद्भिदादिभ्योऽङ्" से 'अङ्' करने पर पचा=पकाना । त्रपा=लजाना । भिदा=तोड़ना या फाड़ना । छिदा=छेदना या काटना । "अ प्रत्ययात्" से 'अ' प्रत्यय करने पर चिकीर्षा=

करने की चाहना । पुत्रीया=पुत्रकी अभिलाषा । “ गुणेश्च हलः ” से ‘ अ ’ प्रत्यय करने पर ईहा=चेष्टा या उपाय । ऊहा=तर्क, वितर्क या दलील । “ ग्लान्ता-ज्याहाभ्यो निः ” से ‘ नि ’ करने पर ग्लानिः=हर्षक्षय । म्लानिः=मलिनता । ज्यानिः=जियान या नुक्तान । हानिः=घटी या टोटा । “ कृवः शच ” से ‘ श ’ करने पर क्रिया=काम, काज, व्यवहार, क्रियाकर्म, धर्मसम्बन्धी काम आदि । एवं इच्छा=चाहना ॥ ४ ॥

श्रीणादिकन्यन्त,
ऊदन्त, ईदन्त,
उद्यन्त, आवन्त,
चल, स्थिर, जि-
स खेल में मार
पीट हो वहां या
प्रत्यय का होना।

उणादिषु निरूरीश्च डयाबूडन्तं चलं स्थिरम् ।

(तत्कीडायां प्रहरणं) चेन्मौष्टा पाल्लवा “ ए दिक् ” ॥ ५ ॥

उणादिकों में नि प्रत्ययान्त, ऊ प्रत्ययान्त, और ई प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं । जैसे कि, “ वीज्याज्वरिभ्यो निः ” से नि, प्रत्यय करने पर वेणिः या प्रवेणिः= वालों का गूंथना । ज्यानिः=जियान । जूर्णिः=ज्वररोग । “ सृष्टृषिभ्यां कित् ” से कित् होने पर सृणिः=अङ्कुश । “ वहिश्चिभ्युद्गुलाहात्वरिभ्यो नित् ” से नि प्रत्यय करने पर श्रेणिः=पङ्क्तिः । ओणिः=कमर । द्रोणिः=डोंगी । ‘ अनिरिति पाठान्तरम् ’ । ‘ अनि ’ यह पाठान्तर है । “ अर्तिसृष्टृभ्यश्च वितृभ्यो ऽनिः ” से ‘ अनि ’ प्रत्यय करने पर धरणिः=पृथ्वी । धमनिः=नाडी । सरणिः=मार्ग-राह या डगर । “ कृषिचमितनिधनिसर्जिस्त्रिभ्य ऊः ” । से ऊ प्रत्यय करने पर कर्षूः=जीविका, छोटी नदी, (नहर) या नदीनात्र । चनूः=सेना या फौज । “ अवितृस्तृत्तृन्त्रिभ्य ईः ” से ‘ ई ’ प्रत्यय करने पर ‘ अत्रीः=रजोवती नारी । तरीः=नौका । स्तरीः=धुआं । तन्त्रीः=वीणा आदिकों की तांति । “ डयाबूडन्तम् ” ड्यन्त, आवन्त और ऊडन्त स्त्रीलिङ्ग होते हैं । कदली=मृगभेद, केला या वैजयन्ती । कन्दली=गंभीरध्वनि, मृग-भेद, सेनाभेद । रमा=लक्ष्मी । गङ्गा=देवनदी । वामोरूः=मनोहर जांघोंवाली । कर-भोरूः । चढ़ा, उतार गोल सुन्दर जांघोंवाली । जंगम और स्थावर स्त्रीलिङ्ग में होते हैं । जंगम में जैसे नारी=औरत, अबला, वनिता । शिवा=गौरी या सियारी आदि । ब्रह्मवधूः=ब्रह्माणी । स्थावर में नाड़ी=धमनी, शिरा, नब्ज, नस । खट्वा=खाट, पलंग या चारपाई । अलावूः=लौकी या तोंकी । चर स्थिर का प्रहण करना चिन्तनीय है । क्योंकि अन्य व्यवच्छेद्य का अभाव है । वह प्रहार यदि खेल में हो तो ‘ मौष्टा ’ व ‘ पाल्लवा ’ होता है । “ तदस्यां प्रहरणमिति कीडायां णः ” से ‘ ण ’ प्रत्यय

१ वामौ सुन्दरावूरुयस्याः सा वामोरूः । २ “ मणिवन्धादाकनिष्ठं करस्य करभो वहिः ” करभाक्षिते-
रुयस्याः सा करभोरूः ॥

करने पर जिस क्रीड़ा में मूठी से मारना होता है उसे 'मौष्टा' कहते हैं व जिस खेल में हाथ या पत्तों से मारना होता है उसे 'पाल्लवा' कहते हैं। यह 'ण' प्रत्यय का उदाहरण है परिगणन नहीं है। उसीसे जिस क्रीड़ा में मूसल से मारना होता है उसे 'मौसला' और जिस क्रीड़ा में दण्ड से प्रहार किया जाता है उसे 'दाण्डा' कहते हैं ॥ ५ ॥

घञन्त से अ घञो जः सा क्रियास्यांचेदाण्डपाता हि फाल्गुनी ।

कण्डू, शिकार, श्यैनंपाता च मृगया तैलंपाता स्वधे (ति दिक्) ॥ ६ ॥
स्वधा.

यदि वह घञन्तपद वाच्य दण्डपात आदि क्रिया इस फाल्गुनी के अर्थ में वर्तती हो तो घञन्त से 'ज' प्रत्यय होता है तदन्त स्त्रीलिङ्ग होते हैं । "घञः सास्यां क्रियेति जः" से 'ज' करने पर 'दण्डपातोऽस्यां फाल्गुन्यां वर्तते' दाण्डपाता फाल्गुनी । जिस देश में फाल्गुनमास पूर्णिमा को दण्ड या लट्ट से पात होता है उसको 'दाण्डपाता' फाल्गुनी कहते हैं । एवं जिस क्रिया में बाज का गिरना होता है उसे 'श्यैनंपाता' कहते हैं—यह मृगया=शिकार का नाम है । जिस में तिलों का 'पात'=(गेरना) होता है वह तैलंपाता, कहलाती है । यह स्वधा का नाम है । "पितृदाने स्वधा मता" पितरों के दान में स्वधा शब्द माना गया है । यह अमरमाला का मत है । परन्तु वररुचिने "स्वधा क्रिया प्रवेणी" से स्त्रीलिङ्गता कही है । यह उदाहरण है । 'श्येनतिलस्य किम्' श्येन, तिल का ग्रहण क्यों किया गया ? यदि न करोगे तो जिस तिथि में 'दण्डपात' होता है वह 'दाण्डपाता' और जिस भूमि में मूसलपात होता है उसे 'मौसलपाता' कहते हैं । यहां होजावेगा ॥ ६ ॥

अल्पत्व विवक्षा
में मृणाली आ-
दि, लङ्का, निर्गु-
ण्डी या नेवारी,
निरन्तरव्याख्या,
धवई, निशेष
पदव्याख्या, अ-
रहर या तोरई.

(स्त्री स्या) त्काचिन्मृणाल्यादि (विंवक्षापचये यदि) ।

लङ्का शेफालिका टीका धातकी पञ्जिकाऽऽढकी ॥ ७ ॥

यदि अल्पार्थ में कहने की इच्छा हो तो 'मृणाली' आदि कितेक शब्द स्त्री लिङ्ग में होते हैं । जैसे कि अल्पं मृणालम्=थोड़े से मृणाल को 'मृणाली' कहते हैं । यह भसीड़े का नाम है । आदि शब्द से कुम्भी=पुरइनि या जलपर्णी । प्रणाली=पनारी या पनारा । मुशली=तालमूलिका या गृहगोधिका । छत्री=छोटीसी छतुरी । पटी=कपड़ा या दुपटी । मठी=मोपड़ी या कुटी । 'काचिदिति किम्' काचित् ऐसा क्यों कहा ? यदि न कहोगे तो 'अल्पो वृक्षः, वृक्षकः' यहां हो जावेगा ।

‘ड्याबूडन्तम्’ इससे सिद्धही था लङ्कादिकों का पाठ नामानुशासनार्थ जानना चाहिये । ‘भङ्गि’ आदिकों का पाठ दोनों के शासनार्थ है और ‘शेफालिका’ आदिकों का पाठ व्यर्थ किया गया है । क्योंकि अपने नामों में पढ़चुके हैं । लङ्का=राक्षसपुरी, शाखा, शाकिनी और कुलटा । शेफालिका=काले फूल की नेवारी । टीका=निरन्तर व्याख्या या कठिनपदों की व्याख्या, टिप्पणी, विवरण, शरह या गूढ़ अभिप्राय को भलीभाँति समझाना । धातकी=धवई का फूल या आँवला । पञ्जिका=निःशेष पदकी व्याख्या । या पञ्चिका=रोजनामचा । आदकी=अरहर या तोरई में खिलिङ्ग और परिमाणान्तर में त्रिलिङ्ग भी होता है ॥ ७ ॥

सीध, मैना, हि-
चकी, वनमक्खी,
लूका, चींटी, तें-
दुआ, किनका
भर, टेढ़ाई, सुरं-
ग, सूजी, पत्ते
का सिरा.

सिधका सारिका हिका प्राचिकोल्का पिपीलिका ।

तिन्दुकी कणिका भङ्गिः सुरङ्गासूचिमाढयः ॥ ८ ॥

सिधका=सीधनामक वृक्षभेद । सारिका या शारिका पक्षिभेद या मैना । हिका स्वरभेद या हिचकी । प्राचिका या पाचिका वनमक्खी या पक्षिभेद । उल्का=तेज का समुदाय या लूका आग या तारा जो आकाश से गिरता है । पिपीलिका=कीटभेद चींटी या चींटा । स्वामी के मत में “ शनैर्याति पिपीलकः ” इस उदाहरण से पुंलिङ्ग भी है । तिन्दुकी=वृक्षभेद या ‘तेंदुआ’ इस नाम से प्रख्यात दुग्धविशेष । कणिका=अत्यन्त सूक्ष्म या परमाणु । भङ्गिः=कुटिलता का भेद या टेढ़ाई । सुरङ्गा=बिल या सुरंग । सूचिः=सूजी या व्यधनी, शिखा या नाचका भेद । माढिः=पत्ते का सिरा या दीनता का प्रकाश करना ॥ ८ ॥

सेमर या भात
आदि का माँड़,
वितण्डावाद,
कौड़ी, सौ कौ-
ड़ी, साड़ी या
कसौटी, कछुई,
भरना, दान, क-
थरी, कुर्सी, तों-
दी, कचहरी.

पिच्छा वितण्डा काकिण्यश्चूर्णिः शाणी द्रुणी दरत् ।

सातिः कन्था तथासन्दी नाभी राजसभापि च ॥ ९ ॥

पिच्छा=सेमर का गोंद या भात आदिकों का माँड़ । वितण्डा=वादभेद । काकिणी या कार्किनी=पण का चौथा भाग या कौड़ी या छदाम, कधी दो दमड़ी । “ चूर्णिः=कपर्दकशतम् ” सौकौड़ी । शाणी=सनका बिना कपड़ा, या कसौटी । द्रुणी=कर्ण-जलौका या कछुई । दरत्=म्लेच्छजाति, भरना, भय, पर्वत । सातिः=दान या अवसान । कन्था=कथरी या मिट्टी की भीति, गुदड़ी या कमरी । आसन्दी=आस-

नभेद, बेतका आसन या कुर्सी । नाभिः=मुख्य राजा, पहिया का मध्य भाग, क्षत्रिय, नाभी, तोंदी या ढोंड़ी, कस्तूरी का मद् । राजसभा=राजा का दरबार या कचहरी इस प्रसिद्ध का नाम है ॥ ९ ॥

भालरि, गीत-
भेद, गगरी, हो-
राशास्त्र, गौरैया
चिड़िया, मत्स्य
विकार, लाह,
लीख, कुल्ला,
वातरोग, चौंसी,
रोशनाई.

भल्लरी चर्चरी पारी होरा लट्वा (च) सिध्मला ।

लाक्षा लिक्षा (च) गण्डूषा गृध्रसी चमसी मसी ॥ १० ॥

इति स्त्रीलिङ्गशेषः ॥

‘ भल्लरी ’ या ‘ भिल्लरी ’ ये दोनों वाद्यभेद—हुडुक या बालचक्र के नाम हैं, या भालरि, खंजड़ी वा डफली को कहते हैं । चर्चरी=गीतभेद, केशभेद या हाथ का शब्द । पारी=ककड़ी, गगरी (छोटा घड़ा) पूरा या हाथी के पैरकी रस्ती । होरा=जगन, राशिका आधा भाग, रेखा या होराशास्त्र । लट्वा=कब्जा का भेद, फल या गौरैयाचिड़िया । सिध्मला=मत्स्यविकार में स्त्रीलिङ्ग और सेहुआंरोगवाले में त्रिलिङ्ग है । लाक्षा=साख वा लाह । लिक्षा=यूकायड या लीख । गण्डूषा=ऊंची-तोंदी या ढोंड़ी या जलादिकों से मुख का पूर्ण करना यानी ‘ कुल्ला ’ इस प्रसिद्ध का नाम है । गृध्रसी=वातरोग भेद जो कि ऊरुओं की संधि में होता है । चमसी=यज्ञपात्र भेद या उड़द के आटे की चौंसी । मसी या मसिः=स्याही या काली रोशनाई । परन्तु हैमकोष के प्रमाण से मूर्धन्योपन्नमी है । जैसे कि “ मलिनान्बु मपी मसी ” मैले जल को ‘ मपी ’ या ‘ मसी ’ कहते हैं ॥ १० ॥

इति स्त्रीलिङ्गशेषविवरणम् ॥

अथ पुंलिङ्गसंग्रहे व्याख्यानं ॥

सभेद-सानुचर-
समर्पाय, देव
और दैत्य, स्वर्ग,
याग, पर्वत, मे,
घ, समुद्र, वृक्ष,
समय, तरवार,
बाण, बैरी.

पुंस्त्वे सभेदानुचराः सपर्यायाः सुरासुराः ।

स्वर्गयागाद्रिमेघाब्धिद्वुज्ज्वलांस्त्यगाः ॥ ११ ॥

“ अब पुंलिङ्ग संग्रह का व्याख्यान करते हैं ” कि, ‘ पुंस्त्वे ’ इसका अधिकार ‘ पतद्ग्रह ’ पर्यन्त जानना चाहिये । भेद—अनुचर और पर्याय समेत वर्तमान देव

और दैत्य शब्द पुलिङ्ग में होते हैं । जैसे कि अमराः, निर्जराः, देवाः—ये देवताओं के नाम हैं । उनके भेद जैसे कि तुषिताः, साध्याः, आभास्वराः, इन्द्रः, शक्रः, सूर्यः आदित्यः ' आदि होते हैं । देवताओं के अनुचर जैसे कि ' हाहाः, हूहूः, तुम्बुरुः, नारदः, मातलिः ' आदि होते हैं । असुरपर्याय जैसे कि, ' दैत्याः, दैतेयाः, दानवाः ' ये दैत्यों के नाम हैं । उनके भेद जैसे कि बलिः, नमुचिः, जम्भः आदि होते हैं । दैत्यों के अनुचर जैसे कि कूष्माण्डः, मुण्डः, कुष्माण्डः आदि कहलाते हैं । इनका दैवतानि, देवता आदि बाधक हैं । भेद व पर्याय समेत उन्नीस स्वर्ग आदि शब्द पुलिङ्ग में होते हैं । जैसे कि, स्वर्गः, नाकः, त्रिदिक्ः ये स्वर्ग के नाम हैं । इनका ' द्योदिवौ द्वे स्त्रियां क्लीबे त्रिविष्टपम् ' यह विशेषों से बाध है । ' यज्ञः, मखः, क्रतुः ' ये यज्ञ के नाम हैं । उनके भेद—जैसे कि, उक्थः, अतिरात्रः, अग्निष्टोमः, अश्वमेध आदि होते हैं । ' अद्रिः, गिरिः, पर्वतः—ये पर्वत के नाम हैं । इनके भेद—जैसे कि, मेरुः, हिमवान्, सद्य आदि होते हैं । इनका ' गन्धमादनम् ' यह बाध है । मेघः, घनः, जलदः—ये मेघके नाम हैं । उनके भेद—जैसे कि, पुष्करः, आवर्तकः आदि होते हैं । इनका ' अभ्रम् ' यह बाध है । अग्निः, समुद्रः, सागरः ये सागर के नाम हैं । इनके भेद जैसे कि, क्षीरोदः, लवणोदः, सुरोदः आदि कहलाते हैं । ' वृक्षः, शाखी ' ये वृक्ष के नाम हैं । उनके भेद—जैसे कि लक्षः=पाकर, वटः=बरगद, आम्रः=आम इनका शिशपा व पाटला आदि में बाध है । ' कालः, दिष्टः, समयः ' ये समय के नाम हैं । इनके भेद—जैसे कि, मासः=महीना । पक्षः=पखवारा । ऋतुः=वसन्त आदि छः ऋतुवें होती हैं । इनका ' दिनतिथ्यादौ ' यह बाधक है । असिः, खड्गः, मण्डलाग्रः—ये तलवार के नाम हैं । इनके भेद—जैसे कि नन्दकः, चन्द्रहासः आदि होते हैं । इनका ' कटित्र ' आदि में बाध है । शरः, बाणः, विशिखः—ये बाण के नाम हैं । उनके भेद—जैसे कि, नागाचः, काण्डः, भल्ल आदि होते हैं । इनका ' इषुर्द्वयोः ' यह बाध है । अरिः, शत्रुः, अरातिः ये वैरी या दुश्मन के नाम हैं । उनके भेद ' आततायी ' आदि होते हैं ॥ ११ ॥

हाथ, गाल आदि करगण्डोष्ठदोर्दन्तकण्ठकेशनखस्तनाः ।

अहाहान्तः, विष

भेदः, रात्रान्तः

अहाहान्ताः क्ष्वेडभेदा रात्रान्ताः प्रागसंख्यकाः ॥ १२ ॥

करः=राजप्राणभाग यानी महसूल, मालगुजारी, किरण या हाथ को कहते हैं । इनमें मरीचि आदिकों का बाध है । गण्डः, कपोलः=गाल । ओष्ठः, दन्तच्छदः, अभ्रः=ओठ या होठ । दोः, प्रवेष्टः=भुजा या बाँह । भुजा आदि का ' द्वयोः ' यह बाध है । दन्तः, दशनः, रदः=दाँत । इसका भेद ' जम्भः ' है । कण्ठः, गलः=कण्ठ या गला । समीप—गल व शब्द इनमें परिडतलोग ' कण्ठ ' को त्रिलिङ्ग कहते हैं । केशः, कचः=बार या बाल । नखः, पुनर्भवः=नख या नाखून । इसका

“ नखरोऽस्त्रियाम् ” यह बाध है । स्तनः, कुचः, पयोधरः=चूची, दूध, छाती या पयोधर । जिनके अन्त में ‘अह’ और ‘अह’—होंवे पुंलिङ्ग में होते हैं । यह परवल्लिङ्गता का अपवाद है । जैसे कि ‘अहः पूर्वम्, पूर्वाह्नः । दिन के पूर्व भागको ‘पूर्वाह्नः’ व अपरभाग को ‘अपराह्नः’ कहते हैं । दो दिनों के समाहार को ‘द्वयहः’ और तीन दिनों के समाहार को ‘त्रयहः’ कहते हैं । यहां “ सनपुंसकम् ” इसका अपवाद है । श्वेडः=विषको कहते हैं । उसके भेद—पुंलिङ्ग में होते हैं । जैसे कि, सौराष्ट्रिकः, शौलिकेयः, ब्रह्मपुत्र आदि कहलाते हैं । जिनके अन्तरात्र हो व जिनके पूर्वपद संख्या न हो वे शब्द पुंलिङ्ग में होते हैं । यह परवल्लिङ्गता का अपवाद है, और परत्व से समाहार नपुंसकता को भी बाधता है । उसीसे अहोरात्रः=दिन-रात सर्वरात्रः=सारीरात । पूर्वरात्रः=रातिका पूर्वभाग । ‘प्रागसंख्यकाः’ यह क्यों किया ? यदि न करोगे तो ‘पञ्चरात्रम्’ व ‘गणरात्रम्’ इनमें दोष आवेगा इस लिये किया गया है ॥ १२ ॥

गोंद आदि, विशेष धूप आदि, कसेरु आदि.

श्रीवेष्टाद्याश्च निर्यासा असन्नन्ता “ अबाधिताः ” ।

कशेरुजतुवस्तूनि (हित्वा) तुरुविरामकाः ॥ १३ ॥

श्रीवेष्ट आदि जो निर्यास यानी वृक्षद्रव—गोंद या सार हैं वे पुंलिङ्ग में होते हैं । जैसे कि, श्रीवेष्टः, सरलद्रवः=विशेषधूप । कहीं ‘श्रीपिष्टः’ ऐसा भी पाठ है । आद्य-शब्द से श्रीवासः=विशेषधूप । वृक्षधूपः=बनाई धूप । गुग्गुलुः=गुगलधूप । सिंहकः=लोबानकी धूप । आदि शब्द पुंलिङ्ग में जानना चाहिये । यदि असन्न और अन्न शब्द अबाधित हों तो पुंलिङ्ग में होते हैं । जैसे कि अङ्गिराः=एक ऋषि का नाम है । वेधाः=ब्रह्मा । चन्द्रमाः=चांद । अन्नन्त जैसे कि कृष्णवर्त्मा=आगी । प्रतिदिवा=दिवस या दिन । मघवा=इन्द्र या धनाढ्य । “अबाधिताः किम्” अबाधित क्यों कहा ? यदि न कहोगे तो ‘अप्सरसः’=अप्सरार्ये । जलौकसः=जोंक । सुमनसः=मालती या चमेली यहां होजावेगा । लोम=रोम या रूंगटे । साम=सामवेद या मिलाप । वर्म=कवच या बख्तर । कशेरु=कशेरुवा या अस्थिविशेष । जतु=लाख या लाह । वस्तु=पदार्थ या चीज़ । इन्हों को छोड़कर जिनके अन्त में “ तु-रु ” ये रहते हैं वे पुंलिङ्ग में होते हैं । जैसे कि, हेतुः=कारण । सेतुः=पुल, बांध या बन्ध । धातुः=मनुष्य के शरीर का सार अंश जैसे कि (वात-पित्त-कफ) बीज या वीर्य, सोना, रूपा, चाँदी, तांबा आदि खानि से निकली हुई चीज़ या क्रिया । कुरुः=दिल्ली के एक पुराने राजा का नाम । मेरुः=सुमेरुपर्वत । तसरुः=तलवार आदि की मूठ । ‘कशेरु जतुवस्तूनि हित्वा’ यह व्यर्थ किया गया है क्योंकि ‘अबाधिताः’ इसके अन्वय का संभव है । वास्तव में ‘अत्राधिताः’ ये भी व्यर्थ है । क्योंकि ‘विशेषैर्यथा-बाधितः’ इससेही निर्वाह होजावेगा । इस लिये दारु=काठ । अश्रु=आंसू आदिकों

में निर्वाह जानना चाहिये ऐसा सुधा आदि व्याख्याकारों ने कहा है ॥ १३ ॥

कषणभमरोपध,
पथनयसटोपध,
गोत्रव वेदशा-
खा के नाम.

कषणभमरोपान्ता (यद्यदन्ता अमी अथ) ।

पथनयसटोपान्ता गोत्राख्याश्चरणाह्वयाः ॥ १४ ॥

क-प-ण-भ-म-र- ये छः वर्ण जिनके उपान्त्य में हों यानी उपधा में रहने हों और यदि ये अक्षरान्त हों तो पुंलिङ्ग में होते हैं । जैसे कि, अङ्कः=आंक, चिह्न, संख्या, संकेत, नम्बर या गोद । अर्कः=सूर्य या मदार । लोकः=भुवन या लोग । शोकः=शोक या शोच । पान्त जैसे कि मापः=उड़द या माशा । तुषः=भूसी, झिलका या चोकरा । तोषः=संतोष, हर्ष, आनन्द । पोषः=पालन, पोषण । रोषः=क्रोध, कोप, गुस्सा । णान्त जैसे कि, पाषाणः=पत्थर । शाणः=शाणयन्त्र जिस पर हथियार पैने किये जाते हैं । गुणः=स्वभाव, विशेषण, हुनर, चतुर्गई, प्रवीणता, विद्या, रस्सी, डोरी, सत्त्व-रज-तम तीन गुण, कृपा-मेहरबानी, भला, भलाई या गुना हुआ । घुणः=एक कीड़ा जो कि लकड़ी या अनाज को खाकर थोथा कर देता है । भान्त जैसे कि, दर्भः=कुश या डाभ । सरभः=लड़ीसरा या वानरविशेष । गर्दभः=गधा । मान्त जैसे कि, सोमः=सोमरस या चन्द्रमा । होमः=हवन या आगी में साकल्यडालना । ग्रामः=गांव, बस्ती, खेड़ा, पुरा, समूह । धूमः=धुआं, भाफ । रान्त जैसे कि, भर्भरः=भ्रांभ । शीकरः=जलकण । सीरः=हल । समीरः=पवन या हवा । प-थ-न-य-स-ट ये वर्ण जिनकी उपधा में वर्तते हों और यदि ये अबाधित हों तो पुंलिङ्ग में होते हैं । जैसे कि कूपः=कुआं, इन्दारा । यूपः=यज्ञाङ्ग-भेद या यज्ञपशु बाँधने का काष्ठविशेष । सूपः=दाल या पहिती । कलापः=अलं-कारमात्र, मोरशिखा, तरकश या समुदाय । नाथः=स्वामी, मालिक, पति, धनी या योगियों की पदवी । सार्थः=जन्तुसमूह । शपथः=सौगन्द । नान्त जैसे कि, अप-घनः=अङ्कावयव, इनः=स्वामी । जनः=लोग । अपनयः=दुर्नीति । विनयः=बिनती या शिष्टाचार । प्रणयः=प्यार या प्यार से मांगना । रसः=शृङ्गार, वीर, करुणा आदि नवरस, मधुरादि छः रस, गरल, प्रीति, अर्क, वेग, पारा । हासः=हँसना । पनसः=कटहल । करटः=कौआ या हाथी का गाल । पटः=कपड़ा, पल्ला, पड़दा या आड़ । सरटः=गिरगिट । ये शब्द पुंलिङ्ग में होते हैं । यहां पर मुकुट के मत में 'अदन्ताः' यह सम्बन्ध नहीं करता है क्योंकि आदि में अथ का प्रयोग किया गया है उसीसे गोमायुः=शृगाल या सियार । जायुः=औषध । वायुः=पवन । पायुः=गुदा आदि शब्द पुंलिङ्ग में होते हैं । जिनकी वंश में संज्ञा है वे गोत्राख्य ऋषिसंज्ञक कहलाते हैं । गोत्र के आदि पुरुष जो कि प्रवराध्याय में पढ़े गये हैं और जो अन्य अपत्य प्रत्यय के बिना गोत्रवाचित्व से लोक में प्रसिद्ध हैं वे पुंलिङ्ग में होते हैं । जैसे कि, गौतमः, भग्नराजः, अत्रिः, वसिष्ठः, कश्यपः और वत्स आदि पुंलिङ्ग में होते हैं ।

जैसे कि “ गोत्रमस्माकं भगद्वाजः ” हमारा गोत्र भगद्वाज है । वेदशाखा की नामवाली संज्ञा पुलिङ्ग में होती हैं । जैसे कि कठः, कलापः, बह्वृचः-आदि पुलिङ्ग हैं ॥ १४ ॥

घञ् आदि, **नाम्न्यकर्तरि भावे (च) घञजब्जङ्णघाथुचः ।**

ल्युआदि, **ल्युःकर्तरीमनिज्भावे कोधोःकिः(प्रादितोऽन्यतः) ॥ १५ ॥**

घञ्-अच्-अप्-नङ्-ण-घ-अथुच् ये सात प्रत्यय जो कि संज्ञाविषय, कर्तृ-वर्जित कारक और भाव में विहित हैं तदन्त शब्द पुलिङ्ग में होते हैं । जैसे कि प्रसीदन्त्यरिमन्मनांसि, इस विग्रह में “ हलश्च ” से अधिकरण में ‘ घञ् ’ करने पर प्रासादः=देवता व राजाओं का मन्दिर । प्रास्यते, यहां कर्म में ‘ घञ् ’ करने पर प्रासः=सांग । ‘ विदन्त्यनेन ’ यहां करण में ‘ घञ् ’ करने पर वेदः=आम्नाय हिन्दुओं की पवित्र पुस्तक, ऋग्वेद-यजुर्वेद-साम और अथर्ववेद, और इतिहास व पुराणों को पांचवां वेद भी कहते हैं । प्रपतन्त्यस्मात्, यहां अपादान में ‘ घञ् ’ करने पर प्रपातः=बीहड़ या पहाड़ से जल गिरने का स्थान । भाव में जैसे कि, पाकः=पकाना । त्यागः=छोड़ना या दानदेना । चकार से “ पदरुजविशस्पृशो-घञ् ” से ‘ घञ् ’ करने पर पद्यतेऽसौ पादः=पैर या चौथा भाग । रुजतीति रोगः=व्याधि या बीमारी । दायः=देना या देनेवाला, धायः=धारना या धारने वाला आदि शब्द संज्ञा में विहित भी ग्रहण किये जाते हैं । “ एरच् ” से ‘ अच् ’ करने पर चयः=खांवां, चुनना या ढेर करना । जयः=जीतना । “ ऋदोरप् ” से ‘ अप् ’ करने पर करः=पोत या लगान, किरण या हाथ । गरः=गला । लवः=काटना, लेश, काल-भेद या रामात्मज । स्तवः=स्तुति, बड़ाई, या तारीफ़ करना । इज्यतेऽनेनात्रेतिवा इस विग्रह में “ यजयाचयतविच्छप्रच्छरक्षोनङ् ” से ‘ नङ् ’ करने पर यज्ञः=याग, आत्मा, नारायण और अग्नि को कहते हैं । यन्नः=उपाय या तदबीर । ‘ नङ् ’ यह उपलक्षणा है उसीसे “ स्वपोनन् ” से किया नन्, भी ग्रहण किया जाता है अथवा “ स्वप्नः संवेश इत्यपि ” इस मूलसे भी पुलिङ्ग की सिद्धि जाननी चाहिये । “ नौणच ” से ‘ ण ’ करने पर न्यदनं, न्यादः=आहार या जीमना । “ पुंस्ति संज्ञायां घः-” से ‘ झ ’ करने पर उरच्छदः=कवच या बस्त्र । प्रच्छदः=पट या ओहार । “ द्वितोऽथुच् ” से ‘ अथुच् ’ करने पर श्वयथुः=शोध या सूजना । बेपथुः=कौपना या हिलना “ नन्दिग्रहपचादिभ्यः ” से कर्ता अर्थ में नन्यादिकों से विहित ‘ ल्यु ’ प्रत्यय पुलिङ्ग में होता है, जैसे कि नन्दयतीति, नन्दनः=सुखदायक, आनन्द देनेवाला, बेटा या इन्द्र का बागीचा । रमते इति रमणः=रमनेवाला । मधुसूदनः=मधुनामक दैत्य का मारनेवाला । यह संज्ञा में है और असंज्ञा में “ कृतः कर्तर्य संज्ञायाम् ” इससेही सिद्ध है । भाव में ‘ इमनिच् ’ तदन्त शब्द पुलिङ्ग में होते हैं ।

जैसे कि 'पृथोर्भावः' इस विग्रह में "पृथ्वादिभ्य इमनिज्वा" इसमें ' इमनिच् ' प्रत्यय करने पर प्रथिमा=विस्तार का होना । मृदोर्भावो, मृदिमा=कोमलका होना । भाव में ' क ' प्रत्यय तदन्त पुंलिङ्ग होते हैं । जैसे कि " सुपिस्थः " इस योगविभाग से भाव में ' क ' प्रत्यय अथवा " घञर्थे कः " से ' क ' करने पर आखूना-मुत्थानमाखूत्थः=मूस्तों का उठना या प्रकट होना । प्रस्थानम्, प्रस्थः=चलना या युद्धके लिये कूच करना, विस्तार, आधसेर, सेर या दोसेर का नाम है । उपसर्ग और अन्यसुबन्त से परे जो घुसंज्ञक धातु उससे विहित जो 'कि' प्रत्यय तदन्त शब्द पुंलिङ्ग में होते हैं । " दार्-दैप् " के विना दारूप व धारूप भी धातु घुसंज्ञक हैं " । जैसे कि " उपसर्गे घोः किः " से 'कि' प्रत्यय करने पर नितरां धीयतेऽनेन निधिः=सामान्यनिधि, कुबेर का भंडार या खजाना । परिधीयतेऽनेन परिधिः=घेरा या सूर्य-चांद का मण्डल । आदीयते गृह्यतेऽर्थोऽनेनेत्यादिः=पहला, प्रथम, आरम्भ, मूल । विधानम्, विधीयतेऽनेनेति वा विधिः=विधान-प्रह्ला, भाग या दैवज्ञ । उदकानि धीयन्तेऽस्मिन्निति, इस विग्रह में " कर्मण्यधिकरणेच " से 'कि' करने पर उदधिः=समुद्र । जलानि धीयन्तेऽस्मिन्निति जलधिः=सागर । यहां पर ' प्रादितोऽन्यतः ' यह व्यर्थ है क्योंकि ' घोः किः ' इससे ही इष्ट की सिद्धि होजावेगी तो भी स्पष्टार्थ किया गया है ॥ १५ ॥

घोडा-घोड़ी, सूर्य कान्त, इन्दुकान्त, लोहकान्त आदि.

द्वन्द्वेऽश्ववडवावश्ववडवानसमाहृते ।

कान्तः सूर्येन्दुपर्यायपूर्वोऽयः पूर्वकोऽपि च ॥ १६ ॥

समाहार से अन्यत्र द्वन्द्वसमास में ' अश्ववडवौ ' यह पुंलिङ्ग में होता है । जैसे कि, अश्वश्च वडवा च ' अश्ववडवौ ' यहां " पूर्ववदश्ववडवौ " इस शास्त्र से पूर्वपदश्च पुंलिङ्ग हुआ । यह परवल्लिङ्गता का अपवाद है । द्विवचन अतन्त्र है यानी कहने को इष्ट नहीं है । उसीसे " अश्वश्च वडवाश्च अश्ववडवाः, अश्ववडवान्, अश्ववडवैः " आदि प्रयोग साधु होते हैं । ' असमाहृते किम् ' असमाहार क्यों किया ? यदि न करोगे तो ' अश्वश्च वडवाश्चैषां समाहारः ' अश्ववडवम्—यहां " विभाषा वृक्षमृगतृणाधान्यव्यञ्जनपशुशकुन्यश्ववडवपूर्वापराधरोत्तराणाम् " से जो नपुंसकत्व व एकवचनान्त होता है वह न होगा इसलिये किया है । सूर्य-चन्द्र के पर्यायपूर्वक कान्तशब्द पुंलिङ्ग है । जैसे कि, सूर्यकान्तः, अर्ककान्तः, इन्दुकान्तः, चन्द्रकान्तः, सोमकान्तः आदि होते हैं । अयोवाचक यानी लोहवाचक पूर्वकमी कान्त शब्द पुंलिङ्ग है । जैसे कि अयस्कान्तः, लोहकान्तः, पिण्डकान्त आदि पुंलिङ्ग में होते हैं ॥ १६ ॥

बरा आदि, वटकश्चानुवाकश्च रल्लकश्चकुडङ्गकः ।

फोंक आदि, पन्नोन्यः समदश्च विटपटधराः खटः ॥ १७ ॥

वटकः=उड़की पीठी का विकार यानी बरा का नाम है । अनुवाकः=वेद का अवयव या भाग या ऋग्यजुर्वेद का समुदाय । रत्नकः=कम्बल या पक्ष्मकम्बल या कमरा इस प्रसिद्ध का नाम है । कुडङ्गकः, कुटङ्गकः, कुटुङ्गकः=छावना या वृक्षलता का समूह या घर । पुङ्खः=बाण का अवयव यानी फोंक । न्युङ्खः या न्यूङ्खः बड़ा सुन्दर या सामवेद में धरा अंकार । समुद्रः=संपुट या डब्बा । विटः=पहाड़, उजला, भौरा, मूसा, खैर, धूर्त या ठग । पट्टः=पीसने का पत्थर, घाव आदि का बन्धन, चौराहा या काष्ठ आदि का बना हुआ आसनविशेष, पीड़ा या पाटा । धटः=तुला या तराजू । खटः=अन्धकूप, खपजाना, प्रहारान्तर, टांकना या बांधना ॥ १७ ॥

कोट, अरहट,
बाजार आदि,
गलगण्ड, प्य-
टारी, लाठी, मु-
खरोग, पात्रका
चिह्न, घुन,

कोट्टारघट्टहट्टाश्च पिण्डगोण्डपिचण्डवत् ।

गडुः करण्डो लगुडो वरण्डश्च किणो घुणः ॥ १८ ॥

कोट्टारः=नगरवासी या नागरब्राह्मण, कुआं या पुखरिया का पाट । घट्टः=घाट का नाम है । कितेक आचार्यों ने 'कोट्टः' व 'अरघट्टः' ऐसा पदच्छेद कर कोट्टः=डुर्ग, किला-गढ़ या पुर । अरघट्टः=कुआं का भेद ऐसा व्याख्यान किया है । या उसके ऊपर वंधा जलके निकालने का काष्ठ रहट अरहट या पुरवट । हट्टः=क्रय विक्रय का स्थान, हटिया या बाज़ार । पिण्डः=गन्धरस, बल, सघन, देह व घर का एकदेश, देहमात्र, पिण्डदान, पति के मरजाने पर जार से उपजा हुआ बालक या गोलाकार और लोधान का नाम है । गोगण्डः=नीचजाति भेद या बडीनाभि । पिचण्डः=पशु का अवयव, उदर या पेट " पिचण्डवत् " यहां के ' वत् ' शब्द से वक्ष्यमाण गडु आदिक शब्द भी पुल्लिङ्ग हैं, यह बोधित होता है । गडुः=गलगण्ड, पृष्ठगुड या कुबड़ा । करण्डः=कौआ, डब्बा, डिविया, प्यटारी, पात्र, मधुचक्र, शहद का छत्ता, पानपात्र या पुष्पभाजन । लगुडः=वांस आदि का दण्ड, लट्ट या लाठी । वरण्डः=अन्तरावेदि-समूह-मुखरोग । किणः=मांसकी गांठि का भेद जो कि फावड़ा व लाठी के चलाने से हाथ आदिमें होजाती है और घाव से उपजे हुए चिह्न को भी कहने हैं । घुणः=काठ का कीड़ा या घुन इस प्रसिद्ध का नाम है ॥ १८ ॥

मशक, वालों का
बांधना, हरारंग,
पायुर, सामवेद,
बनि, बुल्ला,
रोगभेद, दश-
करोड़, कुन्द, के-
ना, उंचाई, पु-
आ या बरा,

*** दृतिसीमन्तहरितोरोमन्थोद्गीथबुद्बुदाः ।**

कासमर्दोऽर्बुदःकुन्दः फनस्त्पौ सपूपकौ ॥ १९ ॥

दृतिः=चामका दोना या मशक । सीमन्तः=केशविन्धास, पटिया पारना या

* इन्द्रियाण्यनु सर्वेषां यथेकं शरतीन्द्रियम् । तेनान्य शरति प्रेक्षा दृतिः पात्रादिवैदिकम् ॥ (शति मनुः) ॥

गुथा हुआ चूड़ा । हरित्=हरा घोड़ा, हरारंग, पलाश, या तृणविशेष । रोमन्थः=पशुओं के चबाये हुए को फिर चबाना, रौंथ या पागुर । उद्गीथः=ॐकार, सामवेद की ध्वनि या सामवेद का विशेषभाग । बुद्बुदः=जलका विकार या बुल्ला का नाम है । कासमर्दः या काशमर्दः=मसाले का भेद, गुल्मभेद या रोगभेद । अर्बुदः=मांस-ग्रन्थि, दशकरोड़, या अर्बुदपर्वत यानी अर्वली पहाड़ विशेष । कुन्दः=कुन्द का फूल, मुकुन्द, भ्रमण करना, खजाने का भेद, औजार रखने का पात्र या शिल्प-भाण्ड । फेनः=जल का विकार या समुद्रफेन । स्तूपः=वृक्ष या पर्वत की बड़ी उंचाई या घी आदिकों से किया हुआ कूट । पूषकः पुष्पा या बरा का नाम है । यूपः या यूपकः=यज्ञ का खंभा कि जिसमें यज्ञीयपशु बांधा जाता है ॥ १९ ॥

घाम, राजा व
क्षत्रिय, भाला,
मुर्दा, छूरा, व्य-
वहार, पदार्थ,
पानी की धारा,
बाण, अम्लवेत-
स, गोल, ईशुर,
देह.

आतपः क्षत्रिये नाभिः कणपक्षुरकेदराः ।

पूरक्षुरप्रचुक्राश्च गोलः हिङ्गुलपुद्गलाः ॥ २० ॥

आतपः=उजेली, सूर्य का प्रकाश या घाम का नाम है । क्षत्रियवाचक नाभिश्चन्दं पुलिङ्ग है । नाभिः=राजाविशेष, नाह या क्षत्रिय । कणः=प्रासविशेष या भाला । कणपः=त्रे प्राण की देह, मुर्दा या लाश या दुर्गन्ध को कहते हैं । क्षुरः=नाई का छूरा, तालमखाना, या गोखुरू । केदरः=व्यवहार का द्रव्य या पदार्थ या वृक्षविशेष । पूरः=जलका प्रवाह, घावका पूरना या खाने का पदार्थ । क्षुरप्रः या सुरप्रः=बाण-भेद जो कि छूरा के समान पैना होता है । चुक्रः=चूक, खट्टा पदार्थ, अम्लवेतस । गोलः=गोलाकार या गोलपदार्थ जो कि तोप के गोले व गेंद आदि में विख्यात है । हिङ्गुलः या हिङ्गुलः=राग द्रव्य का भेद, रक्तवर्ण सेंदुर के समान कोई सा पदार्थ या ईशुर का नाम है । पुद्गलः=सुन्दर आकारवाला, आत्मा या देह । जैसे कि “ पुद्गलः सुन्दराकारे त्रिषु पुंस्यात्मदेहयोः ” (इति मेदिनी) ‘ पुद्गलः ’ यह सुन्दर आकार में त्रिलिङ्ग है और आत्मा व देह में पुलिङ्ग कहा जाता है ॥ २० ॥

भूत, पदलवान,
भालू, जाउरि,
पटा-पीटा या
अन्नभेद, कांजी,
हर्ष, कड़ाह, पी-
कदान.

वेतालमल्लभल्लाश्च पुरोडाशोऽपि पट्टिशः ।

कुलमाषो रभसश्चैव सकटाहः पतद्ग्रहः ॥ २१ ॥

इति पुलिङ्गसंग्रहः ॥

वेतालः=वह मुर्दा जो कि भूत के प्रविष्ट होजाने से जीता सा जाना जाता है । या शिवजीके अनुचर का नाम, या द्वारपाल को भी कहते हैं । मल्लः=पात्र, गाल,

मल्लली का भेद या बाहुयुद्धकुशल, कुशती लड़नेवाला ' मल्लविशेष ' । भल्लः= भालू, बाणविशेष, भाला या भांटा । पुरोडाशः=या पुरोडासः=हविष का भेद, उड़द आदि की पीठी की चौंसी, सोमलता का रस या हवन शेष का नाम है । पट्टिशः या पट्टिसः=आयुधविशेष या ' पटा ' इस प्रसिद्ध का नाम कहा जाता है । कुल्माषः या कुल्मासः=अधभिगा जौ, कांजी, या उड़द आदि से मिला अधगीला भात या कि जिसको लोक में ' खिचड़ी ' कहते हैं । जैसे कि " कुल्माषं काञ्जिके यावके पुमान् " (इति मेदिनी) रभसः=हर्ष, वेग, उत्सुकता या पूर्वापर का विचार करना । कटाह समेत पतद्ग्रह शब्द पुंलिङ्ग में होता है । कटाहः=घी व तेल आदि के पकाने का पात्र, कराह या कराही खपड़ा, कलुवा की पीठ, स्तूप यानी वृक्ष या पहाड़ की उंचाई या भैंसी का बच्चा । जैसे कि, " कटाहः कूर्मकर्परे । द्वीपस्य च प्रभेदे च तथा स्यान्महिषीशिशौ । तैलादिपाकपात्रे च " (इति कौषा-न्तरम्) । पतद्ग्रहः=थूंकने का पात्रविशेष यानी " पीकदान " इस प्रसिद्ध का नाम पण्डितों ने कहा है ॥ २१ ॥

इति पुंलिङ्गसंग्रहविवरणम् ॥

आकाशादि, (द्विहीने) ऽन्यच्च खारण्यपर्णश्वभ्रमहिमोदकम् ।

शीतादि. शीतोष्णमांसरुधिरमुखा† क्षिद्रविणं बलम् ॥ २२ ॥

अब स्त्री व पुंलिङ्ग दोनों से रहित नपुंसकलिङ्ग का अधिकार बाह्यीकशब्द पर्यन्त किया जाता है । अन्य अवशिष्ट यानी उक्तसंग्रह से शेष और चकार से बन्ने व भूषणों का संग्रह भी नपुंसकलिङ्ग में होता है । तहां " पर्यायसमेत " कितेक शब्दों को दिखलाते हैं । जैसे कि खम्=इन्द्रिय, पुर, क्षेत्र, शून्य, बिन्दु, आकाश, संवेदन, देवलोक और सुख को कहते हैं । अरण्यम्=वन, कानन, विपिन या जंगल का नाम है । पर्णम्=पत्ता, दल या पलाश । श्वभ्रम् या स्वभ्रम्=पाताल या अधोभुवन । हिमम्=पाला या ठंडा । उदकम्=जल, नीर या पानीय । शीतम्=शीतल, ठंडा या आलस । उष्णम्=ग्रीष्म, दक्ष या गरम । मांसम्=पिशित, तरस या आमिष । रुधिरम्=शोणित, रक्त या कुंकुम । मुखम्=वदन, वक्त्र, निस्सरण, प्रारम्भ, उपाय, नाटक आदि की संधि या शब्द । अक्षि=नयन, नेत्र, लोचन या आंख । द्रविणम्=धन, वित्त, काञ्चन, पराक्रम या बलको भी कहते हैं । बलम्=गन्धरस, रूप, शौर्य, स्थूल्य और फौज में नपुंसक । बलदेव, बलासुर और वायस (कौआ) में पुंलिङ्ग । और बलवान् में वाच्यलिङ्ग तथा बरियारा में स्त्रीलिङ्ग है ॥ २२ ॥

† " प्राक्खनो मुड्ढान्तश्च ततोऽच्चप्रत्ययो भवेत् । प्रजासृजा यतः स्वातं तस्मादाहुर्मूलं बुधाः " (इति निरुक्तम्) ॥

फल, सोना, तां-
ना, लोहा, मुख,
दुःख, शुभ, अ-
शुभ, कमल आ-
दि फूल, नमक,
पक्वान्न, उवटन.

फलमेमशुल्वलोहं सुखदुःखशुभाशुभम् ।

जलपुष्पाणि लवणं व्यञ्जनान्यनुलेपनम् ॥ २३ ॥

फलम्=फलमात्र या काम का सिद्ध होना, जायफर, अनाजफल, त्रिफला, कंकोल, हथियार की नोक, संपदा, लाभ, मेवा, प्रयोजन, परिणाम, संतान, वंश, संतति प्रतिकूल, पारितोषिक, बाणके आगे का लोहा, फार, (गणित में) लब्धि, ढाल, या फरी । हल=लाङ्गल या सीर । हेम=हाटक, हिरण्य, काञ्चन या स्वर्ण । शुल्वम्=ताम्र (तांबा) द्व्यष्ट, वरिष्ठ या म्लेच्छमुख । लोहम्=लोहा, तीक्ष्ण, पिण्ड या शस्त्रक । सुखम्=सुख, शांत या शर्म । दुःखम्=दुःख, कृच्छ्र, कष्ट या कलाकुल । शुभम्=शुभ, कल्याण, मङ्गल । अशुभम्=अशुभ, अभद्र, अकल्याण । जलपुष्पाणि=जलसे उपजे पुष्प (फूल) कुमुद, कमल, कहार या उत्पल आदि । लवणम्=सैन्धव आदि नमक, समुद्र, लवणासुर, रस, नदीभेद या वैरी । व्यञ्जनानि=तेमन, निष्ठान, चिह्न, दाढ़ी, व्यञ्जनविशेष से दही, तक्र, तरकारी, साग भोजन के अच्छेपदार्थ और वह अक्षर जिसमें स्वर न हो, जैसे क. से लेकर ह पर्यन्त वर्णों को ' व्यञ्जन ' कहते हैं । अनुलेपनम्=उवटन लगाना, तेल लगाना जैसे कि ' कुंकुमाद्यनुलेपनम् ' कुंकुम, केसर या चन्दन आदि का लेप करना । ' बाधितादन्यत् ' किम् । बाधित से ' अन्यत् ' ऐसा क्यों कहा गया ? यदि न कहोगे तो आकाशः-विहायाः-द्यौः, अटवी-आदि में दोष आजावेगा-ये ख आदि शब्द पर्याय व विशेषता समेत नपुंसकलिङ्ग में होते हैं ऐसा मुकुट व स्वामी आदिकों ने व्याख्यान किया है ॥ २३ ॥

करोड़ से भिन्न
सौ आदि संख्या
लाख, द्विस्वर
इसन्त, उप्तन्त,
अन्नन्त, अनान्त

कोट्याः शतादिः संख्यान्या वा लक्षा नियुतं (च तत्) ।

द्व्यष्टकमसिसुसन्नन्तं यदनान्तमकर्तरि ॥ २४ ॥

कोटि से भिन्न शतादि संख्या नपुंसकलिङ्ग में होती है । जैसे कि शतम्=सौ । सहस्रम्=हज़ार । अयुतम्=दशहज़ार । अर्बुदम्=दशकरोड़ । लक्षा=लाख जैसे कि ' लक्षा न पुंसि संख्यायां स्त्रीवे व्याजशरव्ययोः ' (इति मेदिनी) संख्यावाची लक्षा शब्द पुलिङ्ग में नहीं होता है । छल व निशाना में नपुंसक है । और वह लक्ष नियुत शब्दवाच्य भी है । जैसे कि ' शतं सहस्रमयुतं नियुतं प्रयुतं मतम् । ख कोटिरर्बुदमिति क्रमादृशगुणोत्तरम् ' (इति रत्नकोषः) सौ, हज़ार, दशहज़ार, लाख, दशलख, करोड़ और दशकरोड़ ये क्रमसे दशगुना उत्तरवाले हैं । असन्त-इसन्त-उप्तन्त-अन्नन्त जो दो स्वरवाले शब्द हैं वे नपुंसक में होते हैं । जैसे कि

यशः=कीर्ति या नामवरी । पयः=दूध या पानी । तेजः=प्रताप या प्रकाश । तमः=अन्धकार, तमोगुण व शोक में नपुंसक और राहु में विकल्प से पुलिङ्ग होता है । इसन्त जैसे कि, सर्पिः=घी । हविः=घी या साकल्यविशेष । रोचिः, या शोचिः=दीप्ति या प्रकाश । उसन्त जैसे कि धनुः=धनुष् या चाप । वपुः=शरीर, देह या काय । यजुः=यजुर्वेद । अन्नन्त जैसे कि कर्म=काम, धन्वा, धर्मसम्बन्धी काम जैसे कि यज्ञ-होम-दान आदि, पहले जन्म में किया हुआ, कर्मकारक, भाग या क्रिस्मत । चर्म=चमड़ा या ढाल । वर्म=कवच या बख्तर । शर्म=सुख या ब्राह्मणों की पदवी । कर्तृवर्जितकारक में जो अनान्त शब्द वह नपुंसक में होते हैं । जैसे कि कदनम्=मारना, पीटना या रुलाना । गगनम्=आकाश या आस्मान । दमनम्=दमन करना । शमनम्=शमनकरना । ‘ अकर्तरि किम् ’ कर्तृवर्जित ऐसा क्यों कहा ? यदि न कहोगे तो नन्दनः=सुखदायक, आनन्द देने वाला । रमणः=रमनेवाला । सूदनः=मारने या छरनेवाला आदिकों में भी होजावेगा ॥ २४ ॥

त्रान्त, सलोपध, **त्रान्तं सलोपधं शिष्टं रात्रं प्राक्संख्ययान्वितम् ।**

संख्यापूर्वपद
रात्रान्त, पात्राद्य
दन्तद्विगुसमाप्त

पात्राद्यदन्तैरेकार्थो द्विगु (लक्ष्यानुसारतः) ॥ २५ ॥

जिनके अन्तमें ‘ त्र ’ हो और जिनकी उपधा में सकार व लकार हो वे शब्द नपुंसकलिङ्ग में होते हैं । त्रान्त जैसे कि गात्रम्=गात या शरीर । दात्रम्=दांतिर या हंसिया । पात्रम्=वरतन, बासन, आधार, दानदेने योग्य या उचित । मित्रम्=मिलापी, सखा या हितु । यन्त्रम्=वीसा आदि यन्त्र, कल या ताबीज । वहित्रम्=जलयान या जहाज । वस्त्रम्=वसन या कपड़ा । सौपध जैसे विसम्=मृणाल या भंसीड़ा । वुसम्=भुस या भूसा । अन्धतमसम्=गाढ़ा अन्धकार या बड़ा अंधेरा । लोपध जैसे कि कूलम्=तीर या किनारा । तूलम्=सहनूत या रुई । मूलम्=जड़, असल, वंश, कुल, संतान, असलधन, पूंजी, किसी पुस्तक का मूल या उन्नीसवां नक्षत्र । शूलम्=पीड़ा, दुःख, रोग, लोहे का तीखा कांटा या त्रिशूल । ‘ शिष्टम् ’ यह जो प्रागुक्त से भिन्न है वह भी और वह प्रागुक्त जो कि अबाधित है वह भी त्रान्तादिक नपुंसक में होते हैं ‘ शिष्टम् ’ यह क्यों कहा यदि न कहोगे तो पुत्रः=पुत्रामनरक से बचाने या कुलका पवित्र करनेवाला पुत्र या बेटा । मन्त्रः=भेदों का भेद, देवादिकों का साधन या सलाह करना । वृत्रः=मेघ, वैरी, अंधेरा, दानव, इन्द्र या पर्वत । कंसः=पानपात्र, कटोरा, आबखोरा या उग्रसेन का बेटा । पनसः=कटहल या बानरविशेष । हंसः=एक प्रकार के पक्षी जो कि पानी के सरोवर में रहते हैं, आत्मा, जीव, परमात्मा, ब्रह्म, राजा, योगी घोड़ा या सफेद पदार्थ । कालः=समय, कालारंग, यमराज या मौत । शालः=सौरीनामक मछली, आबरण या घेर । संख्यापूर्वक रात्र शब्द नपुंसक में होता है । “ रात्राद्वाहाः पुंसि ” इस सूत्र से पुंस्त्व प्राप्त था उसका

यह अपवाद है । जैसे कि द्विरात्रम्=दो रातियों का समाहार । त्रिरात्रम्=तीन रातियों का समाहार । पञ्चरात्रम्=पांचरातियों का समाहार । संख्याया, यह क्यों कहा ? यदि न कहोगे तो अर्धरात्रः=आधीरात । मध्यरात्रः=राति का मध्यभाग यहां दोष आवेगा । पात्र आदि अदन्त शब्दों से जो एकार्थ द्विगुसमास वह शिष्टप्रयोगों के अनुसार स्त्रीब में होता है । जैसे कि पञ्चपात्रम्=पांचपात्रों का समाहार । त्रिभुवनम्=तीन भुवनों का समाहार । ' एकार्थः किम् ' एकार्थ क्यों कहा ? पञ्चकपालः=पांच कपालों में धरा हुआ यज्ञ का भाग । यह तद्धितार्थ में द्विगु है । ' लक्ष्यानुसारतः किम् ' ' लक्ष्य के अनुसार ' ऐसा क्यों कहा ? त्रिपुरी=तीनपुरों का समाहार । पञ्चमूली=पांच जड़ों का समाहार । त्रिलोकी=स्वर्ग-मर्त्य-पाताल इन तीनों का समाहार । आदि अपवाद हैं ॥ २५ ॥

एकार्थकद्वन्द्व,
अव्ययीभाव,
संख्याव्यय से
परे पथिन्, व-
ष्ठयन्त परछाया,
समूह में सभा.

द्वन्द्वैकत्वाव्ययीभावौ पथः संख्याव्ययात्परः ।

षष्ठ्याश्छाया (बहूनां चे) द्विच्छायं (संहतौ)सभा॥ २६॥

एकार्थकद्वन्द्व यानी समाहारद्वन्द्व और अव्ययीभावसमास ये दोनों नपुंसकलिङ्ग में होते हैं । द्वन्द्वैकत्व जैसे-पाणिपादम्=हाथ पैरों का समाहार । शिरोग्रीवम्=शीश-ग्रीवा का समाहार । मार्दङ्गिकपाणविकम्=मृदङ्गवादक, पणववादकों का समुदाय । अव्ययीभाव जैसे-अधिगोपम्=गोपों में अधिकार करके जो बर्तता है । उपगङ्गम्=गङ्गाके समीप । अधिस्त्रि=स्त्रीके अधीन घर का कार्य । यथाशक्ति=शक्ति को नहीं नांघकर । संख्या और अव्यय से परे पथ शब्द यानी कृतसमासान्त पथिन् शब्द नपुंसक में होता है । जैसे कि द्विपथम्=दो मार्गों का समाहार । त्रिपथम्=तीन मार्गों का समाहार । चतुष्पथम्=चौराहा । अव्यय से परे जैसे कि, विपथम्=विरूप या विरुद्धमार्ग । कापथम्=कुमार्ग या कुराह । संख्याव्ययात्परः किम्, संख्या व अव्यय से परे ऐसा क्यों किया ? यदि न करोगे तो ' धर्मस्य पन्थाः ' धर्मपथः=धर्म का मार्ग । योगस्य पन्थाः, योगपथः=योग का मार्ग । यहां होजावेगा । ' कृतसमासान्तःकिम् ' कृतसमासान्त ऐसा क्यों कहा ? यदि न कहोगे तो अतिपन्थाः=अत्युत्तममार्ग । सुपन्थाः=शोभनमार्ग । यहां " न पूजनात् " से समासान्त का निषेध होजाता है । षष्ठ्यन्त से परे तत्पुरुष समास में छाया शब्द नपुंसक में होता है । यदि वह छाया बहुतों की हो । जैसे कि वीनां=पक्षिणां छाया, विच्छायम्=पक्षियों की छाया । इक्षूणां छाया, इक्षुच्छायम्=ईखों या गन्नों की छाया । " बहूनां किम् " ऐसा क्यों कहा ? यदि न कहोगे तो कुड्यस्य छाया, कुड्यच्छाया-कुड्यच्छायम्=भीत या दीवाल की परछाई । यहां " विभाषासेनासुराच्छायाशास्त्रा-

निशानाम् ” से क्लीबता विकल्प से होती है । समूह अर्थ में वर्तमान जो सभा-शब्द तदन्त तत्पुरुष नपुंसक में होता है । यदि सभा षष्ठ्यन्त से परे हो । जैसे कि-स्त्रीणां सभा, स्त्रीसभम्=स्त्रियों की सभा यानी समुदाय । यहां “ अशाला च ” इस सूत्र से क्लीबता होती है । ‘ संहतौ ’ ऐसा क्यों कहा ? यदि न कहोगे तो धर्मस्य सभा, धर्मसभा=धर्मशाला यहां दोष आवेगा इस लिये कहा है ॥ २६ ॥

राजशब्द वर्जित

राजपर्याय-रक्षः

पिशाचादि वा-

चक षष्ठ्यन्त पर

शालार्थक सभा

शब्द.

शालार्थापि परा राजाऽमनुष्यार्थादराजकात् ।

दासीसभं नृपसभं रक्षःसभ (मिमादिशः) ॥ २७ ॥

राजशब्द वर्जित राजपर्याय और मनुष्यहीन राक्षसपिशाचादि वाचक षष्ठ्यन्त से परे शाला (घर) अर्थवाला अपिशब्द से समूहार्थवाला भी सभा शब्द तत्पुरुष समास होजाने पर नपुंसकलिङ्ग में होता है । राजपर्याय से जैसे कि इनस्य सभा, इनसभम्=स्वामी की सभा । प्रभूणां सभा, प्रभुसभम्=प्रभुओं की सभा । अमनुष्यार्थ से जैसे रक्षसां सभा, रक्षःसभम् । राक्षसों की समाज । पिशाचानां सभा, पिशाचसभम्=पिशाचों की सभा । दासीनां सभा दासीसभम्=दासियों का घर । नृपाणां सभा, नृपसभम्=नरपालों की समाज । इन्हों में “ सभा राजामनुष्यपूर्वा ” इस सूत्र से नपुंसकलिङ्ग हुआ । ये उदाहरण जानना चाहिये । ‘ अराजकादिति किम् ’ ‘ अराजक से ’ ऐसा क्यों कहा ? यदि न कहोगे तो राज्ञांसभा, राजसभा=राजाओं की समाज । यहां नपुंसक होजावेगा । राजपर्याय के ग्रहण से यहां न हो जैसे कि चन्द्रगुप्तस्य सभा, चन्द्रगुप्तसभा=चन्द्रगुप्तकी समाज । यह राजविशेष है । ‘ षष्ठ्यन्तात्किम् ’ षष्ठ्यन्त से ऐसा क्यों कहा ? यदि न कहोगे तो ‘ ईश्वराचासौ सभाचेति ’ ईश्वरसभा ’ यहां दोष आवेगा । न सभा, असभा=नहीं सभा । ‘ तत्पुरुषे ’ इति किम्, ‘ तत्पुरुषे ’ ऐसा क्यों कहा यदि न कहोगे तो ‘ ईश्वरस्य सभेव सभा यस्येति ’ ईश्वरकी सभा की नाई सभा है जिसकी उसे ‘ ईश्वरसभः ’ कहते हैं । यहां बहु-व्रीहि समास में दोष आजावेगा इस लिये किया है ॥ २७ ॥

उपज्ञान्तआदि, उपज्ञोपक्रमान्तश्च तदादित्वप्रकाशने ।

कोपज्ञान्तआदि. कोपज्ञकोपक्रमादिकन्थोशीनरनामसु ॥ २८ ॥

यदि उपज्ञा और उपक्रम इन दोनों का पहले प्रकाश करना हो तो उपज्ञान्त व उपक्रमान्त तत्पुरुषसमास नपुंसक में होता है । उसीको पाणिनिजी भी कहते हैं कि, “ उपज्ञोपक्रमंतदाद्याचिरुयासायाम् ” उपज्ञान्त और उपक्रमान्त तत्पुरुष नपुंसक में होता है । यदि उन उपज्ञायमान व उपक्रममाणां का पहले कहने को इष्ट

हो । जैसे कि उपज्ञायते इत्युपज्ञा, को ब्रह्मा तस्य उपज्ञा आद्यं ज्ञानम्, कोपज्ञम्=प्रज्ञा । प्रज्ञापति ने प्रथम बनाया था इसीसे उसीने आदि में प्रज्ञाको जाना था । कस्य ब्रह्मणः उपक्रमः, आद्यारम्भः, कोपक्रमम्=लोकः । ब्रह्मा का आद्यारम्भ यानी ब्रह्माने पहले रचा था इसीसे उसने आदि में लोक का आरम्भ किया था । आदि शब्द से पाणिनेरुपज्ञा आद्यं ज्ञानम्, पाणिन्युपज्ञं=ग्रन्थः । पाणिनिने पहले बनाया था इसीसे आदि में उसने ग्रन्थ को जाना था । नन्दस्य उपक्रमः आद्यारम्भः, नन्दोपक्रमम्=द्रोणः । नन्दका आद्यारम्भ यानी नन्द ने आदि में उस द्रोण का आरम्भ किया था । षष्ठ्यन्त से परे जो कन्था शब्द तदन्त तत्पुरुष नपुंसक में होता है । यदि वह कन्था शब्द उशीनरदेशस्थ संज्ञाओं में बर्तता हो । जैसे कि सौशमीनां कन्था, सौशमिकन्थम्=सौशमियों की कथड़ी, गुदड़ी या कमरी । आह्वीनां कन्था, आह्विकन्थम्=आह्वियों की कन्था । ‘उशीनर इति किम्’ उशीनर ऐसा क्यों कहा यदि न कहोगे तो दाक्षिकन्था=दाक्षियों की गुदड़ी । यह संज्ञा बाह्यिकों में है । ‘नामसु’ ऐसा क्यों कहा ? यदि न कहोगे तो वीरणानां कन्था, वीरणकन्था=गांडर की कथड़ी । यह संज्ञा कहीं भी नहीं है ॥ २८ ॥

भाव में नणक
चित्तों से अन्य
अदन्त प्रत्यय,
समूह व भाव
कर्म में तद्धित
प्रत्ययान्त, प्रत्यय
सुदिन पर अह-
शब्द.

भावे नणकचिद्ग्रन्थो न्ये समूहे भावकर्मणोः ।

अदन्तप्रत्यया पुण्यनुदनाभ्यां त्वहः परः ॥ २९ ॥

न-ण-क-और चित् उन्हीं से भिन्न अदन्त प्रत्यय कृतसंज्ञक जो भाव में विधान किये गये हैं तथा समूहार्थ व भावकर्म में विहित अदन्त प्रत्ययवाले तद्धित तदन्तनाम नपुंसक में होते हैं । जैसे कि भूतम्=होना । यहां भाव में क्त प्रत्यय नपुंसक हुआ । भवितव्यम् या भवनीयम् भवद्भिः=आप लोगोंका होना उचित है । भवति-भूयते भवितुं योग्यमिति वा भव्यम् । होता या होना यह होनेयोग्य, कुशल-क्षेम । ब्रह्मणो-भवनम्, ब्रह्मभूयम्=वेद या ब्रह्मा का होना यहां “भुवो भावे क्यप्” से भाव में क्यप् हुआ । “संरक्षणम्, सांराविणम् । संकूटनम्, सांकूटिनं वर्तते=परस्पर बहुतही चिन्ताते और कूट करतेहुए वर्तमान है । ” इन दोनों में “अभिविधौ भावे झुण्” से ‘झुण्’ तदन्त से “अणिनुणः” से ‘अण्’ और “इनयनपत्य” से ‘इन्’ प्रकृति से रहता है । उसीसे “नस्तद्धिते” इस सूत्र से टिलोप नहीं हुआ । “नणक” ऐसा क्यों कहा ? यदि न कहोगे तो यज्ञः=याग । यज्ञः=उपाय । यहां “यजयाच-यतविच्छप्रच्छरक्षोनङ्” से आवादि में ‘नङ्’ हुआ । स्वप्नः=स्वपना । यहां “स्वपोनन्” से भाव में ‘नन्’ हुआ । न्यादः=नीमना । यहां “नौणच्”

से भाव में 'णच्' हुआ । आखूथः=मूषकों (मूसों) का उठना । यहां "सुपीति" से 'क' हुआ । विष्णः=रोक, रुकाव, अटकाव, बिगाड़ या बाधा । यहां 'घञर्थे' से 'क' हुआ । चित् प्रत्ययान्त जैसे कि, चयनम्, चयः=ढेर करना । जयनम्, जयः=जीतना । यहां "एरच्" से 'अच्' हुआ । कारणं, कारणा=तीव्रवेदना । यहां "गयास-अन्थोयुच्" से 'युच्' हुआ । इन उदाहरणों में दोष आवेगा । समूह में तद्धित जैसे कि, भिक्षाणां समूहो, भैक्षम्=भिक्षाओं का समूह । यहां 'भिक्षादिभ्योऽण्' से 'अण्' हुआ । औपगवानां समूहः, औपगवकम्=उपगु अपत्यों का समुदाय । यहां "गोत्रोक्षोष्ट्र-" से 'बुच्' हुआ । काकानां समूहः, काकम्=कौओं का समूह । यहां "तस्य समूहः" से 'अण्' हुआ । केदाराणां समूहः, कैदार्यम्=कैदारकं वा=खेतों का समूह । यहां "केदाराद्यञ्च" से 'यच्' या 'बुच्' हुआ । गो-र्भावो, गोत्वम्=गौका होना । यहां "तस्यभावस्त्वतलो" से 'त्व' प्रत्यय हुआ । शुचेर्भावः शौचम्=पवित्रता का होना । मुनेर्भावो मौनम्=मुनि का होना । यहां "इगन्ताच्चलघुपूर्वात्" से 'अण्' हुआ । मनोज्ञानां समूहो, मानोज्ञकम्=सुन्दरता या सुडौलता का समूह । यहां "द्वन्द्वमनोज्ञादिभ्यश्च" से 'बुच्' हुआ । स्तेनस्य भावः, कर्म वा स्तेयम्=चोर का होना या कर्म । यहां "स्तेनाद्यन्नलोपश्च" से 'यत्' और नलोप हुआ । शुक्लस्य भावः, कर्म वा शौक्ल्यम्=सफ़ेद का होना या कर्म । यहां "गुणवचनप्राज्ञाणादिभ्यः कर्मणि च" से 'ज्यच्' हुआ । पुण्य व सुदिन से परे कृतसमासान्त अहन् शब्द नपुंसक में होता है । जैसे कि, पुण्यं च तदहश्च पुण्याहम्=पुण्यदिन । सुदिनं च तदहश्च, सुदिनाहम्=भला दिन । यहां "राजाहः सखिभ्यष्टच्" से 'टच्' और "पुण्यसुदिनाभ्यामहः क्लीबता" से नपुंसक हुआ । "समासान्त" ऐसा क्यों कहा ? यदि न कहोगे तो जिस मास में पुण्यदिन होते हैं उसे 'पुण्याहा' कहते हैं । यहां दोष आवेगा इस लिये कहा है ॥ २६ ॥

क्रियाव्ययवि-
शेषण, साम-
भेद, वृत्तभेद,
ताडफल या
केला का फल,
गोंद या भात,
थून्ही, सोना,
मर्म-योजन.

क्रियाव्ययानां भेदकान्येकत्वेऽप्युक्त्यतोऽटके ।

चोचं पिच्छं गृहस्थूणं तिरीटं मर्मयोजने ॥ ३० ॥

क्रिया और अव्ययों के विशेषण नपुंसक व एकवचन में होते हैं । क्रियाविशेषण, जैसे कि, मन्दं पचन्ति-धीरेसे पकाते हैं । सुखं तिष्ठन्ति योगिनः=योगीश्वर

१ "गृहशशाभ्यां क्लीबे (नियमार्थमिदम्) गृहशशपूर्वे स्थूणोर्ध्वं यथासंख्यं नपुंसके स्तः । इति क्लीबत्वम्" ॥

सुख से टिकते हैं । सलीलं नृत्यन्ति बालाः=बालगण लीला से नाचते हैं । अन्यय-विशेषण जैसे कि, रम्यं स्वः=कल्ह का दिन रमणीय है । प्रातः कमनीयम्=प्रभात-काल सुहावना है । उक्तम्=सामविशेष या भेद । तोटकम्=छन्द का भेद । चोचम्=खाये हुए फल का शेष, तालफल या केला का फल । पिच्छम्=पूँछ, मोरपंख, मुकुट, मोर, हिंसा, कपासवृक्ष, केला, सेमर, भात का मांड, घोड़े के पैर का रोग । गृह-स्यूगम्=घर का खंभा या थून्ही । तिरीटम्=बेठन, सोना या शिरोभूषण । मर्म (न)=सन्निवस्थान या हड्डियों के जोड़ का स्थान । योजनम्=मिलना, मिलाना, परमात्मा, चार कोस या योग को कहते हैं ॥ ३० ॥

राजसूय, वाज-

पेय, गद्य-पद्य, राजसूयं वाजपेयं गद्यपद्ये (कृतौ कवेः) ।

माणिक्य,

भाष्य, सेंदुर,

चीर, चीवर,

पञ्जर या पिंजरा

माणिक्यभाष्यसिन्दूरचीरचोवरपञ्जरम् ॥ ३१ ॥

राजसूयम्=एकयज्ञ जिसको केवल चक्रवर्ती राजाही करसक्ते हैं और इस यज्ञ का सारा कामकाज केवल उसके अधीन और राजालोग करते हैं । वाजपेयम्=जिसमें वाज=अज्ञ, धी या पैथी सुरा पीजाती है उसे 'वाजपेयम्' कहते हैं । एकप्रकार का यज्ञ । ये दोनों अर्धर्चादि हैं । कवि की रचना में गद्य-पद्य ये दोनों नपुंसकलिङ्ग में होते हैं । जैसे कि गद्यम्=छन्दरहितवाक्य, बिना छन्द का वाक्य, वार्तिक या नसर । पद्यम्=पदसमूह की रचना या श्लोक "पद्यं श्लोके पुमाञ्शूद्रे पद्या वर्त्मनि कीर्त्तिता" (इति मेदिनी) श्लोक में 'पद्यम्' नपुंसक, शूद्र में 'पद्यः' पुल्लिङ्ग और मार्ग में 'पद्या' स्त्रीलिङ्ग कहा है । 'कवेः कृतौ' ऐसा क्यों कहा ? यदि न कहोगे तो 'गद्या वार्ता' बात कहने योग्य है । पद्यः=कीचड़ या चहल्ला । पद्यम्=रज या धूल । यहां दोष आवेगा । माणिक्यम्=रत्नभेद या बड़े मोलवाला एक लाल रंग का पत्थर । या "माणिके मणिपूराख्ये नगरे भवं माणिक्यम्" मणिक यानी मणिपुर विख्यात नगर में जो उपजा है उसे 'माणिक्यम्' कहते हैं । भाष्यम्=टीका, टिप्पणी, विवृति, विवरण या सूत्रार्थ । जैसे कि "सूत्रार्थो वर्यते यत्र वाक्यैः सूत्रानुसारिभिः । स्वपदानि च वर्यन्ते भाष्यं भाष्यविदो विदुः" सूत्रानुसारी वाक्यों से जिसमें सूत्रों का अर्थ कहाजाता है और स्वपद वर्णित होते हैं उसे भाष्यवेत्ता पण्डितों ने भाष्य कहा है । सिन्दूरम्=सेंदुर या लालचूर्ण जैसे कि "सिन्दूरस्तरुभेदे स्यात्सिन्दूरं रक्तचूर्णके । सिन्दूरी रोचनारक्तवेल्लिकाधातकीषु च" (इति शिवरूपका १ः) वृक्ष-भेद में 'सिन्दूरः' पुल्लिङ्ग, लालचूर्ण में 'सिन्दूरम्' निशोत-कबीला-रक्तवेल्लिका और धवई तथा आंवला में 'सिन्दूरी' होता है । चीर=कपड़ा, वस्त्र, साड़ी या

चीथड़ा । जैसे कि “ चीरी क्लियां नपुंसकम् । गोस्तने वस्त्रभेदे च रेखालिखन-भेदयोः ” (इति मेदिनी) कीर्तिगुर में चीरी, गऊका थन, वस्त्रभेद, रेखा और लिखनभेद में ‘ चीरम् ’ नपुंसक है । चीवरम्=मुनियों का वस्त्र या बौद्धमती का चोलना । पञ्जरम् या पिञ्जरम्=काया की हड्डियों का समुदाय या पीजरा का नाम है कि, जिसमें पाले हुए पक्षी तोता व मैना आदि रहते हैं ॥ ३१ ॥

चार्वाकशास्त्र,
हरितार, बांस
का पात्र, थारा
या देशभेद.

लोकायतं हरितालं विदलं स्थालबाह्वम् ।

इति क्लीबसंग्रहः ॥

लोकायतम्=चार्वाकों का शास्त्र । हरितालम्=हरितार या पीलेरंगकी धातु । जैसे मेदिनी कोष में कहा है कि “ हरितालं धातुभेदे स्त्री दूर्वाकाशरेखयोः ” धातुभेद में ‘ हरिताल ’ नपुंसक है । दूब और आकाशरेखा में स्त्रीलिङ्ग है । विदलम्=बांसका बना पात्रभेद । स्थालम्=थारा या थार में नपुंसक, पुष्पविशेष या पाढ़रि, थाली या बटलोही में स्त्रीलिङ्ग है । बाह्वम् या बाह्वकम्=देशभेद, कुंकुम या बहलुदेश का उपजा हुआ कुंकुम “ बाह्वम् ” कहलाता है ॥

इति क्लीबसंग्रहविवरणम् ।

आधीम्बूचा, ति-
लौकी खली,
कांटा.

(पुंनपुंसकयोः) शेषोऽर्धचर्चपिण्याककण्टकाः ॥ ३२ ॥

अब पुंलिङ्ग व नपुंसकलिङ्ग का अधिकार किया जाता है—कहे हुए से शेष पुंनपुंसक में होता है । जैसे कि “ अर्धचर्चः—अर्धचर्चम्=आधीम्बूचा या वेद का भाग । पिण्याकः—पिण्याकम्=तिलों की खली, हींग, बाह्लिकदेश का घोड़ा या कुंकुम, लोबान । कण्टकः—कण्टकम्=शुद्रवैरी, मछली आदि का कांटा, नैयोगिक आदि दोषों का कहना, रोमहर्ष, और दुमाङ्ग को कहते हैं ॥ ३२ ॥

लड्डू, उपताप,
टांकी, साड़ी,
कपड़ा, खर्ब,
दशकरोड़, पा-
तक, उद्योग,
घरकशास्त्र, त-
माखू, आंवला,
नरई.

मोदकस्तण्डकटङ्कः शाटकः खर्वटोऽर्बुदः ।

पातकोद्योगचरकतमालामलका नडः ॥ ३३ ॥

मोदकः=एक प्रकार का लड्डू या आनन्द का करनेवाला । तण्डकः=संगड़ाके चलना या एक प्रकार का पक्षी (खंडरैचा) फेना, घरका काठ, वृक्षका कंधा या बड़ा मायावी । दण्डकः=वन, छन्दभेद या दण्ड करना । टङ्कः=नील, कैथा, खुरपा या बेलचा, टांक इनमें पुंनपुंसक । जंघा में स्त्रीलिङ्ग, तजवार, पत्थर काटने का औज़ार, अहंकार, कोप करना । इनमें पुंलिङ्ग है । किसी के मतमें तङ्क भी है तङ्कः=

भय या डर । शाटकः=साड़ी या छिरियों के पहिरने का कपड़ा । खर्वटः=स्थानभेद या नदी पहाड़ के बीच की बस्ती को कहते हैं । अर्बुदः=मांसकील, कठोर, दश-करोड़ या अर्बलीनामक पर्वतविशेष । पातकः, पातकम्=ब्रह्महत्यादि पाप, दोष, अपराध या गुनाह । उद्योगः=उद्यम, उपाय, यत्न, परिश्रम या चेष्टा करना । चर-कम्=वैद्यकशास्त्र भेद—कोढ़, दूत या जासूस । वरकम्=सियां हुआ कपड़ा । तमालः=तिलक, तलवार, तमाखू, वृक्षभेद या वरनानामक वृक्ष । आमलकः या आमालकः=धात्रीफल या आंवला इस प्रसिद्ध का नाम है । नडः=भीतर का बिल, नर-कुल या नरई को कहते हैं ॥ ३३ ॥

कोढ़, मूँड़,
मद्य, भूजामांस,
वीरनाद, कु-
शल, भीति,
संयोग, तौल-
भेद, अशिरोग,
रस्ताखर्च, वि-
कारशून्य, ना-
चना.

कुष्ठं मुण्डं शीघ्रं बुस्तं क्ष्वेडितं क्षेम कुट्टिमम् ।

संगमं शतमानाम् शम्बलाव्ययताण्डवम् ॥ ३४ ॥

कुष्ठम्=कोढ़रोग, पुष्कर या कमल “ कुष्ठंरोगे पुष्करेऽस्त्री ” (इति मेदिनी)
मुण्डम्=शीश या असुरभेद । शीघ्रं=मद्य या शराब । बुस्तम्=शङ्कुलीसमेत मांस,
भूजामांस या फल का सारभाग यानी कटहल आदिका गूदा । कहीं ‘पुस्तम्’ या
शस्तं पाठ है । कहीं ‘चुस्तम्’ या ‘तुस्तं’ भी पाठ है । क्ष्वेडितम्=वीरों का सिंहनाद ।
क्षेमम्=कुशल “ जानीयान्मङ्गलं क्षेमं क्षेमं लब्धार्थरक्षणम् ” मङ्गल को क्षेम जानना
चाहिये व लब्धहुए अर्थरक्षण को भी “ क्षेम ” कहते हैं । कुट्टिमम्=भीतका भेद ।
संगमम्=संयोग, मेल—मिलाप । शतमानम्=रूप्यपल्ल या मानभेद । अर्मम्=नयनों का
रोग । शम्बलम्=वा सम्बलं “ पाथेयं च शम्बलोऽस्त्री शम्बलवत्कूलपाथेय मत्सरः ”
(इति मेदिनी) रस्ता खर्च, तोशाराह, मार्गव्यय, पानी, किनारा या डाह । अव्य-
यम्=स्वरादिनिपात या विकाररहित । “ अव्ययोऽस्त्री शब्दभेदे ना विष्णौ निर्व्यये-
त्रिषु ” (इति मेदिनी) अव्ययः=शब्दभेद में पुनर्पुंसक, विष्णु में पुंलिङ्ग और
निर्व्यय में त्रिलिङ्ग है । ताण्डवम् या ताण्डव्यम्=नाचका भेद ॥ ३४ ॥

तोबहा, छिमी-

क्रन्द, कपास,

नदी के दोनों

किनारे, जूआ

आदि, यज्ञ-

स्तम्भ, करोला,

यज्ञपात्र, जल,

यज्ञपात्र, पात्र-

विशेष.

कवियं कन्दकर्पासं पारावारं युगन्धरम् ।

यूपं प्रग्नीवपात्रीवे यूपं चमसचिक्सौ ॥ ३५ ॥

कवियम्=तोबड़ा, लगाम या बायडोर । कन्दम्=जिमीकन्द, कमलिनी आदि की जड़ “ कन्दोऽस्त्री सूरणे शस्यमूले जलधरे पुमान् ” (इति मेदिनी) सूरण व सस्यमूल में कन्दः=पुन्नपुंसक है और मेघ में पुंलिङ्ग है । कहीं ‘कर्म’ ऐसा भी पाठ है । कर्म=काम, धंधा, धर्मसम्बन्धी काम, जैसे यज्ञ-होम-दानआदि, पहले जन्ममें किया हुआ कर्म या कर्मकारक । कर्पासम्=कपास, रुई या बस्त्र का कारण । पारावारम्=नदी आदि के दोनों पारको क्रम से ‘पारम्’ और अत्रारम्, कहते हैं “पारावारः पयोराशौ पारावारं तटद्वये” (इति हैमः) युगन्धरम्=कूबर या रथके जूआ के काठ को पुष्ट करनेवाला काठ या पर्वतभेद । यूपम्=यज्ञाङ्ग भेद या यज्ञपशु बांधने का काष्ठविशेष । प्रचीवम्=भरोखा, मुखशाला=खिड़की आदि या वृक्षका शिरोभाग । पात्रीवम् या पात्रीबम्=यज्ञपात्रविशेष यानी यज्ञ के उपकरण का पात्र भेद । यूषं या जूषम्=जूस-रस या माड़ इस प्रसिद्ध का नाम है (उक्तं हि वैद्यके) “ मुद्रामलकयूषस्तु ग्राही पित्तकफेहितः ” मूंग और आंवलेका ‘जूस’ ग्राही होकर पित्त कफ में हितदायक होता है । चमसम्=सोम पीने का पात्रविशेष । चिक्षसः=पानपात्र विशेष या यज्ञ में सोमपान करने के लिये जो पात्रविशेष यानी चिकना पात्र बनाया जाता है उसे ‘चिक्षसः’ कहते हैं ॥ ३५ ॥

अर्धर्चादौ घृतादीनां पुंस्त्वाद्यं वैदिकं ध्रुवम् ।

तन्नोक्तमिहलोकेऽपि तच्च द्रष्टव्यं (शेषवत्) ॥ ३६ ॥

इति पुन्नपुंसकसंग्रहः ॥

“ अर्धर्चादौ ” इस पुन्नपुंसकाधिकारवर्ग में घृत (घी) आदि शब्दों का पुंस्त्व आदि पाणिन्यादिकों ने कहा है । वह तो वैदिक है यानी वेद में ही प्रसिद्ध है । इस लिये यहां नहीं कहागया है और यदि लोक में है भी तो वह शिष्टप्रयोगानुसार ग्रहण करना चाहिये ॥ ३६ ॥

इति पुन्नपुंसकसंग्रहविवरणम् ॥

स्त्रीपुंसयोरपत्यान्ता द्विचतुःषट्पदोरगाः ।

जातिभेदाः पुमाख्याश्च स्त्रीयोगैः सह मल्लकः ॥ ३७ ॥

“ स्त्रीपुंसयोः ” इसका अधिकार किया जाता है—अपत्य अर्थ में विधान किये हुए अण् आदि प्रत्यय तदन्त समस्तशब्द स्त्रीलिङ्ग व पुंलिङ्ग में होते हैं । जैसे कि उपगोरपत्यं पुमान् औपगवः=उद्धवपूर्वज उपगुनामक यादवविशेष के गोत्रापत्य को ‘औपगवः’ और स्त्री को ‘औपगवी’ । गर्गगोत्रापत्यपुरुष को ‘गार्ग्यः’ और स्त्री को ‘गार्गी’ । एवं विदेहगोत्रापत्य को ‘वैदेहः’ और स्त्रीको ‘वैदेही’ कहते हैं ।

द्विपद-चतुष्पद-और षट्पदवाची तथा उरगवाची जातिविशेष शब्द स्त्री पुंलिङ्ग में होते हैं । द्विपद जैसे कि. मानुषःपुमान् । स्त्री मानुषी । विप्रःपुमान् । स्त्री विप्रा । यहां अजादित्व से 'टाप्' हुआ । शूद्रः पुमान् । स्त्री शूद्रा=(शूद्रा तज्जातिरङ्गना) शूद्र-जातिवाली स्त्री 'शूद्रा' कहलाती है । यहां "शूद्रा चामहत्पूर्वाजातिः" से 'टाप्' हुआ है । बकः पुमान् । स्त्री बक्री । हंसःपुमान् । स्त्री हंसी । चतुष्पद जैसे कि सिंहः पुमान् । स्त्री सिंही । मृगःपुमान् । स्त्री मृगी । हयः=घोड़ा । हयी=घोड़ी । भ्रमरः=भौरा । भ्रमरी=भौरी । उरगः=सांप । उरगी=साँपिनी । यहां "जातेरस्त्रीविषया-दयोपधात्" से 'डीष्' जानना चाहिये । "अबाधिता इत्येव" जब अबाधित हों तभी स्त्री पुंलिङ्ग में होते हैं । मक्षिका=मक्खी । शिवा=सियारिनी । लूता=मकड़ी । पिपीलिका=चिउँटी । जातिवाची शब्द स्त्री पुंलिङ्ग में होते हैं । जैसे कि दुग्गाः=बिच्छू । दुग्गी=बीछी । मत्स्यः=मच्छ । मत्सी=मछली । कितेक आचार्य षट्पदादिकों के साथ इसकी एकवाक्यता कहते हैं । स्त्रीवाचक शब्द के योग के साथ वर्तमान पुंवाचक शब्द स्त्री और पुंलिङ्ग में होते हैं । जैसे कि, ब्राह्मणस्तस्य स्त्री ब्राह्मणी । 'ब्राह्मणः' पुंलिङ्ग है उसकी भार्या को 'ब्राह्मणी' कहते हैं । शूद्रः पुमांस्तस्यभार्या शूद्री । पुरुष शूद्र उसकी स्त्री को 'शूद्री' कहते हैं । मल्लक आदि भी स्त्री पुंलिङ्ग में होते हैं । जैसे कि मल्लकः=सामर्थ्य धारनेवाला या पहलवान । मल्लिका=चमेली या बेला, मछली, मिट्टी का पात्र यानी 'मल्लैया' या मडुकी का नाम है ॥ ३७ ॥

यती, कौड़ी, न-
क्षत्र, चन्दन,
कालीपादरि,
मन्त्र, धरिया,
परिमाण, बेरी,
लाठी, साड़ी,
कमर, भोपड़ी.

मुनिवराटकः स्वातिर्वर्णको भाटलिर्मनुः ।

मूषा सृपाटी कर्कन्धूर्यष्टिः शाटी कटी कुटी ॥ ३८ ॥

मुनिः=वसिष्ठादि ऋषि, तपस्वी, तपी, ज्ञानी, सातकी संख्या, यती, बुद्ध, इन्द्रादी, पियाल या अगस्त्य वृक्षभेद या पलाश का नाम है । कहीं "ऊर्मिस्तरङ्गः" यह भी पाठ है । वराटकः=कमलगट्टा, रस्सी । स्त्रीलिङ्ग में वराटिका=कपर्दिका या कौड़ी । स्वातिः=नक्षत्रभेद या चन्द्रमा की एक स्त्री । वर्णकः=चन्दन या विलेपन "वर्णकश्चारणो स्त्री तु चन्दने च विलेपने । द्वयोर्नील्यादिषु स्त्री स्यादुत्कर्षे काञ्चनस्य च" (इति मेदिनी) भाटलिः=काली पादरि । कहीं 'जाटलिः' या 'पाटलिः' भी पाठ है । जाटलिः=मूर्वावृक्ष । पाटलिः=पादरि जोकि पलाश के समान होती है । मनुः=आदिराजा या मन्त्र का नाम है । मूषा=स्वर्णादिधातु गलाने का पात्र या धरिया । सृपाटः, स्त्री सृपाटी=परिमाणभेद । कर्कन्धूः=केरवृक्ष । यष्टिः=लाठी या

मुलेठी । शाटी=वस्त्रभेद या साड़ी । कंटः=मुर्दा, कमर, चटाई या हाथी का गाल । कटी या कटिः=शरीर का मध्यभाग या कमर । कुटी=झोपड़ी या मठी का नाम है ॥ ३८ ॥

इति स्त्रीपुंससंग्रहविवरणम् ॥

अथ स्त्रीनपुंसकसंज्ञा व्याख्यायते ॥

प्यञ्, वुञ्, “स्त्रीनपुंसकयो” भावक्रिययोः ‘प्यञ्’ कचिच्च ‘वुञ्’ ।
उचित, मितार्हः औचित्यमौचितीमैत्री मैत्र्यं ‘वुञ्’ (प्रागुदाहृतः) ॥ ३९ ॥

“स्त्रीनपुंसकयोः” इसका अधिकार किया जाता है । भावकर्म में विधान किया हुआ ‘प्यञ्’ और ‘वुञ्’ कहीं स्त्री नपुंसक में होता है । जैसे कि, उचितस्य भावः, औचित्यम्-यहां “गुणवचनब्राह्मणादिभ्यः कर्मणि च” से प्यञ् हुआ । स्त्रीलिङ्ग में ‘औचिती’ । मित्रस्य कर्म-मैत्र्यम् । यहां कर्म में ‘प्यञ्’ हुआ । स्त्री में मैत्री=मितार्ह । समग्रस्य भावः, सामग्र्यम्=समग्रका होना । स्त्रीलिङ्ग में सामग्री=पूजा आदिकी सामग्री । अर्हतोभावः आर्हन्त्यम् । स्त्री में आर्हन्ती=योग्यता । पहले द्वितीयकारण में ‘वुञ्’ का उदाहरण दे चुके हैं । जैसे कि अहो-पुरुषस्य भावः, आहोपुरुषिका=हमी पुरुष हैं या हमी लड़ेंगे । “शैष्योपाध्यायिका” चेला-गुरु का होना । गार्गिका=गर्गगोत्रत्वसे प्रशंसा का होना । कहीं स्त्रीलिङ्ग नहीं होता है । जैसे कि मनोज्ञस्य भावो, मनोज्ञकम्=सुन्दरता का होना । रमणीय का होना या कर्म उसे ‘रामणीयकम्’ कहते हैं । “भावे” ऐसा क्यों कहा ? यदि न कहोगे तो ‘चतुर्वर्ण्यम्’ ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य और शूद्र इन चारों वर्णों का होना । यहां स्वार्थ में ‘प्यञ्’ नपुंसक में हुआ । स्त्रीलिङ्ग में नहीं होता है ॥ ३९ ॥

सेना, छाया, षष्ठ्यन्तप्राक्पदाः सेनाच्छायाशालासुरानिशा ।

शाला आदि,
मनुष्यों की
सेना, कुत्तों की
रात-गायणोट.

स्याद्वा नृसेनं श्वनिशं गोपालमितर च (दिक्) ॥ ४० ॥

जिनके पूर्वपद षष्ठ्यन्त होते हैं वे सेना-छाया-शाला-सुरा-निशा शब्द तत्पुरुष समास के होजाने पर स्त्रीनपुंसक में रहते हैं । यानी षष्ठ्यन्त से परे सेना आदि शब्द तत्पुरुषके होने पर स्त्रीनपुंसक में होते हैं । जैसे कि नृणां सेना, नृसेना=मनुष्यों की सेना । वृक्षस्य + छाया, वृक्षच्छाया=वृक्षों की छाया । गवां शाला, गोशाला=गोओं का स्थान या गोष्ठ । खानां सुरा, खसुरा=जवों की मदिरा ।

शुनां निशा, श्वनिशा=कुत्तों की रात । विकल्पपक्ष में “ त्रिभाषा सेनासुराच्छाया-
शालानिशानाम् ” इस सूत्र से नपुंसकता होती है । जैसे कि वृसेनम्=नरों की
फौज । वृक्षच्छायम्=वृक्षों की छाया । गोशालम्=गोशाला, यवसुरम्=जौ की
गदिरा या शराब । श्वनिशम्=कुत्तों की राति—ये नपुंसक हैं । इसी प्रकार अन्य
भी उदाहरण बनालेना चाहिये । जैसे कि “ छाया बाहुल्ये ” छायान्त तत्पुरुष नपुं-
सक होता है । जब कि पूर्वपदार्थ का बाहुल्य हो । जैसे कि ‘ इक्षूणां छाया, इक्षुच्छा-
यम्=ईखों या गन्नों की छाया । “ विभाषासेना— ” इस विकल्प का यह अपवाद
शास्त्र है “ इक्षुच्छायानिषादिन्यः ” इस में आङ्का प्रश्लेष जानना चाहिये । यह
उदाहरण है ॥ ४० ॥

आबन्तन्तोत्तरपदो द्विगुश्चापुंसि नश्च लुप् ।

त्रिखट्वं च त्रिखट्वे च त्रितक्षं च त्रितक्ष्यपि ॥ ४१ ॥

इति स्त्रीनपुंसकसंग्रहः ।

आबन्त उत्तरपद और अबन्त उत्तरपद द्विगुसमास पुलिङ्ग में नहीं होते हैं । किन्तु
स्त्री नपुंसक में होते हैं । अबन्त उत्तरपद का जो अन्त्यनकार उसका लुप् यानी
लोप भी होजाता है । आबन्तोत्तर पद जैसे कि तिसृणां खट्वानां समाहारत्रिखट्वी ।
यहां “ आबन्तोवा ” से स्त्रीलिङ्ग की विकल्पता है । पक्षमें ‘त्रिखट्वम्’ भी होता है ।
एवं पञ्चखट्वाः समाहृताः, पञ्चखट्वी । पक्ष में ‘ पञ्चखट्वम् ’ नपुंसक भी होता है ।
अबन्तोत्तरपद जैसे कि, त्रयाणां तक्षणां समाहारत्रितक्षी । यहां “अनोनलोपश्च”
से नलोप और “ द्विगोः ” से ङीप् हुआ । पक्ष में ‘त्रितक्षम्’ नपुंसक भी हुआ ।
एवं पञ्चतक्षणाः समाहृताः, पञ्चतक्षी । पक्षमें पञ्चतक्षम् नपुंसक भी हुआ ॥ ४१ ॥

इति स्त्रीनपुंसकसंग्रहविवरणम् ॥

अथ त्रिलिङ्गशेषोऽन्याख्यायते ॥

पात्र, दोना, बा-
टी, पेयारा, क-
मल या बेरफल,
अनार.

“ त्रिषु ” पात्री पुटी बाटी बेटी कुवलदाडिमौ ।

इति त्रिलिङ्गशेषः ॥

अत्र “ त्रिषु ” इसका अधिकार किया जाता है—पात्र आदि ‘ दाडिम ’ पर्यन्त
शब्द तीनों लिङ्ग में होते हैं । जैसे कि पात्रः, पात्री, पात्रम् “ पात्रं तु कूलयोर्म-
ध्ये पर्णो नृपतिमन्त्रिणि । योग्यभाजनयोर्यज्ञभागडे नाट्यानुकर्तरि ” (इति हैमः)
दोनों किनारों का मध्यभाग, पत्ता, राजमन्त्री, योग्य, भाजन=(आबन्तोरा आदि)
यज्ञपात्र और नाटयका अनुकर्ता । पुटः, पुटी, पुटम्=मिट्टी का बना डब्बा, औषध
बनाने का पात्रभेद, दूध आदि के पीने का पात्र या दोना आदि । बाटः, बाटी-

वाटम्=रास्ता या मार्ग “ वाटः पथिवृतौ वाटं वरण्डे गात्रभेदयोः । वाटी गृहोद्यान-
कट्योः ” (इति हैमः) । पेटः, पेटी, पेटम्=पेटारा या पेटारी । कुवलः—कुवली—
कुवलम्=कमल, मोती, बेरफल “ कुवलं चोत्पले मुक्ताफलेऽपि बदरीफले ” (इति
मेदिनी) । दाडिमः, दाडिमी, दाडिमम्=अनार या दाडिमवृक्ष । उसीसे “ वियो-
गिनीमैक्षत दाडिमीमसौ ” यह नैषधकाव्य का प्रयोग भी संगत होता है ॥

इति त्रिलिङ्गशेषविवरणम् ॥

द्वन्द्वसमास, त-
त्पुरुषसमास. परलिङ्गं स्वप्रधाने द्वन्द्वे, तत्पुरुषेऽपि (तत्) ॥ ४२ ॥

जहां समस्यमानपदार्थ प्रधान होते हैं उस इतरेतरयोग द्वन्द्वसमास में जो परप-
दस्थ लिङ्ग रहता है वही होता है । यानी उभयपदप्रधान इतरेतराख्यद्वन्द्वसमास में
जो परपद में टिका हुआ लिङ्ग है वही होता है । द्वन्द्वसमास में जैसे कि, कुक्कुटश्च
मयूरी च कुक्कुटमयूरी । यहां परपदस्थ मयूरी स्त्रीलिङ्ग है वही लिङ्ग हुआ । मयूरी च
कुक्कुटश्च, मयूरीकुक्कुटौ यहां परपदस्थ कुक्कुट पुलिङ्ग है वही हुआ । वह परलिङ्गता
तत्पुरुषसमास में भी होती है । जैसे कि कुलस्य ब्राह्मणः, कुलब्राह्मणः=कुलका
ब्राह्मण । यहां परपदस्थ ब्राह्मण पुलिङ्ग है वही हुआ । ब्राह्मणस्य कुलम्, ब्राह्मण-
कुलम्=ब्राह्मण का कुल । यहां परपदस्थ कुल नपुंसक है वही हुआ । अर्थे पिप्पल्याः,
अर्थेपिप्पली=आधा पीपल का । यहां “ अर्थे नपुंसकम् ” से समास होजाने पर
परपदस्थ पिप्पली स्त्रीलिङ्ग है वही हुआ । “ क्लीबे किम् ” क्लीब क्यों कहा ?
यदि न कहोगे तो ग्रामस्य अर्थः, ग्रामार्थः=गांव का आधा । यहां दोष आजावेगा
इस लिये कहा है ॥ ४२ ॥

अस्यापवादमाह—

अर्थान्ताः प्राच्यलंप्राप्तापः पूर्वाः परोपगाः ।

तद्धितार्थे द्विगुः संख्यासर्वनामतदन्तकाः ॥ ४३ ॥

“ अब परवल्लिङ्गता का अपवाद कहते हैं ”—कि, जिनके अन्त में अर्थ शब्द
हो और जिनके पूर्व प्रादि—अलम्—प्राप्त व आपन्न शब्द हों वे विशेष्यलिङ्ग यानी
वाच्यलिङ्ग होते हैं । अर्थान्त जैसे द्विजाय + अयम्, द्विजार्थः सूपः=यह दाल ब्राह्मण
के लिये है । द्विजाय + इयम् द्विजार्था यवागूः । यह लप्सी द्विज के लिये है । द्विजाय +
इदम्, द्विजार्थं पयः=यह दूध द्विज के लिये है । एवं विप्रार्थो वेदः=यह वेद विप्रके
लिये है । विप्रार्था माला=यह माला विप्रके लिये है । विप्रार्थं वस्त्रम्=यह कपड़ा
विप्र के लिये है । यहां “ अर्थेन नित्यसमासो विशेष्यलिङ्गताचेति वक्तव्यम् ” इस
वार्तिक से नित्यसमास और वाच्यलिङ्गता जाननी चाहिये । प्रगतः आचार्यः,

प्राचार्यः=प्रगत जो आचार्य उसे 'प्राचार्यः' कहते हैं । यहां " प्रादयोगताद्यर्थे प्रथमया " से समास हुआ । खट्वामतिक्रान्तोऽतिखट्वः=जो खाटको नांघगया है उसे 'अतिखट्वः' कहते हैं । यहां " अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया " से समास हुआ । एवम् 'अतिक्रान्तो मालामतिमालोहारः, अतिमाला इयम्, अतिमालमिदम् । यहां पूर्ववत्समास हुआ । अवकुष्ठः कोकिलया, अवकोकिलः=जो कोकिला से अवकुष्ठ (बिराया या चिढ़ाया गया) है, उसे 'अवकोकिलः' कहते हैं । यहां " अवादयः कुष्ठार्थे तृतीयया " से समास हुआ । अलं कुमार्यै, अलंकुमारिरयम्=यह कुमारी के लिये समर्थ है । अलं कुमारिरियम्=यह रमणी कुमारी के लिये समर्थ है, अलं कुमारि इदम्=यह कुल कुमारी के लिये समर्थ है । अलंजीविकायै, अलंजीविकः=जो जीविका के लिये समर्थ है उसे 'अलंजीविकः' कहते हैं । अलंजीविका स्त्री, अलंजीविकमिदम् । प्राप्तो जीविकाम्, प्राप्तजीविकोद्विजः=जो द्विज जीविकाको पा चुका है उसे 'प्राप्तजीविकः' स्त्री को प्राप्तजीविका, कुल को प्राप्तजीविकम् कहते हैं । एवम् आपन्नजीविको विप्रः, आपन्नजीविकाविप्रा, आपन्नजीविकं कुलम् । यहां " द्विगुप्राप्तापन्नानां पूर्वगतिसमासेषु प्रतिषेधो वाच्यः " से परलिङ्गताका प्रतिषेध और इस ज्ञापक सेही समास भी हुआ । तद्धितार्थ में जो द्विगुसमास वह वाच्यलिङ्ग होता है । जैसे कि पांचकपालो में भलीभांति सुधारा हुआ जो पुरोडाश (हविर्विशेष) उसे 'पञ्चकपालः' स्त्रीलिङ्ग में 'पञ्चकपाला' और नपुंसक में 'पञ्चकपालम्' कहते हैं । यहां " संख्यापूर्वोद्विगुः " से द्विगुसमास " संस्कृतं भक्षाः " से 'अण्' " द्विगोर्लुगनपत्ये " से 'अण्' का 'लुक्' हुआ । संख्या, सर्वनाम और संख्यासर्वनामान्त शब्द वाच्यलिङ्ग होते हैं । संख्या में जैसे कि, एकः पुमान्=एक पुरुष । एका स्त्री=एक स्त्री । एकं कुलम्=एक कुल । द्वौ पुमांसौ=दो पुरुष । द्वे स्त्रियौ, द्वे कुले=दो स्त्रियां या दो कुल । त्रयः पुरुषाः=तीन पुरुष । तिस्रः स्त्रियः=तीन स्त्रियां । त्रीणि कुलानि=तीन कुल । एवं चत्वारो ब्राह्मणाः=इसी प्रकार चार ब्राह्मण । चतस्रो ब्राह्मण्यः=चार ब्राह्मणियां । चत्वारि वस्त्राणि=चार कपड़े । बहवो जनाः=बहुतसे जन । बह्वो रमयः=बहुतसी रमणियाँ । बहूनि धनानि=बहुतसे धन । सर्वनाम जैसे कि, सर्वोद्देशः=सारादेश या मुक्त । सर्वा नदी=सारी नदी । सर्वं जलम्=सारा जल । परः पुमान्=उत्तम पुरुष । परा स्त्री=उत्तमा स्त्री । परं कुलम्=उत्तमकुल । संख्यान्तक जैसे कि, उनत्रयः जिसमें तीन कम हों । उनतिस्रः=जिसमें तीन न्यून हों । उनत्रीणि=जिसमें तीन विहीन हों । सर्वनामान्तक जैसे कि परमसर्वः=उत्तमसारा । परमसर्वा=उत्तमसारी । परमंसर्वम्=परम सर्व आदि जानना चाहिये ॥ ४३ ॥

बहुव्रीहि समास, बहुव्रीहिरदिङ्नाम्नामुन्नेयं (तदुदाहृतम्) ।

गुण-द्रव्यादि.

गुणद्रव्यक्रियायोगोपाधयः (परगामिनः) ॥ ४४ ॥

दिशावाचक शब्द से भिन्ननामवालों का बहुव्रीहिसमास वाच्यलिङ्ग होता है । इसके उदाहरण आपसेही विचारना चाहिये । जैसे कि बहुधनं यरयेति बहुधनः= जिसके बहुतसा धन होता है उसे ' बहुधनः ' और बहुधनं यस्याः सा बहुधना= बहुतसा धन है जिस स्त्रीके उसे बहुधना, कहते हैं, एवं बहुधनं यस्मिँस्तद्बहुधनं गृहम्= जिस घरमें बहुतसा धन होता है उसे ' बहुधनम् ' कहते हैं । ' अदिङ्नाम्नाम् ' ऐसा क्यों कहा ? यदि न कहोगे तो ' उत्तरस्याः पूर्वस्याश्च दिशोरन्तरालं=उत्तर और पूर्वदिशा की जो अन्तराल (बीचकी दिशा) कहें ' उत्तरपूर्वा ' कहलाती है । यहां " दिङ्नामान्यन्तराले " से बहुव्रीहि समास हुआ । जिनका गुण-द्रव्य-क्रियाओं के योग में उपाधि ' निमित्त ' होता है वे वाच्यलिङ्ग होते हैं । जैसे कि, शुक्लः पटः=सफ़ेद कपड़ा । शुक्ला शाटी=सफ़ेद साड़ी । शुक्लं वस्त्रम्=सफ़ेद वस्त्र । दण्डी=दण्डवाला । दण्डिनी=दण्डवाली । दण्डि गृहम्=दण्डवाला घर । पाचकः=पकानेवाला । पाचिका=पकानेवाली । पाचकम्=पकानेवाला घर आदि जानना चाहिये ॥ ४४ ॥

कृतप्रत्ययान्त, " कृतः कर्तर्यसंज्ञायां " कृत्याः (कर्तरि कर्मणि) ।
कृत्यप्रत्ययान्त, अणायन्ता (स्तेनरक्ताद्यर्थे) नानार्थभेदकाः ॥ ४५ ॥
अणायन्त.

असंज्ञा के विषे कर्ता अर्थ में " कर्तरि-कृत् " इत्यादि से विहित कृत्संज्ञक प्रत्यय तदन्त शब्द वाच्यलिङ्ग होते हैं । जैसे कि करोतीति, कर्ता पुमान्=करनेवाला पुरुष । कर्त्री माया=करनेवाली माया । कर्तृ=कलत्रम्=करनेवाला कलत्र (भार्या) । कुम्भकारः=कुम्हार, कुम्भकारी=कुम्हारिन, कुम्भकारं कुलम्=घड़ा का बनानेवाला कुल । ' असंज्ञायाम् ' ऐसा क्यों कहा ? यदि न कहोगे तो " संज्ञायां भृतृ- " इत्यादि से विहित वाच्यलिङ्ग नहीं होते हैं । जैसे कि विश्वम्भरः=परमेश्वर-इन्द्र, विश्वम्भरा भूमिः=विश्वकी भरनेवाली पृथ्वी । यहां दोष आवेगा इस लिये किया है । कर्ता और कर्म में विधान किये हुए कृत्यप्रत्यय तदन्त शब्द वाच्यलिङ्ग होते हैं कर्ता में जैसे कि " भव्यस्तकः " होनहारवृक्ष । भव्या वराङ्गना=होनहार श्रेष्ठ अंग वाली स्त्री है । भव्यं कजेवरम्=शरीर होनहार या योग्य है । एवं " वसेस्तव्यत्कर्तरि णिञ्च " से कर्ता में णिन् ' तव्यत् ' करने पर वास्तव्योऽयम्=यह बसनेवाला, वास्तव्या सा=वह बसनेवाली, वास्तव्यं तत्=वह बसनेवाला । कर्म में जैसे कि कार्यां घटः=कुम्हार को घड़ा बनाना चाहिये । कार्यां सृष्टिः=परमेश्वर को सृष्टि बनाना चाहिये । जगत् कार्यम्=ब्रह्मको जगत् करना चाहिये ' कर्तरीत्यादिकिम् ' ' कर्तरि ' आदि क्यों किया ? " एधितव्यम्-एधनीयम् त्वया " तुमको बढ़ना चाहिये । यहां भाव में एकवचन व नपुंसकलिङ्ग हुआ । असंज्ञामें ही ऐसा होता है इस लिये । मिथः नदः=तीरका तोड़नेवाला नद, उड्भक्त्युदकमिति उद्धयः=जलका उछालनेवाला नद

यहां “ भिद्योद्धयौ नदे ” से वयप् हुआ और संज्ञा होनेसे ये दोनों वाच्यलिङ्ग नहीं होते हैं । “ तेन रक्तं रागात् ” इत्यादि अर्थ में विहित अणादितद्धित प्रत्ययान्त वाच्यलिङ्ग होते हैं । जैसे कि “ कुङ्कुमेन रक्तः, कौङ्कुमः पटः=कुङ्कुम से रंगा कपड़ा, कौङ्कुमी शाटी=कुङ्कुम से रंगी साड़ी । कौङ्कुमं वस्त्रम्=कुङ्कुम से रंगा वस्त्र । यहां “ तेन रक्तं रागात् ” से ‘ अण् ’ हुआ । लाक्षिकः पटः=लाखसे रंगा कपड़ा । लाक्षिकी शाटी=लाखसे रंगी साड़ी । लाक्षिकं वस्त्रम्=लाखसे रंगा वस्त्र । यहां “ लाक्षारोचनाट्क् ” से ‘ ठक् ’ हुआ कृत्तिकाभिर्युक्ता, कार्तिकी=कृत्तिकासे युक्त राति या पौर्णमासी को ‘ कार्तिकी ’ कहते हैं । यहां “ नक्षत्रेण युक्तः कालः ” से ‘ अण् ’ और “ टिड्ढेति ” से डीप् हुआ । वसिष्ठेन दृष्टं, वसिष्ठं साम=वसिष्ठ से देखे हुए सामको ‘ वसिष्ठं ’ कहते हैं । यहां “ दृष्टंसाम ” से ‘ अण् ’ हुआ । वसिष्ठो मन्त्रः=वसिष्ठ से देखा हुआ मन्त्र ‘ वसिष्ठः ’ कहलाता है । वसिष्ठी ऋक्=वसिष्ठ से देखी हुई ऋचा वसिष्ठी कहलाती है । प्रजापतिना प्रोक्तः प्राजापत्यः=प्रजापति से कहा हुआ ‘ प्राजापत्यः ’ कहलाता है । यहां “ तेन प्रोक्तम् ” से ‘ यय ’ हुआ । “ अणाद्यन्ताः ” इस आदि पद से ग्रामे भवो, ग्राम्यः=गमेली पुरुष, ग्राम्या स्त्री=गमेली लुगाई । ग्राम्यं वस्त्रम्=गमेली वस्त्र । यहां “ ग्रामाद्यस्त्रवौ ” से ‘ य ’ प्रत्यय हुआ । “ रक्ताद्यर्थे ” इस आदि शब्द से मथुराया आगतो माथुरः=मथुरा से आया हुआ पुरुष ‘ माथुरः ’ कहलाता है । यहां “ तत आगतः ” से ‘ अण् ’ हुआ । स्त्रीलिङ्ग में “ टिड्ढाणाञ्द्वयसज्जघ्नञ्मात्रचतयष्ट-कठञ्कञ्करपः ” से डीप्, “ यस्येति च ” से आलोप करने पर “ माथुरी ” मथुरा से आई हुई लुगाई । आदि प्रयोग जानना चाहिये ॥ ४५ ॥

षट् सङ्ख्येण “ त्रिषु ” समा युष्मदस्मत्तिङ्गव्ययम् ।

परं विरोधे, शेषं (तु) ज्ञेयं “ शिष्टप्रयोगतः ” ॥ ४६ ॥

इति लिङ्गादिसंग्रहवर्गः ॥

यान्त, नान्त और डति प्रत्ययान्त संख्यावाची तथा युष्मद्, अस्मद्, तिङन्त और अव्ययवाचक शब्द ये तीनों लिङ्गों में समान यानी तुल्य होते हैं । इनकी अलिङ्गता से समानता (तुल्यता) होती है, ऐसा जानना चाहिये । जैसे कि-षट् नराः=छह नर । षट् स्त्रियः=छह स्त्रियाँ । षट् कुलानि=छह कुल । पञ्च नराः=पांच नर । पञ्च नार्यः=पांच लुगाइयाँ । पञ्च फलानि=पांच फल । कति घटाः=कितने घड़े । कति स्त्रियः=कितनी स्त्रियाँ । कति गृहाणि=कितने घर । त्वं पुरुषो देवः=तुम पुरुष देव हो । त्वं स्त्री देवी=तुम स्त्री देवी हो । त्वं फलं ब्रह्म=तुम्हीं फलरूप ब्रह्म हो ।

१ मय्यन्ते रिषो यस्यांसा मथुरा “मथुरा भगवान्यत्र नित्यं संनिहितो हरिः” (इति भागवतम्) ॥

२ “ पत्यः कत्यभवन्प्रभोः ” (इति भागवतम्) ॥

14190

ऐसेही अहं पुरुषः=हम पुरुष हैं । अहं स्त्री=हम स्त्री हैं । अहं ब्रह्म=फलं वा=हम ब्रह्म या फल हैं । पुरुषः पचति=पुरुष पकाता है । स्त्री पचति=स्त्री पकाती है । कुलं पचति=कुल पकाता है । उच्चैः प्रासादः=ऊँचा देवमन्दिर या राजमहल है । उच्चैः शाला=ऊँची शाला है । उच्चैर्गृहम्=ऊँचा घर है । जब लिङ्गविधायक वचन का विरोध होता है तब परवचन का ग्रहण किया जाता है । जैसे कि “ स्त्रियामीदूद्विरामैकाच् ” इसका अवकाश धीः=बुद्धि । भूः=भौह आदि शब्दों में है । “ कृतः कर्तर्यसंज्ञायाम् ” इसका अवकाश कर्ता=करनेवाला पाचकः=पकानेवाला आदि शब्दों में है और नयतीति नीः=लेजानेवाला या पहुँचानेवाला । लुनातीति लृः=काटनेवाला इत्यादिकों में दोनों का प्रसङ्ग प्राप्त हुआ इस लिये परत्व से त्रिलिङ्गता होती है । और जो यहां नहीं कहा गया है वह “ शिष्टप्रयोगतः ” महाकवि या भाष्यकार आदि के प्रयोगों से जानना चाहिये अथवा अनुक्त शब्दों का लिङ्ग शिष्टों के प्रयोगसे जानना चाहिये । लिङ्गविधायक शास्त्रही नहीं कर्तव्य है क्योंकि “ लिङ्गमशिष्यं लोकाश्रयत्वाल्लिङ्गस्य ” लिङ्ग लोकाही से जाना जाता है, यह भाष्यकार का संमत है । जैसे कि यहां “ चालनी तितउः पुमान् ” ‘ तितऊः ’ शब्द पुंलिङ्ग में कहा गया है । परं च “ तितउ परिवपनं भवति ” इस (पस्पशा) भाष्य के प्रयोगसे नपुंसकलिङ्ग भी जानना चाहिये । ऐसेही “ ताटङ्कस्ते ” इस आचार्य के प्रयोगसे ताटङ्कः=कर्णभूषण में पुंलिङ्ग है । अथवा “ कलिका कोरकः पुमान् ” इस उक्त ग्रन्थ में ‘ कोरकः ’ पुंलिङ्ग में कहा गया है । परन्तु “ कोरकाणि ” इस माघकाव्य के प्रयोग से नपुंसकलिङ्ग भी पण्डितों को जानलेना चाहिये ॥ ४६ ॥

इति लिङ्गप्रतिपदविवरणम् ॥

अथोक्तस्यैवोपसंहारमा.—

इत्यमरसिंहकृतौ, नामलिङ्गानुशासने ।

सामान्यकाण्डस्तृतीयः, साङ्गएव समर्थितः ॥ ४७ ॥

इस प्रकार अमरसिंह के बनाये हुए नाम व लिङ्ग के व्युत्पादक शास्त्र में तीसरा सामान्यकाण्ड अङ्गीपाङ्ग समेतही कहा गया अथवा अमरसिंह के बनाये हुए नाम व लिङ्गके प्रतिपादक शास्त्र में प्रस्ताव या वर्गसमूह अङ्गों के समेतही कहा हुआ तीसरा सामान्यकाण्ड यानी सामान्यनामक तीसरा काण्ड संपूर्णता को प्राप्त हुआ ॥ ४७ ॥

दी० । अमरसिंहकृत कोषमहँ, काण्डत्रय सु बखान ।

तृतयकाण्ड वर्णन कस्यो, द्विजवर शक्ति सुजान ॥

अथ व्याख्याद्वंशवर्णनमाह—

श्रीमत्प्राज्ञनरायणेन प्रभुणा स्वाज्ञापितः सादरं
नान्ता शक्तिधरः सदाशिवपदद्वन्द्वेरतो नित्यशः ।
चक्रे चामरके प्रशस्तविवृतिं विद्वज्जनानां मुदे
नानाकोषयुतां विशुद्धिसहितां सद्भाषयालंकृताम् ॥ १ ॥
शाके शैलगुणार्ष्ट्रभूपरिमिते वर्षे द्विगोत्राङ्कौ'
पौषे मास्यसिते हरीशतिथिके श्रीभास्करे वासरे ।
सर्वेषां सुखबोधनाय रचिता व्याख्या रसाला मया
तां नित्यं प्रविलोकयन्तु सुधियो हृष्यन्तु स्वान्ते स्वके ॥ २ ॥

पुरे मुगादावादाख्ये शुक्लवंशोद्भवः सुधीः ।
आसीद्दुर्गाप्रसादाख्यो बलभद्रस्तु तत्सुतः ॥ ३ ॥
तस्यात्मजः शक्तिधरः शिवपादार्चने रतः ।
कृतवान्सर्वतोषाय विस्पष्टार्थप्रबोधिनीम् ॥ ४ ॥

इति श्रीमदमरसिंहविरचिते अमरकोषे आन्तरेबुद्धश्रीमद्राजबहादुरभार्गवप्रयागनारायणा-
ख्या द्विजवरशक्तिधरसंकलितायां रसालाख्यायां व्याख्यायां तृतीयः काण्डः
समाप्तिमगादिति शम् ॥ ३ ॥

समाप्तश्चाय ग्रन्थः ॥

भागीरथ कोष ।

इसमें अकारादि क्रम से सर्वशब्द उर्दू तथा हिंदी में दिये गये हैं । यह कोष विशेषता से कचहरियों के अहल्कारों, विद्यार्थियों और मुसलमान-शिक्षकों के लिये प्रकाशित किया गया है और इसमें उर्दू के वे शब्द भी हैं जो प्रायः क़ानूनी किताबों में पाये जाते हैं । मूल्य ॥)

शब्दार्थसंग्रहकोष ।

इसमें अमरकोष व वैद्यककोष आदि कोषों से शब्दों का संग्रह अकारादि क्रम से किया गया है । इसके मनन करने से विना गुरु की सहायता के शब्द व शब्दार्थ का बोध हो जाता है । यह प्रथम तथा मध्यम परीक्षोत्तीर्ण बालकों के लिये अत्यंत ही उपयोगी है । मूल्य १।)

अमरकोष-संस्कृतव्याख्यासमेत ।

इसके व्याख्याकर्ता लखनऊ नरहीनिवासी पण्डित शक्तिधरशर्मा शास्त्री हैं । यह रसाला व्याख्यासमलंकृत अमरकोष सर्वकोष शिरोरत्न है । इसमें सर्वपदों की व्युत्पत्ति, धातु, प्रत्यय और शब्दों के पर्याय-वाचकशब्द दिये हैं तथा शब्दों के ऊपर जहां पुलिङ्ग वहां पुं०, जहां स्त्रीलिङ्ग वहां स, और जहां नपुंसक वहां न से सुशोभित कर कोषान्तरों के प्रमाणों से विभूषित किया है और अकारादि क्रमसे शब्दानुक्रमणिका भी लगाई गई है कि जिससे सर्वसाधारण विद्वान् लोग भी सहज ही में मूलके तात्पर्य को अतीतरह से समझ सकेंगे । इससे उत्तम व्याख्या आज तक कहीं भी प्रकाशित नहीं हुई है उसपर भी मूल्य केवल ३॥) साठेनीन रुपया मात्र है ।

श्रीधरभाषाकोष ।

इसके संग्रहकर्ता हैं संस्कृतभाषा के अध्यापक पंडित श्रीधरजी त्रिपाठी । जिसमें भाषा के शब्द, शब्दार्थ, अनेकार्थ, धातु, धात्वर्थ, शब्दलक्षण और उनके प्रायोगिक उत्तराह्वान व्याकरण की रीति से नियुक्त किये गये हैं । इससे हिंदीप्रमियों और विद्यार्थियों को बहुत सी सहायता मिल सकती है । मूल्य विना जिल्द २॥) और जिल्द समेत ३) रुपया मात्र रक्कम है ।

संस्कृत-हिंदी-कोष ।

इसके संग्रहकर्ता हैं संस्कृत के सुप्रसिद्ध लेखक पंडित द्वारका-प्रसाद जी चतुर्वेदी । इसमें अकारादि क्रम से शब्द लिखे हैं और संस्कृत की रीति से पुलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग लिखने के बाद कितने ही पर्यायवाची शब्द दिये गये हैं । यह कोष विद्यार्थियों, पंडितों और लेखकों के लिये परमोपयोगी है । मूल्य जिल्दसमेत का ३) रुपया है ।

पता:—मैनेजर, नवलकिशोर प्रेस,

लखनऊ.

लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, पुस्तकालय
Lal Bahadur Shastri National Academy of Administration Library

मुसूरी
MUSSOORIE

अवधि सं०

Acc. No.....

कृपया इस पुस्तक को निम्न लिखित दिनांक या उससे पहले वापस
कर दें।

Please return this book on or before the date last stamped
below.

दिनांक Date	उधारकर्ता की संख्या Borrower's No.	दिनांक Date	उधारकर्ता की संख्या Borrower's No.

GL SANS 491.203
AMA



125488
1 RSNAA

Sans
491.203
अमर

अवधि मं. ~~1-1-1958~~
ACC No

वर्ग सं. पुस्तक मं.
Class No..... Book No.....

लेखक

Author... अमर सिंह

शीर्षक

Title... अमरकोषः अर्थात् नामलिङ्गानु-

शासननामकोषः... शक्तिधर शास्त्री द्वारा

निर्गम दिनांक Date of Issue	उधारकर्ता की मं. Borrower's No.	हस्ताक्षर Signature

Sans
491.203 LIBRARY
अ. ल. शास्त्री LAL BAHADUR SHASTRI
National Academy of Administration
MUSSOORIE

Accession No. 125468

1. Books are issued for 15 days only but may have to be recalled earlier if urgently required.
2. An over-due charge of 25 Paise per day per volume will be charged.
3. Books may be renewed on request, at the discretion of the Librarian.
4. Periodicals, Rare and Reference books may not be issued and may be consulted only in the Library.
5. Books lost, defaced or injured in any way shall have to be replaced or its double price shall be paid by the borrower.

Help to keep this book fresh, clean & moving